Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हवनात्मक दुर्गासप्तशती

डॉ. रवि शर्मा

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

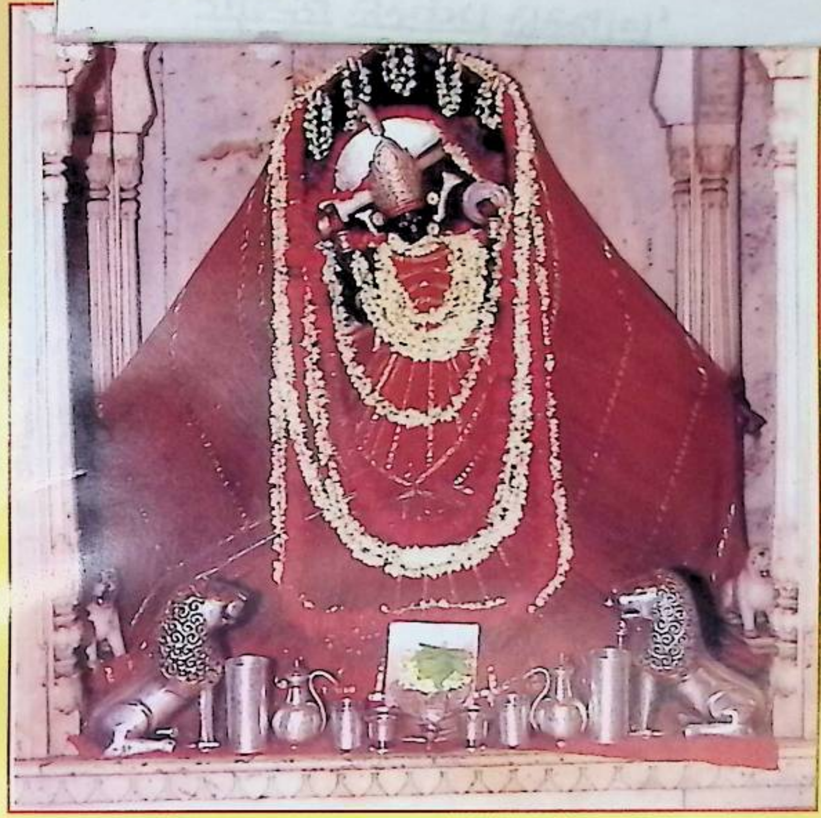

आमेर (जयपुर) की शिलामाता

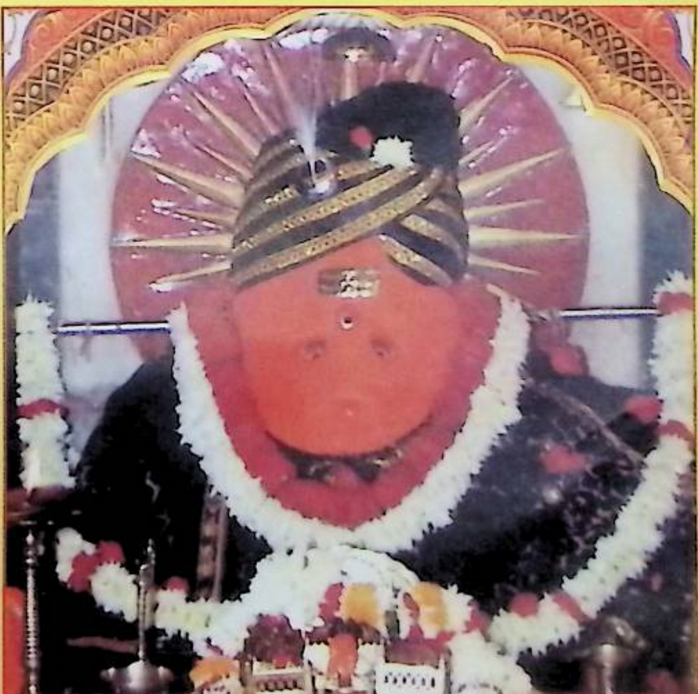

श्री हर्षनाथ भैरव—आमेर

32728
संस्कृत विश्वविद्यालय
जयपुर परिसर, जयपुर
पुस्तकालय
पंजीकरण क्रमांक...............

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

समर्पित

स्व. श्रीमती नैनी देवी शर्मा एवं स्व. पं. श्री नन्दकिशोर शर्मा

मार्गदर्शक व पद्धति–प्रणेता

पं. चन्द्रशेखर शर्मा

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ गृहवास्तुचक्रम्

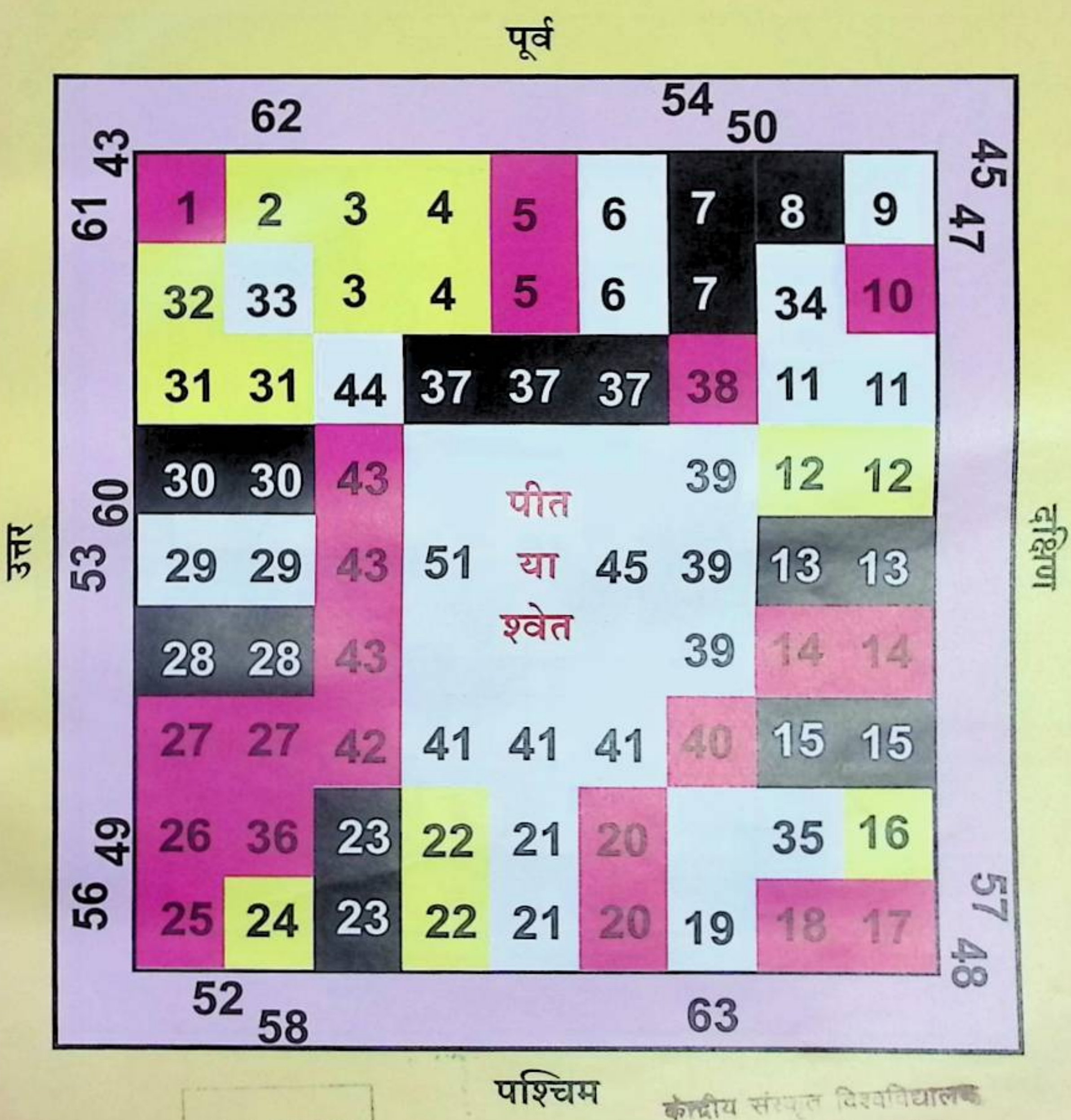

SV-2024

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
जयपुर परिसर, जयपुर
पुस्तकालय
पंजिकरण क्रमांक.................

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चतुःषष्टिपद वास्तुमण्डलचक्र

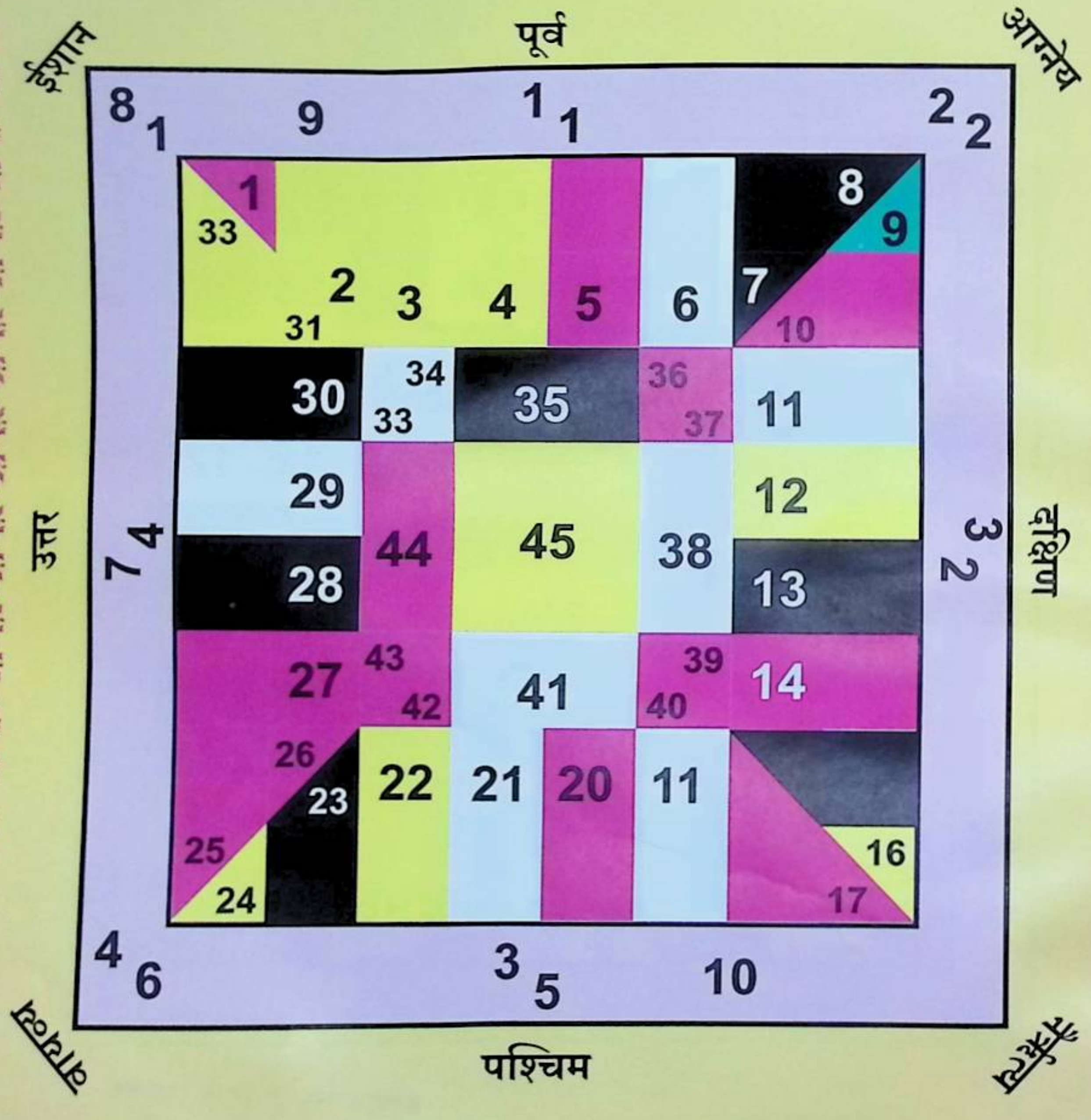

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चतुः षष्टियोगिनीचक्र

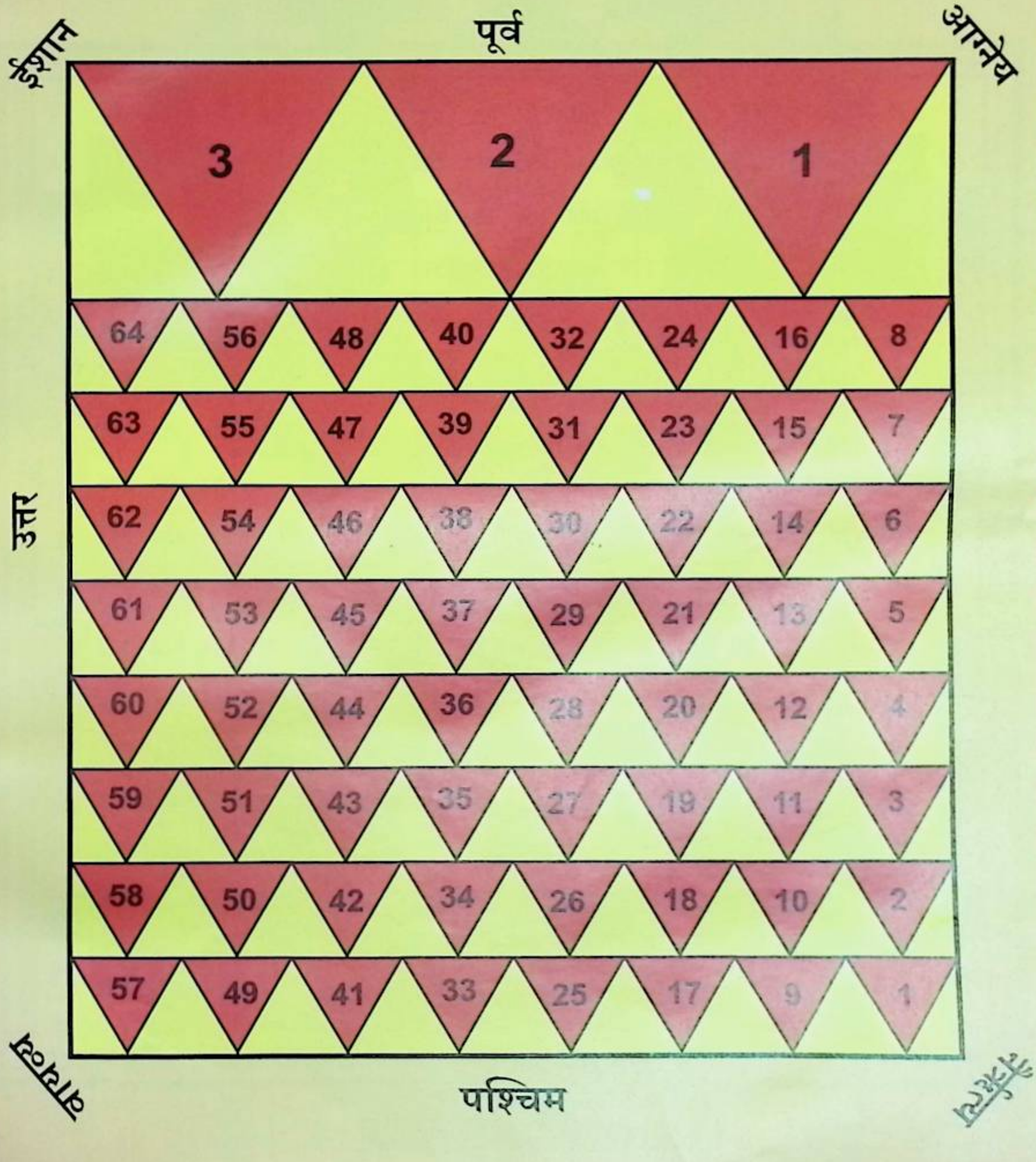

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सर्वतोभद्र मण्डल

पूर्व

9	11	109	21	22	23	24	25	1	2	34	32	32	31	30	120	13	12
10	104	110	111	26	27	28	204	203	202	201	37	36	35	122	121	131	14
93	94	105	112	113	29	210	209	208	207	206	205	38	124	123	132	137	136
84	95	96	106	114	115	216	215	214	213	212	211	126	125	133	139	138	39
85	89	97	98	107	116	117	220	219	218	217	128	127	134	141	140	44	40
86	90	92	99	100	108	118	119	222	221	130	129	135	143	142	47	45	41
87	91	276	282	101	102	294	293	292	291	290	289	145	144	238	232	46	42
88	270	275	281	286	103	295	312	311	310	309	308	146	242	237	231	226	43
8	269	274	280	285	288	296	313	322	321	320	307	244	241	236	230	225	3
7	268	273	279	284	287	297	314	323	324	319	306	243	240	235	229	224	4
79	267	272	278	283	200	298	315	316	317	318	305	157	239	234	228	223	52
78	82	271	277	198	199	299	300	301	302	303	304	156	155	233	227	55	51
77	81	83	196	197	189	183	184	266	265	173	172	162	154	153	56	54	50
76	80	194	195	188	181	182	264	263	262	261	171	170	161	152	151	53	49
75	192	193	187	179	180	260	259	258	257	256	255	169	168	160	150	149	48
190	191	186	177	178	74	254	253	252	251	250	249	65	167	166	159	148	147
20	185	175	176	71	72	73	248	247	246	245	64	63	62	165	164	158	16
18	19	174	66	67	68	69	70	6	5	61	60	59	58	57	163	17	15

पश्चिम

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चतुर्लिङ्गतोभद्रमण्डलम्

एकलिंगतोभद्र मण्डलम्

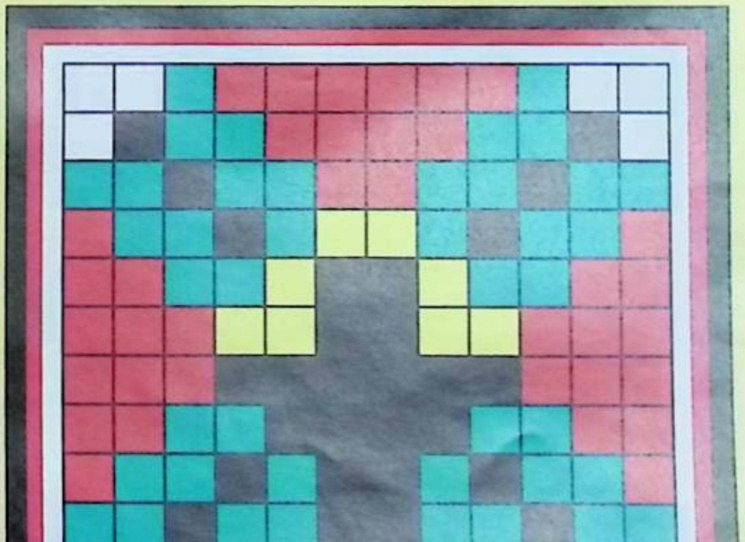

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गौरीतिलक मण्डल

पूर्व

पश्चिम

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

क्षेत्रपाल मण्डल

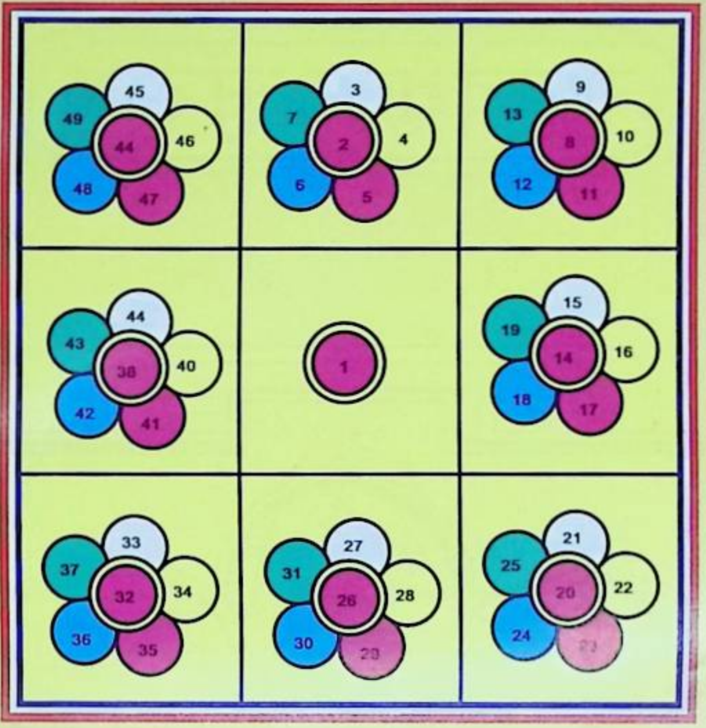

अथ षोडशमातृकाचक्रम्

ॐ आत्मनः कुल–देवतायै नमः 17	ॐ लोकमातृभ्यो नमः 13	ॐ देवसेनायै नमः 9	ॐ मेधायै नमः 5
ॐ तुष्टयै नमः 16	ॐ मातृभ्यो नमः 12	ॐ जयायै नमः 8	ॐ शच्यै नमः 12
ॐ पुष्ट्यै नमः 15	ॐ स्वाहायै नमः 11	ॐ विजयायै नमः 8	ॐ पद्मायै नमः 3
ॐ धृत्यै नमः 14	ॐ स्वधायै नमः 10	ॐ सावित्र्यै नमः 6	ॐ गौर्यै नमः ॐ 2 गणेशाय नमः 1

अथ वसोर्द्धाराचक्रम्

।। श्री ।।

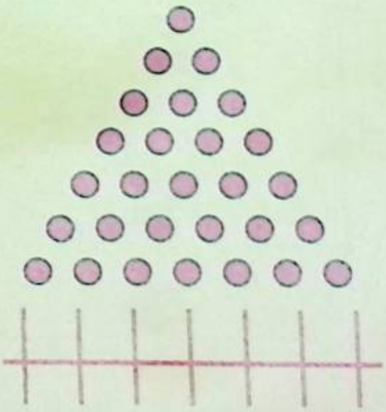

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ग्रहदेवता मंडल

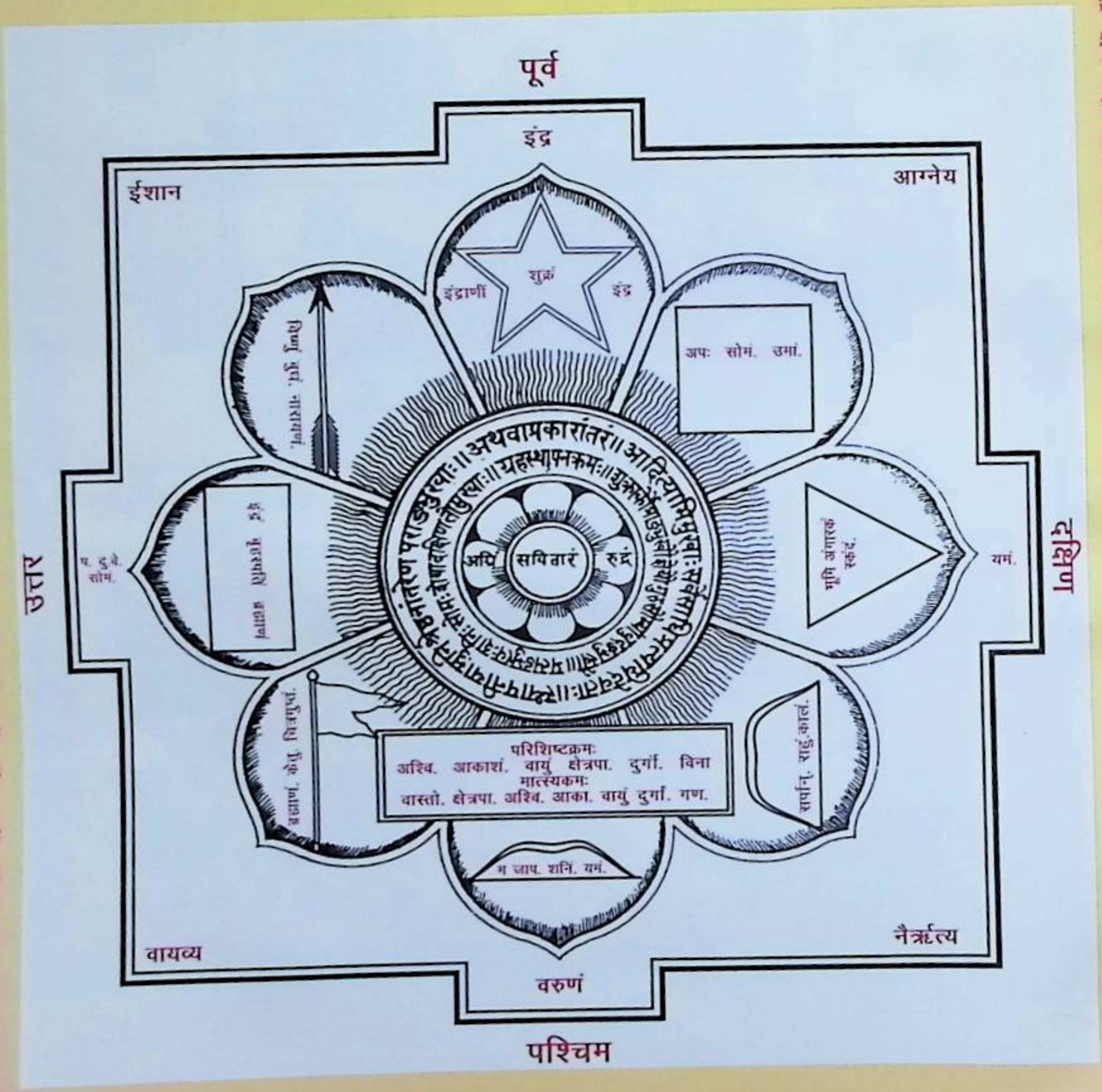

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

श्री अंबाजी यंत्र

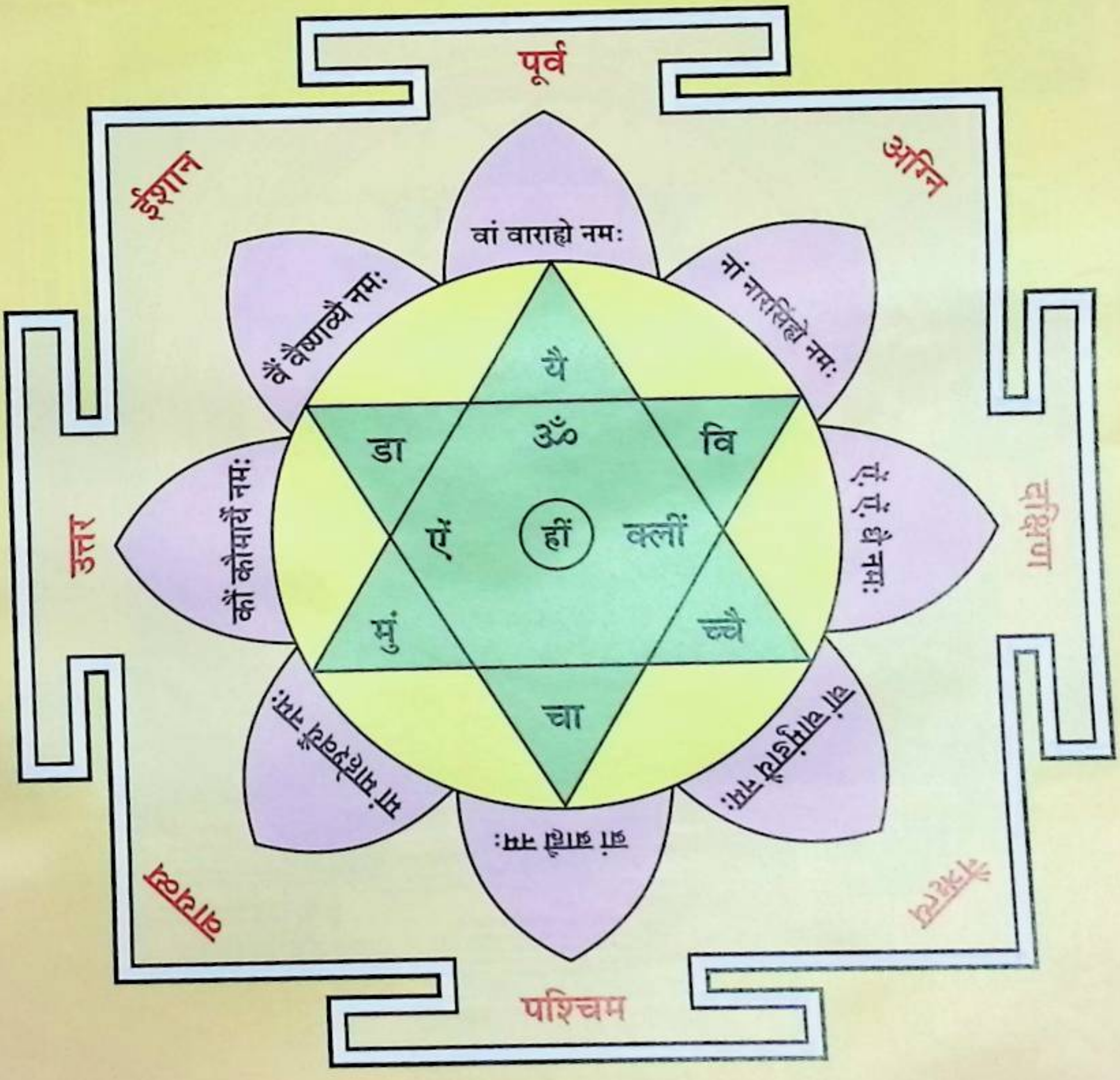

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विभिन्न कुंड स्वरूपम्

त्रिकोणकुण्डस्वरूपम्

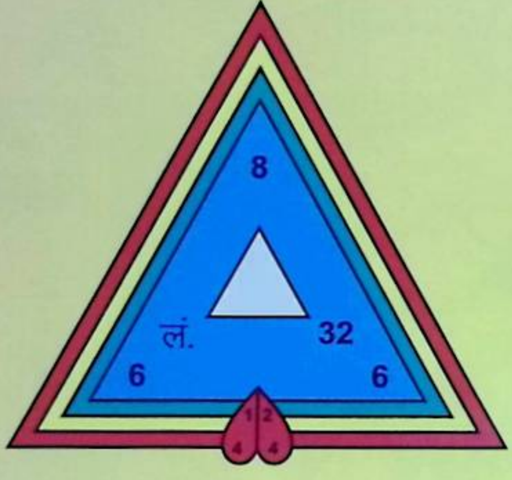

वृत्तकुण्डस्वरूपम्

विषय–षडस्त्र–कुण्डस्वरूपम्

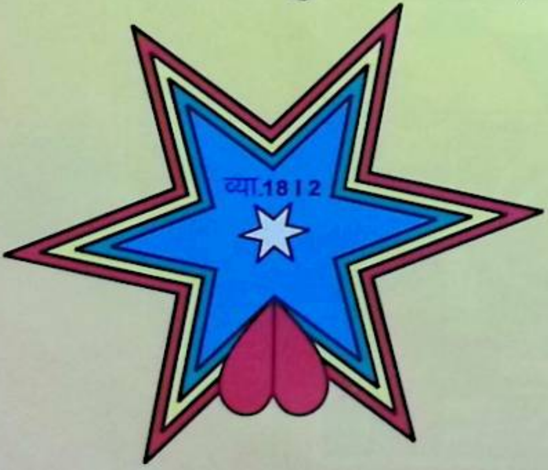

विषम–अष्टास्त्र–कु ण्डस्वरूपम्

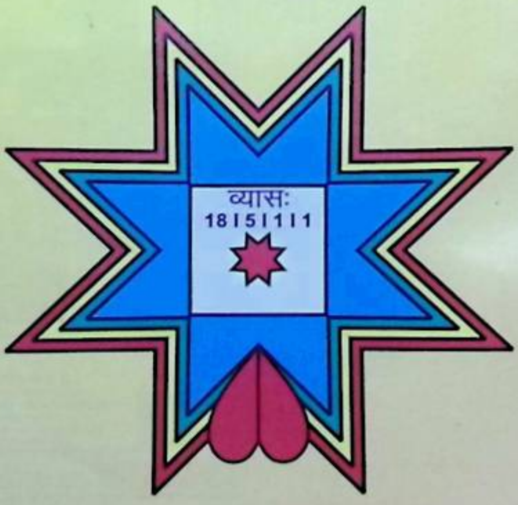

Digitization by Hindu Heritage Foundation of America. HHFA(USA)

विभिन्न कुंड स्वरूपम्

चतुरस्त्रकुण्डस्वरूपम्

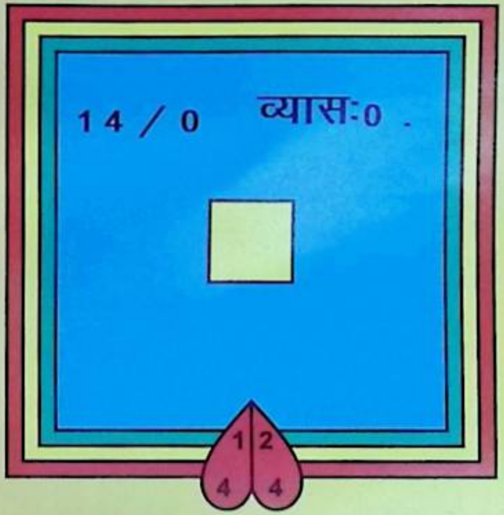

योनिकुण्डस्वरूपम्

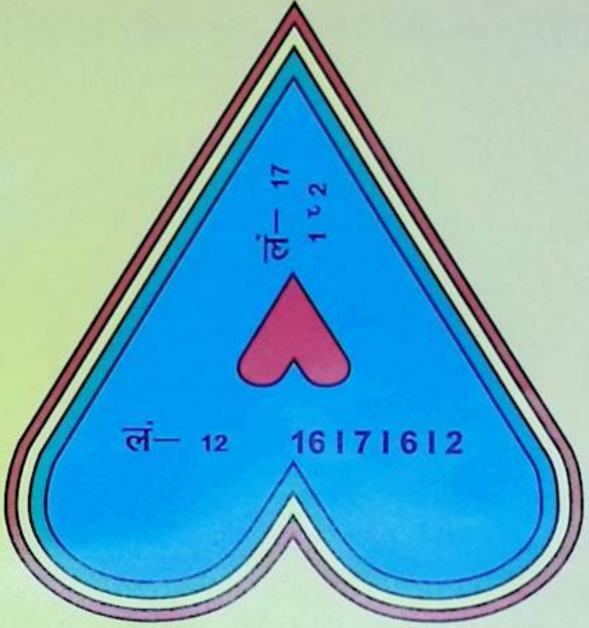

पद्मकुण्डस्वरूपम्

पद्मकुण्डस्वरूपम्

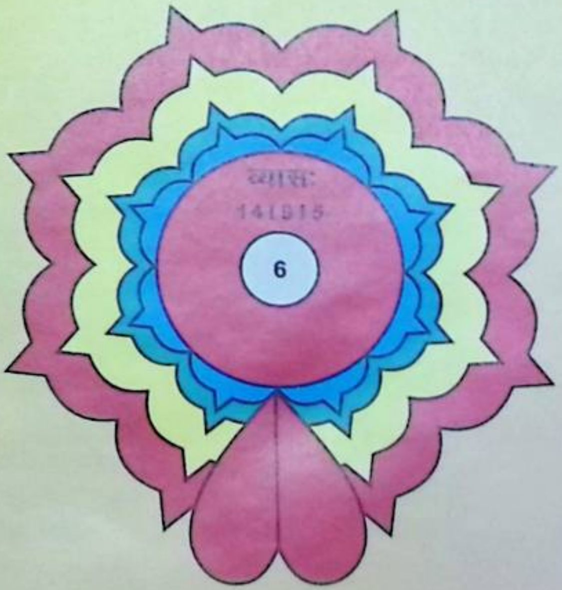

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विभिन्न कुण्ड स्वरूपम्

समभुज–षडस्त्र–कुण्डस्वरूपम्

समभुज–अष्टास्त्रकुण्डस्वरूपम्

अर्द्धचन्द्रस्वरूपम्

कुण्डसिद्धि–हस्तादिमानम्

ह.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	16
अं.	24	34	41	48	53	58	63	67	72	75	96
यं.	0	0	5	0	5	6	4	7	0	7	0
यू.	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हवनात्मक दुर्गासप्तशती

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

राष्ट्रीय संस्कृत साहित्य केन्द्र

जयपुर ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हवनात्मक दुर्गासप्तशती

(उवाच के अतिरिक्त ७०० श्लोक महाकाली–महालक्ष्मी व महासरस्वती सूक्त सहित, प्रत्येक श्लोक के साथ स्वाहात्मक बीजमन्त्र, सम्पूर्ण सस्वर पूजन विधि, देवी सहस्रनामावली, दुर्गार्चन पद्धति सहित, भैरव नामावलि न्यास सहित, दुर्गा पर सम्पूर्ण शास्त्रीय विवेचन सहित)

मार्गदर्शक व पद्धति प्रणेता :

पं. चन्द्रशेखर शर्मा
जयपुर।

पं. श्रीनन्दन मिश्र
जयपुर।

:: सम्पादक ::
डॉ. रवि शर्मा

:: सह–सम्पादक ::
डॉ. भारती शर्मा

राष्ट्रीय संस्कृत साहित्य केन्द्र
जयपुर।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

संस्करण : ईस्वी सन् 2018

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन
ISBN No. - 978-81-88741-62-5

मूल्य :- 750 रुपये मात्र

लेजर टाईप सेटिंग ::
नन्द नन्दन कम्प्यूटर सेन्टर, जयपुर।
098291-64481

प्रकाशक ::
राष्ट्रीय संस्कृत साहित्य केन्द्र
222, सरस्वती सदन, बिहारी जी गली, सौंखियों का रास्ता,
किशनपोल बाजार, जयपुर -302001

मुद्रक ::
शीतल प्रिण्टर्स, जयपुर।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

:: द्वितीय संस्करण निवेदन ::

यत्रास्ति भोगो नहि तत्र मोक्षः, यत्रास्ति मोक्षो न हि तत्र भोगः।
श्रीसुन्दरी-साधन-तत्पराणां, भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव।।

इस संसार में बड़े-बड़े सिद्ध एवं साधकों ने '**सप्तशती**' पर अपनी वाणी को पवित्र करने के लिए शास्त्र-साधना, अनुभव, भक्ति, प्रेम एवं आनन्द में विभोर होकर अपने-अपने श्रेष्ठतम विचारों को साधकों के हितार्थ व्यक्त किया था, वर्तमान में कर रहे है तथा भविष्य में भी करेंगे।

आचार्य श्री नागोजी भट्ट (भास्कर राय जी) ने '**सप्तशती**' की गुप्तवती टीका एवं टिप्पणी में आनन्दातिरेक के कारण भाव-विभोर होकर विनम्र भाव से यह कह ही दिया कि मैं अत्यन्त गोपनीय रहस्य को प्रकाश में ला रहा हूँ, पुनरपि यह अत्यल्प ही है, क्योंकि कोई कह नहीं सकता।

इस परमाराध्य सर्वाराध्य '**सप्तशती**' पर अनेक संस्कृत टीकाएँ और भाष्य हिन्दी-बंगला-महाराष्ट्रीय आदि भारतीय भाषाओं सहित व विदेशी भाषा (अंग्रेजी) में भी विद्यमान है तथा भक्तों, देशिकों, विद्वानों एवं महापुरुषों ने अपनी-अपनी शैलियों में इस गूढ़ रहस्य को बुद्धिगम्य बनाने की चेष्टा की है तथा इसे आधिभौतिक, आध्यात्मिक एवं आधिदैविक अर्थों से विभूषित कर समय-समय पर भगवती की इच्छा से ही प्रकट किया है।

दुर्गा नाम का अर्थ :- १. द-कार, २. अ-कार, ३. रेफ, ४. ग-कार और ५. आ-कार- इन ५ वर्णों के योग से मन्त्र स्वरूप "**दुर्गा**" नाम की निष्पत्ति होती है। इसका अर्थ है –

दैत्य-नाशार्थ वचनो, दकारः परिकीर्तितः।
उकारो विघ्न-नाशस्य, वाचको वेद-सम्मतः।।
रेफो रोगघ्न-वचनो, गश्च पापघ्न-वाचकः।
भय-शत्रुघ्न-वचश्चाकारः परि-कीर्तितः।।

अर्थात् दैत्यों (असुरों) के नाश के अर्थ को **द-कार** बतलाता है, **उ-कार** विघ्न का नाशक वेद-सम्मत है। **र-कार** रोग का नाशक, **ग-कार** पाप का नाशक और **आ-कार** भय तथा शत्रु का विनाशक है। इस प्रकार "**दुर्गा**" नाम अपने आप में यथार्थ का बोधक है। यथा –

दुर्-दुःखात् गमयति दुर्गा, दुर्-दुःखेन गम्यते दुर्गा।
दुर् दुःखानि गमयति दुर्गा, दुर् दुर्गतिं (नरकं) गमयति, दूरयति सा दुर्गा।
दुर् दुर्दशां गमयति (नाशयति) सा दुर्गा, दुर् दुराशां गमयति, दूरयति सा दुर्गा।
दुर् दुरितानि पापानि गमयति, विनाशयति सा दुर्गा।
दुर् दुराचारं दोषं वा गमयति, दूरं करोति सा दुर्गा।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

'**दुर्गा**' शब्द का दूसरा रूप '**दूर्गा**' भी है। '**दुर्गा**' पर में **ह्रस्व उ-कार** है, परन्तु कहीं-कहीं **दीर्घ ऊ-कार** का भी उल्लेख है। इसमें '**दुर्गा**' नाम का अर्थ अधिक स्पष्ट हो जाता है। "**विश्वसार-तन्त्र**" कहता है - "**थान्त-वीजं समुद्धृत्य, वाम-कर्ण (ऊ) विभूषितम्।**"

'**वरदा-तन्त्र**' भी इसी मत का समर्थन करता है - "**दं दुर्गा-वाचकं देवि! ऊ-कारो रक्षणार्थकः।**"

'**ब्रह्म-सूत्र**' का प्राणाधिकरण '**शक्ति-भाष्य**' भी यही कहता है - '**दू-नाम्नी देवता च जगद्धात्री दुर्गा तद्-वीज-वर्णात्।**'

अतः '**दुर्गा**' पद से **पाप-क्षय-कारिणी, मृत्यु को दूर भगाने वाली, भय तथा शत्रु का नाश करने वाली** का बोध होता है। दूसरे शब्दों में इससे उस परम सत्ता का बोध होता है, जो वागादि इन्द्रियों के पापों को दूर कर मृत्यु को दूर भगाती है। पापों को इस प्रकार हटाती है कि जीव से अच्छे कर्म करवाती है, जिससे यम का डर नहीं रहता। इसीलिए शास्त्रों में ऐसी फल-श्रुति लिखी है-

प्रभाते यः स्मरेन्नित्यं, दुर्गा-दुर्गाक्षर-द्वयम्।
आपदस्तस्य नश्यन्ति, तमः सूर्योदये यथा।

अर्थात् प्रभात-काल (प्राण-शक्ति की सम्वर्धित स्थिति) में जो नित्य '**दुर्गा**'-'**दुर्गा**' इस अनाशवान् वर्ण-द्वय का स्मरण करते हैं, उनकी आपदाएँ इस प्रकार नष्ट होती है, जिस प्रकार सूर्य के उदय होने पर अन्धकार का नाश होता है और अधिक स्पष्ट रूप में कह सकते है कि जिस प्रकार सूर्य की प्रकाश-शक्ति अन्धकार को भगाती है, उसी प्रकार '**दुर्गा**' सर्व-व्यापिका महा-शक्ति की धारणा से समस्त आपदाएँ-अविद्या के सहकारी आसुरी सर्ग दूर हो जाते है।

'दुर्गा'- दुर्ग्रह अर्थात् कठिनता से ग्रहण की जाने वाली :-

'**दुर्गा**' (दुर्+ग गमने, ज्ञाने+टाप्)-पद से '**दुर्ग्रह**' अर्थात् कठिनता से ग्रहण की जानेवाली सत्ता का भी बोध होता है। '**योग-वासिष्ठ**', निर्वाण-प्रकरण, उत्तरार्ध ८४।११-'**दुर्गा दुर्ग्रह-रूपतः।**'

'**अथर्वशीर्ष-देव्युपनिषत्**'- श्रुति भी '**दुर्गा**' को '**दुर्गमा**' कहती है-**तां दुर्गां दुर्गमां देवीम्।**'

'**देव्युपनिषत्**'- श्रुति में इसकी लक्षणाओं का उल्लेख इस प्रकार है-'जिसका स्वरूप ब्रह्मा आदि भी नही जानते, इस कारण '**अज्ञेया**' **है**। अन्त नहीं मिलने से '**अनन्ता**' कहलाती है। लक्ष्य नहीं दिखने से '**अलक्ष्या**' है। जन्म नहीं लेती, इससे '**अजा**' है। सर्वत्र अकेले रहने से '**एका**' कहलाती है। विश्व-रूपिणि होने से '**अनेका**' कही जाती है। पुनः **दुर्गा भगवती** के सम्बन्ध में यही '**देव्युपनिषत्**' कहता है-'सब मन्त्रों में **मातृका देवी है**, सर्व-मातृका-वर्णों की अधिष्ठात्री **प्रकाश-शक्ति-स्वरूपा**

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

है। शब्दों की **ज्ञान-स्वरूपा, अर्थ-स्वरूपिणी** है। अर्थो के ज्ञान की **परा स्वरूपा** है, ज्ञात्-ज्ञान-ज्ञेय की त्रिपुटी से भी परे है। **शून्यों को भी शून्य, प्राणों की भी प्राण-रूपिणी है।'**

'दुर्गा'-महा-चिति, महा-चेतना, सर्व-व्यापिका, सर्व-प्रकाशिका। इस प्रकार 'दुर्गा' पद से **महा-चिति** अर्थात् **महा-चेतना शक्ति** का बोध होता है। यही **सर्व-व्यापिका, सर्व-प्रकाशिका महा-शक्ति** है। यही **महा-माया** है, इसी ने सारे संसार को अपने में बसा रखा है। यही **२५ और ३६ तत्त्वों की राजधानी** है।, **ब्रह्म, परमात्मा, पुरुष, महेश्वर,** किसी भी नाम से कहिए सभी की विकास-सीमा इसी के भीतर है। सभी इससे प्रकाशित है। सब कुछ इसके किए से ही होता है।

'ब्रह्म' साक्षात् नहीं होता है और होता है, तो सर्व-प्रथम इसी रूप में होता है। इसलिए यही **'ब्रह्म'** है, यही **'शक्ति'** है, यही **'माया'** है, यही **'प्रकृति'** है। यही भगवती की **'दश महा-विद्याओं'** की और भगवान् के **'दश तथा २४ अवतारों की मूल भूमिका'** है। संसार का कोई काम, कोई चिह्न, कोई विचार, कोई सङ्केत या जल, स्थल, आकाश, पाताल- कहीं कोई सत्ता ऐसी नहीं है, जो इससे रहित हो। यही संसारार्णव से पार करती है। यही परमात्मा है। यही शरीर में चेतना है। इसी से **'ब्रह्म'-चैतन्य** है। यह उस **'ब्रह्म पर-तत्त्व'** में विलास करती है। इसकी स्फुरणा से ही **'ब्रह्म'** को प्रकाश मिलता है। **भगवान् श्रीकृष्ण** (परमात्मा) स्वयं **अर्जुन** को समझाते है। कि-**नाहं प्रकाशः सर्वस्य, योग-माया समावृतः'**। अर्थात् मैं सभी के प्रकाश में नहीं आता हूँ क्योंकि **योग-माया** से ढँका हुआ हूँ। **योग-माया** मुझे ढाँपे रहती है। यह **योग-माया,** जो **ब्रह्म** को ढाँपकर विलास करती है, श्री **'दुर्गा'** है। **भगवती श्री दुर्गा** ने स्वयं श्री-मुख से **हिमालय** को सम्बोधित करते हुए, सभी देवों को, जो उस समय उपासना के लिए आए थे, समझाया है कि ''**निर्गुण ब्रह्म, शुद्ध सम्वित्** है और **'अपर'**-भाग-**सगुण ब्रह्म** है। देखिए **'देवी भागवत'**, सप्तम स्कन्ध-**'भाग-द्वयवती यस्मात्, सृजामि सकल्पं जगत्।'**

भोग-मोक्ष-दात्री सर्वाराध्या ''श्रीदुर्गा'' :-

उपर्युक्त अर्थ व भावार्थ से स्पष्ट है कि **श्रीदुर्गा** ही **'ब्रह्म-शक्ति आदि-माया'** है। भगवती **दुर्गा** का नाम, **ध्यान, यन्त्र, मन्त्र**- सब इसी तथ्य के प्रमाण है। देखिए आगे प्रस्तुत **श्रीदुर्गा-मन्त्र-तत्त्व-श्रीदुर्गा-यन्त्र-तत्त्व**। सभी से स्पष्ट होता है कि **'दुर्गा'** ही **'ब्रह्म'** की प्रतिपाद्य देवता है। यही भोग और मोक्ष का कारण है।

ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन, सौभाग्यारोग्य-सम्पदः। शत्रु-हानिः परो मोक्षः, स्तूयते सा न किं जनैः॥ अर्थात् - जिसके प्रसाद (कृपा) से ऐश्वर्य, सौभाग्य, आरोग्य, सम्पदाएँ, विजय और मोक्ष तक मिलता है, उस सर्वाराध्या भगवती दुर्गा की आराधना कौन नहीं करता ? सभी करते है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

'देवी भागवत्' में लिखा है कि जो दुर्गा की आराधना करता है (पूजता है, स्मरण करता है), वह सभी प्रकार की सिद्धियाँ पाता है और उसके आगे कोई विपद् नहीं आती। यह बुद्धि-तत्त्व की अधिष्ठात्री है और यही अन्तर्यामि-स्वरूपिणी है। 'दुर्गा'-सभी के द्वारा सेव्य है। इसे कौन पूजते-ध्याते हैं, देखिए 'देवी भागवत', ९ वाँ स्कन्ध-'दुर्गा भगवती को ब्रह्मा, विष्णु आदि सभी देव और मनुष्य, ज्ञान-निष्ठ मुनि लोग, योगी तथा आश्रमी गृहस्थादि, लक्ष्मी आदि देवियाँ सभी ध्याते-पूजते है।'

श्रीदुर्गा मन्त्र (नवार्ण मन्त्र) के ऋषि तीनों देव-ब्रह्मा, विष्णु और शिव है। ऋषि वही होगा, जिसने मन्त्र को सिद्ध कर प्रचार किया। वे ही भगवती दुर्गा के प्रथम उपासक है। साथ ही यह भी प्रतीत होता है कि दुर्गा भवगती ही मोक्ष-दायिनी है, और कोई देव मोक्ष नहीं देते, अतएव 'सप्तशती' के प्रथम अध्याय में ऋषि कहते है-'सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतु-भूता सनातनी।'

'शक्रादि'- स्तव, सप्तशती में तो सभी देवों ने एक स्वर से दुर्गा भवगती को विद्या मुक्ति-स्वरूपा कहा है। मुक्ति का साधन भी कहा है। मोक्षार्थियों की उपास्या भी बतलाई है-'हे देवि! आप अचिन्त्य महा-व्रत साधन करने वालों, नियत इन्द्रिय वर्ग वालों और ब्रह्म-सार समझने वालों (ब्रह्म-वेत्ताओं) से उपासित होती है। जिनके समस्त दोष शान्त हो गए है और जो मोक्ष चाहते है, उन मुनियों से तुम उपासित होती हो। कारण तुम ही परमा विद्या हो।

'ब्रह्म-वैवर्त पुराण' में भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं भगवती दुर्गा के विषय में कहते हैं-

त्वमेव सर्व-जननी, मूल-प्रकृतिरीश्वरी।
त्वमेवाद्या सृष्टि-विधौ, स्वेच्छया त्रिगुणात्मिका॥
कार्यार्थे सगुणा त्वां च, वस्तुतो निर्गुणा स्वयम्।
पर-ब्रह्म-स्वरूपा त्वं, नित्यानित्य-स्वरूपिणी॥

स्पष्ट है कि भगवती दुर्गा आदि माया है, वह सर्व-कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तु समर्था है। यही ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वरादि देवों को भी स्वेच्छा से कर्मों में प्रवृत्त करती है। यही इन समस्त देवादि की आदि जननी है। यही मोक्ष-दायिनी है। भगवती दुर्गा की उपासना सर्व-समर्थ उपासना है। वैदिक सनातन मार्ग है। इसकी आराधना मानव मात्र का परम कर्त्तव्य है मुक्ति-प्राप्ति का लक्ष्य है।

'श्रीदुर्गा'-नाम-माहात्म्य -

'चहुँ जुग चहुँ श्रुति नमा प्रभाऊ, कलि विशेष नहिं आन उपाऊ। (मानस)

सन्त तुलसी की उपर्युक्त वाणी देव-वाक्य से तनिक भी कम पूज्य नहीं है यथार्थ में इस कराल कलि में जीवों के उद्धार के लिए कोई अन्य चारा नहीं है। इस कराल कलि-काल की बात ही क्या, अन्य

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

युगों में भी अनेक साधकों ने केवल **नाम–साधना** से जीवन्मुक्ति और सर्वैश्वर्य की सिद्धि प्राप्त की, इसका स्पष्ट उल्लेख अनेक पुराणों और इतिहास ग्रन्थों में भरा है। **'श्रीमद्–भागवत'** का यह वचन तो सभी को विदित ही है –

कृते यद् ध्यायतो विष्णुस्त्रेतायां यजतो मखैः,
द्वापरे परि–चर्य्यायां कलौ तन्नाम–कीर्तनात्।

गोस्वामी तुलसीदास ने भी अपने 'मानस' में इसका पूर्ण समर्थन किया है–

ध्यानु प्रथम जुग मख विधि दूजे। द्वापर परितोषण प्रभु पूजे।।
कलि केवल मलि मूल मलीना। पाप–पयोनिधि जन मन मीना।।
नाम काम तरु काल कराला। सुमिरत समन सकल जंजाला।।

'नाम' की महिमा नामी की महिमा से तनिक भी कम नहीं है, अपितु उससे कहीं बढ़कर है। इस दशा में **नाम का माहात्म्य** हम लोगों के मुँह से तो 'छोटा मुँह बड़ी बात' वाली कहावत चरितार्थ होगी। **'नाम–महिमा'** को गाते हुए सन्त तुलसी ने कहा है–

नाम रूप दुई ईस उपाधी, अकथ अनादि सुसामुझि साधी।।
को बड़ छोट कहत अपराधू, सुनि गुन–भेद समुझहहि साधू।।
देखिहहिं रूप नाम आधीना, रूप ग्यान नहिं नाम बिहीना।।
नाम रूप गति अकथ कहानी, समुझत सुखद न परति बखानी।।
अगुन सगुन बिच नाम सुखाखी, उभय प्रबोधक चतुर दुभाखी।।

यथार्थ में **'नाम–साधना'** ही वह साधना है, जहाँ **निर्गुणोपासक** तथा **सगुणोपासक** एक भूमि पर स्थित होते हे। **पातञ्जलि योग–सूत्र** में भी, जहाँ पर **ईश्वर** को **ॐ–स्वरूप** बताया गया है, वहीं पर उसके वाचक **प्रणव ॐ** के जप का विधान भी है। **साक्षात् वेद भगवान्** ने भी **'नाम–जप'** पर पूर्ण जोर दिया है। देखिए **'यजुर्वेद'**, ४० वाँ अध्याय –

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम्।
ॐ कृतो स्मर कृतं स्मर ॐ कृतो स्मर कृतं स्मर।।

अर्थात् – हे जीवों! इस भौतिक शरीर में केवल प्राण देवता ही अमृत–स्वरूप है, भौतिक शरीर का अन्तिम रूप तो केवल क्षार–ही क्षार है। इसलिए हे जीवों, तुम इस तत्त्व को सदा समझते हुए प्रणव का स्मरण करते रहो और अपने किए हुए कर्मों का स्मरण रखो।

सगुणोपासक पुराणों ने भी **प्रणव** की अनेक व्याख्याएँ की है। एक उद्धरण यहाँ पर देना अनुचित नहीं होगा, देखिए **(देवी भागवत, स्कन्ध ५, अध्याय १, २२, २३)–**

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अकारो भगवान् ब्रह्माऽप्युकारः स्याद्धरिः स्वयम्।
मकारो भगवान् रुद्रोऽप्यर्ध-मात्रा महेश्वरी।
उत्तरोत्तर-भावेनाऽप्युत्तमत्वं स्मृतं बुधैः।।

प्रणव-स्थिता अर्ध-मात्रा रूपा भवानी दुर्गा के नाम की क्या महिमा है, यहाँ यही हमारा विवेच्य विषय है। वैयाकरणों की दृष्टि में शब्द-मात्र ही **'ब्रह्म'**-वाचक है। एक शब्द का भी सम्यक् सु-प्रयोग निःश्रेयस प्रदान करता है। इस सिद्धान्त के अनुसार हम किसी भी शब्द को उससे सम्बन्धित कर सीधे उसके पास पहुँच सकते है, किन्तु इसके लिए **अटल विश्वास** और **अमित श्रद्धा** का होना अनिवार्य है। इसलिए हमारे शास्त्रकारों ने कुछ विशिष्ट शब्दों को विशेष रूप-लीला से सम्बन्धित कर रखा है। **प्रत्येक नाम के पीछे हमारी एक विशेष धारणा** बनी हुई है। अब यहाँ यही विचारना है कि माँ के इस परमप्रिय नाम **'दुर्गा'**-शब्द के पीछे कैसी धारणा है, जिससे **राम, नारायण, कृष्ण, विष्णु, हरि, शिव, शङ्कर** आदि अनेक नाम-माला-मणियों के बीच यह **'दुर्गा'** नाम सुमेरु के समान है। शास्त्रों ने सभी **नामों की महिमा** गाई है, जो अक्षरशः सत्य एवं यथार्थ है। इन माहात्म्यों की तुलना करने पर एक विशेष गुण की विशेषता प्रत्येक नाम के पीछे दिखाई पड़ती है। **'दुर्गा'**-नाम के महिमा-वर्णन में तद्-तद् विशेषताओं का एकीकरण तथा समष्टि-भाव ही इसकी विशेषता है।

माँ का यह नाम **परम अद्भुत** तथा **विचित्र रस को उत्पन्न करने वाला है**। इस नाम से **माँ की सभी लीलाओं तथा सभी रूपों का द्योतन** होता है। यदि **'रमणात् रामः, व्यापनात् विष्णुः, कर्षणात् कृष्णः, शिवत्वात् शिवः'** आदि अनेक विभिन्न **नामों की महिमा,** अपनी विशेषता को लिए हुए है, तो **'दुर्गा'**-नाम के अन्तर्गत इन सभी गुणों का समावेश है। इसीलिए तो **माँ की महिमा** गाते हुए **जगद्-गुरु शङ्कर** ने कहा है-

नहि दुर्गा-समा पूजा, नहि दुर्गा-समो जपः।
नहि दुर्गा-समं ज्ञानं, नहि दुर्गा-समं तपः।।
दुर्गायाश्चरितं यत्र, तत्र कैलाश-मन्दिरम्।। (मुण्डमाला तन्त्र)

अर्थात् माँ के इस नाम का जहाँ गान होता है। वहीं **शिव-कल्याण का निवास-मन्दिर कैलाश** है। फिर **शिव की स्थापना** के बाद अवशिष्ट ही क्या रहा ? माँ के भिन्न-भिन्न नामों की उपासना ताी उच्चारण तद्-तद् प्रवृत्ति के सम्प्रदायानुयायियों के द्वारा होता है, किन्तु समष्टि-गुण से समवेत रहने के कारण **'दुर्गा'-नाम का जप** सभी सम्प्रदाय वालों के लिए उपयोगी है। यह आज्ञा भी **भगवान् शङ्कर** की ही है (मुण्डमाला तन्त्र, तृतीय पटल)-

दुर्गा-स्मरणजं देवि! दुर्गा-स्मरणजं फलम्।
दुर्गायाः स्मरणेनैव, किं न सिद्ध्यति भू-तले।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शैवो वा वैष्णवौ वापि, शाक्तो वा गिरि–नन्दिनि!
भजेद् दुर्गां स्मरेद् दुर्गां, यजेद् दुर्गां शिव–प्रियाम् ।।

जीव के जीवन का परमलक्ष्य–परम सात्त्विकोद्देश्य **'मोक्ष'** प्राप्त करना है। इसका सबसे सरल मार्ग **माँ के नाम की स्मृति** है। तुम्हारे नाम के जापक को **'मोक्ष'**–जैसी दुर्लभ वस्तु भी हस्तामलक है। **भगवान शङ्कर** की उक्ति है –

दुर्गे दुर्गेति दुर्गायाः, दुर्गे–नाम परम् मनुम्।
यो भजेत् सततं चण्डि! जीवन्मुक्तः स मानवः।।

अतएव **'दुर्गा'** जैसे प्रिय **'नाम–जप'** मार्ग को छोड़कर अन्य मार्ग का अवलम्बन करना विडम्बना और मूर्खता ही होगी! माँ के शरणापन्न हुए बिना तो **कैवल्य–पद** पाना बिल्कुल ही असम्भव तथा कठिन है। माँ ही तो वह शक्ति है, जिसके वश में सारा चराचर है। सभी तो उसकी आराधना करते है।

जब **महिषासुर** के प्रबल पराक्रम से सारा संसार अभिभूत हो रहा था और सारा देश, समाज **महिषासुर** से पराजित होकर, स्थान–भ्रष्ट होकर, अपने–अपने अधिकार खोकर विपन्न हो चुके थे। अन्य देवों की क्या गणना, **त्रि–मूर्तियों** की भी हालत बेहाल हो गई थी। उस समय **सब देवों के सम्मिलित शक्ति–पुञ्ज** का जो एकत्रीकरण हुआ, उसी से माँ, तुम **महा–लक्ष्मी**–रूप में प्रकट हुई। **समस्त देवों की शक्ति** तुममें आ मिली और तुमने उस दैत्य का विनाश किया। इसीलिए माँ के पवित्र **'दुर्गा'** नाम लेने पर **सभी नामों का स्मरण** हो जाता है, तुम्हारी भक्ति–पूर्वक पूजा से **सभी की पूजा** हो जाती है। सभी प्रसन्न होकर वर देने के लिए तुमसे पहले ही दौड़ पड़ते हैं।

लोक–पितामह भगवान् ब्रह्मा ने कहा भी है कि वही मनुष्य मुझे सृष्टि–कर्त्ता कहता है, जो तम्हारे तत्त्व को ठीक–ठीक नहीं जानता है। तुम्हारे श्री–चरणों की शरण से विमुख रहकर निरर्थक **अष्टाङ्ग–योग** की चिन्ता में रहता है। माँ, तुमसे युक्त रहने पर ही मैं सृष्टि करने में समर्थ होता हूँ और **नारायण** पालन करने में तथा **शङ्कर** नाश करने में सफल और सक्षम होते है। **'महाकाल–संहिता'** में स्वयं **भगवान्** शङ्कर भी **'साम्राज्या–स्तव'** में कहते है–

भगवान विष्णु अपने भक्तों को लेकर **माँ** के सामने कर–बद्ध उपस्थित है और **माँ** निवेदन करते हैं कि हे **माँ,** यह मेरा अनन्य भक्त है। इसकी वृत्तियाँ सदा मुझमें ही लगी रहती है। मेरा ही नाम रटता रहता है। मैं इससे बहुत प्रसन्न हूँ। अनेक बार मैंने इससे अनेक प्रकार के वरदान माँगने के लिए कहा, किन्तु यह केवल **कैवल्य परम पद** को ही माँगता है, जो तुम्हारे ही हाथ में है। इसलिए कृपा करो, **माता!** इसकी साधना पूर्ण हो। **भगवान् नारायण** की सिफारिश को **माँ** ध्यानपूर्वक सुनती है। उनके मुख–मण्डल पर स्मित–रेखा खिंच आती है और **माँ** उस **नारायण–भक्त** को कैवल्य प्रदान करती है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

परम भक्त शाक्त-शिरोमणि नारायण की सिफारिश को कैसे न सुनती ? कैवल्य प्रदान करती है। परम भक्त की अभीष्ट-दातृ तुमसे बढ़कर दूसरा कौन है ? बाबा औढर-दानी भी तुम्हरी दी हुई-उमा शक्ति के संयोग से आशुतोष एवं औढर-दानी बने हुए हैं। तुमसे हीन वे स्वयं शव है। तुम्हारे संयोग से ही शिव है।''

नारायणादि की उपासना से कैवल्य नहीं मिलता, ऐसी बात उक्त सन्दर्भ से नहीं समझनी चाहिए। उक्त सन्दर्भ से यही समझना चाहिए कि साक्षात् कैवल्य-दात्री एकमात्र माँ ही है और नारायणादि भी माँ कीं कृपा से कैवल्य-पद अपने भक्तों को देते है। इस प्रकार माँ के नाम का गौरव स्पष्ट है। माँ का 'दुर्गा' नाम अन्यायन्य नामों में सुमेरु-मणि है। 'मुण्डमाला तन्त्र' में कहा गया है

विष्णु-नाम-सहस्रेभ्यो, शिव-नामैकमुत्तमं।
शिव-नाम-सहस्रेभ्यो, देवी-नामेकमुत्तमम्।।

सबसे बड़ी बात तो यह है कि माँ, तुम्हारा 'दुर्गा' नाम तुम्हारे सभी लीला-रूप स्वरूप का बोधह है। 'दुर्गा'-नाम लेने से सभी महा-विद्याओं का नामोच्चारण होता है। जिस रूप का उपासक हो, वही रूप 'दुर्गा-दुर्गा' कहने वालों के लिए प्रकट होता है। माँ, तुम्हारी करुणा तो प्रसिद्ध ही है। इसलिए श्रद्धा या अश्रद्धा से किसी भी प्रकार तुम्हारा नाम लेने से परम कल्याण होता है। इस प्रकार 'दुर्गा' जैसे परम पवित्र नाम का माहात्म्य अनन्त है। भगवान् शङ्कर ने भी जितना कहा है, वह भी थोड़ा ही है। फिर भी जैसा भगवान् शङ्कर ने कहा है, उसका कुछ उल्लेख यहाँ किया जाता है-

'सर्व-विपत्ति-समुद्र-संतरण के लिए माँ का 'दुर्गा' नाम नौका के समान है। भय चाहे लौकिक हो या अध्यात्मिक, माँ का नाम ही पार लगाने वाला है। राज्य-कोप में पड़ा हो या अन्य प्रकार की किसी तरह की विपत्ति हो अथवा मनुष्य महान् दरिद्रता के चंगुल में पड़ा हो, माँ के 'दुर्गा'-नाम का एक लक्ष जप करने से सभी प्रकार की विपत्तियों का नाश होता है।' (मुण्डमाला तन्त्र)।

'दुर्गा'-नाम के सदृश दूसरा कोई नाम नहीं है, जिसके स्मरण करने से ही सभी विपत्तियों का विनाश होता है।' (पिच्छला तन्त्र, पूर्व खण्ड, तृतीय पटल)।

श्री भगवान् शिव कहते हैं - 'आरोग्य, सम्पत्ति और ज्ञान के परम उत्कर्ष का 'दुर्गा'-नाम परम कारण है। कलि-युग में तो कहना ही क्या है? महा-पातकियों के भी महान्-से-महान् पाप इस नामोच्चारण से नष्ट हो जाते हैं।'

'रुद्र-यामल तन्त्र' में भगवान् शिव का देवी के प्रति कथन है कि-''इस 'दुर्गा'-नाम के जप की महिमा क्या कहूँ! इसी के जप के प्रभाव से मैं 'पञ्चानन' कहा जाता हूँ। प्रति-दिन पवित्र होकर भक्ति-पूर्वक अष्टोत्तर-शत (१०८ बार) जो कोई इसे जपता है, वह धनी, पुत्रवान्, ज्ञानी तथा चिरञ्जीव होता है।''

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

'हे देवि! **अष्टोत्तर-सहस्र (१००८ बार)** जो कोई भक्ति से प्रति-दिन इसे जपता है, उसके पुण्य फल को सुनो। धनार्थी धन, ज्ञानार्थी ज्ञान प्राप्त करता है, रोगार्त रोग से मुक्त होता है, कैदी बन्धन से मुक्त होता है, डरा हुआ भय से, पापी पाप से मुक्त होता है। एवं पुत्रार्थी पुत्र प्राप्त करता है।'

'हे परमेश्वरि! **दस हजार** जो प्रति-दिन जप करते है, वे निग्रह और अनुग्रह करने में समर्थ हो जाते है। उसके क्रोध में मृत्यु और प्रसन्नता में परिपूर्णता होती है। इसी प्रकार सभी कर्म में वह समर्थ होता है। अभीष्ट पूर्ण करने में वह कल्प-वृक्ष के समान हो जाता है, इसे सत्य ही समझो।'

'हे देवि! प्रत्येक मास में जो **लक्ष संख्या में जप** करता है, उसे ग्रह की पीड़ा नहीं होती। न उसका ऐश्वर्य नष्ट होता है, न उसे सर्प का भय होता है। अग्नि, चोर, अरण्य, जल आदि से भी उसे भय नहीं होता। पर्वतारोहण में सिंह, व्याघ्र, भूत-प्रेत, पिशाच आदि का भय उसे नहीं होता। शत्रु-भय और दुष्ट-भय नहीं होता तथा वह **'दुर्गा'-नाम-जप-कर्त्ता'** स्वर्ग-सुख का अधिकारी होता है। चन्द्र-सूर्य के समान कल्प-पर्यन्त वह द्यौ-लोक में रहता है।'

''**एक सहस्र** वाजपेय यज्ञ करने का फल **'दुर्गा-नाम-जप'** के प्रभाव से मिलता है। **'दुर्गा'-नाम** के सदृश इस संसार में और कोई नाम नहीं है। इसलिए प्रयत्न करके उत्तम साधकों को इस नमा का निरन्तर **'जप'** करना चाहिए। इसके स्मरण मात्र से सभी आपत्तियाँ भाग जाती है।''

'दुर्गा'-नाम के विषय में जो बातें ऊपर कही गई है, वे केवल 'अर्थ-वाद' या प्रशंसा-मात्र नहीं है, अपितु **सर्वथा सत्य** एवं **अनुभव से सिद्ध** है। पुराणों में भी **'दुर्गा-नाम'** के विषय में ऐसा ही कहा गया है। **पद्म-पुराण, पुष्कर-खण्ड** में लिखा है कि -

''मेरु पर्वत के समान महती पाप-राशि भी कात्यायनी दुर्गा भगवती की शरण में आने पर नष्ट हो जाती है। दुर्गार्चन में लगा पुरुष पाप से इस प्रकार निर्लिप्त रहता है, जिस प्रकार जल में कमल रहता हैं।

'दुर्गा'-नाम-सर्वथा सुलभ और महान् फल देने वाला है। इसके जप में अन्य साधनाओं जैसी कोई कठिनता या दुरूहता नहीं है। नियमदि की भी कोई कठिनाई नहीं है, इसलिए **'दुर्गा'-नाम का सदा स्मरण** करते रहना चाहिए।

कराल कलि-काल में जब हमारी सारी आध्यात्मिक साधना के सोपान लड़खड़ा गए है, उस समय हम लोगों को इस सरल सोपान के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय नहीं है। आज यज्ञ-वाद के लिए गुजारा नहीं है और भी साधनाओं का मार्ग कुण्ठित है। समय और हो गया है। **कलि-काल की करालता** कराल रूप से प्रकट हो रही है। इसलिए एक-मात्र इस सरल सोपान से चलकर ही हम अपनी **आत्मिक श्रेय-साधना** कर सकते है। इसी मार्ग से चलकर **पारलौकिक** और **ऐहिलोकिक उन्नति** सिद्ध होगी। अतः **'दुर्गा'** - नाम महामन्त्र की साधना व्यष्टि और समष्टि रूप से चारों ओर अनुष्ठित हो,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सर्वत्र **'श्री दुर्गा, जय दुर्गा, जय दुर्गा'** का नाद गूँज उठे, इसके लिए हम सबको तन-मन-धन से प्रयत्नशील होना ही चाहिए।

सप्तशती अथवा सप्तसती :- भगवान् वेदव्यास ने श्री मार्कण्डेय पुराण के माध्यम से सात सौ मन्त्रों को लोक कल्याणार्थ प्रकट किया है। अतएव इनकी संख्यात्मकता के आधार पर इसे 'सप्तशती' कहा जाता है। इसमें आद्या पराशक्ति दुर्गा की तीनों कलाओं - तमोगुण-स्वामिनी, रजोगुण-स्वामिनी और सत्व-गुण-स्वामिनी - महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती का चरित वर्णित है।

इसे 'सप्तशती' अथवा 'सप्तसती' दोनों ही कहा जाना सार्थक है। चिदम्बर संहिता के अनुसार -

''तस्मिन् देव्याः स्तवे पुण्ये मन्त्राः सप्तशतं शिवे।
तस्मात् सप्तशती नाम स्तवं परम-दुलर्भम्॥''

मेरु तन्त्र 'सप्तसती' नाम की व्याख्या इस प्रकार करता है :-

महाविद्येत्यादि सत्यः सप्त-कल्पे तथादिमे ।
ब्रह्मेन्द्र-गुरु-शुक्राणां विष्णु-रुद्र-सुर-द्विषाम् ॥
उपास्या देवता जातास्ताश्चात्र ब्रह्मणा स्तुता ।
तस्मात् सप्त-सतीत्येव व्यासेन परिकीर्त्तिता ॥

ताश्च आद्य-चरिते :-

१. काली, २. तारा, ३. छिन्नमस्ता, ४. सुमुखी, ५. भुवनेश्वरी, ६. बाला, ७. कुब्जा।

मध्य-चरिते :-

१. लक्ष्मी, २. ललिता, ३. काली; ४. दुर्गा, ५. गायत्री, ६. अरुन्धती, ७. सरस्वती।

उत्तम-चरिते :-

१. नन्दा, २. शताक्षी, ३. शाकम्भरी, ४. भीमा, ५. रक्तदन्तिका, ६. दुर्गा, ७. भ्रामरी।

''या ब्राह्मी आदि चामुण्डान्ताः सप्त-सतयः।''

प्रधान विषय :-

'सप्तशती' में वर्णित माँ भगवती के चरित का क्या अभिप्राय है, यह जानना मनुष्य के लिए तो असम्भव है, क्योंकि स्वयं भगवान् शंकर ने इस चण्डी-स्तव के सम्बन्ध में कहा है -

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

"सप्तशत्याश्च सकल तत्वं वेद्म्यहमेव हि ।
पादोनं श्रीहरिर्वेत्ति वेत्त्यर्द्धं तु प्रजापतिः ।
व्यासस्तुर्य्यांशकं वेत्ति कोट्यंशमितरे जनाः ॥"

अर्थात् 'सप्तशती' का तत्व पूर्णतया केवल मैं (शिव) ही जानता हूँ, श्री विष्णु भगवान् इसके तीन चरण ही जानते है, ब्रह्माजी केवल दो अर्थात् आधा, व्यासदेव केवल एक अर्थात् चौथाई और साधारण मनुष्य केवल करोड़वाँ भाग ही जानते है।

अतः मुझ जैसे अल्पज्ञ का इस विषय में प्रवेश करना मात्र धृष्टता ही है, तथापि **"यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि"** के अनुसार **"या देवी सर्व-भूतेषु बुद्धि-रूपेण संस्थिता"** जगज्जननी भगवती को प्रणाम कर विज्ञ पाठकों को अपना कथ्य निवेदित कर रहा हूँ।

इस परमाराध्य 'सप्तशती' पर जो भी प्रमुख विषय उभर कर दिखाई देते है, वे इस प्रकार है :-

आध्यात्मिक स्वरूप :-

'सप्तशती' का प्रयोग आगमोक्त तथा निगमोक्त अर्थात् तन्त्रोक्त और वेदोक्त दोनों प्रकारों से होता है। ऐसा और कोई स्तव उपलब्ध नहीं है, जो इसके तुल्य[१] आ सके। सर्व-दर्शन-सार, श्रीमद्भगवद्गीता में और इस 'चण्डी-स्तव' में समन्वय का बोध होता है। ऐसा लगता है कि जहाँ गीता दार्शनिक सिद्धान्त-वादिनी है, वहाँ 'सप्तशती' उन्हीं दार्शनिक तत्वों का पौराणिक कथानक के रूप में साधारण जनता तक को ज्ञान देनेवाली है, यहाँ कुछ उदाहरण प्रस्तुत है :-

१. गीता एवं सप्तशती दोनों के श्लोकों की संख्या समान (७००) है।

२. प्रथम चरित में राजा सुरथ के पूछने पर कि महामाया कौन है? मेधा ऋषि कहते है :- **"नित्येव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम्।"**[२] इसकी साम्यता श्रीकृष्ण की इस उक्ति से स्पष्ट होती है – **"मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना"**[३]।

इसी प्रकार की साम्यता **"इत्थं यदा-यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति। तदा तदाऽवतीर्याऽहं करिष्याम्यरि-संक्षयम्॥"**[४] से श्रीमद्भगवद्गीता के **"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत! अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥"**[५] की स्पष्ट है, ऐसे अनेक

---

१. **डामर तन्त्र** :- "नातः परतरं स्तोत्रं किञ्चिदस्ति वरानने!"
२. दुर्गासप्तशती, अध्याय १, श्लोक ५५
३. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय ९, श्लोक ४
४. दुर्गासप्तशती, अध्याय ११, श्लोक ५१
५. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय ४, श्लोक ७

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रसंग और भी गिनाये जा सकते है।

३. गीता एवं सप्तशती के असुरों में भी साम्यता है :-

१. अहंकार[१] – शुम्भ। शुम्भ हिंसायां भावे घज्।
आत्मघ्न द्वैत-भाव-सम्पन्न: अहंकार:॥ (बृहदा० उप०)

२. ममत्व – निशुम्भ

३. काम – रक्त-बीज। रक्तमनुराग: बीजं कारणमस्य।
(रज्यते अनेन इति राग: काम:)

४. क्रोध – धूम्र-लोचन। धूम्र-वर्णं रक्त-कृष्ण-लोचनं यस्य स:।

५. बल – चण्ड। चण्डि कोपे। बलं सामर्थ्यं काम-रागादि-युक्तं।

६. दर्प – मुण्ड। मुण्डि खण्डने।

७. परिग्रह – सुग्रीव।

गीता एवं 'सप्तशती' की साम्यता पर अन्वेषकों को आगे कार्य करना चाहिए। अब चरित-त्रय में वर्णित विषयों की आध्यात्मिक समीक्षा यदि की जाये, तो निम्नांकित तथ्य सामने आते है :-

प्रथम चरित :-

१. मधु-कैटभ के उत्पीड़न के कारण ब्रह्माजी द्वारा परमाद्या शक्ति की स्तुति की गई। तत्पश्चात् महामेधा प्रकट हुई और उन्होंने असुर-द्वय की बुद्धि भ्रष्ट कर दी। इसका सीधा सा अर्थ समझा जा सकता है कि पाशव शक्ति से बुद्धि-शक्ति श्रेष्ठ है तथा भ्रष्ट हो जाने पर व्यक्ति का विनाश ध्रुव है। यथा :- **'स्मृति-भ्रंशाद् बुद्धि-नाशो बुद्धि-नाशात् प्रणश्यति।'**[२]

२. मधु-कैटभ अर्थात् सुकृत और दुष्कृत में निर्ममत्व तथा उसके निर्मूलन के नहीं, नियन्त्रण का प्रयत्न है। ''मधु'' शब्द से कर्म-फल का बोध होता है, जैसा कि कठोपनिषद् भाष्य कहता है – **''मधुमिष्टं कर्म-फलम्।''** गीता में भी यही है :- **''बुद्धि-युक्तो जहातीह उभे सुकृति-दुष्कृते।''**[३]

योग-दर्शन के १४वें और १५वें सूत्र भी यही कहते हैं :- **''ते ह्लाद-परिताप-फला: पुण्यापुण्यहेतुत्वात्। परिणाम-ताप-संस्कार-दु:खैर्गुण-वृत्ति-विरोधाच्च दु:खमेव सर्वं**

१. अहंकार और ममत्व दोनों एक ही शब्द ''अस्मत्'' से उत्पन्न होते है, जैसे शुम्भ और निशुम्भ दोनों सहोदर हैं।

२. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय २, श्लोक ६३

३. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय २ श्लोक ५०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विवेकिनाम्।।''

३. मेधा ऋषि, सुरथ राजा और समाधि वैश्य तीनों स्थूल रूप से ब्राह्मण[१], क्षत्रिय[२] और वैश्य[३] है।

गीता के शंकर-भाष्य के अनुसार ''**मेधया आत्म-ज्ञान-लक्षणया प्रज्ञया**'' अर्थात् ब्राह्मण का नाम मेधा, जो आत्म-ज्ञान-लक्षण से युक्त हो। '**सुरथः**' अर्थात् ''**सुष्ठु रम्यतेऽत्र अतः सत्य-प्रवृति-मार्ग-पथिकः।**'' इसका अर्थ है कि सुरथ उसे कहेंगे, जो सत्य-प्रवृति मार्ग का पथिक हो, वैश्य का नाम है '**समाधि**'[४]। इस शब्द से निवृत्ति-मार्ग के पथिक का बोध होता है। इस प्रकार सत्य-प्रवृत्ति-मार्ग और निवृत्ति-मार्ग के पथिकों अर्थात् जिज्ञासुओं का मेधा की शरण में जाना उपयुक्त ही है।

द्वितीय चरित :-

१. देवासुर-संग्राम (महिष एवं देवताओं के बीच) का तात्पर्य मन एवं बुद्धि के बीच के युद्ध से है। यह द्वन्द्व चिरकाल से चलता आया है।

यथा - ''**द्वौ भूत-सर्गौ लोकेऽस्मिन् दैव आसुर एव च।**''[५]

२. देवी के वाहन सिंह का अर्थ धर्म है। वैकृतिक रहस्य के अनुसार '**सिंहं समग्र-धर्ममीश्वरम्।**' अतएव यह बोध होता है कि परमा शक्ति का वाहन अर्थात् बोध कराने वाला धर्म ही है। अधार्मिक भाव से परा-शक्ति का ज्ञान नहीं हो सकता।

३. महिषासुर के चौदह (सप्त-द्वन्द्व) सेना-नायक युद्ध में लड़े और मारे गये। गीता में भी इन सप्त-द्वन्दों को इस प्रकार बताया है - **१. सुख-दुःख, २. प्रिय-अप्रिय, ३. निन्दा-स्तुति, ४. मान-अपमान, ५. मित्र-शत्रु, ६. हर्ष-विषाद, ७. ऐश्वर्य-अनैश्वर्य।**

इन द्वन्दों से उपरत हुए बिना परा-शक्ति का अनुभव होना असंभव है। महिषासुर पर कृपा करके भगवती उसके सेना-रूपी पूर्व-कृत कर्म का सम्यक् प्रकार से क्षय करके उसकी मुक्ति की कामना हृदय में रखकर उसका नाश (अविद्या-युक्त रूप से विद्या-युक्त रूप में परिवर्तित) करती है। यह गीता के इस कथन से पूर्णतः सिद्ध होता है -

---

१. ''ब्रह्म जानाति इति ब्राह्मणः।''
२. ''क्षरति रक्षति जनान् क्षतान् त्रायते, इति वा।''
३. ''वेदाध्ययन-सम्पन्नः सः वैश्य इति संज्ञितः।''
४. ''समाधीयतेऽस्मिन् पुरुषोपभोगाय सर्वम् इति समाधिः।
समः सर्व-पर्यायः आधिः मनो-व्यथा यस्याऽसौ समाधिः।।''
५. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय १६, श्लोक ६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अशास्त्र-विहितं घोरं तप्यन्ते ये तपोजनाः,
दम्भाऽहंकार-संयुक्ताः काम-राग-बलान्विताः।
कर्षयन्तः शरीरस्थं भूत-ग्रामचेतसः,
मां चैवान्तः शरीरस्थं तान् विद्ध्यासुर-निश्चयान्।।

तृतीय चरित :-

१. इसमें स्थल-युद्ध एवं आकाश-युद्ध का वर्णन है। इसी प्रकार व्यष्टि में मूलाधार-चक्र (पृथ्वी-तत्व) से विशुद्धि-चक्र (आकाश-तत्व) तक युद्ध होता है और इसमें विजयी ही आज्ञा चक्र की स्थिति में पहुँचता है। इसके बाद सहस्रार तक पहुँचने में कोई रूकावट नहीं होती है, इसका रहस्य तो योगी ही उद्घाटित कर सकता है।

२. इस चरित से यह भी निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सात्विक उपासना का फल अति हितकर होता है। सद्भावाश्रितों की विजय असद्भावाश्रितों पर निश्चित रूप से होती है।

३. सारा जगत् भगवती से ओत-प्रोत है। उसके अतिरिक्त किसी की भी सत्ता इस संसार में नहीं है, इसकी पुष्टि शुम्भ एवं भगवती के संवाद से होती है। भगवती का यह कथन कि **'अरे, ये मेरी विभूतियाँ है, वास्तव में मैं एक ही हूँ'** ध्यान देने योग्य है।

सप्तशती और चक्र व्यवस्था :-

श्रीमद् आद्यशंकराचार्य विरचित **'दण्डैश्वर्य-विधान'** में प्रणव की मात्राओं (अकार, उकार, मकार) का वर्णन किया है। अकार में विशुद्ध, अनाहत और स्वाधिष्ठान-चक्र समाहित होते है, उकार में मणिपूर, मूलाधार एवं आज्ञा-चक्र सन्निविष्ट है। मकार में अनाहत और मणिपूर, मणिपूर और स्वाधिष्ठान, स्वाधिष्ठान और विशुद्ध, विशुद्ध और अनाहत का समावेश होता है। इस अन्तिम उपाम्नाय में ही सम्पूर्ण सप्तशती का वर्णन हुआ है।

प्रत्येक चक्र आम्नाय का पर्यायवाची संकेत है। जैसे मूलाधार को अधर-आम्नाय या पातालाम्नाय भी कहा जाता है। स्वाधिष्ठान चक्र पूर्वाम्नाय का पर्यायवाची है। मणिपूर चक्र एवं दक्षिणाम्नाय एक ही है। अनाहत चक्र एवं पश्चिमाम्नाय में कोई अन्तर नहीं है। विशुद्ध उत्तराम्नाय का दूसरा नाम है। आज्ञा-चक्र ऊर्ध्वाम्नाय है। इन्हीं छः चक्रों को भगवान् शिव के छः मुख कहा गया है। जब भी एक साथ दो मुखों से जो मन्त्र अथवा ध्यान उत्पन्न हुआ, तो वह एक तृतीय नाम (दोनों मुखों का मिश्रित) बन गया। इन्हें यों भी समझा जा सकता है कि दो चक्रों से मिलकर तीसरे चक्र का निर्माण होता है। इस प्रकार तृतीय चक्र में अपने पूर्व के दोनों चक्रों की विशेषताएँ अवस्थित रहती है। इसे गणितीय भाषा में इस प्रकार भी समझा जा सकता है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विशुद्ध (उत्तर) + स्वाधिष्ठान (पूर्व) = अधोमुख स्वाधिष्ठान = ईशानाम्नाय – महाकाली
मणिपूर (दक्षिण) + स्वाधिष्ठान (पूर्व) = अधो – मणिपूर = आग्नेयाम्नाय – महालक्ष्मी
अनाहत (पश्चिम) + मणिपूर (दक्षिण) = अधो – अनाहत = नैऋत्याम्नाय – चामुण्डा भद्रकाली
विशुद्ध (उत्तर) + अनाहत (पश्चिम) = अधो – विशुद्ध = वायव्याम्नाय – महासरस्वती

उक्त व्यवस्था का अध्ययन करने के पश्चात् यदि 'सप्तशती' से तुलना की जाये, तो अत्यधिक साम्यता दिखाई देती है। देवी के तीन चरितों का वर्णन 'सप्तशती' में है। ईशानाम्नाय की नायिका महाकाली प्रथम अध्याय में वर्णित है। यह शुद्ध-सत्वा देवी है। मन्त्र, ऐश्वर्य एवं पूर्ण-सात्विकता के गुणों से 'सप्तशती' का आरम्भ होता है। मोटी भाषा में कहा जाए, तो यों समझना होगा कि उपासना की पृष्ठ-भूमि सात्विक होना अपेक्षित है। वैसे भी शुद्ध सात्विक आज्ञा-चक्र का लक्षण है तथा उसका प्रतिबिम्ब स्वाधिष्ठान पर पड़ता है अर्थात् सात्विकता का उदय अधोमुख स्वाधिष्ठान से होता है तथा उसकी पूर्णता आज्ञा-चक्र में होती है। अतः प्रथम चरित पूर्णतः शारीरिक विज्ञान पर आधारित चक्रों की व्यवस्था के सर्वथा अनुकूल सिद्ध होता है।

द्वितीय चरित गुणों (अर्थात् सत्व, रज, तम) को समाहित किये है। इसमें अधोमुख मणिपूर की नायिका महालक्ष्मी का चरित वर्णित है। दूसरे से चौथे तक कुल मिलाकर तीन अध्याय है और तीनों गुण इसमें वर्णित है। महालक्ष्मी अधोमुख-मणिपूर की अधिष्ठात्री देवी हैं अर्थात् तेज (मणिपूर-दक्षिण) एवं जल (स्वाधिष्ठान-पूर्व) का सम्मिश्रण है। तेज एवं जल-सम्बन्धी सारी उपलब्धियाँ इस चरित द्वारा उपलब्ध होती है।

तृतीय चरित में जो तीनों गुणों की विवेचना इस प्रकार है :-

सत्व में	:-	सत्व-सत्व,	सत्व-रज,	सत्व-तम
रज में	:-	रज-सत्व,	रज-रज,	रज-तम
तम में	:-	तम-सत्व,	तम-रज,	तम-तम

अधोमुख + अनाहत (तेज + वायु) अथवा मणिपूर + अनाहत (पश्चिम + दक्षिण) एवं अधोमुख + विशुद्ध (आकाश + वायु अथवा विशुद्ध + अनाहत – उत्तर + पश्चिम) दोनों की विशेषताएँ अध्याय ५ से लेकर १३ तक वर्णित है। चामुण्डा भद्रकाली असीम तेज (वायु + तेज) एवं वेग की स्वामिनी है। महासरस्वती (वायु + आकाश) चिद्-रूपा एवं जगत्-व्यापिनी महामाया है। साधना की सर्वोत्कृष्ट स्थिति उक्त दोनों चक्रों के विकसित होने पर रहती है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि साधना की सीढ़ियों की स्थितियाँ एवं उपलब्धियाँ इन चरित-त्रय से उपलब्ध हो सकती है। 'सप्तशती' के प्रच्छन्न बीजों का पाठ करने वालेपर यह प्रभाव पड़ता है कि उसके शरीर में चक्र स्वतः विकसित होते जाते है और साधक उत्तरोत्तर त्वरित गति

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

से अपने गन्तव्य की ओर बढ़ता जाता है अर्थात् कुण्डलिनी-जागरण की प्रक्रिया शुद्ध एवं सात्विक विधि से पाठ करने पर अपने आप पूरी होती जाती है और साधक अपनी आत्मिक उन्नति की ओर अग्रसर होता जाता है। 'सप्तशती' के सम्बन्धित चक्रों का चिन्तन करते हुए चरितों का ध्यानपूर्वक पाठ करने से साधक का आध्यात्मिक जागरण सहज में ही होकर सारी प्रक्रियाएँ सद्यः फलदायिनी हो जाती है।[१]

सप्तशती के देवताओं का परिचय :-

इस ग्रन्थ में तेरह अध्याय एवं तीन चरित (प्रथम, मध्यम व उत्तम) है। कवच-रहस्यादि इसके शास्त्रीय सहयोगी अंग है। निगमागमों का सार ही इन श्लोकों में उपनिबद्ध है तथा पुरुषार्थ-चतुष्टय की प्राप्ति ही इसका फल है।

इस ग्रन्थ के प्रथम अध्याय में महाकाली अधिदेवता है, जो पूर्वाम्नाय एवं उत्तराम्नाय का ही मिश्रित रूप है। प्रथम चरित में इन्हीं का ध्यान किया जाता हैं।

द्वितीय अध्याय की अधिदेवता आग्नेयाम्नायात्मिका महालक्ष्मी है, जो पूर्वाम्नाय एवं दक्षिणाम्नाय का मिश्रित रूप हैं।

तृतीय अध्याय की अधिदेवता ऊर्ध्वाम्नायात्मिका भैरवी देवी हैं।

चतुर्थ अध्याय की अधिदेवता सर्वाम्नायात्मिका जय-दुर्गा देवी हैं।

पञ्चम अध्याय की अधिदेवता महासरस्वती है, पश्चिमाम्नाय एवं उत्तराम्नाय का मिश्रित रूप है। इन्हें ही वायव्याम्नायात्मिका भी कहा गया हैं।

छठे अध्याय की अधिदेवता अधराम्नायात्मिका पद्मावती (धूमावती) देवी हैं।

सप्तम अध्याय की अधिदेवता पश्चिमाम्नायात्मिका मातङ्गी देवी हैं।

अष्टम अध्याय की अधिदेवता ऊर्ध्वाम्नायात्मिका भवानी है।

नवम अध्याय की अधिदेवता ऊर्ध्वाम्नायात्मिका अर्द्ध-नारीश्वरी देवी है।

दशम अध्याय की अधिदेवता ऊर्ध्वाम्नायात्मिका कामेश्वरी देवी है।

एकादश अध्याय की अधिदेवता पूर्वाम्नायात्मिका भुवनेश्वरी देवी है।

द्वादश अध्याय की अधिदेवता सर्वाम्नायात्मिका आग्नेय दुर्गा देवी है।

त्रयोदश अध्याय की अधिदेवता त्रिपुर-सुन्दरी अधिष्ठात्री सर्वाम्नायात्मिका होती हुई ऊर्ध्वाम्नायात्मिका बन कर पश्चिमाम्नायात्मिका देवी बनती है, जिनका न्यास, ध्यान, पूजा पश्चिमाम्नायात्मिका है। सम्पूर्ण 'सप्तशती' को ही पश्चिमाम्नायात्मिका कहा गया है।

---

१. इस विषय में आदि शंकराचार्य ने **'दण्डैश्वर्य-ग्रहण-विधान पद्धति'** में कुण्डलिनी-जागरण का विशद विवेचन किया है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अब तीनों चरितों के सम्बन्ध में संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है। मरीचि-तन्त्र में लिखा है कि "**चरिते-चरिते राजन्! जपेन्मन्त्रं नवाक्षरम्।**" इस पर भी विचार करना आवश्यक है, विद्वान् साधकों एवं पाठकों के समक्ष इसी विषय का प्रतिपादन कर रहे है।

'सप्तशती' के प्रथत चरित में मधु-कैटभ-वध एवं ब्रह्मा जी की स्तुति का वर्णन है। इसकी अधिष्ठात्री शक्ति दश-वक्त्रा महाकाली है। इन्हें ईशानाम्नायात्मिका नवाक्षरी विद्या भी कहते है। ईशानाम्नाय की सहयोगिनी ही पूर्वाम्नायात्मिका सप्ताक्षरी रक्त-दन्तिका एवं एकादशाक्षरी सिद्ध-लक्ष्मी है तथा उत्तराम्नायात्मिका चतुर्दशाक्षरी पञ्च-वक्त्रा महाकाली है। पूर्वाम्नायात्मिका रक्त-दन्तिका है, जो सप्ताक्षरी है।

यह साधकों के लिए मन्त्र-सिद्धि एवं सहयोग तथा ऐश्वर्य-प्रदात्री हैं। पूर्वाम्नायात्मिका एकादशाक्षरी सिद्ध-लक्ष्मी ज्ञान, योग एवं ऐश्वर्य प्रदात्री है। यह एकादशाक्षरी परम ज्ञान से युक्त होने के कारण दिव्य यज्ञार्थ ज्ञान द्वारा एकादश इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कराती हैं।

यह सिद्ध-लक्ष्मी पञ्चानना एवं चतुर्मुखा है एवं चतुर्भुजा, षड्-भुजा, अष्ट-भुजा है। इन भुजाओं में सुशोभित जो इनके आयुध हैं, वे भक्तो के अभीष्ट-प्रदायक है। दश-वक्त्रा महा-काली के आयुध दक्षिणहस्त से अधः क्रमानुसार – १. खड्ग, २. बाण, ३. गदा, ४. शूल, ५. चक्र, ६. शंख, ७. भुशुण्डि, ८. परिघ, ९. चाप और १०. शिर है।

सिद्ध-लक्ष्मी का ध्यान तीन प्रकार से दिया गया है। जब रक्त-दन्तिका के साथ इनका ध्यान होगा, तब पञ्च-वक्त्रा महाकाली, एकमुख रक्त-दन्तिका एवं चतुर्मुख सिद्धलक्ष्मी की पूजा होती है। जब केवल सिद्धलक्ष्मी एवं पञ्चवक्त्रा काली होंगी, तब मन्त्र नवाक्षरी पञ्चमुखी हो जाएगा। साधकों के लिए यह जानना आवश्यक है कि किस समय हम पञ्चमुखी का प्रयोग करें एवं किस समय चतुर्मुखी का।

पञ्चवक्त्रा महाकाली ज्ञान को सुदृढ़ बनानेवाली, मन्त्र-सिद्ध-दात्री एवं ऐश्वर्य-प्रदान-कर्त्री है। चार मुखवाली सिद्धिलक्ष्मी, एक-मुखवाली रक्त-दन्तिका एवं पञ्च-वक्त्रा महा-काली के मिलने से यह देवी दश-मुखवाली कहलायीं। इनमें पाँच मुख पूर्वाम्नायात्मिका के एवं पाँच मुख उत्तराम्नायात्मिका के हैं। यह नवाक्षरी मन्त्र है। इसी को प्रथम चरित का नवार्ण कहते है। इनका शिव षडक्षर है। इसका विशेष ज्ञान गुरु-मुख से दीक्षित व्यक्ति को लेना चाहिए।

यह विशेष ज्ञातव्य है कि इस चरित का शारीरिक रचना-विशेष से भी सम्बन्ध है। यह कर्म-काण्ड का प्रतीक है, जो व्यक्ति इस रहस्य का समझ-बूझकर इसका पाठ करता है, उसे दिव्य अनुभव-युक्त ज्ञान-विज्ञान अवश्य ही प्राप्त होता है तथा उसका नाड़ी-संस्थान शुद्ध एव दिव्य हो जाता है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अकार के १८ भेद है। प्राय: सभी व्यक्ति इन अक्षरों का किसी न किसी रूप में उच्चारण करते है, परन्तु ज्ञान न होने के कारण वे इनके यथार्थ स्वरूप को नहीं पहचानते है। यही स्थिति इस सम्बन्ध में साधक की भी है।

मध्यम चरित महिषासुर-वध के वर्णन से सम्बन्धित है। महिषासुर साक्षात् शिव रम्भासुर का पुत्र था। रम्भासुर ने घोर तप करके शिव को प्रसन्न किया था तथा स्व-सदृश पुत्र-प्राप्ति का वरदान मांगा था। तब महिषी के गर्भ से शिव स्वयं आविर्भूत हुये थे। तदनन्तर महिषासुर ने उग्र तप करके ब्रह्माजी से वर मांगा था कि नारी के अतिरिक्त किसी से भी मेरी मृत्यु न हो। वर प्राप्ति से मदोन्मत्त होकर इन्द्रादि देवताओं को पदच्युत कर वह स्वयं इन्द्रासन ग्रहण करने का प्रयत्न करने लगा। महा-माया भगवती इस राक्षस का संहार करने के लिए महिषासुर-मर्दिनी के रूप में स्वयं अवतरित हुई तथा एक समय महालक्ष्मी, एक समय उग्र-चण्डा तथा एक समय कात्यायनी बनीं।

ये आग्नेयात्मिका है। आग्नेयाम्नाय, दक्षिणाम्नाय एवं पूर्वाम्नाय के योग से कोणात्मिका सिद्ध होती हैं। दक्षिणाम्नायात्मिका चतुस्त्रिंशाक्षरा बगलामुखी और पूर्वाम्नायात्मिका सप्तविंशति-अक्षरात्मिका कमला महालक्ष्मी ही प्रधान है। इस प्रकार दोनों के योग से आग्नेयात्मिका नवार्ण महालक्ष्मी बनती है। महालक्ष्मी अठारह भुजा की है। इसके आयुध (बगलामुखी के ८ आयुध एवं कमला महालक्ष्मी के १० आयुध मिलकर १८ हुए) दक्षिणहस्त से अध: क्रमानुसार -

'अक्षमाला-चक्र-कमलं वाणौ असि कुलिशं गदा।
त्रिशूलं परशुः चक्र-शंखौ घण्टा च पाशकः।
शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पान-पात्रं कमण्डलुः।'

उत्तम चरित को भी विद्वज्जन प्रथम और मध्यम चरित के सदृश्य ही समझ लेवें। महासरस्वती इसकी वायव्याम्नायात्मिका नायिका है। यह पश्चिमाम्नाय एवं उत्तराम्नाय के योग से बनती है। वायव्याम्नायात्मिका महा-सरस्वती में नैऋत्याम्नायात्मिका चामुण्डा भद्र-काली अन्तर्लीन व अन्तर्भूत है। दक्षिणाम्नायात्मिका तारा, पश्चिमाम्नायात्मिका मोहिनी मातङ्गी सरस्वती ये दोनों मिलकर नैऋत्याम्नायात्मिका चामुण्डा भद्रकाली है, जो महा-सरस्वती से समष्टि होती है। ब्राह्मी, वैष्णवी, ऐन्द्री, कौमारी, वाराही, नारसिंही और चामुण्डा ये सात शक्तियाँ है।

इसमें जो नवार्ण है, उसकी शक्ति चामुण्डा नवाक्षरी अष्टादश-भुजा, उग्र-चण्डा द्वा-त्रिंशदक्षरात्मिका हैं। दश-भुजा कात्यायनी एक-विंशति एवं अष्टादशाक्षरात्मिका हैं। षोडश-भुजा भद्र-काली द्वा-त्रिंशद् व अष्टा-विंशति अक्षरात्मिका हैं। श्री-कल्प में उग्र-चण्डा व काली-कल्प में भद्र-काली की पूजा होती है। कात्यायनी दुर्गा-कल्प में पूजा होती है। वैसे ये तीनों दुर्गा ही हैं।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रथम चरित-ईशानाम्नायात्मिका

सिद्ध लक्ष्मी	+ पञ्च-वक्त्रा	+ महा-काली	+ रक्तदन्तिका महा-काली	=	कुल
११	+ १४	+ ७	+ ९	=	४१

मध्य चरित-आग्नेयाम्नायात्मिका

बगला	+ कमला	+ महालक्ष्मी	=	कुल
३४	+ २७	+ ९	=	७०

उत्तम चरित-वायव्याम्नायात्मिका

छिन्नमस्ता	+ भद्रकाली	+ चण्ड मातंगी	+ महाहसरस्वती	=	कुल
६	+ १४	+ १५	+ ९	=	४४
नैर्ऋत	+ मोहिनी मातङ्गी सरस्वती तारा		+ चामुण्डा भद्रकाली	=	कुल
९	+ १२		+ ९	=	३०

पश्चिमाम्नायात्मिका के बाह्य-याग, दक्षिणाम्नायके अन्तर्याग में नैर्ऋत-आम्नाय की पूजा होती है, परन्तु इसमें क्षुद्र-विद्या होने के कारण अन्तर्याग नहीं किया जाता। इसकी समष्टि वायव्याम्नाय में ही होती है। इसी प्रकार दक्षिणाम्नाय के बाह्ययाग, पूर्वाम्नाय के अन्तर्याग, पश्चिम के अन्तर्याग से सप्तशती की पूजा होती है।

अन्तर्याग-बाह्य-याग की सूक्ष्म दिग्दर्शन-विधि –

कनिष्ठा-अधराम्नाय, अनामिका-पूर्वाम्नाय, मध्यमा-दक्षिणाम्नाय

तर्जनी-पश्चिमाम्नाय, अङ्गुष्ठ-उत्तराम्नाय, मणिबन्ध-ऊर्ध्वाम्नाय।

यथा :-

पूर्वाम्नाय के अन्तर्याग में, पूर्वाम्नाय के मन्त्र के द्वारा पूर्वाम्नाय के चक्रों से प्रारम्भ कर सभी चक्रों में न्यास एवं मन्त्र-चिन्तन करें।

दक्षिणाम्नाय के बाह्य-याग में कर-न्यास, हृदयादि-न्यास, दक्षिणाम्नाय के मन्त्र से होगा। तदनन्तर आग्नेयात्मिका नायिका का न्यास एवं ध्यान अधोमुख-मणिपूर में करके पाठ प्रारम्भ किया जाये। इस प्रकार सभी उपाम्नायों का (जो दो आम्नायों से मिलकर बनें हैं) न्यास एवं ध्यान करके पाठारम्भ करना चाहिए।

इस चिन्तन से सभी विद्याओं का साक्षात्कार होता है और वे अपनी रहस्यमय गुत्थियों को सुलझाकर साधक को आगे ले जाती है। इन गुत्थियों को सुलझाने के सम्बन्ध में स्वयं भगवती ने

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गुह्यतम रहस्य को प्रकट किया है।[१]

इस प्रकार सप्तशती में ईशाम्नाय के ४१ मन्त्राक्षर, आग्नेयाम्नाय के ७०, नैऋत्याम्नाय के ३० और वायव्याम्नाय के ४४ है। सात-सात शक्तियाँ और उनके मन्त्राक्षर - भ्रामरी, शाकम्भरी, भीमा, नन्दा, रक्त-दन्तिका, दुर्गा, भुवना। इनके अतिरिक्त महामाया, महाकाली, महामारी, क्षुधा, तृष्णा, एक-वीरा इत्यादि को रहस्य-त्रयादि में स्पष्ट देखें। इत्यादि सहयोगी देवियों के मण्डल के मन्त्रों के बीजाक्षर मिलकर १००० मन्त्राक्षर बनते है। इन सभी अक्षरों को भगवान् व्यास जी ने यथावत् तत्-तत् स्थान पर गुप्तरूप से स्थापित किया है। ये १३ अध्याय सहस्राक्षरा-गर्भित 'सप्तशती' साक्षात् जगदम्बा, पराम्बा एवं चिदम्बा ही हैं।

नवार्ण वर्णन :-

इस 'सप्तशती' में नवार्ण मन्त्र की प्रधानता है। प्रथम चरित का 'महाकाली-नवार्ण' कहलाता है। यह नव-अक्षरात्मक है। इसका रुद्र भैरव है, जो षडक्षर-मन्त्रवाला है।

द्वितीय चरित (मध्यम) का 'महालक्ष्मी नवार्ण' है, जो ९ अक्षरों का है। इसका विष्णु भैरव है, जो अष्टाक्षर है।

उत्तम चरित का ब्रह्मा भैरव है, जिसका षडक्षर मन्त्र है। 'महा-सरस्वती नवार्ण' है।

समष्टि-नवार्ण जो उपाम्नायेश्वरी पश्चिमाम्नायात्मिका त्रिशक्ति चामुण्डा है, ९ अक्षरों वाला है। इसका भैरव भीषण है, जिसका दशाक्षर मन्त्र है।

'सप्तशती' के चार उपाम्नायों में ९-९ अक्षर वाले नवार्ण हैं। एक समष्टि-नवार्ण है। इस प्रकार सम्पूर्ण 'सप्तशती' का ४५ अक्षरों वाला नवार्ण समष्टि बनता है। विद्वान् साधक **'चरिते चरिते राजन्! पठेन्मन्त्रं नवाक्षरम्'** का विचार करते हुए भगवती के उपासकों का यह रहस्य बताकर अनुग्रहीत करें।

सप्तशती पाठ :-

'पुस्तक-पूजा' पूजा का अङ्ग है। यथा - **''पुस्तक पूजयेद् भक्त्या त्वरित-फल-सिद्धये।''**

पाठ विधि :- इस सम्बन्ध में कोई इस ग्रन्थ के २४, कोई ३० और कोई ५९ अंग मानते

१. अधोमुख स्वाधिष्ठान ईशानाम्नाय-नायिका का स्थान है एवं अधोमुख मणिपूर-चक्र आग्नेयाम्नाय-नायिका का स्थान है। अधोमुख अनाहत नैऋत्याम्नाय-नायिका का स्थान है। अधोमुख वायव्याम्नाय-नायिका का स्थान है। इन चारों चक्रों की समष्टि ललना-चक्र में होती है। **:- यति-दण्डैश्वर्य-विधान**

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

है। वैसे सप्तशती के पाठ के पूर्व कवचादि[१] करके मध्य में १३ अध्यायात्मिका सप्तशती का पाठ कर त्रि-रहस्यादि का पाठ करना ही पाठ-विधि मानते है। इस सम्बन्ध में हर-गौरी संवाद में कहा गया है कि दुर्गा के २४ अङ्ग है :-

कवचं ह्यर्गला चैव कीलकं च तथैव च त्रि-सूक्तं त्रि-रहस्यं च आपदुद्धारकं तथा। कुञ्जिका त्रि-दशाध्यायाः दुर्गाङ्गानि इमानि वै।

त्रिशक्ति-चामुण्डा जप-विधान :-

''शतमादौ शत चान्ते जपेन्मन्त्रं नवार्णकम्।
चण्डीं सप्तशतीं मध्ये सम्पुटोऽमयुदाहृतः॥''

चरित-त्रय जप विधान :-

''चरिते चरिते राजन् जपेन्मन्त्रं नवाक्षरम्।
शतमादौ शतं चान्ते विधानेन तु सुव्रत।।
बीजं विना महा-स्तोत्रं न सिद्ध्यति कदाचन।
तस्मात् सर्व-प्रयत्नेन बीज-युक्तं सदा-पठेत्॥''
''अङ्ग-हीनों यथा देही सर्व-कर्मसु न क्षमः॥''

यहाँ यह कहना भी अप्रासाङ्गिक नहीं होगा कि गोंडल से प्रकाशित ''श्री दुर्गा सप्तशती'' (द्वितीय संस्करण सम्वत् १९९२) में षोडशाङ्गों का विवरण दिया गया है। उन सभी अङ्गों का समावेश इस ग्रन्थ में दिये गये २४ अङ्गों में हो जाता है। इसी प्रकार उक्त ''**सप्तशती**'' में ७०० मन्त्रों को दिया गया है जबकि ''**श्री दुर्गार्चन-सृति**'' (प्रकाशित १९३४) में ७०० मन्त्रों को यथावत् न देकर परिशिष्ट में दिया गया है। ''**प्रस्तुत ग्रन्थ**'' में उन ७०० मन्त्रों को जहाँ होना चाहिए, वहीं दिया गया है।

अन्तर्याग और बहिर्याग के साथ-साथ प्रत्येक आम्नाय के महा-षोढा-न्यास का विधान भी इस ग्रन्थ में दिया गया है, जिसे अवश्य ही किया जाना चाहिए। ये सभी न्यास, न्यासाङ्ग में दिये गये है। यथा - ''**न्यासो ध्याना ..... सप्ताङ्ग-राजमुच्यते।**''

---

१. अर्गलं कीलकं चादौ पठित्वा कवचं पठेत्।
जपेत् सप्तशतीं पश्चात् सिद्धि-कामेन मन्त्रिणा॥ **:- चिदम्बर संहिता**
अर्गला दुरितं हन्ति कीलकं फलदं भवेत्। कवचं रक्षयेन्नित्यं तस्मादेतत् त्रयं पठेत्॥
कवचं बीजमादिष्टमर्गला शक्तिरुच्यते।
कीलकं कीलकं प्राहुः सप्तशत्या महा-मनोः॥ **:- योग-रत्नावली**
रात्रि-सूक्तं जपेदादौ मध्ये सप्तशती-स्तवम्। प्रान्ते तु जपनीयं वै देवी-सूक्तमिति क्रमः॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रस्तुत ग्रन्थ में कवच, अर्गला, कीलक, त्रिसूक्त, त्रिरहस्य, आपदुद्धारक, कुञ्जिका, न्यास (महा-षोढ़ा-न्यास सहित), ध्यान आवाहन, दल, हृदय, उत्कीलन एवं १३ अध्याय - ये सभी अङ्ग है।

पश्चिमाम्नायात्मिका का बहिर्न्यास (३) तथा दक्षिण आम्नाय का न्यास (३) चक्रों में होता है। यह नैऋत्याम्नाय का एक महा-षोढा-न्यास हुआ। इसी प्रकार अन्य आम्नायों के विषय में समझ लेना चाहिए। प्रत्येक आम्नाय मे तीन-तीन अन्तर्बाह्य न्यास किये जाने चाहिए।

न्यासो ध्यानावाहने च नाम-सूक्तानि चाप्यनु।
दलं च हृदयं चैव कवचार्गलं-कीलकम्।।
दशाङ्गमेतद् विज्ञेयमिति ग्राह्यं सनातनम्।
दशाङ्गानि च जप्त्वा तु पश्चात् सप्तशतीं पठेत्।।
स्वाम्यमात्यश्च राष्ट्रं च दुर्गं कोशो बलं सुहृद्।
परस्परोपकारीदं सप्ताङ्ग राज्यमुच्यते।।

अत: पाठ-क्रम इस प्रकार होना चाहिए - १. सङ्कल्प, २. शापोद्धार, ३. उत्कीलन, ४. न्यास, ५. कवचार्गला-कीलक, ६. नवार्ण, ७, रात्रिसूक्त, ८. दल, ९. हृदय, १०. तेरह अध्याय (सप्तशती), ११. देवी-सूक्त, १२. रहस्य-त्रय, १३. क्षमा-याचना।

प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रत्येक श्लोक (मूल ७००) के साथ बीज-मन्त्र भी दिये गये है, जो कि हवन के समय प्रत्येक श्लोक के साथ जोड़कर प्रयोग में लाये जाते है।

सप्तशती के पाठ में ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यासियों के लिए सृष्टि-क्रम पाठ, स्थिति क्रम पाठ, लय क्रम पाठ आदि क्रम से पाठ करने की भी व्यवस्था है।[१]

इस प्रकार 'सप्तशती' में सभी महाविद्या, सिद्धविद्या, उपविद्या एवं अन्तरङ्ग शक्ति व उनके उत्कर्ष, गौरव, बल, प्रताप, करुणादि मातृ-गुण-गणों का शास्त्रीय विधि से परिचय दिया गया है, जिसके पूजा-पाठ से भक्त-गण स्वयं निर्भय हो स्वयं को चतुर्विध पुरुषार्थ का अधिकारी मानता है।

'सप्तशती' को गुरु से दीक्षा प्राप्त करके गुरु-मुख से पढ़कर पाठारम्भ करें। 'सप्तशती' के पाठ में 'इति', 'वध', 'आदि' और 'अध्याय' बोलने का निषेध किया गया है।

---

१. सृष्टि क्रम (ब्रह्मचारी हेतु/प्रात: काल) :- सावर्णि: सूर्य्य-तनयो सावर्णिर्भविता मनु:।
स्थिति क्रम (गृहस्थ हेतु/मध्याह्न) :- पुरा शुम्भ-निशुम्भाभ्याम् यथा-वत् कथयामि ते।
लय क्रम (वानप्रस्थ/सन्यासियों हेतु/सायंकाल) :- सावर्णिर्भविता मनु: सावर्णि: सूर्य्य-तनयो।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इति शब्दो हरेल्लक्ष्मीं वधः कुल-विनाशकः।
अध्यायो हरते प्राणान् मार्कण्डेयादिकं वदेत्।।

यद्यपि विगत वर्षों से 'सप्तशती' के विभिन्न संस्करण विभिन्न स्थानों से प्राप्त हुए है, उनमें पूरे ७०० श्लोक नहीं मिलते है, जबकि मार्कण्डेय पुराण में पूरे ७०० श्लोक उपलब्ध है। पाठ के आदि-अन्त में जो अनिवार्य रूप से पठनीय सूक्त एवं ध्यान आदि है, उनका बिल्कुल ही लोप सा हो गया है। तान्त्रिक ग्रन्थों के अनुसार 'सप्तशती' का पाठ जैसा किया जाना चाहिए, वह आज नहीं किया जाता। 'सप्तशती' के पाठ में आम्नायों का बहुत महत्व है :-

मम पञ्च-मुखेभ्यश्च पञ्चाम्नायाः समुद्गताः,
पूर्वश्च पश्चिमश्चैव दक्षिणश्चोत्तरस्तथा,
ऊर्ध्वामनायश्च पञ्चैते मोक्ष-मार्ग-प्रदायकाः।
पूर्वाम्नायः सृष्टि-रूपः स्थिति-रूपश्च दक्षिणः,
संहारः पश्चिमो ज्ञेयो ह्यन्तर्लीनस्तथोत्तरः,
ऊर्ध्वश्चानुग्रहो ज्ञेयश्चाधो विश्रान्तिको भवेत्।

चरितों की मूल कथाओं से तारतम्य रखनेवाले श्लोक हमे प्राप्त हैं। भगवती की विशेषताओं से सम्बन्धित अन्य साहित्य भी हमें प्राप्त है। **''अधिकस्य अधिकं फलम्''** इस भावुक दृष्टि से इस 'सप्तशती' का, जिसमें सम्पूर्ण ७०० श्लोक है, पाठ करना चाहिए। इस 'सप्तशती' में ७०० श्लोक है, ५५ और भी है, जो तत्तद्-स्थानों पर सूचित हैं, परिशिष्ट में तदनुसार उद्धृत है।

मार्गदर्शक व पद्धति प्रणेता **पं. चन्द्रशेखर शर्मा एवं पं. श्रीनन्दन मिश्र,** राष्ट्रीय संस्कृत साहित्य केन्द्र, जयपुर के **श्री रामशरण नाटाणी** का भी मैं हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए ईश्वर से कामना करता हूँ कि यह पुस्तक सभी पाठकों के लिए अत्यन्त लाभदायी सिद्ध हो।

टङ्कण कार्य हेतु **'नन्द नन्दन कम्प्यूटर सेन्टर'** के श्री राजीव शर्मा तथा श्री सूरज सिंह राजावत ने अपने व्यस्त कार्यों में इसे प्राथमिकता प्रदान की है तथा श्रमसाध्य कार्य गहन आत्मीयता से किया है, जिसके लिए मैं इनका हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। **मार्गदर्शक/प्रधान सम्पादक/सह-सम्पादक/प्रकाशक से सम्बन्धित विवादों का न्यायक्षेत्र जयपुर (राजस्थान) ही होगा।**

डॉ. रवि शर्मा

श्रीबसंत पंचमी
विक्रमी सम्वत् २०७३

''ज्योतिषाचार्य, विद्यावाचस्पति (पीएच.डी.)''
प्रधान सम्पादक :- ज्योतिष सम्राट् पञ्चाङ्ग

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पुरोवाक्

सृष्टौ या सर्गरूपा जगदवनविधौ पालिनी या च रौद्री-
संहारे चापि यस्या जगदिदमखिलं क्रीडनं या पराख्या।
पश्यन्ती मध्यमाथो तदनु भवगती वैखरी वर्णरूपा,
सास्मद् वाचं प्रसन्ना विधिहरिगिरिशाराधितालङ्करोतु।।

दुर्गा सप्तशती त्रयोदशमिताध्यायार्थसंगर्भितम्,
दुर्गास्तोत्रमिदं पठिष्यति जनो यः कश्चिदत्यादरात्।
तस्य श्रीरतुला मतिश्च विमला पुत्रः कुलालङ्कृतिः,
श्रीदुर्गाचरणारविन्दकृपया स्यादत्र कः संशयः।।

परम करूणामयी पराम्बा भगवती दुर्गा की आराधना के द्वारा परात्पर परब्रह्म की ही आराधना का उपक्रम किया जाता है। भारतीय अध्यात्मदर्शन एवं आर्ष वाङ्मय की यह विशेषता हैं कि इसमें सच्चिदानन्द परब्रह्म को मातृरूप में वर्णित किया गया है। परब्रह्म की मातृरूप में उपासना के गहन निहितार्थ हैं। सन्तति के लिए माता ही सबसे अधिक निकट और सहज स्नेह-द्रवित होती हैं। **"कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।"** माता तो सदा वात्सल्य सुधा-धारा से निज सन्तति के जीवन को (सर्वविध उत्कर्ष और साधन-साफल्य-मण्डित करने हेतु) अभिषिक्त और सम्पुष्ट ही करती रहती है। समस्त आर्त्तियों का नाश, समस्त विघ्नों की निवृत्ति, सम्पूर्ण कामनाओं की पूर्ति, सिद्धि-सफलता की प्राप्ति, परम वैराग्य और तत्त्वज्ञान का उदय, भक्ति-प्रेम की सुधाधारा में अवगाहन, सभी दुर्लभ से दुर्लभ पदार्थों तथा तत्त्वों की उपलब्धि माता की आराधना में सहज ही हो जाती है। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। वहीं माता शक्ति स्वरूपा बनकर निखिल ब्रह्माण्ड का नियमन करती हैं। ऋतम्भरा प्रज्ञा के अधिष्ठाता, अष्टादश पुराण, ब्रह्मसूत्र एवं महाभारत के निर्माता महर्षि वेदव्यास की घोषणा है कि ब्रह्मा में सृष्टि करने की शक्ति, विष्णु में पालन करने का सामर्थ्य, शंकर में संहार करने की कुशलता, सूर्य में जगत् को प्रकाशित करने की क्षमता, अग्नि में जलाने की और पवन में हिलाने-डुलाने की शक्ति- इन सब शक्तियों का एकमात्र आधार आद्याशक्ति भगवती दुर्गा हैं। दुर्गा के स्वरूपों की महिमा का चित्रण देवीभागवत महापुराण में और उस पराम्बा की आराधना का विधान **'दुर्गासप्तशती'** में उपलब्ध होता हैं।

'दुर्गासप्तशती' की अनेक व्याख्याएँ, टीकाएँ एवं प्रयोग परक पुस्तक सिद्ध महापुरुषों तथा साधकों ने लिखी हैं। परम अध्यवसायी, स्वाध्याय-परायण श्री डॉ. रवि शर्मा 'ज्योतिषाचार्य' ने मौलिक अनुसन्धान पर आधारित प्रस्तुत कृति "हवनात्मक दुर्गासप्तशती" का वैदुष्यपूर्ण कुशल सम्पादन साधकों के कल्याण हेतु किया है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आपने देवीभागवत पुराण, मार्कण्डेय पुराण (उत्तर), स्कन्द पुराण, अर्थवशीर्ष, देव्युपनिषद्, ब्रह्मसूत्र शक्तिभाष्य, योग वाशिष्ठ, ब्रह्मवैवर्त पुराण, श्रीमद्भगवद्गीता, यजुर्वेद, श्रीरामचरितमानस, मुण्डमालातन्त्र, महाकालसंहिता, पिच्छलातन्त्र, रूद्रयामल तन्त्र, डामर तन्त्र, गीता (शंकरभाष्य), यति दण्डैश्वर्य विधान, चिदम्बर संहिता, योग लक्ष्मी, दुर्गार्चनसृति, बाल चन्द्रिका, वाराही तन्त्र, मन्त्रमहोदधि तथा मन्त्र महार्णव आदि ग्रन्थों का सश्रम अध्यवसाय पूर्वक अनुसन्धान करके प्रस्तुत कृति को सर्वग्राह्य बना दिया है।

कलश स्थापना से श्रीगणेश करके आर्ष पूजन पद्धति, पीठार्चन, पीठहोम, रहस्यत्रय, तत्तत् सारस्वत, षड्देवी, बीज मन्त्रादि के एकादश न्यास, अष्टोत्तरशतनामस्तोत्र, देवीसहस्रनामावलि, परमोपयोगी, परिशिष्ट लेखन के द्वारा ग्रन्थ की उपयोगिता को शतसहस्रगुणित कर दिया है।

अपने पूज्य पितृचरण स्वनामधन्य श्री पं. चन्द्रशेखर शर्मा (निर्माता – ज्योतिष सम्राट् पञ्चाङ्ग) जी तथा विद्वद्वर, हारित ऋषि अलङ्करण से विभूषित यजुस्सामथर्ववेदाचार्य श्री पं. श्रीनन्दन मिश्र जी के प्रौढ़ मार्गदर्शन में सम्पादित प्रस्तुत रचना दुर्गोपासक विद्वज्जनों, साधकों एवं पाठ-होम कर्ताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी। सतत अनुसन्धान, लेखन एवं प्रकाशन में उत्साह से संलग्न डॉ. रवि शर्मा का धार्मिक जगत् सदैव ऋणी रहेगा। हमें पूर्ण आशा है कि वे इसी क्षमता के साथ भारतीय वाङ्मय की श्रीवृद्धि करते रहेंगे।

जयतां ज्योतिषाचार्यः श्री शर्मा चन्द्रशेखरः।
रवि शर्मा यस्य सूनुः सम्पादनकलाधरः।।
दुर्गासप्तशती दिव्या हवनात्मककर्मणा।
तनोतु भद्रं सर्वेषां प्रस्तुता रवि शर्मणा।।

डॉ. वीराचार्य शास्त्री
शास्त्रार्थकेसरी (हारीत ऋषि अलङ्कार विभूषित)
साहित्याचार्य, विद्याभास्कर, वेदमार्त्तण्ड,
संचालक – माधव पुस्तकालय
सम्पादक – लोकालोक (अध्यात्म की हिन्दी मासिक)
: प्रसिद्ध प्रकाशन :
हिन्दु और हिन्दुराष्ट्र, वेदामृत, ॐकार और शिवलिङ्ग,
वेद दिग्दर्शन, पुराण दिग्दर्शन, मर्यादा पुरुषोत्तम राम,
प्रेरक कथाएँ, अथ भारत दर्शनम्, भगवान् परशुराम,
क्यों ? (पूर्वार्द्ध एवं उत्तरार्द्ध, विश्वप्रसिद्ध पुस्तक)

वैशाखी पूर्णिमा
विक्रमी सम्वत् २०६८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शुभाशंसनम्

सर्व-सामर्थ्य के भाव सप्तशती में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं। जैसे शक्रादि देव स्तुति करते हुए कहते है – हे जगदम्ब! **'चित्ते कृपा समर-निष्ठुरता च दृष्टा, त्वय्येव देवि वरदे! भुवन-त्रयेऽपि।'**

चित्त में कृपा और संग्राम में निष्ठुरता (कठोरता) – ये दोनों चण्डिका में विद्यमान है। त्रिभुवन में ऐसा कोई देवता नहीं है, जिसमें ऐसे दोनों भाव एक कालावच्छेद से रहते हों। वैसे तो 'चण्डी' नाम ही भगवती चण्डिका के कोप की सफलता बतलाता है। **'चण्डि कोपे'** धातु से **'चण्डी'** शब्द बना है। सफल कोपवाली देवता का नाम **'चण्डी'** है। इसी से वायु आदि देवताओं को भी भय-दायकता से, इस कोप को पर-ब्रह्मता का लिङ्ग (लक्षण) माना है। **'चण्डी'** पद की ऐसी ही व्याख्या करते हुए 'गुप्तवती' टीकाकार ने लिखा है –

भीषास्माद् वातः पर्वते भीषोदेति सूर्यः।
भीषास्मादग्निश्चेन्द्रस्य मृत्युर्धावति पञ्चमः।।

साथ ही **'चण्ड-भानु, चण्ड-वाद'** इत्यादि पद-प्रयोगों को इयत्तानवच्छिन्न असाधारण गुण-शालिता-परक बतलाया गया है। इसी कारण भगवती चण्डिका के शस्त्रास्त्रों को भी इन्द्रादि देवों ने प्रणाम किया है और उनसे अपनी रक्षा की प्रार्थना की है –

शूलेन पाहि नो देवि! पाहि खड्गेन चाम्बिके!
घण्टा-स्वनेन नः पाहि, चाप-ज्या-निःस्वनेन च।।

सप्तशती के उक्त-मन्त्र प्रसिद्ध हैं। ऐसे सफल कोपवाली भगवती चण्डिका ही सर्व-समर्थ हैं, इसमें सन्देह नहीं, वही हम सबकी उपास्य देवता है।

सामर्थ्य-विशेष को प्रदर्शित करने के लिए यहाँ हम एक पद्य **'भगवद्-गीता'** का उद्धृत करते हैं और उसकी तुलना **'सप्तशती-रहस्य'** के एक मन्त्र से करते हुए यह बतलाते हैं कि सातिशय सामर्थ्य जो कहीं किसी देव-विशेष में नहीं है, चण्डी में ही है। इस प्रसङ्ग से पाठक को साधना का बल प्राप्त होता होगा। 'गीता' के छठे अध्याय में अर्जुन ने यह पूछा कि हे भगवन्! योग करते-करते विचलित होकर यदि साधक लक्ष्य-स्थान पर न पहुँच पाए, तो वह किस दशा को प्राप्त होता है? उभयथा भ्रष्ट होकर वह छिन्नाम की तरह नष्ट तो नहीं हो जाता? उत्तर में भगवान् कहते हैं –

पार्थ! नैवेह नामुत्र, विनाशस्तस्य विद्यते।
नहि कल्याण-कृत कश्चिद्, दुर्गतिं तात! गच्छति।।

अर्थात् हे अर्जुन! उसका यहाँ और वहाँ दोनों ही जगह विनाश नहीं हो सकता क्योंकि कल्याण-कर्म करने वाला दुर्गति को नहीं पाता। सारांश यह है कि पुण्य-कर्म विकृत नहीं होते और वे कर्त्ता का कोई अनिष्ट नहीं होने देते। लोक में भी यह उक्ति है कि **'पुण्य की जड़ सदा हरी।'** भगवान् ने पुण्य (कल्याण)-कर्त्ता पर अपना दबाव नहीं बतलाया है, न और ही किसी का। शुभ-कर्म शुभदायक ही होगा, ऐसा कहते हुए

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

श्रीकृष्ण ने यह घोषित किया है कि ईश्वरत्व से भी सुकृत कर्म नष्ट नही हो सकता, पुण्य-कर्म में भगवान् भी कुछ भी हेर-फेर नहीं कर सकते है।

अब इधर देखिये, सप्तशती के 'वैकृतिक-रहस्य', के मन्त्र में महा-मुनि मार्कण्डेय क्या कहते हैं -

यो न पूजयते नित्यं, चण्डिकां भक्त-वत्सलाम्।
भस्मी-कृत्यास्य पुण्यानि, निर्दहेत् परमेश्वरी॥

अर्थात् जो भक्त-वत्सला चण्डिका को नहीं पूजता ('पूजयते' पद में ध्यान-पूजा-स्तोत्रादि सभी समझना चाहिए), उसके पुण्य-कर्मों को वह परमेश्वरी भस्म करके (पुण्य-कर्ता को) यावज्जीवन शोकाग्नि से जलाती रहती है अर्थात् वह शोक से तपता रहता है। पाठक दोनों की उत्कृष्टता पर विचार करते हुए देखें कि जहाँ पुण्य-कर्म पर कोई क्या विष्णु (कृष्ण) भगवान् भी कुछ नहीं कर सकते, वहाँ वह चण्डिका उन्हीं पुण्य-कर्मों को भी भस्म कर देती है। यह निग्रहानुग्रह है या नहीं?

उपासना विषयक आगम-ग्रन्थों में ऐसे कई वाक्य मिलते हैं कि **'मैं पाप को पुण्य और पुण्य को पाप बना देती हूँ।'** यथा - **'पापं पुण्यायते प्रीत्या, पुण्यं पापायते रुषा'** इत्यादि। स्तोत्रों में भी ऐसे वाक्य मिलते हैं बताइए, इतना सामर्थ्य जिसमें मिले, वह और कौन देवता है? हमने तो ऐसा अपरिछिन्न सामर्थ्य कहीं नहीं देखा। पाठक भी यदि निर्मत्सर होकर देखेंगे तो उन्हें यह बात सही मालूम पड़ेगी। यहीं नहीं, श्रीकृष्ण की उपास्य देवता जगदम्बा ही रही है, यह भी निर्णीत-प्राय है। देखिए - **'कृष्णेन संस्तुते देवि! शश्वद् भक्त्या त्वमम्बिके!'** स्पष्ट ही है। ऐसे ही ब्रह्मा, शिवादि देव भी इसका आराधन करते रहते हैं। जैसे -

चतुर्भुजे चतुर्वक्त्र संस्तुते परमेश्वरी, हिमाचल-सुता-नाथ-संस्तुते (पूजिते) परमेश्वरि!।
इन्द्राणी-पति-सद्भाव-पूजिते परमेश्वरी, सुरासुर-शिरो-रत्न-निघृष्ट-चरणाम्बुजे!॥

विशेषतः यह कहने में भी संकोच नहीं होता है कि हरि-हर, विरिञ्चि आदि देवाधि-देव भी भगवती माहात्म्य और प्रभावातिशयादि को परिपूर्णतया नहीं कह सके। 'शक्रादि-स्तुति' में स्पष्ट कहा है -

यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो, ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च।

प्रस्तुत पुस्तक मेरे व श्री मिश्र जी के मार्गदर्शन में सम्पादित की गयी है, इसकी विशेषता ७०० श्लोक है तथा दुर्गार्चन के मन्त्र भी श्रेष्ठ है। मैं ईश्वर से इस पुस्तक की सफलता की कामना करते हुए डॉ. रवि शर्मा को उज्ज्वल भविष्य का आशीर्वाद देता हूँ।

पं. चन्द्रशेखर शर्मा
:: सचिव ::
अखिल भारतीय प्राच्य ज्योतिष शोध संस्थान (Reg. No. 252/Jai/92)
सम्पादक/निर्माता/प्रकाशक/मार्गदर्शक
ज्योतिष सम्राट् पञ्चाङ्ग, श्री मेवाड़ विजय पञ्चाङ्ग, सवाई जयपुर पञ्चाङ्ग,
ज्योतिष सम्राट् कालदर्शक, विवाह-संस्कार, आवाहन प्रदीप, श्रीगणेश पञ्चाङ्ग
अखिलभारतवर्षीय पञ्चाङ्ग, दीपावली पूजन-पद्धति एवं कार्तिकमास माहात्म्य

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आमुख

श्रीदुर्गासप्तशती भारतवर्ष की एक अत्यन्त प्राचीन परम्परागत अध्यात्म साधना है। यह पुरुषार्थ चतुष्टय को देने वाली भुक्ति एवं मुक्ति प्रदात्री महामाया का हृदय है। विभिन्न शास्त्रग्रन्थों में इसके सम्बन्ध में विस्तार से विचार किया गया है। मन्त्र-तन्त्र व यन्त्र तात्विक रूप से एक ही सत्य के तीन प्रकार है वा एक ही शक्ति के तीन रूप है। व्यक्ति के शक्ति को उद्दीप्त कर उसमें गुरुत्तर शक्ति का सञ्चार करने वाला गूढ़ रहस्य मन्त्र कहलाता है। मन्त्र का चित्रात्मक रूप यन्त्र तथा क्रियात्मक रूप तन्त्र है। मन्त्र के इन त्रिविध रूपों का क्रियात्मक विज्ञान व ज्ञान-भक्ति-कर्मयोग के रहस्य सप्तशती में भरे पड़े है। इन्हीं साधनों द्वारा साधक दुःखत्रय से मुक्त होकर सुख या आनन्द प्राप्त करता है।

चैत्र एवं आश्विन मास में शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से नवमी तक के नौ दिन तक **'नवरात्र'** माने गये है। हमारे यहाँ वर्ष में चार बार नवरात्रों का पर्व आता हैं, जिनमें मुख्यतया दो नवरात्रे ही प्रसिद्ध है।

1. चैत्र शुक्लप्रतिपदा से नवमी तक बासन्ती नवरात्र तथा
2. आश्विनशुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक शारदीय नवरात्र के नाम से प्रसिद्ध है।

इसके अतिरिक्त दो और नवरात्र है, जिन्हें **गुप्त नवरात्र** भी कहा जाता है।

1. आषाढ़शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक तथा
2. माघशुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक

नवरात्र पर्व के प्रथमदिन प्रतिपदा को स्नान करके शुभकाल में कलशस्थापना के साथ ही पाठ एवं पूजा करना चाहिए। **'दुर्गा दुर्गति नाशनी'** के अनुसार जो दुर्गति का नाश करे, वहीं दुर्गा है। नवरात्र आद्यशक्ति भगवति दुर्गा की उपासना का महापर्व है। भक्तिपूर्वक भगवति के नौ रूपों की उपासना करनी चाहिए। मार्कण्डेय पुराण में नित्यजीवन भावों वाली नवदुर्गाओं के नाम व क्रम का उल्लेख मिलता है। जिनकी नवरात्रों मे आराधना करने से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। देवी के नौ रूप है, जिन्हे नवदुर्गा कहते है। इनमें प्रथम **'शैलपुत्री'**, द्वितीय **'ब्रह्मचारिणी'**, तृतीय **'चन्द्रघण्टा'**, चतुर्थ **'कूष्माण्डा'**, पञ्चम **'स्कन्दमाता'**, षष्ठ **'कात्यायनि'**, सप्तम **'कालरात्रि'**, अष्टम **'महागौरी'** तथा नवम **'सिद्धिदात्री'** के नाम से प्रसिद्ध है। ये सभी नाम वेदभगवान के द्वारा प्रतिपादित हुए है।

पूजा विधि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से पूजन प्रारम्भ होता है। सम्मुखी प्रतिपदा शुभ होती है। अतः वही ग्राह्य है। अमायुक्त प्रतिपदा में पूजन नहीं करना चाहिये। सर्वप्रथम स्वयं स्नानादि से पवित्र हो, गोमय से पूजा स्थान का लेपन कर उसे पवित्र कर लेना चाहिये। तत्पश्चात् घट स्थापन करने की विधि है। घट स्थापन प्रातः काल करना चाहिये। परन्तु चित्रा या वैधृतियोग हो तो उस समय घट-स्थापन न करे मध्याह्न में अभिजित् आदि शुभ मुहूर्त में घट स्थापन करना उचित है।

यह नवरात्र व्रत स्त्री-पुरूष दोनों ही कर सकते है। यदि स्वयं न कर सके तो पति, पत्नी, पुत्र या ब्राह्मण को प्रतिनिधि बनाकर व्रत पूर्ण कराया जा सकता है। **व्रत में उपवास, अयाचित (बिना माँगे प्राप्त**

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भोजन), नक्त (रात में भोजन करना) या एकभुक्त(एक बार भोजन करना) नियम, जो बन सके यथासामर्थ्य वहीं करे।

घट स्थापन के लिये पवित्र मिट्टी से वेदी का निर्माण करे, फिर उसमें जौ और गेहूँ बोये तथा उस पर यथाशक्ति मिट्टी, ताँबे, चाँदी या सोने का कलश स्थापित करे। यदि पूर्ण विधिपूर्वक करना हो तो पञ्चाङ्गपूजन (गणेशाम्बिका, वरूण, षोडशमातृका, सप्तघृतमातृका, नवग्रह आदि देवों का पूजन) तथा पुण्याहवाचन ब्राह्मण द्वारा कराये अथवा स्वयं करे।

इसके बाद कलशपर देवी की मूर्ति स्थापित करे तथा उसका षोडशोपचारपूर्वक पूजन करे। तदनन्तर श्रीदुर्गासप्तशती का सम्पुटित अथवा साधारण पाठ भी करने की विधि है। पाठ की पूर्णाहूति के दिन दशांश हवन अथवा दशांश पाठ करना चाहिए।

दीपक स्थापन

पूजा के समय घृत का दीपक भी प्रज्ज्वलित चाहिये तथा उसकी गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि से पूजा करे। दीपक स्थापन का मन्त्र इस प्रकार है।

भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं ह्यन्धकारनिवारक।
इमां मया कृतां पूजां गृह्णंस्तेजः प्रवर्धय।।

कुछ लोग अपने घरों में दीवार पर अथवा काष्ठपट्टिका पर चित्र बनाकर इस चित्र की तथा घृतदीपक द्वारा अग्नि से प्रज्वलित ज्योति की पूजा अष्टमी अथवा नवमी तक करते है।

कुमारी पूजन

कुमारी पूजन नवरात्र व्रत का अनिवार्य अङ्ग है। कुमारिकाएँ जगज्जननी जगदम्बा का प्रत्यक्ष विग्रह है। सामर्थ्य हो तो नौ दिन तक नौ कन्या अथवा सात, पाँच, तीन या एक कन्या को देवी मानकर पूजा करके भोजन कराना चाहिये। इसमें ब्राह्मणकन्या को प्रशस्त माना गया है।

अशौच में देवी पूजन :-

जयसिंहकल्पद्रुम के अनुसार सूतक (जनन शौच, जन्म से दस दिन तक) में देवी का पूजन व दान देवी की आराधना मानकर कर सकते है, इसमें दोष नहीं लगता है।

आसन बिछाकर गणेश, वटुक तथा कुमारियों को एक पंक्ति में बिठाकर पहले **ॐ गं गणपतये नमः** से गणेश जी का पञ्चोपचार पूजन करे, फिर **ॐ वं वटुकाय नमः** से वटुक का तथा **ॐ कुमार्यै नमः** से कुमारियों का पञ्चोपचार पूजर करे। इसके बाद हाथ में पुष्प लेकर अधोलिखित मन्त्र से कुमारियों की प्रार्थना करे

मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातॄणां रूपधारिणीम्।
नवदुर्गात्मिकां साक्षात् कन्यामावाहयाम्यहम्।।
जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कहीं कहीं अष्टमी या नवमी के दिन कड़ाही पूजा की परम्परा भी है। कड़ाही में हलवा बनाकर उसे देवी जी की प्रतिमा के सम्मुख रखा जाता है। तत्पश्चात् चमचे और कड़ाही में मौली बाँधकर **ॐ अन्नपूर्णायै नमः** इस नम मन्त्र से कड़ाही का पञ्चोपचार पूजन भी किया जाता है। तदननतर थोड़ा सा हलवा कड़ाही से निकाल कर देवी माँ को भोग लगाया जाता है। उसके बाद कुवाँरी बालिकाओं को भोजन कराकर उन्हें यथाशक्ति वस्त्राभूषण, दक्षिणादि देने का विधान है।

विसर्जन

नौ रात्रि व्यतीत होने पर दसवें दिन विसर्जन करना चाहिये। विसर्जन से पूर्व भगवती दुर्गा का गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि से उत्तर पूजन करके निम्न प्रार्थना करनी चाहिये

रूपं देहि यशो देहि भाग्यं भगवति देहि मे।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे ।।
महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनि।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं दहि देवि नमोऽस्तु ते ।।

इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद हाथ में अक्षत एवं पुष्प लेकर भगवती का निम्न मन्त्र से विसर्जन करना चाहिये

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठे स्वस्थानं परमेश्वरि।
पूजाराधनकाले च पुनरागमनाय च ।।

शक्तिधर की उपासना

चैत्र नवरात्र में शक्ति के साथ शक्तिधर की भी उपासना की जाती है। एक ओर जहाँ देवीभागवत, कालिकापुराण और मार्कण्डेयपुराण का पाठ होता है, वहीं दूसरी ओर श्रीरामचरितमानस, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण एवं अध्यात्मरामायण का भी पाठ होता है। इसलिये यह नवरात्र **देवीनवरात्र** के साथ साथ रामनवरात्र के नाम से भी प्रसिद्ध है।

पुस्तक की पूजा का मन्त्र :-

ॐ नमः पिशाचि निकरं किनित्रि शूलखड्ग हस्ते सिंहारूढ़े ऐह्येहि आगच्छ आगच्छ इमां पूजां गृह्ण गृह्ण स्वाहा श्री सप्तशती स्वरुपिण्यै ह्रीं चण्डिकायै नमः।।

पाठ के प्रारम्भ व अन्त में निम्न मन्त्रों का अवश्य जाप करें।

शापमोचन मन्त्र :-

1. ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं क्रां क्रीं चण्डिकादेव्यै शापनाशानु ग्रहं कुरु कुरु स्वाहा।। (07 बार जाप करे)
2. ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशती चण्डिका उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा। (21 बार जाप करे)

कन्या के विवाह हेतु मन्त्र :-

देहि सौभाग्यम् आरोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥ १ ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरी।
नन्दगोपसुते देवी पतिं देहि मनोरमम्॥ २॥

पुरुष के विवाह हेतु मन्त्र :-

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसार सागरस्य कुलोद्भवाम्॥ १॥ **(दुर्गासप्तशती)**

श्रीदुर्गासप्तशती में अनेक सिद्ध मन्त्र सद्योफल देने वाले है :- जिनमें से कुछ विशेष मन्त्रों का यहां वर्णन कर रहें है :-

१. सप्त व्याहृति से सम्पुटित श्लोक का पाठ करने से मन्त्र सिद्ध होते है।

२. **'ततो वव्रे नृपो राज्यम्०'** इत्यादि से सम्पुटित करने से स्वराज्य लाभ होता है।

३. अपमृत्यु निवारण हेतु **शताक्षरा या त्र्यम्बक मन्त्र** से सम्पुटित करें।

४. **अभीष्ट वर-प्राप्ति** के लिये **'एवं देव्या वरं लब्ध्वा०'** मन्त्र से सम्पुटित करें।

५. प्रतिश्लोक में **आदि अन्त प्रणवपुटित** करने से मन्त्रसिद्धि होती है।

६. **'कां सोस्मितां०'** इत्यादि से सम्पुटित करने से **लक्ष्मी प्राप्ति** होती है।

७. **'एवमुक्त्वा समुत्पत्य०'** इत्यादि से सम्पुटित करने से **मारण कार्य** होता है।

८. **'भगवत्या कृतं सर्वम्०'** इत्यादि से सम्पुटित करने से **आपत्तियों से छुटकारा** व **कार्य साफल्यता** प्राप्त होती है।

९. **'मम वैरिवशं यातः०'** इत्यादि से सम्पुटित करने से **शत्रु उन्मूलन** होता है।

१०. **'इत्थं निशम्य देवानां०'** मन्त्र का तीस हजार जप मात्र से वा सम्पुटित पाठ करने मात्र से **सम्पत्ति की वृद्धि** होती है।

११. **'सैषा प्रसन्ना वरदा०'** इत्यादि से सम्पुटित करने से **बन्दीमोचन** होता है।

१२. **'ममास्य च भवत्येषा०'** इत्यादि से सम्पुटित करने से **राजवश्य** होता है।

१३. **'महामाया हरश्चैतत्०'** इत्यादि से सम्पुटित करने से **जनवश्य** होता है।

१४. **'त्वयैतत् धार्यतेविश्वम्०'** इत्यादि से सम्पुटित करने से **सभी कार्य निर्विघ्न** होते है।

१५. **'धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव०'** इत्यादि से सम्पुटित करने से **सभी कर्म सफलीभूत** होते है।

१६. **'ततो निशुम्भः सम्प्राप्य चेतना०'** इत्यादि से सम्पुटित करने से **शत्रुओं द्वारा किये गये प्रयोग निष्फल** हो जाते है।

१७. **'ज्वालाकरालमत्युग्रम्०'** इत्यादि से सम्पुटित करने से **भय से छुटकारा** मिल जाता है।

१८. **'स्मरन्ममैतच्चरितं०'** इत्यादि से सम्पुटित करने से **शत्रुमुखस्तम्भन** होता है।

१९. **'उपसर्गानशेषांस्तु०'** इत्यादि से सम्पुटित करने से **देवतामुख स्तम्भन** होता है।

२०. **'इन्द्रियाणाधिष्ठात्री०'** इत्यादि से सम्पुटित करने से **सभी कार्य सिद्ध** होते है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शापोद्धार के पश्चात् छः अंगों सहित दुर्गासप्तशती का आद्योपान्त पाठ प्रारम्भ किया जाता है। कवच, अर्गला, कीलक और तीनों रहस्यों से ही दुर्गासप्तशती के छः अंग मान्य है। दुर्गासप्तशती में स्वयंसाधक का कल्याण ही नहीं अपितु इसमें जगत के कल्याण और रक्षा की कामना वाले मन्त्र भी है। सप्तशती धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष चारों पुरुषार्थों को प्रदान करती है। सभी प्रकार की कामना की सफलता के लिए साधक को नवार्ण मन्त्र (**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे**) का अवश्य जाप करना चाहिए। नवरात्र पर्व पर दुर्गासप्तशती के प्रतिदिन एक पाठ करने का विधान है। इसी प्रकार नौ दिन में नौ पाठ होते है। यदि एक तिथि कम हो जाये तो भी आठ दिन में नौ पाठ ही करने चाहिए। तिथिवृद्धि होने पर नौ से अधिक दस पाठ (**अधिकस्य अधिकं फलं**) भी कर सकते है। अपने वंश परम्परा के अनुसार कन्या व वटुक को श्रद्धापूर्वक पूजा कराके दक्षिणा देनी चाहिए।

नवरात्र पर्व में योग्य ब्राह्मण द्वारा सप्तशती के मन्त्रों द्वारा हवन अवश्य करवायें क्योंकि इसके बिना सभी कार्य अधूरे रहते है। साधक को हवन आदि कार्य उसी मन्त्र से सम्पुटित करने चाहिए, जिसके सम्पुट से पाठ करवाया गया है।

हम सभी के सामूहिक प्रयास द्वारा निर्मित यह **हवनात्मक दुर्गासप्तशती** सभी पाठकों के लिये सार्थक सिद्ध होगी, इसी कामना के साथ हमने यह प्रयास किया है, प्रस्तुत पुस्तक में जो दुर्गासप्तशती दी गयी है, वह **श्रीमार्कण्डेय उत्तरपुराण** का अंश है। निगमागम शक्ति शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित सम्पूर्ण श्री दुर्गा सप्तशती (सर्वाङ्ग-संवलिता) में से दुर्गासप्तशती वाला भाग लिया है, जिसके संकलनकर्ता श्री १००८ श्रीमद्दण्डी स्वामी तत्त्वबोधाश्रम है। प्रस्तुत पुस्तक में त्रुटि संशोधन का पूर्ण ध्यान रखा गया है तथापि मानवीय स्वभावश यदि कोई त्रुटि हो जाती है तो प्रबुद्ध पाठकगण क्षमा करते हुये भविष्य में उचित मार्गदर्शन करने का कष्ट करेंगे।

मार्गदर्शक/प्रधानसम्पादक/सह-सम्पादक/प्रकाशक से सम्बन्धित सभी विवादों का न्यायक्षेत्र जयपुर (राजस्थान) ही होगा।

श्रीमहागणपति चतुर्थी
विक्रमी सम्वत् २०६८

पं. श्रीनन्दन मिश्र

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शुभाशंसनम्

वेद, उपनिषद्, स्मृति, पुराण और दर्शन आदि शास्त्र पढ़ने, देखने, सुनने और विचारने से यह निर्णय प्राप्त होता है कि भगवती चण्डिका ही सर्वप्रथम सृष्टि में पूजी गयी है और अब भी पूजी जाती है। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, वरुण, कुबेर, यम आदि देवों ने और यक्ष किन्नर, सिद्ध चारणों ने तथा भूतादि ने भी इन्हीं की आराधना की है। इसमें सन्देह नहीं कि सभी में इन्हीं की सत्ता है। भगवती चण्डिका से पर कोई तत्त्व नहीं है। यदि है, तो यही एक है। यही आत्मा, यही परमात्मा, यही ईश्वर, यही जीव, यही स्थूल, यही कारण, यही इस पार और यही उस पार है। परब्रह्म के व्यावहारिक नाम ही महा-माया, विद्या, प्रकृति, अम्बा, भगवती, शिवा, शक्ति, दुर्गा, चण्डिका हैं।

भगवती चण्डिका के प्रभाव और प्रसाद को ही प्राप्त कर ब्रह्मादि देव पूजित हुए और अपने-अपने कार्य में समर्थ हुए। सृष्टि-क्रम ज्यों-ज्यों बढ़ता गया, विचार और उपाधि-भेद से, दैवी प्रभाव से और-और देवताओं की- विष्णु, शिव, सूर्यादि की उपासना बढ़ती गयी। इस क्रम में युगान्तर में बहुत-सी उपासनाएँ थी। फिर 'शिव-शक्ति' दोनों की रही। यह उपासना शक्ति-कृत प्रभाव और अद्वैत-बोध के लिए भगवती ने ही प्रचारित की, ऐसा तत्कालीन आगमों के वाक्य बोधित करते हैं। फिर विष्णु की, तदनन्तर ब्रह्म की, परन्तु ये सब उपासनाएँ शक्ति-सहित ही थीं - ब्रह्मा-सावित्री, लक्ष्मी-नारायण एवं शंकर और गौरी साथ ही पूजे जाते थे, ऐसा बहुत जगह प्रमाण मिलता है।

बढ़ते-बढ़ते नाना देवोपासनाएँ प्रचलित हुई। वे अब भी चल रही है। तत्त्व-दृष्टि से देखें, तो वे सभी उपासनाएँ 'शक्ति' की ही उपासनाएँ हैं क्योंकि शास्त्रकार कहते है - **'सर्वे देवाः स-शक्तयः'** अर्थात् सभी देव शक्ति-सहित है। ठीक भी है, 'शक्ति' न हो, तो वे देव किसी कार्य के करने में समर्थ नहीं होते। कार्य करना दूर, वे 'शक्ति' के बिना फड़क भी नहीं सकते। भगवान् शङ्कराचार्य 'सौन्दर्य-लहरी' में कहते हैं- शिव (पुरुष) यदि शक्ति से, चेतना से युक्त रहता है, तभी कार्य-क्षम हो सकता है। बिना शक्ति के वह फड़क भी नहीं सकता।

'शक्ति' ही समस्त संसार के व्यवहार का कारण है। यही 'महा-माया', 'विद्या' है। यहीं जीवों के 'बन्ध' का कारण है, तो यही जीवों के 'मोक्ष' का कारण है। यह बात ठीक भी है। जो बन्धन का कारण होता है, वही मोक्ष का कारण हो सकता है। यह बात 'सप्तशती' के निम्न उपदेश से स्पष्ट हो जाती है।

सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतु-भूता सनातनी। संसार-बन्ध-हेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी।।

अर्थात् सुमेधा महर्षि राजा सुरथ को उपदेश दे रहे हैं कि - वह विद्या (भगवती) मुक्ति का परम हेतु असाधारण कारण है। यह सनातनी है और हे राजन्! वही सब ईश्वरी (जगदम्बा) संसार-बन्धन का भी कारण है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रस्तुत श्री दुर्गासप्तशती **"उत्तरमार्कण्डेय पुराण"** का ही अंश है। यह अंश 'चण्डी' नाम से भी विख्यात है। ७०० श्लोकों में व्यस्थित होने पर इसे 'सप्तशती' की ख्याति मिली है। 'सप्तशती-स्तव' कितना महत्त्वपूर्ण है, यह 'मस्त्य-सूक्त' के निम्न निर्देशों से स्वयं स्पष्ट हो जाता है। यथा - 'ग्रह-शान्ति' हेतु ५ बार, 'महा-भय' हेतु ६ बार, 'सम्पत्ति' हेतु ११ बार, 'अभीष्ट-प्राप्ति' हेतु १२ बार, 'वशीकरण' हेतु १४ बार, 'सुख' व 'श्री' हेतु १५ बार, 'अभीष्ट' प्राप्ति हेतु १६ बार, 'राज-भय-निवारण' व 'शत्रु-उच्चाटन' हेतु १६ बार अथवा १८ बार, 'बन्धन-मुक्ति' हेतु २५ बार, 'महा-व्रण' की शान्ति हेतु ३० बार, 'सप्तशती-स्तव' का पाठ करें। भीषण संकट, असाध्य रोग, वंश-नाश, मृत्यु, शत्रु-बाधा, धन-नाशादि उपद्रवों की शान्ति हेतु १०० बार पाठ करें। १०८ पाठ से सभी अभीष्ट पूर्ण होते है। इस प्रकार सप्तशती का पाठ करना हम सभी के लिए अत्यन्त श्रेयस्कर है। इसके पाठ-मात्र से हम लोगों की सभी कामनाएँ पूर्ण हो सकती है। प्रस्तुत हवनात्मक दुर्गासप्तशती द्वारा सभी बाधाएँ दूर हो जाती है।

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि डॉ. **रवि शर्मा** जी ने हवनात्मक दुर्गासप्तशती ग्रन्थ का सम्पादन किया है। यद्यपि दुर्गा-सप्तशती के अनेक संस्करण अनेक बार मुद्रित हुए हैं। परन्तु प्रकृत संस्करण में प्रथम बार ७०० श्लोक (उवाच के अतिरिक्त) उपलब्ध है तथा अत्यन्त सुचारू रूप में दुर्गा सप्तशती में हवन पद्धति का सम्पूर्ण स्वरूप इस संस्करण में उपलब्ध है जो विवरण कर्मकाण्ड में आसक्त लोगों के लिए अत्यन्त उपयुक्त है।

सम्पादक ने अपने पिता के द्वारा विरासत में मिले ज्ञान का सदुपयोग करते हुए इस पुस्तक को लोगों के हितार्थ सम्पादित किया है। मैं ईश्वर से इस ग्रन्थ की सफलता हेतु कामना करते हुए मेरे अनुज डॉ. रवि शर्मा को उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामना प्रेषित करता हूँ।

मार्गदर्शक व पद्धति प्रणेता **पं. चन्द्रशेखर शर्मा एवं पं. श्रीनन्दन मिश्र** तथा सम्पादक **डॉ. रवि शर्मा** को भी मैं हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए ईश्वर से कामना करता हूँ कि यह पुस्तक सभी पाठकों के लिए अत्यन्त लाभदायी सिद्ध हो।

Dr. Veeranarayana N. K. Pandurangi
Dean, Faculty of Vedanta,
Karnataka Sanskrit University
Mobile No: 099283-32834, 076762-02725
Email: veerankp@gmail.com

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सिद्ध सम्पुट मन्त्र

१. सामूहिक कल्याण के लिए :-

देव्या यया ततमिदं जगदात्म-शक्त्या,
निःशेष-देव-गण-शक्ति-समूह-मूर्त्या।
तामम्बिकामखिल-देव-महर्षि-पूज्यां,
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः ॥ अ.४, श्लो. ३॥

२. विश्व में अशुभता तथा भय का नाश करने के लिए :-

यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो,
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च।
सा चण्डिकाऽखिल-जगत्-परि-पालनाय,
नाशाय चाशुभ-भयस्य मतिं करोतु ॥ अ.४, श्लो. ४॥

३. विश्व की रक्षा के लिए :-

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः,
पापात्मनां कृत-धियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुल-जन-प्रभवस्य लज्जा,
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि! विश्वम्॥ अ.४, श्लो. ५॥

४. विश्व की रक्षा के लिए :-

विश्वेश्वरि! त्वं परिपासि विश्वं,
विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेश-वन्द्या भवती भवन्ति,
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्ति-नम्राः॥ अ.११, श्लो. ३३॥

५. विश्वव्यापी विपत्तियों के नाश के लिए :-

देवि! प्रपन्नार्ति-हरे प्रसीद,
प्रसीदमातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि! पाहि विश्वं,
त्वमीश्वरी देवि! चराचरस्य॥ अ.११, श्लो. २॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

६. विश्व के पापताप निवारण के लिए :-

देवि! प्रसीद परि-पालय नोऽरिभीते-
नित्यं यथासुर-वधादधुनैव सद्यः।
पापानि सर्व-जगतां प्रशमं नयाशु,
उत्पात-पाक-जनिताँश्च महोपसर्गान्॥ अ.११, श्लो. ३४॥

७. विपत्तिनाश के लिए :-

शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे !
सर्वस्यार्त्ति-हरे देवि! नारायणि! नमोऽस्तु ते॥ अ.११, श्लो. ११॥

८. विपत्तिनाश और शुभ की प्राप्तिके लिए :-

करोतु सा नः शुभ-हेतुरीश्वरी,
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः॥ अ.५, श्लो. ३७॥

९. भयनाश के लिए :-

सर्व-स्वरूपे सर्वेशे सर्व-शक्ति-समन्विते!
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि! दुर्गे देवि! नमोऽस्तु ते॥ अ.११, श्लो. २४॥
एतत् ते वदनं सौम्यं लोचन-त्रय-भूषितम्।
पातु नः सर्व-भीतिभ्यः कात्यायनि! नमोऽस्तु ते॥ अ.११, श्लो. २५॥
ज्वाला-करालमत्युग्रमशेषासुर-सूदनम् ।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि! नमोऽस्तु ते॥ अ.११, श्लो. २६॥

१०. पापनाश के लिए :-

हिनस्ति दैत्य-तेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्!
सा घण्टा पातु नो देवि! पापेभ्यो नः सुतानिव॥ अ.११, श्लो. २७॥

११. रोगनाश के लिए :-

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा,
ददासि कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां,
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति॥ अ.११, श्लो. २९॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

१२. महामारीनाश के लिए :-

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते॥ अर्गला स्तोत्र, १॥

१४. आरोग्य और सौभाग्य प्राप्ति के हेतु :-

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ अर्गला स्तोत्र, १२॥

१५. सुलक्षणा पत्नी की प्राप्ति के हेतु :-

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्ग-संसार-सागरस्य कुलोद्भवाम् ॥ अर्गला स्तोत्र, २४॥

१६. बाधा शान्ति हेतु :-

सर्वा-बाधा-प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि!
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्-वैरि-विनाशनम्॥ अ.११, श्लो. ३७॥

१७. सर्वविध अभ्युदय हेतु :-

ते सम्मता जन-पदेषु धनानि तेषां,
तेषां यशांसि न च सीदति धर्म-वर्गः।
धन्यास्त एव निभृतात्मज-भृत्य-दारा,
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ॥ अ.४, श्लो. १५॥

१८. दारिद्र्यदुःख आदि के नाश हेतु :-

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः,
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।
दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या,
सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता ॥ अ.४, श्लो. १७॥

१९. समस्त विद्या और समस्त स्त्रियों में मातृभाव की प्राप्ति हेतु :-

विद्याः समस्तास्तव देवि! भेदाः,
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्!
का ते स्तुतिः स्तव्य-परा परोक्तिः॥ अ.११, श्लो. ५॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

२०. सभी प्रकार के कल्याण हेतु :-

सर्व-मङ्गल-माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिके!
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि! नारायणि! नमोऽस्तु ते॥ अ.११, श्लो. ६॥

२१. शक्तिप्राप्ति हेतु :-

सृष्टि-स्थिति-विनाशानां शक्ति-भूते सनातनि!
गुणाश्रये गुणमये नारायणि! नमोऽस्तु ते॥ अ.११, श्लो. १०॥

२२. प्रसन्नताप्राप्ति हेतु :-

प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि! विश्वार्तिहारिणि!
त्रैलोक्य-वासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव॥ अ.११, श्लो. ३५॥

२३. विविध उपद्रवों से बचने हेतु :-

रक्षांसि यत्रोग्र-विषाश्च नागा,
यत्रारयो दस्यु-बलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाब्धि-मध्ये,
तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्॥ अ.११, श्लो. ३२॥

२४. बाधामुक्त होकर धन और सन्तति की प्राप्ति हेतु :-

सर्वा-बाधा-विनिर्मुक्तो धन-धान्य-सुतान्वितः।
मनुष्यो मत्-प्रसादेन भविष्यति न संशयः॥ अ.१२, श्लो. १२॥

२५. भुक्तिमुक्ति की प्राप्ति हेतु :-

विधेहि देवि! कल्याणं विधेहि परमां श्रियम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ अर्गला स्तोत्र, १४॥

२६. पापनाश तथा भक्तिप्राप्ति हेतु :-

नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके! दुरितापहे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ अर्गला स्तोत्र, ६॥

२७. स्वर्ग और मोक्ष की प्राप्ति हेतु :-

सर्व-भूता यदा देवी स्वर्ग-मुक्ति-प्रदायिनी।
त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः॥ अ.११, श्लो. ६॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

२८. स्वर्ग और मुक्ति की प्राप्ति हेतु :-

सर्वस्य बुद्धि-रूपेण जनस्य हृदि संस्थिते।
स्वर्गापवर्गदे देवि! नारायणि! नमोऽस्तु ते॥ अ.११, श्लो. ७॥

२९. मोक्ष की प्राप्ति हेतु :-

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्त-वीर्या,
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्,
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्ति-हेतुः॥ अ.११, श्लो. ४॥

३०. स्वप्न में सिद्धि/असिद्धि की जानकारी हेतु :-

दुर्गे देवि! नमस्तुभ्यं सर्वकामार्थसाधिके।
मम सिद्धिमसिद्धिं वा स्वप्ने सर्व प्रदर्शय।।

३१. सुखप्राप्ति (महामारी/व्याधि) हेतु :-

ॐ त्र्यम्बकँ व्यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

३२.कष्टनिवारण हेतु :-

ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं।।

३३. अकारण अचानक आये हुये कष्ट के निवारण हेतु :-

ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय,
जिह्वां कीलय, बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।।

३४. धनप्राप्ति हेतु :-

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद
श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।

३५. कन्या के शीघ्र विवाह हेतु :-

ॐ त्र्यम्बकँ व्यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्।
उर्व्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः।।

संकलन : पं. राजीव शर्मा
सह-सम्पादक - ज्योतिष सम्राट् पंचांग
जयपुर।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

देव्यथर्वशीर्षम्

ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवीति॥१॥ साब्रवीत् - अहं ब्रह्मस्वरूपिणी। मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत्। शून्यं चाशून्यं च ॥२॥ अहमानन्दानानन्दौ। अहं विज्ञानाविज्ञाने। अहं ब्रह्माब्रह्मणी वेदितव्ये। अहं पञ्चभूतान्यपञ्चभूतानि। अहमखिलं जगत्॥३॥ वेदोऽहमवेदोऽहम्। विद्याहमविद्याहम्। अजाहमनजाहम्। अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक्चाहम्॥४॥ अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि। अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः। अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि। अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ॥५॥ अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि। अहं विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि॥६॥ अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते। अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे। य एवं वेद। स दैवीं सम्पदमाप्नोति॥७॥ ते देवा अब्रुवन्- नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥ ८॥ तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं, वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्। दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्यामहेऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः॥ ९॥ देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति। सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु॥ १०॥ कालरात्रिं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम्। सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम्॥ ११॥ महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्॥१२॥ अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव। तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः॥ १३॥ कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः। पुनर्गुहा सकला मायया च पुरूच्यैषा विश्वमातादिविद्योम्॥ १४॥ एषाऽऽत्मशक्तिः। एषा विश्वमोहिनी। पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरा एषा श्री महाविद्या एवं वेद स शोकं तरति॥ १५॥ नमस्ते अस्तु भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वतः॥ १६॥ सैषाष्टौ वसवः। सैषैकादश रुद्राः। सैषा द्वादशादित्याः। सैषा विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च। सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचा यक्षाः सिद्धाः। सैषा सत्त्वरजस्तमांसि। सैषा ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी। सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः। सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतींषि। कलाकाष्ठादिका-लरूपिणी। तामहं प्रणौमि नित्यम्॥ पापापहारिणीं देवीं भुक्तिमुक्ति-प्रदायिनीम्। अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शिवाम्॥१७॥ वियदीकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम्। अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम्॥ १८॥ एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्धचेतसः। ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः॥१९॥ वाङ्माया ब्रह्मसूस्त-स्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम्। सूर्योऽवामश्रोत्रबिन्दुसंयुक्ताष्टात्तृतीयकः। नारायणेन सम्मिश्रो वायुश्चाधरयुक् ततः। विच्चे नवार्णकोऽर्णः स्यान्महदानन्ददायकः॥२०॥ हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातः सूर्यसमप्रभाम्।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम्। त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे ॥२१॥ नमामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम्। महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरूपिणीम् ॥२२॥ यस्याः स्वरूपं ब्रह्मा-दयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया। यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता। यस्या लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या। यस्या जननं नोपलभ्यते तस्मादुच्यते अजा। एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका। एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते नैका। अत एवोच्यते अज्ञेयानन्ता-लक्ष्याजैका नैकेति ॥२३॥ मन्त्राणां मातृकादेवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी। ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी। यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता ॥ २४॥ तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम्। नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम् ॥ २५ ॥ इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चाथर्वशीर्षजपफलमाप्नोति। इदमथर्वशीर्ष-मज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयति शतलक्षं प्रजप्त्वापि सोऽर्चासिद्धिं न विन्दति। शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः। दशवारं पठेद् यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते। महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः ॥२६॥ सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति। निशीथे तुरीयसंध्यायां जप्त्वा वाक्सिद्धिर्भवति। नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा देवतासांनिध्यं भवति। प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानां प्रतिष्ठा भवति। भौमाश्विन्यां महादेवीसंनिधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति। स महामृत्युं तरति य एवं वेद। इत्युपनिषत् ॥

नोट : प्रथम संस्करण में त्रुटिवश देवी अथर्वशीर्ष मुद्रित नहीं हो पाया था, जिसके लिए हमें खेद है एवं द्वितीय संस्करण में हम इस त्रुटि का परिहार कर रहे है। आशा है विद्वान् बंधु सदैव की भांति हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे। इसी आशा के साथ हवनात्मक दुर्गासप्तशती का द्वितीय संस्करण आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे है।

निवेदक :

राष्ट्रीय संस्कृत साहित्य केन्द्र

२२२, सरस्वती सदन, बिहारी जी गली, सौंखियों का रास्ता,

किशनपोल बाजार, जयपुर -३०२००१

फोन [illegible]

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
शारदीय नव-रात्र में कलश-स्थापना	१	अथ वसोर्धारा (सप्तघृतमातृका) पूजनम्	१४२
नव-पत्रिका-पूजन	४	अथायुष्यमन्त्रजपः	१४५
श्रीमद्-देवी-भागवत में शारदीय नवरात्र	७	अथ नान्दीश्राद्धप्रयोगः	१४६
शारदीय महोत्सव	१२	आचार्यादिवरणम्	१५०
'ऋग्वेद' में शारदीय दुर्गा-पूजा	२७	वास्तुपूजनम्	१५१
श्रीदुर्गोत्सव-विवेक	३०	कुण्डपूजनम्	१६२
सार्द्ध 'नव-चण्डी' प्रयोग	३५	अथ नवग्रहादिदेवानामावाहनम्	१६६
सार्ध 'नव-चण्डी'-प्रयोग की विधि	३७	अथ अधिदेवानामावाहनम्	१६९
'पशु'-बलि एवं 'पूर्णाहुति'	३९	अथ प्रत्यधिदेवानामावाहनम्	१७२
'बलि'-विधान	४३	अथ पञ्चलोकपालानामावाहनम्	१७४
शत-चण्डी-विधान (पूजा-विधि)	५०	अथ क्षेत्राधिपतेःवास्तोष्पतेश्चावाहनम्	१७६
शत-चण्डी-विधान (यज्ञारम्भ)	५७	अथ दिक्पालानामावाहनम्	१७७
श्रीदुर्गा-विधान	६३	चतुःषष्टियोगिनीमण्डलपूजनम्	१८०
संक्षिप्त श्रीदुर्गा-पूजाङ्ग होम-विधि	६८	क्षेत्रपाल मण्डल पूजनम्	१९२
पाठ हेतु निर्देश	७१	गौरीतिलकमण्डल पूजनम्	२०१
यवांकुर वपन (जौ बोने की विधि)	७८	अथ दुर्गापूजनविधिः	२०६
अथ कुमारी-पूजनम्	८०	कुशकण्डिका	२३२
दुर्गासप्तशती के नौ भेद	८६	अग्निपूजनम्	२३४
नवार्ण संस्कार विधि	८८	आवाहितदेवतानां स्वाहाकारः	२३५
नवार्ण विधि	९१	ग्रहमण्डल-देवतानां स्वाहाकारः	२३६
अथ माला-मन्त्र प्रारम्भः	९५	गौर्यादिमातृका-हवनम्	२३७
अथ सप्तशती-पूजा-विधिः	९८	सप्तघृतमातृकाहोमः	२३७
शाप-विमोचनम्	१०१	वास्तु-मण्डलस्थदेवतानां होमः	२३८
पूजाविधिः	१०३	योगिनी-मण्डलस्थ-देवतानां होमः	२४०
अथ भूशुद्धिः	१०५	क्षेत्रपाल-मण्डलस्थ-देवतानां होमः	२४२
अथात्मप्राणप्रतिष्ठा	११०	सर्वतोभद्रमण्डलस्थ-देवतानां होमः	२४४
अथ गणपतिपूजनम्	११७	गौरीतिलकमण्डलस्थदेवतानां होमः	२४६
अथ कलशस्थापनं स्वस्तिवाचनञ्च	१२६	पीठ-देवता-स्वाहाकारः	२५३
अथ षोडशमातृकास्थापनम्	१३७	नवशक्ति-स्वाहाकारः	२५४

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विषय	पृष्ठ
आवरण देवतानां हवनम्	२५४
श्री बटुकभैरव-अष्टोत्तरशतनाम-हवनम्	२५५
श्रीसूक्त होम:	२५८
स्विष्टकृद्धोम:	२६०
दिग्पाल-पूजनंबलिदानञ्च	२६१
स्थापितदेवतानां बलिदानम्	२६२
प्रधान-बलिदानम्	२६४
कन्यापूजनम्	२६८
शक्तिपूजनम्	२७०
पूर्णाहुतिः	२७४
वसोर्द्धारा-होम:	२७६
संकल्प:	२७८
पुष्पाञ्जलि:	२८०
देवताविसर्जनम्	२८३
अथ श्रीदुर्गासप्तशती	२८४
रात्रिसूक्त	२८४
देवीसूक्त	२८८
अथ देवीकवचम्	२९३
अथ अर्गलास्तोत्रम्	२९९
अथ कीलकस्तोत्रम्	३०२
अथ वेदोक्त रात्रि-सूक्तम्	३०४
अथ चण्डिका-दल-प्रारम्भः	३०५
अथ सप्तशती-हृदय-प्रारम्भः	३०७
अथ ब्रह्माण्ड-विजयं नाम दुर्गा-कवचम्	३०९
अथ मन्त्र-सहितं काली-कवचम्	३१२
लक्ष्मी-कवचम्	३१५
सरस्वती-कवचम्	३१७
महा-षोढा न्यासम् (उपाम्नायात्मक)	३१९
नवार्ण विधिः (न्यास)	३२१
अथ नवार्ण विधिः	३२५
अथ सप्तशती-न्यासः	३३४
श्री काली सूक्तम्	३३६
महाकाली सूक्तम् (पौराणिकम्)	३३७
महाकाली सूक्तम् (तन्त्रोक्तम्)	३३८
अथ प्रथमचरित्रारम्भः	३४१
श्रीमहालक्ष्मी-सूक्तम् प्रारम्भम् (पुराणोक्तम्)	३६२
श्रीमहालक्ष्मी-सूक्तम् प्रारम्भम् (तन्त्रोक्तम्)	३६५
अथ मध्यमचरित्रारम्भः	३६८
द्वितीयोऽध्यायः	३७२
तृतीयोऽध्यायः	३९१
चतुर्थोऽध्यायः	४०१
महा-सरस्वती-सूक्तम्	४११
अथ उत्तमचरित्रारम्भः	४२१
प मोऽध्यायः	४२७
अथ षष्ठोऽध्यायः	४३९
अथ सप्तमोऽध्यायः	४४४
अथ अष्टमोऽध्यायः	४४९
अथ नवमोऽध्यायः	४५९
अथ दशमोऽध्याय	४६६
अथैकादशोऽध्यायः	४७२
अथ द्वादशोऽध्यायः	४८१
अथ त्रयोदशोऽध्यायः	४८७
अथ नवार्ण विधिः (उपसंहार)	४९१
अथ प्राधानिक रहस्यम्	४९८
अथ वैकृतिक रहस्यम्	५०१
अथ मूर्तिरहस्यम्	५०५
अथ नवार्ण-विधिः	५०८
अथ बहिर्मातृका न्यासः	५११
अथ सारस्वत-न्यासः	५१४
अथ तृतीयो मातृकागण-न्यासः	५१६
अथः चतुर्थः षड्देवी न्यासः	५१७
अथ पञ्चमो ब्रह्मादि-न्यासः	५१८
अथ षष्ठो लक्ष्म्यादि-न्यासः	५१९
अथ सप्तमः बीजमन्त्र-न्यासः	५२०

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ अष्टमो विलोम-बीजन्यासः	५२१
अथ नवमो मन्त्रन्यासः	५२२
अथ दशमः षडंगन्यासः	५२३
अथ एकादश न्यासः	५२४
अथ सरस्वती स्तोत्रम्	५२८
अथ ब्रह्माण्ड–विजयं नाम दुर्गा–कवचम्	५३१
सिद्धकुञ्जिकास्तोत्रम्	५३३
पर–देवी–सूक्तम्	५३५
आपदुद्धारण बटुकभैरव	
अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम्	५३८
नवानुग्रह मन्त्रम्	५४०
अर्पण–मन्त्रम्	५४१
क्षमा–प्रार्थना	५४३
अथ श्री दुर्गामाला मंत्र	५४४
अथ जगदम्बा जयवादः	५४५
सार्द्धनवचण्डीविधानम्	५४७
अथ त्रिकपाठः	५४८
अथ देव्यपराधक्षमापन स्तोत्रम्	५४९
क्षमा प्रार्थना	५५१
अथ श्री चण्डिकास्तोत्रम्	५५२
अथ दुर्गाऽपदुद्धारस्तोत्रम्	५५४
भगवतीपुष्पाञ्जलिस्तोत्रम्	५५५
आरती श्रीदुर्गा जी	५५८
अम्बे मैय्या की आरती	५५९
परिशिष्ट	५६०
सप्तशती–नायिकाया	
महाकाल्याश्चतुः षष्ठिः–योगिन्यः	५६०
सप्तशती–नायिकाया	
महालक्ष्म्याश्चतुः षष्ठिः–योगिन्यः	५६१
सप्तशती–नायिकाया	
महासरस्वत्याः षष्ठिः–योगिन्यः	५६२
अतिरिक्त श्लोक	५६३
देवीसहस्रनामावलिः	५६९
हवन सामग्री युक्त सूची	५८४

समर्पणम्

जिन्होंने इस धरती पर जन्म दिया उनका ऋण हम कभी उतार नहीं सकते, परन्तु आज उनकी अनुपस्थिति में उनके आशीर्वाद से इस पञ्चभौतिक शरीर द्वारा निर्मित हवनात्मक दुर्गासप्तशती को हम अपने पूर्वजों के श्रीचरणों में समर्पित कर रहे है।

:– डॉ. रवि शर्मा

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शारदीय नव-रात्र में कलश-स्थापना

चारों नव-रात्रों में 'शारदीय नव-रात्र' का विशेष महत्त्व है। कहा भी है-

शरत्-काले महा-पूजा, क्रियते या च वार्षिकी।
तस्याह सकलां बाधां, नाशयिष्याम्यसंशयम्।।

ऐसी दशा में **'शारदीय नव-रात्र'** के पूजा-विधान पर विशेष रूप से ध्यान देना आवश्यक है। **भगवान् आशुतोष** कथित अनेक तन्त्र-शास्त्र एवं स्मार्त-शास्त्र इस पूजा के उत्तमोत्तम् विधि-विधानों से भरे पड़े है। **'कलश-स्थापन'** के सम्बन्ध में भी अनेक मत है। **पूजा और कलश-स्थापना** के विभिन्न मतों के अवलोकन से सामान्य साधक या जिज्ञासु संशय में पड़ जाता है। उसके सामने पूजा प्रायः दुरूह लगने लगती है, यद्यपि **माँ की अर्चना** सर्व-काल में मङ्गल-मय है, वह कभी अनिष्ट नहीं कर सकती, तथापि जन-सामान्य के कल्याण की भावना से कुछ शास्त्रीय प्रमाण यहाँ उल्लेखनीय है –

१. भगवती काली की पूजा का आरम्भ **अमा-युक्त प्रतिपदा** में न करें। (काली-तन्त्र)

२. **'देवी-पुराण'** एवं **'डामर-तन्त्र'** में लिखा है कि **अमावास्या से युक्त प्रतिपदा** में पूजा आरम्भ न करें। यदि एक पल भी प्रतिपदा मिले, तो **द्वितीया में पूजा** आरम्भ करें।

३. **प्रतिपदा से युक्त अमा** अमङ्गल-कारिणी है। अतः **अमा-सहित प्रतिपदा** को त्याग दें। (मार्कण्डेय-पुराण)

४. हे राजन्! **अमा से युक्त प्रतिपदा** प्रयत्नतः त्याग दें। (डामर-तन्त्र)

५. हे राजन्! **आश्विन शुक्ल पक्ष** की **द्वितीया** आदि तिथियों में जो मेरी पूजा करता है तथा **प्रतिपदा-युक्त द्वितीया** में जो मेरी पूजा आरम्भ करता है, वह निश्चित रूप से सुखी और कल्याण का भागी होता है, इसमें संशय नहीं। (देवी-पुराण)

६. जो व्यक्ति **अमावास्या से युक्त प्रतिपदा** में, जो अत्यन्त निन्दित मुहूर्त है, पूजा आरम्भ करता है, वह दुर्भिक्ष-ग्रस्त होता है। (रुद्र-यामल)

७. प्रातः काल में **भगवती का आवाहन, पत्रिका-प्रवेश, पूजा एवं विसर्जन** करे। (देवी-पुराण, निर्णय-सिन्धु)

८. यदि **शुभ लग्न, नक्षत्र** एवं **योगों** का अभाव हो, तो **सूर्यास्त-काल, चन्द्रोदय-काल-व्यापी गोधुलि** के **अभिजित्-काल** में पूजा आरम्भ करे, पर **वैधृति** में कदापि न करे। (चण्डी-तन्त्र)

९. **प्रातः** या **सन्ध्या-काल** उतना दोष-प्रद नहीं है, जितना **वैधृति या अमा-प्रतिपदा का योग**। (चण्डी-रहस्य)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

१०. यदि तिथि की वृद्धि या ह्रास हो जाय, तो उसका कोई प्रभाव **'नव-रात्र'** पर नहीं होता। तिथि-ह्रास में **अष्ट-रात्र** ही **'नव-रात्र'** हो जाता है। **(निर्णय-सिन्धु)**

११. **आश्विन शुक्ल** पक्ष की **प्रतिपदा को** यदि **वैधृति योग** हो, **चित्रा** हो, तो उसका **प्रथम चरण** त्याग कर **'नव-रात्र'** आरम्भ किया जा सकता है। **(निर्णय-सिन्धु)**

१२. **वैधृति** एवं **चित्रा** में **'कलश-स्थापन'** से क्रमशः पुत्र एवं धन का नाश होता है, इसलिए पुत्र और धन की कामना करने वाले साधक **चित्रा-वैधृति** में भूलकर भी **कलश की स्थापना** न करें। **(रुद्र-यामल)**

१३. **सूर्योदय से दस घटी पर्यन्त** की प्रातः कालीन संज्ञा है। **(विष्णु-धर्मोत्तर-पुराण)**

१४. **रात्रि में 'कलश-स्थापन'** या **'कुम्भाभिषेक'** न करें। **(मत्स्य-पुराण)**

१५. **सायं-काल स्थापना** एवं **अभिषेक** के लिए उतना दोष-पूर्ण नहीं, जितना **वैधृति** या **चित्रा** **(भवानी-तन्त्र)**

१६. सुमेधा को उपदेश करती हुई स्वयं भगवती ने कहा है- राजन्! **आश्विन शुक्ल प्रतिपदा** की ऊर्ध्व-गामिनी शुद्ध तिथि में **भगवती चण्डिका की पूजा** प्रारम्भ करे। **(कालिका-पुराण)**

१७. **पूर्वाह्न में देवी-घट स्थापित** करने वाला **वैश्व-देव** न करे, परन्तु अपराह्न में करने वाले को **वैश्व-देव** करना पड़ता है।

१८. कल्याण की कामना करने वाला **पूर्वा विद्धा प्रतिपदा में कलश** स्थापित न करें। **(स्कन्द-पुराण)**

१९. यदि **प्रतिपदा** को **चित्रा-वैधृति** आदि योग उपस्थित हो जाए, तो उसके अन्त में घर में कलश स्थापित करे। **(दुर्गार्चन-कल्पतरु)**

२०. यदि **वैधृति** आदि योगों का परिहार करते-करते **प्रतिपदा-द्वितीया** नहीं मिले, तो **आदि-पाद** को छोड़कर **भगवती का स्मरण कर मध्याह्न में अभिजित-मुहूर्त में कलश** को स्थापित करे। **(रुद्र-यामल)**

२१. **कलश की स्थापना-'हस्त'** नक्षत्र में करना चाहिए। **आर्द्रा में भगवती का अवबोधन** कर **'हस्त'** में **कलश** स्थापित करे। **मूल में आवाहित** कर **'पूर्वा उत्तरा'** में **पूजनादि** एवं **बलिदान** आदि से भगवती को सन्तुष्ट कर **'श्रवण'** में सादर **विसर्जित** कर आगामी दिन **विजयोत्सव** माने, किन्तु कभी भी प्रमाद-वश **महाऽष्टमी** में **'बलि-दान'** न करे। **(दुर्गार्चन-प्रदीप)**

उक्त शास्त्रीय प्रमाणों से यही सिद्ध होता है कि **'कलश-स्थापन'- प्रतिपदा-द्वितीया** के **योग** वाली **प्रतिपदा को प्रातःकाल** करे। प्रातः **'हस्त'** नक्षत्र प्राप्त रहे, **'वैधृति'** का अभाव हो, **चन्द्रादि** ग्रह विहित स्थान में हों, तो प्रातः-कालीन **'कलश-स्थापन'** अत्यन्त मङ्गलकारी होता है। यदि **अमावास्या-**

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रतिपदा के योग में **'हस्त'** हो, **वैधृति** का अभाव हो और **ग्रह-लग्न** आदि उत्तम बनते हों, तो भी **'कलश-स्थापन'** उस दिन करे, प्रत्युत दूसरे दिन करे। यदि **प्रतिपदा** दिन-रात को और दूसरे दिन एक पल भी मिलती है, तो दूसरे ही दिन **'कलश'** स्थापित करे।

यदि **प्रतिपदा** के पूर्वाह्ण में **'चित्रा'** या **'वैधृति'** हो, तो उसके बीत जाने पर **'कलश'** स्थापित करे। अपराह्ण तक भी **वैधृति'** और **'चित्रा'** मिले, तो **सन्ध्या में चन्द्रोदय-काल में 'कलश' स्थापित** करे, उसके बाद रात्रि में कलश स्थापित न करें। यदि **सन्ध्या में पूजा आरम्भ हो जाय और अन्त होते-होते रात्रि हो जाय, तो उसे रात्रि-दोष नहीं माना जाता।** यदि **प्रतिपदा** में कभी भी **शुभ लग्न** न मिले, तो **मध्याह्ण** में ही **'कलश'** स्थापित करे। **वामा-क्रम से मध्य-रात्रि में भी कलश स्थापित कर** सकते है, ऐसा प्रमाण आगमों में प्राप्त है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नव-पत्रिका-पूजन

आश्विन शुक्ला सप्तमी के दिन प्रातः बिल्व (बेल) के वृक्ष के पास जाए। वहाँ आचमन कर सङ्कल्प-पूर्वक पञ्चोपचारों से बिल्व-वृक्ष की पूजा कर हाथ जोड़ निम्न प्रार्थना करे –

ॐ बिल्व-वृक्ष! महा-भाग! सदा त्वं शङ्कर-प्रियः।
गृहीत्वा तव शाखां च, दुर्गा-पूजां करोम्यहम्।।
ॐ शाखोच्छेदोद्भवं दुःखं, न च कार्यं त्वया प्रभो!।
देवैर्गृहीत्वा ते शाखां, पूज्या दुर्गेति विश्रुतिः।।

अर्थात् हे महा-भाग बिल्व-वृक्ष! आप सदा से शङ्कर के प्रिय है। आपकी शाखा को लेकर मैं दुर्गा की पूजा करता हूँ। हे प्रभो! शाखा के तोड़ेने से होने वाले कष्ट का दुःख आप न करें क्योंकि देवता भी आपकी शाखा लेकर दुर्गा की पूजा करते है, ऐसी ख्याती है।

उक्त प्रार्थना कर खड्ग से एक ऐसी शाखा को, जिसमें दो फल लगे हों, निम्न मन्त्र से काटे – ॐ छिन्दि छिन्दि फट् फट् स्वाहा। इस शाखा में नव-पत्रिकाओं को बाँधे।

नव पत्रिकाएँ ये है – १. रम्भा (केला), २. कच्वी (अरवी), ३. हरिद्रा (हल्दी) ४. जयन्ती (जैती), ५. बिल्व (बेल), ६. दाडिम (अनार), ७. अशोक, ८. मानक (मानकच्चू), ९. धान- इनकी पत्तियाँ। सप्तमी के पहले ही अर्थात् षष्ठी के दिन सायं-काल एक छोटे केले के पौधे में अन्य आठ वस्तुओं की शाखाओं को लपेटकर बिल्व-वृक्ष के पास रख देना चाहिए।

'नव-पत्रिका'-युक्त बिल्व-शाखा को, सम्भव हो तो ले जाकर गङ्गाजी में विधि-पूर्वक स्नान कराए अथवा पूजा-गृह के आँगन में ही स्नान करा कर उसका पूजन करे और साड़ी तथा सिन्दूर आदि से सुशोभित कर गणेशजी की मूर्ति के दाहिनी ओर स्थापित करे।

पूजा-गृह में 'नव-पत्रिका' को ले जाने के पूर्व निम्न मन्त्रों को पढ़े –

ॐ पुत्रायुर्धन-वृद्धयर्थं, नेष्यामि चण्डिकाऽऽलयम्।
बिल्व-शाखां समाश्रित्य, लक्ष्मी-राज्यं प्रयच्छ मे।।
ॐ आगच्छ चण्डिके देवि! सर्व-कल्याण-हेतवे।
पूजां गृहाण सु-मुखि! नमस्ते शङ्करे-प्रिये!।।

अब उसे स्नान कराने के पूर्व 'ॐ नव-पत्रिका-वासिन्यै दुर्गायै नमः' मन्त्र से उसकी पूजा करे। फिर निम्न नौ मन्त्रों से उसे स्नान कराए –

ॐ कदली-तरु-संस्थाऽसि, विष्णोर्वृक्षः-स्थलाश्रये!
नमस्ते नव-पत्रि! त्वं, नमस्ते चण्ड-नायिके!।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ कच्चि! त्वं स्थावरस्थाऽसि, सदा सिद्धि-प्रदायिनी।
दुर्गा-रूपेण सर्वत्र, स्नानेन विजयं कुरु।।
ॐ हरिद्रे! हर-रूपाऽसि, शङ्करस्य सदा प्रिये!
रुद्र-रूपेण देवि! त्वं, सर्व-शान्तिं प्रयच्छ मे।।
ॐ जयन्ति! जय-रूपाऽसि, जगतां जय-कारिणी!
स्नापयामीह देवि! त्वं, जयं देहि गृहे मम।।
ॐ श्रीफल! श्री-निकेतोऽसि, सदा विजय-वर्धन!
देहि मे हित-कामांश्च, प्रसन्नो भव सर्वदा।।
ॐ दाडिम्यघ-विनाशाय, क्षुन्नाशाय सदा भुवि।
निर्मिता फल-कामाय, प्रसीद त्वं हर-प्रिये!।।
ॐ स्थिरा भव सदा दुर्गे! अशोके शोक-हारिणि!।।
मया त्वं पूजिता दुर्गे! मामशोक सदा कुरु।।
ॐ मानो! मान्येषु वृक्षेषु, माननीयः सुरासुरैः।
स्नापयामि महा-देवि! मानं देहि नमोऽस्तु ते।।
ॐ लक्ष्मीः! त्वं धान्य-रूपाऽसि, प्राणिनां प्राण-दायिनि!
स्थिरात्यन्तं हि नो भूत्वा, गृहे काम-प्रदा भव।।

इसके बाद निम्न मन्त्रों से पञ्चोपचारों से प्रत्येक वृक्ष की अलग-अलग पूजा कर प्रणाम-मन्त्रों से प्रत्येक को नमस्कार करे -

१. ॐ रम्भाऽधिष्ठात्रि ब्रह्माणि! इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व, इह सम्मुखी-कृता भव। ॐ रम्भाऽधिष्ठात्र्यै ब्रह्माण्यै नमः गन्धं समर्पयामि इत्यादि।

ॐ दुर्गे देवि! समागच्छ, सान्निध्यमिह कल्पय।
रम्भा-रूपेण सर्वत्र, शान्तिं कुरु नमोऽस्तु ते।।

२. ॐ कच्व्यधिष्ठात्रि कालिके! इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व, इह सम्मुखी-कृता भव। ॐ कच्व्यधिष्ठात्र्यै कालिकायै नमः गन्धं समर्पयामि इत्यादि।

ॐ महिषासुर-युद्धेषु, कच्वी-भूताऽसि सुव्रते!
मम चानुग्रहार्थाय, आगताऽसि हरि-प्रिये!।।

. Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

३. ॐ हरिद्राऽधिष्ठात्रि दुर्गे! इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व, इह सम्मुखी-कृता भव। ॐ हरिद्राधिष्ठात्र्यै दुर्गायै नमः गन्धं समर्पयामि इत्यादि।

ॐ हारिद्रे वरदे देवि! उमा-रूपाऽसि सुव्रते!
मम विघ्न-विनाशाय, पूजां गृह्ण प्रसीद मे।।

४. ॐ जयन्त्यधिष्ठात्रि कार्तिकि! इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व, इह सम्मुखी-कृता भव। ॐ जयन्त्यधिष्ठात्र्यै कार्तिक्यै गन्धं समर्पयामि इत्यादि।

ॐ निशुम्भ-शुम्भ-मथने! इन्द्रैर्देव-गणै सह
जयन्ति! पूजिताऽसि, त्वमस्माकं वरदा भव।।

५. ॐ बिल्वाधिष्ठात्रि शिवे! इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व, इह सम्मुखी-कृता भव। ॐ बिल्वाधिष्ठात्र्यै शिवायै गन्धं समर्पयामि इत्यादि।

ॐ महादेव-प्रिय-करो, वासुदेव-प्रियः सदा।
उमा-प्रीति-करो वृक्षो, बिल्व वृक्ष नमोऽस्तु ते।।

६. ॐ दाडिम्यधिष्ठात्रि रक्त-दन्तिके! इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व इह सम्मुखी-कृता भव। ॐ दाडिम्यधिष्ठात्र्यै रक्त-दन्तिकायै गन्धं समर्पयामि इत्यादि।

ॐ दाडिमि! त्वं पुरा युद्धे, रक्त-वीजस्य सम्मुखे।
उमा-कार्यं कृतं यस्मादस्माकं वरदा भव।।

७. ॐ अशोकाधिष्ठात्रि शोक-रहिते! इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व, इह सम्मुखी-कृता भव। ॐ अशोकाधिष्ठात्र्यै शोक-रहितायै गन्धं समर्पयामि इत्यादि।

ॐ हर-प्रीति करो वृक्षो, ह्यशोकः शोक-नाशनः।
दुर्गा-प्रीति-करः यस्मादस्माकं वरदा भव।।

८. ॐ मानाधिष्ठात्रि चामुण्डे! इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व, इह सम्मुखी-कृता भव। ॐ मानाधिष्ठात्र्यै चामुण्डा गन्धं समर्पयामि नमः इत्यादि।

ॐ यत्स्यात्रे वसेद् देवी, मान-वृक्षः शची-प्रिय मम चानुग्रहार्थाय, पूजां गृह्ण प्रसीद मे।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

श्रीमद्-देवी-भागवत में शारदीय नवरात्र

शरत्-काल अर्थात् **आश्विन** के **'नव-रात्रि'** में विषेशतया **भगवती श्रीजगदम्बा चण्डिका देवी का व्रत** करना चाहिए। इसी प्रकार **बसन्त ऋतु** के **'नव-रात्र'** में भी यह व्रत विधेय है। ये दोनों ही ऋतुएँ **'यम-दंष्ट्रा'** कही गई है क्योंकि इनमें विविध प्रकार के रोगादि उत्पन्न होते हैं और प्राणियों का व्यापक रूप से नाश होता है। अतएव **आत्म-कल्याण** की इच्छा करने वाले व्यक्तियों को प्रयत्न-पूर्वक **'नव-रात्र' का व्रत** विधि-पूर्वक करना चहिए। इस व्रत का प्रारम्भ **'शुक्ल प्रतिपदा'** से होता है। इसलिए इसकी तैयारी **अमावस्या** के दिन ही कर लेनी चाहिए।

अमावास्या के दिन :-

व्रत से सम्बन्धित सभी वस्तुओं को पहले एकत्र करे। भोजन केवल एक बार करे और **हविष्य पदार्थो** को ही ग्रहण करे। अपने घर में या घर के निकट किसी समतल और पवित्र स्थान में सोलह हाथ लम्बा-चौड़ा **'मण्डप'** बनाए। इस **'मण्डप'** को सुन्दर स्तम्भों और पताकाओं से सजाए। सारे स्थान को श्वेत मिट्टी-गोबर से लिपवाए।

उक्त **'मण्डप'** के मध्य में एक सुन्दर, चौकोर और टिकाऊ **'वेदी'** बनाए। यह **'वेदी'** चार हाथ लम्बी-चौड़ी और एक हाथ ऊँची होनी चाहिए। इस **'वेदी'** या **'पीठ'** के ऊपर चाँदनी तनवाए और चारों ओर रङ्ग-बिरङ्गे **तोरण** बनाकर तथा **बन्दनवार** लटका कर उसे शोभा-युक्त करे। रात्रि के समय ऐसे विद्वान् ब्राह्मणों को सादर बुलाए, जो **श्री जगदम्बा की उपासना के तत्त्व** को जानते हों और सदाचारी, संयमी तथा वेद-वेदाङ्गों के ज्ञाता हों।

प्रातःकाल नदी, नद, तड़ाग, बावली, कुएँ पर जाकर अथवा घर में ही विधिवत् स्नान करे। फिर **'नित्य-कर्म'** समाप्त कर अनुष्ठान करने के लिए **ब्राह्मणों का वरण करे। 'मधु-पर्क'** और **'अर्घ्य-पाद्य'** से उनका पूजन कर उन्हें यथा शक्ति वस्त्र तथा आभूषण भेंट कर सन्तुष्ट करे। इस कार्य में कन्जूसी न करे क्योंकि सब प्रकार से सन्तुष्ट ब्राह्मणों के द्वारा किए गए पूजानादि कर्म ही फल-दायक होते है।

'श्रीमद्-देवी-भागवत्' और **'चण्डी-माहात्म्य'** **(श्रीदुर्गा-सप्तशती)** का पाठ करने के लिए यथा-सामर्थ्य **नौ, पाँच, तीन** अथवा **एक ब्राह्मण** की नियुक्ति करे। **'श्रीमद्-देवी-भागवत्'** का **पारायण** करने के महत्-कार्य में किसी शान्त स्वभाव वाले ब्राह्मण को नियुक्त करना चाहिए।

सबसे पहल वैदिक मन्त्रों से **'स्वस्त्ययन'** अर्थात् **मङ्गल-पाठ** कराए। तदनन्तर पूर्वोक्त **'वेदी'** के ऊपर एक **'सिंहासन'** स्थापित करे। **'सिंहासन'** में एक नवीन रेशमी वस्त्र बिछाए। इस वस्त्र के ऊपर **शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म** से युक्त चार भुजाओं वाली अथवा विविध आयुधों से युक्त **अठारह भुजाओं वाली सनातनी भगवती** की **'प्रतिमा'** को प्रतिष्ठित करे। देवी की यह **'प्रतिमा'** यथा-शक्ति रत्न-जटित

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आभूषणों, मोतियों के हार तथा सुन्दर वस्त्रों से शोभायमान होनी चाहिए। **'प्रतिमा'** की आकृति सौम्य और शुभ लक्षणों से युक्त हो, इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए।

यदि **'प्रतिमा'** की प्रतिष्ठा करना सम्भव न हो, तो उसके स्थान पर **नवार्ण-मन्त्र** से युक्त **'श्रीदुर्गा-यन्त्र'** की स्थापना करे।

'वेदी' के दाहिनी ओर एक **'कलश'** स्थापित करे। इस **'कलश'** को **वैदिक मन्त्रों से अभिमन्त्रित कर उत्तम तीर्थ-जल** से परिपूर्ण करे और जल में सुवर्ण तथा रत्न छोड़ दे। **'कलश'** को **'पञ्च-पल्लवों'** से शोभायमान करे। पूजा में लगने वाली सभी सामग्रियों को **'वेदी'** के चारों ओर सजा कर रख ले। **मङ्गलाचार** के लिए **गायन-वादन** की व्यवस्था कर ले।

प्रतिपदा से पूजनारम्भ :-

हस्त- नक्षत्र से युक्त **नन्दा (प्रतिपदा) तिथि** में विधिवत् पूजा प्रारम्भ करना शुभ होता है। इस पूजा से सभी कामनाओं की पूर्ति होती है। सम्भव हो, तो इस दिन **उपवास** रखे अथवा केवल एक बार रात्रि में **हविष्य का भोजन** करे।

पूजन प्रारम्भ करने के पहले **देवी से प्रार्थना** करे। यथा-

करिष्यामि व्रतं मातर्नवरात्रमुत्तमम्।
साहाय्यं कुरु मे देवि! जगदम्ब! ममाखिलम्।।

अर्थात् हे मातः! मै नव-रात्र के उत्तम व्रत को करूँगा। हे देवि, हे जगदम्ब! मेरी पूर्ण सहायता करिए।

इसके बाद विधि-पूर्वक मन्त्रों का उच्चारण करते हुए **जगदम्बा का पूजन** करे। पूजन में **चन्दन-अगरु-कर्पूर; मन्दार-करञ्ज-अशोक-चम्पा-कनैल-मालती-ब्राह्मी** आदि के सुगन्धित **पुष्प** और बिल्व-पत्र; **धूप** तथा **दीप** का सविधि प्रयोग करे। **नारियल-नींबू-अनार-केला-नारङ्गी-कटहल-बिल्व** फलों के साथ अन्न प्रदान करे। मांसाहारी लोगों को **पशु-बलि** करनी चाहिए।

होम के लिए त्रिकोणाकार **'कुण्ड'** अथवा **'स्थण्डिल'** की रचना करे, जिसका प्रमाण (नाप) शुभ-दायक रखे।

प्रातः, मध्याह्न और **सायं**- तीनों काल पूजन करे और **गीत-वाद्य-नृत्य** द्वारा अधिक-से-अधिक उत्सव मनाए। प्रति-दिन **भूमि पर ही शयन** करे।

प्रति-दिन **'कुमारी'-पूजन** करे। चाहे तो केवल **एक कुमारी का नित्य पूजन** करे या प्रति-दिन एक-एक कर कुमारी की संख्या बढ़ाते जाए अर्थात् पहले दिन **एक कुमारी** का, दूसरे दिन **दो कुमारियों** का, तीसरे दिन तीन का-इसी प्रकार नवें दिन **नौ कुमारियों** की पूजा करे अथवा **प्रति-दिन नौ कुमारियों का पूजन** करे। जैसी श्रद्धा और शक्ति हो, वैसा करे, किन्तु कञ्जूसी न करे।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ब्राह्मणों को ब्राह्मण-जाति की कन्या का कुमारी-रूप में पूजन करना चाहिए। क्षत्रिय को ब्राह्मण-क्षत्रिय दोनों जाति की कन्या का, वैश्य को ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य तीनों जातियों का और शूद्र को चारों जातियों की कन्या का कुमारी-रूप में पूजन करने का अधिकार है विविध धन्धों में लगे हुए लोगों को अपनी ही जाति की कन्या का पूजन करना चाहिए।

ब्राह्मण-कन्या के पूजन से सब कार्यों को सिद्धि, क्षत्रिय-कन्या के पूजन से विजय-प्राप्ति वैश्य-कन्या के पूजन से धन-लाभ और शूद्र-कन्या के पूजन से वंश-वृद्धि होती है।

कुमारियों के नाम और उनकी पूजा से प्राप्त होने वाले फल का विवरण निम्न प्रकार है-

दो वर्ष - "कुमारिका" - दुःख-दारिद्रय-शत्रु-नाश, धन-आयु-बल-वृद्धि
तीन वर्ष - "त्रि-मूर्ति" - धर्म-अर्थ-काम, धन-धान्य पुत्र-पौत्रादि-वृद्धि
चार वर्ष - "कल्याणी" - विद्या (ज्ञान), विजय, सुखादि कामना-पूर्ति
पाँच वर्ष - "रोहिणी" - रोग -नाश
छः वर्ष - "कालिका" - शत्रु - नाश
सात वर्ष - "चण्डिका" - धन और ऐश्वर्य की प्राप्ति
आठ वर्ष - "शाम्भवी" - मोह- दुःख-दारिद्रय-नाश, संग्राम में विजय
नौ वर्ष - "दुर्गा" - शत्रु-नाश, साधना-सिद्धि, पर-लोक में सुख
दस वर्ष - "सुभद्रा" - सभी कामनाओं की पूर्ति

दस वर्ष से अधिक आयुवाली कन्याओं का पूजन कुमारी-रूप में नहीं करना चाहिए। ऊपर लिखे नामों से ही विधिवत् कुमारियों का पूजन करे। पूजन के मन्त्र क्रमशः निम्न प्रकार है-

मन्त्रों के पूर्व में 'श्रीरस्तु' अथवा 'श्री' या किसी अन्य बीज-मन्त्र से युक्त मन्त्र का उच्चारण करे।

कुमारिका :-

कुमारस्य च तत्त्वानि, या सृजत्यपि लीलया।
कादीनापि च देवांस्तां, कुमारीं पूजयाम्यहम्।।

जो कुमार कार्तिकेय के तत्त्वों को और ब्रह्मा आदि देवताओं को अपनी लीला से रचती है, उन भगवती 'कुमारी' का मैं पूजन करता हूँ।

त्रि-मूर्ति :-

सत्वादिभिस्त्रिमूर्तिर्या, तैर्हि नाना-स्वरूपिणी।
त्रि-काल-व्यापिनी शक्तिस्त्रिमूर्ति पूजयाम्यहम्।।

सत्त्व आदि तीन गुणों के द्वारा जो तीन मूर्तिवाली है और उन्हीं (गुणों) के द्वारा जो विविध स्वरूप वाली है, तीनों कालों में व्याप्त रहने वाली शक्ति है, उन भगवती 'त्रि-मूर्ति' का मैं पूजन करता हूँ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कल्याणी :-

कल्याण-कारिणी नित्यं, भक्तानां पूजिताऽनिशम्।
पूजयामि च तां भक्त्या, कल्याणीं सर्व-कामदाम्।।

अहर्निश पूजा किए जाने पर जो अपने भक्तों का नित्य कल्याण करने वाली है, उन सब कामनाओं की देने वाली **भगवती कल्याणी** का मैं भक्ति-पूर्वक पूजन करता हूँ।

रोहिणी :-

रोहयन्ती च बीजानि, प्राग्-जन्म-सञ्चितानि वै।
या देवी सर्व-भूतानां, रोहिणीं पूजयाम्यहम्।।

समस्त प्राणियों के पूर्व-जन्मों के सञ्चित कर्म-बीजों को जो उगाती है, उन **भगवती 'रोहिणी'** का मैं पूजन करता हूँ।

कालिका :-

काली कालयते सर्वं, ब्रह्माण्डं स-चराचरम्।
कल्पान्त-समये या तां, कालिकां पूजयाम्यहम्।।

कल्प के अन्तिम समय में चर-अचर के सहित सम्पूर्ण विश्व का जो लय करती है, उन **भगवती 'कालिका'** का मैं पूजन करता हूँ।

चण्डिका :-

चण्डिकां चण्ड-रूपां च, चण्ड-मुण्ड-विनाशिनीम्।
तां चण्ड-पाप-हरणीं, चण्डिकां पूजयाम्यहम्।।

प्रचण्ड रूपवाली और चण्ड-मुण्ड का विनाश करने वाली और महा-पापों को दूर करने वाली **भगवती 'चण्डिका'** का मैं पूजन करता हूँ।

शाम्भवी :-

अकारणात् समुत्पत्तिर्यन्वेदैः परि-कीर्त्तिता।
यस्यास्तां सुखदां देवीं, शाम्भवीं पूजयाम्यहम्।।

वेदों द्वारा जिनकी उत्पत्ति बिना किसी कारण अर्थात् स्वतः बताई गई है, उन सुख देने वाली **भगवती 'शाम्भवी'** का मैं पूजन करता हूँ।

दुर्गा :-

दुर्गात् त्रायति भक्तं या, सदा दुर्गति-नाशिनी।
दुर्ज्ञेया सर्व-देवानां, तां दुर्गां पूजयाम्यहम्।।

दुर्दशा को नष्ट करने वाली जो अपने भक्त को विपत्ति से सदा बचाती है और जो समस्त देवताओं के

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

लिए भी कठिनाई से जानने योग्य है, उन भगवती 'दुर्गा' का मैं पूजन करता हूँ।

सुभद्रा :-

सुभद्राणि च भक्तानां, कुरुते पूजिता सदा।
अभद्र-नाशिनीं देवीं, सुभद्रां पूजयाम्यहम् ।।

पूजा किए जाने पर जो अपने भक्तों का सदा कल्याण करती है, अमङ्गल का नाश करने वाली उन भगवती **'सुभद्रा'** का मैं पूजन करता हूँ।

उक्त मन्त्रों का उच्चारण कर वस्त्र, आभूषण, पुष्प-मालाओं और सुगन्ध आदि से **कन्याओं का सदा भक्ति-पूर्वक पूजन** करना चाहिए।

'नव-रात्र' के **नवों दिन** पूजन करने में यदि असमर्थ हो, तो केवल **अष्टमी के दिन विशेष** रूप **से भगवती का पूजन** करे क्योंकि **दक्ष-यज्ञ** को ध्वस्त करने वाली **भद्र-काली का आविर्भाव** करोड़ों **योगिनियों के सहित 'अष्टमी' को** ही हुआ था। अतः **अष्टमी को विशेष पूजन** का अत्यधिक महत्त्व है।

अष्टमी के दिन **खीर** तथा **मांस से हवन** कर **ब्राह्मण-भोजन** कराना चाहिए तथा **फल-फूल** का उपहार अर्पित कर **श्रीजगदम्बा** को प्रसन्न करना चाहिए।

जो लोग पूरे **'नव-रात्र'** भर **उपवास**-पूर्वक **व्रत** करने में असमर्थ हों, उन्हें केवल तीन दिन-**सप्तमी, अष्टमी** और **नवमी** को-उपवास-सहित **व्रतानुष्ठान** करना चाहिए। इससे उन्हें पूर्ण फल की प्राप्ति होगी। **पूजन, हवन, कुमारी-पूजा** और **ब्राह्मण-भोजन** इन्हीं कर्मो से **'नव-रात्र'** का व्रत सम्पन्न होता है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शारदीय महोत्सव

आश्विन में प्रति-वर्ष हिन्दू मात्र के घर में **श्री जगदम्बा का अर्चन** होता है। **छहों आम्नायों से पूजित दुर्गा**-रूप की ही विशेषतः सपर्या होती है। जिन-जिन की जिस-जिस आम्नाय की दीक्षा है, उन-उन आम्नाय से **'दुर्गा-पूजा'** होती है।

कल्प-भेद से **'दुर्गा पूजा'** तीन प्रकार से होती है। 'महा-काल-संहिता में लिखा है कि-

'उत्तम-कल्प' में **अष्टादश-भुजा** को **'उग्र-चण्डा'** नाम से करवाल में **आश्विन कृष्ण नवमी** के मध्याह्न में प्रबोधन कर, **आश्विन-शुक्ल नवमी** तक १६ दिन उनका अर्चन कर **दशमी** में विसर्जन करे।

'मध्यम-कल्प' में **आश्विन-शुक्ल प्रतिपत्** के प्रातः **घट, यन्त्र** अथवा **प्रतिमा** में **षोडश-भुजा दुर्गा** का **'भद्र-काली'** नाम से प्रबोधन कर, उनका **नवमी** तक ६ दिन अर्चन कर **दशमी में विसर्जन** करे।

'तृतीय-कल्प' में **आश्विन शुक्ल षष्ठी** में **बिल्व**-शाखा में सांय-काल **दश-भुजा दुर्गा** का **'कात्यायनी'** नाम से **बिल्व**-युग में प्रबोधन कर, **सप्तमी** में स्व-गृह में लाकर स्थापित कर उनका **तीन** दिन पूजन कर **दशमी में विसर्जन** करे।

'उत्तम-कल्प' एवं **तृतीय-कल्प'** के विषय में सभी ग्रन्थों का एक ही मत है, परन्तु **'मध्यम-कल्प'** अर्थात् **'भद्र-काली'-कल्प** के सम्बन्ध में 'लिङ्ग-पुराण' में लिखा है कि- **''षोडश-भुजा 'भद्र-काली-कल्प'** में **आश्विन कृष्ण एकादशी** में उपवास कर, **द्वादशी** में एक-भक्त बन, **त्रयोदशी** में नक्त-भोजी होकर, **चतुर्दशी** में यन्त्र अथवा मूर्ति में प्रबोधन करे।''

'यामल' में लिखा है कि-**'प्रतिपदा** में ही **कलश-स्थापना** होना चाहिए।' इस उक्ति के अनुसार **तीनों ही कल्पों में प्रतिपत् में ही 'कलश-स्थापन'** होता है, परन्तु **'पूजा'** का विधान पृथक् है।

'उग्र-चण्डा-कल्प' में **आश्विन कृष्णा नवमी** में करवाल में **महा-माया का मध्याह्न** में **प्रबोधन** कर, **उग्र-चण्डा** का **द्वा-त्रिंशाक्षर मन्त्र** से पूजन तथा **आवरण-पूजन** भी किया जाता है यह पूजा **अमावास्या** तक होती है। फिर **प्रतिपत्** में **'घट-स्थापन'** कर उसके निकट अथवा ऊपर उस **करवाल का स्थापन** कर, उसमें पूर्ववत् पूजा कर प्रति-दिन पृथक्-पृथक् **'नव-दुर्गाओं'** की पूजा करे।

'उग्र-चण्डा-कल्प' में **नव-दुर्गाओं** के नाम है-

१. रुद्र - चण्डा, २. प्रचण्डा, ३. चण्डोग्रा, ४. चण्ड-नायिका, ५. चण्डा,

६. चण्डवती, ७. चण्डरूपा, ८. अति-चण्डिका, ९. उग्र-चण्डा।

'भद्र-काली-कल्प' में **'घट-स्थापन'** के दिन से ही पूजा का आरम्भ होगा, परन्तु **कृष्णा**

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चतुर्दशी में महा-माया का यन्त्र अथवा मूर्ति में प्रबोधन कर, दुर्गा भद्र-काली की सपर्या की जाती है। अमा में भी इसी प्रकार पूजा कर प्रतिपत् में 'घट-स्थापन' कर, उसके ऊपर अथवा निकट उस यन्त्र अथवा प्रतिमा का स्थापन कर प्रति-दिन पृथक्-पृथक् नव-दुर्गाओं की पूजा करे।

'भद्र-काली-कल्प' में नव-दुर्गाओं के नाम है- १. शैल-पुत्री, २. ब्रह्म-चारिणी, ३. चन्द्र-घण्टा, ४. कूष्माण्डा, ५. स्कन्द-माता, ६. कात्यायनी, ७. काल-रात्रि, ८. महा-गौरी, ९. सिद्धि-दात्री।

'कात्यायनी-कल्प' में केवल तीन दिन की ही पूजा है, परन्तु घट-स्थापन प्रतिपत् में ही होता है। उसमें षष्ठी तथा सप्तमी में प्रातः तक केवल दुर्गा के अष्टाक्षर मन्त्र से पूजा होती है। षष्ठी के सांय-काल में प्रबोधित बिल्व तथा नव-पत्रिकाएँ सप्तमी में उस घट पर रखकर तीन दिन विशेष पूजा होती है।

'वृहद्-बडवानल-तन्त्र' के यागादि-पटल में लिखा है कि " क्रम-दीक्षा-प्राप्त वीर लोग 'घट-स्थापन' कर, उस घट में 'नव-दुर्गा' क्रम से पूजा कर रात्रि में स्वेष्ट-देवी के क्रमार्चनपूर्वक सुवासिनी-पूजन कर 'तत्त्व-शुद्धि' करे।"

इस विषय की एक प्राचीन पद्धति है, उसमें प्रातः, मध्याह्न तथा सायं-त्रि-काल की पूजा बताई है। उक्त पद्धति के सङ्कल्प में अनेक काम्य वचन लिखे है, परन्तु मैं केवल 'श्रीविद्याङ्गत्व-प्राप्तये' का प्रयोग करता हूँ। उक्त पद्धति का संक्षिप्त विवरण यहाँ दे रहा हूँ -

:: प्राचीन पद्धति का विवरण ::

आश्विन कृष्णा नवमी के मध्याह्न में पूजा-गृह में जाकर, कर्म-कुब्जिका की अर्चना कर, दीपादि-स्थापन कर, करवाल रख, उसमें अष्टादशभुजी उग्र-चण्डा का ध्यान-पूर्वक आवाहन कर, पश्चिमाम्नाय से उग्र-चण्डा के द्वा-त्रिंशाक्षर मन्त्र से यथोक्त कुल-कल्प से पूजन कर, छाग-बलि करे। तत्पश्चात् निम्न प्रार्थना करे-

ॐ रावणस्य बधार्थाय, रामस्यानुग्रहाय च।
अकाले ब्रह्मणा बोधो, देव्यास्त्वयि कृतः पुरा।।
अहमप्याश्विने कृष्णे, नवम्यां बोधयाम्यहम्।।

इसके बाद पञ्च-तार 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं' तथा 'भगवती श्रीमन्-महोग्र-चण्डिके दुर्गे! उत्तिष्ठ उत्तिष्ठ, निद्रां जहि जहि प्रति-बुध्यस्व प्रति-बुध्यस्व, मम शत्रुन् हन् हन्, पातय-पातय, स्वाहा' से बोधन कर, हरिद्रा-मिश्रित सुगन्ध-तैल उद्वर्तन-मन्त्र पढ़कर देवी के अङ्ग अथवा खड्ग में लेपन करे। फिर 'ॐ नाना-गन्ध-सुगन्धाढ्यं' इत्यादि श्लोक पढ़कर, पञ्च-सुगन्ध लेपन

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कर, **मूल-मन्त्र** से **बिल्व-पत्र, जपा-पुष्प, रक्त-करवीर, पाटली-पुष्प** तथा **द्रोण-पुष्प** देवी के मस्तक में समर्पित कर चारों दिशाओं में क्रमशः **वटुकादि** कायं **माष-भक्त-प्रदान** करे। तत्पश्चात् यथा-शक्ति **जप-पाठ** कर, एक मन्त्र पढ़कर, उस **करवाल** में अथवा **प्रतिमा** है, तो **देवी के वाम-कर** में, **कुमारी-सूत्र** वेष्ठित करे। **रक्षा-मन्त्र** पढ़कर, **सर्षप** से आठों दिशाओं में रक्षा कर, **देवी के आठों ओर दीपक** जलाकर, एक **छोटी-सी प्रार्थना** कर, यथा-लाभ **तत्त्व-शुद्धि** कर **गीत-वाद्यादि** से देवी को प्रसन्न करे।

दशमी से **अमा** तक **मध्याह्न** में **उग्र-चण्डा** की सामान्य पद्धति से प्रति-दिन पश्चिमाम्नाय के कुल-कल्प से पूजा करे।

आश्विन शुक्ल-प्रतिपत्-कृत्य :-

स्नान-सन्ध्यादि नित्य-कर्म कर, पूजा-मण्डप में प्रवेश कर, श्रीविद्या-मूल से ऋष्यादि कर, षडङ्ग-न्यास कर, यवाक्षत-तिल-कुश-जल हाथ में लेकर, '**सङ्कल्प**' करे -

ॐ अद्येत्यादि अमुकार्थे शारदीयार्चन-निमित्त्यर्थे घट-स्थापन-कर्माहं करिष्ये।'

तत्पश्चात् ऊर्ध्वाम्नायोक्त क्रम से **सामान्यार्घ्य**-स्थापन करे। उस जल से एक मन्त्र पढ़कर, **भूमि-वेदी का सिञ्चन** करे। फिर एक मन्त्र पढ़, कुश से **भूमि का स्पर्श** कर, उसे शुद्ध करे। तब सिन्दूरादि रज से **चतुरस्रात्मक सर्वतो-भद्र** लिखकर, एक मन्त्र पढ़, गन्धोक्त कुसुमाक्षत से **पूजा** कर, दूसरा मन्त्र पढ़, **पङ्क से आच्छादन** कर, **त्रिकोणाकार** बनाकर, तीसरा मन्त्र पढ़े, सिन्दूर से उसके ऊपर **अर्द्ध-चन्द्राकार** लिखे। तत्पश्चात् यवों का यथोक्त विधि से शोधन तथा '**ॐ यवत्वमसि०**' इत्यादि प्रार्थना कर, चतुर्थ मन्त्र पढ़कर, उसके ऊपर **यवार्पण** करे। फिर '**ॐ पङ्क! त्वं पृथि-रूपो०**' इत्यादि पढ़कर, **पङ्क से आच्छादन** कर, जल-सिञ्चन कर, उसके ऊपर बिन्दु-नव-योनि-केशरान्वितिाष्टदल-चतुरस्र लिखकर, उसमें **पञ्चाशत् पीठों की पूजा** करे।

तत्-पश्चात् उसके ऊपर साधारण **घट-स्थापन** कर,उसके ऊपर, **अलि-पूर्ण पात्र** तथा **महा-फल-स्थापन** कर, उसमें **सावयव महा-त्रिपुर-सुन्दरी की भावना** करे। फिर सुवेला में उसे स्थिर करे। तत्-पश्चात् **भूत-शुद्धि** और **प्राणायाम**-पूर्वक प्रथम **गण-षोढा-न्यास** कर, **त्रिपुरा के मन्त्र का ऋष्यादि-षडङ्ग-न्यास** कर, ऊर्ध्वाम्नाय से **दीप, कलश** तथा **गणेश का स्थापन** और **पूजन** करे। हो सके, तो **शालिग्राम-गणेश** या **शोणभद्र-गणेश** का और न हो सके, तो केवल **पूगी-फल में गणपति का आहवाहन तथा पूजन करे, मूर्ति** में नहीं क्योंकि अवस्थानुसार **नाम, ध्यान** तथा **मन्त्रों के भेद से पूजा** होगी। **प्रातः-पूजा में नवों दिन महा-गणपति पूज्य** है। तत्पश्चात् ऊर्ध्वाम्नाय-विधि से **पात्रादि का स्थापन** तथा संस्कार कर, मूल घट में **मण्डूकादि पर-तत्त्वान्त** पीठ-देवताओं की **पूजाकर, 'लं त्रैलोक्य-मोहन-चतुरस्र चक्राय नमः'** से विशेष '**पीठ-पूजा**' करे। इसके बाद

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

'त्रिखण्डा-मुद्रा' से त्रिपुरा का ध्यान कर-

ॐ आगच्छ वरदे, देवि! दैत्य-दर्प-निसूदिनि!।
पूजां गृहाण सुमुखि! त्रिपुरे, शङ्कर-प्रिये!।।

इस श्लोक से आवाहन करे -

ॐ इमां प्रसाधिनीं देवि! रम्य-पट्टैर्विनिर्मिताम्।
गृहाण त्रिपुरे, मातः! केश-सुस्निग्ध-कारिणीम्।।

इस श्लोक से **केश-संस्कार-द्रव्य** समर्पण कर, **त्रिपुरा के मन्त्र से पाद्यार्घ्यादि** समर्पित करे। तब स्नान कराने के बाद पीत-वस्त्र, पीत-यज्ञोपवीत, गोरोचन, चन्दन, सिन्दूराक्षतादि, चम्पक-पुष्प, मन्दार-पुष्प-माला, वाल-धूप, पीत-वर्तिका-दीप, घृतोदन-नैवेद्य, पूरक-पक्वान्न, अग्नि-पक्व-मांस, शल्लकी-मांस चिश्चिणी-रस-पात्र, उष्णौषधि, शाली-धान्य-व्रीहि, ताम्बूल-मुख-शुद्धि तथा हिरण्य-दक्षिणा **त्रिपुरा-मूल से समर्पित** कर, **त्रिपुरा की पादुका-पूजा** कर, दक्ष में **अणिमा-सिद्धि,** वाम में **सर्व-संक्षोभिणी-मुद्रा,** अग्र में **चार्वाक-दर्शन** तथा पृष्ठ में **पृथिव्यात्मक-चक्र** की पूजा कर, **अणिमादि प्रकट-योगिनियों की आवरण-पूजा** कर, बलि-पात्र में **बटुक-बलि** करे। इसके बाद जप-पाठादि कर, **एक-वर्षात्मिका कन्या** की **'श्रद्धा'**- संज्ञा से पूजा कर, **'हल्लेखा'** नाम से **सुवासिनी की पूजा** कर, **तत्त्व-शुद्धि** करे। तत्पश्चात् निम्न मन्त्र से लाजाक्षत समर्पण करे -

'ॐ कृतैतच्छारदीय-प्रतिपदि प्रातस्त्रैलोक्य-मोहन-चक्राधिष्ठात्री-श्रीत्रिपुरार्चन-विधौ तत्सर्वं कर्म परिपूर्णमस्तु। मां मदीयं सकलं परार्पणमस्तु।।'

इस प्रकार **प्रातः पूजा** समाप्त करे।

अब **मध्याह्न** में **माध्याह्निक सन्ध्यादि** समाप्त कर **सङ्कल्प** करे-

'ॐ अद्येत्यादि अमुकार्थे अद्यारभ्य नवम्यन्तं मध्याह्ने यथा-शक्ति-कुलाचारेण श्रीमन्महोग्र-चण्डाङ्गभूत नव-दुर्गा-क्रमार्चनमहं करिष्ये।'

उग्रचण्डा-मूल का एक **कर-षडङ्ग-न्यास** कर, पश्चिमाम्नायोक्त विधि से **प्रातः स्थापित दीप-कलश में गणेश की पूजा** करे। अब गणेश का **'कुल-गणपति'** रूप होगा। तत्पश्चात् **मूल-घट** के ऊपर अथवा वाम ओर घट को स्पर्श कर, पूर्व-प्रबोधित **करवाल या मूर्ति का स्थापन कर, 'एहि दुर्गे.'** इत्यादि से आवाहन कर, संक्षिप्त विधि से **उग्र-चण्डा की पूजा कर, कर-कच्छपी मुद्रा से रुद्र-चण्डा का ध्यान-पूर्वक आवाहन** करे। तत्पश्चात् **रुद्र-चण्डा की पूजा** करे। **रुद्र-चण्डा** के मन्त्र से **पाद्यादि वस्त्र-चन्दन, सिन्दूराक्षत** समप्रण कर, दमन पुष्प, कुंकुम-धूप, घृत-वर्तिका-दीप, सु-पोषक पक्वान्न, वराह-मांस, यव-व्रीही, मरीच औषधि, ताम्बूल मुख-शुद्धि तथा हिरण्य-दक्षिणा समर्पित करे। इसके बाद उनकी आवरण-पूजा कर, धूप-दीप तथा **पञ्च-तत्त्व-युक्त नैवेद्य** समर्पित कर, मूल-देवी

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तथा वटुकादि को कृच्छ्रात्र बलि देकर, छाग तथा कूष्माण्ड की बलि कर, पूर्व-वत् सुवासिनी-पूजा तथा तत्त्व-शुद्धि कर, निम्न मन्त्र से पूर्ववत् पूजा समाप्त करे-

'ॐ कृतैतच्छारदीय-प्रतिपदि-मध्याह्ने श्रीमन्महोग्र-चण्डाङ्ग-भूत-रुद्र-चण्डा-पूजन-विधौ तत्सर्वं कर्म परिपूर्णमस्तु। मां मदीयं सकलं परार्पणमस्तु।'

अब सांय-काल में सायं-सन्ध्यादि समाप्त कर सङ्कल्प करे-

'ॐ अद्येत्यादि अमुकार्थे अद्यारभ्य नवम्यन्तं सायाह्ने यथा-शक्ति-कुलाचारेण प्रति-दिनं एकैकाम्नाय-क्रमेण क्रमार्चनमहं करिष्ये।'

दक्षिणाम्नायोक्त विधि से दीप-कलश तथा लक्ष्मी-गणपति की पूजा कर, काली के द्वा-विंशाक्षर मन्त्र का ऋष्यादि कर, षडङ्ग-न्यास कर, मूल-घट में भगवती का आवाहन करे-

ॐ दक्षिणे कालिके मातर्दक्ष-सिंहासनेश्वरि!।
अस्मिन् घटे समायाहि, शारदी-प्रतिपत्-तिथौ।।
सायाह्ने मत्-कृतां पूजां, गृहीत्वा परमेश्वरि!।
प्रीता भव महा-देवी! भुक्ति-मुक्ति-प्रदायिनी!।।

इस प्रकार आवाहन कर, द्वा-विंशाक्षरी महाविद्या द्वारा कुलाचार से महा-काल-भैरव-सहित साङ्गावरण दक्षिणा-काली की बलि-सहित पूजा-जप-पाठादि कर, पूर्ववत् सुवासिनी-पूजा तथा तत्त्व-शुद्धि कर अर्चन पूर्ण करे-'ॐ कृतैतच्छारदीय-प्रतिपत्-सायाह्ने क्रमार्चने दक्षिणाम्नायेश्वरी-श्रीमद्-दक्षिण-कालिकार्चन-विधौ' इत्यादि।

यदि हो सके , तो त्रिकाल, नहीं तो मध्याह्न तथा सांय द्वि-काल और यदि इतना भी न हो सके, तो मध्याह्न अथवा सायं में एक ही काल, प्रत्येक मन्त्र से १६-१६ आहुतियाँ छाग-कबन्ध मांस के टुकड़े के साथ धान्य-यव-तिलाक्षताज्य से हवन कर छाग-हृदय द्वारा 'ॐ मूर्धानं दिवो॰' इत्यादि ऋचा से पूर्णाहुति प्रदान करे।

अन्य दिनों की विधि भी ऐसी ही है, परन्तु गणपति का नाम, रूप, मन्त्र और पूजा के सामान तथा देवता पृथक् है।

द्वितीया-कृत्य :-

प्रातः सब कर्म पूर्ववत् कर द्वितीय गण-षोढा-न्यास करे। यहाँ महा-गण-पति की पूजा होगी। सर्वाशा-परिपूरक षोडश-दल-चक्र की भावना कर, त्रिपुरेशी का न्यास व ध्यान कर निम्न मन्त्र से आवाहन करे-

ॐ सर्व-तीर्थ-मयं वारि, सर्व-वेद-समन्वितम्।
इदं घटं समासाद्य, तिष्ठ श्रीत्रिपुरेश्वरि!।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

त्रिपुरेशी-मन्त्र से पाद्यादि, श्वेत-वस्त्र, श्वेत-यज्ञोपवीत, श्रीखण्ड-चन्दन, वक-पुष्प, जयन्ती-पुष्पमाला, कर्पूर-धूप, सीत-वर्तिका-दीप, यवोदन-नैवेद्य, क्षीर-षष्ठिका-पक्वान्न, तित्तिरी-मांस, घृत-पात्र, श्री-फल, चर्म-धातु, सूक्ष्मेल-औषधि, मुदग्-ब्रीहि, द्राक्षा-मुख-शुद्धि तथा मुक्ता-दक्षिणा समर्पण कर, सीमन्तिनी, पक्व-सुगन्ध-तैल तथा केश-बन्धन-सूत्र प्रदान कर, मध्य में **त्रिपुरेशी**, दक्ष में **लघिमा-सिद्धि**, वाम में **सर्व-विद्राविणी-मुद्रा**, अग्र में **बौद्ध-दर्शन** तथा पृष्ठ में **चन्द्रात्मक चक्र** की पूजा कर, कामाकर्षिण्यादि **गुप्त-योगिनियों** की आवरण पूजा कर, **योगिनी-बलि** देकर, जप-पाठादि कर, **द्वि-वर्षात्मिका कन्या** की **'बाला'**-संज्ञा से तथा **सुवासिनी** की **'गगना'** नाम से **पूजा** कर, पूर्व-वत् पूजा समाप्त करे-**'ॐ कृतैतच्छारदीय-द्वितीयायां प्रातः सर्वाशा-परिपूरक-चक्राधिष्ठात्री-श्रीत्रिपुरेश्यर्चन-विधौ'** इत्यादि।

मध्याह्न में सकल कर्म पूर्ववत् कर, **कुल-गणपति** की पूजा करे। **प्रचण्डा** का ध्यान तथा आवाहन कर, पाद्यादि, जयन्ती-पुष्प, अगरु-धूप, घृत-वर्तिका-दीप, क्षीर-पक्वान्न, वराह-मांस, धान्य-व्रीहि, सूक्ष्मेल औषधि, ताम्बूल-मुख-शुद्धि तथा रजत-दक्षिणा से अर्चन कर, पूर्ववत् **छाग** तथा **कूष्माण्ड-बलि** भी पूर्ववत् देकर **पूजा** समाप्त करे - **'ॐ कृतैतच्छारदीय-द्वितीया-मध्याह्ने श्रीमन्महोग्र-चण्डाङ्गभूत-प्रचण्डा-विधौ'** इत्यादि।

सायाह्न में सकल कर्म पूर्व-वत् कर **'गों'** मन्त्र से **गणपति की पूजा** कर अधराम्नाय से **श्रीमन्महोग्र-तारा** का न्यासादि कर आवाहन करे -

> **महोग्रे तारिणि मातः। पातालाम्नाय-नायिके!।**
> **सायाह्नेऽद्य द्वितीयायां, घट-मध्ये स्थिरा भव।।**
> **प्रीता भव महा-देवि! पूजां तुभ्यं करोम्यहम्।।**

उग्र-तारा की **षोडशाक्षरी महा-विद्या** द्वारा **अक्षोभ्य**-सहित साङ्गावरण **महोग्र-तारा** का बलि-सहित **कुलाचर से पूजन** कर, अन्य-विधि पूर्ववत् कर पूजा समाप्त करे- **'कृतैतच्छारदीय-द्वितीया-सायाह्ने क्रमार्चने अधराम्नायेश्वरीश्रीमन्महोग्र-तारार्चन-विधौ'** इत्यादि।

'ऊर्ध्वे सायुज्यमाप्नुयात्' प्रति-दिन ऊर्ध्वाम्नाय से प्रातः काल, **'पश्चिमं त्वैहिकं फलम्'**-पश्चिमाम्नाय से मध्याह्न में, फिर-

> **चतुराम्नाय-विज्ञानादूर्ध्वाम्नाय-परः प्रिये!**
> **तस्मात् तदेव जानीयाद्, यदीच्छेत् सिद्धिमात्मनः।।**

अभीष्ट-सिद्धि-हेतु सायं में पृथक-पृथक् करे। आम्नाय से पूजा होती है।

तृतीया-कृत्य :-

प्रातः सब कर्म पूर्ववत् कर **तृतीय गण-षोढा-न्यास** कर घट में **सर्व-संक्षोभण-अष्ट-दल-**

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चक्र की भावना कर त्रिपुर-सुन्दरी का न्यास-ध्यान कर-

ॐ त्रिपुरे सुन्दरि! घटे, सान्निध्यमिह कल्पय।
इमां पूजां गृहाण त्वमष्टाभिः शक्तिभिः सह।।

उक्त मन्त्र से आवाहन कर त्रिपुर-सुन्दरी के मूल-मन्त्र से पाद्यादि, अरुण वस्त्र, अरुण यज्ञोपवीत, रक्त-चन्दन, कुरवक पुष्प, रक्त-कमल-माला, कृष्णागरु-धूप, रक्त-वर्तिका-दीप, रक्तोदन-नैवेद्य, इड-पक्वान्न, खड्गी-मांस, जम्बीर-रस-पात्र, दाडिम्ब-फल, अस्थि-धातु, यपानिका-औषधि, रायिका-व्रीहि, लवङ्ग-मुख-शुद्धि तथा स्फटिक-दक्षिणा समर्पित कर दर्पण, सिन्दूर तथा अलक्तक प्रदान कर मध्य में **त्रिपुर-सुन्दरी,** दक्ष में **महिमा-सिद्धि,** वाम में **सर्वाकर्षिणी-मुद्रा,** अग्र में **गाणपत्य-दर्शन** तथा पृष्ठ में **व्योमात्मक चक्र** की पूजा कर **अनङ्ग-कुसुमादि गुप्ततर योगिनियों** की आवरण-पूजा कर भूत-बलि देकर सभी कर्म पूर्ववत् करे। त्रि-वर्षात्मिका कन्या की **'ललिता'** संज्ञा से तथा सुवासिनी की **'रक्ता'** संज्ञा से पूर्ववत् पूजा समाप्त करे- **'ॐ कृतैतच्छारदीय-तृतीया-प्रातः श्रीत्रिपुर-सुन्दरी-पूजा-विधौ०'** इत्यादि।

मध्याह्न में सकल कर्म पूर्ववत् कर **चण्डोग्रा का ध्यान** तथा **आवाहन** कर पाद्यादि, चम्पक-पुष्प, बाल-धूप, घृत-दीप, लड्डू-पक्वान्न, वराह-मांस, मांस-व्रीहि, लवङ्ग-औषधि, ताम्बूल-मुख-शुद्धि तथा ताम्र-दक्षिणा समर्पित कर छाग और कूष्माण्ड-बलि देकर सभी कर्म पूर्ववत् समाप्त करे।

सायं-काल में सकल कर्म पूर्व-वत् कर **महा-गणपति की पूजा** करे। ऊर्ध्वाम्नाय से **श्रीमद्-बाला-त्रिपुर-सुन्दरी** का न्यास-ध्यान कर -

ॐ ऊर्ध्वाम्नाय-समाराध्ये, श्रीबाला-त्रिपुरेश्वरि!।
घट-मध्ये समायाहि, सायाह्ने पूजयाम्यहम्।।

उक्त मन्त्र से आवाहन कर **बाला त्रिपुर-सुन्दरी** की **षडक्षरी महा-विद्या** से **त्रिपुरेश्वर**-सहित **साङ्गावरण बाला-त्रिपुर-सुन्दरी की पूजा** कर पूर्ववत् समाप्त करे।

चतुर्थी-कृत्य :-

प्रातः सब कर्म पूर्व-वत् कर **चतुर्थ गण-षोढा-न्यास** कर घट में **सर्व-सौभाग्य-दायक चतुर्दशार-चक्र** की भावना कर त्रिपुर-वासिनी का न्यास तथा **ध्यान** कर-

ॐ आगच्छागच्द देवेशि! त्रिपुर-वासिनीश्वरि!।
सान्निध्यं कुरु कुम्भेन, पूजां तुभ्यं करोम्यहम्।।

उक्त मन्त्र से आवाहन कर **त्रिपुर-वासिनी** के मन्त्र से पाद्यादि, हरित-वस्त्र, हरित-यज्ञोपवीत, चतुष्म-चन्दन, मारुत-पुष्पमाला, यक्ष-कर्दम-धूप, हरित-वर्तिका-दीप, पायसान्न-नैवेद्य, घृत-पूरक-पक्वान्न, हरिण-मांस, सुगन्ध-रस-पात्र, निम्बू-फल, स्नायु-धातु, शुण्ठी-औषधि, काल-मास-व्रीहि,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

खर्जूर-मुख-शुद्धि तथा मरकत-दक्षिणा समर्पित कर अञ्जन प्रदान कर दक्ष, वाम, अग्र तथा पृष्ठ में ईशित्व-सिद्धि, सर्व-वशङ्करी मुद्रा, सांख्यादि दर्शन तथा मायात्मक चक्र की पूजा कर सर्व-संक्षोभिण्यादि सम्प्रदाय-यागिनियों की पूजा कर वटुक-क्षेत्रपाल को बलि देकर चतुर्वर्षात्मिका कन्या की 'मालिनी'- संज्ञा से तथा सुवासिनी की 'महोच्छूष्मा' संज्ञा से पूजा कर पूर्ववत् समाप्त करे।

मध्याह्न में सब पूर्व-वत् कर चण्ड-नायिका का ध्यान तथा आवाहन कर पाद्यादि, बिल्व-पत्र-पुष्प, अगर-धूप, घृत-दीप, मध्वोदन-नैवेद्य, वराह-मांस, कुरण्ट-व्रीहि, यष्टि-मधु-औषधि, ताम्बूल-मुख-शुद्धि तथा माणिक्य-दक्षिणा समर्पित कर छाग और कूष्माण्ड की बलि देकर पूर्ववत् समाप्त करे।

सांय-काल में सकल कर्म पूर्ववत् कर 'गणानां त्वा०' इत्यादि वैदिक मन्त्र से गणपति की पूजा कर ऊर्ध्वाम्नाय से वेद-माता ब्रह्म-गायत्री का न्यास-ध्यान कर-

ॐ चतुर्थ्यां वेद-जननि, ब्रह्म-विद्या-स्वरूपिणि!।
घट-मध्ये समायाहि, गायत्रि! पूजयामि ते ।।

उक्त मन्त्र से आवाहन कर साधारण पूजा कर पूर्ववत् समाप्त करे।

पञ्चमी-कृत्य :-

प्रातः सब कर्म पूर्ववत् कर पञ्चम गण-षोढा-न्यास कर घट में सर्वार्थ-साधक बहिर्दशार-चक्र की भावना कर त्रिपुरा-श्री का न्यास तथा ध्यान कर-

ॐ आगच्छ वरदे देवि, त्रिपुरे! श्रीपरमेश्वरि!।
घट-मध्ये समायाहि, पूजये शारदीयकम् ।।

उक्त मन्त्र से आवाहन कर पाद्यादि, रक्त-वस्त्र, रक्त-यज्ञोपवीत, कुंकुम-चन्दन, कुरण्टक-पुष्प, कुन्द-पुष्प-माला, शोह्ल-धूप, रक्त-वर्तिका-दीप, मुद्गोदन-नैवेद्य, फेन-पक्वान्न, मत्स्य, काञ्जीक-रस-पात्र, साखोट-फल, मेढ्र-धातु, मांस-व्रीहि, कुष्टौषधि, पिप्पली मुख-शुद्धि तथा प्रवाल-दक्षिणा समर्पित कर दक्ष, वाम, अग्र और पृष्ठ में वशित्व-सिद्धि, सर्वोन्मादिनी-मुद्रा, वैदिक दर्शन तथा वाय्वात्मक चक्र की पूजा कर सर्व-सिद्धि-प्रदादि कुल-कौल-योगिनियों की पूजा कर क्षेत्रपाल को बलि देकर पञ्च-वर्षात्मिका कन्या की 'वसुन्धरा' संज्ञा से तथा 'करालिनी' नाम से सुवासिनी की पूजा कर पूर्ववत् समाप्त करे।

मध्याह्न में सब कर्म पूर्ववत् कर चण्डा का ध्यान तथा आवाहन कर पाद्यादि, वकुल-पुष्प, कर्पूर-धूप, घृत-दीप, दध्योदन-पक्वान, वाराह-मांस, श्वेत-सर्षप-व्रीहि, सूक्ष्मेलौषधि, ताम्बूल-मुख-शुद्धि तथा स्फटिक-दक्षिणा समर्पित कर छाग और कूष्माण्ड की बलि देकर पूर्ववत् समाप्त करे।

सायं-काल सब कर्म पूर्ववत् उच्छिष्ट-गणपति की पूजा करे। उत्तराम्नाय से दशानना श्रीमद्-गुह्य-काली की भरतोपासिता महा-विद्या के न्यासादि तथा ध्यान कर -

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ उत्तराम्नाय-सम्पूज्ये, श्रीमत्-सिद्धि-करालिके!।
घट-मध्ये समायाहि, तिष्ठ श्रीगुह्य-कालिके!।।
पञ्चम्यामद्य देवि! त्वां, सायाह्ने पूजयाम्यहम्।।

उक्त मन्त्र से आवाहन कर **गुह्येश्वर**-सहित **सावरण-पूजा** कर पूर्ववत् समाप्त करे।

षष्ठी-कृत्य :-

प्रातः-काल सब कर्म पूर्ववत् कर **षष्ठम गण-षोढा-न्यास** कर **सर्व-रक्षा-करान्तर्दशार-चक्र की भावना** कर **त्रिपुरा-मालिनी का न्यास-ध्यान** कर-

ॐ त्रिपुरा-मालिनि परे, षष्ठिके ब्रह्म-रूपिणे!।
आगच्छागच्छ वरदे! पूजां तुभ्यं करोम्यहम्।।

उक्त मन्त्र से आवाहन कर पाद्यादि, कुंकुमाभ-वस्त्र, कुंकुमाभ-यज्ञोपवीत, गोरोचन-चन्दन, रूप-केशर-पुष्प, विचित्र-पुष्पमाला, वाल-धूप, कुंकुमाभ-वर्तिका-दीप, दध्योदन-नैवेद्य, लड्डू-पक्वान्न, शल्लकी-मांस, मधु-पात्र, आम्र-फल, गोर्द-धातु, कलाप-व्रीहि, वंश-रोचन-औषधि, यष्टि-मुख-मुख-शुद्धि तथा शङ्ख-दक्षिणा समर्पित कर मुक्ता, प्रवाल, वज्र तथा नील-मणि से सुशोभित सुवर्ण के अलङ्कार (कुण्डल तथा कण्ठ-माला) प्रदान करे। दक्ष, वामं, अग्र तथा पृष्ठ में **प्राकम्य-सिद्धि, महांकुश-मुद्रा, सौर-दर्शन** तथा **तेजसात्मक चक्र** की पूजा कर **सर्वज्ञाद्या-निगर्भ-यागिनियों** की आवरण-पूजा करे। फिर **राज-राजेश्वर क्षेत्रपाल** को **बलि** देकर **षड्-वर्षात्मिका कन्या** की **'सरस्वती'** संज्ञा से तथा **सुवासिनी** की **'इच्छा'**-संज्ञा से पूजा कर पूर्ववत् समाप्त करे।

मध्याह्न में सब कर्म पूर्ववत् कर **'चण्डवती'** के **न्यास** तथा **ध्यान** कर पाद्यादि, काश-पुष्प, गुग्गुल धूप, घृत-दीप, पूख-पक्वान्न, वराह-मांस, येपानिका-व्रीहि, जातीफल-औषधि, ताम्बूल-मुख-शुद्धि तथा मुक्ता-दक्षिणा समर्पित कर **छाग** तथा **कूष्माण्ड की बलि** देकर पूर्ववत् समाप्त करे।

सांय-काल में सब पूर्ववत् कर **विरञ्चि-गणपति** की पूजा कर पूर्वाम्नायं से **'भुवनेश्वरी'** की **पञ्चाक्षरी महा-विद्या के न्यास और ध्यान** कर -

ॐ भुवनेश्वरि, भो मातः! पूर्व-सिंहासनेश्वरि!।
षष्ठ्यां सायाह्न-कालेऽस्मिन्, पूजां तुभ्यं करोम्यहम्।।
घट-मध्ये समायाहि, मूल-प्रकृति-रूपिणि!।।

इस मन्त्र से आवाहन कर **सदा-शिव** के सहित साङ्गावरण-पूजा कर पूर्ववत् समाप्त करे।

मूल नक्षत्र-षष्ठी, सप्तमी अथवा **अष्टमी** जिस तिथि में हो, उस तिथि की **प्रातः पूजा** के आवरण-पूजन के परचात् **मूर्ति** अथवा **यन्त्र** लिखकर **मूल कलश के वाम भाग में शारदा का** आवाहन कर साङ्गावरण पूजा करे।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सप्तमी-कृत्य :-

प्रातः सब कर्म पूर्ववत् कर **सप्तम गण-षोढा-न्यास** कर **घट में सर्व-रोग-हर-अष्टार चक्र की भावना** कर **त्रिपुरा-सिद्धा** का **न्यास-ध्यान** कर-

आगच्छ त्रिपुरा-सिद्धे! वशिन्याद्य-समन्विते!
सर्व-रोग-हरे चक्रे, तिष्ठ त्वां पूजयाम्यहम् ।।

इस मन्त्र से आवाहन कर पाद्यादि, रक्त-वस्त्र, रक्त-यज्ञोपवीत, रक्त-चन्दन, बन्धूक-पुष्प, जाति-पुष्प-माला, महा-धूप, रक्त-वर्तिका-दीप, रक्तोदन-नैवेद्य, मृग-मांस, रक्त-पात्र, कदली-फल, प्लीह-धातु, कुरंट-व्रीहि, वंश-रोचन-औषधि, पूग-मुख-शुद्धि तथा ताम्र-दक्षिणा समर्पित कर रत्न-खचित हिरण्य-पादुका प्रदान कर दक्ष, वाम, अग्र तथा पृष्ठ में **भुक्ति-सिद्धि, सर्व-खेचरी-मुद्रा, वैष्णव-दर्शन** तथा **कलात्मक चक्र** की पूजा कर **वशिन्यादि रहस्य-योगिनियों** की आवरण-पूजा कर **गणेश-बलि** देकर **सप्त-वर्षात्मिका कन्या** की **'रमा'** नाम से तथा **सुवासिनी** की **'ज्ञाना'** नाम से पूजा करवत् समाप्त करे।

मध्याह्न में सब कर्म पूर्ववत् कर **चण्ड-रूप** का न्यास-ध्यान कर पाद्यादि, नील-कमल-पुष्प, कुंकुम-धूप, घृत-दीप, घृत-पक्वान्न, यावक-व्रीहि, वंश-रोचन-औषधि, ताम्बूल-मुख-शुद्धि तथा सीस-दक्षिणा समर्पित कर **छाग** तथा **कूष्माण्ड की बलि** देकर पूर्व-वत् समाप्त करे। **अपराह्न में नव-पत्रिका** (१. कदली, २. दाडिमी, ३. धान्य, ४. हरिद्रा, ५. मानक, ६. कचि, ७. बिल्व, ८. अशोक तथा ९. जयन्ती) का **जय-दुर्गा-मन्त्र** से प्रोक्षण तथा पूजन कर मूल घट के ऊपर स्थापित करे। तब **कर्म-कुब्जिका की पूजा** करे।

सायं में सर्व-प्रथम **'ॐ अद्येत्यादि अमुकार्थे स्व-कर्तव्य-शारदीयार्चन-महा-स्नानाङ्ग-भूतमधिवासन-कर्माहं करिष्ये।'** यह सङ्कल्प कर मूल घट के निकट, वाम ओर, माणिक्य, मरकत, पुष्प-राग अथवा स्फटिक में से किसी एक में अङ्कित **श्री-यन्त्र** की स्थापना कर यथोक्त विधि से **अधिवासन** करे। तत्पश्चात् सब कर्म पूर्व-वत् कर **'क्षिप्र-प्रसादन गणेश'** की पूजा कर उपाम्नाय से **नवार्ण-महा-विद्या** का **न्यास** कर **त्रि-शक्त्यात्मिका चामुण्डा का ध्यान** कर -

ॐ आरोपिताऽसि चामुण्डे! मृण्मये श्रीफलेऽपि च।
स्थिरी-भूत्वा तु सततं, गृहे त्वं कामदा भव।।

इस मन्त्र से आवाहन कर **'ॐ अद्येत्यादि अमुकार्थे नव-पत्रिका-पूजनमहं करिष्ये'** यह सङ्कल्प कर यथोक्त विधि से **प्राण-प्रतिष्ठा** कर निम्न मन्त्र से **प्रार्थना** करे-

(मूल) **यज्ञ-भागान् गृहाण त्वं, सर्वाभिः शक्तिभिः सह।**

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शारदीयामिमां पूजां, ग्रहीतुं तमिहागता।
स्वागतं ते महा-देवि! प्रणामं त्वं गृहाण मे ।।

अब नवार्ण से पाद्यादि, चन्दनाक्षतादि, पुष्प-मालाएँ, द्रोण-पुष्प, बिल्व-पत्र समर्पित कर षडङ्ग-मन्त्र से पूजा करे। फिर शतानि अलङ्काराणि, सिन्दूर, शय्या, आसन, जल-पात्र, भोजन-भाजन, यथा-लाभ नैवेद्य, ताम्बूल तथा वस्त्र समर्पित कर धूप, दीप तथा नैवेद्यादि समर्पित कर पूर्व-स्थापित नव-पत्रिकाओं में से प्रत्येक में शक्ति की प्रार्थना तथा पूजा करे। इसके बाद १. खड्ग, २. कटार, ३. छुरिका, ४. शक्ति, ५. कुन्त, ६. शूल, ७. परशु, ८. परिघ, ९. मुद्गर, १०. पट्टीश, ११. भिन्दिपाल, १२. चर्म, १३. कवच, १४. धनुः तथा १५. वाण-दुर्गा के इन १५ आयुधों की स्थापना कर पञ्चोपचार से पूजा कर यथोक्त विधि से ध्वजारोहण कर छत्र, चामर तथा घण्टा समर्पित कर छाग तथा कूष्माण्ड की बलि देकर पूर्ववत् समाप्त करे।

महाऽष्मी-कृत्य :-

प्रातः स्नान-सन्ध्यादि नित्य-कर्म समाप्त कर महा-षोडशी-मूल का ऋष्यादि कर षडङ्ग-न्यास कर 'ॐ अद्येत्यादि अमुकार्थे श्रीमन्महा-राज-राजेश्वरी श्रीमन्महा-त्रिपुर-सुन्दरी-देव्या महा-स्नान-कर्माहं करिष्ये' यह सङ्कल्प कर भू-मण्डल में सिन्दूर से त्रिकोण से चतुर्दशार तक यन्त्र लिखकर स्वाग्रादि दक्षिणावर्त्त से छोटे-छोटे कलश स्थापित कर नीचे लिखे हुए अमृतों से उन्हें पूर्ण करे।

चतुर्दशार में शुद्ध-जल, नदी-सङ्गमोदक, शङ्खोदक, गङ्गोदक, उष्णोदक, चतुस्मोदक, शीतलोदक, गो-मूत्र, गो-मय, गो-दधि, गो-दुग्ध, गो-घृत, पञ्च-गव्य तथा पञ्चामृत। बहिर्दशार में गो-दुग्ध, गो-दधि, मधु, गो-घृत, शर्करा, पुष्पोदक, कुशोदक, फलोदक, इक्षूदक तथा नारिकेलोदक। अन्तर्दशार में गज-दन्त-लग्न-मृत्तिका-जल, सुवर्णोदक, रत्नोदक, सर्वोषधि-मिश्रित-जल, सहस्र-धारा जल, कस्तूरी-हरिद्रा-मिश्रित-जल, कर्पूर-श्रीखण्ड-मिश्रित-जल, कुंकुमोदक तथा गोरोचनोदक। अष्ट-कोण में गङ्गा-जल, मेघ-निःसृतोदक, वाग्मती-जल, समुद्रोदक, पद्म-केशर-मिश्रितोदक, निर्झरोदक, तीर्थोदक, सरोवर-जल। त्रिकोण-मध्य में सुधा-पूर्ण कलश।

इस प्रकार स्थापित कर यथोक्त-विधि से संस्कार करे। तत्पश्चात् पूर्व-अधिवासित श्रीयन्त्र को प्रत्येक कलश से यथोक्त पृथक्-पृथक् मन्त्र पढ़ स्नान कराए। अष्ट-कोण-स्थित कलशोदक से स्नान कराने के समय मन्त्र के साथ-साथ गीत तथा वाद्य भी आवश्यक है। यथा-

मालव-राग और विजय-वाद्य सहित गङ्गा-जल से। ललित-राग तथा देव-वाद्य-मेघ-निःसृतोदक से। विभाग-रास तथा दुन्दुभि-वाद्य-वाग्मती-जल से। भैरव-राग तथा अमर-वाद्य-समुद्रोदक से। केदार-राग व इन्द्राद्यभिषेक-वाद्य-पद्म-रेणुदक से। वैराटी-राग तथा शङ्ख-वाद्य-निर्झरोदक से। वसन्त-राग और पञ्च-शब्द-वाद्य-तीर्थोदक से। धानुषी-राग तथा

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

देव-विजय-वाद्य-सरोवर-जल से। भैरवी-राग तथा सर्व-विजय-वाद्य-सुधा-पूर्ण कलश से।

तत्पश्चात् सकल-कलशोदक एक कर 'ॐ राज-राजेश्वरी शक्ति०' इत्यादि अभिषेक-मन्त्रों से स्नान कराए। तत्पश्चात् स्नान-मण्डल का विसर्जन करे। तब भूत-बलि देकर उसे विसर्जन कर भूतान्यपसारण कर यथोक्त-विधि से द्वार-पूजा करे। तब एक मन्त्र पढ़ श्रीयन्त्र का चालन करे। फिर उस श्रीयन्त्र को रक्त-वस्त्र से वेष्ठित करे।

तत्पश्चात् पूर्व-दिन के प्रातः-वत् कर्म कर, अष्टम गण-षोढा-न्यास तथा 'महा-षोडशी' का न्यासादि कर 'त्रिपुराम्बा' का ऋष्यादि कर षडङ्ग-न्यास कर, देवी के वाम ओर मोहिनी-स्थापन कर, कज्जल-साधन कर मूल-देवी श्रीमहा-षोडशी महा-त्रिपुर-सुन्दरी का पीठार्चन, ध्यान, आवाहन तथा प्राण-प्रतिष्ठा कर, षोडशोपचार से पूजा कर उनके दक्ष में महा-कामेश्वर की पूजा कर नव-मुद्राएँ दिखाए। तत्-पश्चात् घट में सर्व-सिद्धि-प्रद त्रिकोण-चक्र की भावना कर त्रिपुराम्बा का ध्यान कर निम्न मन्त्र से आवाहन करे-

ॐ आगच्छ मद्-गृहे देवि! सह शक्तिभिरष्टभिः।
पूजां गृहाण विधि-वत्, सर्व-कल्याण-हेतवे ।।

अब पाद्यादि, रक्त-वस्त्र, रक्त-यज्ञोपवीत, चतुष्म-चन्दन, जाति-पुष्प, कर्पूर-रस-माला, कृष्णागरु-धूप, रक्त-वर्त्तिका-दीप, क्षीरान्न-नैवेद्य, तैल-पूरक-पक्वान्न, यकृन्मांस, दुग्ध-रस-पात्र, कलिङ्ग फल, वसा-धातु, सित-सर्षप-व्रीहि, इक्षु-सृङ्गी औषधि, कर्पूरान्वित-ताम्बूल-मुख-शुद्धि तथा रजत-दक्षिणा समर्पित कर दक्ष, वाम, अग्र तथा पृष्ठ में इच्छा-सिद्धि, सर्व-वीजा-मुद्रा, शाक्त-दर्शन, विश्व-नादात्मक चक्र की पूजा कर कामेश्वरादि षोडश नित्या कलाओं, गुरु-सन्तति, षडङ्ग-युवतियों, चतुरायुध-शक्तियों तथा महा-कामेश्वरादि अति-रहस्य-योगिनियों की आवरण-पूजा करे। इसके बाद १. खड्ग, २. छुरिका, ३. कटार, ४. पञ्च-वाण, ५. इक्षु-चाप, ६. कुन्त, ७. शूल, ८. चर्म, ९. पाश, १०. अंकुश तथा ११. तुला-श्री के इन ११ आयुधो के स्व-स्व वीज-मन्त्र से प्रत्येक की पूजा तथा प्रार्थना कर वटुकादि तथा पूजित सर्व-देवताओं को बलि प्रदान कर अष्ट-वर्षात्मिका कन्या की 'गौरी'-संज्ञा से तथा सुवासिनी की 'क्रिया' संज्ञा से पूजा कर पूर्ववत् समास करे।

मध्याह्न में पूर्ववत् कर्म कर 'अति-चण्डिका' का ध्यान-आवाहन कर पाद्यादि, बन्धूक-पुष्प, अष्टाङ्ग-धूप, घृत-दीप, क्षीर-षष्ठिका-पक्वान्न, वराह-मांस, रायिका-व्रीहि, त्वगौषधि, ताम्बूल-मुख-शुद्धि तथा रजत-दक्षिणा समर्पित कर छाग तथा कूष्माण्ड की बलि देकर पूर्ववत् समाप्त करे।

सांय-काल में पूर्ववत् कर्म कर विघ्न-गणपति की पूजा कर श्रीमन्महा-कुब्जिकेश्वरी के न्यास-ध्यानादि कर निम्न मन्त्र से आवाहन करे-

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ अवतीर्य क्रमान्तस्या, मण्डलोर्ध्वे तु पङ्कजे।
त्र्यस्रासन-समारूढां, सिद्ध-कूटेन संस्थिताम्।।
वक्त्रान्ते दूती-संयुक्तां, आयुधैः समलंकृताम्।
आराधये महा-देवीं, सर्वेषां सर्व-संस्थिताम्।।
या सा परापरा-शक्तिः, खगस्था ख-स्वरूपिणी।
सोम-सूर्य-पदान्तस्था, आयान्तु इह मण्डले।।
गृहाण मत्-कृतां पूजां, पश्चिमाम्नाय-नायिके!

अब **कुब्जिकेश्वर-** सहित साङ्गवरण-पूजा कर पूर्ववत् समाप्त करे।

रात्रि में भूत-शुद्धि और **प्राणायाम** कर-**'ॐ अद्येत्यादि अमुकार्थे भगवत्याः श्रीमन्महोग्र-चण्डा दुर्गा-देव्याः महा-पूजाऽहं करिष्ये।'** यह सङ्कल्प कर उग्रचण्डा-कल्पोक्त विधि से **न्यासादि** तथा **दीप, कलश, कुल-गणपति-पूजादि** आवरण-पूजा तक समाप्त कर बिल्व-पत्र, द्रोण-पुष्प, करवीर पुष्प, पद्म-माला, जपा-कुसुम-माला, कुमुद-पुष्प-माला तुलसी-पत्र-माला, विल्व-पत्र-माला, घृत-गुग्गुल-धूप, तैल-दीप, घृत-दीप, घृत-वृक्ष-दीप, गुड़-पचित-पक्वान्न, घृत-पचित-पक्वान्न, मोदक, पञ्च-तत्त्वान्वित-चर्वण-नैवेद्य, कदली-फल, नारिकेल-फल, पनश-फल, ताम्बूल, कोषकार, काष्ठ-पादुका, उपानह, अलङ्कार तथा सुवर्ण-दक्षिणा समर्पित कर **आनन्द-कलश** में ८ दिशाओं में **असिताङ्गादि अष्ट-भैरवों** की तथा मध्य में **आनन्द-भैरव** की पूजा कर वटुकादि तथा सकल पूजित देवताओं को माष-भक्त की बलि देकर यथोक्त विधि से छाग-बलि तथा **कूष्माण्ड-बलि,** फिर भैरवादि के लिए मेष-बलि करे। तब मण्डप के बाहर स्तम्भ के पास **महिष, छाग** तथा **कूष्माण्ड की बलि** कर **याग-मण्डप** में पुनः **प्रवेश** कर पूर्ववत् प्रार्थना कर समाप्त करे।

नवमी-कृत्य :-

प्रातः काल में सब कर्म पूर्ववत् कर **नवम गण-षोढा-न्यास** कर घट में **सर्वानन्द-मय वैन्दव-चक्र की** भावना कर **'त्रिपुर-भैरवी'** का न्यास-ध्यान कर निम्न मन्त्र से आवाहन करे-

ॐ आगच्छ मद्-गृहे देवि! त्रिपुरे, भैरवीश्वरि!।
गृहाण मत्-कृतां पूजां, नवम्यां परमेश्वरि!।।

अब पाद्यादि, रक्त-वस्त्र, रक्त-यज्ञोपवीत, अष्ट-सुगन्ध-चन्दन, सेफालिका-पुष्प, जपा-पुष्प-माला, कपि-धूप, रक्त-वर्तिका-दीप, मध्वोदन-नैवेद्य, लड्डू-पक्वान्न, छाग-मांस, शर्करा-रस-पात्र, वीजा-पूरक-फल, मांस-धातु, तिल-व्रीहि, हिंगु-औषधि, जाती-फल-मुख-शुद्धि तथा पृष्ठ में **प्राप्ति-सिद्धि, सर्व-योनि-मुद्रा, शैव-दर्शन** तथा **सम-रस-चक्र** की पूजा कर **रत्यादि परापर-योगिनियों** की आवरण-पूजा करे। तत्-पश्चात् **श्रीमहा-षोडशी** का **न्यासादि, ध्यान** तथा **पूजन** कर **कामेश्वर-**

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सहित समस्त श्रीचक्रावरण की पूजा कर वटुकादि तथा सभी पूजित देवताओं को बलि देकर कुन्द-पुष्प तथा रूप-केशर-पुष्प-माला समर्पित कर आसा-पूरि, गुग्गुल, शिह्ल, अगरु, कर्पूर, कस्तूरिका, कपि तथा घृत एकत्र कर धूप और घृत-दीप प्रदान कर पञ्च-तत्त्व के सहित चर्वण नैवेद्य समर्पित कर नव-वर्षात्मिका कन्या की 'दुर्गा'- संज्ञा से पूजा करे। तत्पश्चात् मूल-द्वार से बाहर आचार्य-द्वार के मुख में बैठ-कर भू-मण्डल में कुरु-कुल्लादि का विसर्जन करे। ततः सुवासिनी की भी 'दुर्गा'-नाम से पूजा कर पूर्ववत् समाप्त करे।

मध्याह्न में सब कर्म पूर्ववत् कर 'श्रीमन्महोग्र-चण्डा' का न्यास, ध्यान तथा आवाहन कर पाद्यादि, मन्दार पुष्प, महा-धूप, सर्व-चरु-पक्वान्न, वराह-मांस, रूप-केशर-औषधि, सर्व-व्रीहि, ताम्बूल-मुख-शुद्धि तथा आयस-दक्षिणा समर्पित कर पूर्व-रात्रि-वत् सर्वावरण-पूजा कर वटुकादि तथा समस्त पूजित देवताओं को बलि प्रदान कर छाग तथा कूष्माण्ड की बलि करे। फिर बहिः स्तम्भ में पूर्व-रात्रि-वत् महिषादि-बलि कर सकल कर्म पूर्व-रात्रि-वत् समाप्त करे।

सांय-काल में सब कर्म पूर्ववत् कर महा-गणपति की पूजा कर ऊर्ध्वाम्नाय से श्रीविद्या-महा-षोडशी महा-त्रिपुर-सुन्दरी का न्यासादि तथा ध्यान कर निम्न मन्त्र से आवाहन करे-

ॐ महा-पद्म-वनान्तस्थे! कारणानन्द-विग्रहे!।
सर्व-भूत-हिते मातरेह्येहि परमेश्वरि!।।

अब महा-कामेश्वर-सहित श्रीमन्महा-त्रिपुर-सुन्दरी की समस्त श्रीचक्रावरणार्चन के साथ सपर्या कर पूर्व-वत् समाप्त करे। शिवा-बलि भी करे।

दशमी-कृत्य :-

प्रातः काल सब कर्म पूर्व-वत् कर दशम गण-षोढा-न्यास कर श्रीविद्या-कपोक्त सकल न्यासादि कर दीप-कलश-महा-गणपति-पूजा से मूल-घट की पीठ-पूजा तक समाप्त कर 'ॐ ४ कामेश्वराङ्क-सिद्धेश्वर-पीठाय नमः' से विशेष पीठ-पूजा कर घट में मुक्ति-प्रद महा-वैन्दव-चक्र की भावना कर पञ्च-दशी-श्रीमन्महा-त्रिपुर-सुन्दी का ध्यान कर 'ॐ महा-पद्मेत्यादि' से आवाहन कर षोडशोपचार से पूजा कर समस्त श्रीचक्रावरण-पूजा करे। ततः सकल स्थापित देवताओं को स्व-स्व-मन्त्र से पुष्पाञ्जलि प्रदान कर वटुकादि को बलि देकर धूप-दीप-नैवेद्यादि समर्पित करे-

ॐ रश्मि-रूपा-महा-देव्या, ह्यत्र पूजित-देवताः।
सुन्दर्यङ्गे विलीनास्ता, सन्तु सर्वा शुभावहाः।।

इस मन्त्र से सकल पूजित देवताओं को श्रीपीठ (मूल-घट) में विलीन हुआ समझ कर षोडश-वक्त्रा (अष्टोत्तर-भुजा) श्रीमन्निर्वाण-महा-त्रिपुर-सुन्दरी का ध्यान कर, श्रीविद्या की सर्वाधिकार-

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विद्या, निर्वाण-विद्या के साथ लघु-साम्राज्य-मेधा के दश-कूटा षोडशी मन्त्र से साङ्गा सालङ्कारा उनकी यथा-शक्त्युपचार से पूजा कर, मूल-सहस्राक्षरी विद्या से पुष्पाञ्जलि समर्पण कर, महा-वैन्दव-चक्र की तेजो-मय भावना कर, परा-पराति-रहस्य-योगिनी-स्वरूपिणी महा-त्रिपुर-सुन्दरी के दक्ष, वाम, अग्र तथा पृष्ठ में मोक्ष-सिद्धि, सर्व-त्रिखण्डा मुद्रा, कौल-दर्शन तथा कौलात्मक चक्र की पूजा कर, छाग तथा कूष्माण्ड की बलि देकर, लघु-साम्राज्य-मेधा की अलेखनी विद्या का यथा-शक्ति जप कर, निवेदन कर, पद्धत्युक्त स्तोत्र का पाठ कर, यथा-विधि विसर्जन करे। अपराजिता-पूजा करे।

फिर आश्विन शुक्ल त्रयोदशी में भूमण्डल विसर्जन करे।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

'ऋग्वेद' में शारदीय दुर्गा-पूजा

'देवी' अथवा 'शक्ति' वेद से अलग नहीं है। 'शक्ति-उपासक' विशेष उच्चाङ्ग की साधना और उपासना करता है। 'शक्ति' कहिए या 'देवी' कहिए-वह 'ब्रह्म' से भिन्न नहीं है - केवल उपासना में प्रकार-भेद-मात्र है। वास्तव में 'दुर्गा', 'शक्ति' और 'शारदीया दुर्गा-पूजा' वेदान्तर्गत ही है।

'वेद' मे प्रत्येक 'मन्त्र' उपासना है- मन की प्रार्थना है, शुभ कामना है। 'ऋग्वेद' में प्रथम सूक्त ही 'अग्नि की उपासना' है। 'अग्निमीडे' अर्थात् 'अग्निं स्तौमि'।

'दुर्गा देवी' ही अग्नि की शक्ति है। 'दुर्गा देवी'-तेजो-मयी है, वेदोक्त समस्त अग्नि-गुण-सम्पन्ना है। 'दुर्गा' का एक नाम 'ज्वाला-मुखी' भी है। अग्नि में जो दाहिका-शक्ति है, वह जगज्जननी 'दुर्गा' ही है, यथा-

सा वाणी सा च सावित्री, विप्राधिष्ठातृ-देवता।
वह्नौ सा दाहिका शक्तिः, प्रभा-शक्तिश्च भास्करे।।

ऋग्वेदोक्त सभी शक्तियाँ दुर्गा ही है।

निम्न-लिखित वेदोक्त मन्त्र (ऋग्वेद ४ सं, ४० सू, ५ ऋ) की व्याख्या से श्रीपञ्चानन तर्क-रत्न-महाशय (वसुमती, आश्विन-१३४५ में) यह प्रमाणित करते है कि 'ऋग्वेद-काल' में 'शारदीया दुर्गा-पूजा' प्रचलित थी-

हंसः शुचिषद्-वसुरन्तरिक्ष,
सद्धोताऽवेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।
नृषद्-वर-सद् ऋत सद्-व्योम-सदब्जा,
गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतम्।।

हंसः (१)। शुचिषद् (१०)। वसुः (११)। अन्तरिक्ष सत् (१२)। होता (९)। अवेत् (२)। इषदतिथिः (८)। दुरोणसत् (५)। नृषद्-वर सत् (६)। ऋत सत् (७)। व्योम सत् (१३)। अब्जा (१४)। गोजा (१५)। ऋतजा (१६)। अद्रिजा (३)। ऋतम् (४)।

(१) हसंः (सूर्यः)। (२) अवेत् (ज्ञातवान्)। किं अवेतदाह। (३) अद्रिजा (पार्वती)। (४) ऋतम् (ब्रह्म)।

(५) दुरोणसत्-दुर्गा नाम्नि स्थिता-दुरोणे दुर्गा नाम्नि सीदति निषीदति, दुरोण दुर्गा-नाम सीदति प्राप्नोति इति वा (दुर् इति मृत्यु-हीना देवता, तद्-ब्रह्मैव, तद् वाचका दुर इति शब्दः) ओणः अपनयन-कर्ता, तद्-वाचक 'गा' शब्दः, तयोः समाहारः ओणृ-अप-नयने, इत्यस्मात् ओण्-धातोः पचादित्वादच्। दुरोणम्। एवं च श्रुतिर्गा, इत्यस्य यमर्थमाह ओणस्यापि,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स एवार्थः। तेन चार्थेन 'गा', इत्यस्योपस्थित्या दुरोण-शब्दः दुर्गा नाम-परः, श्रुतिश्च सा वा एषा देवता दूर्नाम एतासाम् देवतानाम् पाप्मानां मृत्युमपहत्य यत्रासाम् दिशामन्तस्तद्-गमयाश्चकार। (वृह-१।३।९।१०)

'श्रुतिस्थ गमयां चकार उक्त मन्त्रस्थ ओण'-इसका स्थलाभिषिक्त है। 'गा'-शब्द उसी से प्रतिपाद्य है। इस 'श्रुति' का स्पष्ट अर्थ है- प्राण-देवता का नाम (इस स्थान में प्राण-देवता = ब्रह्म)। मृत्यु उनके निकट आने में असमर्थ है। इसलिए उनका नाम 'दुर' है। सब देवताओं का अर्थात् समस्त इन्द्रियों का पाप दूर करके दिगन्त में अपसारित किया, इस कारण यह 'गा'कहलाती है। **'अपसरण'** और **'अपनयन'** एकार्थक हैं जो देवता अपने प्रवर्तित प्राणों द्वारा सब इन्द्रियों का पाप-गत करती है; निवारण करती है, अपनीत करती है, उनका नाम है **'दुर्गा'**। इसी कारण **'दुर्गा'**-नाम से वह प्रतिष्ठिता है- इसी कारण वे **'दुरोणसत्'** है।

(६) नृषद्-वर सत्- नृण् पुरुषान् सीदति, विशृ-णाति हिनस्ति पदलृ-विशरण गत्यवसानेषु इति सदधातो रूपम्। नृषदाम् श्वापदानां वरः श्रेष्ठः मृग-राजः सिंहः। तेन सीदति गच्छति, सिंह-वाहना।

(७) ऋत-सत्-ऋते पूजिते सीदति निषीदति। पूजित-शब्देन महिषासुरो ग्राह्यः, यतः एतासु मूर्तिषु सदा पाद-लग्नो नृणां सदा। पूज्यो भविष्यसि त्वं वै-इति देव्या वरो दत्तः।

(८) इषदतिथि- इषम्- आश्विन्-मासम् दायन्ति दक्षिणायनत्वेऽपि शुद्धं कुर्वन्ति, इति इषदाः। आश्विन-मासे यावन्यस्तिथयो यस्य दैव-शोधने इति धातोः सुवन्तोपपदात् **'क'**-प्रत्ययेन इषदा इत्यस्य सिद्धेः। कृष्ण-नवम्यादि महा-नवमी-पर्यन्त तिथेस्तत्-सम्बन्धित्वमुक्तम्।

(९) तत्रापि **'होता'** हवन-निष्पादकः स्थाली पचतीविवत् हवनस्याश्रयः इति तात्पर्यम्।

(१०) शुचिषत्-शुचौ शुद्ध-भावे सीदति निषीदति शुद्ध-भावं प्राप्नोतीति वा, तेन मुनिरुच्यते। मुनि-शब्दस्य सप्तमी तिथिः परत्वम् निगमे दृश्यते। षण् मुन्योर्वसुरन्धयो इति।

(११) वसुः-वसु-शब्देनाष्टमी लभ्यते। निगम-वचनादौ प्रसिद्धेः।

(१२) अन्तरिक्ष सत्- ग्रह-गणाः तेन नवमी-तिथेर्लाभः। ग्रह-शब्दो नवत्व-संख्या-वाचकस्तस्य ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्धेः। होतृत्वं हवनाधारत्वं, तस्यान्ते विवेशात् शुचिषदिति पदार्थः त्रयार्थं सप्तम्यादि-तिथि-त्रयेण तदन्वयः, अन्तरिक्ष-सदित्येकेन वा।

(१३) व्योम सत्- व्योम्नि दहराकाशे अन्तराकाशे सीदति निषीदति, बाह्य-पूजा दर्शिता। व्योम सदित्यनेन होतेत्यनेन मानस-पूजा सूचिता।

(१४) अब्जा- लक्ष्मीः क्षीरोदधि-जातत्वात् मम योनिरप्स्वान्तः समुद्रे इति देवी-सूक्त-मन्त्रेण तथावगमाच्च।

(१५) गोजा- गवि वाचि जायते प्रकाशते इति वाग्-देवी।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(१६) ऋतजौ–कार्तिकेय–गणेशौ, ऋतात् ब्रह्मणः पार्वती–स्वरूपात् शिव–स्वरूपाद् वा जायते ऋतजः, तौ ऋतजौ। अद्रिजा वकार–लोपात् ऋतजा अद्रिजा।

इस मन्त्र का नाम **'हंसावती ऋचा'** है। इसका भावानुवाद निम्न–लिखित है–

सूर्य–देव को यह ज्ञात हुआ कि **पार्वती–पर–ब्रह्म** है, **सिंह–वाहिनी** और **महिषासुर–निहित–पृष्ठ–चरणा दुर्गा–मूर्ति** है। **आश्विन मास** और **पावनी तिथि–समूह** से उनका विशेष सम्बन्ध है। उनमें **सप्तमी, महाऽष्टमी** और **महा–नवमी** तिथि में **होम** करने की विधि है। असमर्थ होने से केवल **महा–नवमी** के दिन ही **हवन** करना चाहिए। **स्नान, पूजा, बलि–दान** और **होम**– इस **चतुःकर्म–मयी महा–पूजा** के चारों कर्म निर्वाह करने चाहिए।

इस **चतुः–कर्म–मयी पूजा** से यह नहीं समझना चाहिए कि यह पूजा केवल **बाह्यिक** है। इस मन्त्र में **'व्योम सत्'**– शब्द उनके समूह को सूचित करता है। **'व्योम सत्'** शब्द साधारण व्योम नहीं है। यह **'दहराकाश'** है, जिसका भावार्थ **'सूक्ष्म हृदयाकाश'** है। **पार्वती** वहीं ध्येया हैं व्यापिका होने पर भी देवी वहीं स्थिता है–उनको वहीं खोजना चाहिए।

देवी की जैसी **'बाह्य–पूजा'** है, उसी प्रकार **'मानस–पूजा'** भी है। **'हृदयाकाश'** में देव्युपासना उनकी **'मानस–पूजा'** है।

हृदयाकाश में देवी की अवस्थिति सूक्ष्म भी है और स्थूल भी। स्थूल–रूप में देवी–लक्ष्मी और सरस्वती हैं, कार्तिकेय और गणेश हैं। स्थूल–रूप उनकी इच्छा की महिमा है।

उपनिषद् में पर–ब्रह्म देवी सर्वत्र विराजिता हैं। एकाग्र–चित्त सांसारिक मनुष्य श्रेष्ठ **प्रतिमा–पूजक** है। हृदय में जो **'व्योम–सत्'** है, एकाग्र–चित्त साधक उसकी पूजा **'शारदीया दुर्गा की प्रतिमा'** में करता है।

उसके अनन्तर **'बाह्य–पूजा'** है – इस पूजा में भी साधक **'हृदयाकाश'** को विशाल–रूप से अनुभव करता है।

एकाग्र–चित्त व्यक्ति यदि प्रतिमा में एकत्व–बोध से चिन्मयी और कृष्णमयी देवी की साधना करे, तो उसके पश्चात् मृण्मयी देवी की साधना करे, तो उसके पश्चात् निरुद्ध अवस्था आती है। इस अवस्था में उसकी 'मातृ–साधना' केवल हृदय में ही रहती है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

श्रीदुर्गोत्सव-विवेक

'शक्ति-सङ्गम तन्त्र' में श्रीपार्वती श्रीशिव जी से प्रश्न करती है- 'हे देवेश! मैं 'नव-रात्र' के विधान को सुनने की इच्छा रखती हूँ।' श्रीशिव जी ने कहा-

नव-शक्तिभिः संयुक्तं, नव-रात्रं तदुच्यते ।
एकैव दैव-देवेशि! नवधा परि-तिष्ठिता ।।

अर्थात् नव-रात्र-नव-शक्तियों से संयुक्त है। एक-एक तिथि में एक-एक शक्ति के पूजन का विधान है।

'मार्कण्डेय पुराण' में लिखा है कि-'प्रथमं शैल-पुत्री' इत्यादि, जिसका आशय यह है कि (१) शैल-पुत्री, (२) ब्रह्म-चारिणी, (३) चन्द्र-घण्टा, (४) कूष्माण्डा, (५) स्कन्द-माता, (६) कात्यायनी, (७) काल-रात्रि, (८) महा-गौरी और (९) सिद्धि-दात्री- इन 'नव-दुर्गाओं' का 'नव-रात्र' में पूजन होता है। इनके पूजन से अभीष्ट सिद्धि प्राप्त होती है।

'नव-रात्र' वर्ष में चार बार आते है- (१) चैत्र, (२) आश्विन, (३) आषाढ़ और (४) माघ में। 'देवी-भागवत' लिखा है-

चैत्रे आश्विने तथाषाढे, माघे कार्यो महोत्सवः ।
नव-रात्रे महाराज! पूजा कार्या विशेषतः ।।

शयन और बोधन- दो प्रकारके 'नव-रात्र' होते है। 'शयन' चैत्र में तथा 'बोधन' आश्विन में। चारों ही नव-रात्रों में दुर्गा जी की उपासना का माहात्म्य है। आश्विन के 'नव-रात्र' की विशेष महिमा है 'मार्कण्डेय-पुराण' में लिखा है-

शरत्-काले महा-पूजा, क्रियते या च वार्षिकी ।

आश्विन, चैत्र, आषाढ़ और माघ- इन चारों मासों की शुक्ला प्रतिपदा से नवमी तक 'नव-रात्र' के पूजन का विधान शास्त्रों में दिया है। आश्विन और चैत्र के नवरात्रों का विशेष प्रचार इसलिए हो गया है कि इस समय ग्रीष्म तथा शीत-काल के आने से विशेष ज्वर की उत्पत्ति का कोप होता रहता है। अतएव उसकी शान्ति के निमित्त इन दोनों ऋतुओं में 'नव-रात्र' को लोग विशेष रूप से मानते है। शरत् व बसन्त- इन दो ऋतुओं में विशेष 'नव-रात्रार्चन' इसलिए भी है कि ये दोनों ऋतुएँ सर्व-प्राणियों के लिए 'यम-दंष्ट्रा' (काल के गाल में भेजने वाली बीमारी का घर) कहीं गयी हैं। इस लोक में शरत् और बसन्त ऋतुएँ प्राणियों के लिए वास्तव में बड़ी कठिनाई पैदा कर देती है। अतः जिन्हें अपने कल्याण की आकांक्षा हो, उन्हें बड़े यत्न के साथ इन ऋतुओं में 'नव-रात्र' का 'व्रत' तथा 'पूजन' अवश्य करना चाहिए।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

'नव-रात्र' के एक दिन पूर्व अर्थात् **अमावास्या** को पूजा की सब सामग्री इकट्ठी करे। उस दिन एक बार भोजन करे व शुद्ध चौरस भूमि पर यथा-प्रमाण **'मण्डप'** बनाए। शुद्ध भृत्तिका और गोबर से भूमि को लीपे। उसके मध्य में सुन्दर चौकोर **'वेदी'** बनाए। रङ्ग-बिरङ्गे तोरण, झण्डियों, पताकाओं, केले और आम के पत्तों से तथा विविध फूल-मालाओं से मण्डप को सुसज्जित करे। वेद-वेदाङ्ग के वेत्ता, संयमी, शुद्ध आचार-विचार वाले, देवी के तत्त्व को जानने वाले ब्राह्मणों को **अमावास्या** के दिन निमन्त्रण दे।

प्रतिपदा के दिन किसी नदी, नाले, बावली, कूप या घर में ही विधि के साथ **'स्नान'** करे। प्रातः काल के समय पहले अपनी नित्य-क्रिया करे। फिर ब्राह्मणों का वरण करे। उन्हें अर्घ्य-पाद्यादि प्रदान करे। अपनी शक्ति के अनुसार उन्हें धोती, दुपट्टा, भूषण, आसन, माला, गोमुखी, पूजन-पात्र, पादुका आदि प्रदान करे। जहाँ तक हो सके, धन की कंजूसी न करे।

ब्राह्मणों के सन्तुष्ट होने से सर्व-कार्य सिद्ध हो जाते है। श्रीदेवी की प्रसन्नता के लिए, **'दुर्गा-सप्तशती'** या **'देवी-भागवत्'** के पाठ के लिए ९, ५, ३ या १ ब्राह्मण विहित है-

नव-पञ्च-त्रयश्चैको, देव्याः पाठे द्विजा स्मृताः।

वेदी पर सिंहासन रखकर रेशमी वस्त्र बिछाकर दुर्गाजी की **'मूर्ति'** की स्थापन करे। यदि मूर्ति-स्थापन न कर सके, तो उसी आसन पर **'श्रीदुर्गा-यन्त्र'** अथवा **'श्रीदुर्गा का चित्र'** स्थापित करे। वेदी के समीप शास्त्रोक्त रीति से **'पञ्च-पल्लव'** से संयुक्त तीर्थ-जलों से, वेद-मन्त्रों से पूर्ण **'कलश'** का स्थापन करे। **'कलश'** को श्वेत वस्त्र, नारियल और रक्त वस्त्र से ढँककर उसमें रत्न या स्वर्ण डाले। अपने सम्मुख पूजा-सामग्री रखे। **'पुण्याह-वाचन'** करके **'गण-पति'** तथा **'नव-ग्रहों** आदि का यथा-शक्ति पूजनादि करने से पहले **'सङ्कल्प'** करे। देवताओं का पूजन करे। घर में गाना-बजाना, मङ्गलाचार करे। हस्त नक्षत्रवाली नन्दा (प्रतिपदा) तिथि में पूजन करना बहुत श्रेष्ठ है। **'शक्ति-सङ्गम तन्त्र'** में लिखा है-

निराहारी फलाहारी, त्वेक-भक्त-दृढ-व्रतः।
नक्त-भुजं हविष्यासी, यथा-शक्तिः समाचरेत्॥

अर्थात् निराहार या फलाहार करे अथवा एक समय रात्रि में हविष्यान्न भोजन करे। शास्त्रों में ये वचन भी है कि-

अमा-युक्त न कर्तव्या, प्रतिपत् कालिकार्चने।
अष्टम्यनतं समाचर्य, ततोऽष्टम्यां तु होमयेत्॥
नवम्यां पारणं कुर्यात, दशम्यां तु विसर्जनम्॥

अर्थात् **अमावास्या से युक्त प्रतिपदा** में आरम्भ न करे। **प्रतिपदा** से पाठ आरम्भ करे। **'नव-रात्र-पूजन'** में अनेक कल्प है, परन्तु विशेषतः **प्रतिपदा से नवमी** तक ही क्रम प्रचलित है। घृत की अखण्ड ज्योति का पूजन करे। जिस **'मन्त्र'** का जप करे अथवा **'दुर्गा-पाठ'** करे, उसे नित्य एक जैसे

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

क्रम से करे। जप या पाठ में प्रति-दिन वृद्धि करता जाय, ह्रास न करे। **'तन्त्र'** में लिखा है-

अष्टमी सर्व-कार्याणां, कर्त्री भवति निश्चितम्।
होम-पूजाऽऽदिकं तत्र, कुर्याद् यत्नेन पार्वति!।।

अर्थात् अष्टमी के दिन होम-पूजादि का विशेष महत्त्व है। यदि **'नव-रात्र'** के पूर्व-दिन अर्ध-रात्रि को जप और पूजन-पाठ आदि करे, तो और भी अधिक फल होता है। अष्टमी अथवा नवमी के दिन कन्या-पूजन, कन्या-भोजन, ब्राह्मण-भोजनादि कराकर समाप्ति करे। इस विधि से जो भी **'नव-रात्रार्चन' करेगा,** उसके सर्वाभीष्ट पूर्ण होंगे। भगवती दुर्गाजी ने स्वयं कहा है- 'मेरे मन्त्र से जो मुझे प्रेम से स्मरण करेगा अथवा हवन करेगा, उसे मैं दर्शन दूँगी।'

दुर्गा, गौरी, काली- सब एक ही है। **'दुर्गा'**-शब्द के जप मात्र से भगवती प्रसन्न होती है। **'कलौ चण्डी-महेश्वरी'-** के अनुसार शास्त्रों में व आप्त वचनों से **'दुर्गा'** नाम की बहुत महिमा है। **'रुद्रयामल तन्त्र'** में शिव जी पार्वती से कहते है कि- 'हे कान्ते! **'दुर्गा'** नाम की महिमा मैं कहाँ तक वर्णन करूँ! इस नाम का निरन्तर जप करने से दरिद्र को धन मिलता है सन्तान-हीन को सन्तान मिलती है। ज्ञानेच्छु को ज्ञान होता है, अल्पायु चिरायु होता है, भय-भीत भय से छूटता है, भूत-प्रेत-पिशाचादि बाधाओं से पीड़ित अथवा रोगी-जन इस **'दुर्गा'** नाम से सुखी हो जाते है। जो भी सहस्र बार इस **'दुर्गा'-** नाम को जपता है, उसे सर्वाभीष्ट-सिद्धि मिलती है-

न दुर्गा-नाम-सदृशं, नामास्ति जगती-तले।

अर्थात् इस पृथ्वी में **'दुर्गा'** नाम के समान फल-दायक दूसरा नाम नहीं है। **'दुर्गा'** शब्द का अर्थ शास्त्रकारों ने इस प्रकार लिखा है-

दुःखेन गम्यते अस्यां, दुःखेन गीयते स्तूयते, दुर्ग-नामासुर-बधाद् वा।

अर्थात् इस दुर्गा का जानना भी कष्ट से होता है अथवा दुःख से गायन की जाती है, दुःख से स्तुति की जाती है अथवा दुर्गासुर का नाश करने से ही **'दुर्गा'** नाम प्रसिद्ध हुआ अथवा दुर्ग नामक दैत्य के मारने पर, महा-विघ्न और कष्ट के आने पर, महा-भय व रोग को दूर करने वाली जो है, उसे **'दुर्गा'** कहते है। लिखा है-

भूतानि दुर्गा भुवनानि दुर्गा। स्त्रियो नरश्चापि पशुश्च दुर्गा।
यद्यद्धि दृश्यं खलु सैव दुर्गा। दुर्गा-स्वरूपादपरं न किञ्चित्।।

अर्थात् सकल भूत (जीव), सारे भुवन, सभी स्त्री या पुरुष और पशु-सभी **'दुर्गा'** के स्वरूप है। सर्व-व्यापिनी **'दुर्गा'** सर्वत्र व्यापक है। हमारे सम्मुख जो-जो दृश्य है, सकल **'दुर्गा'** ही है। **'दुर्गा'** के स्वरूप से भिन्न कोई भी और कुछ नहीं है। सर्वत्र सर्व-वस्तु को **'दुर्गा'** रूप में जो ध्यान करेगा, उसे ब्रह्म-स्वरूपा शिवा ब्रह्म-ज्ञान करा देती है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

'शारदीय नव-रात्र'की विषेश महिमा शास्त्रों में लिखी है। निर्णय-सिन्धु, निर्णयामृतादि ग्रन्थों में आश्विन शुक्ला प्रतिपदा से **'नव-रात्र'** का आरम्भ होना बताया है। उदय-व्यापिनी ही ग्राह्या है। इसी दिन विधि से **'घट-स्थापन'** करे और पूजन करे। **'घट-स्थापन'** के सम्बन्ध में विशेष वचन है-

वैधृतौ पुत्र-नाशस्तु, चित्रायां धन-नाशनम्।
तस्मिन्न स्थापयेत् कुम्भं, चित्रायां वैधृतौ तथा।।

अर्थात् **'वैधृति'** योग में **'घट-स्थापन'** करने से पुत्र का और **'चित्रा'** में धन का नाश होता है। अतः इनमें **'घट-स्थापन'** नहीं करना चाहिए। **'नव-रात्र'** में **अखण्ड दीप-दान** की बहुत महिमा है। लिखा है-

अखण्ड-दीपकं देव्याः, प्रीतये नव-रात्रकम्,
प्रज्वालयेदहो, रात्रमेक-चित्त-धृतो व्रतः।
चण्डी-सप्तशतीं कृत्वा, प्राप्नोति चित्त-वाञ्छितम्।।

अर्थात् 'नव-रात्र' में दिन-रात **'अखण्ड दीप-ज्योति'** देवी की प्रसन्नता-कारक होती है। शुद्ध दृढ़ चित्त से प्रेम से **'अखण्ड-दीप'** स्थापित करे। लिखा भी है-

मूले तु स्थापने देव्याः, पूर्वाषाढासु पूजनम्।
उत्तरासु बलिर्देया, श्रवणेन विसर्जयेत्।।

अर्थात् **'मूल नक्षत्र'** में देवी की स्थापना करे, **'पूर्वाषाढ़'** में पूजन करे, **'उत्तराषाढ़'** में बलि दे और **'श्रवण'** में विसर्जन करे। 'काली-विलास-तन्त्र' में भी लिखा है-

आर्द्रायां बोधयेद् देवीं, मूलेनैव प्रवेशयेत्।
पूर्वोत्तराभ्यां सम्पूज्य, श्रवणेन विसर्जयेत्।।

अर्थात् अश्विन कृष्णा अष्टमी या नवमी में जब **'आर्द्रा'** नक्षत्र हो, तभी दुर्गाजी को बाजे आदि से जगाए। **'मूल'** में विशेष पूजन करके **'पूर्वा'** या **'उत्तरा'** में भी पूजन करे हवनादि करे। **'श्रवण'** में विसर्जन करे।

आर्क्षं यः परित्यज्य, दुर्गा-देवीं प्रपूजयेत्।
विफला तस्य सा पूजा, कदाचिन्न फल-प्रदा।।

जो मानव **'आर्द्रा'** में श्रीदुर्गा जी की पूजा नहीं करता, उसे **'नवरात्र'** में पूजा आदि फल नहीं देते-

सा पूजा राक्षसी-पूजा, दुर्गा-पूजा कथं भवेत् ?

अर्थात् वह पूजा राक्षसी-पूजा समझी जाती है, दुर्गा-पूजा नहीं। दुर्गा भगवती की महिमा कहाँ तक लिखूँ। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इन्द्रादि देवों ने इन्हीं की उपासना से सिद्धि पाई है। आज भी जो-जो इस भू-तल में हैं, सभी इस शक्ति की उपासना से ही शक्तिमान् हैं-

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पूर्व-जन्म-कृतैः पुण्यैः, ज्ञात्वैनं पर-दैवतम् ।।

अर्थात् पूर्व-जन्म के पुण्य-सञ्चय से भगवती की उपासना का सौभाग्य प्राप्त होता है, इसके स्त्रोत्र-पाठादि करने तथा कराने की रुचि होती है। जब तक पाप के संस्कार रहते है, तब तक माता के चरणों में प्रणाम करने की रुचि नहीं होती। पाप दूर होने पर मनुष्य दृढ़-व्रती होकर माता के चरणों में लगता है-

ज्ञानमुत्पद्यते पुंसां, क्षयात् पापस्य कर्मणाम्।

पाप-कर्म का नाश होने पर ही मनुष्य को मोक्ष का मार्ग सूझता है। माता की शरण होने पर ही मोक्ष-प्राप्ति होती है।

सैषा प्रसन्ना वरदा, नृणां भवति मुक्तये।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सार्द्ध 'नव-चण्डी' प्रयोग

'कर्म-फल' का इच्छुक प्राणी अपनी अभिलषित वस्तुओं की प्राप्ति के लिए अत्यधिक **'व्यग्र मन'**से प्रयत्न करता है। जीवन का बहुत बड़ा भाग **'व्यग्र मन'** से की गई **'साधना'** में व्यतीत हो जाता है। तथापि, **'सिद्धि'** एवं **'शान्ति'** नहीं मिल पार्ती और व्यक्ति **'सन्तप्त-चित्त'** ही संसार से चला जाता है। इसके कारणों पर बहुत सूक्ष्म रीति से तान्त्रिकों ने विचार किया **'श्रीललिता-सहस्र-नाम'** के भाष्य में श्री भास्कर राय कहते है- **'कुण्डलिन्युत्थापनेन मुधस्रावणेन डाकिन्यादि-मण्डल-प्लावन-रूपान्त-कर्माणि सत्येतद्-बाह्यानि यज्ञादि-कर्माणि सफलानि भवन्ति। तदभावे तु यस्मिन् काले कर्माणि क्रियन्ते, स काल एव, तेषां कर्मणा 'काल-मृत्यु'-रूपो भवतीति।'**

अर्थात् जो तान्त्रिक योगी **'कुण्डलिनी-शक्ति'** के उत्थापन-द्वारा **अमृत-स्राव** कर षटचक्रों में स्थित **डाकिनी** आदि मण्डलों का सिञ्चन करना जानता है, वेही **बाह्य कर्म-काण्ड में सिद्धि** प्राप्त कर सकता है। अन्यथा **'काल-तत्त्व'** मृत्यु-रूप होकर उसका विनाश कर देता है। इसी तत्त्व को **'चन्द्र-ज्ञान तन्त्र'** में इस प्रकार कहा गया है -

अन्तरग्नौ मधु-स्रावं, कुर्वतां शिशिरात्मनाम्।
इष्ट-पूर्तादि-कर्माणि, फलन्ति किल कालतः ।।
अन्त-स्राव-विहीनानां, सदा सन्तप्त-चेतसाम्।
कर्माणि क्रियमाणानि, कालो ग्रसति तत्-क्षणात्।।
काल-कर्षिणिकैवान्तः, करोति मधु वर्षति।
इति यो वेद तस्य स्याद्, ब्रह्म-रन्ध्रात् सुधा-स्रुतिः।।

अर्थात् जो शान्त-चित्तवाले साधक **अन्तराग्नि में मधु-स्राव** करना जानते है, उनके किए **'इष्ट-पूर्तादि कर्म'** काल-द्वारा सफल होते है, **अन्तः-स्राव-विहीन** सन्तप्त-चित्त वाले पुरुषों-द्वारा किए हुए कर्म को **'काल'** तत्क्षण ही ग्रस लेता है। **'काल-कर्षिणिका-शक्ति'** ही यह अन्तरकार्य सम्पन्न करती है तथा वही **'मधु-वर्षा'** करती है। ऐसा रहस्य जो जानता है, उसके **'ब्रह्म-रन्ध्र'** से **'सुधा'** (अमृत) की स्रुति होती है।

'कुण्डलिनी-जागरण' एवं **'मधु-स्राव'** एक कठिन कार्य है, जो **सिद्धि क्रिया-कुशल योगी** ही करने में कृत-कार्य हो सकते है। यह सबके द्वारा साध्य नहीं है। इसलिए तान्त्रिकों ने कुछ अनुष्ठान भी दिए है, जिनमें **'कुण्डलिनी-जागरण'** अथवा **'मधु-स्राव'** करें या नहीं, तब भी सिद्धि पाई जा सकती है।

सार्द्ध नव-चण्डी **'प्रयोग'** को करने के लिए ९ **ब्राह्मण 'सप्तशती'** के पूरे पाठ करने के लिए

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

'वरण' किए जाते है। एक आधा पाठ करने वाला और एक शुक्ल-यजुर्वेदीय 'षडङ्ग-रुद्रीय' का पाठ करने वाला होता है। कुल एकादश (११) ब्राह्मणों द्वारा यह 'अनुष्ठान' सम्पन्न होता है। पाठ करने वाले ब्राह्मण 'शक्ति-तत्त्व' में निष्ठा रखने वाले होने चाहिए। 'अर्ध-पाठ' के पाठ से ही ९ पाठ सफलीभूत होते है। अर्ध-पाठ मुख्य है। 'अर्ध-पाठ' के विषय में कहा गया है–

नव-सार्धं जपेद् यस्तु, मुच्येत् प्राणान्तकाद् भयात्।
राज्य-श्रीः सर्व-सम्पत्तिः, सर्वान् कामानवाप्नुयात्! ॥
प्रयोगोऽयं महा-गुह्यो, देवानामपि दुर्लभः।
तत् तेऽहं सम्प्रवक्ष्यामि, सावधानावधारय ॥
मधु-कैटभ-नाशं च, महिषासुर-घातनम्।
शक्रादि-स्तुतिरेवातो, देवी-सूक्तं पनस्तथा ॥
नारायणी-स्तुतिश्चैव, फलानुकीर्तनं तथा।
ततो वर-प्रदानं च, ह्यर्ध-पाठोऽयमुच्यते ॥
अर्ध-पाठस्त्वयं प्रोक्तः, सर्व-काम-फल-प्रदः।
अर्ध-पाठेन रहितं, नव-पाठ-फलं नहि ॥

अर्थात् जो पुरुष 'सार्ध नव-चण्डी' का प्रयोग करता है, वह 'प्राणान्त-सङ्कट' से मुक्त होकर राज्य-श्री, सर्व-सम्पत्ति तथा सभी कामों को करता है। प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थाध्याय का पाठ सम्पूर्ण, पाँचवे अध्याय में 'देवा ऊचुः—नमो देव्यै' इत्यादि से लेकर 'ऋषिरुवाच'-पर्यन्त तथा एकादश अध्याय की 'नारायणी-स्तुति', द्वादश एवं त्रयोदश अध्याय सम्पूर्ण-ये सब मिलकर 'अर्ध-पाठ' कहलाते है। इसी 'अर्ध-पाठ'से प्रयोग की 'सफलता' होती है। 'अर्ध-पाठ' से रहित 'नव-पाठों' का फल नहीं होता। निम्न प्रकार इसका प्रयोग करना चाहिए–

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सार्ध 'नव-चण्डी'-प्रयोग की विधि

१. पहले चन्द्र, तारा, नक्षत्रादि के अनुकूल होने पर **शुभ मुहूर्त्त** में अथवा **कृष्णाष्टमी, नवमी, चतुर्दशी** तिथियों के किसी दिन **विधिवत् 'कुमारी-पूजा'** करे। उन्हें भोजन-दक्षिणादि से सन्तुष्ट कर **'प्रयोग'** हेतु उनकी **आज्ञा ले**।

२. फिर शुद्ध लिपी-पुती भूमि पर आसन बिछाकर प्राङ्मुख बैठकर विघ्न-निवारणार्थ **'स्वस्तिवाचन'** कर **भगवान् श्रीगणेश का आवाहन** कर उनकी **'पूजा'** करे **'अनुष्ठान'** के लिए **'सङ्कल्प** करें। **'ॐ तत्सदद्येत्यादि'** देशकाल का कीर्तन कर, **'अमुक-गोत्रोत्पन्नोऽहम्'** (शर्मा-वर्मेत्यादि) नाम-युक्त राज्य से व्यवहार, सेवा, प्रतिष्ठा, श्री-वृद्धि आदि की कामना वाला अपनी कामना के अनुसार एकादश ब्राह्मणों द्वारा **'शुक्ल-यजुर्वेदीय षडङ्ग-रुद्रीय-पाठ-सहित-मार्कण्डेय-पुराणान्तर्गत-श्रीचण्डी-चरितस्य श्रीमहा-काली-महालक्ष्मी-महा-सरस्वती-दैवतकस्य सार्ध-नवक-रूप-पुरश्चरणं कारयिष्ये'** ऐसा **'सङ्कल्प'** करे।

३. गन्धाक्षत-कौसुम्भ-सूत्र-वस्त्रादि **'वरण-सामग्री'** के सहित **प्रत्येक ब्राह्मण का पृथक्-पृथक् वरण करे**।

४. फिर आचार्य यथा-विधि **'कलश-स्थापना'** कर **भवानी-शङ्कर की सोपचार पूजा** करे। इसके अनन्तर **'पुस्तक-पूजनादि'** कर **प्रत्येक ब्राह्मण को 'पाठ' का सङ्कल्प** कर पाठारम्भ करना चाहिए। पाठ को सम्पूर्ण करके **'नवार्ण-मन्त्र'** का **'जप'** करना चाहिए तथा भगवती को **'पाठ का समर्पण'** करना चाहिए।

५. इसके बाद **'होम-विधि'** से **'कुण्ड'** या **'स्थण्डिल'** में संस्कृत अग्नि में घृत-पायस-तिल से **'एक पाठ का होम'** करना चाहिए। फिर **'तर्पण-मार्जन'** मूल-मन्त्र से कर ब्राह्मणों को भोजन एवं दक्षिणा प्रदान करके प्रसन्नता-पूर्वक यजमान ब्राह्मणों से आशीर्वाद ग्रहण करे।

विशेष :- 'सप्तशती का पाठ' शक्ति-मन्त्र से **दीक्षित ब्राह्मणों** द्वारा ही कराना चाहिए क्योंकि अदीक्षितों की क्रिया सर्वथा निष्फल होती है। **'दीक्षा'** के बिना अन्तः करण में शुद्ध शक्ति का सञ्चार नहीं होता तथा इसके बिना **'सङ्कल्प-सिद्धि'** नहीं होती।

उक्त प्रयोग सरल, अल्प-व्यय-साध्य है। प्रत्येक **'देवी-पर्व'** पर इसे कराकर मनुष्य सफली-भूत हो सकते है। **वसन्त** एवं **शरद् ऋतु** में इसका अनुष्ठान विशेष सिद्धिकर है। इसके करने में एक ही दिन लगता है। अनेक दिनों में जो **'अनुष्ठान'** होते है। उनमें करने वालों के उत्साह में शिथिलता आ जाती है। ऐसा इसमें नहीं होता।

'सप्तशती के पाठ' में कितना प्रभाव है, यह बात यहाँ बताने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि विश्व

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

की ऐसी कोई विभूति नहीं, जो इसके द्वारा प्राप्त न हो सके। इस घोर कलि–काल में यह एक ही ग्रन्थ कर्म–काण्ड की महत्ता अक्षुण्ण बनाए हुए है। **सहस्र–चण्डी, शत–चण्डी** आदि महा–अनुष्ठान बहुत ही कठिन एवं दुःसाध्य है। इसी बात को लक्ष्य करके यह **'सार्ध नव–चण्डी'** प्रयोग यहाँ दिया गया है। आशा है, शाक्त–जन स्वयं इसे **'प्रयोग'** में लाकर कृत–कार्य होंगे तथा इसका समुचित प्रचार कर धार्मिक श्रद्धालु जनता का हित करेंगे।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

'पशु'-बलि एवं 'पूर्णाहुति'

पशु-बलि – फिर इष्ट-देवता के सम्मुख छागादि पशु का बलि-दान करे। इस सम्बन्ध में 'नित्या तन्त्र' में लिखा है कि सर्व-लक्षणों से युक्त पशु को मूल-मन्त्र से स्नान कराकर गन्ध-पुष्प-माला आदि से अलंकृत कर देवी के आगे खड़ा करे। तब मूल-मंत्र द्वारा प्रोक्षणी जल से प्रोक्षण कर 'फट्' से रक्षण कर, कवच (हुं) से और अवगुण्ठन-मुद्रा से अवगुण्ठन कर धेनु-मुद्रा से अमृतीकरण कर **'ॐ सर्व-देवता-रूपिणे बलि-रूपाथामुक-पशवे नमः'** से गन्ध से तीन बार पूजन कर पशु के दाहिने कान में **'ॐ पशु-पाशाय विद्महे विप्र-कर्णाय धीमहि तन्नो जीव प्रचोदयात्'** यह **'पशु-गायत्री'** पढ़े। तब आगे खड्ग को रख **'ॐ कालि, कालि, वज्रेश्वरि! लोह-दण्डायै नमः'** से गन्धादि द्वारा तीन बार पूजन कर उस अस्त्र की मूँठ में **'ॐ वागीश्वरी-ब्रह्मभ्यां नमः'**, मध्य में – **'ॐ लक्ष्मी-नारायणाभ्यां नम'** और आगे – **'ॐ उमा-महेशाभ्यां नमः'** से क्रमशः पूजन कर खड्ग को पकड़ कर **'ॐ खड्गायासुर-नाशाय देव-कार्याय तत्पर! पशुं छिन्धि त्वमाश्वेन खड्गनाथ! नमोऽस्तु ते'** अभिमन्त्रित करे। गन्ध, अक्षत, जल आदि लेकर मूल-विद्या का उच्चारण कर **'ॐ अद्यामुक-मासेऽमुक-पक्षेऽमुक-तिथौ अमुक-गोत्रोऽमुक-शर्मा दीर्घायुर्दुर्भिक्ष्य-दुःख-निवृत्ति-परमानन्द-साश्वमेध-सम-फल-ध्वज-मानाकुल-विमान-वरारोहण-पूर्वक-देवी-लोक-कामनोत्तर-शाश्वत-समावधि-चिन्मयाखण्ड-विजय-कामः श्रीमहा-काली-महा-लक्ष्मी-महा-सरस्वती-देवीभ्यः पशुमिमं सम्प्रददे'** से जल-अक्षत आदि से पशु के मस्तक की पूजा करे। तब यश को शिर पर धारण कर **'ॐ यज्ञार्थे पशवः सृष्टा, यज्ञार्थे पशु-घातनम्। अतस्त्वां घातयिष्यामि, तस्माद् यज्ञो वधोऽधः।। शिवायतमिदं पीडमतस्त्वं शिवतां गतः। उद्बुध्यस्व पशो! त्वं हि, नाशिवस्त्वं शिवोऽसि हि।।'** यह बोध कराकर खड्ग लेकर **'सौः अस्त्राय फट् छिन्धि स्वाहा'** से पशु के कन्धे पर लगाए। तब स्वयं देवी-रूप होकर निर्विकार भाव एक ही प्रहार में बलि करे। यदि किसी प्रकार की शङ्का हो, तो दूसरे के हाथ से बलि कराए। ब्राह्मणातिरिक्त व्यक्ति अपने शरीर के रक्त की बलि दे। इस प्रकार छागादि बलि-दान कर मूल-मन्त्र से देवी की पूजा करे। स्वर्णादि पात्र में श्रीमहा-काली-महालक्ष्मी-महा-सरस्वती को रक्त अर्पित कर योनि-मुद्रा से प्रणाम कर प्रदक्षिणा करे।

पूर्णाहुति – होम से बचे हुए घृत से स्रुव को पूर्ण कर कर होमीय द्रव्य, जो बचा हो, अग्नि में डाल दे। उसके आगे पुष्प, फल, चूड़ी, काञ्चन, वस्त्राभूषणादि रख, स्रुव से आच्छादित कर, उसे नाभि में स्थापित कर **'प्राण-बुद्धि० वौषट् मूलं ॐ भूर्भुवः स्वः रं रं रं अग्नि वैश्वानर जातवेद० स्वाहा, पूर्णादर्विपरापूर्णात् पूर्णं प्रभवति। पूर्णमदः पूर्णमीदम् पूर्णाः, ॐ अग्नये जात-वेदसे सुनवानसे सुनवामसो मम, ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय०, ॐ उदानाय०, ॐ समानाय०, ॐ**

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

व्यानाय० ॐ अम्बेऽम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन०’ के बाद नवाक्षर मन्त्र पढ़ कर ‘दुर्गा-होम-परायणः पूर्णाहुतिं समर्पयामि नमः’ से अथवा ‘ॐ रुचे त्वा रुचे त्वा समिश्रवन्ति सरितो रथेन। ॐ तद्-दामनसो पूयमाना घृतस्य धारा अभिचाकसीमि हिरण्ययोवेतसोमद्य तस्मिन् प्रपूर्णा मधु-कृत् कुला इ भयं नास्ते मधु-देवताभ्यस्तस्या सते हरये स्व-धाणडुहोना अमृत-धाराम्, मूलान्ते श्रीमहा-काली-महा-लक्ष्मी-महा-सरस्वती-देवताभ्यः पूर्णाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा’ से पूर्णाहुति प्रदान करे।

विसर्जन- तब प्रणीता को समार्जन रुद्र-कलश पर त्याग दे। भस्म लेकर ललाट, कण्ठ, दक्षिण बाहु-मूल और हृदय में लगाए। मूल गायत्री से आहुति के शेषान्न का आँवले-बराबर ग्रास बनाकर प्राशन करे। द्रव्यों को आवृत्ति के रूप में अलग-अलग कर एक-एक आहुति दे। उस देवता को आत्मा के तेजस्वी रूप से व्याहृति-मन्त्र से हवन कर वह्नि की जिह्वा अङ्ग-मूर्तियों के नाम से एक-एक आहुति देकर पूर्ववत् मेखला पर जल से सींचे। ‘पवित्री’ को अग्नि में डाल दें, ‘प्रणीता’ जल को पृथ्वी पर गिरा दे। ‘प्रोक्षणी’ के जल से आग का प्रोक्षण करे। तब पुष्पाञ्जलि लेकर ‘ॐ भो भो वह्ने, महा-शक्ते, सर्वकर्म-प्रसाधक! कर्मान्तरेऽविसम्प्राप्ते सान्निध्यं कुरु सारदम्’ से आग की प्रार्थना कर साष्टाङ्ग प्रणाम करे। तब ‘पृथ्वि! सु-शीतला भव’ से दूध की धारा दे। इष्ट-देवता को पुनः पाद्यादि देकर अग्नि का संहार-मुद्रा से हृदय में विसर्जन करे-‘ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।’ इसके बाद बिछाए हुए कुशों को आग में डाल दे। विसर्जन कर तिल, कुश, पुष्प लेकर अग्नि की प्रार्थना करे। यथा- ॐ शाण्डिल्य-गोत्र हुताशन-देवता! गच्छ गच्छ सुर-श्रेष्ठ! शुभ-स्थाने हुताशनः। कृत-कर्म-काले भगवन्! पुनरागमनाय च।

दक्षिणा दान - ‘ॐ अद्येत्यादि शत-चण्डी-कर्म-पारायण-मन्त्र-प्रयोगस्य कृत-होमस्य यन्न्यूनातिरिक्ति-साङ्गता-सिद्ध्यर्थमिदं पूर्ण-पात्रं स-घृतं स-सुवर्ण स-दक्षिणाममुक-गोत्राय यस्मै कस्मै-चिद्-ब्राह्मणाय विष्णु-रूपाय तुभ्यमहं दास्ये, तेन श्रीमहा-काली-महा-लक्ष्मी-महा-सरस्वत्यः प्रीयन्ताम्।’ से दक्षिणा प्रदान करे। इसी प्रकार ‘पूर्ण-पात्र’ के स्थान में ‘तिल-पात्र’या ‘घृत-पात्र’ कह कर प्रदान करे।

फिर ‘अद्येत्यादि एतत् शत-चण्डी-कर्म-साङ्गता-सिद्ध्यर्थं नाना-नाम-गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथा-विभवं प्रभूत-घृत-शर्करा-पायसान्न-प्रधानं विविध-पक्वान्नं भोजयिष्ये। तेन श्रीमहा-काली-इत्यादि प्रीयन्ताम्।’ से और ‘एतत् कर्म-सिद्ध्यर्थं यथा -शक्ति-वटुक-कुमारी-सुवासिनीः यथा-विभवं०’ से उक्त व्यक्तियों को वस्त्रालङ्कारादि से सन्तुष्ट कर विसर्जन करे।

अब आचार्य को कृत-कर्म की ‘दक्षिणा’ दे। ‘दक्षिणा’ देने में वित्त-शाठ्य (कृपणता) न करे। उचित ‘दक्षिणा’ देने वालों को सब कुछ मिलता है और आयु बढ़ती है। वेदोक्ति (ऋग्वेद १-१२५-६) है

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

– 'दक्षिणा-वतामिदिमानि-चित्रा, दक्षिणावतां दिवि सूर्य्यासः, दक्षिणावन्तो अमृतं भजन्ते, दक्षिणावन्तः प्रतिरन्त आयुः ।।'

दक्षिणा-सङ्कल्प :- ॐ अद्येत्यादि अमुक-गोत्रोऽहममुक-प्रवरान्वितोऽहममुक-शर्माऽहम् मम शत-चण्डी-पारायण-साङ्ग-भूत होम-कर्म-सम्पादकायाचार्याय स्वर्ण-शृङ्गीं ताम्र-पृष्ठां, रौप्य-खुरां, नाना-वस्त्राभूषणाद्यलंकृतां, स-वत्सां, पयस्विनीं, कांस्य-दोहन-पात्र-युक्तां, पुष्टाङ्गीं, चारु-लक्षण-संयुक्तां, घण्टा-नादिनीं, दश-पूर्वापर-नरकोद्धारणार्थं शाश्वच्चिन्मयाखण्ड-विष्णु-लोक-प्राप्त्यर्थमिमां धेनुमाचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे । तेन श्रीमहा-काली-इत्यादि प्रीयन्ताम् ।' से गौ देकर-**'ॐ अद्येत्यादि आचार्याय वस्त्रालङ्कारमहं दास्ये ।** (अथवा मूल्यं) **तेन श्रीमहा-काली॰'**से आचार्य को वस्त्रालङ्कार दे।

तर्पण-मार्जन- पहले सङ्कल्प करे - **ॐ अद्येत्यादि शत-चण्डी-यज्ञ-पारायणाङ्गत्वेन कृतस्य होमस्य दशमांशतश्चन्दन-कर्पूरादि-वासितैः शुद्ध-सलिलैः** (वा गो-दुग्धैः) **तर्पणमहं करिष्ये ।**

फिर पूर्वोक्त क्रम से ऋष्यादि, षडङ्ग-न्यास कर जल में उपास्य देवता का आवाहन कर मूल-मन्त्र पढ़कर **'साङ्ग-सायुध-सवाहन-सपरिवार-श्रीमहा-काली इत्यादि तर्पयामि नमः'** से सुवासित जल अञ्जलि में लेकर समर्पित करे। फिर पूर्ववत् कह कर अपनी आत्मा में इष्ट-देवता-रूप का ध्यान करे। कुम्भ-मुद्रा से मूल-मन्त्र उच्चारण कर अन्त में **'साङ्ग-सायुध-सवाहन'** इत्यादि कहकर अपनी देवता का नाम लेकर **'अभिषिञ्चामि नमः'** से अभिषिक्त करे और तर्पण का दशमांश अपने शिर पर लेकर अभिषेक के दशांश चतुर्विध-रत्न से युक्त कुलीन शुद्ध आचार वाले, ब्रह्म-विद्या से दीक्षित, ब्रह्म-मार्ग के प्रवर्तक सु-ब्राह्मणों को निमन्त्रित कर, उन्हें वस्त्राभूषणों से शोभित कर, षड्-रस से युक्त नाना प्रकार के खाने योग्य अन्न अपनी देवता की बुद्धि से भोजन कराकर, ताम्बूल और दक्षिणा से परितुष्ट कर, नमस्कार करे तथा आशीष ले। आवाहित देवता और पीठ-देवताओं का विसर्जन कर संहार-मुद्रा से निर्माल्य लेकर अपनी नासा के छिद्र द्वारा देवता का तेज अपने हृदय में लेते हुए हृदय के अष्ट-दल-कमल पर श्रीमहा-काली इत्यादि की स्थापना करते हुए योनि-मुद्रा से प्रणाम करे।

इसके बाद घटों के साथ सब पात्रों को संहार-मुद्रा से उठाकर प्रधान कलश के जल से कुश के अग्र भाग द्वारा यजमान के शरीर पर मन्त्राभिषेक करे। अभिषेक-मन्त्र **'सुरास्त्वां'** इत्यादि से ब्राह्मणों के साथ अभिषेक करे। शिर पर कलशोदक से निम्न मन्त्रों द्वारा सिञ्चन करे-

ॐ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च, ईश्वरश्च सदा-शिवः । शम्भु-मृडो महा-रौद्रः, कामेशः कामनेश्वरः ।। कपर्दि-शूल-टङ्केशः, कर्ण-घण्टस्त्रिलोचनः । नभो-भक्षो जलो-भक्षो, दिशो-भक्षः सुरेश्वरः । महा-कालश्च कालाग्निः, करालो विकरालकः ।। संहारो रुरुरीशानः, सुप्त उन्मत्त-भैरवः ।। सावित्री कमला गिरिजा, पार्वती पर्वतात्मजा। काली दुर्गा सती चण्डी, रेणुका

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

च सरस्वती ।। नील-तारा छिन्न-शीर्षा, लोपामुद्रा सुर-प्रिया। माथा च मोहिनी मेना, मङ्गला सर्व-मङ्गला ।। महा-विद्या जटा-जूटा, ललज्जिह्वा त्रिलोचना। ब्राह्मी नारायणी चैव, कौमारी चापराजिता ।। माहेश्वरी च चामुण्डा, वाराही नारसिंहिका। वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः ।। प्रद्युम्नोऽप्यनिरुद्धश्च, भवन्तु विभवायते। अखण्डलोऽग्निर्भग-वान्, यमो वै निऋतिस्तथा। वरुण-पवनश्चैव, धनाध्यक्षस्तथा शिवः। ब्रह्मण सहिता ह्येते, दिक्-पाला पान्तु वः सदा ।। कीर्तिर्लक्ष्मीधृतिर्मेधा, पुष्टिः श्रद्धा क्रिया-मती। बुद्धिर्लज्जा वपुः शीतिः, माया निद्रा च भावनाः ।। एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु, तुष्टिः कांक्षाः क्षमास्तथा। आदित्यश्चन्द्रमा भौमो, बुधो जीवः सितार्कजः ।। ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु, राहुः केतुश्च पूजितः। देव-दानव-गन्धर्व-यक्ष-राक्षस-पन्नगाः ।। ऋषयो मुनयो गावो, देव-मातर एव च। देव-पत्न्यो ध्रुवा नागादित्याश्चाप्सरो-गणः ।। अस्त्राणि सर्व-शास्त्राणि, राजानो वाहनानि च। औषधिान च रत्नानि, कालश्चावयवश्च ये ।। सरितः सागराः शैलास्तीर्थाश्च जलदा नदाः। एते त्वामभिषिञ्चन्तु, सर्व-कामार्थ-सिद्धये ।।

अब घट पर रखा नारिकेल, देवता के पुष्प और फल यजामन के द्वारा ब्राह्मण को दे। मन्त्र-जप और सप्तशती-पारायण करने वाले ब्राह्मण कल्याण-वचन कहें-'श्रीर्वर्द्धस्व चायुष्यं, यथोक्त-विधिना तव। सम्यगेषोऽस्माभिश्च, कृतः पाठस्तव श्रिये। तेन यज नित्यं पुण्यं, तेन पुण्येन पुण्य-वान् ।।'

नवार्ण - अमुक-मन्त्र-सम्पुटी-कृत अमुक-पल्लव से आद्यन्त में नवार्ण मन्त्र १०० बार जप से और 'सप्तशती के पारायण का फल हो'- यह पढ़ते हुए यजमान के हाथ में श्रेय-सम्पादन करे। यजामन को इस मन्त्र से आशीर्वाद दे- 'भद्रं वद दक्षिणतो, भद्रमुत्तरतो वद। भद्रं पुरस्तान्नो वद, भद्रं पश्चात् कापिञ्जलः। इति सा निगदव्या ख्याता ग्रत्समदो ग्रत्समदनो ग्रत्स इति मेधा बिना न गृह्यतेऽस्तु त्रिविक्रमणे। मण्डुका मञ्जूका मदनोर्मण्डयतेर्वा मन्दिति कर्मणोर्मण्डयतेर्वा तृपिति कर्मणो मण्डयते इति वैयाकरणा मण्डएशामोक इति वामण्डोमार्देखामर्देवतोशा वेश भवति। विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परासुवः यद्भद्रं तन्न आसुवः ।।'

'स्वस्ति न इन्द्रेति'- इस मन्त्र से तिलक करे। तब पुरश्चरण करने वाले ब्राह्मणों को प्रति पाठ में पाँच निष्क प्रमाण सोना दक्षिणा में देकर प्रार्थना करे। आगे कहे जाने वाले मन्त्र से बारम्बार प्रणाम कर, सुप्रसन्न की भावना कर, विसर्जन करे और 'यथा-सुखं विहर' कहे। तब स्वयं भोजन करे। यज्ञ-सम्बन्धी सभी वस्तुएँ आचार्य को समर्पित कर दे। निर्माल्य को नदी में प्रवाहित कर दे। आदि से अन्त तक जितने विधान कहे गए है, उसके अनुसार जो काम नहीं करते और आहुति देते है, उनको सफलता नहीं होती और अग्निदेव तृप्त नहीं होते। जो कोई पूर्वोक्त विधि से युक्त हो-कर सभी कार्य सम्पादन करते है, वे 'सहस्र-चण्डी-यज्ञ' कर मुक्ति पाते है। और इस लोक में भूपति हाते है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

'बलि'-विधान

बटुकादि बलि – यह पूजन **'काश्मीर-क्रम'** में केवल पूजा के आदि में, **'गौड़-क्रम'** में आदि-मध्यान्त मिलाकर तीन बार तथा **'केरल-क्रम'** में केवल एक बार अन्त में करना चाहिए।

रक्त-चन्दन से पूर्व दिशा में **'त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र'** मण्डल लिखकर **'ॐ बटुक-मण्डलाय नमः'** से गन्धाक्षात से पूजन कर आधार-सहित **'बटुक'** का, इसी प्रकार दक्षिण में **'योगिनियों'** का, पश्चिम में **'क्षेत्रपाल'** का, उत्तर में **'गणेश'** का बलि-पात्र (जिनमें कारण-सहित शुद्ध आदि अन्य तत्त्व रहें) रखें।

१. बटुक-बलि :-

'भैरव-पात्रामृत' से **'वटुक-भैरव'** का तर्पण वाम हस्त की तत्त्व-मुद्रा से और पूजन दाहिने हाथ की मुद्रा से करे। यहाँ मन्त्र ऐसा है- **ॐ वां वटुक-भैरवं तर्पयामि पूजयामि नमः।** तब **'बलि-पात्र'** या **'श्रीपात्रामृत'** से वाम हस्त की तत्त्व-मुद्रा से बलि उत्सर्ग करे। यथा-**ॐ एह्येहि देवी-पुत्र, वटुक-नाथ, कपिल-जटा-भार-भासुर, त्रिनेत्र, ज्वाला-मुख! सर्व-विघ्नान्नाशय, नाशय सर्वोपचार-सहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा, एष बलिः वां वटुकाय नमः।**

'महा-काल-संहिता' के अनुसार वटुक के तर्पण और पूजन का मन्त्रः **'ऐं ह्रीं श्रीं स्त्रीं सः स्हं कुल-कुमार-वटुक-नाथं तर्पयामि पूजयामि नमः।'**

२. योगिनी-बलि :-

'यां योगिनीस्तर्पयामि पूजयामि नमः'- मन्त्र से योगिनियों का तर्पण-पूजन करे। **'ॐ ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगन-तले भू-तले निष्कले वा, वने वा सलिल-पवनयोर्यत्र कुत्र स्थिता वा। क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृत-पदा धूप-दीपादिकेन, प्रीत्या देव्यः सदा नः शुभ-बलि-विधिना पान्तु वीरेन्द्र-वन्द्याः। यां योगिनीभ्यः स्वाहा, सर्व-योगिनीभ्यो हूँ फट् स्वाहा, एष बलिः सर्व-योगिनीभ्यो नमः'** मन्त्र से दक्षिण हस्त की तत्त्व-मुद्रा से बलि उत्सर्ग करे।

३. क्षेत्र-पाल बलि :- **'क्षां क्षेत्र-पालं तर्पयामि नमः'** से क्षेत्र-पाल का तर्पण-पूजन करके **'वीर-पात्रामृत'** से- **ॐ त्रिशूलं डमरुं चैव कपालं शङ्खमेव च, दधानं कृष्ण-वर्णं तं भजेऽहं क्षेत्र-पालकम्। क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः स्थान-क्षेत्रपाल! धूप-दीपादि-सहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा, एष बलिः क्षां क्षेत्र-पालाय नमः'** मन्त्र से बलि उत्सर्ग करे। **'क्षेत्र-पाल'** ४९ है। अतः बलि देते समय बहु-वचनान्त प्रयोग करना चाहिए।

४. गणेश-बलि :- **'गं गणेशं तर्पयामि पूजयामि नमः'** से **'गण-पति'** का पूजन-तर्पण करके **'गां गीं गूं गैं गौं गः गण-पते! वर वरद सर्व-जनं मे वशमानय बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा, एष**

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बलिः गं गण-पतये नमः' मन्त्र से बलि दे। **'गणेश'** भी दशो महा-विद्याओं के पृथक्-पृथक् हैं।

५. **सर्व-भूत-बलि :-**

'क्ष्म्रां सर्व-विघ्न-कृद्भयः सर्वेभ्यो हूँ फट् सर्व-भूतं तर्पयामि पूजयामि नमः' मन्त्र से **'सर्व-भूत'** का तर्पण और पूजन करके **'क्ष्म्रां सर्व-विघ्न-कृद्भयः सर्वेभ्यो हूँ फट् एष बलिः सर्व-भूतेभ्यो नमः'** मन्त्र से बलि का उत्सर्ग करे।

उक्त **'पञ्च-बलियों'** के अतिरिक्त **'सर्व-पथिक-देवताओं '** के लिए भी उक्त विधि के अनुसार 'बलि' देनी चाहिए। यथा-

६. **सर्व-पथिक-देव-बलि :-**

'ॐ सर्व-पथिक-देवतांस्तर्पयामि नमः' मन्त्र से **'सर्व-पथिक-देवताओं'** का पूजन और तर्पण कर **'एष बलिः सर्व-पथिक-देवताभ्यो नमः'** मन्त्र से बलि उत्सर्ग करे।

'सप्त-शती' के प्रत्येक अध्याय के कलश के आगे एक-एक पात्र बलि के लिए देकर तत्तत् **'अध्याय की अधिष्ठात्री देवता'** के नाम से बलि दे। यथा - **(१) ॐ वाग्भव-वीजाधिष्ठात्री महा-काली-बलि-पात्राय नमः, (२) ॐ लक्ष्मी-वीजाधिष्ठात्री बलि-पात्राय नमः, (३) ॐ अष्ट-वर्णात्मिका महा-लक्ष्मी-बलि-पात्राय नमः, (४) ॐ त्रि-वर्णात्मिका शक्ति-बलि-पात्राय नमः, (५) ॐ विष्णु-मायादि-त्रयो-विंशति-देवता-वलि-पात्राय नमः, (६) ॐ शताक्षी-धूम्राक्षी-बलि-पात्राय नमः, (७) ॐ कर्पूर-वीजाधिष्ठात्री काली-चामुण्डा-बलि-पात्राय नमः, (८) ॐ अष्ट-मातृ-सहिता-रक्ताक्षी-बलि-पात्राय नमः, (९) ॐ वाग्भव-वीजाधिष्ठात्री बलि-पात्राय नमः, (१०) ॐ सिंह-वाहिनी त्रिशूल-पाश-धारिणी बलि-पात्राय नमः, (११) ॐ सर्व-नारायणी-बलि-पात्राय नमः, (१२) ॐ बाला-त्रिपुरा-बलि-पात्राय नमः, (१३) श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरी-बलि-पात्राय नमः।** इस प्रकार तेरह वलि-पात्रों की पूजा करें।

७. **महा-काल बलि :- हूँ महा-काल, श्मशानाधिप! इमं बलिं गृह्ण गृह्ण, गृह्णापय गृह्णापय विघ्न-निवारणं कुरु कुरु, सर्व-सिद्धिं प्रयच्छ स्वाहा, एष बलिः श्रीमहा-काल-भैरवाय नमः।** इस मन्त्र से **'महा-काल'** को बलि उत्सर्ग करे।

८. **इष्ट-देवता बलि :- ॐ ह्रीं श्रीं दक्षिणायै कालिकायै स्वाहा एष वलिः नमः।** मन्त्र से इष्ट-देवता को बलि उत्सर्ग करे।

९. **शिवा-बलि :-**

एष बलिः शिवा-रूप-जगदम्बायै श्रीदक्षिणा-कालिकायै नमः स्वाहा। इस मन्त्र से रात्रि के प्रथम प्रहर में, श्मशान में अथवा बिल्व-मूल में वा नदी-तट इत्यादि किसी निर्जन स्थान में एक मनुष्य के पूर्ण आहार-प्रमाण **'शिव-बलि'** निष्काम भाव से उत्सर्ग करे।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इसके बाद **'यन्त्र-राज'** पर **ॐ मण्डूक-कालाग्नि'-रुद्र ह्रीं आधार-शक्ति-मूल-प्रकृति-कूर्म-शेष-पृथ्वी-सुधाम्बुधि-मणिद्वीप-चिन्तामणि-गृह-श्मशानाष्टक-पारिजात,** उसके नीचे **रत्न-वेदी,** उस पर मणि-पीठ, **मणि-पीठ** के चारों ओर **मुनि-गण देव-गण शिवा-गण शव-मुण्ड,** पुनः मणि-पीठ के आग्नेय कोण में **धर्म,** नैर्ऋत्य में **ज्ञान,** वायव्य में **वैराग्य** और ईशान में **ऐश्वर्य,** पूर्व में **अधर्म,** दक्षिण में **अज्ञान,** पश्चिम में **अवैराग्य** और उत्तर में **अनैश्वर्य, सम्वित्-रूपी कमल-नाल,** सर्व-तत्त्वात्मक **पद्म,** प्रकृति-रूप **पंखुड़ियाँ,** विकार-मय **केशर,** पञ्चाशद्-वर्ण-वीजाढय **कर्णिका, सूर्य** और **चन्द्र-मण्डल, सत्त्व,** रज और **तमोगुण, आत्मा, अन्तरात्मा, परमात्मा, ज्ञानात्मा,** दलों पर स्वाग्र दल-क्रम से **इच्छा, ज्ञान, क्रिया, कामिनी, काम-दायिनी, रति, रति-प्रिया, नन्दा** (आनन्दा) शक्ति, मध्य में **उन्मनी** शक्ति और इन सबसे ऊपर **'हसौः सदाशिव-महा-प्रेत-**पद्मासन। इन पीठ-देवताओं में शक्तियों का **'शक्ति-पात्रामृत'** से और अन्य का **'विशेषार्घ्यामृत'** से एक-एक बार वाम हस्त से तर्पण और दक्षिण हस्त से गन्ध-पुष्पादि से पूजन करे। यथा- **ॐ मण्डूकं पूजयामि तर्पयामि नमः।**

अब प्राणायाम, ऋष्यादि कर षडङ्ग व्यापक न्यास करे। फिर **'काम-कला'** का ध्यान कर मूल-देवता की पूजा करे। पूजर करने का स्थान एकान्त, पवित्र और धूपादि सुगन्धियों से आमोदित हो। पूजा सन्ध्या समय करे। शिव-शक्ति के संयोग-समय को **'कुल-सन्ध्या'** कहते है अथवा व्यष्टि-दिवस **सूर्य-**नाड़ी अर्थात् दाहिने श्वास के चलते समय होता है और रात्रि **चन्द्र-नाड़ी** अर्थात् बाएँ श्वास के चलते समय। **सुषुम्णा-नाड़ी** के प्रवाह के समय **सन्ध्या** समझे और तभी जप-पूजादि करे। उत्तराभिमुख होकर पूजा करे, चाहे दिन हो या रात। **पूज्य-पूजक की अन्तर्दिशा ही पूर्व दिशा है।**

पीठ-पूजा -

अर्घ्योदक से पीठ को सिक्त कर अपने वाम भाग में पीठ कर **'ॐ मण्डूकाय स्थापयामि पूजयामि तर्पयामि नमः।** इसी प्रकार **ॐ कालाग्नि-रुद्राय, ॐ मूल-प्रकृत्यै, ॐ आधार-शक्तये, ॐ कूर्माय, ॐ अनन्ताय, ॐ रत्न-द्वीपाय, ॐ स्वर्ण-पर्वताय, ॐ नन्दनोद्यानाय, ॐ कल्प-वृक्षेभ्यो, ॐ रत्न-भूमिकायै, ॐ स्वर्ण-प्राकाराय, ॐ मणि-मण्डपाय, ॐ मणि-मय-वेदिकायै, ॐ श्वेत-छत्राय, ॐ रत्न-सिंहासनाय,** वायव्य में **ॐ ब्रह्म-प्रेतासनाय,** ईशान में **ॐ विष्णु-प्रेतासनाय,** आग्नेय में **ॐ रुद्र-प्रेतासनाय,** नैर्ऋत्य में **ॐ ईश्वर-प्रेतासनाय,** मध्य में **हसौः सदा-शिव-महा-प्रेतासनाय।** फिर वही **ॐ धर्माय, ॐ ज्ञानाय, ॐ वैराग्याय, ॐ ऐश्वर्याय, ॐ अधर्माय, ॐ अज्ञानाय, ॐ अवैराग्याय, ॐ अनैश्वर्य्याय, ॐ मायायै, ॐ विद्यायै-** इन मन्त्रों से क्रमशः पूजन-तर्पण करे। इसी तरह **'मणि-पीठ'** पर जो-जो कहे गए है, उन सबका पूजन-तर्पण करे। अन्त में **'ॐ षट्- त्रिंशत्-तत्त्व-रूपा श्रीमहा-काली-महा-सरस्वती-त्रिगुणात्म-शक्ति-महा-**

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

योग-पीठाय पूजयामि तर्पयामि नमः' से समस्त 'पीठ' की पूजा करे। अब आचार्य विशुद्ध तन-मन से, जिनका यह यज्ञ है, उन इष्ट-देवी का ध्यान कर उनकी पूजा करे।

पूजन-क्रम :-

त्रिकोण, षट्-कोण, अष्ट-पत्र, चार द्वारों से युक्त चतुरस्र यन्त्र अष्ट-गन्ध से लिखकर स्थापित करें। उसके मध्य में 'पूजा-यंत्र' वा मूर्ति की स्थापना कर आवाहन करे। पूर्वोक्त रूप से ऋष्यादि कर-षडङ्ग न्यास कर ' त्रिखण्डज्ञ-मुद्रा' बनाकर पुष्पाञ्जलि अपने हृदय से लगाकर -मूलाधार' से 'कुण्डलिनी' को उठाकर 'ब्रह्म-रन्ध्र' में लाकर 'परम शिव' से उसका संयोग कराए। वहाँ से हृदय में लाकर 'आवरण-सहित देवी' का ध्यान कर उसी मार्ग से तेज-पुञ्ज अञ्जली से संयोग कराकर 'पद्म-वन' में रहने वाली देवी का निम्न मन्त्र से आवाहन करे -

ॐ देवेशि, भक्ति-सुलभे, परिवार-समन्विते!
यावत् त्वां पूजयिष्यामि, तावत् त्वं सुस्थिरा भव।।
दुष्पारे घोर-संसारे, सागरे पतितं सदा।
त्रायस्व वरदे, देवि! नमस्ते चित्-परात्मिके!।।
ये देवा याश्च देव्यश्च, चलिता ये चलन्ति हि।
आवाहयामि तान् सर्वान्, कालिके परमेश्वरि!।।
प्राणान् रक्ष, यशो रक्ष, रक्ष दारान् सुतान् धनम्।
सर्व-रक्षा-करी यस्मात्, त्वं हि देवि! जगन्मये!।।
प्रविश्य तिष्ठ यज्ञेऽस्मिन्, यावत् पूजां करोम्यहम्।
सर्वानन्द-करे, देवि! सर्व-सिद्धिं प्रयच्छ मे।।
तिष्ठात्र कालिके मातः! सर्व-कल्याण-हेतवे।
पूजां गृहाण सुमुखि! नमस्ते शङ्कर-प्रिये!।।

'मूलं' श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती त्रिगुणात्म-शक्ति! इह आवाहिता भव।

मुद्रा-प्रदर्शन :-

'आवाहन-मुद्रा' यह है कि दोनों हाथों की अञ्जलि बनाकर अनामिका की जड़ की पोर पर अंगुष्ठ रखे। इसी से देवी का 'आवाहन' करे। 'आवाहन-मुद्रा' को अधोमुख करने से 'स्थापनी-मुद्रा' होती है। इससे देवी की 'स्थापना' होती है। दोनों मुष्टियों (मूठियों) के बाहर अंगुष्ठ करने से ''सन्निधापिनी-मुद्रा'' होती हैं। इससे देवी का ''सन्निधान'' किया जाता हैं। इसी मुद्रा में अङ्गुष्ठ को मुष्टि के अन्दर करने से 'सन्निरोधिनी-मुद्रा' होती है। इससे देवी का 'सन्निरोध' होता है। दोनों मूठियों को उत्तान करे, तो 'सम्मुखीकरण-मुद्रा' होती है। इससे भगवती का 'सम्मुखीकरण' होता है। दाहिने हाथ को ऊपर

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उठाकर तर्जनी को दीर्घ-मुख करे, तो 'अवगुण्ठन-मुद्रा' होती है। इससे देवी का 'अवगुण्ठन' किया जाता है। अनामिका और कनिष्ठा, मध्यमा और तर्जनी परस्पर मुख से यदि मिली हुई हों, तो यह 'धेनु-मुद्रा' होगी। इस मुद्रा से भगवती का 'अमृतीकरण' होता है। दोनों अँगूठों को उठाकर अँगुलियाँ फैलाने से 'परमीकरण-मुद्रा' होती है। इससे देवी का 'परमीकरण' होता हे। मुद्राएँ दिखाकर ' ॐ आं ह्रीं क्रों यं हंसः सोऽहं महा-काली-महा-लक्ष्मी-महा-सरस्वती-त्रिगुणात्म-शक्ति-देवता प्राण इह प्राणाः, ॐ आं ह्रीं क्रों० जीव इह स्थितः, ॐ आं ह्रीं क्रों० सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि, ॐ आं ह्रीं क्रों यं हंसः सोऽहम् वाङ्-मनः-श्रोत्र-त्वक्-चक्षुर्जिह्वा-घ्राण-प्राणाः इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा' से प्राणादि समर्पण करे।

'ॐ काल्यादि-त्रिगुणात्म-शक्ति-सर्व-सौभाग्य-दायिनी अनेक-रत्न-सुयक्तमासनं प्रतिगृह्यताम्' से आसन प्रदान करे। 'पाद्य-पात्र' में श्यामाक, दूर्वा, आज्य, विष्णु-क्रान्ता देकर उस पात्र को उठाकर 'ॐ सुचारु-शीतलं दिव्यं नाना-गन्ध-समन्वितम्। गृहाण देव-देवेशि, दुर्गे देवि! नमोऽस्तु ते' इस मन्त्र से 'महा-काली' इत्यादि कहकर देवी के चरण-कमल में उसे समर्पित करे।

'अर्घ्य-पात्र' में कुशाग्र, तिल, सरसों, दूर्वा देकर 'ॐ दुर्गे देवि महा-भागे! शिवस्यार्द्धाङ्ग-वासिनी! अर्घ्यं गृहाण कल्याणि! सपरिवार-गणावृते।' इस मन्त्र में 'स्वाहा' लगाकर मस्त पर अर्घ्य दे। 'आचमनीय-पात्र' में जाती, लवङ्ग, कङ्कोल इत्यादि देकर 'ॐ सर्व-तीर्थ-जलान्नीतं सुवर्ण-कलश-स्थितम्। गृहाणाचम्य देवेशि! दुर्गे देवि! प्रसीद में' इस मन्त्र से 'वं' कहकर आचमन दे। 'मधुपर्क-पात्र' में घृत, मधु आदि देकर 'ॐ मध्वाज्य चाष्ट-गन्धं च गङ्गादि-तोय-मिश्रितम्। गृहाण मधुपर्कं च, दुर्गे देवि! प्रसीद मे।' इस मन्त्र से मुख में 'मधुपर्क' दे।

पाद्यादि द्रव्याभाव में 'अक्षत' दे। तब 'स्नान' कराए। यथा - ॐ स्नान गङ्गा-सरस्वती-रेवा-कावेरी-सरयू-जलैः। स्नानं गृहाण देवेशि! दुर्गे देवि! प्रसीद में। श्रीमहाकाली० स्नानं परिकल्पयामि स्वाहा' मन्त्र से साढ़े तीन शङ्ख-जल से;'ॐ आज्यं मधु-दधि-क्षीरं शर्करा-तीर्थ-मिश्रितम्। मया निवेदितं तुभ्यं, गृहाण परमेश्वरि' से पञ्चामृत से; 'माङ्गल्यादिषु सर्वेषु हरिद्रां वर-वर्णिनि! गृहाण जगदम्ब! त्वं, हरिद्रा-स्नान-मुत्तमम्।। श्रीमहाकाली०' से हरिद्रा से; 'ॐ सुगन्धं मलयोद्भूतं कर्पूरागरु-घुसृणम्। द्रव्यं गृहाण देवेशि! दुर्गे देवि! प्रसीद मे' से सुगन्ध-द्रव्य से और अन्त में शुद्ध जल से क्रमशः स्नान कराकर पवित्र वस्त्र से अङ्ग पोंछकर 'ॐ सर्व-सत्वाधिक-चित्रे! रक्त-पीत-सितारुणे! मया निवेदितं तुभ्यं वस्त्राणि प्रति-गृह्यताम्। श्रीमहा-काली०' से पहनने के लिए वस्त्र दे। इसके बाद 'ॐ वज्र-वैदूर्य-मुक्तानि, माणिक्यं पुष्प-रागकम्। गारुत्मकं तु रत्नानि, सुवर्णान्यर्पितानि वै। तथा नक्षत्र-मालानि, ग्रैवयाङ्गद-भूषणम्। मयाऽर्पितं महा-दुर्गे!। गृहाणाङ्गदमादरात्' मन्त्र से आभूषण प्रदान करे। तब चन्दन दे। यथा-'ॐ कर्पूरागरु-

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

संघृष्टं कुंकुमादि-समन्वितम्। कस्तूरी-घुसृणा-युक्त-चन्दनं प्रति-गृह्यताम्। ॐ महा-काली. चन्दन समर्पयामि। फिर 'शुभं काश्मीरजं देवि! नाना-गन्ध-समन्वितं। निशा-चूर्ण-समायुक्तं, कुङ्कमं प्रति-गृह्यताम्। मुक्ता-फल-समाकारा काश्मीरजं देवि! नाना-गन्ध-समन्वितं। निशा-चूर्ण-समायुक्तं, कुङ्कमं प्रति-गृह्यताम्। मुक्ता-फल-समाकारा अक्षताश्चाति-संस्कृताः। दीयते परया भक्त्या, गृह्यतां जगदम्बिके! श्रीमहाकाली०' से ललाट पर मुक्ताक्षत देकर 'तुरीय-वन-सम्भूतं, नाना-गुण-मनोहरम्। अमन्द-सौरभं पुष्पं, गृहाण परमेश्वरि! मल्लिका-वकुल-चम्पक-पाटला-पुन्नाग-जाती-करवीर-रसाल-पुष्पैः, सबिल्व-प्रवाल-तुलसी-दल-मालतीभिस्त्वां पूजयामि! जगदम्ब! प्रसीद मातः, श्रीमहा-काली० यथोत्पन्नं पुष्पं नमः' मन्त्र से तर्जनी-अंगुष्ठ के योग से 'पुष्प-मुद्रा' करके दिखाए।

तब आगे 'धूप-पात्र' रखकर 'वां' से उसे सिक्त कर, अमृतीकरण कर, गुग्गुलादि देकर, 'धूपाय नमः' से पूजा-कर तर्जनी-अंगुष्ठ के योग से 'धूप-मुद्रा' दिखाए। फिर अपने वाम-भाग में स्थित 'घण्टा' की पूजा करे-'हूँ जय-ध्वनि-मन्त्र-मातः! स्वाहा। तब 'देव-द्रुमरसोद्भूतः, कृष्णागरु-समन्वितः। गृहाण परमं धूपं, दुर्गे देवि! प्रसीद मे।। श्रीमहा-काली० धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।' से धूप प्रदान करे।

तब 'दीप-पात्र' को 'अस्त्र' से प्रक्षालित कर 'नमः' से पूजित कर उसमें घी की बत्ती रखे। 'ह्रीं' से उसे जलाकर 'विष्णु-दैवात्याय दीपाय नमः' से पूजा करे। 'धेनु-मुद्रा' से अमृतीकरण कर घण्टा बजाते हुए 'ॐ सुप्रकाशो महा-तेजाः, सर्वत्र तिमिरापहः। सबाह्याभ्यन्तरं ज्योतिर्दीपोऽयं प्रति-गृह्यताम्। त्वं ज्योतिः सर्व-देवानां, तेजसां तेज उत्तमम्। आत्म-ज्योतिः परं धाम, गृहाण परमेश्वरि!।। श्रीमहा-काली दीपं दर्शयामि नमःस्वाहा' से आरती करे।

तदनन्तर देवी के आगे जल से 'चतुरस्र-मण्डल' बना कर आधार पर 'नैवेद्य-पात्र' रखे। उसे मूल-मन्त्र से देखकर तीन बार 'फट्-कार' करके उसे पवित्र करे। फिर 'हूँ' से सिक्त कर 'चक्र-मुद्रा' दिखा 'वं' का सात बार जप कर उसके दोषों को दग्ध कर 'वं' से अमृतीकरण करे। 'विशेषार्घ्य-पात्र' के बिन्दु से उसे पवित्र कर 'नैवेद्याय नमः' से पूजा कर मूल-मन्त्र का सात बार जप कर 'महा-मुद्रा' से उसे परमीकृत करे। वामाङ्गुष्ठ से नैवेद्य-पात्र को पकड़कर 'मूलं साङ्गां सायुधां सपरिवारां श्रीमहा-काली० नैवेद्यं परिकल्पयामि नमः'- जल से नैवेद्य दे। तब यह मन्त्र पढ़े-'श्रीमहा-काली० ॐ हेम-पात्र-गतं दिव्यं, परान्नं सुसंस्कृतम्। पञ्चधा षड्रसोपेतं, गृहाण परमेश्वरि! नैवेद्यं विविधान्नं च षड्रस-स्वादु-संस्कृतम्। भक्ष्य-भोज्यं समायुक्तं, दुर्गे देवि। गृहाण भोः।'

देव-पात्रान्तर में अमृतीकरण जल से 'ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाह' से देवी के हाथ में जल प्रदान कर बाँएँ हाथ से 'ग्रास-मुद्रा' दिखाए। फिर दाहिने हाथ से 'ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ व्यानाय

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा श्रीमहा-काली० चित्-पात्रे सद्रि-विधि-सौख्यं विविधानेक-भक्षणं निवदयामि ते देवि! सानुगायै जुषाण तत्'। तब '**ॐ समस्त-देव-देवेशि! सर्व-तृप्ति-करं परम्। मया निवेदितं तुभ्यं, प्रकृतिस्थं सुशीतलम्। अमृतानन्द-सम्पूर्णं, गृहाण जलमुक्तमम्**' से जल निवेदन कर घण्टा-वादन कर खाती हुई देवी का ध्यान कर मूल-मन्त्र का दश बार जप करे। फिर देवी की तृप्ति का ध्यान कर '**ॐ अमृतापिधानमिस स्वाहा**' से भोजनोत्तर जल देकर नैवेद्य नैर्ऋत्य दिशा में रख दे। हस्त-प्रक्षालन के लिए सुगन्धित जल प्रदान करे।

तब कर्पूरादि-युक्त ताम्बूल को पवित्र कर '**ॐ ताम्बूलं प्रति-गृह्यताम्**' से उसे निवेदन करे। इसके बाद '**हिरण्य-गर्भस्थं हैम-वीजं विभावसोः। अनन्त-पुण्य-फलदं, अतः शान्ति प्रयच्छ मे।**' फिर '**फलं फलेन फलितं, सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्। फलस्यार्घ्यं फल-दानेन, सफलाः सन्तु मनोरथाः।**' से फल-दान कर '**योनि-मुद्रा**' से प्रणाम करे।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शत-चण्डी-विधान (पूजा-विधि)

सामान्यार्घ्य-स्थापना :- शुद्ध स्थान में पूजा-वेदी से बाहर **'त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र'** यन्त्र रक्त-चन्दन से लिखे अथवा इसी तरह के ताम्बे (ताम्र) के बने **'यन्त्र'** को **'फट्'** मन्त्र से धोकर उसी पर **'ह्रीं आधार-शक्तिभ्यो नमः'** मन्त्र से पूजन करे। फिर 'गुरु-क्रम' के अनुसार **'त्रि-पादुका'** या **'वर्तुलाकार'** (गोल) **'आधार'** को **'फट्'** से धोकर उक्त **'यन्त्र'** पर रखे। इसी आधार **'फट्'** से प्रक्षालित **'शङ्ख'** या **'ताम्बे के पात्र'** को रखे। उसे **'नमः'** मन्त्र से जल से भरे। जल में अंकुश-मुद्रा से तीर्थ-शक्तियों का आवाहन करे- **ॐ गंगे च यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति! नर्मदे सिन्धु कावेरि! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।**

'ॐ' से उस जल से गन्ध-पुष्प डाले और दश बार **'ॐ'** का जप कर उसे अभिमन्त्रित करे। इसी 'सामान्यार्घ्य' के जल से पूजा-गृह के द्वार अभ्युक्षण कर द्वारा-देवताओं की पूजा करे । यथा-

द्वार-पूजा :- द्वार के ऊपरी भाग में-**ॐ गां गणपतये नमः**, वाम भाग में-**ॐ क्षां क्षेत्रपालाय नमः**, दाहिने भाग में-**ॐ वां वटुकाय नमः**, नीचे-**ॐ यां योगिनीभ्यो नमः** से क्रमशः पूजा कर द्वार के चारों ओर पूर्वादि-क्रम से-**ॐ गां गङ्गायै नमः, ॐ यां यमुनायै नमः, ॐ श्रीं लक्ष्म्यै नमः, ॐ ऐं सरस्वत्यै नम,** से पूजा करे।

अब **'ॐ ह्रीं विशुद्धौ सर्व-पापानि शमयाशेष-विकल्पमपनय हूँ फट् स्वाहा'** से पैर धोकर, पूजा-मण्डप में प्रवेश कर, नैर्ऋत्य कोण में -**ॐ ब्रह्मणे नमः, ॐ वास्तु-पुरुषाय नमः** से पूजन करे। फिर अक्षत, सरसों और तिल लेकर-**'ॐ सर्व-विघ्नानुत्सारय हूँ फट् स्वाहा। ॐ अपसर्पन्तु ते भूता, ये भूता भुवि संस्थिताः। ये भूता विघ्न-कर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया'** को पढ़ते हुए उन्हें चारों ओर छिड़ककर विघ्नों को दूर करे। तदनन्तर 'सामान्यार्घ्य' का जल छिड़क कर **'ॐ पवित्र-वज्र-भूमे हूँ फट् स्वाहा'** से भूमि-शोधन करे। तब रक्त-चन्दन से अपने गुरु-क्रमानुसार त्रिकोण बनाए। त्रिकोण के मध्य में माया-वीज **'ह्रीं'** लिखे। इसी यन्त्र पर **'ह्रीं आधार-शक्ति-अमुक-आसनाय नमः'** से पूजन करे। यहाँ जो आसन हो, उसका नामोल्लेख करे।

अब **'ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोका, देवि! त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां नित्यं, पवित्र कुरु चासनम्'** से पृथिवी की प्रार्थना कर आसन पर **'आः सुरेखे वज्र-रेखे हूँ फट् स्वाहा'** से एक मण्डल की कल्पना करे। फिर **'ॐ मेरु-पृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसनोपवेशने विनियोगः'** मन्त्र पढ़ते हुए यथा-सुख आसन पर बैठकर **'ऐं रः अस्त्राय फट्'** से हाथों को धोकर तत्त्वाचमन करे। यथा - **ॐ आत्म-तत्त्वाय स्वाहा, ॐ विद्या-तत्त्वाय स्वाहा, ॐ शिव-तत्त्वाय स्वाहा'**। फिर मूल-मन्त्र से तीन बार आचमन कर निम्न प्रकार से नित्य आचमन करे। यथा- **'ॐ**

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

काल्यै नमः, ॐ कपालिन्यै नमः' से अंगुष्ठ-मूल द्वारा ओष्ठ और अधर का मार्जन करे और 'ॐ कुल्लायै नमः' से हाथ, 'ॐ कुरु-कुल्लायै नमः' से तर्जनी, मध्यमा, अनामिका-द्वारा मुख; 'ॐ विरोधिन्यै नमः, ॐ विप्र-चित्तायै नमः' से अंगुष्ठ-तर्जनी-द्वारा दोनों नासा-पुट, 'ॐ उग्रायै नमः' ॐ उग्र-प्रभायै नमः' से अंगुष्ठ, अनामिका द्वारा दोनों नेत्र, 'ॐ दीप्त्यै नम, ॐ नीलायै नमः' से तत्त्व-मुद्रा द्वारा दोनों कान; 'ॐ घनायै नमः' से कनिष्ठा, अंगुष्ठ द्वारा नाभि; 'ॐ वलाकायै नमः' से करतल-द्वारा हृदय; 'ॐ मात्रायै नमः' से सब अँगुलियों-द्वारा मस्तक और 'ॐ मुद्रायै नमः; ॐ मितायै नमः' से मध्यमा के अग्र भाग द्वारा दोनों बाहु-मूल छूकर आचमन करे।

ॐ मणि-धरि वज्रिणि महा-प्रतिसरे! रक्ष रक्ष (मां) हूँ फट् स्वाहा' से शिखा-बन्धन करे। तब '**फट्**' मन्त्र-पढ़कर बाँई एड़ी से भूमि को ठोंककर तर्जनी और मध्यमा दोनों अँगुलियों को ऊपर उठाकर '**फट्, फट्, फट्**' कहते हुए क्रमशः तीन बार ताली बजाकर तर्जनी से अँगूठे को बजाए और विघ्नों को हटाकर **दिग्-बन्धन** करे।

इसके बाद बाँई ओर '**ॐ गुरवे नमः**' से गुरु को और '**ॐ गुरु-मण्डलाय नमः**' से वहीं गुरु-मण्डल को प्रणाम कर दाहिनी ओर '**ॐ गणेशाय नमः**' से गणेश को और मध्य में योनि-मुद्रा से श्री दुर्गा का ध्यान कर उनको प्रणाम करे।

अब इष्ट-पूजा के लिए आज्ञा ले। यथा - **ॐ भैरवाय नमस्तुभ्यं, मोक्ष-मार्ग-प्रदर्शिने। आज्ञां मे दीयतां नाथ! इष्ट-पूजां करोम्यहम्।** फिर पुष्प-शोधन करे। यथा-

ॐ शताभिषेक हूँ फट् स्वाहा, ॐ पुष्प-केतु राजार्हते शताय सम्यक् सम्बद्धाय ॐ पुष्पे पुष्पे महा-पुष्पे सु-पुष्पे-पुष्प-सम्भवे। पुष्प-चयावकीर्णे हूँ फट् स्वाहा- इस मन्त्र से सामान्यार्घ्य का जल पुष्पों पर छिड़के। इसके बाद '**कर-शोधन**' इस प्रकार करे -

एक लाल पुष्प में चन्दन लगाकर उसे हथेली पर रखकर काम-वीज (**क्लीं**) से मींजकर वाग्भव-वीज (ऐं) से सूँघे और '**हौं ते सर्वे विलयं यान्तु, ये मां हिंसन्ति हिंसकाः। मृत्यु-रोग-भय-क्लेशा, पतन्तु रिपु-मस्तके।**' यह मन्त्र पाते हुए नाराच-मुद्रा से ईशान कोण में उसे फेंक दे। इस क्रिया में फूल को मींजने (मसलने) से **कर-शुद्धि**, सूँघने से **देव-तृप्ति** और फेंकने से **विघ्न-निवारण**-ये तीन कार्य सिद्ध होते है।

इसके बाद मूल-मन्त्र से तीन बार **प्राणायाम** करे। **ऋष्यादि न्यास, करादि न्यास, षडङ्ग न्यास** और **व्यापक न्यास** मूल देवता के आगे दिए गए मन्त्र से करे। अब '**भूत-शुद्धि**' करे। यथा-'**ॐ ह्रीं**' इस अंकुश मन्त्र से सुषुम्णा-नाड़ी के मार्ग से प्रदीप-कलिकाकारा कुण्डलिनी को ब्रह्म-रन्ध्र तक ले जाकर वहाँ परम शिव से उसक संयोग कराए। उस समय उनके ऐक्य-भाव से द्रवित अमृत से गुरु का तर्पण करे। फिर उसी मार्ग से डाकिनी आदि शक्ति की प्रेरणा करते हुए कुण्डलिनी को उसके पद पर पहुँचा दे। फिर

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
जयपुर परिसर, जयपुर
पुस्तकालय
32728
पंजिकरण क्रमांक

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पार्श्व-स्थित अंगुष्ठ-प्रमाण धूम्र-वर्ण पाप-पुरुष को 'यं' वायु-बीज का १६ बार जप करके शोषित हुआ ध्यान करें। 'रं' वह्नि-वीज के जप से उसे जलाकर, 'वं' वरुण-वीज से उसे अभिषिक्त करें कर करे और 'लं' इन्द्र-वीज के जप से पिण्डीभूत शरीर को शुद्ध करे।

अब 'मातृका-न्यास' करे। यथा-

विनियोग :- ॐ अस्य श्रीमातृका-न्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः। गायत्री-छन्दः। मातृका सरस्वती देवता। हलो वीजानि। स्वराः शक्तयः। अव्यक्तं कीलकं। दुर्गो-पूजाऽङ्गत्वेन मातृका-न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास :- ॐ ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि। ॐ गायत्री-छन्दसे नमः मुखे। ॐ मातृका-सरस्वती-देवतायै नमः हृदि। ॐ व्यञ्जनेभ्यो वीजेभ्यो नमः गुह्ये। ॐ स्वरेभ्यः शक्तिभ्यों नमः पादयोः। ॐ सर्गाय कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्ग-न्यास :-

अं कं खं गं घं ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः/हृदयाय नमः।
इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां स्वाहा/शिरसे स्वाहा।
उं टं ठं डं ढं णं ऊँ मध्यमाभ्या वषट्/शिखायै वषट्।
एं तं थं दं धं नं नं ऐं अनामिकाभ्यां हुँ/कवचाय हूँ।
ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठाभ्यां वौषट्/नेत्र-त्रयाय वौषट्।
अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अँः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्/अस्त्राय फट्।

ध्यान :-

ॐ पञ्चाशल्लिपिभिर्विभक्त-मुख-दोः पन्मध्य-वक्षःस्थलाम्।
भास्वन्मौलि-निबद्धचन्द्र-शकलामापीन-तुङ्ग-स्तनीम्।।
मुद्रामक्ष-गुणं सुधाढ्य-कलशं विद्यां च हस्ताम्बुजै-
विभ्राणां विशद-प्रभां त्रि-नयनां वाग्-देवतामाश्रये।

उक्त प्रकार ध्यान कर निम्न मातृका-मन्त्रों से तत्त्व-मुद्रा या फूलों से कथित अङ्गों में न्यास करे। प्रत्येक मन्त्र के पहले प्रणव (ॐ) लगा ले। यथा - ॐ अं नमः ललाट, आं नमः मुख, इं नमः, ईं नमः दोनों आँख, उं नमः, ऊं नमः दोनों कान, ऋं नमः, ॠं नमः दोनों नासापुट, लृं नमः, ॡं नमः दोनों गाल, एं नमः, ऐं नमः दोनों ओष्ठ, ओं नमः, औं नमः दोनों दन्त-पंक्ति, अं नमः, अँः नमः जिह्वा और तालु, कं नमः दायाँ बाहु-मूल, खं नमः कूर्पर (कुहनी), गं नमः मणि-बन्ध (कलाई), घं नमः अंगुलि-मूल, ङं नमः अंगुलि-अग्र, चं नमः बाँयाँ बाहु-मूल, छं नमः कूर्पर, जं नमः मणि-बन्ध (कलाई), झं नमः अंगुलि-मूल, ञं नमः अंगुलि-अग्र, टं नमः दायाँ पाद-मूल, ठं नमः सन्धि स्थान (घुटना), डं

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नमः छार्वे के नीचे सन्धि स्थान में, **ढं नमः** पाद अंगुलि-मूल, **णं-नमः** अंगुलि-अग्र, **तं नमः** वाम पाद का सन्धि-स्थान, **थं नमः**, **दं नमः** दाहिने की तरह वाम पाद में, **धं नमः** अंगुलि-मूल, **नं नमः** अंगुलि-अग्र, **पं नमः** दाहिना पंजर, **फं नमः** वाम पंजर, **बं नमः** पृष्ठ, **भं नमः** नाभि, **मं नमः** पेट, **यं नमः** हृदय, **रं नमः** दायाँ बाहु-मूल, **लं नमः** ककुत-स्थल, **वं नमः** वाम बाहु-मूल, **शं नमः** हृदय से दाई अंगुलि तक, **षं नमः** हृदय से वाम बाहु-मूल तक, **सं नमः** हृदय से दायें पाद-मूल तक, **हं नमः** हृदय से वाम पाद-मूल तक, **ळं नमः** हृदय से नाभि तक, **क्षं नमः** हृदय से मुख तक। इसके बाद समस्त मातृकाओं से सर्वाङ्ग में व्यापक-न्यास करे।

नर्वाण-मन्त्र-न्यास :-

ॐ अस्य श्रीनवार्ण-दुर्गा-मन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरा ऋषयः शिरसि। गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्-छन्द से नमः मुखे। महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः हृदि। नन्दा-शाकम्भरी-भीमा-शक्तिभ्यो नमः दक्ष-स्तने। रक्तदन्तिका-दुर्गा-भ्रामरी-वीजेभ्यो नमः वाम-स्तने। अग्नि-वायु-सूर्येभ्यो नमः गुह्याङ्गे। मम सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

अब **'ऐं ह्रीं क्लीं** इन तीन वीजों से **'कर-न्यास'** एवं **'षडङ्ग-न्यास'** करे। यथा- **ऐं ह्रीं क्ली अंगुष्ठाभ्यां नमः** इत्यादि।

तब **'विद्युद्-दाम०'** इत्यादि ध्यान कर निम्न **'सरस्वती'** आदि न्यास करे। जहाँ **'मूलं'** शब्द है, वहाँ **'नवार्ण मन्त्र'** कहे-

१. सरस्वती-न्यास :- मूलं अगुष्ठाभ्यां नमः, मूलं तर्जनीभ्यां स्वाहा, मूलं मध्यमाभ्यां वषट्, मूलं अनामिकाभ्यां हुं, मूल कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्, मूलं कर-मध्ये, कर-पृष्ठे, स्फारे, मणि-बन्धे नमः।

२. हृदयादि-न्यास :- ॐ **मूलं हृदयाय नमः।** ॐ **मूलं शिरसे स्वाहा।** ॐ **मूलं शिखायै वषट्।** ॐ **मूलं कवचाय हुं।** ॐ **मूलं नेत्र-त्रयाय वौषट्।** ॐ **मूलं अस्त्राय फट्।** ॐ **मूलं बन्धे।** ॐ **मूलं पूर्वे।** ॐ **मूलं आग्नेये।** ॐ **मूलं दक्षिणे।** ॐ **मूलं नैर्ऋत्ये।** ॐ **मूलं पश्चिमे।** ॐ **मूलं वायव्ये।** ॐ **मूलं ईशाने ।** ॐ **मूलम् अधः।** ॐ **मूलम् ऊर्ध्वम्।**

३. नन्दजा-न्यास :- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मूलं सर्वाङ्गे नन्दजा पातु कमलांकुश-हस्ता। **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मूलं दक्षिणे रक्त-दन्तिका पातु** खड्ग-पात्र-धरा। **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मूलं पृष्ठे शाकम्भरी पातु पुष्प-पल्लवा। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मूलं वामांशे दुर्गा पातु** धनुर्वाण-धरा। ॐ **ऐं ह्रीं क्लीं मूलं मस्तकादि-चरणान्तं भीमा पातु** शिरः-पात्र-धरा। **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मूलं चरणात् मस्तकान्तं भ्रामरी पातु** चित्र-कान्ति-भूत।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

४. अभेद्य-न्यास :- ॐ मूलं पादात् नाभ्यान्तं ब्रह्मा पातु। ॐ मूलं नाभ्यात् कर्णान्तं विष्णुः पातु। ॐ मूलं कर्णात् मस्तकान्तं रुद्रः पातु। ॐ मूलं पाद-द्वये हंसः पातु। ॐ मूलं कर-द्वयं वैनतेयः पातु। ॐ मूलं वृषभश्चक्षुषी पातु। ॐ मूलं सर्वाङ्गे में जनार्दनः पातु।

५. वैकुण्ठ-सुकृत-न्यास :- अष्टादश-भुजा महा-लक्ष्मी मे मध्यं पातु। अष्ट-भुजा सरस्वती मे ऊर्ध्वं पातु। त्रिशल्लोचना मालया महा-काली मे अधः पातु। हस्त-द्वये मे सिंहः पातु। नेत्रे मे हंसः पातु। पाद-द्वये मे महिषः प्रेत-संयुतः पातु। सर्वाङ्गे मे चण्डिका पातु।

६. महा-भय-नाशन-न्यास :- ब्रह्म-रन्ध्र से पाद तक और पाद से ब्रह्म-रन्ध्र तक मूल से व्यापक न्यास करे। फिर मूल से मुख-मण्डल में, मस्तक से पाद तक, दाएँ पार्श्व में, बाँएँ पार्श्व में और पृष्ठ-देश में व्यापक-न्यास संहार-सृष्टि जैसा करे।

दशम-न्यास-मूल वीज से हृदयाय नमः, शिरसे स्वाहा, शिखायै वषट्, कवचाय हुं, नेत्र-त्रयाय वौषट्, अस्त्राय फट् और दश-दिक्षु रक्षण प्रत्येक अङ्ग-स्पर्श में मूल से युक्त कर दिग्-रक्षण तक न्यास करे।

ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः। ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ऐं हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ क्लीं शिखायै वषट्। ॐ चामुण्डायै कवचाय हुं। ॐ विच्चे नेत्र-त्रयाय वौषट्। मूलं अस्त्राय फट्। ऐं नमः शिखायै। ह्रीं नमः दक्ष-नेत्रे। क्लीं नमः वाम-नेत्रे। चां नमः दक्ष-कर्णे। मुं नमः वाम-कर्णे। डां नमः दक्ष-नासा-पुटे। यै नमः वाम-नासा-पुटे। विं नमः मुखे। च्चें नमः गुह्याङ्गे।

अब मूल से आठ बार व्यापक न्यास करे :- ॐ ऐं प्राच्यै नमः। ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः। ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः। ॐ ह्रीं नैर्ऋत्ये नमः। ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः। ॐ क्लीं वायव्यै नमः। ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

'खड्गिनी शूलिनी०' इत्यादि श्लोक से कृष्ण का ध्यान करे। 'शूलेन पाहि नो०' श्लोक से बालार्क का ध्यान करे और 'सर्व-स्वरूपे सर्वेशे०' से पाँचवें श्लोक तक पढ़कर शुद्ध स्फटिक का ध्यान करे।

एकादश-न्यास :- इसमें पहले 'मातृका-न्यास' सृष्टि, स्थिति, संहार-क्रम से करे। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमोऽगुष्ठाभ्यांम्। ॐ मूलं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ मूलं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ मूलं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ मूलं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ मूलं करतल-मध्याय नमः। ॐ मूलं

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कर-पृष्ठाय नमः। ॐ मूलं मणिबन्धे। ॐ मूलं कूर्पर।

ॐ मूलं हृदयाय नमः। ॐ मूलं शिरसे स्वाहा। ॐ मूलं शिखायै वषट्। ॐ मूलं कवचाय हुं। ॐ मूलं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ मूलं अस्त्राय फट्।

दिशा-न्यास :- ॐ ह्रीं ब्राह्मी पूर्वे पातु ह्रीं माहेश्वरी आग्नेये। ॐ ह्रीं कौमार्यै नमः दक्षिणे। ॐ ह्रीं वैष्णव्ये नमः पश्चिमे।

चक्र-न्यास :- ॐ मूलं अं शम्भु-तोजो ज्वल ज्वाला-मालिनी पाचके ह्रीं नन्दजायै आं हृदयाय नमः। ॐ मूलं इं शम्भु-तेजो ज्वल ज्चाला-मालिनी पाचके ह्रीं रक्त-दन्तिकायै ईं शिरसे स्वाहा। ॐ मूलं उं इं शम्भु-तेजो ज्वल ज्वाला-मालिनी पाचके ह्रीं शाकम्भर्यै ऊं शिखायै वषट्। ॐ मूलं ऐं शम्भु-तेजो ज्वल ज्वाला-मालिनी पाचके ह्रीं दुर्गायै ऐं कवचाय हुं। ॐ मूलं ओं शम्भु-तेजो ज्वल ज्वाला-मालिनी पाचके ह्रीं भीमायै औं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ मूलं अं शम्भु-तेजो ज्वल ज्वाला-मालिनी पाचके ह्रीं भ्रामर्य्यै अं अस्त्राय फट्।

चामुण्डा-न्यास :- प्रत्येक मन्त्र के आदि में '**ॐ**' और '**मूलं**' को जोड़कर न्यास करे। यथा- बाँयाँ कान, **ॐ मूलं ब्राह्मी चामुण्डकायै विच्चे**। इसी प्रकार दायाँ कान, **माहेश्वरी चामुण्डायै विच्चे**। दाढ़ी, **कौमारी चामुण्डायै विच्चे**। बाँयाँ गाल, **वैष्णवी चामुण्डायै विच्चे**। दायाँ गाल, वाराही चामुण्डायै विच्चे। मुख, **नारसिंही चामुण्डायै विच्चे**। बाँयाँ नेत्र, **ऐन्द्री चामुण्डायै विच्चे**। दायाँ नेत्र, **चामुण्डा चामुण्डायै विच्चे**। नासिका, **नन्दजा चामुण्डायै विच्चे**। बाँयाँ नेत्र, **ऐन्द्री चामुण्डायै विच्चै**। दायाँ नेत्र, **चामुण्डा चामुण्डायै विच्चे**। नासिका, **नन्दजा चामुण्डायै विच्चे**। बाँयाँ कन्धा, **शाकम्भरी चामुण्डायै विच्चे**। दायाँ कन्धा, **दुर्गा चामुण्डायै विच्चे**। हृदय, **भीमा चामुण्डायै विच्चे**। बाँई कुहनी, **भ्रामरी चामुण्डायै विच्चे**। दाई कुहनी, **कालिका चामुण्डायै विच्च्चे**। नाभि, **शिवदूती चामुण्डायै विच्चे**। बाँई जंघा **प्राजापत्या चामुण्डायै विच्चे**। दाई जंघा, **जया चामुण्डायै विच्चे**। लिंङ्ग, **विजया चामुण्डायै विच्चे**। बाँयाँ पाँव, **अपराजिता**। दायाँ पाँव, **मुण्ड-हस्ता**। गुदा, **शिव-दूती**। बाँई बगल, **कात्यायनी**। दाई बगल, **भेरुण्डा**। वक्षः स्थल, **दोग्ध्री**। बाँयाँ स्तन, **सर्व-योगीश्वर**। दायाँ स्तन, **सर्वा-विद्येश्वरी**। सर्वाङ्ग, **सुनन्दा**।

नव-दुर्गेश्वरी चामुण्डा-न्यास :- आदि में ॐ और **नवार्ण-मन्त्र** जोड़ ले। मस्तक, **त्रिपथगा चामुण्डायै विच्चे**, भाल **कालिन्दी चामु०**, भ्रूमध्य **चन्द्रभागा चामु०**, कण्ठ **महा-लक्ष्मी चामु०**, हृदयङ्ग **प्रचण्ड चामु०**,नाभि **महोग्रा चामु०**, मूलाधार **नक्षत्रा चामु०**, मूल से लेकर चरणों तक **पद्मासना चामु०**, चरणों से मूल तक, **कुमारी चामु०**।

कर-शुद्धि-पीठ-न्यास :- **काम-पीठाय** अंगुष्ठ, **जालन्धर-पीठाय** तर्जनी, **पूर्णगरि-पीठाय** मध्यमा, **वाराणसी-पीठाय** अनामिका, **मधुपुरी-पीठाय** कनिष्ठिका, **अनन्त-पीठाय** करतल

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

और कर-पृष्ठ। पीठ के नाम के आदि में 'ॐ' और अन्त में 'नमः' लगाकर न्यास करे।

षडङ्ग-न्यास :- काम-पीठाय नमः हृदय, **जालन्धर-पीठाय स्वाहा** शिर, **पूर्णगरि-पीठाय वषट्** शिखा, **वाराणसी-पीठाय हुं** कवच, **मधुपुरी-पीठाय वौषट्** नेत्र-त्रय, **अनन्त-पीठाय फट्** अस्त्र।

मण्डूकादि-न्यास :- पूर्ववत् आदि में ॐ और अन्त में 'नमः' लगाकर न्यास करे। मूलाधार **मण्डूकाय**। स्वाधिष्ठान **कालाग्नये**। नाभि **मूल-प्रकृत्यै**। हृदय **आधार-शक्तये, कूर्माय, अनन्ताय, वाराहाय, पृथ्व्यै, रत्न-वेदिकायै, तदधो रत्न-सिंहासनाय**। दायाँ कन्धा **धर्माय**। बाँयाँ कन्धा **ज्ञानाय**। बाँई जंघा **वैराग्याय**। दाई जंघा **ऐश्वर्याय**। मुख **अधर्माय**। बाई बगल **अज्ञानाय**। नाभि **अवैराग्याय**। दाई बगल **अनैश्वर्याय**। पुनः हृदय **पङ्कजाय, कन्दाय, नालाय, पत्रेभ्यो, कर्णिकायै, केशरेभ्यो, अं अर्क-मण्डलाय, सं सोम-मण्डलाय, रं वह्नि-मण्डलाय, सं सत्वाय, रं रजसे, तं तमसे, आं आत्मने, अं अन्तरात्मने, पं परमात्मने, ह्रीं अज्ञानात्मने, आं आत्म-तत्त्वात्मने, विं विद्या-तत्त्वात्मने, कं कला-तत्त्वात्मने, मां माया-तत्त्वात्मने, पं पर-तत्त्वात्मने, ब्रह्मणे, विष्णवे, रुद्राय, ईश्वराय, सदा-शिवाय**। इसके बाद '**षट्-त्रिंशत्-तत्व-रूपां श्रीत्रिगुणात्मक-शक्ति श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-योग-पीठात्मने मनः**, से व्यापक न्यास करे। यही '**योग-पीठ-न्यास**' भी कहलाता है।

उपर्युक्त प्रकार से भूत-शुद्धि, न्यास आदि कर अपने शरीर को निष्पाप समझे। अब स्व-शरीर में देवता के रहने योग्य स्थान समझकर शरीरस्थ श्री-चक्र में देवता की 'प्राण-प्रतिष्ठा' करे। यथा-

विनियोग :- ॐ अस्य प्राण-प्रतिष्ठा-मन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरा ऋषयः, ऋग्-यजुः-सामानि छन्दांसि, चैतन्य-रूपा प्राण-शक्तिर्देवता, प्राण-प्रतिष्ठायां विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास :- ॐ ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरेभ्यो ऋषिभ्यो नमः शिरसि, **ॐ ऋग्-यजुः सामेभ्यश्छन्दोभ्यो नमः** मुखे, **ॐ चैतन्य-रूपायै प्राण-शक्तये देवतायै नमः** हृदि, **ॐ प्राण-प्रतिष्ठायां विनियोगाय नमः** सर्वाङ्गे।

कराङ्ग एवं षडङ्ग-न्यास :- अं कं खं गं घं ङं आँ आकाश-वायु-वह्नि-सलिल-पृथिव्यात्मने अंगुष्ठाभ्यां नमः/हृदयाय नमः। **ॐ इँ चं छं जं झं ञं ईं शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गन्धात्मने** तर्जनीभ्यां स्वाहा/शिरसे स्वाहा। **ॐ उँ टं ठं डं ढं णं ऊँ श्रोत्र-त्वक्-चक्षुर्जिह्वा-घ्राणात्मने** मध्यमाभ्यां वषट्/शिखायै वषट्। **ॐ एँ तं थं दं धं नं ऐं वाक्-पाणि-पाद-पायूपस्थात्मने** अनामिकाभ्यां हुँ/कवचाय हुं। **ॐ ओं पं फं बं भं मं औं वचनादान-गति-विसर्गानन्दात्मने** कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्/नेत्र-त्रयाय वौषट्। **ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अँः** मनोबुद्ध्यहंकार-चिदात्मने करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्/अस्त्राय फट्।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शत-चण्डी-विधान (यज्ञारम्भ)

यजमान पूर्व-कथित 'प्रयोग-विधि' के अनुसार **गणेश-पूजन, अधि-वासन, मातृका-पूजन, वसु-धारा, वृद्धि-श्राद्ध** आदि सारी क्रियाएँ यथा-क्रम करके यज्ञारम्भ के दिन **'प्रयोग-विधि'** में वर्णित विधि के अनुसार, **'यज्ञ-मण्डप'** में प्रवेश कर, यज्ञ का **'सङ्कल्प'** कर, यज्ञार्थ दस ब्राह्मणों का वरण करे। **'ब्राह्मण-वरण'** के पहले अर्घ्य-द्वारा उनका वन्दन करे। **अर्घ्य में आठ वस्तुएँ है, यथा-**

आपः क्षीरं कुशाग्राणि, दधि दूर्वा शमी तथा। अक्षताः सर्षपाश्चैव, अष्टाङ्गोऽर्घ्यमुच्यते ।।

अर्थात् १. जल, २. दूध, ३. कुशा का अग्र-भाग, ४. दधि, ५. दूर्वा, ६. शमी के पत्र, ७. अक्षत और ८. सरसों - ये आठ वस्तुएँ **'अर्घ्य'** में दी जाती है।

वरण-सङ्कल्प- ॐ अद्येत्यादि शत-चण्डी-मख-यथा-विहित कर्म-सम्पादनार्थं ब्राह्मणानां ऋत्विजां वरणमहं करिष्ये। वरण करने के बाद यजमान ब्राह्मणों की **'प्रार्थना'** करे-

ॐ भार्यादि सर्व-भावस्य, चिन्तितार्थस्य सिद्धये ।
आधि-व्याधि-महा-मृत्यु-भय-शोक-निवृत्तये ।।
भूत-भव्य-भविष्येति, त्रिविधोत्पात-शान्तये ।
परमैश्वर्यसम्पत्तौ, निक्षिप्ते जात-कर्मभिः ।।
आचार्यादि-समस्तानां, याजकानां द्वि-जन्मनां ।
पाद्यार्घ्यं च करिष्यामि, कुरुष्वेत्यर्घ्यं हृद्वदेत् ।।
पावनाः सर्व-वर्णानां, ब्राह्मणो ब्रह्म-रूपिणः ।
गृह्णात्विदं ममार्घ्यश्च, जप-कर्म-स्व-कर्मणि ।।
स्वे स्वे कर्म-रता नित्यं, वेद-शास्त्रार्थ-कोविदाः ।
कर्म-काण्ड-रताः सर्वे, जप-ध्यान-परायणाः ।।
यद्वाक्यामृत-संसक्ता, सफलन्ति मनोरथाः ।
अङ्गीकुर्वन्तु मत्कर्म-कृपा-लोक-समाशिषः ।।
यथोक्त-विधिना युक्ता, मन्त्रार्थ-स्थिर-बुद्धयः ।
आपद्-वृद्धि-भयारिष्ट-शत्रु-बुद्धि-क्षयाय च ।।
यत्-कृपावलोकनात् सर्वा, वृद्धयो वृद्धिमाप्नुयुः ।
विशेष-काम्य-होमेन, गृहीतं समदादिभिः ।।

इसके बाद **'सङ्कल्प'** करे- **ॐ अद्येत्यादि अस्य यजमानस्य स-कुटुम्बस्य मनो-वाञ्छित-सिद्ध्यर्थं आधि-व्याधि-महा-मृत्यु-भय-शोक-निवृत्यर्थं भूत-भव्य-भविष्य-त्रिविधोत्पात-**

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शान्त्यर्थं परमैश्वर्य-सम्पत्ति-प्राप्त्यर्थं शतचण्डी-कर्म-प्रारम्भ-निमित्तं आचार्यादि-समस्त-याजकानां द्विजानां ऋत्विजां पाद्यार्घ्यं च करिष्ये ।।

इसके बाद यह पढ़े -

ॐ आगता भो द्विज-श्रेष्ठाः, मदनुग्रह-कारकाः! इदमर्घ्यमिदं पाद्यं, भवद्भिः प्रतिगृह्यताम्। ॐ अघोऽर्घोऽर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।

ब्राह्मण कहें - ॐ प्रति-गृह्णामि।।

पूजा की सब सामग्री आचार्य के समीप रखे। विशेष कर कस्तूरी, कुंकुम और कर्पूर से युक्त चन्दन दो पल (आठ तोला), अच्छे वस्त्र, अलङ्करण, सुवर्ण, पुष्प, चतुर्थांश गुग्गुल।

२० दीपक रखे। धूप से सारा स्थान सुगन्धित रहे। नैवेद्य सरस और पवित्र हो। कर्पूर-युक्त ताम्बूल दो सौ हों। **'वीराचार'** के क्रम में मांस की एक ग्रास-तुल्य बलि दे। प्रत्येक नैवेद्य में उपलब्ध उपकरण में एक पुरुष की तृप्ति के योग्य ग्रास दे। इस यज्ञ में यहाँ कहीं भी वस्त्र दिया गया है, वह उत्तरीय सहित ही जाने। इसके बाद यजमान आचार्य को प्रणाम कर **'प्रार्थना'** करे-

ॐ मत्कार्य-सिद्ध्यै दशभिः साकमनुष्ठितौ शुद्धः स्थिरो भूत्वा। ततः कुर्याच्छ्रेयः प्राप्त्यै ममात्मनः ।।

जिन १० ब्राह्मणों को कटि-सूत्र, अँगूठी, पुष्प, अक्षत, द्रव्य, यज्ञोपवीत, युग्म-वस्त्र देकर नाम-गोत्र उच्चारण-पूर्वक यजमान वरण कर चुका है, उन्हें वह अब आसन, जल-पात्र, आचमनीय, उपवस्त्र और जप-माला सहित गो-मुखी दे। फिर यजमान के कहने पर आचार्य **देवताओं की प्रार्थना** करे-

आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघन-क्षोभणश्चर्षणीनां संक्रन्दनो निमिष एक-वीर शत ठ. सेना अजयत् साकमिन्द्रः। ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य, पितामहं तथैव च। विष्णुं रुद्रमुमां देवीं, वन्दे पद्मां सरस्वतीम्। क्षेत्राधिपं नमस्कृत्य, दिन-नाथं निशाकरम्। धरणी-गर्भ-सम्भूतं, शशि-पुत्रं वृहत्पतिम्। दैत्याचार्य नमस्कृत्य, सूर्य-पुत्रं शनैश्चरम्। राहुं केतु नमस्कृतय, यज्ञारम्भे विशेषतः। शक्रादि-त्रिदशान् सर्वानृषींश्चैव तपोधनान्। गर्ग-मुनिं नमस्कृतय, नारदं कपिलं तथा। वशिष्ठं मुनि-शार्दूलं, विश्वामित्रं तु गोभिलम्। व्यासं कवि-मृचीकं तु, देवलं गौतम कृपम्। अगस्त्यञ्च पुलस्त्यश्च, दश-पुत्रं पराशरम्। अन्यान् विद्या-तपोयुक्तान्, वेद-शास्त्र-विशारदान्। तान् सर्वान प्रतिपत्त्याह, यज्ञ-रक्षां प्रकुर्वताम्। समुखश्चैक-दन्तश्च, कपिलो गज-कर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो, विघ्न-नाशो विनायकः। धूम-केतुर्गणाध्यक्षो, भाल-चन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि, यः पठेच्छृणुयादपि। विद्यारम्भे विवाहे च, प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे सङ्कटे चैव, विघ्नस्तस्य न जायते। शुक्लम्बर-धरं विष्णुं, शशि-वर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्न-वदनं ध्यायेत्, सर्व-विघ्नोपशान्तये ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विशेष लाभ के लिए निम्न मन्त्र पढ़े–

यत्र योगेश्वरः कृष्णो, यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।। ॐ वक्र–तुण्ड महा–भाग, सूर्य–कोटि–सम–प्रभ! अविघ्नं कुरु मे देव! सर्व–कार्येषु सिद्धिदम्।। ॐ सर्व–मङ्गल–माङ्गल्ये, शिवे! सर्वार्थ–साधिके! शरण्ये त्र्यम्बके गौरि! नारायणि! नमोऽस्तु ते।।

आचार्य, आत्मा और देवता के मध्य में ताम्रादि पात्र में अष्ट–दल बनाकर उसमें **'ॐ गं गणपतये नमो, गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि नमः'** कहकर आवाहन कर यथोपलब्ध सामग्री से पूजा कर 'बलि' दे। यथा–**'ॐ ग्लां ग्लीं ग्लूं ग्लैं ग्लौं ग्लः, अरिन्दम अरिं मर्दय मर्दय। एक–दन्त लम्बोदर दन्त–माला–मोदक–पात्र–हस्त! सर्व–विघ्नान् भञ्जय, बलिमिमं** (वामाचार में सामिष और दक्षिणाचार में निरामिष) **गृह्ण गृह्ण स्वाहा'**।

ताँबे के पात्र में सिन्दूर से तीन त्रिकोण यन्त्र लिखे। उनके बाहर गोलाकार मण्डल बनाए। मण्डल के बाहर अष्ट–दल–कमल बनाए। उसके बाहर चार द्वार से युक्त भू–पुर बनाए। वासव और ईशान के मध्य भू–पुर के बाहर एक प्रादेश लम्बा वृत्त लिखे। पश्चिम और नैर्ऋत्य–कोण के बीच पहले वृत्त के अनुसार वृत्त बनाए। फिर नव–ग्रहों के वर्ण के अनुसार नव–कोण को पूरा कर मध्य–स्थित त्रिकोण के दक्षिण–वाम भागों में क्रम से श्वेत–पीत का विधान करे। यन्त्र के पृष्ठ भाग को काला बनाए। आठों दिक्–पालों के रङ्गों के अनुसार अष्ट–दल–कमल बनाए। उसके बाद श्वेत, लाल, काले चूर्ण से भू–पुर के प्राकार को रँगे। भू–पुर के बाहर भूमि पर प्रादेश–प्रमाण ऊपर–नीचे क्रम से लाल–श्वेत दो वृत्त बनाए। यन्त्र के जोड़ की जगहों में अपनी इच्छा के अनुसार रङ्ग भरे। तदनन्तर यज्ञार्थ द्वार के आठों घटों में इन्द्रादि आठा दिक्–पालों का आवाहन कर पूर्व–कथित मन्त्रों से पूजन कर प्रत्येक को **बलि दे।**

सपत्नीक यजामन दिक्– पालों और उनके अस्त्रों का पूजन कर मण्डप से बाहर ईशान में ब्रह्मा की और नैर्ऋत्य में अनन्त की पूजा कर 'बलि' दे। उसके बाद तोरण–कलश में ध्रुव, पृथ्वी, वाचस्पति और विघ्नेश का आवाहन–पूजन कर उनको 'बलि' दे। यन्त्र के मध्य–कोण में सूर्य, सूर्य के ऊपर के कोण में पूर्व दिशा में चन्द्र, अग्नि–कोण में मङ्गल, दक्षिण दिशा में बुध, नैर्ऋत्य–कोण में बृहस्पति, पश्चिम दिशा में शुक्र, वायु–कोण में शनि, उत्तर दिशा में राहु और केतु–इस क्रम से इन सबकी ध्यान–पूर्वक मन्त्र से यथा–शक्ति पूजा कर इनको 'बलि' दे। इनके 'ध्यान' और 'मन्त्र' इस प्रकार है–

सूर्य– **चतुर्भुजं रविं ध्यायेत, पद्म–द्वय–वराभयैः।** मन्त्र – **ह्रीं तीग्म–रश्मये आरोग्यदाय स्वाहा।**

चन्द्रमा – **चिन्तयेच्छशिनं दान–मुद्राऽमृत–कराम्बुजम्।** मन्त्र– **क्लीं ह्रीं ऐं अमृत–करामृतं प्लावय प्लावय स्वाहा।**

मङ्गल – **कुजमीषत्कुब्ज–तनुं, हस्ताभ्यां दण्ड–धारिणम्।** मन्त्र – **ऐं ह्राँ ह्रीं सर्व–दुष्टान्**

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नाशय नाशय स्वाहा।

बुध- ध्यायेत् सोमात्मजं बालम्, भाल-लोलित-कुन्तलम्। मन्त्र - ह्रीं श्रीं सोम सर्वान् कामान् पूरय स्वाहा।

बृहस्पति - यज्ञ-सूत्रान्वितं ध्यायेत्, पुस्तकाक्ष-करं गुरुम्। मन्त्र - ॐ ऐं ॐ सुर-गुरो अभीष्टं यच्छ यच्छ स्वाहा।

शुक्र - एवं दैत्य-गुरूश्चापि काणं ध्यायेत्। मन्त्र - शाँ शीं शूँ शैं शौं शः।

शनि - खञ्ज ध्यायेत् शनैश्चरम्। मन्त्र- ह्राँ ह्राँ ह्रीं ह्रीं सर्व-शत्रून्विद्रावय विद्रावय मार्तण्डसूनवे नमः।

राहु- शिरस्तु राहुर्ध्यातव्यो, विकृतः क्रूर-चेष्टितः। मन्त्र - रां ह्रौं भ्रैं ह्रीं सोम-शत्रो शत्रून्विध्वंस राहवे नमः।

केतु - केतु कायः स ध्यातव्यो, विकृतः क्रूरचेष्टितः। मन्त्र- क्रूँ हूँ क्रै केतवे स्वाहा।

अष्ट-दल के आठों दिक्-पालों की पूजा करने के बाद भू-पुर तथा दोनों मण्डलों के बाहर पूर्व-ईशान और पश्चिम-नैर्ऋत्य वाले दोनों वृत्तों पर क्रम से ब्रह्मा और अनन्त की पूजा कर उन्हें 'बलि' दे।

यह पूजा प्रति-दिन यन्त्र लिखकर गणेश-पूजा की तरह नव-ग्रह, दिक्-पाल आदि का आवाहन कर करे। अथवा 'कात्यायनी तन्त्र' के अनुसार दूसरे प्रकार से नव-ग्रहों की पूजा करे। यथा-

कपड़े पर चावल से नौ कोष्ठ बनाकर यथा-शक्ति उपलब्ध वस्तुओं पूजन-कर 'बलि' दे। नव-ग्रहों के आवाहन, स्थापन और पूजन का क्रम इस प्रकार है-

सूर्य- ॐ नमो ग्रहाधिराजाय आदित्याय, आदित्यमावाहयामि स्थापयामि नमः।

चन्द्र - ॐ नमः कलाधिनाथाय चन्द्राय, चन्द्रमावाहयामि स्थापयमि नमः।

मङ्गल -ॐ नमो लोहिताङ्गाय अङ्गारकाय, अङ्गारकमावाहयामि स्थापयामि नमः।

बुध - ॐ नमो रोहिणेयाय सौम्याय, बुधमावाहयामि स्थापयामि नमः।

बृहस्पति - ॐ नमः सुराचार्याय गुरवे, गुरुमावाहयामि स्थापयामि नमः।

शुक्र - ॐ नमः काव्याय शुक्राय; भृगुमावाहयामि स्थापयामि नमः।

शनि - ॐ नमो ग्रह-चक्र-वर्तिने शनैश्चराय, मन्दमावाहयामि स्थापयामि नमः।

राहु - ॐ सैंहिकेयाय स्वर्भानवे, राहुमावाहयामि स्थापयामि नमः।

केतु - ॐ नमः क्रूर-रूपिणे केतवे, केतुमावाहयामि स्थापयामि नमः।

पूर्व-कथनानुसार पन्द्रह (१५) कोष्ठ बनाकर प्रति-दिन प्रतिपदा तिथि से लेकर पूर्णिमा तक आवाहन-पूजन कर 'बलि' दे।

इसके बाद लाल कपड़े पर चावल से चौंसठ (६४) कोष्ठ बनाकर उसमें यथा-क्रम ब्राह्मी आदि

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

योगिनियों का आवाहन करे और उनका पूजन कर उन्हें 'बलि' प्रदान करे। ६४ **योगिनियों के नाम आगे पूजन पद्धति में दिये गये हैं।**

चौंसठ कोष्ठों के अन्तर्गत एक विशेष कोष्ठ की रचना कर उसमें रुद्र का आवाहन-पूजन कर उन्हें 'बलि' दे। उनका मन्त्र यह है- **ॐ ह्सौं नमो भगवते रुद्राय अघोरास्त्राय हूँ फट् स्वाहा।**

ॐ ब्लूं ह्रीं श्रीं बृहत्कोशिनि इहावह इह तिष्ठ इह सन्निधेहि आधत्स्व वरं मे देहि मम सिद्धिं प्रयच्छ चतुः-षष्ठि-सहित-पीठे निवासं कुरु कुरु स्वाहा।।

ॐ फट् काल-रात्रि रुरुशिरो मध्यन्ते विन्दुसरा हूँ हूँ कालजंघे धम-धमिल शिवं च मूर्तिश्च कीर्तिः स्रां स्रीं स्रूं स्रः कृशाङ्गी क्षुभिहर दुरितं चामुण्डा प्रचण्डे हूँ।

पीठ के नैर्ऋत्य कोण में लाल वस्त्र पर रक्त-चन्दन-मिश्रित चावलों से बावन (५२) कोष्ठ बनाए। उनमें भैरव का आवाहन कर निम्न मन्त्रों से क्रम-पूर्वक पूजन करे। **आगे पूजन-विधि में नाम दिये गये है।**

पूजन के अन्त में निम्न मन्त्र पढ़कर **'बलि'** देकर **'प्रणाम'** करे -

ॐ नमो भगवते ताण्डव-भैरवाय एक-पञ्चाशत्-क्षेत्रपाल-सहिताय ब्रह्माण्ड-संरक्षकाय चन्द्र-मौलिने शूल-हस्ताय सर्वतो मां रक्ष रक्ष सर्व-विघ्नान्नाशय नाशय इमं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा।

अब लाल वस्त्र पर लाल चन्दन-युक्त चावलों से एक सौ आठ (१०८) कोष्ठ ईशान कोण में बनाए। उनमें भैरव के अष्टोत्तर-शत (१०८) नामों में से प्रत्येक से प्रत्येक कोष्ठ में गन्ध-पुष्पाक्षत से पूजा करे। **आगे पूजन-विधि में नाम दिये गये है।**

पूजन के अन्त में निम्न मन्त्र से 'बलि' दे-

'ॐ वाँ वीं वूँ वैं वौं वंः एह्येहि देवी-पुत्र, वटुक-नाथ, पिङ्गल-नेत्र, जटाभार-भास्वर, त्रि-नेत्र, ज्वाला-मुख! सर्व-विघ्नान्नाशय नाशय सर्वोपचार-सहितम् इमम् बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा।'

तब शुक्ल वस्त्र पर सिन्दूर आदि लाल रङ्ग से चौंसठ कोष्ठ (६४) बनाए। उनमें एक विशिष्ट कोष्ठ बनाए। उसमें कीड़े, मकोड़े, पतङ्ग आदि के स्थानों में रहने वाली चौंसठ शक्तियों के साथ सदा-शिव का गन्ध-पुष्प आदि से पूजन करे। यथा-

१. ॐ अघोरायै नमः, २. ॐ घोर-रूपायै नमः, ३. ॐ चण्डायै नमः, ४. ॐ चण्ड-प्रभायै नमः, ५. ॐ विद्युन्मालायै नमः, ६. ॐ सुपर्णाक्ष्यै नमः, ७. ॐ भीमायै नमः, ८. ॐ भीम-पराक्रमायै नमः, ९. ॐ श्वैत्यै नमः, १०. ॐ यक्षिण्यै नमः, ११. ॐ दुर्गायै नमः, १२. ॐ कर्म-मोचिन्यै नमः, १३. ॐ चण्डिकायै नमः, १४. ॐ विडालिन्यै नमः, १५. ॐ विजयायै नमः, १६. ॐ उन्मनायै नमः, १७. ॐ क्रोधायै नमः, १८. ॐ क्रोध-महा-सुरायै नमः, १९.

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ भद्र-काल्यै नमः, २०. ॐ रक्ताक्ष्यै नमः, २१. ॐ चक्षुष्मत्यै नमः, २२. ॐ पद्म-चक्षुष्कायै नमः, २३. ॐ आनन्दायै नमः, २४. ॐ सुभद्रायै नमः, २५. ॐ नन्दायै नमः, २६. ॐ यामलायै नमः, २७. ॐ अमृतायै नमः, २८. ॐ मालिन्यै नमः, २९. ॐ यश्यै नमः, ३०. ॐ यशोवत्यै नमः, ३१. ॐ लक्ष्यै नमः ३२. ॐ मेधायै नमः, ३३. ॐ कान्त्यै नमः, ३४. ॐ व्योम-मालायै नमः, ३५. ॐ शुभायै नमः, ३६. ॐ वृद्ध-मात्र्यै नमः, ३७. ॐ आह्लादिन्यै नमः, ३८. ॐ स्थापित्र्यै नमः, ३९. ॐ व्योम-मात्र्यै नमः, ४०. ॐ घनायै नमः, ४१. ॐ घर्घरायै नमः, ४२. ॐ रौद्रायै नमः, ४३. ॐ वामायै नमः, ४४. ॐ काल्यै नमः, ४५. ॐ सुनन्दिन्यै नमः, ४६. ॐ ऋद्ध्यै नमः, ४७. ॐ ज्येष्ठायै नमः, ४८. ॐ परा-शास्त्र्यै नमः, ४९. ॐ भून्मात्र्यै नमः, ५०. ॐ मान-नायिकायै नमः, ५१. ॐ घनिष्ठायै नमः, ५२. ॐ मेघ-नादिन्यै नमः, ५३. ॐ चक्र-वारायै नमः, ५४. ॐ शुचि-क्रियायै नमः, ५५. ॐ भारत्यै नमः, ५६. ॐ वीरहायै नमः, ५७. ॐ सौम्यै नमः, ५८. ॐ विज्ञायै नमः, ५९. ॐ ज्ञानदायै नमः, ६०. ॐ चण्डाक्ष्यै नमः, ६१. ॐ वामनायै नमः, ६२. ॐ दीर्घायै नमः, ६३. ॐ सर्वगायै नमः, ६४. ॐ सर्वतोमुख्यै नमः ।।

उक्त नामों से प्रत्येक की पूजा कर निम्न मन्त्र से 'बलि' दे-

ॐ नमो भगवति, महा-माये! एह्येहि इदं सामिषान्नं बलिं गृह्ण गृह्ण, सर्व-विघ्नान्नाशय नाशय, सर्व-शत्रून् भक्षय भक्षय, मारय मारय, मण्डल-मध्ये अवतर अवतर, महा-माये! भगवति! ब्रह्माणि! हूँ फट् स्वाहा।'

इसके बाद निम्न मन्त्र से चौंसठ शक्तियों की प्रार्थना करे-

कृमि-कीट-पतङ्गादि, सर्व-जीवेषु वासिनी।
चतुः-षष्ठि महा-वीर्या, व्यापयित्वा स्थिता जगत् ।।
पृथिव्यामथ याः काश्चिद्, वने तीर्थ-ग्रहादिषु।
देवतायतने रम्ये, दिग्विदिक्षु सु-संस्थिताः ।।
ब्रह्माण्डे व्योम-पाताले, क्षेत्रपाला निरन्तराः।
यजमान-गृहे रक्षा-पूजार्थं च नमो नमः ।।
पुत्र-पौत्र-धनं धान्यं, पूजितासु वर-प्रदा ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

श्रीदुर्गा-विधान

भगवान् शङ्कर ने भगवती दुर्गा के प्रस्तुत विधान को, 'रुद्र-यामल तन्त्र' में भगवान् विष्णु द्वारा प्रसन्न करने पर कहा है। यह विधान सर्वदा श्रेष्ठ है तथा सिद्ध है। इस विधान के अनुकूल उपासन करने पर साधक अपने उद्देश्य को अवश्य सिद्ध कर सकता है। महा-माया चण्डी कलि-युग में धर्मार्थ-काम-मोक्ष को देने वाली है, सर्व-शक्ति-मयी है, ब्रह्मा-विष्णु-महेश की उपास्या देवी है। ऐसी महा-माया को प्रणाम कर 'रुद्र-यामल' के चण्डी-विधान का वर्णन करता हूँ।

शङ्कर भगवान् ने विष्णु से कहा-जो साधक नित्य देवी की पूजा करता है, वह दीर्घायु, पुत्रवान् और सुख-भोक्ता होता है। वह समस्त विद्याओं का ईश्वर बन जाता है। वह समस्त विद्याओं का ईश्वर बन जाता है। वे देवी दिव्य-रूपा है, चण्डिका है, भक्त-वत्सला है। जो साधक भक्ति-संयुक्त होकर चण्डिका का पूजन करता है, लक्ष्मी उसकी किङ्करी बन जाती है। समस्त राजा लोग उसके वशीभूत हो जाते है। स्त्रियाँ भी उसके अनुकूल हो जाती है। जो साधक आदर के साथ नित्य भवानी शङ्करी का पूजन करते है, वे इस लोक में नाना प्रकार के सुखों के भोक्ता बन जाते है और देहावसान होने पर-ब्रह्म परमात्मा महा-माया से मिल जाते है, तद्-रूप बन जाते है।

जिस साधक पर दुर्गा प्रसन्न हो जाती है, वही साधक उपर्युक्त सुखों के भोक्ता बनते हैं और उनकी सम्पूर्ण कामनाएँ सिद्ध होती हैं और जिस साधक से दुर्गा रुष्ट-अप्रसन्न हो जाती हैं, उसको उन सुखों का अनुभव नहीं होता। जिस साधक के शुभ कार्यों में या किसी प्रकार के कार्यो में उत्तमोत्तम गौरी-पूजन होता है, उसकी साधना में किसी प्रकार के विघ्नादि-मोहोत्पातादि हों, उनका विनाश हो जाता है। जो साधक माङ्गल्य कार्यो में गणप और गौरी का पूजन करते हैं, उनके गृह में सर्वदा मङ्गल हुआ करता है। हे विष्णु! इसलिए सर्वेश्वरी महा-माया भगवती का त्रिकाल में भक्ति-संयुत होकर, नाना प्रकार के पुष्पों और और गन्धों से, विविध फलों से, नाना प्रकार के नैवेद्यों से, नाना प्रकार के दिव्य वस्त्रों से, नाना प्रकार की दिव्य स्तुतियों से और देवी के नाना प्रकार के सूक्तों से तथा नाना प्रकार के नाम-मन्त्रों से पूजन करे। देवी को निवेदित अन्न-नैवेद्य और हविः-शेष अन्न को प्रथमतः ब्राह्मणों को देकर फिर स्वयं खा लेना चाहिए। इसी प्रकार प्रति-दिन पूजन करने का विधान है। प्रतिमा के अभाव में पीठ-यन्त्र में देवी का पूजन करे।

माघ, चैत्र, आषाढ़, पौष या आश्विन मास की वैधी शुक्ल तिथि में पूजन प्रारम्भ करे। महा-पूजन का विधान करके मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा आदि सामग्री उपस्थित कर प्रथमतः गुरुदेव की पूजा करे। पश्चात् अतन्द्रित होकर चण्डिका-यज्ञ का प्रारम्भ करे। प्रातः काल स्वर्ण-रौप्य-ताम्र या मृत्तिका का यथा-प्राप्त कुम्भ स्थापित करे। पुराण, वेद, आगमेत्यादि के मन्त्रों से घट को तीर्थ-जल से पूरित करे। घटोपरि पात्र स्थापित करे। तदुपरि त्रि-शक्ति-महा-काली, महा-लक्ष्मी, महा-सरस्वती

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

का आवाहन-न्यास करे। **दर्भ का ब्रह्मा** निर्मित कर स्थापित करे। मृद्-गोमय से **मण्डप** को स्वच्छ पवित्र कर **तोरणादि** पुष्प-मालाओं से अलंकृत कर **वेदी** में धान्य बोकर उसे शनैः-शनैः जल से सिञ्चित करे। पाँच रङ्गों से **मण्डप** को सुशोभित करे। **मण्डप की शोभा** मौक्तिकादि भी लगाकर बढ़ानी चाहिए। इसके बाद साधक गुरु-मार्गानुसार यथा-विभव **देवी की त्रिकाल-पूजा** करे।

यदि साधक **त्रिकाल-पूजन** करने में अशक्त हो, तो वह **पञ्चमी** या **अष्टमी** या **चतुर्दशी** में या **नवमी** के दिन पूजन का विधान करे। **चण्डिका** की प्रसन्नता के लिए **रात्रि में जागरण** करे। ब्राह्मण को भोजन कराए। **कुमारिका-पूजन** करे, परमान्न भोजन कराए।

दुर्गा का थोड़ा भी पूजन कल्याणकांक्षी मनुष्यों के लिए सुखदायक होता है। जल, पुष्प, गन्ध आदि यथा-प्राप्त सामग्री से **भगवती का यजन-पूजन** करे। इस प्रकार जो साधक **भक्ति से पूजन** करे। इस प्रकार जो साकध **भक्ति से पूजन** और **चण्डी का पाठ** करता है, वह सम्पूर्ण कामनाओं को प्राप्त कर अन्त में **देवी का सायुज्य** प्राप्त करता है।

माघ-मास में देवी-पूजन का विधान :-

माघ-मास, शुक्ल **प्रतिपदा-युक्त द्वितीया** के दिन **कुम्भ-स्थापन** कर उसमें **भगवती नन्दा का पूजन** करे। **नवमी**-पर्यन्त उपचारों से प्रति-दिन पूजन करे। भगवती की प्रसन्नता के लिए **अखण्ड दीप** प्रदान करे। **देवी नन्दा** के पूजन का विधान **माघीय 'नव-रात्र'** में कहा गया है। **शिशिर के 'नव-रात्र'** में शुभ चाहने वाले **नन्दा देवी का पूजन** करें।

पूर्वाह्न में **देवी-घट** स्थापित करने वाला **वैश्वदेव** न करे, परन्तु अपराह्न में करने वाले को **वैश्वदेव** करना पड़ता है। साधक को यह ध्यान में रखना चाहिए कि **व्यतीपात-योग** न रहे। **व्यतीपात-योग** में **देवी-घट** कभी न स्थापित करे। **ऋक्ष-दग्धा तिथि** ग्राह्य भी है, परन्तु **व्यतीपात** सर्वथा वर्जित है। यदि व्यतीपात में कलश स्थापित करेगा, तो अग्नि-भय होगा। यदि **ऋक्ष-दग्धा तिथि व्यतीपात** हो तो **अभिजित् मुहूर्त** निकालकर उसी **अभिजित् में देवी-कलश** स्थापित करे। अज्ञान से अथवा मोह से **व्यतीपात** में जो **'कलश'** स्थापित करता है, वह महान् दोष का भागी होता है। देश का भी विनाश होता है और छत्र-भङ्ग होता है। दुर्भिक्ष होता है, संसार में अनावृष्टि होती है, पुत्र-पौत्रों का विनाश होता है, शरीर में व्याकुलता आ जाती है। इससे **भगवती का** कुम्भ उत्तरा-व्यतीपात को वर्जित करके स्थापित करे।

कुम्भ के आगे **स्तुति-पाठ,** जप, **वेद-पारायण, सप्तशती-पाठ, देवी-सूक्त** या पौराणिक अनेक प्रकार के **स्तुति-पाठ** करे। प्रतिदिन भक्ति में तत्पर होकर त्रिकाल-पूजन करे। **अष्टमी** के दिन **रात्रि में जागरण** करे और **'पञ्च तत्त्वों'** से **'महा-पूजा'** करे। **'महा-रात्रि'** में **हवन** और **बलिदान** करे। हे माधव! प्रातः-काल **देवी का पूजन** करे। ब्राह्मणों को भोजन कराए। **नव-कुमारिकाओं** को विविध प्रकार का भोजन कराए। स्वयं भी पारणा करे। **रात्रि में जागरण** करे। **दशमी** के दिन **अभिषेक** कर **मूर्ति**

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

का विसर्जन करे। विसर्जन से पूर्व मूर्ति को लेकर नगर, बाजार, ग्राम में भ्रमण कराए। भ्रमण कराकर **महा-नदी गङ्गा** में अथवा तड़ाग में या अगाध जलाशय में मूर्ति को स्थापित करे। यही पूजन **'नन्दोत्सव'** कहा गया है।

चैत्र-मास में देवी-पूजन का विधान :-

चैत्र-मास के **शुक्ल-पक्ष** में **रक्त-दन्तिका का पूजन** करना चाहिए। **रेवती** या **अश्विनी** में देवी-घट स्थापित करे। प्रति-दिन जवा-कुसुम, रक्त-करवीर, ब्रह्म-पुष्प या श्वेत-पुष्प-पल्लव से पूजा करे। **अहिर्बुध्न, वैधृति** और **अपराह्न में कुम्भ** स्थापित न करे। **देवी-स्थापन** के उद्देश्य से **कलश-स्थापन** होता है। **वैधृति में कुम्भ-स्थापन** करने से राज्य-नाश, चौर-भय, अग्नि-भय होता है। इसलिए **वैधृति-त्याज्य** है। **अपराह्न भी वर्जित** है। जो साधक मोह से **दुर्गा-कलश** को अपराह्न में स्थापित करते है, उन साधकों का गृह-भङ्ग होता है, यश की हानि होती है। इसलिए **अपराह्न त्याज्य** है।

विहित समय पर **कलश-स्थापन** कर प्रति-दिन **वेद-पाठादि, सप्तशती-पाठ, नाना प्रकार के स्तोत्रादिकों का पाठ** करना चाहिए। **'रक्त-दन्तिका'** के प्रसन्नार्थ **त्रिकाल-पूजन** करे। **अष्टमी** के दिन **रात्रि में जागरण** करे। **नवमी** के दिन पारणा करे। **दशमी** के दिन **कलश-विजर्सन** और **अभिषेक** करे। इस प्रकार **'रक्त-दन्तिकोत्सव'** करे। इससे साधक के आयुर्बल की वृद्धि होती है और पुत्र प्राप्त होता है। दैवी शक्ति उस साधक को मिलती है।

आषाढ़-मास में देवी-पूजन का विधान :-

आषाढ़ के **'नव-रात्र'** में **'शुम्भासुर-निवर्हिणी महा-सरस्वती'** को स्थापित करे। **प्रतिपद्** के प्रातः रजत-कुम्भ का स्थापन करे। उसका अभाव होने पर **ताम्र-कुम्भ** को पुष्प-चन्दन से चर्चित कर उसमें पूजा करे। प्रति-दिन श्वेत-पुष्प, चम्पा-पुष्प और श्वेत-वस्त्र से **'महा-सरस्वती' का पूजन** करे। ग्रीष्म के इस **'नव-रात्र'** में शीतल जल से शीतोपचार-कर्पूर, श्वेत चन्दन से पूजन और अष्टाङ्ग-धूप से धूपित करे। दीप दिखाकर नाना प्रकार के नैवेद्यों को चढ़ाए। **पुनर्वसु** या **पुष्य-** नक्षत्र में **शुभ कलश** को स्थापित करे।

रौद्र, व्याघात योगों में और **अपराह्न** में **कुम्भ-स्थापन** न करे। **रौद्र** में **कुम्भ** स्थापित करने से अति-वृष्टि, अन्न का विनाश, कुत्ते और सर्प द्वारा काटे जाने का भय होता है। इसलिए सर्व-दुष्ट समयों को त्याग कर **अभिजित् मुहूर्त में घट को स्थापित** करे।

दुर्गा-मख में प्रति-दिन **शुम्भासुर-निवर्हणी महा-सरस्वती** का **पूजन-स्तुति-पाठादि** सब पूर्ववत् साधक करे। इस प्रकार **महा-सरस्वती** को प्रति-वर्ष स्थापित कर पूजन करे। इससे साधक के गृह में सदा कल्याण होता है और लक्ष्मी अचला होकर रहती है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आश्विन-मास में देवी-पूजन का विधान :-

भगवान् शङ्कर विष्णु से बोले-**आश्विन शुक्ल पक्ष** के **'नव-रात्र'** में मन को समाहित कर **त्रिमूर्ति-रूपिणी सावरणा दुर्गा** को स्थापित कर पूजन करे।

विष्णु ने **भगवान् शङ्कर** से पूछा- हे देव-देव महा-देव! हमारे मन में सन्देह है, इससे मुक्त कीजिए। आप चराचर के स्वामी, संसार के बनाने वाले, पालन करने वाले और संहार करने वाले है। आप किस **देवी की स्तुति-पूजा** और किस **परम मन्त्र का जप-तप** और **ध्यान** किया करते है? **हे शम्भो!** आपसे बड़ा और कौन है?

भगवान् शङ्कर ने उत्तर दिया-हे सुर-श्रेष्ठ! आपने जो पूछा है, उसे अभी तक मैंने **षण्मुख** से भी गुप्त रखा है। वही रहस्य मैं आपसे कह रहा हूँ। पूर्व-काल मे युग-क्षय होने पर लोकों को बनाने के लिए **गुण-त्रय-मयी चिद्-रूपा** ने मुझे उत्पन्न किया। मुझसे आप उत्पन्न हुए। आपसे लोक-कर्ता **ब्रह्मा** उत्पन्न हुए। तब **ब्रह्मा** ऋषि बने, **विष्णु** ऋषि बने और मैं भी ऋषि बना।

तीनों ऋषियों को देखकर **ब्रह्म-रूपिणी चेतना महा-शक्ति** ने मेरा आलिङ्गन किया। कारण से कार्य होता है। उस **महा-माया** के इच्छानुसार परमा-शक्ति **'इच्छा'** के रहस्य-रूप में सङ्गम होने से **वाग्-शब्द-ब्रह्म-मयी-माया** उत्पन्न हुई। वही **जगन्माता** है, **सरस्वती** है, **वैष्णवी** है, **रौद्री** है, **शिवा** है, **क्षमा** है, वही **कौमारी** है, **पार्वती** है, **सर्व-मङ्गल-दायिनी** है। **सर्व-शक्ति की आद्या महा-लक्ष्मी** है, वही **शिवात्मिका** भी है।

हे **विष्णु!** उसी ने इस विश्व को बनाया है। इस अनाधार विश्व को उसी ने धारण भी किया है। वही **महा-माया** इस विश्व का पालन भी करती है। उसी **महा-माया** में यह विश्व का पालन भी करती है। उसी **महा-माया** में यह विश्व लय हो जाता है। वही भगवती **पूजन-ध्यान** करने से प्रणतों को सर्व-प्रकार का सुख देती है। **आराधन-स्तुति** करने से सर्व प्रकार का मङ्गल करती है। उस **महा-माया** के अनुग्रह से मैंने परम पद को प्राप्त किया है।

हे **विष्णु!** उसी **महा-माया** के **महा-लक्ष्मी-रूप** का मैं निरन्तर भजन करता हूँ। प्रसन्न होकर **महा-लक्ष्मी** वर-प्रदा होती है। मेरे ध्यान करने पर उस सुप्रीता ने मुझमें प्रवेश किया। उस समय मैंने **काशी** ऐसे महत्त्व-पूर्ण स्थान को प्राप्त किया। उसी की प्रसन्नता से मैंने चराचर जगत् को बनाया है। सुर, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, मनुष्य, समुद्र, पर्वत, वन, ग्रह-राशि, नक्षत्र, सूर्य-मण्डल, चतुर्विध प्राणि-जाति, पञ्च-भूत-समन्वित इस विश्व की मैंने रचना की है।

शङ्कर का यह वचन सुनकर **विष्णु** बोले-भगवान्! मैं आपका भक्त हूँ। आपका दास हूँ। मुझ पर प्रसन्न होकर आप उस **महा-माया** के सुर-दुर्लभ माहात्म्य का वर्णन करए। हे देव! मुझे सुनने की इच्छा है। जगत् के हित के लिए आप उसका वर्णन करिए।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शङ्कर बोले–हे **विष्णु**, सुनो! **महा–देवी के उत्तमोत्तम माहात्म्य का वर्णन** करता हूँ, जिसे श्रवण करने पर साधक सर्व–प्रकार के पापों से छूट जाते है। विश्व की आद्या जो **महा–लक्ष्मी** मेरी माता है, वही **महा–माया** कार्य–भेद से नाना प्रकार के रूप धारण करती है। **चतुर्भुजा महा–लक्ष्मी** इस संसार में व्याप्त है। **वीजापूर, गदा, चर्म, सीधु–पात्र** को वह धारण किए है। **नाग–लिङ्ग, योनि** को भी धारण किए है। वह **अपरा–सुन्दरी** है। हिरण्य–वर्ण के समान **रुचिरा** है। सुवर्ण का मुकुट धारण किए है। अपने शरीर के प्रकाश से त्रैलोक्य को प्रकाशित करती है।

तीनों लोकों को शून्य देखकर केवल **तमो–गुण** से उसने रूपान्तर धारण किया है। नव–मेघ के समान कृष्ण वर्ण, अञ्जन के समान श्याम–वर्णवाली मत्त–मातङ्ग–गामिनी **महा–काली** को **महा–लक्ष्मी** ने देखा। वह **चार भुजावाली** है। **खड्ग, पाश, शिर, खेटक** को धारण किए है और **मुण्ड–माला** कण्ठ में पहने है। मूर्ध्नि में **सहस्र सर्पों** को धारण किए है, **त्रैलोक्य–सुन्दरी** है। इस अवस्था में **महा–काली** को देखकर **महा–लक्ष्मी** ने कहा–''हे **चाभुण्डे!** तेरा नाम–करण करती हूँ। तेरे नाम **महा–माया, महा–काली, महा–मारी, क्षुधा, तृषा, निद्रा, कृष्णा, एक–वीरा, काल–रात्रि, दुरत्यया** है। हे **कालिके,** तेरे नामों को जानकर जो साधक कार्य करते हैं, वे सम्पूर्ण कामनाओं को प्राप्त करते है।''

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

संक्षिप्त श्रीदुर्गा-पूजाङ्ग होम-विधि

अपने दाहिने एक हाथ लम्बी-चौड़ी तथा एक अङ्गुल ऊँची बालुका की **'वेदी'** बनाए। **'वेदी'** को **'मूल-मन्त्र'** पढ़कर देखे। **'फट्'** मन्त्र पढ़कर **'पञ्च-पात्र'** के पवित्र जल से **'वेदी'** का **'प्रोक्षण'** करे। दुबारा **'फट्'**-मन्त्र पढ़कर **'कुश'** के अग्र भाग से **'वेदी'** का **'ताड़न'** करे। **'हुँ'**-मन्त्र पढ़कर एक मूठी जल द्वारा **'वेदी'** का **'सिञ्चन'** करे।

फिर **'अग्नि'** लाए। **'अग्नि'** का एक अङ्गार-**'मूलं हूं फट् क्रव्यादेभ्यः'**- यह मन्त्र पढ़कर **'नैऋत्य कोण'** क्रव्याद का अंश समझकर गिरा दे। तब 'अग्नि' को 'मूल-मन्त्र' पढ़ते हुए **'वेदी'** पर रखे और **'समिधा'** रखकर अग्नि प्रज्वलित कर यह मन्त्र पढ़े -

ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे, जातवेदं हुताशनम्।
सुवर्ण-वर्णमनलं, ममीद्धः सर्वतो मुखम्।।

इसके बाद दाहिने हाथ में जल लेकर **'सङ्कल्प'** पढ़े। **'सङ्कल्प'** के अन्त में **'श्रीदुर्गा-पूजाङ्ग होमं करष्ये'** कहकर हाथ का जल छोड़े।

अब **'मूल-मन्त्र'** से **'प्राणायाम'** कर **'विनियोग-ऋष्यादि न्यास'** करे और **'भवगती दुर्गा का ध्यान'** करे।

फिर 'मूल-मन्त्र' पढ़कर 'अग्नि' के ऊपर जल छिड़के। 'अग्नि' का पञ्चोपचार से पूजन करे तथा भगवती दुर्गा का अग्नि-रूप में ध्यानकर पञ्चापचारों से पूजन करें।

अब **'अग्नि'** में **'घृत'** या **'पायस'** की आहुतियाँ निम्न मन्त्रों से प्रदान करे- **ॐ स्यूं हिरण्यायै स्वाहा। ॐ ष्यूं गगनायै स्वाहा। ॐ श्यूं रक्तायै स्वाहा। ॐ व्यूं कृष्णायै स्वाहा। ॐ ल्यूं सुप्रभायै स्वाहा। ॐ रयूं बहु-रूपायै स्वाहा। ॐ य्यूं अति-रक्तायै स्वाहा। ॐ भूः स्वाहा। ॐ भुवः स्वाहा। ॐ स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा।**

फिर-**'मूलं श्रीदुर्गायै स्वाहा दुर्गाया इदं'**- यह मन्त्र तीन बार पढ़कर तीन आहुतियाँ दे।

इसके बाद- १. **'ॐ गुरवे स्वाहा'**, २. **'ॐ परम-गुरवे स्वाहा'**, ३. **'ॐ परात्पर गुरवे स्वाहा'**, ४. **'ॐ परमेष्ठि-गुरवे स्वाहा'**- इन चार मन्त्रों से चारों गुरुओं के लिए और १. **'ॐ रत्यै स्वाहा'**, २. **'ॐ प्रीत्यै स्वाहा'**, ३. **'ॐ मनोभवायै स्वाहा'**- इन तीन मन्त्रों से तीन शक्तियों को आहुतियाँ प्रदान करे।

फिर इष्ट-देवता के षडङ्गों के लिए छः आहुतियाँ दे-**हां हृच्छक्त्यै स्वाहा। हीं शिरः-शक्त्यै स्वाहा। हूं शिखा-शक्त्यै स्वाहा। हैं कवच-शक्त्यै स्वाह। हौं नेत्र-शक्त्यै स्वाहा। हः अस्त्र-शक्त्यै स्वाहा।**

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इसके बाद कामदेवों को आहुतियाँ प्रदान करे। यथा-'ॐ मनोभवाय स्वाहा, ॐ मकर-ध्वजाय स्वाहा, ॐ कन्दर्पाय स्वाहा, ॐ मन्मथाय स्वाहा, ॐ कामदेवाय स्वाहा।'

तब काम-देवों की शक्तियों को आहुतियाँ प्रदान करे। यथा-ॐ द्राविण्यै स्वाहा, ॐ क्षोभिण्यै स्वाहा, ॐ आकर्षिण्यै स्वाहा, ॐ वशीकरिण्यै स्वाहा, ॐ सम्मोहिन्यै स्वाहा'।

फिर आठ शक्तियों को आहुतियाँ प्रदान करे- १. ॐ सुभगायै स्वाहा, २. ॐ भगायै स्वाहा, ३. ॐ भग-सर्पिण्यै स्वाहा, ४. ॐ भग-मालायै स्वाहा, ५. ॐ अनङ्गायै स्वाहा, ६. ॐ अनङ्ग-कुसुमायै स्वाहा, ७. ॐ अनङ्ग-मेखलायै स्वाहा, ८. ॐ अनङ्ग-मदनायै स्वाहा।

तब अष्ट-मातृकाओं को आहुतियाँ दे- १. ॐ ब्राह्मयै स्वाहा, २. माहेश्वर्यै स्वाहा, ३. ॐ कौमार्यै स्वाहा, ४. ॐ वैष्णव्यै स्वाहा, ५. ॐ वाराह्यै स्वाहा, ६. ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा, ७. ॐ चामुण्डायै स्वाहा, ८. ॐ महा-लक्ष्म्यै स्वाहा।

आठ भैरवों को आहुतियाँ दे - १. ॐ असिताङ्ग-भैरवाय स्वाहा, २. ॐ रुरु-भैरवाय स्वाहा, ३. ॐ चण्ड-भैरवाय स्वाहा, ४. ॐ क्रोध-भैरवाय स्वाहा, ५. उन्मत्त-भैरवाय स्वाहा, ६. ॐ कपालि-भैरवाय स्वाहा, ७. ॐ भीषण-भैरवाय स्वाहा, ८. ॐ संहार-भैरवाय स्वाहा।

आठ पीठों को आहुतियाँ दे - १. ॐ काम-रूप-पीठाय स्वाहा, २. ॐ मलय-पीठाय स्वाहा, ३. ॐ कुल-नाग पीठाय स्वाहा, ४. ॐ कुलान्त-पीठाय स्वाहा, ५. ॐ चौहार-पीठाय स्वाहा, ६. ॐ जालन्धर-पीठाय स्वाहा, ७. ॐ उड्डीयन-पीठाय स्वाहा, ८. ॐ देवी-कोट पीठाय स्वाहा।

दस भैरवों को आहुतियाँ दे - १. ॐ हेतुकाय स्वाहा, २. ॐ त्रिपुरान्तकाय स्वाहा, ३. ॐ वेतालाय स्वाहा, ४. ॐ अग्नि-जिह्वाय स्वाहा, ५. ॐ कालान्तकाय स्वाहा, ६. ॐ कपालाय स्वाहा, ७. ॐ एक-पदाय स्वाहा, ८. ॐ भीम-रूपाय स्वाहा, ९. मलयाय स्वाहा, १०. ॐ हाटकेश्वराय स्वाहा।

दस दिक्-पालों को आहुतियाँ दे - १. ॐ इन्द्राय स्वाहा, २. ॐ अग्नये स्वाहा, ३. ॐ यमाय स्वाहा, ४. ॐ निर्ऋताय स्वाहा, ५. ॐ वरुणाय स्वाहा, ६. ॐ वायवे स्वाहा, ७. ॐ कुबेराय स्वाहा, ८. ॐ ईशानाय स्वाहा, ९. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, १०. ॐ अनन्ताय स्वाहा।

दिक्-पालों के आयुधों को आहुतियाँ दे - १. ॐ वज्राय स्वाहा, २. ॐ शक्त्यै स्वाहा, ३. ॐ दण्डाय स्वाहा, ४. ॐ खड्गाय स्वाहा, ५. ॐ पाशाय स्वाहा, ६. ॐ अंकुशाय स्वाहा, ७. ॐ गदायै स्वाहा, ८. त्रिशूलाय स्वाहा, ९. ॐ पद्माय स्वाहा, १०. ॐ चक्राय स्वाहा।

बलि-देवताओं को आहुतियाँ दे - ॐ वटुकाय स्वाहा, ॐ योगिन्यै स्वाहा, ॐ क्षेत्रपालाय स्वाहा, ॐ गणेशाय स्वाहा, ॐ वसवे स्वाहा, ॐ सूर्याय स्वाहा, ॐ शिवाय स्वाहा, ॐ भूताय

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्वाहा।

अन्त में 'मूल-मन्त्र' के अन्त में 'स्वाहा' लगाकर २५ आहुतियाँ प्रदान कर चार व्याहृतियों की आहुतियाँ दे-ॐ भूः स्वाहा, ॐ भुवः स्वाहा, ॐ स्वः स्वाहा, ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा।

फिर २५ बार 'मूल-मन्त्र' का 'जप' करे। 'जप' का फल देवता को अर्पित कर देवता के हृदय में पुनः आ विराजने की भावना कर निम्न मन्त्र से 'भस्म' का 'वन्दन' करे -

ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने कश्यपस्य त्र्यायुषं।
यद्-देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषं॥

तब निम्न मन्त्र पढ़कर 'अग्नि' का विसर्जन करे-

ॐ भो भो वह्ने महा-शक्ते! सर्व-काम-प्रसाधक!
कर्मान्तरेऽपि सम्प्राप्ते, सान्निध्यं कुरु सादरम्॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। पाठ हेतु निर्देश ।।

पाठ प्रेमपूर्वक भगवती का ध्यान करते हुए करे तथा निम्न बातों का ध्यान रखें –

पाठक के गुण :-

माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः।
धैर्यं लयसमर्थं च षडेते पाठाका गुणाः।।

मीठा स्वर, अक्षरों का स्पष्ट उच्चारण, पदों का विभाग, उत्तम स्वर, धीरता, एक लय के साथ बोलना – ये सभी एक श्रेष्ठ पाठक के गुण है।

पाठक के दोष :-

गीती शीघ्री शिरः कम्पी तथा लिखितपाठकः।
अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षडेते पाठकाधमाः।।

जो पाठ करते समय रागपूर्वक गायें, उच्चारण में जल्दबाजी करें, सिर हिलायें, अपने हाथों से लिखी हुई पुस्तक के द्वारा पाठ करें, दुर्गासप्तशती का भावार्थ नहीं जानता हों और पाठ को अधूरा ही कण्ठस्थ करता हो, वह पाठक अधम माना गया है।

पाठ में विश्राम :-

यावन्न पूर्यतेऽध्यायस्तावन्न विरमेत्पठन्।
यदि प्रमादादध्याये विरामो भवति प्रिये।
पुनरध्यायमारभ्य पठेत्सर्वं मुहुर्मुहुः।।

जब तक अध्याय की पूर्ति न हो, तब तक बीच में पाठ बन्द न करें, यदि प्रमावश अध्याय के बीच में पाठ का विराम हो तो पुनः प्रति बार पूरे अध्याय का पाठ करें।

उच्चारण की विधि :-

अज्ञानात्स्थापिते हस्ते पाठे ह्यर्धफलं ध्रुवम्।
न मानसे पठेत्स्तोत्रं वाचिकं तु प्रशस्यते।।

अज्ञानवश पुस्तक हाथ में लेकर पाठ करने का फल आधा ही होता है। स्तोत्र का मानसिक नहीं वाचिक होना चाहिए। वाणी से स्पष्ट उच्चारण ही उत्तम माना गया है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पाठ की विधि :-

उच्चैः पाठं निषिद्धं स्यात्त्वरां च परिवर्जयेत्।
शुद्धेनाचलितेन पठितव्यं प्रयत्नतः ।।

बहुत जोर-जोर से बोलना तथा पाठ में उतावली करना वर्जित है। यत्नपूर्वक शुद्ध एवं स्थिर चित्त से पाठ करना चाहिए।

कण्ठस्थपाठाभावे तु पुस्तकोपरि वाचयेत्।
न स्वयं लिखितं स्तोत्रं नाब्राह्मणलिपिं पठेत् ।।

यदि पाठ कण्स्थ न हो तो पुस्तक से करें। अपने हाथ से लिखे हुए अथवा ब्राह्मणेतर पुरुष के लिखे हुए स्तोत्र का पाठ न करें।

पुस्तके वाचनं शस्तं सहस्रादधिकं यदि।
ततो न्यूनस्य तु भवेद् वाचनं पुस्तकं विना ।।

यदि एक सहस्र से अधिक श्लोकों या मन्त्रों का ग्रन्थ हो तो पुस्तक देखकर ही पाठ करें, इससे कम श्लोक हो तो उन्हें कण्ठस्थ करके बिना पुस्तक के भी पाठ किया जा सकता है।

पूजन में कन्याओं की संख्या का प्रमाण -

एकां कन्यां भोजयित्वा एश्वर्यं लभते नरः।
कन्याद्वयं भुक्तिमुक्तित्रिवर्गफलदत्रयम्॥
चतुष्टयं राज्यदं च सर्वकामफलप्रदम्।
विद्याप्रदं पञ्चकं च षट्कं षट्कर्मसिद्धिप्रदम्॥
सप्तभिर्लभते राज्यमष्टाभिर्गुणसंपदः।
नवभिः पृथिवीशः स्यात्कुमारीभिश्च पूजनात्॥

भावार्थ :- (जयसिंहकल्पद्रुम) एक कन्या को भोजन कराने से ऐश्वर्य की प्राप्ति, दो कन्याओं को भोजन कराने से भुक्ति व मुक्ति की प्राप्ति, तीन कन्याओं को भोजन कराने से त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ, काम) की प्राप्ति, चार कन्याओं को भोजन कराने से राज्यसुख की प्राप्ति व सभी कामनाओं की सिद्धि, पाँच कन्याओं से विद्याप्राप्ति, छः कन्याओं से षट्कर्म सिद्धि, सात कन्याओं से राज्य प्राप्ति, आठ से गुण व सम्पत्ति तथा नौ कन्याओं को भोजन कराने व पूजन करने से व्यक्ति पृथ्वी का स्वामी अर्थात् राजा तुल्य हो जाता है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कन्याओं की संज्ञा -

कुमारिका द्विवर्षा तु, त्रिवर्षा च त्रिमूर्तिनी।
चतुर्वर्षा तु कल्याणी, पञ्चवर्षा तु रोहिणी॥
षड्वर्षा तु भवेत्काली, सप्तवर्षा तु चण्डिका।
अष्टवर्षा शाम्भवी तु दुर्गा तु नवभिः स्मृताः॥
दशवर्षा सुभद्रेति नामभिः परिकीर्तिताः।
अत ऊर्ध्वं तु या कन्या सर्वकार्येषु वर्जिता॥

भावार्थ :- (जयसिंहकल्पद्रुम) दो वर्ष की कन्या को कुमारिका, तीन वर्ष की कन्या को त्रिमूर्ति, चार वर्ष की कन्या को कल्याणी, पाँच वर्ष की कन्या रोहिणी, छः वर्ष की काली, सात वर्ष की चण्डिका, आठ वर्ष की शाम्भवी, नौ वर्ष की कन्या दुर्गा तथा दस वर्ष तक उम्र की कन्या सुभद्रा होती है। दस वर्ष की आयु के बाद कन्या पूजनादि सभी कार्यों में वर्जित होती है।

पूजन में कन्या की जातिविशेष से लाभ -

ब्राह्मणीं सर्वकार्येषु जयार्थे नृपवंशजाम्,
लाभार्थं वैश्यवंशोत्थां सुतार्थे शूद्रवंशजाम्,
दारुणे चान्त्यजातीनां पूजयेद्विधिना नरः॥

भावार्थ :- (जयसिंहकल्पद्रुम) सभी कार्यों में सिद्धि की कामना से ब्राह्मणी कन्या, जय की भावना से क्षत्रिय (राजवंश से उत्पन्न) कन्या, धनलाभ के लिए वैश्यवंश की कन्या, पुत्र प्राप्ति की कामना हेतु शूद्रवंश की कन्या, दारुणकर्म (मारण, उच्चाटन, विद्वेषण) हेतु अन्त्य जाति की (चाण्डाल, यवन आदि से उत्पन्न) कन्या का पूजन करना चहिए।

अशौच में देवी पूजन -

सूतके पूजनं देव्या दानं चैव विशेषतः।
देवीमुद्दिश्य कर्त्तव्यं तत्र दोषो न विद्यते॥

भावार्थ :- (जयसिंहकल्पद्रुम) सूतक (जनन शौच, जन्म से दस दिन तक) में देवी का पूजन व दान देवी की आराधना मानकर कर सकते है, इसमें दोष नहीं लगता है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अशौच में विशेष व्यवस्था -

शिवविष्णवर्चने दीक्षा यस्य चाग्निपरिग्रहः।
ब्रह्मचारीयतीनां च शरीरे नास्ति सूतकम्।।1।।
उपासने तु विप्राणामङ्गशुद्धिः प्रजायते।
सूतके मृतके वापि न त्याज्यं शिवपूजनम्।।2।।

भावार्थ :- (जयसिंहकल्पद्रुम) भगवान शिव के पूजन में दीक्षित, अग्निहोत्री, ब्रह्मचारी और सन्यासियों को शरीर में सूतक नहीं लगता है। विप्रों की उपासना से अङ्गशुद्धि हो जाती है। सूतक व मृतकशौच (मृत्युदिवस से सपिण्डीकरण तक) में भी शिवपूजन का त्याग नहीं करना चाहिए।

किन नक्षत्रों में नवरात्रों में क्या करे ? -

मूलेषु स्थापनं देव्याः पूर्वाषाढ़ासु पूजनम्।
उत्तरासु बलिं दद्याच्छ्रवणेन विसर्जयेत्।।
मूलस्याद्यपादे आवाहनमिति शिष्टाः।
श्रवणाद्यपादे च विसर्जनम्।।
आदिभागे निशायां तु श्रवणस्य यदा भवेत्।
सम्प्रेषणं तदा देव्या दशम्यां च महोत्सवः।।

भावार्थ :- (जयसिंहकल्पद्रुम) मूल नक्षत्र में देवी की स्थापना, पूर्वाषाढ़ा में पूजन, उत्तराषाढ़ा में बलिदान, श्रवण में विसर्जन करना चाहिए। उसमें भी मूल के प्रथम चरण में आह्वान और श्रवण के अन्तिम चरण में विसर्जन करना चाहिए। रात्रि के प्रथमभाग में श्रवण नक्षत्र होने पर देवी का सम्प्रेषण (विसर्जन) करके दशमी में महोत्सव करना चाहिए।

अष्टमी का पूजन रात्रि में ही करे -

अष्टम्यां विशेषतौ रात्रौ पूजा विहिता।
निशायां पूजिता देवी वैष्णवी पापनाशिनी।।
कन्यासंस्थे रवावीषे या शुक्ला तिथिरष्टमी।
तस्यां रात्रौ पूजितव्या महाविभवविस्तरैः।।

भावार्थ :- (जयसिंहकल्पद्रुम) नवरात्रों में अष्टमी तिथि का पूजन रात्रि में ही करने का विशेष महत्व है। रात्रि में पूजित वैष्णवी देवी समस्त पापों का नाश करती है। कन्या राशि में सूर्य के

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्थित होने पर शुक्ल पक्ष की अष्टमी में रात्रिकाल में अनेक प्रकार की पूजन सामग्री से विस्तार पूर्वक देवी का पूजन करना चाहिए।

नवरात्र में अष्टमी, नवमी व दशमी के कर्म –

अष्टम्यां जागरं कुर्यान्नवम्यां पारणं तथा।
दशम्यां च विसर्गः स्यात् ।।

भावार्थ :- (जयसिंहकल्पद्रुम) नवरात्रों में अष्टमी तिथि को जागरण, नवमी को व्रत समाप्ति (पारणा), दशमी तिथि में विसर्जन करना चाहिए।

देवी की मूर्ति किस धातु की हो ? –

दारुजा कामदा प्रोक्ता सौवर्णी भुक्तिमुक्तिदा।
राजती स्वर्गसुखदा ताम्री ह्यायुः विवर्धनी।।
कांस्यां बह्वापदं हन्ति रैतिकी शत्रुनाशिनी।
सर्वभोगप्रदा शैली स्फटिकी मोक्षकारिका।।
महाभोग्यप्रदा ख्याता मृण्मयी खलु शोभना।।

भावार्थ :- (जयसिंहकल्पद्रुम) काष्ठ की मूर्ति से कामनाओं की पूर्ति, स्वर्ण की मूर्ति से मोक्ष, चाँदी की मूर्ति से स्वर्गतुल्य सुख, ताँबे की मूर्ति से आयु की वृद्धि, काँसे की मूर्ति से बहुत आपत्तियों का नाश, रैतिकी (पारद) की मूर्ति से शत्रुनाश, पत्थर की मूर्ति से सर्वविध भोग प्राप्ति, स्फटिक की मूर्ति का पूजन करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है तथा मिट्टी की मूर्ति भोग की वस्तुएँ प्रदान करने वाली होती है।

द्रोण पुष्प का महत्व –

ब्रह्मविष्णुशिवादीनां द्रोणपुष्पं सदा प्रियम्।
तत्ते दुर्गे प्रयच्छामि सर्वकामार्थसिद्धये।।

भावार्थ :- (जयसिंहकल्पद्रुम) ब्रह्मा, विष्णु और शिव आदि को द्रोणपुष्प अत्यन्त प्रिय है। यह पुष्प दुर्गा को सर्वकामना और अर्थ की सिद्धि के लिए प्रदान करना चाहिए।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ब्राह्मण को देवताओं के सम्मुख ही दक्षिणा देवे –

देवे दत्वा तु दानानि देवे दद्याच्च दक्षिणाम्।
तत्सर्वं ब्राह्मणे दद्यादन्यथा विफलं भवेत्॥

भावार्थ :– (जयसिंहकल्पद्रुम) देवताओं के सम्मुख ही दान एवं दक्षिण देनी चाहिए। ब्राह्मण को यदि किसी भी प्रकार का दान-दक्षिणा देना हो तो देवताओं के सम्मुख ही देवे अन्यथा वह दान-दक्षिण निष्फल हो जाती है।

दीप निर्वाण का दोष –

नैव निर्वापयेद्दीपं देवार्थमुपकल्पितम्।
दीपहर्ता भवेदन्धः काणो निर्वापको भवेत्।।

भावार्थ :– (जयसिंहकल्पद्रुम) देवताओं के पूजन में स्थित दीपक को शान्त (बुझाना) या हटाना नहीं चाहिए क्योंकि दीपक को हरण करे वाला व्यक्ति अन्धा हो जाता है तथा उसे बुझाने वाला व्यक्ति काणा हो जाता है।

हवन कुण्ड में विकार आने पर उसका फल –

खातेऽधिके भवेद्रोगी होते धेनुधनक्षयः।
वक्रं कुण्डं तु सन्तापो मरणं भिन्नमेखले।।
मेखलारहितो शोको इष्टिकाधिक्ये वित्तसंशयः।
भार्या विनाशनं प्रोक्तं कुण्डे योन्याः विना कृते।।
अपत्यध्वंसनं प्रोक्तं कुण्डं यत्कण्ठवर्जितम्।
तदेवं कुण्डनिर्माणस्यातीवदुष्करतया।।
न्यूनाधिकतायाञ्च दोषश्रवणात्कुण्डस्थाने स्थण्डिलमेव कुर्यात् ।।

भावार्थ :– माप से अधिक गहरे कुण्ड में हवन करने से मनुष्य रोगी होता है, होता के दोषयुक्त होने से धेनु (गाय) और धन का क्षय, टेढ़ा कुण्ड सन्तापकारक, मेखला से भिन्न आकृति मरणकारक, मेखला से रहित होने से शोककारक, इष्टिका (ईंट) की अधिकता से वित्त का संशय, कुण्डयोनि के न होने से भार्या का विनाश तथा कण्ठ से वर्जित कुण्ड सन्तान का ध्वंस (विनाश) कारक फल देता है अतएव कुण्डनिर्माण मे अनेक प्रकार के दोषों की सम्भावना होने के कारण न्यून और अधिकता दोनों प्रकार के दोष श्रवण से स्थण्डिल (वेदी) का निर्माण अधिक श्रेयस्कर है

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इसलिए शास्त्रों में उल्लेख हैं :- **"नास्ति यज्ञसमो रिपुः"** ।

इच्छित कार्य किस देवता की आराधना से पूर्ण होगा ? –

सभी जानते हैं कि शासन व्यवस्था में अलग-अलग विभाग होते हैं, जैसे पुलिस विभाग, कोर्ट, चुंगी विभाग आदि, यदि जज के यहाँ रिपोर्ट भूल से करे तो जज यही कहेगा कि पुलिस थाने में रिपोर्ट करो। तात्पर्य यह हैं कि जैसे यहाँ अलग-अलग कार्य विभाग हैं उसी प्रकार देवताओं पर भी अलग-अलग कार्य का उत्तरदायित्व हैं, अपना जो अभीष्ट कार्य हैं उसी के अधिकारी देवता की आराधना से पूर्ण होगा। **श्रीमद्भागवत द्वितीय स्कन्ध के तृतीय अध्याय** में लिखा हैं कि जो प्राणी अपना सत्य बढ़ाना चाहता हैं उसे ब्रह्माजी की पूजा करनी चाहिए, इन्द्रियों को पुष्ट करने के लिए इन्द्र की पूजा करे, तेजवृद्धि के लिए अग्नि, धनवृद्धि के लिए लक्ष्मी की, अन्न, धन, वाहन के इच्छुक व्यक्ति को अष्टमुनियों की, यौनसुख हेतु रुद्र की, बलप्राप्ति के लिए इलादेवी की, सुन्दरता के लिए गन्धर्व की, गुणवती स्त्री की प्राप्ति के लिए उर्वशी अप्सरा की, यशकीर्ति के लिए नारायण की, विद्यालाभ के लिए शङ्कर अथवा सरस्वती की,परिवार वृद्धि के लिए दिव्य पितरों की, परिवार की रक्षा हेतु पुण्यात्मा जीवों की, कला अनुसार राज्य में पदोन्नति के लिए मनु की, शत्रुनाश के लिए विकटराक्षस की, वीर्यवृद्धि के लिए चन्द्रमा की, दीर्घायु के लिए अश्विनी कुमारों की, गुणवान पुरुष हेतु पार्वती की, झगड़ा एवं कलह निवारण हेतु बगलामुखी की, कष्टनिवारण हेतु कामात्मिका दुर्गादेवी की, सतीत्व वृद्धि के लिए सती सावित्री अथवा अनसूया की, मर्यादा रक्षा हेतु श्रीराम की, सुखप्राप्ति हेतु श्रीकृष्ण की, फोड़ा-फुन्सी, रक्तविकार से रक्षा हेतु श्रीहनुमानजी की, लॉटरी-सट्टा में सिद्धि के लिए स्वप्रेश्वरी की पूजा करनी चाहिए। आराधना, मन्त्रसिद्धि आदि चिरपरिचित दैवज्ञ से सलाह लेकर ही करें, **पूजन स्वयं करना शुभ होता हैं।** यदि अन्य के द्वारा पूजन करवाये तो यजमान स्वयं का तथा पूजन करने वाले का गण देख ले, यदि परस्पर देवता व राक्षस गण हैं तो लाभ होना असम्भव है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यवांकुर वपन (जौ बोने की विधि)

'सिद्धान्त शेखर' आदि ग्रन्थों में यवांकुर वपन के सम्बन्ध में विस्तार से लिखा है। वहाँ उद्धृत है–

प्रतिष्ठायां च दीक्षायां स्थापने चोत्सवे तथा।
संप्रोक्षणे च शान्त्यर्थं विवाहे मौञ्जिबन्धने॥
सर्वमंगलकार्येषु कारयेदङ्कुरार्पणम्॥
प्रतिष्ठादिवसात् पूर्वं नवमे सप्तमे दिने।
पंचमे वा तृतीये वा सद्यो वा चांकुरार्पणम्॥
पुण्याहघोषणं कृत्वा ब्राह्मणैः सह देशिकः।
मंगलांकुरस्य वपनं कुर्यात्तत्रैव चाहनि।
सप्तमान्नवमाद्वापि प्रागेव यज्ञकर्मणि॥

गृह प्रतिष्ठा, देव प्रतिष्ठा, दीक्षा, स्थापना, उत्सव, शान्ति–प्राप्ति, विवाह, उपनयन आदि समस्त मांगलिक कार्यों के प्रारम्भ में यवांकुर वपन किये जाने का विधान है। प्रतिष्ठा या स्थापना दिन से नौ दिन पूर्व या सात दिन, पांच दिन, तीन दिन या तत्काल भी यवांकुर वपन होता है। जितने दिन पूर्व वपन होगा, उतने ही दिनों के प्रभाव से उनकी वृद्धि होगी। उनकी वृद्धि से क्रियामाण कर्म के शुभाशुभ का ज्ञान भी हो जाता है। यवांकुर वपन के समय पुण्याहवाचन किया जाता है। दिवस गणना व निश्चय से पूर्व मुहूर्त ज्ञान आवश्यक है। ताराबल, नक्षत्र बल,चन्द्र बल आदि देखकर तदनुसार शुभ मुहूर्त में स्थापना से पूर्व जो भी दिन शुभ मिले, जुवारे बोने चाहिए। विधान तो यह भी है कि यवांकुर वपन के दिन नान्दी श्राद्ध भी किया जाय। यजमान की अभिवृद्धि के लिए यवांकुर वपन का विधान है। इन्हें देखकर भी विजय कर्म की शुभाशुभ स्थिति का विवेचन करते हैं।

यवाङ्कुर परीक्षा–तत्फलं च

यजमानाभिवृद्ध्यर्थं अंकुराणि परीक्षयेत्।
सम्यगूर्ध्वं प्ररूढानि कोमलानि सितानि च॥
धूम्रवर्णान्यपूर्वाणि तथा तिर्यग्गतानि च।
श्यामलानि च कुब्जानि वर्जयेदशुभानि च॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यवांकुर सीधे निकले हैं, कोमल हैं, सफेद हैं, धूम्रवर्ण के हैं, अनोखे हैं, तिरछे निकले हैं, श्यामवर्ण के हैं, बौने हैं तो–उनकी स्थिति का आकलन करने से शुभाशुभ फल पर विचार करना चाहिए तथा तदनुरूप शान्तिकर्म किया जाना चाहिए।

फलम्

अवृष्टिं कुरुते कृष्णं धूम्राभं कलहं तथा।
अपूर्णं जननाशं च दुर्भिक्षं श्यामलांकुरम्॥
तिर्यग्गते भवेद् व्याधिः कुब्जे शत्रुभयं तथा।
अशुभे चांकुरे जाते शान्तिहोमं समाचरेत्॥
मूलमन्त्रेण जुहुयाद् गुरुर्मूर्तिधरैः सह।
अघोरास्त्रेण चास्त्रेण शतं वाथ सहस्रकम्॥

यदि यवांकुर कृष्णवर्ण के हैं तो वृष्टि नहीं होती, धूम्रवर्ण के हैं तो कलह(लड़ाई–झगड़ा) होता है। पूरे नहीं निकले हैं तो जननाश की संभावना रहती है। श्यामवर्ण हैं तो दुर्भिक्ष होता है। तिरछे निकले हैं तो व्याधि (रोग) होती है। बौने निकले हैं तो शत्रु भय की शंका है। अतः इन अशुभ अंकुरों के लिए शान्ति करानी चाहिए। शान्ति में श्रद्धा व शक्ति के अनुसार नवार्ण मूलमन्त्र व अन्यान्य मन्त्रों से सौ या हजार आहुतियां दी जाती हैं। श्वेतांकुर अशुभ नहीं होता, परन्तु अनोखा होने से शान्ति–कर्म किया जाता है, उसे सुरक्षित किया जाता है। वह समृद्धि का सूचक माना गया है। अन्य ग्रन्थों में भी इसका फल निर्दिष्ट है। यथा–

सारस्वते

प्ररूढैरंकुरैः कर्तुर्निर्दिशेच्च शुभाशुभम् –

श्यामैः कृष्णैरंकुरैरर्थहानिस्तिर्यग्रूढैर्व्याधिरांदोलितैस्तैः।
कुब्जैर्दुःखै दुष्प्ररूढैर्मृतिं च रोगाभुग्नैः स्थानदेशेष्टहानिः॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ कुमारी–पूजनम्

श्री दुर्गापूजा के उपरान्त श्री गणेश तथा बटुक सहित नव कुमारियों का पूजन किया जाता है। यह तब ही करना चाहिए, जब नवदुर्गा पूजन किया गया हो, अर्थात् नवरात्र में श्रीदुर्गापूजन के उपरान्त कुमारी पूजन होता है। देवीपुराण में लिखा है कि भगवती होम, दान, जप आदि से इतनी सन्तुष्ट नहीं होती, जितनी कुमारी–पूजन से। यथा–

ब्रह्मोवाच

''न तथा तुष्यते शक्र ! होमदान–जपेन तु।
कुमारी भोजनेनात्र यथा देवी प्रसीदति॥
प्रक्षाल्य पादौ सर्वासां कुमारीणां च वासव।
सुलिप्ते भूतले रम्ये तत्र ताः आसने स्थिताः॥
पूजयेद् गन्धपुष्पैश्च स्रग्भिश्चापि मनोरमैः।
पूजयित्वा विधानेन भोजनं तासु दापयेत्॥
खण्डं लड्डु गुडं सर्पि दधि क्षीरं समाक्षिकम्।
तासां देयं कुमारीणां शनैः संभोजयेत्तु ताः॥
पानीयं पातु देयमन्नं वा याचितं शुभम्।
तास्तृप्तास्तु यदा सर्वास्तदा त्वाचमनं ददेत्॥
आचम्य चाक्षतान् दत्त्वा त्वया क्षन्तव्यमित्युत।
दातुः शिरसि दातव्याः कन्यकाभिरथाक्षताः॥
तेनापि प्रणिपातस्तु कर्तव्यो भक्तिपूर्वकः।
अनेन विधिना शक्र ! देवी क्षिप्रं प्रसीदति॥
ददाति विविधान् कामान् मनोभीष्टान् सुराधिप !''

इन पद्यों का आशय यही है कि श्रीब्रह्माजी ने इन्द्र की शंकाओं का समाधान करते हुए कुमारी पूजन की विधि बताई है। कुमारियों के पांव धोकर, स्वच्छ भूमि पर आसन बिछाकर उन पर उन्हें बिठा दे तथा गन्ध, पुष्प, माला आदि से पूजन कर उन्हें भोजन करावे। भोजन में श्रीखण्ड, लड्डू, गुड़, घृतान्न, दही, खीर, शहद आदि अवश्य होने चाहिए। मधुर भोजन नितान्त

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आवश्यक है। अत्यन्त शान्ति से, उन्हें शनैः शनैः भोजन करने दे। वे जो मांगें, वह परोसें, पानी मांगने पर पानी पिलावे, जब वे तृप्त हो जायें तो उन्हें आचमन हेतु (कुल्ला करने व मुख शुद्धि के लिए) जल दे। उनके हाथ में अक्षत दे। वे उन अक्षतों (चांवलों) को दाता के शिर पर फेंके। दाता को भी साष्टांग प्रणाम करना चाहिए। इस प्रकार देवी शीघ्र ही प्रसन्न होती है तथा अभीष्ट फल प्रदान करती है।

कुमारी पूजन की संख्या के सम्बन्ध में स्कन्दपुराण का कथन है कि–

''एकैकां पूजयेत् कन्यामेकवृद्ध्या तथैव च।
द्विगुणं त्रिगुणं वापि प्रत्येकं नवकं वरम्॥
नवभिर्लभते भूमिमैश्वर्यं द्विगुणेन तु।
एकवृद्ध्या लभेत् क्षेममेकैकेन श्रियं लभेत्॥
एकवर्षा तु या कन्या पूजार्थं तां तु वर्जयेत्।
गन्धपुष्पफलादीनां प्रीतिस्तस्या न विद्यते॥''

या तो प्रतिदिन एक–एक कन्या का पूजन करे। या द्विगुण, त्रिगुण पूजन करे अर्थात् दो या तीन संख्या भी प्रतिदिन के पूजन में हो सकती है। नौ दिन में १८ या २७ संख्या होगी। सर्वसमर्थ व्यक्ति प्रतिदिन ९ कुमारी भोजन भी करा सकता है। यह सर्वोत्कृष्ट पक्ष है। नौ के पूजन का फल भूमि-प्राप्ति बतलाया है तथा द्विगुण–त्रिगुण से ऐश्वर्य प्राप्ति। एक वृद्धि अर्थात् प्रतिदिन एक–एक की वृद्धि करते हुए प्रथम दिन एक, दूसरे दिन दो, तीसरे दिन तीन इस क्रम से नवम दिन नौ संख्या कुमारियों का पूजन करने से कल्याणप्राप्ति होती है। एक ही कन्या का प्रतिदिन पूजन करने से श्री प्राप्ति होती है। इस कन्या के पूजन में यह ध्यान रखना है कि कन्या एक वर्ष से बड़ी हो, क्योंकि एक वर्ष तक कन्या की गन्ध, पुष्प आदि के प्रति कोई रुचि नहीं होती है। यदि कन्या न मिले तो विवाहिता का भी पूजन किया जा सकता है, परन्तु वह उसके ऋतुमती होने से पूर्व तक की ग्राह्यता है।

कुमारी–पूजन के सम्बन्ध में बहुत सी बातें ज्ञातव्य हैं। इनकी पूजा 'कामना' की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। देवीपुराण में इस विषय में लिखा है–

''दुःखदारिद्र्यनाशाय शत्रूणां नाशनाय च।
आयुषे बलवृद्ध्यर्थं कुमारीः पूजयेन्नरः॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आयुष्कामस्त्रिमूर्तिं तु त्रिवर्गस्य फलाप्तये।
अपमृत्यु–व्याधिपीड़ा दुःखानामपनुत्तये।।
सौख्य–धान्य–धनारोग्य–पुत्रपौत्रादिवृद्धये।
कल्याणीं पूजयेद् धीमान् नित्यं कल्याणवृद्धये।।
आरोग्य–सुखकामी तु धनकामस्तथैव च।
यशस्कामी नरो नित्यं रोहिणीं परिपूजयेत्।।
विद्यार्थी च जयार्थी च राज्यार्थी च विशेषतः।
शत्रूणां च विनाशार्थी कालिकां पूजयेन्नरः।।
संग्रामे जयकामश्च चन्द्रिकां परिपूजयेत्।
दुःखदारिद्र्यनाशाय नृप–सम्मोहनाय च।।
महापाप–विनाशाय शाम्भवीं च प्रपूजयेत्।
सर्वलोकेषु शत्रूणामुग्रसाधनकर्मणि।।
दुर्गां दुर्गतिनाशाय पूजयेद्यत्नतो बुधः।
सौभाग्य–धन–धान्यादि वांछितार्थ–फलाप्तये।।
सुभद्रां पूजयेत् मर्त्यो दासीदासविवृद्धये।''

इन पद्यों में यह बतलाया है कि वर्ष भेद के अनुसार कुमारिकाओं के विभिन्न नाम हैं तथा उनकी पूजन करने से क्या फल मिलता है। एक वर्षा का निषेध किया जा चुका है। अतः द्विवर्षा क्रम से ये नाम रखे गए हैं। इनका क्रम इस प्रकार है–

१. दोवर्ष की कन्या का नाम – ''कुमारी''
२. तीनवर्ष की कन्या का नाम – ''त्रिमूर्ति''
३. चारवर्ष की कन्या का नाम – ''कल्याणी''
४. पांचवर्ष की कन्या का नाम – ''रोहिणी''
५. छैः वर्ष की कन्या का नाम – ''कालिका''
६. सातवर्ष की कन्या का नाम – ''चण्डिका''
७. आठवर्ष की कन्या का नाम – ''शांभवी''
८. नववर्ष की कन्या का नाम – ''दुर्गा''

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

९. दसवर्ष की कन्या का नाम – "सुभद्रा"

पूर्वोक्त पद्यों में इनके नाम देकर स्पष्ट किया है दुःख–दारिद्र्यनाश की तथा शत्रुओं के विनाश की, आयु तथा बलवृद्धि की कामना हो तो 'कुमारी' अर्थात् दो वर्ष की कन्या का नौ दिन पूजन करना चाहिए। इसी प्रकार सभी कामनाओं को समझकर तदनुसार उतने ही वर्ष की कन्या का पूजन करना चाहिए। यह नहीं भूलना चाहिए कि कुमारियों के साथ २ बटुक भी होंगें– एक गणेश के रूप में तथा दूसरे बटुक भैरव के रूप में। इनकी संख्या तीन भी हो सकती है क्योंकि गौरवटुक व कृष्णबटुक का भेद प्राप्त होता है।

पूजन प्रकार

वायव्य कोण (पश्चिम तथा उत्तर दिशा के मध्य कोण) से ईशानकोण तक आसन बिछाकर प्रथम आसन पर गणेश निमित्त बटुककुमार को बिठावे। उसके बाद दूसरे कुमार को बिठावे। फिर नवकुमारियों को बिठाकर उनका पाद्यादि से पूजन कर ससम्मान भोजन करावे। ९ संख्या न मिलने पर एक, तीन, पांच आदि विषम संख्या में भोजन कराना चाहिए।

संकल्प कर – श्री दुर्गा प्रसाद सिद्धि द्वारा सर्वापच्छान्तिपूर्वकं ममाभीष्टसिद्ध्ये निर्विघ्नता परिसमाप्त्यर्थं बटुकगणेशादिसहितं कुमारीपूजनं करिष्ये। कह कर जल छोड़ देना चाहिए।

प्रथम कुमार पूजन में–"ॐ गं गणपतये नमः" का उच्चारण करते हुए बटुक कुमार का पूजन करना है। दूसरे बटुक पूजन में **"ॐ वं वटुकाय नमः"** से पूजन होता है। बटुक का ध्यान करना चाहिए तथा निम्नलिखित पद्य बोलना चाहिए–

ॐ करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणिः
तरुणतिमिरनील–व्याल–यज्ञोपवीती ।
क्रतुसमयसपर्याविघ्नविच्छेदहेतुः ,
जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥

इसके बाद नव कुमारियों का पूजन करना चाहिए। इनके आवाहन का मन्त्र है –

ॐ मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातॄणां रूपधारिणीम्।
नवदुर्गात्मिकां साक्षात् कन्यामावाहयाम्यहम्॥

इसी मन्त्र से सभी नवदुर्गाओं का आवाहन किया जाता है। कन्या जितने वर्ष की हो, उसका उसी क्रम से पूजन करना चाहिए। उनके पूजन मन्त्र यहां संकलित किये जा रहे हैं–

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

१. "कुमारी" मन्त्र -

ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
पूजां गृहाण कौमारि ! जगन्मातर्नमोस्तु ते॥

२. "त्रिमूर्ति" मन्त्र -

ॐ त्रिपुरां त्रिपुराधारां त्रिवर्षां ज्ञानरूपिणीम्।
त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम्॥

३. "कल्याणी" मन्त्र -

ॐ कलात्मिकां कलातीतां कारुण्यहृदयां शिवाम्।
कल्याणजननीं देवीं कल्याणीं पूजयाम्यहम्॥

४. "रोहिणी" मन्त्र -

ॐ अणिमादिगुणाधाराम् अकाराद्यक्षरात्मिकाम्।
अनन्तशक्तिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम्॥

५. "कालिका" मन्त्र -

ॐ कामचारां शुभां कान्तां कालचक्रस्वरूपिणीम्।
कामदां करुणादारां कालिकां पूजयाम्यहम्॥

६. "चण्डिका" मन्त्र -

ॐ चण्डवीरां चण्डमायां चण्डमुण्डप्रभंजनीम्।
पूजयामि सदा देवीं चण्डिकां चण्डविक्रमाम्॥

७. "शाम्भवी" मन्त्र -

ॐ सदानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम्।
सर्वभूतात्मिकां लक्ष्मीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम्॥

८. "दुर्गा" मन्त्र -

ॐ दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुःखविनाशिनीम्।
पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम्॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

९. "सुभद्रा" मन्त्र -

ॐ सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम्।
सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम्॥

कुमारी पूजन–भोजन के उपरान्त उन्हें बिदा कर सुवासिनी तथा ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए। ततश्च इष्टमित्रादि सहित स्वयं को भोजन करना चाहिए।

विशेष ध्यातव्य – जिन कुमारिकाओं का चयन किया जावे, वे हीनांगी, अधिकांगी, कुष्ठी, फोडों वाली, अन्धी, काणी, कुरूपा, ऐंचातानी, कुबड़ी, अधिक रोम वाली, दासी से उत्पन्न, रोगिणी तथा दुष्ट स्वभाव की नहीं होनी चाहिए।

"हीनाधिकाङ्गीं कुष्ठादिविकारां कुकुलां तथा।
ग्रन्थिस्फुटितसर्वाङ्गीं रक्तपूयव्रणाङ्किताम्॥
जात्यन्धां केकरां काणां कुरूपां तनुरोमशाम्।
संत्यजेद् रोगिणीं कन्यां दासीगर्भसमुद्भवाम्॥"

कन्याओं के जाति भेद से तथा कामना भेद से पूजन का अलग अलग फल बताया गया है। ब्राह्मण कन्याओं के पूजन का फल सभी कामनाओं की पूर्ति करता है। क्षत्रिय कन्या की पूजन विजय प्राप्ति के लिए तथा वैश्य कन्याओं का पूजन लाभ के लिये जाता है। पुत्र सन्तान प्राप्ति के लिए शूद्र कन्याओं का पूजन करना चाहिए। अन्त्यजातीय कन्याओं का पूजन विशेष दारुण कष्ट निवारणार्थ बतलाया गया है। सर्वार्थ-सिद्धि के लिए गौरवर्ण की, जय कीर्ति के लिए पीतांगी, लाभ के लिए अरुणवर्णांगी तथा अभिचार प्रयोगों के लिए कृष्णवर्णांगी का पूजन करना चाहिए।

॥ इति॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दुर्गासप्तशती के नौ भेद

दुर्गापाठस्य नव नामानि तल्लक्षणानि च।
रहस्योक्तानि नामानि ब्रह्मो-भानि वदामिते।।

(हिन्दी मन्त्रमहार्णव :- द्वितीय तरंग पृष्ठ 163)

देवी के गुप्त नव नामों और लक्षण, जिन्हें ब्रह्मा ने कहा था -

महाविद्या महातन्त्री चण्डी सप्तशतीति च।
मृत-संजीवनी-नाम पञ्चमं परिकीर्तितम्।।1।।
षष्ठं चैव महा-चण्डी सप्तमं रूप-दीपिका।
अष्टमं तु चतुः षष्टि-योगिनी नवमी परा।।2।।

1. महाविद्या, 2. महातंत्री, 3. चण्डी, 4. सप्तशती, 5. मृत-संजीवनी, 6. महा-चण्डी, 7. रूप-दीपिका, 8. चतुः षष्टि-योगिनी, 9. परा-चण्डी - ये देवी के नौ नाम है।

एतानि योऽभिजानाति नामानि नृप-नन्दन।
जपं विना भवेत्तस्य चण्डिका वरदा सदा।।

हे राज-पुत्र! जो दुर्गा-सप्तशती के इन सभी नामों को जानता है, उसे जप के बिना ही चण्डिका सदा वर देती है। पूर्वोक्त नव विद्याओं निम्न प्रकार से बताया गया है :-

1. आद्य, द्वितीय, तृतीय चरितानुक्रम से सप्तशती **'महा-विद्या'** सभी तन्त्रों में गुप्त रूप से निहित है।

2. आद्य, अन्त्य तथा मध्य चरितानुक्रम से महा-विद्या को **'महा-तन्त्री'** कहा गया है।

3. आद्य, मध्य तथा अन्त्य चरितानुक्रम से महा-विद्या को **'चण्डी-महातन्त्र'** कहा गया है।

4. मध्य, आद्य तथा अन्त्य चरितानुक्रम से महा-विद्या को **'सप्तशती'** कहा गया है।

5. अन्त्य, आदि तथा मध्य चरितानुक्रम से महा-विद्या को **'मृत-संजीवनी'** कहा गया है।

6. अन्त्य, मध्य तथा आद्य चरितानुक्रम से महा-विद्या को **'महा-चण्डी'** कहा गया है।

7. **'रूप देहि जयं देहि'** इस श्लोक को नवार्ण-मन्त्र के साथ युक्त करके प्रत्येक श्लोक को उससे सम्पुटित करके जप करने को **'रूप-चण्डी'** कहा गया है। यह सभी अभीष्टों को देने वाला है।

8. सप्तशती-मन्त्रों से चौसठ योगिनियों का सम्बन्ध होने से महा-विद्या को **'चतुः षष्टि'** कहते

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

है। यह योग–सिद्धि प्रदान करने वाली है।

9. परा–बीज के साथ संयुक्त होने के कारण महाविद्या को 'परा–चण्डी' कहते हैं।

फलश्रुति :– 'दुर्गा–सप्तशती' के 13 अध्यायों के पाठ से विविध प्रकार के दोष दूर होते हैं। यथा –

प्रथम अध्याय :– **क्रोध**	दूसरा अध्याय :– **भय एवं शोक**
तीसरा अध्याय :– **काम**	चौथा अध्याय :– **मोह**
पाँचवा अध्याय :– **विभित्सा**	छठा अध्याय :– **परासुता**
सातवाँ अध्याय :– **मद**	आठवाँ अध्याय :– **लोभ**
नौवाँ अध्याय :– **मात्सर्य**	दसवाँ अध्याय :– **ईर्ष्या**
ग्यारहवाँ अध्याय :– **निन्दा**	बारहवाँ अध्याय :– **दोष–दृष्टि**
तेरहवाँ अध्याय :– **कंजूसी, दैन्य भाव**	

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नवार्ण संस्कार विधि

श्रीगणेशाय नमः। अद्य पूर्वोच्चरित एवं गुण-विशेषण-विशिष्टायां शुभ-पुण्य-तिथौ श्रीइष्ट-देवतानुष्टुभ-मन्त्रस्य छिन्नत्वादि-पञ्चाशद्-दोष-परिहारार्थं आराध्य-कर्मणः मध्ये विघ्न-विच्छेद-जनित-प्रत्यवाय-परिहार-द्वारा श्रीइष्ट-देवता-प्रीत्यर्थं पुनश्च जननादि-दश-विध-संस्काराणि करिष्ये।

उक्त प्रकार संकल्प कर निम्न जननादि संस्कार करें। प्रत्येक संस्कार के लिए निर्दिष्ट मन्त्र को ताम्र-पात्र में अष्ट-गन्ध से लिखकर उसका षोडशोपचार से पूजन करें। फिर उसका अष्टोत्तरशत (108) बार जप करें। जहाँ अधिक जप करना है, वहाँ उसका उल्लेख कर दिया गया है।

1. **शापोद्धार :- 'स्वाहा'** युक्त नवार्ण-मन्त्र के प्रत्येक अक्षर को 'ह्स्रौं' से पुटित कर लिखें-
ह्स्रौं ऐं ह्स्रौं, ह्स्रौ ह्रीं ह्स्रौं, ह्स्रौ क्लीं ह्स्रौं, ह्स्रौं चा ह्स्रौं, ह्स्रौं मुं ह्स्रौं, ह्स्रौं डा ह्स्रौं, ह्स्रौं यै ह्स्रौं, ह्स्रौं वि ह्स्रौं, ह्स्रौं च्चे ह्स्रौं, ह्स्रौं स्वा ह्स्रौं, ह्स्रौं हा ह्स्रौं। जप संख्या - अयुत (10,000)।

2. **उत्कीलन :-** पूर्ववत् **'स्वाहा'** युक्त नवार्ण के प्रत्येक अक्षर को **'ह्स्क्लीं'** से पुटित कर लिखें। यथा - **'ह्स्क्लीं ऐं ह्स्क्लीं'** इत्यादि।

3. **चेतनी :-** ईं ऐं औं क्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा ईं ऐं औं।

4. **आह्लादिनी :-** ॐ क्लीं नमः ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा ॐ क्लीं नमः।

5. **तेजोद्दीपन :-** वद वद वाग्वादिनि ऐं ह्रीं क्लीं .... स्वाहा वद वद वाग्वादिनी।

6. **मन्त्राभ्य-जनन :-** आं आं इं ईं .... सं हं लं क्षं ऐं ह्रीं क्लीं .... स्वाहा क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं, मं भं बं फं पं, नं धं दं थं तं, णं ढं डं ठं टं, ञं झं जं छं चं, ङं घं गं खं कं, अः औं ओं ऐं एं लृं लृं ॠं ॠं ऊं उं ईं इं आं अं।

7. **सूतक-निवारण :-** ऐं क्लीं सौः ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा ऐं क्लीं सौः।

8. **उभय-सूतकादि-त्याग (जन्म-मृत्यु आदि निवारण) -** 'स्वाहा' युक्त नवार्ण के प्रत्येक अक्षर को प्रणव (ॐ) से सम्पुटित कर लिखें। यथा - 'ॐ ऐं ॐ', 'ॐ ह्रीं ॐ' इत्यादि।

9. **मन्त्र-प्रत्यक्ष (सञ्जीवन) :-** 'स्वाहा' युक्त नवार्ण के प्रत्येक अक्षर को श्री-बीज (श्रीं) से सम्पुटित कर लिखें। यथा - 'श्रीं ऐं श्रीं', 'श्रीं ह्रीं श्रीं', इत्यादि।

10. **प्राण-स्थापन :-** 'स्वाहा' युक्त नवार्ण प्रत्येक अक्षर को वाग्बीज (ऐं) से सम्पुटित कर लिखें। यथा - 'ऐं ऐं ऐं', 'ऐं ह्रीं ऐं' इत्यादि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

11. मन्त्र :- स्पन्दन-वह्नि - ॐ ह्रीं ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा ॐ ह्रीं ॐ।

12. दीपन :- भूर्ज-पत्र पर अष्टगन्ध से अधोमुख त्रिकोण अकारादि से क्षकारान्त लिखे। अधोमुख शेष 'अं' से बनाकर वाम-भुजा 'अः' तक लिखकर पूरी करें। ऊर्ध्व-स्थित आधार को 'कं' से प्रारम्भ कर 'थं' तक लिखकर पूर्ण करे। फिर दक्ष-भुजा को दं से प्रारम्भ कर 'हं लं क्षं' तक लिखकर उसे पूरा करे। इस त्रिकोण के मध्य में 'हंसः' से सम्पुटित नवार्ण-मन्त्र लिखे। यथा -

'हंसः ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा हंसः'। जप संख्या - एक सहस्र (1,000)।

13. ताड़न :- ताड़-पत्र के ऊपर निम्न प्रकार अष्ट-गन्ध से मन्त्र लिखकर ताम्र-पत्र में स्थापित करे और षोडश या पञ्चोपचार-पूजन कर दर्भ-शाखा से जल में एक सहस्र (1000) बार जप करते हुए ताड़न करें - **'यं फट् ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा यं फट्'**।

14. निबोधन :- करवीर-पत्र के ऊपर 'स्वाहा' युक्त नवार्ण-मन्त्र के प्रत्येक अक्षर को कूर्च-बीज (हूं) से सम्पुटित कर लिखें। यथा **'हूं ऐं हूं, हूं ह्रीं हूं'** इत्यादि। फिर पूर्ववत् उसे ताम्र-पत्र में स्थापित कर, पूजन करके पञ्च-सहस्र (5000) जप करे।

15. अभिषेचन :- ताड़ या अश्वत्थ-पत्र पर निम्न प्रकार मन्त्र लिखे - **'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा अभिषिञ्चयामि।'**

फिर पूर्ववत् ताम्र-पात्र में स्थापित कर, पूजन कर, उस पर जल-धारा छोड़ते हुए एक सहस्र (1000) जप कर उसका अभिषेक करे।

16. दाहन :- ब्रह्म-वृक्ष के तेल या अष्ट-गन्ध से ताम्र-पात्र में निम्न प्रकार मन्त्र लिखे -

श्री श्री श्री श्री

रँ	रँ	रँ	रँ	रँ	रँ
रँ ऐं रँ॥	रँ ह्रीं रँ॥	रँ क्लीं रँ॥	रँ चा रँ॥	रँ मुं रँ॥	रँ डा रँ॥
रँ	रँ	रँ	रँ	रँ	रँ
रँ	रँ	रँ	रँ	रँ	रँ
रँ यै रँ॥	रँ वि रँ॥	रँ च्चे रँ॥	रँ स्वा रँ॥	रँ हा रँ॥	
रँ	रँ	रँ	रँ	रँ	

फिर पूर्ववत् पूजन कर अष्टोत्तर-शत (108) जप करे।

17. विमलीकरण :- ताम्र-पत्र में पूर्ववत् निम्न मन्त्र को लिखे, पूजन कर एक सहस्र (1000) जप करे - **'ॐ ह्रौं वषट् ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा ॐ ह्रौं वषट्।'**

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

18. **पुनर्जीवन** :- ताम्र-पत्र में पूर्ववत् निम्न मन्त्र को लिखे, पूजन कर एक सहस्र (1000) जप करे - **'वषट् ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा वषट्।'**

19. **प्रोक्षण** :- भूर्ज-पत्र पर अष्टगन्ध से निम्न प्रकार मन्त्र लिख दण्डवत् कर पूर्ववत् पूजन कर कुश-शाखा द्वारा जल से प्रोक्षण कर अष्टोत्तरशत (108) बार जप करे - **'ॐ क्रौं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा ॐ क्रौं।'**

20. **आप्यायन** :- पूर्ववत् ताम्र-पात्र में 'स्वाहा' युक्त नवार्ण के प्रत्येक अक्षर को 'ह्सौं' से सम्पुटित कर लिखें, फिर पूजन कर एक सहस्र (1000) जप करे - **'ह्सौं ऐं ह्सौं, ह्सौं ह्रीं ह्सौं'** इत्यादि।

21. **तर्पण** :- पूर्ववत् ताम्र-पात्र में निम्न मन्त्र लिखकर गो-दुग्ध, गो-घृत और जल से पूर्ण कर यथा-विधि पूजन कर एक सहस्र (1000) जप द्वारा तर्पण करे - **'स्वधा ऐं क्रीं क्लीं विद्महे तत्-प्रधानाय धीमहि तन्नो देवी चामुण्डायै विच्चे स्वाहा प्रचोदयात्, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी महासरस्वतीदेवताः तर्पयामि।'**

22. **पुनर्दीपन** :- पूर्ववत् ताम्र-पात्र में लिखकर पूजन कर एक सहस्र (1000) जप करे। **'ॐ क्रीं श्रीं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा ॐ क्रीं श्रीं।'**

23. **गोपन** :- 'स्वाहा' युक्त नवार्ण मन्त्र के प्रत्येक अक्षर को काली-बीज (क्रीं) से सम्पुटित कर पूर्ववत् ताम्र-पात्र में लिख पूजन-पूर्वक एक सहस्र (1000) जप करे - **'क्रीं ऐं क्रीं, क्रीं ह्रीं क्रीं'** इत्यादि।

उक्त प्रकार संस्कार कर अन्त में मूल-मन्त्र का एक सहस्र जप करे। मूल-मन्त्र है - **'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा।'**

पुनश्चरण के आदि, मध्य और अन्त में इस विधि का पालन करने से प्रत्यक्ष-सिद्धि प्राप्त होती है।

।। इति बाल-चन्द्रिकायां नवार्ण-जननादि-दश-विध-संस्कारं सम्पूर्णम्।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नवार्ण विधि

यह विध आगे दी गयी है, कुछ विशेष विधान निम्न प्रकार है, जिसे यथा–स्थान जोड़ लेना चाहिए –

'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे महा–काल्यै नमः। **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं** महा–लक्ष्म्यै नमः। **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं** महा–सरस्वत्यै नमः' – इति मूल–मन्त्रेण त्रिराचम्य '**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे – 16**' इति पूरकं, '**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे – 64**' इति कुम्भकं, '**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे – 32**' इति रेचकं प्राणानायम्य।

संकल्प, अक्षर–न्यास, व्यापक–न्यास, दिङ्–न्यास वक्ष्यमाण–विधिना कृत्वा अंकुश–मुद्रयाऽऽवाहनं कुर्यात्। यथा –

या सा परापरा सूक्ष्मा, स्वर्गस्था विश्व–रूपिणी।
चन्द्र–मण्डल–मध्यस्था, आयाहि मम मण्डलं ।।1 ।।
श्रीमत्–कुण्डलिनी–स्थिता, शुभ्रा व्यासादि–मुनि–सेविता।
आगच्छ वरदे देवि! वेद–त्रयमुदाहृता ।।
जप–काले च सान्निध्यं प्रसादं कुरु मे सदा ।।2 ।।

– ध्यानम् –

खड्गं चक्र–गदेषु चाप–परिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः,
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग–भूषावृताम्।
नीलाश्म–द्युतिमास्य–पाद–दशकां सेवे महा–कालिकां,
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ।।1 ।।

अक्ष–स्रक्परशुं गदेषु–कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां,
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुरा–भाजनम्।
शूलं पाश–सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरिभ–मर्दिनीमिह–महा–लक्ष्मीं सरोज–स्थिताम् ।।2 ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुसले चक्रं धनुः सायकं,
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्।
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्।।3।।

ध्यानं कृत्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य 'नवार्ण-मन्त्राक्षर-ध्यानं' कुर्यात्। यथा -

वाग्बीजं हि दीप-समान-दीप्तम्।
मायाऽति-तेजो द्वितीयार्क-बिम्बम्।।
कामं च वैश्वानर-तुल्य-रूपम्।
प्रतीयमानं तु सुखाय चिन्त्यम्।।
'चा' शुद्ध-जाम्बू-नद-तुल्य-कान्तिम्।
'मुं' पञ्चमं रक्त-तरं प्रकल्पम्।।
'डा' पाण्डुरं चाष्टममादि-सिद्धिम्।
'च्चे' धूम्र-वर्णं नवमं विशालाम्।।
एतानि बीजानि नवात्मकस्य।
जपात् प्रदध्युः सकलार्थ-सिद्धिम्।।

इति नवाक्षरैर्ध्यात्वा अष्टोत्तर-शतं मूल-मन्त्रं जपेत्। अथ यन्त्रोपरि बाह्य-पूजां कृत्वा त्रिकोणं च भूपुरं त्रि-षट्-कोणमिन्दु-भूपुरं। अष्ट-पत्र-दलं पद्मं गोलाकारं तु रेखया।।1।। त्रयोदश-दलं स्थाप्यं वर्तुलाकारकं बुधैः। त्रिकोणं च कृत्वा चतुष्कोणं त्रि-रेखया। समर्चयेदिदं यन्त्रं चण्डिका वरदा सदा।।2।। आदौ पूजा-विधिं कृत्वा गणेशं क्षेत्रपालकम्।।3।।

'ॐ क्रीं ग्लौं गां गणपतये नमः। ॐ क्रां क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्र-पालाय नमः' - इति मन्त्राभ्यां पुस्ताग्रे द्वारपालके सम्पूज्य - **'ॐ क्रीं श्रीं तीक्ष्ण-शृंगाय महिषाय नमः। ॐ क्रीं वनस्पति-पुत्राय सिंहाय नमः'** - इति वाम-दक्षिणयोः सम्पूज्य -

'ॐ क्रीं रुद्राय नमः। ॐ क्रीं ब्रह्मणे नमः। ॐ क्रीं विष्णवे नमः। ॐ क्रीं ब्रह्माण्यै नमः। ॐ ह्रीं वैष्णव्यै नमः। ॐ ह्रीं रुद्राण्यै नमः। ॐ क्रीं कौमार्यै नमः। ॐ क्रीं वाराह्यै नमः। ॐ क्रीं इन्द्राण्यै नमः। ॐ क्रीं चण्डिकायै नमः। ॐ क्रीं चामुण्डायै नमः। ॐ क्रीं चामुण्डा-मूर्तये नमः। ॐ क्रीं सः महादुर्गे चण्डिके कात्यायिन्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः। ॐ नमः पिशाचिनि! किरि किरि त्रिशूल-खड्ग-हस्ते! सिंहारूढ़े! एह्येहि आगच्छागच्छ

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पूजां गृह्ण गृह्ण सर्व-सिद्धि कुरु कुरु चिण्डिकायै नमः। ॐ ह्रीं क्रीं चामुण्डायै विच्चे नमः। श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती।'

आसनार्थे पुष्पं दद्यात् - 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे हं हं हं इदं गृहाण स्वाहा' - इति निवेदनम्।

'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती पाद्यं' - जल-गन्धाक्षतैः पुष्पं दद्यात्।

'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती अर्घ्यं स्वाहा' - जल-गन्ध-पुष्पाक्षतैः अर्घ्यं शिरसि दद्यात्।

'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती आचमनीयं स्वधा' - मुखे दद्यात्। 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती मधुपर्कं स्वधा' - मुखे दद्यात्। 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती स्वधा' - मुखे पनुराचमनं दद्यात्। 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती सुगन्धित तैलं' - पुष्पं दद्यात्। 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती शुद्धोद्धक स्नानं' - समर्प्य जलेन आचमनीयं दद्यात्। अङ्ग-प्रोञ्छनं कृत्वा - 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती वाससी' - आचमनं दद्यात्। 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती यज्ञोपवीतं' - आचमनीयं दद्यात्। 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती छत्र-चामर-पादुकां आदर्श-मुकटाद्यलङ्कार-भूषणं' - स्व-सिंहासने समुपवेश्य यन्त्रोपरि पुष्पं दद्यात्।

'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती लं पृथिव्यात्मकं गन्धं' - समर्प्य; 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती अक्षतं' - समर्प्य; 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती हं आकाशात्मकं पुष्पं' - समर्प्य; 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः, ॐ क्रीं विन्ध्यवासिन्यै नमः, ॐ क्रीं रक्त-दन्तिकायै नमः, ॐ क्रीं शताक्ष्यै नमः, ॐ क्रीं शाकम्भर्यै नमः, ॐ क्रीं दुर्गायै नमः, ॐ क्रीं भीमायै नमः, ॐ क्रीं भ्रामर्यै नमः, ॐ क्रीं चण्डिके धूपं गृह्ण गृह्ण स्वाहा, ॐ श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती यं वाय्वात्मकं धूपं' - समर्प्य; 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः, ॐ क्रीं चण्डिके दीपं गृह्ण

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गृह्ण स्वाहा, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती इं वह्न्यातमकं दीपं' - समर्प्य। 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती वं अमृतात्मकं नैवेद्यं' - समर्प्य।

'मूलं श्रीमहाकाली-पादुका पूजयामि, मूलं श्रीमहालक्ष्मी-पादुकां पूजयामि, मूलं श्रीमहासरस्वती-पादुकां पूजयामि, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे, नमः सर्व-शक्ति-पादुकां पूजयामि। ॐ बटुकाय आपदुद्धरणाय कुरु कुरु बटुकाय क्रीं श्रीं बटुकनाथ-पादुकां पूजयामि। ॐ क्रीं असिताङ्ग-भैरवाय नमः पादुकां पूजयामि। ॐ क्रीं रुरु-भैरवाय नमः पादुकां पूजयामि। ॐ क्रीं चण्ड-भैरवाय नमः पादुकां पूजयामि। ॐ क्रीं क्रोध-भैरवाय नमः पादुकां पूजयामि। ॐ क्रीं उन्मत्त-भैरवाय नमः पादुकां पूजयामि। ॐ क्रीं कपाली-भैरवाय नमः पादुकां पूजयामि। ॐ क्रीं भीषण-भैरवाय नमः पादुकां पूजयामि। ॐ क्रीं संहार-भैरवाय नमः पादुका पूजयामि' - इति।

'देवीस्तर्पयामि। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे, ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा' - इति त्रिधा मन्त्र-जल-निवेदनम्।

'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः, गङ्गा-तोय-समा नित्यं सुवर्ण-कलशं धृतं। अग्रे देवी देवेशं आचमनं प्रतिगृह्यतां' - इति आचमनं समर्प्य; 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः' - इति पुनराचमनं समर्प्य।

'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः, ॐ चण्डिके चामुण्डे श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-महागणपति-क्षेत्रपाल-महा-सुरसहिते सर्वकार्य सिद्धिं कुरु कुरु, सर्व शत्रु-सैन्यं स्तम्भय स्तम्भय, विष-शस्त्रादि-सिंह-व्याघ्र-सर्पादि-भयनिवारणं कुरु कुरु, शत्रु-सैन्य-पराजयं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा' - इति मन्त्रेण त्रिधा आचमनं, बलि-समर्पणम्।

'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ताम्बूलं फल-दक्षिणां' - समर्प्य। आरार्तिकं पुनः मन्त्र-पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। प्रदक्षिणां योनि-मुद्रां प्रणम्य नवाक्षरं अष्टोत्तर-शतं जपेत्।

अथ गायत्री यथा शक्ति जपेत् - ॐ ऐं ह्रीं क्लीं विद्महे चामुण्डायै धीमहि तन्नो देवी विच्चे प्रचोदयात्।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ माला-मन्त्र प्रारम्भः

ॐ नमो भगवति! ऐं ह्रीं क्लीं श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-मूर्ति-त्रय-व्यापिके! भूतात्मा-परमात्मा-अष्टादश-भुजे! सर्व-व्यापिनी! महादेवि, लक्ष्मि, सकल-जन-मनोहारिणी! सकल-जन-मुख-रुन्धिनि। सकल-शत्रून् संहारय संहारय, लं वं दं हं क्षीं क्षुं क्षः दुर्गे! लं वं दं हं डीं डूं डः निष्कले! परमा-देवि! रक्ष रक्ष, रूपं विधाय, किणि किणि, किङ्किणि, भूतं हन हन, सर्व-भूत भासि, चित्रिणि! वीर-नारायणि! उग्रे! चण्ड-हस्ते! चण्डिके! माहेश्वरि! महा-मुखि! ज्वाला-मुखि! शङ्कु-कर्णे! काल-जङ्घे! सकल-भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-शाकिनी-डाकिनी-काकिनी-गण-गन्धर्व-ममोच्चाटयोच्चाटय, हन हन, दह दह, महालक्ष्मी-हृदय-जालं रोषेण रूपेण, त्वं देहि देहि, एहि एहि, मम पुत्र-मित्र-कलत्र-बन्धून् रक्ष रक्ष, हुं फट् स्वाहा। अमुक-दुष्टं ग्रहं नाशय नाशय, जृम्भय जृम्भय, मोहय मोहय, उठ उठ, शोधय शोधय स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं देवि दुर्गे! महा-सरस्वती! नमो दुर्गे! हुं फट् स्वाहा। ॐ जय जय चामुण्डे! त्रिदश-मुकुट-कोटि-निघृष्ट-चरणारविन्दे! सावित्री-गायत्री-सरस्वती-महा-गन्धे! महा-कपाल-धारे! महा-भैरव-रूप-धारिणि! प्रकटित-वरानने! घोर-घोरानने! ज्वलज्ज्वालान्त-सहस्र-परिवृते! सच्चिन्महा-ब्रह्म-चलित-दिगन्तरे! उदितार्क-सम-प्रभे! काम-रूपे! तुभ्यं नमो नमः। चतुर्दश-विद्या-प्रबोधिनि! मम अभयं देहि-देहि, शीघ्रं आवेशय आवेशय, हुं फट् स्वाहा।

इति माला-मन्त्रः। रुद्रयामले हर-गौरि-संवादे श्रीमहालक्ष्मी-पूजनार्चन-विधिः, नवाक्षर-मन्त्रः सम्पूर्णम्। श्री श्री श्री श्री शुभं भवतु। श्रीकल्याणमस्तु।

कवच ध्यानम्

ॐ ह्रां रक्ताम्बरा रक्त-वर्णा रक्त-सर्वाङ्ग-भूषणा।
रक्तायुधा रक्त-नेत्रा रक्त-केशाति-भीषणा।।1।।
रक्त-बाहू-नखा रक्त-दशना रक्त-दण्डिका।
पतिं नारि चानुरक्ता देवी-भक्तं भजेज्जनम्।।2।।
वसुधैव विशाला सा सुमेरु-युगल-स्तनी।
दीर्घौ लम्बावति-स्थूलौ तावतीव-मनोहरौ।।3।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कर्कशावति-कान्तौ तौ सर्वानन्द-पयोनिधी।
भक्तान् सा पालयेद् देवी सर्व-काम-दुघौ स्तनौ ।।4 ।।
खड्गं पात्रं च मुसलं लाङ्गलं च विभर्ति सा।
आख्याता रक्त-चामुण्डा देवी योगेश्वरीति च ।।5 ।।
अनया व्याप्तमखिलं जगत्-स्थावर-जङ्गमम्।
इमां यः पूजयेत् भक्त्या स व्यापनोति चराचरम् ।।6 ।।

अर्गला-स्तोत्र-ध्यानम्

नारायणस्य हृदये भवति यथास्ते,
नारायणोऽपि तव हृत्-कमले यथास्ते।
नारायण त्वमपि शैव तथैव पाति,
तौ तिष्ठता हृदि ममापि दयावती श्रीः ।।1 ।।
ॐ ह्रौं ह्रीं क्लीं ॐ क्लीं महा-लक्ष्म्यै नमः।
शाकम्भरी नील-वर्णा नीलोत्पल-विलोचना।
गम्भीर-नाभिस्त्रिवली-विभूषित-तनूदरी ।।2 ।।
सु-कर्कश-समोत्तुङ्ग-वृत्त-पीन-घन-स्तनी ।
मुष्टि-शिलीमुखापूर्णा कमलं कमलालया ।।3 ।।
पुष्प-पल्लव-मूलादि-फलादि-शाक-सञ्चयान्।
काम्यानन्त-रसैर्युक्तान् क्षुद्र-मृत्यु-जरापहान् ।।4 ।।
कार्मुकं च स्फुरत्-कान्तिं विभर्ति परमेश्वरी।
शाकम्भरी शताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकीर्तिता ।।5 ।।

कीलक-ध्यानम्

ॐ च्यरि-शङ्ख-कृपाण-खेट-बाणेषु-धनुः शूलकः तर्जनी दधाना भवति। महिषोत्तमाङ्ग-संस्था नव-दुर्गा श्रियमातनोति। ॐ ह्रौं ह्रीं क्लीं ॐ क्लीं महा-लक्ष्म्यै नमः।

शाकम्भरी .... दुर्गा प्रकीर्तिता ।। (अर्गला-ध्यानवत् श्लोक 2 से 5 तक)

अक्षय्यमश्नुते शीघ्रमन्न-पानादिकं फलं
भीमाऽपि नील-वर्णाभा दंष्ट्रा दशन-भासुरा ।।6 ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रथम चरित-ध्यानम्

ॐ स्कारं वेद-मूलं जित-रिपु-बहुलं श्यामलं वीर-भद्रं,
खंकारं व्योम-केशं घण-घण-निनदं खड्ग-खेटाग्र-हस्तम्।
ॐकारं भीम-नादं हुतवह-नयनं दह्यमानं खिलाशं,
फट्-कारं वज्र-दंष्ट्रं प्रणत-रिपु-जन-प्राण-हन्तारमीड्ये ।।1 ।।

ॐ हुं श्रीं ह्रीं ॐ ह्रीं महा-लक्ष्म्यै नमः।
त्रिगुणा तामसी देवी सात्विकी या त्रिधोदिता।
सा सर्वा चण्डिका दुर्गा भद्रा भगवतीर्यते ।।2 ।।
योग-निद्रा हरेरुक्ता महा-काली तमो-गुणा।
मधु-कैटभ-नाशार्थं यां तुष्टावम्बुजासनः ।।3 ।।
दश-वक्त्रा दश-भुजा दश-पादाञ्जन-प्रभा।
विशालया राजमाना त्रिंशल्लोचन-मालया ।।4 ।।
स्फुरद्-दशन-दंष्ट्रा सा मसि-रूपाऽपि भूमिपा।
रूप-सौभाग्य-कान्तीनां सा प्रतिष्ठा महा-श्रियः ।।5 ।।
खड्ग-बाण-गदा-शूल-शङ्ख-चक्र-भुशुण्डि-भृत्।
परिघं कार्मुकं शीर्षे निश्च्योतद्-रुधिरं दधौ ।।6 ।।
एषा सा वैष्णवी माया महा-काली दुरत्यया।
आराधिता वशी-कुर्यात् पूजा-कर्तुश्चराचरम् ।।7 ।।

मध्यम् चरित-ध्यानम्

ॐ संकारं ... प्राण-हन्तारमीड्ये (प्रथम चरित-ध्यानवत् श्लोक 1) ॐ हुं श्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ श्रीं महा-लक्ष्म्यै नमः। सर्व-देव-शरीरेभ्यो ..... प्रभुर्भवेत् (रहस्यवत्)।

उत्तर-चरित-ध्यानम्

ॐ संकारं ... प्राण-हन्तारमीड्ये (प्रथम चरित-ध्यानवत् श्लोक 1)

चरिते चरिते युग्म-माला जपं कुर्यात्। प्रत्येक चरितस्य पृथक् नवार्ण-मन्त्रः ज्ञातव्यः। यथा - (1) ॐ क्रीं ऐं महा-काल्यै विच्चे, (2) ॐ श्रीं ह्रीं महा-लक्ष्म्यै विच्चे, (3) ॐ ऐं क्लीं सरस्वत्यै विच्चे।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ सप्तशती-पूजा-विधिः ।।

श्रीगणेशाय नमः।। श्रीगुरुभ्यो नमः।। श्रीदुर्गायै नमः।। श्रीशिवाम्बायै नमः।। ॐ अस्य श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-महाचण्डी-चामुण्डा-महाचण्डी-त्रिगुणात्म-मूर्ति-दुर्गाम्बाया आवाहन-महा-मन्त्रस्य ॐ श्रीब्रह्म-विष्णु-महेश्वरा ऋषयः। ॐ गायत्र्युष्णिगनुष्टुभछन्दांसि। श्रीत्रिगुणात्मक-मूर्ति-दुर्गाम्बा देवता। ॐ प्रणवः बीजं। ॐ ह्रीं दुं दुर्गाम्बा शक्तिः। ॐ स्वाहा कीलकं श्रीत्रिगुणात्मक-मूर्ति-दुर्गाम्बाया आवाहने विनियोगः ।।

ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ नमः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ नमः तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ नमः मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ नमः अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ नमः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ नमः हृदयाय नमः।

ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ नमः शिरसे स्वाहा।

ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ नमः शिखायै वषट्।

ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ नमः कवचाय हुँ।

ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ नमः नेत्र-त्रयाय वौषट्।

ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ऐं ॐ नमः अस्त्राय फट्।

'ॐ भूर्भुवः स्वरोम्' से दिग्बन्धन कर भगवती दुर्गा का ध्यानादि करें। यथा :-

ॐ क्लीं सिंहस्था शशि-शेखरा मकरत-प्रख्या चतुर्भिर्भुजैः,
शङ्खं चक्र-धनुः शराँश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता।
आमुक्ताङ्गद-हार-कङ्कण-रणत्काञ्ची-रणन्नूपुरा,
दुर्गा-दुर्गति-हारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला ।।1 ।।
ॐ क्लीं विद्युद्दाम-सम-प्रभां मृगपति-स्कन्ध-स्थितां भीषणां,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कन्याभिः करवाल-खेट-विलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्र-गदासि-खेट-विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं,
विभ्राणामनलात्मिकां शशि-धरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ।।2 ।।
ॐ क्लीं ध्यायेन्नित्यां महा-देवीं मूल-प्रकृतिमीश्वरीम्।
ब्रह्म-विष्णु-शिवादीनां पूज्यां वन्द्यां सनातनीम् ।।3 ।।
ॐ क्लीं दुर्गे देवि! पूजा-ग्रहणार्थं इहागच्छ दुर्गाम्बे! सुरेश्वरि ।।4 ।।
ॐ क्लीं ऐह्येहि देव-देवेशि! त्रिपुरे! देव-पूजिते!
परामृत-प्रिये! शीघ्रं सान्निध्यं कुरु सिद्धिदे ।।5 ।।
ॐ क्लीं सर्व-देव-देवेशि! प्रेम-भक्ति-सुलभे!
सर्वावरण-संयुते! यावत्त्वां पूजयिष्यामि,
प्रथम-मध्यमोत्तम-चरितस्य पारायणेन आराधयामि,
तावत्त्वं दुर्गाम्बा सुस्थिरा भव ।।6 ।।
ॐ क्लीं दुर्गे देवि! इहागच्छ सान्निध्यमिह कल्पय।
पूजा-ग्रहणार्थं त्वं योगिनी-कोटिभिः सह ।।7 ।।

ॐ क्लीं दुर्गे देवि! आवाहिता भव।। क्लीं स्थापिता भव।। क्लीं सन्निरुद्धा भव।। ॐ श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती श्रीमन्महाकाल-सहिता दक्षिण-कालिका महाचण्डी-चामुण्डा-त्रिगुणात्मक-मूर्ति-दुर्गाम्बा साङ्गा सपरिवारा सायुधा सवाहना सर्व-शक्ति-सहिता बटुक-भैरव-सहिता क्लीं सुप्रतिष्ठिता भव।। क्लीं वरदा भव।। क्लीं सुख-शान्तिदा भव।।

योनि-मुद्रा प्रदर्शित कर प्रार्थना-पूर्वक आवाहन करें :-

ॐ क्लीं स्वागतं देव-देवेशि! मद्भाग्यात्वमिहागता।
प्राकृतं दृष्ट्वा दुर्गे देवि! त्वं मां बाल-वत् पुत्रवत्परिपालय ।।8 ।।

ॐ ह्रीं दुं दुर्गा-देवि! क्लीं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं मम हृदये चिरं तिष्ठ, चिरं तिष्ठ दुर्गाम्बा-शिवाम्बा सुरेश्वरि!

ॐ क्लीं हे मातरस्यामर्चायां सन्निरुद्धा भवाम्बिके!
ॐ क्लीं दुर्गाम्ब! बटुक-भैरव-सहिते! इहागच्छ त्वत्प्राणाश्चाधः।
प्राणैः सहाच्युते! इहागच्छ दुर्गाम्ब! त्वरितमत्रैव सर्व-शक्तयः ।।9 ।।
ॐ क्लीं दुर्गाम्ब! सर्वेन्द्रियाधिदेवतास्ता इहागच्छतु चण्डिके!

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इहागच्छतु शिवाम्बा सर्व-शक्ति-सहिता सहेश्वरा ।।10।।

ॐ क्लीं स्वागतं ते भवत्वंब! शिव-लोकात् शिव-प्रिये!

प्रसादं कुरु मां भद्र-कालि! नमोऽस्तु ते ।।11।।

ॐ क्लीं धन्योऽहं कृत-कृत्योऽहं सफलं जीवनं मम् ।

आगतासि यतो मातर्महिश्वरि! ममालयंम्।।12।।

ॐ क्लीं हस्त-न्यस्त-वराम्बुजाभय गदां मुक्ताभृतांभोरुहैर्युक्तामम्बुज-पुंज-पिंजर-परां विद्युत्प्रभा-सन्निभाम्। प्रातः पूष-मयूख-मण्डल-वलद् व्योमानुकारांबरां लक्ष्यालक्ष्य-विलोल-लोचनवतीमावाहयामीश्वरीम् ।।13।।

ॐ क्लीं बाणाम्भोरुह-पुस्तकाक्ष-वलयैः स्फूर्जत्कराम्भोरुहैर्लाक्षा-कौस्तुभ-शुद्धकाधर-दलैर्विभ्राजतीं शारदाम्। वाग्देवीमरविंद-सुन्दर-दृशां कर्पूर-कुन्दोज्ज्वलां दुग्धाम्भोनिधि-सुन्दराभर-वरामावाहयेद्भारतीम् ।।14।।

अब पुस्तक पूजन का पूजन करें :-

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवाय सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

(वाराहीतन्त्र तथा चिदम्बरसंहिता)

इसके बाद शाप-विमोचन का पाठ करें ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। शाप-विमोचनम् ।।

ॐ अस्य श्रीचण्डिकाया ब्रह्म-वशिष्ठ-विश्वामित्र-शाप-विमोचन-मन्त्रस्य वशिष्ठ-नारद-प्रभृतऋषयः सर्वैश्वर्य-कारिणी श्रीदुर्गा देवता, चरित-त्रयं बीजं, ह्रीं शक्तिः, त्रिगुणात्म-स्वरूप-चण्डिका-शाप-विमुक्तये मम सङ्कल्पित-कार्य-सिद्ध्यर्थं जंपे विनियोगः।

ॐ ह्रीं रीं रेतः-स्वरूपिणि! मधु-कैटभ-मर्दिनी !
ब्रह्म-वशिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव ।।1।।

ॐ श्रीं बुद्धि-स्वरूपिणि! महिषासुर-सैन्य-नाशिनी !
ब्रह्म-वशिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव ।।2।।

ॐ रं रक्त-स्वरूपिणि! महिषासुर-मर्दिनीं !
ब्रह्म-वशिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव ।।3।।

ॐ क्षुं क्षुधा-स्वरूपिणि! देव-वन्दिते !
ब्रह्म-वशिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव ।।4।।

ॐ छां छाया-स्वरूपिणि! धूम्रलोचन-घातिनी !
ब्रह्म-वशिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव ।।5।।

ॐ शं शक्ति-स्वरूपिणि! चण्ड-मुण्ड-क्षय-कारिणी!
ब्रह्म-वशिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव ।।6।।

ॐ तृं तृषा-स्वरूपिणि! चण्ड-मुण्ड-क्षय-कारिणि !
ब्रह्म-वशिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव ।।7।।

ॐ क्षां क्षान्ति-स्वरूपिणि! रक्तबीज-क्षय-कारिणी !
ब्रह्म-वशिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव ।।8।।

ॐ जां जाति-स्वरूपिणि! निशुम्भ-क्षय-कारिणि !
ब्रह्म-वशिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव ।।9।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ लं लज्जा-स्वरूपिणि! शुम्भ-क्षय-कारिणि !
ब्रह्म-वशिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव ।।10।।

ॐ शां शान्ति-स्वरूपिणि! देव-स्तुत्यै !
ब्रह्म-वशिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव ।।11।।

ॐ श्रं श्रद्धा-स्वरूपिणि! सकल-फल-दात्रि !
ब्रह्म-वशिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव ।।12।।

ॐ कां कान्ति-स्वरूपिणि! राज-वर-प्रदे!
ब्रह्म-वशिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव ।।13।।

ॐ मां मातृ-स्वरूपिणि! अनर्गल-महिम-सहिते !
ब्रह्म-वशिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव ।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गे! सं सर्वैश्वर्य-कारिणि !
ब्रह्म-वशिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव ।।15।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिवे! अभेद्य-कवच-स्वरूपिणि !
ब्रह्म-वशिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव ।।16।।

ॐ क्रीं कालि! कालि! फट् स्वाहे ऋग्वेद-स्वरूपिणि !
ब्रह्म-वशिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव ।।17।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-स्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गा-देव्यै नमः ।।18।।

अस्यैवं हि महा-मन्त्रान् पठित्वा परमेश्वरः!
चण्डी-पाठं दिवा-रात्रौ कुर्यादिव न संशयः ।।19।।

एवं मन्त्रं न जानाति चण्डी-पाठं करोति यः।
आत्मानं चैव दातारं क्षीणं कुर्यान्न संशयः ।।20।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पूजाविधिः

अथ कर्त्तव्यता :-

सन्मौहूर्तिकनिर्दिष्ट बेलायां कृतनित्यक्रियो यजमानः गुरुं गणपतिं ध्यात्वा सम्भारान्सम्भृत्य हविष्याशी कम्बलाद्यासनेषूपविश्य पवित्रपाणिः देवं पुरतः संस्थाप्य आचम्य प्राणानायम्य-

आचमनम् :-

ॐ ऐं आत्मतत्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ ह्रीं विद्यातत्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ क्लीं शिवतत्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे सर्वतत्वं शोधयामि नमः स्वाहा।

(हस्तप्रक्षालनम्)

प्राणायामम् :-

दक्षिणहस्ताङ्गुष्ठेन दक्षनासापुटं निरुध्य वामनासापुटेन मूलं षोडशवारं जपन् प्राणाख्यवायुमाकृष्य शिरसि सहस्रारे धारयेदितिपूरकम्।

पुनः दक्षहस्तानामिकातर्जन्यङ्गुष्ठैर्नासापुटद्वयं निरुध्य मूलं चतुषष्टिवारं जपन् कुम्भयेत्। पुनर्दक्षनासापुटाङ्गुष्ठ निरोधनं त्यक्त्वा मूलं द्वात्रिंशद्वारं जपन् शनैशनैस्तद्वायुं रेचयेत् इति प्राणायामत्रयं कुर्यात्।

गुरुस्मरणम् :-

सहस्रारे सर्वदेवदेवं सर्वतीर्थतीर्थं सर्वमङ्गलमांङ्गल्यं परमशिवस्वरूपं गुरोः पादपद्मं ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य पादुकामन्त्रं जपेत् -

गुं गुरुभ्यो नमः, लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि। (कनिष्ठिकाङ्गुष्ठाभ्याम्)
गुं गुरुभ्यो नमः, हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि। (अङ्गुष्ठतर्जनीभ्याम्)
गुं गुरुभ्यो नमः, यं वाय्वात्मकं धूपं आघ्रापयामि। (तर्जन्यङ्गुष्ठाभ्याम्)
गुं गुरुभ्यो नमः, रं वह्न्यात्मकं दीपं सन्दर्शयामि। (अङ्गुमध्यमाभ्याम्)
गुं गुरुभ्यो नमः, वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि। (अङ्गुष्ठानामिकाभ्याम्)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गुं गुरुभ्यो नमः, सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि। (साङ्गुष्ठसर्वाभिरङ्गुलीभिः)

प्रार्थयेत् –

ॐ विहितं विदधेनाथ! विधेयं यत् कृपाकर।
अविरुद्धं भवत्वत्र तत् त्वदीयप्रसादतः।।
नमामि सद्गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम्।
शिरसा योगपीठस्थं मुक्तिकामार्थसिद्धये।।
ज्ञानिनां ज्ञानरूपाय प्रकाशाय प्रकाशिनाम्।
विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शिणाम्।।
पुरस्तात् पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्यामुपर्यधः।
सदाह्यचिन्त्यरूपेण विधेहि भवदासनम्।।

इति श्रीगुरुं प्रणम्य तच्चरणयुगलविगलदमृतधारया आत्मानं प्लुतं सुप्रसन्नं च विभाव्य मनसा तदाज्ञां गृहीत्वा वामे श्रीगुरुपङ्क्तिं दक्षे गणपतिं सम्मुखे श्रीइष्टदेवं ध्यायेत्।

पवित्रधारणम् – (पवित्रकृत हस्तस्य विद्रवन्ति दिशिदश)

ॐ पवित्रेस्त्थो व्वैष्णव्यौसवितुर्व्वः प्प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।।

यथा वज्रं सुरेन्द्रस्य यथा चक्रं हरेस्तथा।
त्रिशूलं च त्रिनेत्रस्य तथा मम पवित्रकम्।।

माङ्गलिकतिलकं भस्मधारणं वा –

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो व्वृद्धश्श्रवाः स्वस्तिनः पूषाव्विश्ववेदाः।
स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽ अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।।
त्र्यायुषञ्जमदग्नेः कश्यपस्यत्र्यायुषम्।
यद्देवेषुत्र्यायुषन्तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषम्।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ भूशुद्धिः

आसनशुद्धिः –

ॐ रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहेति आसनस्थानमभिषिच्य

ॐ पवित्रवज्रभूमे हूं फट् स्वाहेति भूमिमभिमन्त्र्य

ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः

इत्यासनाधः रक्तचन्दनेन कुङ्कुमेन वा त्रिकोणं विलिख्य –

ॐ आसुरेखे वज्ररेखे हूँ फट् स्वाहेति।

ॐ ह्सौं इति प्रेतबीजं मध्ये विलिख्य –

ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः, इति गन्धादिभिः सम्पूज्य –

ॐ अनन्ताय नमः, ॐ विमलासनाय नमः, ॐ पद्मासनाय नमः, ॐ ह्सौं महाप्रेतपद्मासनाय नमः, इति आत्ममन्त्रेणोपविश्य त्रीन् दर्भान् प्रत्येके आसनोपरि निदध्यात्।

ॐ अस्यासनोपवेशनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः, सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां नित्यं पवित्रं कुरु चासनम्।।

(आसनोपरि किञ्चित् जलं क्षिपेत्) पुष्पं दत्वा प्रणमेच्च।

शिखाबन्धनम् :– अभावे कौशीं शिखां ब्रह्मग्रन्थियुतां दक्षकर्णे निदध्यात्)

मानस्तोक इति मन्त्रस्य कुत्सऋषिः जगतीछन्दः एकोरुद्रो देवता शिखाबन्धने विनियोगः।

ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो गोषु मा नोऽ अश्वेषु रीरिषः।
मा नो व्वीरान्रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे।।

वा

ॐ विशुद्ध धर्म गायत्री सर्वपापानि समयाशेषकल्मषान्नाशय हुं फट् स्वाहेति शिखां स्पृष्ट्वा हस्तपादादिकं प्रक्षाल्य दिग्बन्धनं कुर्यात् –

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दिग्बन्धनम् – ॐ रक्षोहा व्विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहते। द्रोणेसधस्त्थमासदत्।।

वा

ॐ सर्वभूत निवारकाय शार्ङ्गाय सशराय सुदर्शनाय अस्त्रराजाय हुं फट् स्वाहा। तालत्रयं कृत्वा स्वस्य परितः सर्वदिक्षु अस्त्र[1]मुद्रां प्रदर्शयेत्।

मूलमन्त्रेण दिव्यदृष्ट्यवलोकनात् विघ्नानुत्सार्य **'अस्त्राय फट्'**[1] इति मन्त्रेण जलेनान्तरिक्षगान् विघ्नानुत्सार्य वामपादाघातत्रयेण भौमान् विघ्नानुत्सार्य **'फट्'** इति सप्तवारजप्तान् सिद्धार्थान् विकिरानादाय –

भूतापसारणम् :–

ॐ सर्वविघ्नानुत्सारय हूं फट् स्वाहा।।

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्।
सर्वेषामविरोधेन दीपदान समारभे।।
यदत्रसंस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु।।
भूतप्रेतपिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः।
स्थानादस्माद्व्रजन्त्वन्यत्स्वीकरोमि भुवंत्विमाम्।।
भूतानि राक्षसा वापि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु यज्ञकर्म करोम्यहम्।।

एतैर्मन्त्रैः सर्वदिक्षु पीतसर्षपान् सिद्धाक्षतान् वा नाराचमुद्रया विकिरेत्।

भूशुद्धिः :– भूरसीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः प्रस्तारपंक्तिश्छन्दो मातृकादेवता भू शुद्धौ विनियोगः।

भूमिं स्पृश्य :– ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि व्विश्वधाया व्विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं ᳪ यच्छ पृथिवीन्दृᳪह पृथिवीम्माहिᳪसीः।।

१. लक्ष्यमभितश्छोटिकां दत्वा दक्षमध्यमातर्जनीभ्यामधिवामकरतलंत्रिस्ताडनेऽस्त्रम्।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वा

ॐ रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।।

भैरवानुज्ञाम् :-

यो भूतानामित्यस्य कौण्डिन्य ऋषि: नारायणोदेवता अनुष्टुप्छन्द: भैरवनमस्कारे विनियोग:।

ॐ योभूतानामधिंपति र्य्वस्मिंल्लोकाऽअधिंश्श्रिता३। यऽईशें महतो महाँस्तेन गृह्णामित्त्वा महम्मयि गृह्णामित्त्वा महम्।।

तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि।। ॐ भैरवाय नम:।।

पुष्पशुद्धि: :-

ॐ शताभिषेके हूं फट् स्वाहा।

ॐ पुष्पे पुष्पे महापुष्पे सुपुष्पे पुष्पसम्भवे।

पुष्पचयावकीर्णे च हूं फट् स्वाहा।। (जलेनाभिषिच्य)

दीपस्थापनम् :-

घृतदीपं सुदर्शनमन्त्रेण पूजयेत् – ॐ रां रीं रूं रैं रौं र: ॐ सहस्रार हुं फट् स्वाहेति।

तैलदीपं पाशुपतास्त्रेण गन्धाक्षतै: सम्पूज्य – ॐ श्लीं पशो हुं फट् स्वाहेति।

हस्तद्वयेन दीपशिखां स्पृष्ट्वा मन्त्रं पठेत् –

ॐ घोराय घोरतमाय महारौद्राय वीरभद्राय ज्वालामालिने सर्वप्राणोपसंहर्त्रे हुं फट् स्वाहेति पठित्वा तत्तेजसाऽत्मानं समर्प्य ॐ ह्रीं स्वाहेति वाक्कायचित्तशोधनं कुर्यात्।

आत्मरक्षणम् :-

हुं फट् स्वाहेति – मुखे, ॐ दुर्गे दुर्गे रक्षिणी स्वाहेति – हृदि

ॐ आं हूं फट् स्वाहेति पञ्चवारं व्यापकं विधाय ह्सौं इति रक्तचन्दनाक्तानि पुष्पाण्यादाय 'ॐ' इति कराभ्यां मर्दयित्वा 'क्लीं' इति मस्तकोपरि भ्रामयित्वा 'ऐं' इति

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वामहस्तेनाघ्राय 'फडिति' नाराच मुद्रया ऐशान्यां क्षिप्त्वा हस्तौ प्रक्षाल्याचामेदिति –

ते सर्वे विलयं यान्तु ये मां हिंसन्ति हिंसकाः।
मृत्युरोगभयक्लेशाः पतन्तु रिपुमस्तके।।

अथ भूतशुद्धिः :–

'रमिति' जलधारया वह्निप्राकारं विचिन्त्य उत्तानौ करौ कृत्वा 'सोऽहमिति' जीवात्मानं हृदयस्थप्रदीपकलिकाकारं मूलाधारस्थित कुलकुण्डलिन्या सह सुषुम्नावर्त्मना मूलाधार स्वाधिष्ठान मणिपूरकानाहत विशुद्धाज्ञारव्य षट्चक्राणि भित्वा शिरोऽवस्थिताधोमुख सहस्रदलकमलकणिकान्तर्गतपरमात्मनि संयोज्य पृथिव्यप्तेजोवायव्याकाशगन्धरसरूपस्पर्शशब्द नासिकाजिह्वा चक्षुस्त्वक्श्रोत्र वाक्पाणिपादपायूपस्थ प्रकृतिमनोबुद्ध्यहङ्काररूप– चतुर्विंशतितत्वानि विलीनानि विभाव्य 'यमि' ति वायुबीजं धूम्रवर्णं वामनासापुटे विचिन्त्य तस्य षोडशवारजपेन वायुना देहमापूर्य (अङ्गुष्ठानामिका कनिष्ठिकाभिः) नासापुटौ धृत्वा तस्य चतुःषष्टिवारजपेन कुम्भकं कृत्वा वामकुक्षिस्थित रक्तवर्णपापपुरुषेण सह देहं संशोध्य तस्य द्वात्रिंशद्वारजपेन दक्षिणनासया वायुं रेचयेत्।

ततो दक्षिणनासापुटे 'रमि' ति वह्निबीजं रक्तवर्णं ध्यात्वा तस्य षोडशवारजपेन वायुना देहमापूर्य नासापुटौ धृत्वा तस्य चतुःषष्टिवारजपेन कुम्भकं कृत्वा पापपुरुषेण सह देहं मूलाधारस्थित वह्निना दग्ध्वा तस्य द्वात्रिंशद्वारजपेन वामनासया भस्मना सह वायुं रेचयेत्।

ततः 'ठमि' ति चन्द्रबीजं शुक्लवर्णं वामनासिकायां ध्यात्वा तस्य षोडशवारजपेन ललाटे चन्द्रं नीत्वा नासापुटौ धृत्वा 'वमि' ति वरुणबीजस्य चतुः षष्टिवारजपेन तस्माल्ललाटस्थचन्द्राद् गलितसुधया मातृकावर्णात्मिकया समस्तं देहं विरच्य 'लमि' ति पृथ्वीबीजस्य द्वात्रिंशद्वारजपेन देहं सुदृढं विचिन्त्य दक्षिणेन वायुं रेचयेत्। ।। इति ।।

अशक्तश्चेत् संक्षेपेण भूतशुद्धिः प्राणप्रतिष्ठा च कार्या –

ॐ भूतशृङ्गाटाच्छिरः सुषुम्नापथेन जीवशिवं परमशिवपदे योजयामि स्वाहा।

ॐ यं लिङ्गशरीरं शोषय शोषय स्वाहा।

ॐ रं सङ्कोचशरीरं दह दह स्वाहा।

ॐ परमशिवसुषुम्नापथेन मूलशृङ्गाटमुल्लसोल्लसज्वलज्वल प्रज्वल प्रज्वल सोहं हंसः स्वाहा।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वा

सप्रव मायाबीजं अष्टोत्तरशतं जपेत्।

आं सोहं मम प्राणा इह प्राणा इह स्थिताः।

आं सोहं मम जीव इह जीव इह स्थितः।

आं सोहं मम सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राणानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

एवं स्वहृदिप्राणान्स्थाप्यदेवतारूपमात्मानं भावयेत्।

॥ इति भूतशुद्धिः॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

॥ अथात्मप्राणप्रतिष्ठा ॥

ॐ अस्य स्व प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वराऋषयः ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि प्राणशक्तिर्देवता आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रों कीलकं स्वशरीरे प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

अथ ऋष्यादिन्यासः –

ॐ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरऋषिभ्यो नमः शिरसि। ॐ ऋग्यजुः सामछन्दोभ्यो नमः मुखे। ॐ प्राणशक्त्यै नमो हृदि। ॐ आं बीजाय नमो गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। ॐ क्रों कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

अथ करन्यासः –

ॐ ङं कं खं घं गं नाभौ वाय्वग्निवार्भूम्यात्मने अङ्गुष्ठाभ्यान्नमः।

(हृदयाय नमः)

ॐ ञं चं छं झं जं शब्दस्पर्शरूपरस गन्धात्मने तर्जनीभ्यान्नमः।

(शिरसे स्वाहा)

ॐ णं टं ठं ढं डं श्रोत्रत्वङ्नयनजिह्वाघ्राणात्मने मध्यमाभ्यान्नमः।

(शिखायै वषट्)

ॐ नं तं थं धं दं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने अनामिकाभ्यान्नमः।

(कवचायहुम्)

ॐ मं पं फं भं बं वक्तव्यादानगमनविसर्गानन्दात्मने कनिष्ठिकाभ्यान्नमः।

(नेत्रत्रयाय वौषट्)

ॐ शं यं रं वं लं हं षं क्षं सं लं बुद्धिमनोहंकारचित्तात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यान्नमः।

(अस्त्राय फट्)

एवं हृदयादि करषडङ्गन्यासान् कृत्वा नाभेरारभ्य पादान्तम् (आँ) इति पाशबीजं स्मरेत्। हृदयारभ्य नाभ्यन्तम् (ह्रीं) इति शक्तिबीजं न्यसेत्।

मस्तकादारभ्य हृदयान्तम् (क्रों) इति सृणिबीजं स्मरेत्।

ॐ यं त्वगात्मने हृदयाय नमः। ॐ रं असृगात्मने दोर्मूलाभ्यां नमः। ॐ लं मांसात्मने

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ग्रीवायै नमः। ॐ वं मेदात्मने कुक्षिभ्यां नमः। ॐ शं अस्थ्यात्मने दक्षिणकराय नमः। ॐ षं मज्जात्मने वामकराय नमः। ॐ सं शुक्रात्मने दक्षिणपादाय नमः। ॐ हं प्राणात्मने वामपादाय नमः। ॐ लं शक्त्यात्मने जठराय नमः। ॐ क्षं बीजात्मने आस्याय नमः।

ॐ यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं इति मूर्द्धादिचरणावधि व्यापकं कुर्यात्। ततः मण्डूकादि परतत्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः।

जयादिशक्तिभ्यो नमः। (इति नत्वा) ॐ आं ह्रीं क्रों पीठाय नमः।

पीठे प्राणशक्तिं देवीं ध्यायेत् :-

पाशंचापा सृक्कपाले श्रृणीषूञ्छूलं हस्तैर्बिभ्रतीं रक्तवर्णाम्।
रक्तोदन्वत्पोतरक्तांबुजस्थां देवीं ध्याये प्राणशक्ति त्रिनेत्राम्।।

हृदये हस्तं निधाय :-

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हंसः सोहं मम प्राणा इह प्राणाः।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हंसः सोहं मम जीव इह स्थितः।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हंसः सोहं मम सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्र जिह्वा घ्राण पाद पायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

इति वारत्रयेण स्वशरीरे प्राणान् प्रतिष्ठाप्य ॐ इति प्रणवेन पञ्चदशावृत्तिं कृत्वा अनेन मम देहस्था दुर्गादेव्याः (अमुकदेवस्य) गर्भाधानादिपञ्चदशसंस्कारान्संपादयामि।

।। इति प्राणप्रतिष्ठा।।

हस्ते अक्षतपुष्पाण्यादाय भद्रसूक्तं पठेत् :-

तन्त्रोक्तम्

ॐ ह्रीं हूं स्वस्तिनः कात्यायन्या। हूँ अपर्णांश्रवा स्वस्तिनः काली ह्रीं मेधा अमृतमयी ह्रीं स्वस्तिनः प्रत्यङ्गिरा देवता दधातु। ह्रीं स्वस्ति ३

ॐ सर्वश्च देवश्च विभीतकश्च प्रभञ्जतां मेरु सुवर्णदायी।
कालोद्भमामास चेन्द्रियं श्रियो विविक्त रागश्च पुनर्भवाय वै।।
ॐ सूर्यः सोमो यमः कालः सन्ध्ये भूतान्यह क्षपा।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पवनो दिक्पतिर्भूमिराकाशं खचरामराः।
ब्राह्मं शासनमास्थाय कल्पध्वमिह सन्निधिम्।।

वा

ॐ आनो भद्द्राः क्क्रतवो यन्तु व्विश्वतो दंब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः। देवानो यथा सदमिद्वृधेऽअसन्नप्प्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे।।१।। देवानां भद्द्रा सुमतिर्क्रजूयतान्देवानां रातिरभिनो निवर्त्तताम्। देवानां सक्ख्यमुपसेदिमा व्वयं देवा नऽआयुः प्प्रातिरन्तु जीवसे।।२।। तान्पूर्व्वया निविदा हूमहे व्वयं भगम्मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम्। अर्य्यमणं व्वरुणः सोममश्विना सरस्वती नः सुभगामयस्क्करत्।।३।। तन्नोव्वातो मयो भुव्वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्।।४।। तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।५।। स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्श्रवाः स्वस्ति नः पूषाव्विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु।।६।। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं य्यावानो व्विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वामनवः सूरचक्षसो व्विश्वे नो देवाऽअवसा गमन्निह।।७।। भद्द्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्द्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्त्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाः सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं य्यदायुः।।८।। शतमिन्नुशरदोऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्क्रा जरसन्तनूनाम्। पुत्रासो यत्र

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पि॒तरो॒ भव॑न्ति॒ मानो॑ म॒द्ध्या रीरिष॒तायु॒र्गन्तो॑ः॥९॥
अदि॑ति॒र्द्यौरदि॑तिर॒न्तरि॑क्षमदि॑तिर्म्मा॒ता स पि॒ता स पु॒त्रः।
विश्वे॑दे॒वाऽअदि॑ति॒ः पञ्च॒जना॒ ऽ अदि॑ति॒र्ज्जातमदि॑ति॒र्ज्जनि॑त्वम्॥१०॥
द्यौ॒ः शान्ति॑र॒न्तरि॑क्ष॒ꣳशान्ति॑ः पृथि॒वी शान्ति॒राप॒ः
शान्ति॒रोष॑धय॒ः शान्ति॑ः। व्वन॒स्पत॑य॒ः शान्ति॒र्व्विश्वे॑दे॒वाः शान्ति॒र्ब्रह्म॒
शान्ति॒ः सर्व॒ꣳशान्ति॒ः शान्ति॑रे॒व शान्ति॒ः सामा॒शान्ति॑रेधि॥११॥
यतो॑ यत॒ः स॒मीह॑से॒ ततो॑ नो॒ ऽ अभ॑यं कुरु। शन्न॑ः कुरु
प्र॒जाब्भ्योभ॑यन्न॒ः प॒शुब्भ्य॑ः॥१२॥ सुशान्तिर्भवतु॥

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ॐ मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः।

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥१॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥२॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥३॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये॥४॥
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥ ५॥
सर्वमङ्गल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥६॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः।।७।।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेंऽघ्रियुगं स्मरामि।।८।।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवर श्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।९।।
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयोभूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।१०।।
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवाः दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः।।११।।
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान्।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थसिद्धये।।१२।।
दुर्गाध्यक्षं गणपतिं श्रीगोविन्दं शिलेश्वरि।
तारकेशं महादेवं हनुमन्तं महाबलिम्।।
भैरवं हर्षनाथश्च पुनीतं गालवाश्रमम्।
पूषणं सततं वन्दे सर्वकार्यार्थसिद्धये।। १३।।

निर्विघ्नमस्तु सङ्कल्पः –

(ह्रीं) विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्यश्रीब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे, वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे गंगादितीर्थसमन्वितभव्यभारतवर्षे नानाविधमहिमामण्डितभरतखण्डे बौद्धावतारे आर्यावर्तैकदेशे अघनाशिनी गंगायमुनातापीनर्मदामहीसाभ्रमेत्यादि नदीनां विलसिते नर्मदाया उत्तरतटे अर्बुदारण्यक्षेत्रे राजस्थान प्रदेशे (गालवाश्रम पश्चिमभागे जयपत्तने) देवगुरुब्राह्मणानां चरणसन्निधौ स्वायंभुवादि मन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृतत्रेताद्वापरकलिसंज्ञकानां चतुर्णां युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमचरणे बौद्धावतारे प्रभवादि षष्टिसम्वत्सराणां मध्ये वर्तमाने अमुकनाम्नि सम्वत्सरे अमुक वैक्रमाब्दे विक्रमादित्यराज्यात् अमुकशकाब्दे अमुकायने

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये शेषेषु ग्रहेषु यथायथं राशिस्थानस्थितेषु एवं गुणगणविशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यवेलायां अमुकगोत्रः अमुकोऽहं ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं सकलमनईप्सितकामना संसिध्यर्थं लोकेसभायां राजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजयलाभादि प्राप्त्यर्थं इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदुरितोपशमनार्थं मम सभार्यस्य सपुत्रस्य सबान्धवस्य अखिलकुटुम्बसहितस्य सपशोः समस्तभयव्याधि जरापीडामृत्युपरिहारद्वारा आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं स्थिरलक्ष्मी कीर्तिलाभ शत्रुपराजय सर्वपापनिरसनसकलावाप्ति सकलसुख जन्मकुण्डल्यां वर्षकुण्डल्यां वा सहगोचरे अनिष्टग्रहशान्त्यर्थं भूतप्रेत वैतालजन्यदोषोपशान्त्यर्थं अभिचार क्रिया उपशान्तिहेतवे सर्वविघ्नबाधा दुरितक्षयपूर्वकं देव–दनुज–मनुज कृतसकलकृत्यदोषोपशमनार्थं चतुर्विध पुरुषार्थसिध्यर्थं अमुकदेवताप्रीत्यर्थं अमुकदेवस्य पूजनं हवनञ्च अहं करिष्ये। अन्यार्थे करिष्यामीति विशेषः।

तदङ्गत्वेन गणपत्यादिपूजनं स्वस्तिवाचनं मातृकापूजनं वसोर्धारापूजनं नान्दीश्राद्धं सनवग्रह कलशस्थापनं आचार्यादिब्राह्मणानां वरणानि च करिष्ये।

कर्मपात्रपूजनम् –

तत्त्वायामीत्यस्य शुनः शेप ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः वरुणोदेवता वरुणावाहने विनियोगः।

ॐ तत्त्वां यामि ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो व्वरुणेह बोद्ध्युरुशꣳस मानऽ आयुः प्रमोषीः॥

मा क्लेदं मा च दौर्गन्ध्यं वैरस्यं मा मुखेऽस्तु मे।
वरुणो वारुणी भर्ता वरदोऽस्तु सदा मम॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि स्थापयामि। मनोजूतिरिति प्रतिष्ठापनम्।

ॐ अपाम्पतये वरुणाय नमः, पञ्चोपचारैः सम्पूज्य।

अनामिकया कलशमभिमन्त्रयेत् –

**कलशस्य मुखे विष्णु कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥**

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बु समाश्रिताः।
गायत्री चात्र सावित्री शान्तिः पुष्टिकरा तथा।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु।।
ब्रह्माण्डोदर तीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे।
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर।।

क्रौं इति अङ्कुश[1]मुद्रया सूर्यमण्डलात् सर्वाणि तीर्थान्यावाह्य वम् इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य हुम् इति कवचेनावगु[2]ण्ठ्य फट् इत्यस्त्रेणसंरक्ष्य मत्स्य[3]मुद्रयाऽच्छाद्य मूलेनाष्टवारमभिमन्त्र्य तस्मादुदकादुदकं गृहीत्वा पूजासामग्रीं स्वात्मानं च संप्रोक्षेत्।

ॐ अपवित्रः पवित्रोवेत्यस्य वामदेवऋषिर्गायत्रीछन्दो विष्णुर्देवता शरीरादि पवित्रकरणे विनियोगः।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु। ३

******

१. हस्तं मुसलवकृत्वा मुष्टिमाबध्य तर्जनीम्। प्रसार्य सङ्कुचेत्सेयं मुद्रा स्यादङ्कुशाभिधा।।
२. सव्यहस्त कृता मुष्टि दीर्घाधोमुख तर्जनी। अवगुण्ठन मुद्रेयमभितो भ्रामिता भवेत्।।
३. दक्षिणकरस्य पृष्ठे वामकरतलमथ विन्यस्य।
सम्यक् चलिताङ्गुष्ठौ कुर्यान्मत्स्य स्वरूपिणीम्।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ गणपतिपूजनम्[1] ।।

ध्यानम् –

द्वे भार्ये सिद्धिबुद्धि तदनुसहचरौ वृद्धिसिद्धिप्रियौ च
द्वौ पुत्रौ लक्षलाभौ वसुदलरचिते मण्डले कल्पवृक्षः।
गेहे यस्य प्रभूता मृगमदतिलकाः सिद्धयः प्रोल्लसन्ति
भूयात् भूत्यै गणेशः कलिवनदहनो विघ्नविच्छेदको नः।।

ॐ गावऽउपावतावतम्मही यज्ञस्य रप्सुदा। उभा कर्ण्णा हिरण्ण्यया।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, ध्यानार्थे पुष्पं समर्पयामि।

आवाहनम् –

आवाहयेत्तं गणराजदेवं रक्तोत्पलाभासमशेषवन्द्यम्।
विघ्नान्तकं विघ्नहरं गणेशं भजामि रौद्रं सहितं च सिद्ध्या।।

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्व्रातेभ्यो व्व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्विरूपेभ्यो व्विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः सेनाभ्यः।।

ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, आवाहनार्थे अक्षतान्समर्पयामि।

प्रतिष्ठापनम् –

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं य्यज्ञ समिमन्दधातु। व्विश्वेदेवा सऽइह मादयन्तामो ३म्।। प्रतिष्ठ।।

अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपति इहागच्छ इह तिष्ठ सुप्रतिष्ठितो भव।

१. गणपतिपूजनं 'सर्वकाम समृद्ध्यर्थमाद्ये पूज्यो विनायकेति' शास्त्रेषुनिर्विकल्पं विहितम्। अम्बिकापूजनं च सम्प्रदायानुरोधेन कुत्रचिद्भवतिकुत्रचिन्न भवति।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आसनम् –

ॐ आसीनासोऽअरुणीनामुपस्थे रयिन्धत्त दाशुषे मर्त्त्याय।
पुत्रेभ्यः पितरस्तस्यव्वस्वः प्प्रयच्छतऽइहोर्ज्जन्दधात।।
रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्।
आसनं च मया दत्तं गृहाण गणनायक।।
ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

पाद्यम्[१] –

ॐ हिरण्यश्रृङ्गो योऽअस्यपादा मनोजवाऽअवरऽइन्द्रऽआसीत्।
देवाऽइदस्य हविरद्यमायन्योऽअर्व्वन्तम्प्रथमोऽअद्ध्यतिष्ठत्।।
गौरीसुत नमस्तेस्तु शङ्करप्रियसूनवे।
पाद्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः फलैः।।
ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः पादयोः, पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्[२] –

ॐ हिरण्यपाणि मूतये सवितारमुपह्वये। स चेत्ता देवता पदम्।।
ताम्रपात्रस्थितं तोयं गन्धपुष्पफलान्वितम्।
सहिरण्यं ददाम्यर्घं गृहाण गणनायक।।
ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्[३] –

ॐ अहाव्यग्ने हविरास्ये ते स्रुचीव घृतञ्चम्वीव सोमः।
व्वाजसनिंद्दरयिमस्मे सुवीरम्प्रशस्तन्धेहि यशसम्बृहन्तम् ।।
सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धिनिर्मलं जलम्।
आचम्यार्थं मया दत्तं गृहाण गणनायक।।
ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

१. दूर्वाश्चविष्णुक्रान्तां च श्यामाकं पद्ममेव च। पाद्याङ्गानि च चत्वारि कथितानि समासतः।।
२. आपः क्षीरं कुशाग्राणि दध्यक्षततिलास्तथा। यवाः सिद्धार्थकाश्चैव अर्घ्योष्टाङ्ग प्रकीर्तितः।।
३. कर्पूरमगुरुं पुष्पं दद्याज्जातीफलं मुने। लवङ्गमपि कङ्कोलंशस्तमाचमनीयके।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्नानम्[1] –

ॐ अपोदेवा मधुमतीरगृब्भ्णन्नूर्ज्जस्वती राजस्वश्चितानाः।
याभिर्म्मित्रा वरुणावब्भ्यषिंञ्चन्या भिरिन्द्रमनयन्नत्त्यरातीः।।

कावेरी नर्मदा वेणी तुङ्गभद्रा सरस्वती।
गङ्गा च यमुनातोयं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः स्नानं समर्पयामि। आच०।

वा

एतानि पाद्यार्घ्याचमनीय स्नानीय पुनराचमनीयानि समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम् :–

ॐ तेजोसि तेजो मयि धेहि व्वीर्य्यमसि व्वीर्य्यम्मयि धेहि बलमसि बलम्मयि धेह्योजोस्योजो मयिधेहि मन्युरसि मन्युम्मयि धेहि सहोसि सहो मयि धेहि।।

पयोदधि घृतं चैव मधुशर्करयायुतम्।
पञ्चामृतेन स्नपनात् प्रीयतां गणनायकः।।

ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम् :–

ॐ यत्ते पवित्रमर्च्चिष्यग्ने व्वितंतमन्तरा। ब्रह्मतेन पुनातु मा।।

स्नानार्थे तव देवेश पवित्रं तोयमुत्तमम्।
तीर्थेभ्यश्च समानीतं गृहाण गणनायक।।

ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः शुद्धोदकस्नानं सम०। आच०।

वस्त्रोपवस्त्रम् :–

ॐ सीसेन तन्त्रम्मनसा मनीषिणऽऊर्ण्णा सूत्रेण कवयो व्वयन्ति।
अश्विना यज्ञꣳसविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं व्वरुणोभिषज्ज्यन्।।

रक्तवस्त्रमिदं देव देवाङ्गसदृश प्रभो।
सर्वप्रदं गृहाण त्वं लम्बोदर हरात्मज।।

ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः वस्त्रं समर्पयामि। आच०।

१. अक्षतागन्धपुष्पाणि स्नानपात्रे तथा त्रयम्।
द्रव्याभावे प्रदातव्याः क्षालितास्तण्डुलाः शुभाः।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यज्ञोपवीतम् :-

ॐ यज्ञो देवानाम्प्रत्यैति सुम्म्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।
आ वो व्वार्ची सुमतिर्व्ववृत्यादहोश्चिद्या व्वरिवोवित्तरासत्।।
"यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्यत्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।।"
ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि। आच०।

गन्धम् :-

ॐ यदूवंद्ध्यमुदरस्यापवाति यऽआमस्यक्क्रविषो गन्धोऽअस्ति।
सुकृता तच्छमितारः कृण्णवन्तूत मेधःशृतपाकम्पचन्तु।।
श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, गन्धं समर्पयामि।

अक्षतम् :-

ॐ व्वाजोनोऽअद्द्य प्प्रसुवाति दानँ व्वाजो देवा २ँ।। ऽऋतुभिः कल्पयाति।
व्वाजो हि मा सर्व्ववीरञ्जजान व्विश्वाऽआशा व्वाजपतिर्ज्जयेयम्।।
रक्ताक्षतांश्च देवेश गृहाण द्विरदानन।
ललाटपटले चन्द्रस्तस्योपर्यवधार्यताम्।।
ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि :-

ॐ याऽओषधीः सोमराज्ञीर्व्विष्ठिताः पृथिवीमनु।
बृहस्पतिं प्प्रसूताऽअस्यै सन्दत्त व्वीर्य्यम्।।
सुगन्धीनि च पुष्पाणि धत्तूरादीनि च प्रभो।
विनायक नमस्तुभ्यं गृहाण परमेश्वर।।
ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, पुष्पाणि पुष्पमालां च समर्पयामि।

दूर्वाङ्कुरान् :-

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्व्वे प्प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान्मङ्गल प्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक।।
ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

बिल्वपत्रम् :-

ॐ याऽओषधीः पूर्व्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा।
मनैनु बब्भ्रूणामहक्शतन्धामानि सप्त च ।।
त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः।
तव पूजां करिष्यामि गृहाण परमेश्वर।।
ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

अलङ्करणम् :-

ॐ सन्त्वमग्ने सूर्यस्य व्वर्च्चसागथाः समृषीणाᳬस्तुतेन।
सम्प्रियेण धाम्ना समहमायुषा सँव्वर्च्चसा सम्प्रजया सहरायस्पोषेणग्मिषीय।।
स्वभावसुन्दराङ्गाय नानाशक्त्याश्रयाय ते।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चित।।
ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, आभूषणं समर्पयामि।

सिन्दूराभरणम् :-

ॐ सिन्धोरिवप्प्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्प्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धाराऽअरुषो न व्वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः।।
उद्यद्भास्करसंकाशं सन्ध्यावदरुण प्रभो।
वीरालङ्करणं दिव्यं सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, सिन्दूराभरणं समर्पयामि।

परिमलद्रव्याणि :-

ॐ अहिरिवभोगैः पर्य्येति बाहुञ्ज्याया हेतिम्परिबाधमानः।
हस्तघ्नो व्विश्वा व्वयुनानि व्विद्वान्पुमान्पुमांᳬसम्परिपातु व्विश्वतः।।
अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च।
अबीरेणार्चितो देव अतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।
ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, परिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सुगन्धिद्रव्यम् :–

ॐ त्र्यम्बकं य्यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्द्धनम्।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।
स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकेश्वर दयानिधे।
भक्त्या दत्तं मयादेव स्नेहं ते प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, सुगन्धितद्रव्यं समर्पयामि।

धूपम्[1] :–

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तन्धूर्व्व तँय्योस्म्मान्धूर्व्वतितन्धूर्व्व यँव्वयन्धूर्व्वामः।
देवानामसि व्वह्नितमꣳसस्न्नितमम्पप्प्रितमञ्जुष्ट्ट तमन्देवहूतमम्।।
दशाङ्गं गुग्गुलं धूपमुत्तमं गणनायक।
गृहाण सर्वं देवेश उमापुत्र नमोस्तु ते।।
ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, धूपमाघ्रापयामि।

दीपम् :–

ॐ चन्द्रमाऽअप्स्वन्तरा सुपण्णो धावते दिवि।
रयिम्पिशङ्गम्बहुलम्पुरुस्पृहꣳहरिरेतिकनिक्क्रदत्।।
सर्वज्ञ सर्वलोकेश सर्वेषान्तिमिरापह।
गृहाण मङ्गलं दीपं रुद्रप्रिय नमोस्तु ते।।
ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, दीपं सन्दर्शयामि। हस्तप्रक्षालनम्।

नैवेद्यम् :–

ॐ अन्धस्त्थान्धोवो भक्षीय महस्त्थ महो वो भक्षीयोर्ज्जस्त्थोर्ज्जं व्वोभक्षीय
रायस्प्पोषस्त्थ रायस्प्पोषँव्वो भक्षीय।।
नमो मोदकहस्ताय भालचन्द्राय ते नमः।
नैवेद्यं गृह्यतां देव सङ्कटं मे निवारय।।
धेनुमुद्रयाअमृतीकृत्यग्रासमुद्रयापश्चप्राणाहुतीदद्यात्।
ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, नैवेद्यं समर्पयामि।

१. न भूमौ वितरेद् धूपं नासने न घटे तथा।
यथा तथाऽऽधारगतं कृत्वा तं विनिवेदयेत्।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मध्ये पानीयं सम०। हस्तप्रक्षालनार्थे जलं सम०। मुखप्रक्षालनार्थे जलं सम०। करोद्वर्तनार्थे गन्धमनुलेपयामि।

ऋतुफलम् :-

ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वहंसः।।

नारिकेलश्च नारङ्गं कदम्बं मातुलिङ्गकम्।
द्राक्षाखर्जूरदाडिम्बं गृहाण गणनायक।।

ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, ऋतुफलं समर्पयामि।

ताम्बूलं :-

ॐ उतस्मास्यद्द्रवं तस्तुरण्यतः पर्ण्णन्नवेरनुवाति प्प्रगर्द्धिनः।
श्येनस्येवद्ध्रजतोऽअङ्क सम्परिं दधिक्क्राव्णः सहोर्ज्जातरित्रतः स्वाहा।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।।
एलादिचूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, मुखवासार्थे ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणाम् :-

ॐ यद्दत्तँ य्यत्परादानँ य्यत्पूर्तं य्याश्च दक्षिणाः।
तदग्निर्व्वैश्वकर्म्मणः स्वर्द्देवेषु नो दधत्।।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
तेन प्रीतो गणाध्यक्ष भव सर्वफलप्रद।।

ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि।

नीराजनम् :-

ॐ ये देवासो दिव्व्येकादशस्त्थ पृथिव्व्यामद्ध्येकादशस्त्थ।
अप्सुक्षितो महिनैका दशस्त्थते देवासो यज्ञमिमञ्जुषद्ध्वम्।

कर्पूरपूरेण मनोहरेण सुवर्णपात्रान्तरसंस्थितेन।
प्रदीप्तभासा सह संगतेन नीराजनं दैवत ते प्रकुर्वे।।

ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मन्त्रपुष्पम् :-

ॐ समिद्धेऽअग्नावधि मामहानऽउक्थपत्रऽईड्यो गृभीतः।
तप्तङ्घर्म्मम्परिगृह्या यजन्तोर्ज्जा यद्यज्ञमयजन्तदेवाः।।

विनायकेशतनय गजराज सुरोत्तम।
देहि मे सकलान्कामान् सर्वसिद्धिप्रदायक।।

ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः मन्त्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा :-

ॐ एकस्मै स्वाहा द्वाभ्याᳫ स्वाहा शताय स्वाहैकशताय स्वाहा व्युष्ट्यै स्वाहा स्वर्ग्गाय स्वाहा।।

विघ्नेश्वर विशालाक्ष सर्वाभीष्ट फलप्रद।
प्रदक्षिणां करोमि त्वां सर्वान्कामान् प्रयच्छ मे।।

ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।

विशेषार्घ्यम् :-

ॐ हिरण्यपाणि मूतये सवितारमुपह्वये। स चेत्ता देवता पदम्।।

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्षत्रैलोक्यरक्षक।
भक्तानामभयं कर्ता त्राताभव भवार्णवात्।।
द्वैमातुर! कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो!
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद।।
अनेन फलदानेन फलदोऽस्तु सदा मम।।
रूपं बलं श्रियं देहि यशोवीर्यं गजानन।
मेधां प्रज्ञां तथा कीर्तिं विघ्नराज नमोऽस्तु ते।।

ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, विशेषार्घ्यफलं समर्पयामि। आचमनम्।

प्रार्थयेत् :-

स्वर्गे वसन्तं शुभदं सुरेशं,
भुक्तिप्रदं मुक्तिकरं च नित्यम्।
ध्यायामि देवं निजकार्यहेतौ,
दान्तं च कान्तं वरदं सुसत्वम्।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वृन्दारकादिनिजसज्जन पूज्यपादात्,
वेदान्तवेद्यवदनात् प्रणवस्वरूपात् ।
श्रीशैलराजतनयागंजभावरूपात्,
गौरीसुतात् किमपि तत्त्वमहं न जाने ।।
नमस्तस्मै गणेशाय ब्रह्मविद्याप्रदायिने ।
यस्यागस्तायते नाम विघ्नसागरशोषणे ।।
विघ्नराज नमस्तेऽस्तु उमापुत्राघनाशन ।
यदुद्दिश्य कृतं तेऽस्तु मयाभक्त्या प्रपूजनम् ।
तेन तुष्टो मयाप्याशु सर्वान्कामान् प्रपूरय ।
विघ्नान्नाशय मे सर्वान्दुर्ग्रहादिभिरागतान् ।।
त्वत्प्रसादेन कार्याणि सर्वाणीह करोम्यहम् ।
शत्रूणां बुद्धिनाशार्थं मित्राणामुदयाय च ।।
ॐ भू० श्रीमन्महागणाधिपतये नमः, प्रार्थनापूर्वक नमस्कारान् समर्पयामि ।।

क्षमापनम् :-

क्षमस्वविघ्नाधिपते मदीयान्सदापराधान् विविधस्वरूपान् ।
भक्तिं मदीया सफलं कुरुष्व संप्रार्थयामि मनसा गणेशम् ।।
प्रदक्षिणीकृत्य कृतप्रणामस्त्वां प्रार्थये नाथ सकृत्सकामः ।
त्वदीयवासे मयि दासदासे पीयूषवृष्टिं खलु देहि दृष्टिम् ।।
गणेशपूजने कर्म यन्न्यूनमधिकं कृतम् ।
तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम ।।

अर्पणम् :-

अनेन यथामिलितोपचारद्रव्यैः कृतपूजनेन श्रीमन्महागणाधिपतिः प्रीयताम् ।।

।। इति ।।

******

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ कलशस्थापनं स्वस्तिवाचनञ्च ।।

भूस्पर्श :-

ॐ मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः ।।

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
धारय त्वमिमं कुम्भं दीपदानं करोम्यहम् ।।

धान्यविकिरणम् :-

ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा।
यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तꣳराजन्पारयामसि ।।
यवोऽसि धान्यराजस्त्वं सर्वोत्पत्तिकरः शुभः।
प्राणिनां जीवनोपायः कलशाधः क्षिपाम्यहम् ।।

कलशस्थापनम् :-

ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्ज्जा निवर्त्तस्व सा नः सहस्रन्धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्माविशताद्रयिः ।।

कलाकला हि देवानां दानवानां कलाकला।
संगृह्य निर्मितो यस्मात् कलशस्तेन कथ्यते ।।

कलशेजलपूरणम् :-

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्त्थो वरुणस्यऽऋतसदन्न्यसि वरुणस्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद ।।

आपस्त्वमसि देवेश ज्योतिषां पतिरव्ययम्।
प्राणिनां जीवनोपायः कलशे पूरयाम्यहम् ।।

सर्वगन्धप्रक्षेपः :-

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुगन्धाय कलशे संक्षिपाम्यहम् ।।

सर्वौषधिप्रक्षेपः :-

ॐ याऽओषधीः पूर्व्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा।
मनैनु बब्भ्रूणामहꣳशतन्धामानि सप्त च ।।
सर्वौषध्यः सुगन्धाढ्यो दिव्यवृष्टिसमुद्भवाः ।
कलशाप्यायनकरा मङ्गलाय क्षिपाम्यहम् ।।

दूर्वाप्रक्षेपः :-

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्व्वे प्प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।
दूर्वे अमृत सम्पन्ने शतमूले शताङ्कुरे ।
शतं मे हर पापानि शतमायुर्विवर्द्धिनी ।।

पञ्चपल्लवप्रक्षेपः[1] :-

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्ण्णेवो व्वसतिष्कृता।
गोभाजऽइत्किला सथ यत्सनवथ पूरुषम् ।।
यज्ञीयवृक्ष सम्भूतान् पल्लवान् सरसाञ्छुभान् ।
अलङ्काराय पञ्चैतान् कलशे संक्षिपाम्यहम् ।।

सप्तमृत्तिकाप्रक्षेपः :-

ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरानिवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्प्रथाः ।।
अश्वस्थानाद् गजस्थानाद् बल्मीकात् सङ्गमाद्ध्रजात् ।
राजद्वाराच्च गोष्ठाच्च मृत्तिकां कलशे क्षिपेत् ।।

---

१. तान्त्रिके – पनसाम्रं तथाऽश्वत्थं बटं बकुलमेव च।
पञ्चपल्लवमुक्तं च मुनिभिस्तन्त्रवेदिभिः ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पूगीफलप्रक्षेपः :-

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वहसः।।

इदं फलं मया सम्यक् संक्षिप्तं कलशे यतः।
तेनायं कलशः सम्यक् फलदश्चास्तु सर्वदा।।

पञ्चरत्नप्रक्षेपः :-

ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे।।

रत्नगर्भाभवेद्भूमि रत्नगर्भाद्यभूधराः।।
कलशे रत्नगर्भास्यात्तस्मादेतान् क्षिपाम्यहम्।।

हिरण्यप्रक्षेपः :- (अलाभे द्रव्यम्)

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।
सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्य फलदं कलशे संक्षिपाम्यहम्।।

वस्त्रयुग्मेन कलशवेष्टनम् :-

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म वरूथमासदत्स्वः।
वासोऽअग्ने विश्वरूपः संव्ययस्व विभावसो।।

शरण्यं सर्वलोकानां लज्जाया रक्षणं परम्।
सुवेशधार वस्त्रं हि कलशे वेष्टयाम्यहम्।।

पूर्णपात्रनिधानम् :-

ॐ पूर्ण्णा दर्व्वि परापत सुपूर्ण्णा पुनरापत।
वस्नेव विक्क्रीणावहाऽइषमूर्ज्जः शतक्रतो।।

धान्यपूर्णमिदं पात्रं स्थापितं कलशे यतः।
तेनायं कलशः पूर्णः पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नारिकेलस्थापनम्[1] :-

ॐ श्रीश्च्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।
इष्णन्निषाणामुम्मंऽइषाण सर्व्वलोकम्मंऽइषाण ।।

श्रीफलं तु शुभं प्रोक्तं सर्वकार्यप्रसाधनम्।
लक्ष्मीदं फलदं शुद्धं कलशे स्थापयाम्यहम्।।

वरुणावाहनम् :-

ॐ तत्त्वा यामि ब्ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्ब्भिः।
अहेडमानो व्वरुणेह बोद्ध्युरुशꣳसमानऽआयुः प्प्रमोषीः।।

मकरस्थं पाशहस्तमर्णसां पतिमीश्वरम्।
आवाहये प्रतीचीशं वरुणं यादसां पतिम्।।

अस्मिन्कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि स्थापयामि। भो वरुण! इहागच्छ इह तिष्ठ सुप्रतिष्ठितो भव। मनोजूतिरिति प्रतिष्ठापनम्।

ॐ अपाम्पतये वरुणाय नमः। पञ्चोपचारैर्यथोपचारैर्वा सम्पूज्य। अनया पूजया वरुणाद्यावाहित देवता प्रीयन्ताम्।

ततः हस्ते अक्षत पुष्पाण्यादाय प्रार्थयेत् :-

देवदानवसंवादे मध्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्राः विश्वेदेवाः सपैतृकाः।।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव।।

१. अधोमुखं शत्रु विवर्द्धनाय ऊर्ध्वस्य वक्त्रं बहुरोगवृद्ध्यै।
प्राचीमुखं वित्तं विनाशाय तस्माच्छुभं सम्मुख नारिकेलम्।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सान्निध्यं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ।।
नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय ।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ।।
पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनी जीवनायक ।
पुण्याहवाचनं[१] यावत् तावत्वं सन्निधो भव ।।

इति सम्प्रार्थयेत् ।

अवनिकृतजानुमण्डलः कमलमुकुलसदृशमञ्जलिं शिरस्याधायाऽनन्तरं दक्षिणेन पाणिना स्वर्णपूर्णकलशं धारयित्वा आशिषः प्रार्थयेत् –

दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च ।
तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु ।।

ॐ त्रीणिं प॒दा व्विचंक्रमे॒ व्विष्णुंर्गोपाऽअदांब्भ्यः। अतो॒ धर्म्माणि धा॒रयंन् ।। तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु । इति यज ० ।

पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्त्विति द्विजाः ।
एवं द्विरपरं शिरसि भूमौ निनयेत् । (ततो ब्राह्मणानां हस्ते)

यज० –

अपां मध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम् ।
ब्राह्मणानां करे न्यस्ता शिवा आपो भवन्तु ते ।। ॐ शिवा आपः सन्तु ।

विप्राः – ॐ सन्तु शिवा आपः । (इत्येवं सर्वत्र प्रतिवचनं दद्युः)

यज० –

लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे ।
सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं तथास्तु नः ।। सौमनस्यमस्तु ।

विप्राः – अस्तु सौमनस्यम् ।

यज० – अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशो बलम् ।
यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम ।। अक्षतञ्चारिष्टं चास्तु ।

१. धर्मकर्मणि माङ्गल्ये संग्रामेऽद्भुदर्शने । सम्पूज्य गन्धमाल्याद्यैर्ब्राह्मणान्स्वस्ति वाचयेत् ।।
पुण्याहवाचनं देवं ब्राह्मणस्य विधीयते । एतदेव निरोङ्कारं कुर्यात् क्षत्रियवैश्ययोः ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विप्राः – अस्त्वक्षतमरिष्टञ्च।

यज० – गन्धाः पान्तु।

विप्राः – सुमङ्गल्यं चास्तु।

यज० – अक्षताः पान्तु।

विप्राः – आयुष्यमस्तु।

यज० – पुष्पाणि पान्तु।

विप्राः – सौश्रियमस्तु।

यज० – सफल ताम्बूलानि पान्तु। विप्राः ऐश्वर्यारोग्यमस्तु।

यज० – दक्षिणाः पान्तु।

विप्राः – बहुदेयं चास्तु।

यज० – दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयोवित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चाऽऽयुष्यं चास्तु। विप्राः तथास्तु।

यज० – यं कृत्वा सर्ववेद यज्ञक्रियाकरणकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्त्तन्ते तमहमोङ्कारमादिं कृत्वा यजुः आशीर्वचनं बहुऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये। विप्राः वाच्यताम्।

ॐ द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्रचतिष्ठत। नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत॥ सविता त्वा सवानांᳬसुवतामग्निर्गृहपतीनाᳬसोमो व्वनस्प्पतीनाम्। बृहस्पतिर्व्वाचऽइन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुब्भ्यो मित्त्रः सत्यो व्वरुणो धर्म्मपतीनाम्॥ नतद्रक्षाᳬसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजᳬह्येतत्। यो बिभर्ति दाक्षायणᳬहिरण्यᳬस देवेषु कृणुते दीर्घमायुᳬ समनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः॥ उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे। उग्रᳬशर्म्म महिश्श्रवः॥ उपास्मै गायता नरᳬ पवमानायेन्दवे। अभिदेवा ऽइयक्षते॥

यज० – व्रतजपनियमतपः स्वाध्याय क्रतु शम दम दया दान विशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विप्राः– समाहित मनसः स्मः।

यज० – प्रसीदन्तु भवन्तः। विप्राः प्रसन्नाः स्मः।

(केषाञ्चिन्मते कलशस्थजलं पात्रान्तरे पातयन्ति, केचित्तु अक्षतान् पातयन्त्यत्र)

यज० – ॐ शान्तिरस्तु। (विप्राः तथास्तु इति सर्वत्र वदेत्)

ॐ पुष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु। ॐ वृद्धिरस्तु। ॐ अविघ्नमस्तु। ॐ आयुष्यमस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवमस्तु। ॐ शिवङ्कर्मास्तु। ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ वेदसमृद्धिरस्तु। ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु। ॐ धनधान्यसमृद्धिरस्तु। ॐ पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु। ॐ इष्ट सम्पदस्तु।

बहिःद्वितीय पात्रे वा –

ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु। ॐ यत्पापं रोगमशुभं अकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।

अन्तःप्रथमपात्रे –

ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु। ॐ उत्तरे कर्मण्यविघ्नमस्तु। ॐ उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु। ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्न सम्पदस्तु। ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ तिथिकरणे सुमुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम्। ॐ दुर्गापाञ्चाल्यौ प्रीयताम्। ॐ अग्निपुरोगाः विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्म पुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्। ॐ वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। ॐ अरुन्धती पुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ श्री सरस्वत्यौ प्रीयताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्। ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा इष्टदेवताः प्रीयन्ताम्।

बहिः द्वितीयपात्रे – ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः। ॐ हताश्च परिपन्थिनः। ॐ हताश्च विघ्नकर्तारः। ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु। ॐ शाम्यन्तुघोराणि। ॐ शाम्यन्तु पापानि। ॐ शाम्यन्त्वीतयः। ॐ शाम्यन्तूपद्रवाः।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अन्तः प्रथमपात्रे –

ॐ शुभानि वर्द्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु। ॐ शिवा आहुतयः सन्तु। ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु। ॐ शिवा ओषधयः सन्तु। ॐ शिवा अतिथयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्।

ॐ निकामे निकामे नः पर्ज्जन्यो व्वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्प्पताम्॥

ॐ शुक्राङ्गारक बुध बृहस्पतिशनैश्चरराहुकेतु सहिता आदित्यपुरोगा सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान्नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान् पर्ज्जन्यः प्रीयताम्। ॐ भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम्। ॐ पुरोनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।

ॐ एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये इति प्रार्थयेत्। विप्राः वाच्यताम्।

यज० –

ॐ ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्।
वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मम सपरिवारस्य गृहे सङ्कल्पोक्ताख्यस्य अस्य कर्मणः ह्रीं पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु ३ इति उत्तमोत्तमस्वरेण त्रिः ब्रूयात्।

विप्रा –

ॐ पुण्याहम् इति त्रिर्वदेयुः।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः।
पुनन्तु व्विश्श्वाभूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥

यज० –

पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुराकृतम्।
ऋषिभिर्सिद्धगन्धर्वैः तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः॥

भो ब्राह्मणाः! मम सपरिवारस्य गृहे संकल्पोक्ताख्यस्य अस्य कर्मणः ह्रीं कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु ३।

विप्रा – ॐ कल्याणम्। एवं त्रिः ३।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यथेमां व्वाचङ्कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्या शूद्रायचार्य्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानान्दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयम्मे कामः समृध्यतामुपमादोनमतु।।

सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मम सपरिवारस्य गृहे सङ्कल्पोक्ताख्यस्य अस्य कर्मणः ह्रीं ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु३।

विप्राः – ॐ कर्म ऋध्यताम्। एवं त्रिः।

ॐ सत्रस्यऽऋद्धिरस्यगन्मज्ज्योतिरमृताऽअभूम।
दिवम्पृथिव्याऽअद्ध्यारुहामा विदाम देवान्त्स्वज्ज्योतिः।।

यज०–

स्वस्तिस्तु याऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा।
विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मम सपरिवारस्य गृहे संकल्पोक्ताख्यस्य अस्य कर्मणः ह्रीं स्वस्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु ३।

विप्राः – आयुष्मते स्वस्ति। एवं त्रिः।

ॐ स्वस्तिन ऽइन्द्रो व्वृद्धश्श्रवाः स्वस्तिनः पूषाव्विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्प्पतिर्दधातु।।

यज०–

समुद्र मथनाज्जाता जगदानन्दकारिका।
हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मम सपरिवारस्य गृहे सङ्कल्पोक्ताख्यस्य अस्य कर्मणः ह्रीं श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु ३।

विप्राः – अस्तु श्रीः। एवं त्रिः।।

ॐ मनसः काममाकूतिं व्वाचः सत्यमशीय।
पशूना रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयताम्मयि स्वाहा।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यज०–

प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट्।
भगवाञ्छाश्वतो नित्यं नो वै रक्षन्तु सर्वतः ।।

ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्। एवं त्रिः ।।

विप्राः – ॐ प्रजापते नत्त्वदेतान्यन्यो व्विश्वा रूपाणि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽ अस्त्वयममुख्य पितासावस्यपिता व्वयᳬस्याम पतयो रयीणाᳬस्वाहा ।।

यज०–

आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे
श्रिये दत्ताऽशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः ।।

विप्राः – आयुष्मते स्वस्ति।

ॐ प्रतिपन्थामपद्महि स्वस्तिगामनेहसम्।
येन व्विश्वाः परिद्विषो व्वृणक्ति व्विन्दते व्वसु ।।

ॐ स्वस्तिवाचन समृद्धिरस्तु। एवं त्रिः।

यजमानः :– ॐ अस्मिन्पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्त विधिरूपविशिष्टब्राह्मणानां वचनाच्छ्रीमहागणपति प्रसादाच्च परिपूर्णः अस्तु।

विप्राः – ॐ अस्तु परिपूर्णः।

दक्षिणादानम् :–

यजमानः :– कृतस्य स्वस्ति पुण्याह वाचन कर्मणः साङ्गतासिध्यर्थं स्वस्ति वाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो मनसोद्दिष्टां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।

विप्राः – स्वर्चितमस्तु ।इति।

अशक्तश्चेत् संक्षेपेण स्वस्तिवाचनिकत्रयं परितोष्य उत्तराभिमुखान् तान् उपवेश्य – ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु इति यजमानः त्रिः तान् श्रावयेत्। ते च सहर्षं ओं पुण्याहम् इति समन्त्रकंब्रूयुः।

ततो यजमानः :– ॐ स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु इति त्रिः तान् श्रावयेत्।

ते च – ॐ स्वस्ति इति त्रिः।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ततो यजमानः :-

ॐ ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु इति त्रिः तान् श्रावयेत् ।
ते च ॐ ऋध्यताम् इति त्रिः ब्रूयुः ।
(विप्राः उपविश्य वाचयितारमभिषिञ्चेयुरिति ।)

॥ इति ॥

******

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ षोडशमातृकास्थापनम् ।।

कर्मभूमावग्निकोणे पीठोपरि रक्तवस्त्रं प्रसार्य तदुपरि गोधूमाक्षतपुञ्जेषु पूगीफलेषु वा सगणाधिप गौर्यादि षोडशमातृणां प्राक्संस्थमुदक्संस्थ वा स्थापनम्–

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः।।
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवताः।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश।।

गणपति :– ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः ।।

आगच्छ भगवन्देव स्वस्थानात् परमेश्वर।
अहं त्वां पूजयिष्यामि सदा त्वं सम्मुखो भव।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः, गणपति इहा गच्छ इह तिष्ठ।

गौरी :–

ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः। पितरञ्चप्रयन्त्स्वः।।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां भैरवप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः गौरि इहागच्छ इह तिष्ठ।

पद्मा :–

ॐ हिरण्यरूपा ऽ उषसोव्विरोकऽउभाविन्द्राऽउदिथः सूर्यश्च। आरोहतं व्वरुणमित्र गर्त्तन्ततश्चक्षाथामदितिन्दितिञ्चमित्रोसिव्वरुणोसि।

पद्माभां पद्मवदनां पद्मनाभोरुसंस्थिताम्।
जगत्प्रियां पद्मवासां पद्मामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः पद्मे इहागच्छ इह तिष्ठ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शची :-

ॐ निवेशनः सङ्गमनो व्वसूनां व्विश्श्वा रूपाभिचष्ष्टे शचीभिः।
देवऽइव सविता सत्यधर्म्मेन्द्रो न तस्थौ समरे पथीनाम्।।

दिव्यरूपां दिव्यवस्त्रां दिव्यालङ्कारसंयुताम्।
शतक्रतो महोरस्थां शचीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शच्यै नमः, शचि इहागच्छ इह तिष्ठ।

मेधा :-

ॐ मेधाम्मे व्वरुणो ददातु मेधामग्निः प्प्रजापतिः।
मेधामिन्द्रश्च व्वायुश्श्च मेधान्धाता ददातु मे स्वाहा।।

आवाहयाम्यहं मेधां मेधाशक्तिप्रवर्द्धिनीम्।
वरप्रदां सौम्यरूपां जरां निर्जरसेविताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वर्मेधायै नमः, मेधे इहागच्छ इह तिष्ठ।

सावित्री :-

ॐ सविता त्त्वा सवानाᳯसुवतामग्निर्ग्गृहपतीनाᳯसोमो व्वनस्पतीनाम्। बृहस्पतिर्व्वाचऽइन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्द्रः पशुब्भ्यो मित्त्रः सत्त्यो व्वरुणो धर्म्मपतीनाम्।।

जगत्सृष्टिकरीं धात्रीं देवीं प्रणवमातृकाम्।
वेदगर्भां यज्ञमयीं सावित्रीं स्थापयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्र्यै नमः, सावित्रि इहागच्छ इह तिष्ठ।

विजया :-

ॐ व्विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्ल्यो बाणवा२ँऽ उत।
अनेशन्नस्य याऽइषवऽ आभुरस्य निषङ्गधिः।।

आवाहयाम्यहं देवीं विजयां देवसंस्तुताम्।
सर्वास्त्रधारिणी वन्द्यां सर्वाभरणभूषिताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विजयायै नमः, विजये इहागच्छ इह तिष्ठ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जया :-

ॐ बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चाकृणोति समनावगत्य।
इषुधिः सङ्काः पृतनाश्च सर्व्वाः पृष्ठे निनद्धो जयतिप्रसूतः।।
सुरारिमथिनीं देवीं देवानामभयप्रदाम्।
त्रैलोक्यवन्दितां देवीं जयामावाहयाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः जयायै नमः, जये इहागच्छ इह तिष्ठ।

देवसेना :-

ॐ इन्द्रऽआसान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतु सोमः।
देवसेनानामभि भञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्।।
आवाहयाम्यहं देवीं देवसेनां महाबलाम्।
तारकासुर संहार कारिणीं बर्हिवाहनाम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः देवसेनायै नमः, देवसेने इहागच्छ इह तिष्ठ।

स्वधा :-

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। अक्षन्पितरोमीमदन्त पितरोतीतृपन्तपितरः पितरः शुन्धध्वम्।।
अग्रजा सर्वदेवानां कव्यार्थं या प्रतिष्ठिता।
पितॄणां तृप्तिदां देवी स्वधामावाहयाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः, स्वधे इहागच्छ इह तिष्ठ।

स्वाहा :-

ॐ स्वाहा यज्ञं मनसः स्वाहोरोरन्तरिक्षात्स्वाहा द्यावापृथिवीभ्या७स्वाहा व्वातादारभे स्वाहा।।
हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति।
तां दिव्यरूपां वरदां स्वाहामावाहयाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः स्वहायै नमः, स्वहा इहागच्छ इह तिष्ठ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मातरः :-

ॐ आपोऽअस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेननो घृतप्वः पुनन्तु। व्विश्वꣳहिरिप्रं प्रवहन्ति देवी रुदिदाब्भ्यꣳ शुचिरापूतऽएमि। दीक्षातपसोस्तनूरसि तान्त्वा शिवाꣳशग्मां परिदधे भद्रं व्वर्णं पुष्यन्।।

आवाहयाम्यहं मातृः सकला लोकपूजिताः।
सर्वकल्याणरूपिण्यो वरदा दिव्यभूषणाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मातृभ्यो नमः, मातर इहागच्छत इह तिष्ठत।

लोकमातरः :-

ॐ स्वाहा यज्ञं व्वरुणꣳ सुक्षत्रो भेषजं करत्।
अतिच्छन्दाऽइन्द्रियं बृहदृषभो गौर्व्वयोदधुꣳ।।
आवाहयेल्लोकमातृर्जयन्ती प्रमुखाः शुभाः।
नानाभीष्टप्रदाः शान्ताः सर्वलोकहितावहाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः लोकमातृभ्यो नमः, लोकमातर इहागच्छत इह तिष्ठत।

धृति :-

ॐ धृष्टिरस्यपाग्नेऽअग्नि मामादव्जहिनिष्क्रव्यादꣳसेधादेवयजं व्वह। ध्रुवमसि पृथिवीन्दृꣳहब्ब्रह्मवनित्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामिब्भ्रातृव्व्यस्यव्वधाय।।

सर्वहर्षकरीं देवीं भक्तानामभयप्रदाम्।
हर्षोत्फुल्लास्यकमलां धृतिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः, धृते इहागच्छ इह तिष्ठ।

पुष्टि :-

अङ्गान्यात्मन्भिषजातदश्विनात्मानमङ्गैꣳ समधात्सरस्वती। इन्द्रस्य रूपꣳशतमानमायुश्चन्द्रेण ज्ज्योतिरमृतन्दधानाꣳ।।

पोषयन्ती जगत्सर्वं स्वदेह प्रभवैर्नवैः।
शाकैः फलैर्जलैः रत्नैः पुष्टिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्ट्यै नमः, पुष्टे इहागच्छ इह तिष्ठ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तुष्टि :-

ॐ त्वष्टा तुरीपोऽ अद्भुतऽइन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धना।
द्विपदाच्छन्दऽ इन्द्रियमुक्षागौर्न्नव्वयोंदधुः।।
देवैराराधितां देवीं सदासन्तोषकारिणीम्।
प्रसादसुमुखीं देवीं तुष्टिमावाहयाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः तुष्ट्यै नमः, तुष्टे इहागच्छ इह तिष्ठ।

कुलदेवी :-

प्राणाय स्वाहा पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा।
चक्षुषे स्वाहा श्श्रोत्राय स्वाहा व्वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा।।
पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे।
नानाजाति कुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः आत्मकुलदैवतायै नमः, आत्मकुलदेवते इहागच्छ इह तिष्ठ।

मनोजूतिरिति प्रतिष्ठापनम्। ॐ भूर्भुवः स्वः सगणाधिप गौर्यादिकुलदेवतान्ताः षोडशमातरः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।

यथोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् :-

आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।
निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः।।

मन्त्रपुष्पम् :-

शतंव्वोऽअम्ब धामानिसहस्रमुतवोरुहः।
अधा शतक्क्रत्वो यूयमिमम्मेऽ अगदङ्कृत।।

अनयापूजया षोडशमातरः प्रीयन्ताम्।

।। इति ।।

******

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ वसोर्धारा (सप्तघृतमातृका) पूजनम् ।।

ॐ व्वसोः पवित्रमसि शतधारं व्वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा इति मन्त्रेण सप्तघृतधाराः प्राक्संस्थ उदक्संस्थ वा कुर्यात्।

ॐ कामधुक्षः इत्येतावता मन्त्रेणार्धभागे गुडेनैकीकरणम्। ततः सप्तसु बिन्दुषु उत्तरोत्तरक्रमेणैकैकदेवतामावाहयेत् –

श्री :–

मनसः काममाकूतिं व्वाचः सत्यमशीय।
पशूनाᳫं रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयताम्मयि स्वाहा।।

सुवर्णपद्महस्तां तां विष्णोर्वक्षस्थले स्थिताम्।
त्रैलोक्यवल्लभां देवीं श्रियमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रियै नमः, श्रीरिहागच्छ इह तिष्ठ।

लक्ष्मी :–

श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्व्वलोकम्मऽइषाण।।

शुभलक्षणसम्पन्नां क्षीरसागरसम्भवाम्।
चन्द्रस्य भगिनीं सौम्यां लक्ष्मीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मि इहागच्छ इह तिष्ठ।

धृति :–

भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳫंसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।

संसारधारणपरां धैर्यलक्षणसंयुताम्।
सर्वसिद्धिकरीं देवीं धृतिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः, धृते इहागच्छ इह तिष्ठ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मेधा :-

मेधाम्मे व्वरुणो ददातु मेधामग्निः प्प्रजापतिः।
मेधामिन्द्रश्च व्वायुश्च मेधान्धाता ददातु मे स्वाहा।।

सदसत्कार्यकरणक्षमां बुद्धिविशालिनीम्।
मम कार्ये शुभकरीं मेधामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः, मेधे इहागच्छ इह तिष्ठ।

प्रज्ञा :-

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु।
यस्मान्नऽऋते किञ्चन कर्म्मक्क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

आवाहयाम्यहं देवीं प्रज्ञां वाग्विभवप्रदाम्।
विश्वाधारां जगद्वन्द्यां महाघौघविनाशिनीम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रज्ञायै नमः, प्रज्ञे इहागच्छ इह तिष्ठ।।

पुष्टि :-

देवी जोष्ट्री सरस्वत्यश्विनेन्द्रमवर्द्धयन्। श्रोत्रन्न कर्णयोर्यशो जोष्ट्रीभ्यान्दधुरिन्द्रियं व्वसुवनें व्वसुधेयस्य व्यन्तु यज।।

सोमरूपां सुवर्णाभां विद्युज्ज्वलितकुण्डलाम्।
जननीं पुष्टिकरिणीं पुष्टिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्ट्यै नमः, पुष्टे इहागच्छ इह तिष्ठ।

सरस्वती :-

पावका नः सरस्वती व्वाजेभिर्व्वाजिनीवती। यज्ञं व्वष्टु धियावसुः।।

प्रणवस्यैव जननीं रसनाग्रस्थितां सदा।
प्रगल्भदात्रीं चपलां वाणीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भुर्भुवः स्वः सरस्वत्यै नमः, सरस्वति इहागच्छ इह तिष्ठ।

मनोजूतिरिति प्राणप्रतिष्ठापनम्। ॐ वसोर्धारा देवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु। यथोपचारद्रव्यैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् -

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्वभक्तवत्सलेऽनघे सदापवर्गभोगदे
दरिद्र दुःखहारिणी त्रिलोक शङ्करीश्वरि।
भवानि भीम अम्बिके प्रचण्ड तेज उज्ज्वले
भुजाकलापमण्डिते नमोऽस्तु ते महेश्वरि।।

माता पिता त्वं गुरु सद्गतिःश्री त्वमेव संजीवन हेतुभूता।
अन्यन्न मन्ये जगदेकनाथे त्वमेव सर्वं मम देवि सत्यम्।।

अनया पूजया वसोर्धारा देवताः प्रीयन्ताम्।

।। इति।।

******

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथायुष्यमन्त्रजपः ।।

ॐ आयुष्यं व्वर्च्चस्य्ँरायस्प्पोषमौद्भिदम्।
इदँहिरण्ण्यं व्वर्च्चस्व ज्जैत्रायाविशतादुमाम्।।
नतद्रक्षाँसिनपिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्प्रथमजँह्येतत्। यो
बिभर्ति दाक्षायणँहिरण्ण्यँस देवेषु कृणुते दीर्घमायुः समनुष्ष्येषु दीर्घमायुः।।
यदाबद्ध्नन्दाक्षायणा हिरण्ण्यँशतानीकाय सुमनस्यमानाः।
तन्म्मऽआबद्ध्नामि शत शारदाया युष्म्माञ्जरदष्टिर्यथासम्।।

वा

आ नो भद्रेति दशर्चस्य सस्वरः पाठः कर्त्तव्यः।

वा

यदायुष्यं चिरं देवाः सप्तकल्पान्तजीविषु।
ददुस्तेनायुषा युक्ता जीवेम शरदः शतम्।।
दीर्घानागा नगा नद्योऽनन्ताः सप्तार्णवा दिशः।
अनन्तेनायुषा तेन जीवेम शरदः शतम्।।
सप्तानि पञ्चभूतानि विनाश रहितानि च।
अविनाश्यायुषा तद्वज्जीवेम शरदः शतम्।।

।। इति ।।

******

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ नान्दीश्राद्धप्रयोगः ।।

अत्राभ्युदयिकश्राद्धे यो यो जीवति तं तं परित्यज्य परं परं पुरुषमन्तर्धाय सर्वं सव्येन कार्यम्। कुशस्थाने च दूर्वा स्युः। सर्वत्र तिलस्थाने यवाः। पश्चिमाभिमुखः प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्याचान्तः–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

ॐ पुण्डरीकाक्ष पुनातु, इति स्मृत्वा श्राद्धीयद्रव्याण्यात्मानञ्च सिञ्चेत्।

तत्र सङ्कल्पं कुर्यात् –

ॐ अद्य करिष्यमाण अमुकदेवपूजन कर्माङ्गतयाऽभ्युदयिक श्राद्धमहं करिष्ये।

पाद्यम् :–

ॐ सत्त्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।।

ॐ मातृपितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।।

ॐ पितृपितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।।

ॐ मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।।

आसनम् :–

ॐ सत्त्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।।

ॐ मातृपितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्त्यो भवन्त्यः तथा प्राप्नुवामः।।

ॐ पितृपितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्त्यः तथा प्राप्नुवामः।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः .... प्राप्नुवामः ।।

गन्धादिदानम् :–

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।।

ॐ मातृपितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।।

ॐ पितृपितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।।

ॐ मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवःस्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।।

भोजननिष्क्रयदानम् :–

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मण भोजन पर्याप्तमन्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।।

ॐ मातृपितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मण भोजन पर्याप्तमन्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।।

ॐ पितृपितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मण भोजन पर्याप्तमन्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।।

ॐ मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मण भोजन पर्याप्तमन्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।।

सक्षीरयवमुदकदानम् :–

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् ।

ॐ मातृपितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम् ।

ॐ पितृपितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् ।

ॐ मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् । ततः अघोराः पितरः सन्तु । इति पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात् ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रार्थयेत् :-

मातापितामही चैव तथैव प्रपितामही।
पितापितामहश्चैव तथैव प्रपितामहाः।।
मातामहस्तत्पिता च प्रमातामहकादयः।
एते भवन्तु सुप्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम्।।

गोत्रन्नो वर्द्धतां। दातारो नोऽभि वर्द्धन्ताम्। वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो माव्यगमत्। बहुदेयं च नोऽस्तु। अन्नं च नो बहुभवेत्। अतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु। मा च याचिष्म कञ्चन। एताः सत्याः आशिषः सन्तु।

ब्राह्मणः सन्त्वेता सत्या आशिषः।

दक्षिणादानम् :-

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिध्यर्थं द्राक्षाऽमलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।।

ॐ मातृपितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिध्यर्थं द्राक्षाऽमलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।।

ॐ पितृपितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिध्यर्थं द्राक्षाऽमलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।।

ॐ मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिध्यर्थं द्राक्षाऽमलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।।

मन्त्रपाठः :-

ॐ इडामग्ने पुरुदꣳसꣳसनिङ्गोः शश्वत्तमꣳहवमानाय साध।
स्यान्नः सूनुस्तनयो व्विजावाग्ने सा ते सुमतिर्ब्भूत्त्वस्म्मे।।
उपास्म्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभिदेवा ꣳ इयक्षते।।
यजमान – अनेन नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम्।
सुसम्पन्नम् इति ब्राह्मणाः।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विसर्जनम् :-

व्वाजेंवाजे वत व्वाजिनो नो धनेषु व्विप्प्राऽअमृताऽऋतज्ञाः।
अस्य मद्ध्वं: पिबत मादयंद्ध्वन्तृप्ता यात पथिभिर्द्देवयानैः।।

अनुव्रजनम् :-

आमा व्वाजंस्य प्प्रसवो जंगम्म्यादेमे द्यावापृथिवी व्विश्वरूपे।
आ मा गन्तां पितरा मातरा चा मा सोमोऽअमृतत्त्वेन गम्म्यात्।।

विश्वेदेवाः प्रीयन्तामिति।

अस्मिन्नान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्ट ब्राह्मणानां वचनात् नान्दीमुखप्रसादात् सर्वं परिपूर्णोऽस्तु। अस्तु परिपूर्णः इति ब्राह्मणाः।

।। इति।।

******

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। आचार्यादिवरणम् ।।

यजमानः हस्ते पूगीफलं गृहीत्वा विप्रस्य दक्षिणजानुमालभ्य वदेत् –

ॐ अद्य अमुक प्रवरान्वितामुक गोत्रः शुक्लयजुर्वेदाम्नाय वाजिशाखा यथा वेदशाखाध्यायी वा अमुकशर्म यजमानोऽहममुक प्रवरान्वितमुक गोत्रं यथावेदशाखाध्यायिनमुकशर्माणं ब्राह्मणमस्मिन् श्रीमद् दुर्गादेव्याः पूजनं हवनश्च कर्मणि एभिर्वरणर्द्रव्यैः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे इत्युक्त्वा पूगीफलं दद्यात्। यजमान दत्तं पूगीफलं गृहीत्वा विप्रो वदेत् – ॐ वृतोस्मि।

ॐ व्व्रतेनंदीक्षामाप्नोतिदीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणाश्श्रद्धामाप्नोतिश्श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

गन्धाक्षतपुष्पमालादिभिःसम्पूज्य रक्तसूत्ररूप कङ्कणबन्धनम् :–

भक्त्या समागतोऽहं ते पादयोर्भक्तवत्सल।
यज्ञकार्यं च भवता सम्पाद्यं वै नमो नमः।।
येषां देहे स्थिता वेदाः पावयन्ति जगत्त्रयम्।
रक्षन्तु सततं ते मां चण्डीयज्ञे व्यवस्थिताः।।
ब्राह्मणा जङ्गमं तीर्थ त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्।
येषां वाक्योदकेनैव शुध्यन्ति मलिना जनाः।।

इतिमन्त्रेण नमस्कृत्य अन्यान् ब्राह्मणान्नपि वृणुयात् :–

ॐ ब्राह्मणासः पितरः सोम्म्यासः शिवे नो द्यावापृथिवीऽअनेहसा।
पूषा नः पातु दुरितादृतावृधो रक्षा माकिर्न्नोऽअघशंस ईशत।।
यथाविहितयथासंख्याकान् ब्राह्मणान् वृणुयात्।

।। इति।।

******

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

॥ वास्तु पूजनम् ॥

संकल्प – देशकालौ संकीर्त्यै मया पूर्वोच्चारितसंकल्पाऽङ्गतया वास्तुमण्डलस्थ देवानामावाहनपूर्वकं पूजनं बलिदानञ्च करिष्ये।

ॐ श्रीश्चंते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाण मुम्मंऽइषाण सर्व्वलोकम्मंऽइषाण॥

ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि॥

ॐ शश्चं मे मयंश्च मे प्प्रियश्चं मेऽनुकामश्चं मे कामश्च मे सौमनसश्चं मे भगंश्च मे द्द्रविणश्च मे भद्द्रश्चं मे श्रेयंश्च मे व्वसीयश्च मे यशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यशोवत्यै नमः, यशोवतमावाहयामि स्थापयामि॥

ॐ अम्बेऽअम्बिके ऽम्बालिकेनमानयति कश्चन। ससंस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कान्तायै नमः कान्तामावाहयामि स्थापयामि॥

ॐ आच्छच्छन्दः प्प्रच्छच्छन्दः संय्यच्छन्दो व्वियच्छन्दो बृहच्छन्दो रथन्तरं छन्दो निकायश्छन्दो व्विवधश्छन्दो गिरश्छन्दो भ्रजश्छन्दः स ७ स्तुप्छन्दोऽनुष्टुप् छन्द ऽएवश्छन्दो व्वरिवश्छन्दो व्वयश्छन्दोव्वयस्कृच्छन्दो व्विप्पर्द्धाश्छन्दो व्विशालं छन्दश्छदिश्छन्दो दूरोहणं छन्दस्तन्द्रं छन्दो ऽअङ्काङ्कं छन्दः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सुप्रियायै नमः, सुप्रियामावाहयामि स्थापयामि॥

ॐ अन्तश्चरति रोचनास्यप्प्राणादपानती॥ व्यक्ख्यन्महिषो दिवम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विमलायै नमः विमलामावाहयामि स्थापयामि॥

ॐ मनसः कामुमाकूतिं व्वाचः सत्यमशीय। पशूना७रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयताम्मयि स्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रियै नमः, श्रियमावाहयामि स्थापयामि॥

ॐ व्वित्तश्चं मे व्वेद्यंश्च मे भूतश्चं मे भविष्यच्चं मे सुगश्चं मे सुपत्थ्यश्च म ऽऋद्धश्चं म ऽऋद्धिश्च में क्लृप्त चं मे क्लृप्तिश्च मे मतिश्चं मे सुमतिश्चं मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सुभगायै नमः, सुभगामावाहयामि स्थापयामि॥

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर परिसर, जयपुर पुस्तकालय

पंजिकरण क्रमांक..............

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्क्रमीदसदन्मातरम्पुरः। पितरंश्चप्प्रयन्त्स्वः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सुमत्यै नमः, सुमतिमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ इडामग्ने पुरुदꣳ सꣳ सनिङ्गोः शश्वत्तमꣳ हवमानाय साध। स्यान्नः सूनुस्तनयो व्विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्त्वस्मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इडायै नमः, इडामावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्प्राणाय त्त्वोदानाय त्त्वा व्व्यानाय त्त्वा। दीर्घामनु प्प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्प्रतिगृब्भ्णात्त्वच्छिद्द्रेण पाणिना चक्षुषे त्त्वा महीनां पयोऽसि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः धान्यायै नमः, धान्यामावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ प्राणश्च मेपानश्च मे व्वयानश्च मेऽसुश्च मे चित्तञ्च म ऽआधीतञ्च मे वाक्क्च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्श्रोत्रं च मे दक्षश्च मे बलञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः प्राणायै नमः, प्राणामावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणा मुम्मऽइषाण सर्व्वलोकम्मऽइषाण।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विशालायै नमः, विशालामावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ परि नो रुद्द्रस्य हेतिर्व्वृणक्तु परि त्त्वेषस्य दुर्म्मतिरघायोः। अवस्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्थिरायै नमः, स्थिरामावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ आनो भद्द्राः क्क्रतवो यन्तु व्विश्वतो दब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः। देवानो यथा सदमिद्वृधेऽअसन्नप्प्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भद्रायै नमः, भद्रामावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ व्वाजाय स्वाहा प्प्रसवाय स्वाहा पिजाय स्वाहा क्क्रतवे स्वाहा व्वसवे स्वाहा हर्प्पतये स्वाहाऽह्ने मुग्धाय स्वाहा मुग्धाय व्वैनꣳ शिनाय स्वाहा व्विन ꣳ शिन ऽआन्त्यायनाय स्वाहा ऽन्त्याय भौवनाय स्वाहा भुवनस्य पतये स्वाहाऽधिपतये स्वाहा प्प्रजापतये स्वाहा। इयन्तेराण्मित्राय यन्तासि यमन ऽऊर्ज्जे त्त्वा व्वृष्ट्यै त्त्वा प्प्रजानान्त्वाधिपत्याय।।

ॐ भूर्भुवः स्वः जयायै नमः, जयामावाहयामि स्थापयामि।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ इन्द्रस्य व्वृष्णो व्वरुणस्य राज्ञ ऽआदित्यानां मरुता ७ शर्द्ध ऽउग्रम्। महामनसां भुवनच्च्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्त्थात्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः निशायै नमः, निशामावाहयामि स्थापयामि॥

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्य्यो ज्ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा। अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा। ज्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विरजायै नमः, विरजामावाहयामि स्थापयामि॥

ॐ समक्ख्ये देव्याधिया सन्दक्षिणयोरुचक्षसा। मा म ऽआयुः प्प्रमोषीर्म्मो ऽअहन्तवव्वीरं व्विदेय तव देवि सन्दृशि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विभवायै नमः, विभवामावाहयामि स्थापयामि॥

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शिखिने नमः, शिखिनमावाहयामि स्थापयामि॥

ॐ शन्नो व्वातः पवता ७ शं नस्तपतु सूर्य्यः। शं न्नः कनिक्क्रदद्देवः पर्ज्जन्यो अभिवर्षतु॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पर्जन्याय नमः, पर्ज्जन्यामावाहयामि स्थापयामि॥

ॐ मर्म्माणि ते व्वर्म्मणा च्छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानुवस्ताम्। उरोर्व्वरीयो व्वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु॥

ॐ भूर्भुवः स्वः जयन्ताय नमः, जयन्तामावाहयामि स्थापयामि॥

ॐ सजोषा ऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब व्वृत्रहा शूर व्विद्वान्। जहि शत्रूँ२॥ रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि व्विश्वतो नः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कुलिशायुधाय नमः, कुलिशायुधामावाहयामि स्थापयामि॥

ॐ आकृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्याय नमः, सूर्यमावाहयामि स्थापयामि॥

ॐ व्व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्य माप्यते॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सत्याय नमः, सत्यमावाहयामि स्थापयामि॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ आ त्वांहार्षमन्तरंभूर्ध्रुवस्तिष्ठाविंचाचलिः। विशंस्त्वा सर्व्वा व्वाञ्छन्तु मा त्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भृशाय नमः, भृशम् आवाहयामि स्थापयामि।।

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः आकाशाय नमः, आकाशमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ व्वायो ये तें सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्त्सोमपीतये।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ पूषन् तव व्व्रते व्वयं न रिष्येम कदाचन। स्तोतारस्त ऽइह स्मसि।।10।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पूष्णे नमः, पूषाणमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ तत्सूर्य्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मद्ध्या कर्त्तोर्व्विततं द सञ्जभार। यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री व्वासस्तनुते सिमस्मै।।11।।

ॐ भूर्भूवः स्वः वितथाय नमः, वितथमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया ऽअधूषत। अस्तोषत स्वभानवो व्विप्प्रा न विष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी।।12।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गृहक्षताय नमः, गृहक्षतमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्त्रे।।13।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ गन्धर्व्वस्त्वा व्विश्वावसुः परि दधातु व्विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ऽईडितः। इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणो व्विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ऽईडितः। मित्त्रावरुणौ त्वोत्तरतः परि धत्तां ध्रुवेण धर्म्मणा व्विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ऽईडितः।।14।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाय नमः, गन्धर्वमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ सौरि बलाका शार्गः सृजयः शयाण्डकस्ते मैत्त्राः सरस्वत्यै शारिः पुरुषवाक् श्वाविद्भौमी शार्दूलो व्वृकः पृदाकुस्ते मन्यवे सरस्वते शुकः पुरुषवाक्।।15।।

ॐ भूर्भूवः स्वः भृङ्गराजाय नमः, भृङ्गराजमावाहयामि स्थापयामि।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत ऽआजगन्था परस्याः। सृकꣳ सꣳशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व ।।16।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मृगाय नमः, मृगमावाहयामि स्थापयामि ।।

ॐ उशन्तस्त्वा निधीमह्युशन्तः समिधीमहि। उशन्नुशत ऽआवह पितॄन्हविषे ऽअत्तवे ।।17।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पितृभ्यो नमः, पितॄनामावाहयामि स्थापयामि ।।

ॐ द्वे विरूपे चरतः स्वर्थे ऽअन्यान्यां वत्समुप धापयेते। हरिरन्यस्यां भवति स्वधावाञ्छुक्रो ऽअन्यस्यां ददृशे सुवर्च्चाः ।।18।।

ॐ भूर्भुवः स्वः दौवारिकाय नमः, दौवारिकमावाहयामि स्थापयामि ।।

ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳ रुद्राऽउपश्रिताः तेषाꣳसहस्रयोजनेवधन्वानि तन्मसि ।।19।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सुग्रीवाय नमः, सुग्रीवमावाहयामि स्थापयामि ।।

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः सेनाभ्यः ।।20।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्पदन्ताय नमः, पुष्पदन्तम् आवाहयामि स्थापयामि ।।

ॐ इमम्मे वरुणश्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके ।।21।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि ।।

ॐ यमश्विना नमुचेरासुरादधि सरस्वत्यसुनोदिन्द्रियाय। इमं तꣳ शुक्रं मधुमन्तमिन्दुꣳ सोमꣳ राजानमिह भक्षयामि ।।22।।

ॐ भूर्भुवः स्वः असुराय नमः, असुरमावाहयामि स्थापयामि ।।

ॐ या ऽइषवो यातुधानानां ये वा वनस्पतीं २। रनु।। ये वावटेषु शेरते तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः ।।23।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शेषाय नम;ः शेषमावाहयामि स्थापयामि ।।

ॐ एतत्ते रुद्राऽवसन्तेन परो मूजवतोऽतीहि। अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासा ऽअहिꣳसन्नः शिवोतीहि ।।24।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पापाय नमः, पापमावाहयामि स्थापयामि ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ द्रापे ऽअन्धसस्पते दरिद्रनीललोहित। आसां प्रजानामेषां पशूनां माभेर्म्मारोङ्मोचनः किञ्चनाममत् ।।25।।

ॐ भूर्भुवः स्वः रोगाय नमः, रोगमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहुं ज्यायाहेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो व्विश्वा व्वयुनानि व्विद्वान्पुमान्पुमां ७ सं परि पातु व्विश्वतः ।।26।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अहिर्बुध्न्याय नमः, अहिर्बुध्न्यमावाहयाम्रि स्थापयामि।।

ॐ अवतत्य धनुष्ट्व ६ सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्ष्य शल्ल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव ।।27।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मुख्याय नमः, मुख्यमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ इमारुद्राय तवसे कपर्द्दिने क्षयद्वीराय प्प्रभरामहेमतीः। यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे व्विश्वं पुष्टं ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम् ।।28।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भल्लाटकाय नमः, भल्लाटमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ व्वय ६ सोम व्व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्प्रजावन्तः सचेमहि।।29।।

ॐ भूर्भूवः स्वः सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः ।।30।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पाय नमः, सर्पमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्माता स पिता स पुत्रः। विश्वेदेवाऽअदितिः पञ्चजना ऽ अदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम् ।।31।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अदितये नमः, अदितिमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ इड ऽएह्यदित ऽएहि काम्या ऽएत। मयि वः कामधरणं भूयात् ।।32।।

ॐ भूर्भुवः स्वः दितये नमः, दितिमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ आपो हिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन। महेरणायचक्षसे ।।33।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः, अपः आवाहयामि स्थापयामि।।

ॐ आ ते व्वत्सो मनो यमत्परमाच्चित्सधस्थात्। अग्ने त्वां कामया गिरा ।।34।।

ॐ भूर्भुवः स्वः आपवत्साय नमः, आपवत्समावाहयामि स्थापयामि।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ यद्द्य सूर ऽउदितेऽनांगा मित्त्रो ऽअर्य्यमा। सुवाति सविता भगः ॥35॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अर्य्यम्णे नमः, अर्य्यमाणमावाहयामि स्थापयामि॥

ॐ हस्त ऽआधाय सविता बिभ्रदभ्रिं हिरण्ययीम्। अग्नेज्ज्योतिर्न्निचार्य्य पृथिव्या ऽअद्ध्याभरदानुष्टुभेन च्छन्दसाङ्गिरस्वत्॥36॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्राय नमः सावित्रम् आवाहयामि स्थापयामि॥

ॐ व्विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न ऽआ सुव॥37॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सवित्रे नमः, सवितारमावाहयामि स्थापयामि॥

ॐ व्विवस्वन्नादित्यैष ते सोमपीथस्तस्मिन्मत्स्व। श्श्रदस्मै नरो व्वचसे दधातन यदाशीर्दा दम्पती व्वाममश्नुतः॥ पुमान्पुत्रो जायते व्विन्दते व्वस्वधा व्विश्वाहारप ऽएधते गृहे॥38॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विवस्वते नमः, विवस्वतमावाहयामि स्थापयामि॥

ॐ स बोधि सूरिर्म्मघवा व्वसुपते व्वसुदावन्। युयोध्यस्मद् द्वेषा᳙सि व्विश्वकर्म्मणे स्वाहा॥39॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विबुधाधिपाय नमः, विबुधाधिपामावाहयामि स्थापयामि॥

ॐ आषाढं य्युत्सु पृतनासु पप्प्रि᳙स्वर्षामप्सां व्वृजनस्य गोपाम्॥ भरेषुजा᳙सुक्षिति सुश्श्रवसं जयन्तं त्वामनु मदेम सोम॥40॥

ॐ भूर्भुवः स्वः जयाय नमः, जयामावाहयामि स्थापयामि॥

ॐ मित्त्रो न ऽएहि सुमित्त्रध ऽइन्द्रस्योरुमाविश दक्षिणमुशन्नुशन्त᳙स्योनः स्योनम्। स्वानभ्भ्राजाङ्घारे बम्भारे हस्त सुहस्त कृशानवेतेवः सोमक्क्रयणास्तानूंक्षदध्वं मा वो दभन्॥41॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मित्राय नमः, मित्रमावाहयामि स्थापयामि॥

ॐ नाशयित्त्री बलासस्यार्शस ऽउपचितामसि। अथो शतस्य यक्ष्माणां पाकारोरसि नाशनी॥42॥

ॐ भूर्भुवः स्वः राजयक्ष्मणे नमः, राजयक्ष्मणमावाहयामि स्थापयामि॥

ॐ अव रुद्द्रमदीमह्यव देवं त्र्यम्बकम्। यथा नो व्वस्यसस्करद्यथा नः श्श्रेयसस्करद्यथा नो व्व्यवसाययात्॥43॥

ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि स्थापयामि॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनि। यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः।।44।।

ॐ भूर्भूवः स्वः पृथ्वीधराय नमः, पृथ्वीधरमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेनऽआवः। स बुद्ध्न्याऽउपमाऽअस्यव्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः।।45।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ यं ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध पाशं ग्रीवास्वविचृत्यम्। तं ते व्विष्याम्म्यायुषो न मद्ध्यादथैतं पितुमद्धि प्प्रसूतः। नमो भूत्यै येदं चकार।।01।।

ॐ भूर्भुवः स्वः चरक्यै नमः, चरकीमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ अक्षराजाय कितवं कृतायादिनवदर्शं त्रेतायै कल्पिनं द्वापरायाधिकल्पिनमास्कन्दाय सभास्थाणुं मृत्यवे गोव्व्यच्छमन्तकाय गोघातं क्षुधे यो गां व्विकृन्तन्तं भिक्षमाण ऽउप तिष्ठति दुष्कृताय चरकाचार्यं पाप्मने सैलगम्।।02।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विदार्यै नमः, विदारीमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ इन्द्रस्य क्क्रोडोदित्यै पाजस्यं दिशां जत्त्रवोऽदित्यै भसज्जीमूतान् हृदयौपशेनान्तरिक्षं पुरीतता नभऽउदर्य्येण चक्क्रवाकौ मतस्नाब्भ्यां दिवं व्वृक्काब्भ्यां गिरीन्प्लाशि भिरुपलान्प्लीह्ना व्वल्मीकान्क्लोमभिर्ग्लौभिर्गुल्मान्हिराभिः स्रवन्तीर्हृदान् कुक्षिभ्याᳬसमुद्द्रमुदरेण व्वैश्वानरं भस्मना।।03।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पूतनायै नमः, पूतनामावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ यस्यास्ते घोर ऽआसन् जुहोम्येषां बन्धानामवसर्ज्जनाय। यां त्वा जनो भूमिरिति प्प्रमन्दते निर्ऋतिं त्वाहं परिवेद व्विश्वतः।।04।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पापराक्षस्यै नमः, पापराक्षसीमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ यदक्क्रन्दः प्प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्समुद्द्रादुतवा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू ऽउपस्तुत्यं महि जातं ते ऽअर्व्वन्।।01।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ यदद्य सूरऽउदितेऽनागा मित्त्रो ऽअर्य्यमा। सुवाति सविता भगः।।02।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अर्यम्णे नमः अर्यमाणमावाहयामि स्थापयामि।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्क्रन्दते स्वाहावक्क्रन्दाय स्वाहा प्प्रोथते स्वाहा प्प्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहाऽऽसीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा व्विजृम्भमाणाय स्वाहा व्विचृत्ताय स्वाहा सङ्हानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहाऽयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा।। 03।। ॐ भूर्भुवः स्वः जृम्भकाय नमः, जृम्भकमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ का स्विदासीत्पूर्व्वचित्तिः किᳬस्विदासीद् बृहद्वयः। का स्विदासीत्पिलिप्पिला का स्विदासीत्पिशङ्गिला।।04।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पिलिपिच्छाय नमः, पिलिपिच्छमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रᳬ हवेहवे सुहवᳬ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रᳬस्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।।01।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ त्वन्नोऽअग्ने व्वरुणस्य व्विद्वान् देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो व्विश्वा द्वेषाᳬसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा।।02।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे।।03।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।।04।।

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ तत्त्वा यामिब्ब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो व्वरुणेह बोद्ध्युरुशᳬसमानऽ आयुः प्प्रमोषीः।।05।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि।।

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभि भरद्ध्वरᳬ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। व्वायो ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।06।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ व्वयꣳ सोम व्व्रते तव मनस्तनूषु बिब्भ्रतः। प्प्रजावन्तः सचेमहि ।।07।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि ।।

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसेहूमहेवयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ।।08।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि ।।

ॐ अस्मे रुद्द्रा मेहना पर्व्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः शꣳ संते स्तुवते धायि पज्ज्र ऽइन्द्रज्ज्येष्ठा ऽअस्माँ २।। ऽअवन्तु देवाः।।09।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ।।

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनि। यच्छा नः शर्म्म सप्प्रथाः।।10।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि स्थापयामि ।।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमन्दधातु। व्विश्वेदेवास ऽ इह मादयन्तामो ३ँ।। प्प्रतिष्ठ।।

वास्तुमण्डलस्थदेवाः नमः सुप्रतिष्ठिता भवन्तु। यथामिलितोपचारद्रव्यैः संपूज्य।

तत्र मण्डलमध्ये चतुःपदे पीतवर्णे कोष्ठोपरि ताम्रादिकलशस्य स्थापनं कुर्यात्। तदुपरिप्राणप्रतिष्ठापूर्वकं वास्तुमूर्तिं संस्थाप्य। आवाहयेत्-

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशो ऽ अनमी वो भवानः। यत्त्वे महे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भवद्विपदे शं चतुष्पदे।

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तुपुरुषाय नमः। वास्तुपुरुषमावा० स्था० ।।

पूजनं कुर्यात् -

आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। मुखे आचमनं समर्पयामि। सर्वांगे स्नानं समर्पयामि। मिलितपंचामृतस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि। वस्त्रं समर्पयामि। यज्ञोपवीतं। वस्त्रयज्ञोपवीतान्ते आचमनं समर्पयामि। गंधं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पमालां समर्पयामि। परिमलद्रव्याणि समर्पयामि। सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि। धूपं आघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। हस्तप्रक्षालनम्। नैवेद्यं समर्पयामि। मध्ये आचमनं समर्पयामि। फलं समर्पयामि। पुनः आचमनं समर्पयामि। ताम्बूलं समर्पयामि। द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पुष्पाञ्जलि :-

ॐ शिख्यादि कामे खलु वास्तु देवा,
गृह्णवन्तु पुष्पाञ्जलिमत्र शीघ्रम्।
पीड़ाहरा भव्यकरा विशाला,
भवन्तु भूपालन तत्पराश्च।।

पुष्पाञ्जलि समर्पयामि।

मण्डलाग्रे बलिं दद्यात् :- ॐ अमीवहा वास्तोष्पते विश्वारूपाण्याविशन्। खा सुशेव ऽ एधिनः स्वाहा। ॐ वास्तुपुरुषाय बलिद्रव्याय नमः। संपूज्य। भो शिख्यादिगणसहित वास्तुपुरुष इमं बलिं समर्पयामि। जलमुत्सृजेत्।

प्रार्थना - भो वास्तुपुरुष इमं बलिं गृहाण मम (यजमानस्य) गृहे आयुः कर्ता क्षेम कर्ता शान्तिकर्ता पुष्टि कर्ता तुष्टि कर्ता निर्विघ्नकर्ता कल्याणकर्ता भव।

नमस्कार :-

नमामि वास्तुपुरुष सशिख्यादिगणवृतः।
पूजां बलिं गृहाणेमां सौम्यो भवतु सर्वदा।।

अनेन पूजाबलिदानेन शिख्यादिवास्तुमण्डलस्थदेवैः सह वास्तुपुरुषः प्रीयताम्।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कुण्डपूजनम्

आचार्यः आचार्यानुज्ञया कश्चिद्विप्रो वा कुण्डपश्चिमतः उपविशेत्।

संकल्पः - ॐ तत्सदद्यादिअमुक यागाख्ये अग्निस्थापनकर्मणि अंगतया सम्मार्जनं, मेखलायोनिकंठनाभिप्रभृतिदेवतानां पूजनपूर्वकं पञ्चभूसंस्कारादि अग्निस्थापनं पूजनञ्च करिष्ये। गौरसर्षपान् विकीर्येत्दर्भैरग्रयायतनं कुण्डं सम्मृज्य। कुशोदकेन कुण्डं संप्रोक्षयेत्। ॐ आपोहिष्ठा०। ॐ योवः शिवतमो०। ॐ तस्माऽअरङ्ग०।

ततो हस्ते पुष्पाण्यादाय कुण्डं स्पृष्ट्वा आवाहयेत्।

आवाहयामि तत्कुंडं विश्वकर्मविनिर्मितम्।
शरीरं यच्च ते दिव्यमग्न्यधिष्ठानमद्भुतम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कुण्डाय नमः। पुष्पाणि कुण्डोपरि निक्षिपेत्। प्रार्थयेत्-

ये च कुंडे स्थिता देवाः कुंडाङ्गे याश्च देवताः।
ऋद्धिं यच्छन्तु ते सर्वे यज्ञसिद्धिं मुदान्विताः।।
हे कुंड तव रूपं तु रचितं विश्वकर्मणा।
अस्माकं वाञ्छितां सिद्धिं यज्ञसिद्धिं ददस्व च।

कुण्डमध्ये विश्वकर्मपूजनम् - ॐ व्विश्वकर्म्मन्हविषाव्वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्यम्। तस्मैव्विशः समनमन्तपूर्व्वीरयमुग्रोव्विहव्यो यथासत्। उपयामि गृहीतोसीन्द्रायत्त्वाव्विश्वकर्मणऽएषतेयो-निरिन्द्रायत्त्वाव्विश्वकर्मणे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मणे नमः। विश्वकर्माणमावाहयामि पूजयामि।

प्रार्थयेत् -

अज्ञानाज्ज्ञानतो वापि दोषा ये खननोद्भवाः।
नाशयत्वखिलाँस्ताँस्तु विश्वकर्मन्नमोऽस्तु ते॥

मेखलापूजनम् प्रथम (उपरि) श्वेतवर्णमेखलायां -

इदं व्विष्णुर्व्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाᳪसुरे स्वाहा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि पूजयामि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मध्ये रक्तवर्णमेखलायां –

ॐ ब्रह्म यज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीतः सुरुचोव्वेनऽआवः। स बुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि। पूजयेत्।

तृतीयकृष्णवर्णमेखलायां –

ॐ नमस्तेरुद्द्रमन्यवऽउतोतऽइषवे नमः। बाहुब्भ्यामुतते नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः। रुद्रमावाहयामि स्थापयामि। पूजयेत्।

योनिपूजनम् –

प्राक् योन्यां गौरीं पूजयेत् –

ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्। ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि। पूजयेत्।

ॐ क्षत्रस्ययोनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि। मात्वा हि ६ सीन्मा मा हि ६ सीः। ॐ भूर्भुवः स्वः योन्यै नमः। योनिमावाहयामि स्थापयामि। योन्युपरि दक्षिणे गोलार्धेसूर्याय नमः उत्तरगोलार्धे चन्द्रमसे नमः। पूजयेत्।

प्रार्थना :-

सेवन्ते महतीं योनिं देवर्षिसिद्धमानवाः।
चतुरशीतिलक्षाणि पन्नगाद्याः सरीसृपाः॥
पशवः पक्षिणः सर्वे संसरन्ति यतो भुवि।
योनिरित्येव विख्याता जगदुत्पत्तिहेतुका॥
योने त्वं विश्वरूपाऽसि प्रकृतिर्विश्वधारिणी।
कामस्था कामरूपा च विश्वयोन्यै नमो नमः॥

कण्ठपूजनम् –

ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठादिवं ६ रुद्राऽउपश्रिताः। तेषा ७ सहस्त्रयोजनेवधन्न्वानितन्मसि। ॐ भूर्भुवः स्वः कण्ठे रुद्राय नमः। रुद्रमावाहयामि स्थापयामि। पूजयेत्।

प्रार्थयेत् – **कंठमंगलरूपेण सर्वकुंडे प्रतिष्ठितः।**
परितो मेखलास्त्वत्तो रचिता विश्वकर्मणा॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नाभिपूजनम् :-

ॐ नाभिर्म्मेचित्तं व्विज्ञानं पायुर्म्मे पचितिर्ब्भसत्। आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः। जङ्घाभ्याम्पद्भ्यान्धर्म्मोस्मिव्विशिराजाप्रतिष्ठितः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः नाभ्यै नमः। नाभिं आवाहयामि स्थापयामि। पूजयेत्।

प्रार्थना -

नाभे त्वं कुंडमध्ये तु देवैः सह प्रतिष्ठिता।
अतस्त्वां पूजयामीह शुभदा सिद्धिदा भव॥

कुंडमध्ये नैर्ऋत्यकोणे वास्तुपूजनम्।

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमीवो भवानः। यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भवद्विपदे शञ्चतुष्पदे॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तुपुरुषाय नमः। वास्तुपुरुषमावाहयामि स्थापयामि। पूजयेत्।

प्रार्थना :-

वास्तुपुरुष देवेश सर्वविघ्नहरो भव।
शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वकामान्प्रयच्छ मे॥

कुण्डपुरतः एकस्मिन्पात्रे बलिदानार्थं दध्योदनं संस्थाप्य बलिदानं कुर्यात्॥ हस्ते जलं गृहीत्वा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तुपुरुषाय नमः अमुं दध्योदनबलिं समर्पयामि॥ अनेन पूजनपूर्वकबलि-दानेन वास्तुपुरुषः प्रीयतां न मम।

पंचभूसंस्काराः - **कुण्डे स्थंडिलेऽवा**

१. परिसमूहनम् -

कनिष्ठाङ्गुष्ठमध्यतः मूलधृतैस्त्रिभिर्दर्भाग्रैः दक्षिणतः उदक्संस्थं त्रिः परिसमूहनम्। एवं त्रिः परिसमुह्य तान्कुशानैशान्यां पूर्वतो वा परित्यजेत्।

२. गोमयोदकेन उपलेपनम् -

दक्षिणतः उदक्संस्थं गोमयो-दकेन त्रिरुपलेपयेत्।

३. उल्लेखनम् -

खदिरेण हस्तमात्रेण स्फ्येन स्रुवमूलेन कुशैर्वा प्रागग्रा दक्षिणतः उदक्संस्थाः द्वादशाङ्गुला तिस्रो रेखाः उल्लेखयेत्।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

४. उद्धरणम् –

प्रतिरेखातः अंगुष्ठानामिकाभ्यां अंगुष्ठात् अनामिकापर्यन्तं त्रिवारं पांसूनुद्धृत्य प्राञ्चमुद्धरेत्। पूर्ववत् त्यजेत्।

५. अभ्युक्षणम् –

प्रतिरेखां न्युब्जमुष्ठिना प्राजापत्य तीर्थेन उदकेन त्रिरभ्युक्षेत्।

अग्निस्थापनम् –

कांस्यपात्रस्थं निर्धूमवह्निं द्वितीयपात्रेण पिहितं कुण्डाद् (स्थण्डिलाद्) बहिराग्नेयां दिशि निधाय ॐ हूँ फट् स्वाहा इति मंत्रं पठेत् वा

क्रव्यादमग्निम्प्रहिणोमि दूरं यमराज्यङ्गच्छतु रिप्रवाहः।
इहैवायमितरो जातवेदा देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन्॥

क्रव्यादांशं नैर्ऋत्यां दिशि परित्यज्य। अग्निं गायत्र्या सम्पूज्य योनिमार्गेण वा स्वात्माभिमुखेन स्थापयेत्।

ॐ अग्निन्दूतम्पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँ॥ऽ आसाद-यादिह॥ इति मंत्रेण अग्निं स्थापयेत्। अत्र अग्निंपूजनं कृताकृतम्॥

---***---

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ नवग्रहादिदेवानामावाहनम् ।।

मध्ये रक्तवर्णवर्तुलाकारस्य प्राङ्मुखस्य सूर्यस्यावाहनम् :-

ॐ आकृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

जपाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० सूर्याय नमः, सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ।

आग्नेय्यां श्वेतवर्णार्धचन्द्रा कृतेः पश्चिमाभिमुखस्य चन्द्रस्यावाहनम् :-

इमन्देवाऽअसपत्नꣳसुवद्ध्वं महते क्षत्राय महते ज्ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुख्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै व्विशऽएषवोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳराजा।।

दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोममावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० सोमाय नमः, सोम इहागच्छ इति तिष्ठ।

दक्षिणे रक्तवर्णत्रिकोणाकारस्य दक्षिणाभिमुखस्य भौमस्यावाहनम् :-

अग्निर्म्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽ अयम्।
अपाꣳरेताꣳसि जिन्वति।।

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेजसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० भौमाय नमः, भौम इहागच्छ इह तिष्ठ।

ईशानकोणे धनुषवर्णधनुषाकृतेः उदङ्मुखस्य बुधस्यावाहनम् :-

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सꣳसृजेथामयञ्च।
अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रियङ्कलिकाभासं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं बुधमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० बुधाय नमः, बुध इहागच्छ इह तिष्ठ।

उत्तरे पीतवर्णाष्टकोणाकारस्योदङ्मुखस्य गुरोरावाहनम् :-

बृहस्पतेऽअति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवसऽ ऋत प्रजाततदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम्।।

देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० बृहस्पतये नमः, बृहस्पते इहागच्छ इहतिष्ठ।

प्राच्यां श्वेतवर्णचतुष्कोणाकृतेः प्राङ्मुखस्य शुक्रस्यावाहनम् –

अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳशुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु।।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० शुक्रायः नमः, शुक्र इहागच्छ इह तिष्ठ।

प्रतीच्यां कृष्णवर्णनराकारस्य पश्चिमाभिमुखस्य शनेरावाहनम् –

शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शँ योरभिस्रवन्तु नः।।

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्त्तण्ड सम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० शनैश्चराय नमः, शनैश्चर इहागच्छ इहतिष्ठ।

नैर्ऋत्यकोणे कृष्णवर्णमकराकृतेः दक्षिणाभिमुखस्य राहोरावाहनम् –

कया नश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।।

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं राहुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० राहवे नमः, राहो इहागच्छ इहतिष्ठ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वायव्यां कृष्णवर्णखड्गाकृतेः दक्षिणमुखस्य केतोरावाहनम् –

केतुङ्कृण्वन्न केतवे पेशो मर्य्याऽ अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥

पलाशधूम्रसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भू० केतवे नमः, केतो इहागच्छ इह तिष्ठ।

वा

नमोऽस्तु वो ग्रहाः सर्वे इहागच्छत तिष्ठत।
ईशान पूर्वयोर्मध्ये गृह्यतां मम पूजनम्॥

ॐ भू० नवग्रहेभ्यो नमः।॥ इति॥

******

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ अधिदेवानामावाहन[1]म्

ॐ त्र्यम्बकँ यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।
पञ्चवक्त्रं वृषारूढं प्रतिवक्त्रं त्रिलोचनम्।
खट्वाङ्गधारिणं वन्द्यं शिवमावाहयाम्यहम्।।
ॐ भू० ईश्वराय नमः, ईश्वर इहागच्छ इहतिष्ठ।

श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।
इष्णन्निषाणा मुम्मंऽइषाण सर्व्वलोकम्मंऽइषाण।।
अक्षसूत्रं च कमलं दर्पणं च कमण्डलुम्।
हस्तेषु धारयन्तीं तामुमामावाहयाम्यहम्।।
ॐ भू० उमायै नमः, उमे इहागच्छ इह तिष्ठ।

यदक्क्रन्दः प्प्रथमञ्जायमानउद्यन्त्समुद्द्राादुतवा पुरीषात्।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्त्यम्महि जातन्तेऽअर्व्वन्।।
आवाहयाम्यहं स्कन्दं शिखण्डकविभूषणम्।
रक्तमाल्याम्बरधरं मयूरवरवाहनम्।।
ॐ भू० स्कन्दाय नमः, स्कन्द इहागच्छ इह तिष्ठ।

व्विष्णोः रराटमसि व्विष्णोः श्नप्त्रेस्त्थो व्विष्णोः स्यूरसि व्विष्णोर्द्ध्रुवोसि।
व्वैष्णवमसि व्विष्णवे त्वा।।
क्रमात्कौमोदकी पद्मशङ्खचक्रधरं विभुम्।
भक्तकल्पद्रुमं शान्तं विष्णुमावाहयाम्यहम्।।
ॐ भू० विष्णवे नमः, विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ।

आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्च्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्न्यः शूरऽइषव्व्योतिव्याधी महारथो जायतान्दोग्ध्री धेनुर्व्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्य्योषा जिष्णू रथेष्ठाः

१. शिवः शिवा गुहोविष्णुः ब्रह्मेन्द्रयमकालकाः।
चित्रगुप्तोऽथमान्वादि दक्षिणे चाधिदेवताः।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सभेयो युवास्य यजमानस्य व्वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्ज्जन्यो व्वर्षतु फलवत्यो नऽ ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

अक्षमालां श्रुवं चैव धारयन्तं कमण्डलुम्।
पद्मासनस्थं जटिलं विधिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० ब्रह्मणे नमः, ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ।

सजोषाऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब व्वृत्रहाशूरव्विद्वान्।
जहि शत्रूँ २।। ऽ रपमृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि व्विश्वतो नः।।

चतुर्दन्त गजारूढं नानाभरणभूषितम्।
शचीशं वज्रिणं देवं शक्रमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० शक्राय नमः, शक्र इहागच्छ इह तिष्ठ।

यमायत्त्वा मखायत्त्वा सूर्य्यस्य त्वा तपसे।
देवस्त्वा सविता मद्ध्वानक्तु पृथिव्व्याः सꣳस्पृशस्प्पाहि।
अर्च्चिरसि शोचिरसि तपोसि।।

महामहिषमारूढं कालदण्डधरं विभुम्।
रक्तेक्षणं महावीर्यं यममावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० यमाय नमः, यम इहागच्छ इह तिष्ठ।

कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्याऽउन्नयामि।
समापोऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः।।

कालं करालवदनं नीलाङ्गमतिभीषणम्।
दण्डपाशधरं देवं कालमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० कालाय नमः, काल इहागच्छ इह तिष्ठ।

इन्धानास्त्वा शतꣳहिमा द्युमन्तꣳसमिधीमहि।
व्वयस्वन्तो व्वयस्कृतꣳसहस्वन्तः सहस्कृतम्।।

दक्षिणे लेखनी वामे मसिपात्रस्य धारकम्।
आवाहयाम्यहं चित्रगुप्तं तं शुभदर्शनम्।।

ॐ भु० चित्रगुप्ताय नमः, चित्रगुप्त इहागच्छ इहतिष्ठ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथवा

शिवो गौरी तथा स्कन्दोविष्णुर्ब्रह्मापुरन्दराः।
यमः कालः चित्रगुप्तश्च देवताभ्यो नमो नमः॥
ॐ भू० अधिदेवेभ्यो नमः।

॥ इति॥

******

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ प्रत्यधिदेवानामावाहनम्[1] ।।

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। स च स्वानः स्वस्तये।।

पिङ्गलश्मश्रुकेशाक्षं पीनाङ्गं जरठं विभुम्।
सप्तार्चिषं शक्तिधरं अग्निमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० अग्नये नमः, अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ।

उदुत्तमं व्वरुण पाशमस्मदवाधमं व्विमध्यमꣳश्रथाय।
अथा व्वयमादित्य व्व्रते तवानागसोऽअदितये स्याम।।

ॐ भू० अद्भ्यो नमः, अप इहागच्छ इह तिष्ठ।

स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्प्रथाः।।

चतुर्भुजां शुभ्रवर्णां दिव्याभरणभूषिताम्।
सस्यदां कूर्मपृष्ठस्थां धरामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० धरायै नमः,धरे इहागच्छ इह तिष्ठ।

इदं व्विष्णुर्व्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा।।

किरीटकुण्डलधरं शुभ्रवर्णं चतुर्भुजम् ।
देवदेवं जगन्नाथं विष्णुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० विष्णवे नमः, विष्णो इहागच्छ इहतिष्ठ।

इन्द्रऽआसान्नेता बृहस्पतिर्द्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः।
देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्ग्रम्।।

उच्चैः श्रवसमारुढ़ं वज्रहस्तं शचीपतिम्।
शतक्रतुं सहस्राक्षमिन्द्रमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० इन्द्राय नमः, इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ।

अदित्यै रास्नासीन्द्राण्याऽउष्णीषः। पूषासि घर्म्मायदीष्व।।

१. अग्निरापो धराविष्णुः शक्रेन्द्राणिपितामहः।
पन्नगार्क क्रमाद् वामे गृहे प्रत्यधिदेवताः।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उत्तुङ्गपीवरकुचां दिव्यालङ्कारसंयुताम्।
सुनासीरप्रियां देवीं शचीमावाहयाम्यहम्।।
ॐ भू० शच्यै नमः, शचि इहागच्छ इह तिष्ठ।

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयꣳस्यामपतयो रयीणाम्।
अक्षं स्रुवं स्रुचं कुण्डिं धारयन्तं प्रजापतिम्।
चतुर्वक्त्रं चतुर्बाहुं देवमावाहयाम्यहम्।।
ॐ भू० प्रजापतये नमः, प्रजापते इहागच्छ इह तिष्ठ।

नमोऽस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः।।
अक्षसूत्रधरान् सर्पान् कुण्डिकापुच्छभूषणान्।
एकभोगाँस्त्रिभोगान्वा देवानावाहयाम्यहम्।।
ॐ भू० सर्पेभ्यो नमः, सर्पाः इहागच्छत इहतिष्ठत।

ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेनऽआवः।
स बुद्ध्न्याऽउपमाऽअस्यव्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः।।
आवाहयाम्यहं देवं ब्रह्माणं जटिलं विभुम्।
अक्षमालां स्रुवं पुस्तं धारयन्तं कमण्डलुम्।।
ॐ भू० ब्रह्मणे नमः, ब्रह्मन् इहागच्छ इहतिष्ठ।

वा

अधि प्रत्यधि देवा वै इहागच्छत तिष्ठत।
मारुतोत्तरयोर्मध्ये गृह्यतां पूजनं मम।।
ॐ भू० प्रत्यधिदेवेभ्यो नमः।

। इति।

******

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ प्रत्यधिदेवानामावाहनम्[1] ।।

स नः पितेव सूनवेग्ने सूपायनो भव। स च स्वानः स्वस्तये।।

पिङ्गलश्मश्रुकेशाक्षं पीनाङ्गं जरठं विभुम्।
सप्तार्चिषं शक्तिधरं अग्निमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० अग्नये नमः, अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ।

उदुत्तमं व्वरुण पाशमस्मदवाधमं व्विमध्यमᳬश्रथाय।
अथा व्वयमादित्य व्व्रते तवानागसोऽअदितये स्याम।।

ॐ भू० अद्भ्यो नमः, अप इहागच्छ इह तिष्ठ।

स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्प्रथाः।।

चतुर्भुजां शुभ्रवर्णां दिव्याभरणभूषिताम्।
सस्यदां कूर्मपृष्ठस्थां धरामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० धरायै नमः,धरे इहागच्छ इह तिष्ठ।

इदं व्विष्णुर्व्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाᳬसुरे स्वाहा।।

किरीटकुण्डलधरं शुभ्रवर्णं चतुर्भुजम्।
देवदेवं जगन्नाथं विष्णुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० विष्णवे नमः, विष्णो इहागच्छ इहतिष्ठ।

इन्द्रऽआसान्नेता बृहस्पतिर्द्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः।
देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्ग्रम्।।

उच्चैः श्रवसमारुढ़ं वज्रहस्तं शचीपतिम्।
शतक्रतुं सहस्राक्षमिन्द्रमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० इन्द्राय नमः, इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ।

अदित्यै रास्नासीन्द्राण्याऽउष्णीषः। पूषासि घर्म्माय दीष्व।।

१. अग्निरापो धराविष्णुः शक्रेन्द्राणिपितामहः।
पन्नगार्क क्रमाद् वामे गृहे प्रत्यधिदेवताः।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उत्तुङ्गपीवरकुचां दिव्यालङ्कारसंयुताम्।
सुनासीरप्रियां देवीं शचीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० शच्यै नमः, शचि इहागच्छ इह तिष्ठ।

प्रजापते नत्त्वदेतान्यन्न्यो व्विश्वा रूपाणि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु व्वयꣳस्यामपतयो रयीणाम्।

अक्षं स्रुवं स्रुचं कुण्डिं धारयन्तं प्रजापतिम्।
चतुर्वक्त्रं चतुर्बाहुं देवमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० प्रजापतये नमः, प्रजापते इहागच्छ इह तिष्ठ।

नमोस्तु सर्प्पेब्भ्यो ये के च पृथिवीमनु।
येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेब्भ्यः सर्प्पेब्भ्यो नमः।।

अक्षसूत्रधरान् सर्पान् कुण्डिकापुच्छभूषणान्।
एकभोगाँस्त्रिभोगान्वा देवानावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० सर्पेभ्यो नमः, सर्पाः इहागच्छत इहतिष्ठत।

ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेनऽआवः।
स बुद्ध्न्याऽउपमाऽअस्यव्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः।।

आवाहयाम्यहं देवं ब्रह्माणं जटिलं विभुम्।
अक्षमालां स्रुवं पुस्तं धारयन्तं कमण्डलुम्।।

ॐ भू० ब्रह्मणे नमः, ब्रह्मन् इहागच्छ इहतिष्ठ।

वा

अधि प्रत्यधि देवा वै इहागच्छत तिष्ठत।
मारुतोत्तरयोर्मध्ये गृह्यतां पूजनं मम।।

ॐ भू० प्रत्यधिदेवेभ्यो नमः।

। इति।

******

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ पञ्चलोकपा[१]लानामावाहनम् ।।

गणानान्त्वा गणपतिꣳहवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳहवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहे व्वसोमम। आहमजानि गर्ब्भधमात्त्वमजासि गर्ब्भधम्।।

एकदन्तं महाकायं लम्बोदर गजाननम्।
विघ्ननाशकरं देवं गजमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० गणपतये नमः, गणपते इहागच्छ इहतिष्ठ।

जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः।।

सर्वविघ्नद्रवे देवि सर्वदैवतपूजिते।
भारती ब्रह्मणः सृष्टिं दुर्गामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० दुर्गायै नमः, दुर्गे इहागच्छ इहतिष्ठ।

आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरद्ध्वरꣳसहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्।
व्वायोऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः।।

प्राणादिनाम्ना सर्वेषां लोकानां धारकं विभुम्।
सर्वाधारं महावेगं वायुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० वायवे नमः, वायो इहागच्छ इह तिष्ठ।

घृतं घृतपावानः पिबत व्वसां व्वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा।
दिशः प्रदिशऽआदिशो व्विदिशऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।।

आकाशं खमनन्तं च सुखवर्त्मानमव्ययम्।
सर्वगं सर्वसाक्षिण्यं व्योममावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० आकाशाय नमः, आकाश इहागच्छ इहतिष्ठ।

यावाङ्कशा मधुमत्त्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञम्मिमिक्षतम्।।

---

१. गणेशश्चाम्बिका वायुराकाशश्चाश्विनौ तथा।
ग्रहाणामुत्तरे पञ्चलोकपालाः प्रकीर्तिताः।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

देवतानां च भैषज्ये सुकुमारौ भिषग्वरौ।
आवाहयाम्यहं देवावश्विनौ पुष्टिवर्द्धनौ।।
ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः, अश्विनौ इहागच्छतं इह तिष्ठतम्।

अथवा – नमो वो लोकपालेभ्य इहागच्छत तिष्ठत।
रक्षोवरुणयोर्मध्ये गृह्यतां पूजनं मम।।
ॐ गणपत्यादि पञ्चलोकपालेभ्यो नमः ।

। इति।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ क्षेत्राधिपतेः वास्तोष्पतेश्चावाहनम् ।।

ॐ वास्तोष्पतेप्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवानः ।
यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नोभव द्विपदे शं चतुष्पदे ।।

आवाहयामि देवेशं पुरुषं च महाबलम् ।
देवदेवं गणाध्यक्षं पातालतलवासिनम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोष्पतये नमः, वास्तोष्पते इहागच्छ इह तिष्ठ ।

नहिस्पशमविंदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः ।
एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः ।।

आवाहयाम्यहं देवं क्षेत्रपालं सुखाप्तये ।
भूतप्रेतपिशाचाद्यैरावृतं शूलधारिणम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय नमः, क्षेत्रपाल इहागच्छ इह तिष्ठ ।

।। इति ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ दिक्पालानामावाहनम् ।।

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवे हवे सुहवꣳशूरमिन्द्रम्।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳस्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ।।

ऐरावतसमारूढं वज्रहस्तं महाबलम्।
आश्रितं दिशि पूर्वस्यां इन्द्रमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० इन्द्राय नमः, इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ।

अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवा ꣳ।। ऽ आसादयादिह।।

त्रिपादं सप्तहस्तं च द्विमूर्धानं द्विनासिकम्।
षण्नेत्रं च चतुः श्रोत्रमग्निमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० अग्नये नमः, अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ।

असि यमोऽअस्यादित्योऽअर्व्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्व्रतेन।
असि सोमेन समया व्विपृक्तऽआहुस्तेत्त्रीणि दिवि बन्धनानि ।।

महिषपृष्ठसमारूढं दण्डहस्तं महाबलम्।
याम्यां दिशि समासीनं यममावाहयाम्यहम्।

ॐ भू० यमाय नमः, यम इहागच्छ इह तिष्ठ।

असुन्न्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्त्यामन्न्विहि तस्क्करस्य।
अन्न्यमस्म्मदिच्छ सा तऽइत्त्या नमो देवि निर्ऋते तुब्भ्यमस्तु।।

महाप्रेत समारूढं खड्गहस्तं महाबलम्।
नैर्ऋत्यां दिशि चासीनं निर्ऋतिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० निर्ऋतये नमः, निर्ऋति इहागच्छ इहतिष्ठ।

इमम्मे व्वरुणश्श्रुधी हवमद्द्या च मृडय। त्वामवस्युराचके।।

महामकरमारुढं पाशहस्तं महाबलम्।
वारुण्यां दिशि चाश्रित्य वरुणमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भू० वरुणाय नमः, वरुण इहागच्छ इहतिष्ठ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

व्वायुरग्ग्रेगा यज्ञप्प्रीः साकङ्गन्मनसा यज्ञम्। शिवो नियुद्धिः शिवाभिः॥

मृगपृष्ठ समारूढं हस्तमंकुशमेव च।

वायव्यां दिशि चाश्रित्य वायुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भू० वायवे नमः, वायो इहागच्छ इह तिष्ठ॥

व्वयꣳसोम व्व्रते तव मनस्तनूषु विभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥

श्वेताश्वे च समारूढं गदाहस्तं महाबलम्।

उदीच्यां दिशि चाश्रित्य कुबेरमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भू० कुबेराय नमः, कुबेर इहागच्छ इह तिष्ठ॥

ईशा व्वास्यमिदꣳसर्व्वं यत्किञ्च जगत्त्याञ्जगत्।
तेन त्त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्॥

वृषपृष्ठ समारुढं शूलहस्तं महाबलम्।

ईशान्यां दिशि चाश्रित्य ईशमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भू० ईशानाय नमः, ईशान इहागच्छ इहतिष्ठ।

अस्म्मे रुद्द्रा मेहना पर्व्वतासो व्वृत्रहत्त्ये भरहूतौ सजोषाः।
यःशꣳसते स्तुवते धायिपज्ज्रऽइन्द्रज्ज्येष्ठाऽअस्मा२ँ॥ऽअवन्तु देवाः॥

कमण्डलुधरं देवं वेदावासं पितामहम्।

यज्ञाध्यक्षं चतुर्वक्त्रं विभुमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भू० ब्रह्मणे नमः, ब्रह्मा इहागच्छ इह तिष्ठ।

नमोस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये ऽ अन्तरिक्षे ये दिवि तेब्भ्यः सर्प्पेब्भ्यो नमः॥

नागपृष्ठ समारुढं हलहस्तं महाबलम्।

पातालतलमाश्रित्य अनन्तमावाहयाम्यहम्॥

ॐ भू० अनन्ताय नमः, अनन्त इहागच्छ इहतिष्ठ।

अथवा

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नमो वो दशदिक्पाला इहागच्छत तिष्ठत।
पूर्वाग्निकोणयोर्मध्ये गृह्यतां पूजनं मम।।

ॐ इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यो नमः ।।

मनोजूतिरिति प्रतिष्ठापनम्। ॐ भूर्भुवः स्वः आदित्यादिनवग्रहाः अधिप्रत्यधिदेवताः पञ्चलोकपालवास्तोष्पति क्षेत्रपालदशदिक्पालसहिता इहागच्छत इह तिष्ठत मम कृतां पूजां गृह्णीत। यथोपचारैः सम्पूज्य –

मन्त्रपुष्पम् :–

ग्रहा॑ ऊर्ज्जाहुतयो॒ व्यन्तो॒ व्विप्रा॑य म॒तिम्। तेषां॒ व्विशि॑प्रियाणां व्वो॒हमिष॒मूर्ज्ज॒ꣳसम॑ग्रभमुपया॒मगृ॑हीतो॒सीन्द्रा॑य त्वा॒ जुष्टं॑ गृह्णाम्ये॒ष ते॒ योनि॒रिन्द्रा॑य त्वा॒ जुष्ट॑तमम् ।।

विरञ्चिनारायणशङ्करेभ्यः,
शचीपति स्कन्द विनायकेभ्यः।
लक्ष्मी भवानी कुलदेवताभ्यो,
नमोऽस्तु दिक्पालनवग्रहेभ्यः।।
आदित्यसोमौ बुधभार्गवौ च,
शनिश्चरो वा गुरुलोहिताङ्गौ।
प्रीणन्तु सर्वे ग्रहराहुकेतुभिः,
सर्वे सुराः शान्तिकरा भवन्तु।।

।। इति।।

******

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चतु:षष्टियोगिनीमण्डलपूजनम्

वाम भागे वेद्युपरि रक्त वस्त्रं प्रसार्य तदुपरि चतु:षष्टि कोष्ठानि विधाय। तस्योपरि त्रीणि त्रिकोणानि कृत्वा क्रमेण दक्षिणतः आरभ्योदगन्ताः कलशानि प्रतिष्ठाप्य तत्र महाकालीं महालक्ष्मीं महासरस्वतीं च पूजयेत्। चतुः षष्ठियोगिनीः प्रागन्ता उदगन्ता वा पूजयेत्। संकल्पदेशकालौ संकीर्त्य अमुकोऽहं अस्मिन् यज्ञे महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती पूजनपूर्वक गजाननादिचतुः षष्टियोगिनीनां स्थापनं पूजनं बलिदानम् च करिष्ये।

अक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा –

ॐ अम्बे ऽ अम्बिके म्बालिकेनमानयतिकश्चन।
ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः महाकाल्यै नमः, महाकालीमावाहयामि स्थापयामि।

श्रीश्चंते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौव्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मंऽइषाण सर्व्वलोकम्मंऽइषाण॥

ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः। महालक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि।

पावका नः सरस्वती व्वाजेभिर्व्वाजिनीवती। यज्ञं व्वष्टु धियावसुः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सरस्वत्यै नमः, सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि।

श्री महाकाली का ध्यान–

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघान् शूलं भुशुण्डीं शिरः,
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां,
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

श्री महालक्ष्मी का ध्यान–

अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां,
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां,
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥

श्री महासरस्वती का ध्यान –

घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं,
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिनयनामाधारभूतां महा,
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्॥

प्रागन्तातः– प्रथमाष्टकपंक्तिः –

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गजाननायै नमः। गजाननामा–वाहयामि स्थापयामि॥१॥

आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्च्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्न्यः शूरऽइषव्व्योतिव्याधी महारथो जायतान्दोग्ध्री धेनुर्व्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्य्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य व्वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्ज्जन्यो व्वर्षतु फलवत्यो नऽ ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिंहमुख्यै नमः, सिंहमुखीमावाहयामि स्थापयामि॥२॥

ॐ महाँ २॥ इन्द्रो व्वज्रहस्तः षोडशी शर्म्म यच्छतु॥ हन्तु पाप्मानं योऽस्मान्द्वेष्टि॥ उपयामगृहीतोसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्म्महेन्द्राय त्वा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गृध्रास्यायै नमः, गृध्रास्यामावाहयामि स्थापयामि॥३॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः। पितरञ्चप्रयन्त्स्वः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः काकतुण्डिकायै नमः, काकतुण्डिमावाहयामि स्थापयामि।।४।।

ॐ आदित्यं गर्भं पयसा समङ्ग्धि सहस्रस्य प्रतिमां विश्वरूपम्। परिवृङ्ग्धि हरसा माभिमंस्थाः शतायुषं कृणुहि चीयमानः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः उष्ट्रग्रीवायै नमः, उष्ट्रग्रीवामावाहयामि स्थापयामि।।५।।

ॐ स्वर्ण्ण घर्म्मः स्वाहा स्वर्णार्कः स्वाहा स्वर्ण्ण शुक्रः स्वाहा स्वर्ण ज्योतिः स्वाहा स्वर्ण सूर्य्यः स्वाहा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः हयग्रीवायै नमः, हयग्रीवामावाहयामि स्थापयामि।।६।।

ॐ सत्यञ्च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनञ्च मे विश्वञ्च मे महश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातञ्च मे जनिष्यमाणञ्च मे सूक्तञ्च मे सुकृतञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः, वाराहीमावाहयामि स्थापयामि।।७।।

ॐ भायै दार्व्वाहारं प्रभायाऽअग्न्येधम्ब्रध्नस्य विष्टपायाभिषेक्तारं व्वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं देवलोकाय पेशितारं मनुष्यलोकाय प्प्रकरितारꣳ सर्व्वेब्भ्यो लोकेब्भ्यऽ उपसेक्तारमवऽऋत्यै व्वधायोपमन्थितारम्मेधाय व्वासः पल्पूलीं प्रकामाय रजयित्रीम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शरभाननायै नमः, शरभाननामावाहयामि स्थापयामि।।८।।

द्वितीयाष्टकपंक्ति :-

ॐ जिह्वा मे भद्द्रं व्वाड्महो मनो मन्न्युः स्वराड् भामः।मोदाः प्रमोदाऽ अङ्गुलीरङ्गानि मित्रं मे सहः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः उलूकिकायै नमः, उलूकिकामावाहयामि स्थापयामि।।१।।

ॐ हिङ्कराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा व्वक्रन्दाय स्वाहा प्प्रोथते स्वाहा प्प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहासीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्प्रबुद्धाय स्वाहा व्विजृम्भमाणाय स्वाहा व्विचृत्ताय स्वाहा सꣳहानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहायनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शिवारावायै नमः, शिवारावामावाहयामि स्थापयामि।।२।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ अग्निश्च मे घर्म्मश्च मेर्कश्च मे सूर्यश्च्च मे प्राणश्च्च मेश्वमेधश्च्च मे पृथिवी च मेदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मेङ्गुलयः शक्क्वरयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्प्यन्ताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मयूरायै नमः, मयूरीमावाहयामि स्थापयामि।।३॥

ॐ पूषन् तव व्व्रते व्वयं न रिष्येम कदाचन। स्तोतारस्त ऽ इह स्मसि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विकटाननायै नमः, विकटाननामावाहयामि स्थापयामि।।४॥

ॐ व्वेद्या व्वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम्। यूपेन यूप ऽ आप्यते प्रणीतो ऽ अग्निरग्निना॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवक्रायै नमः, अष्टवक्रामावाहयामि स्थापयामि।।५॥

ॐ अयमग्निः सहस्त्रिणो व्वाजस्य शतिनस्पतिः। मूर्द्धा कवी रयीणाम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कोटराक्ष्यै नमः, कोटराक्षिमावा-हयामि स्थापयामि।।६॥

ॐ इमम्मे व्वरुणश्श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युरा च के॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कुब्जायै नमः, कुब्जामावाहयामि स्थापयामि।।७॥

ॐ समाय यमसूमथर्व्वब्भ्योवतोका ऽऽ संव्वत्सराय पर्य्यायिणीं परिवत्सरायाविजातामिदावत्सराया तीत्वरीमिद्वत्सरायातिष्क्कद्वरीं व्वत्सराय व्विजर्ज्जरा ऽऽ संव्वत्सरायपलिक्क्नीमृभुब्भ्योजिनसन्ध ऽ साद्ध्येब्भ्यश्च्चर्म्मम्नम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विकटलोचनायै नमः, विकटलोचनामावाहयामि स्थापयामि।।८॥

तृतीयाष्टकपंक्ति –

ॐ असि यमोऽअस्यादित्यो ऽ अर्व्वन्नसित्रितो गुह्येन व्व्रतेन। असि सोमेन समया व्विपृक्त ऽ आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शुष्कोदर्यै नमः, शुष्कोदरिमावाहयामि स्थापयामि।।१॥

ॐ मित्रस्य चर्षणीधृतोवो देवस्य सानसि। द्युम्नं चित्र-श्रवस्तमम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ललज्जिह्वायै नमः, ललज्जिह्वामावाह-यामि स्थापयामि।।२॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ अग्ने बृहन्नुषसामूर्द्ध्वो ऽ अस्थान्निर्जगन्वान्तमसो ज्योतिषागात्॥ अग्निर्भानुना रुशता स्वङ्ग ऽ आ जातो विश्वा सद्मान्यप्राः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्वदंष्ट्रायै नमः, श्वंदष्ट्रामावाहयामि स्थापयामि।।३॥

ॐ भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगे मान्धियमुदवा ददन्नः। भग प्र नो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वानराननायै नमः, वानराननामावाहयामि स्थापयामि।।४॥

ॐ सुपर्णोसि गरुत्माँ स्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ। स्तोम ऽ आत्मा छन्दा ꣳसि स्यङ्गानि यजू ꣳषि नाम। साम ते तनूर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः शफाः। सुपर्णोसि गरुत्मान्दिवं गच्छस्वः पत॥

ॐ भूर्भुवः स्वः रुक्षाक्ष्यै नमः, रुक्षाक्षिमावाहयामि स्थापयामि।।५॥

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। अक्षन्पितरोमीमदन्त पितरोतीतृपन्तपितरः पितरः शुन्धद्ध्वम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः केकराक्ष्यै नमः, केकराक्षीमावाहयामि स्थापयामि।।६॥

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनी स्थो व्वरुणस्य ऽ ऋत सदन्यसि वरुणस्य ऽ ऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऽ ऋतसदनमासीद॥

ॐ भूर्भुवः स्वः बृहत्तुण्डायै नमः, बृहत्तुण्डामावाहयामि स्थापयामि।।७॥

ॐ व्वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः। करतान्नः सुराधसः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सुराप्रियायै नमः, सुराप्रियामावाहयामि स्थापयामि।।८॥

चतुर्थाष्टक पंक्तिः क्रमेण –

ॐ ह ꣳ सः शुचिषद्वसुरन्तरिक्ष सद्धोता व्वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृतसद्व्योम सदब्जा गोजा ऽ ऋतजा ऽ अद्रिजा ऽ ऋतं बृहत्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कपालहस्तायै नमः, कपालहस्तामावाहयामि स्थापयामि।।१॥

ॐ सुसन्दृशन्त्वा व्वयं मघवन्वंदिषीमहिं॥ प्र नूनं पूर्णबन्धुर स्तुतो यासि वशाँ २॥ ऽ अनु योजान्विन्द्र ते हरीं॥

ॐ भूर्भुवः स्वः रक्ताक्ष्यै नमः, रक्ताक्षीमावाहयामि स्थापयामि।।२॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ प्रतिपदंसि प्प्रतिपदेंत्त्वानुपदंस्यनुपदें त्त्वा सम्पदंसि सम्पदें त्त्वा तेजोंसि तेजंसे त्वा ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शुष्क्यै नमः, शुष्कीमावाह-यामि स्थापयामि ।।३ ॥

ॐ देवींरापो ऽ अपान्नपाद्यो वं ऽ ऊर्म्मिर्हविष्ष्य ऽ इन्द्रियावांन्मदिन्तंमः । तं देवेब्भ्यों देवत्रा दंत्त शुक्क्रपेब्भ्यो येषांभाग स्थ स्वाहां ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः श्येन्यै नमः, श्येनामावाहयामि स्थापयामि ।।४ ॥

ॐ देवीर्द्वारों ऽ अश्विनां भिषजेन्द्रे सरंस्वती। प्राणं न व्वीर्यं नसि द्द्वारों दधुरिन्द्रियं व्वंसुवनें व्वसुधेयंस्य व्यन्तु यजं ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कपोतिकायै नमः, कपोतिकामावाहयामि स्थापयामि ।।५ ॥

ॐ देवी जोष्ट्री सरंस्वत्युश्विनेन्द्रंमवर्द्धयन्। श्रोत्रं न कर्ण्णं-योर्य्यशो जोष्ट्रींब्भ्यां दधुरिन्द्रियं व्वंसुवनें व्वसुधेयंस्य व्यन्तु यजं ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पाशहस्तायै नमः, पाशहस्तामावाहयामि स्थापयामि ।।६ ॥

ॐ देवस्यं त्वा सवितुः प्रंसवेऽश्विनोर्बाहुब्भ्यां पूष्णो हस्तांब्भ्याम्। अश्श्विनोर्भैषंज्ज्येन तेजंसे ब्रह्मवर्च्चसायाभिषिंञ्चामि सरंस्वत्यै भैषंज्ज्येन व्वीर्यायान्नाद्यांयाभिषिंञ्चामीन्द्रंस्येन्द्रियेण बलांय श्रियै यशंसे भिषिंञ्चामि ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दण्डहस्तायै नमः, दण्डहस्तामावाहयामि स्थापयामि ।।७ ॥

ॐ कदाचनस्तरीरंसिनेन्द्रं सश्चसि दाशुषें। उपोपेन्नु मंघवन्भूय ऽइन्नुते दानं देवस्यं पृच्यते ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रचण्डायै नमः, प्रचण्डामावाहयामि स्थापयामि ।।८ ॥

पंचमाष्टकपंक्तिः क्रमेण –

ॐ भद्द्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्द्रं पंश्येमाक्षभिर्य्यजत्त्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ७ संस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहिंतं यदायुः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः चण्डविक्रमायै नमः, चण्डविक्र-मावाहयामि स्थापयामि ।।९ ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ इ॒षे त्वो॒र्जेत्वां व्वा॒यवंस्स्थदे॒वोवं÷ सवि॒ता प्प्रार्प्पयतु श्रेष्ठ्ठंतमाय॒ कर्म्मण॒ ऽ आप्प्यांयद्ध्वमग्घ्न्या॒ ऽ इन्द्रांय भा॒गं प्र॒जावंतीरनमी॒वा ऽ अंय॒क्ष्मा मा वंस्ते॒न ऽ ईशत॒ माघशं ६ सोद्॒ध्रुवा ऽ अ॒स्मिन्गो-पंतौ स्यात ब॒ह्वी ३ र्यजंमानस्य प॒शून्पांहि ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शिशुघ्न्यै नमः, शिशुघ्नीमावाहयामि स्थापयामि ।।२ ॥

ॐ देवीं द्यावापृथिवी म॒खस्यं वाम॒द्य शिरों राद्ध्यासं देव॒यजंने पृथि॒व्याः । म॒खायं त्वा म॒खस्यं त्वा शी॒र्ष्णे ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पापहन्त्र्यै नमः, पापहन्त्रीमावाहयामि स्थापयामि ।।३ ॥

ॐ विश्वांनि देव सवितर्दु॒रिता॒नि परांसुव। यद्॒भ॒द्रं तन्न॒ ऽ आसुंव ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः काल्यै नमः, कालीमावाहयामि स्थापयामि ॥४ ॥

ॐ असुंन्वन्त॒मयंजमानमिच्छस्ते॒नस्ये॒ त्यामन्विंहि॒ तस्क्करंस्य । अ॒न्यम॒स्मदिंच्छ॒ सा तं ऽ इ॒त्या नमों देवि निर्ऋते॒ तुभ्यंमस्तु ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः रुधिरपायिन्यै नमः, रुधिरपायिनीमावाहयामि स्थाप-यामि ।।५ ॥

ॐ अ॒ग्निश्चं मे घ॒र्मश्चं मे॒र्कश्चं मे॒ सू ३ र्यश्च मे प्रा॒णश्चं मे श्रमे॒धश्चं मे पृथि॒वी च॒ मे दिंतिश्च मे॒ दितिंश्च मे॒ द्यौश्चं मे॒ङ्गुलंय॒ः शक्वंरयो॒ दिशंश्च मे य॒ज्ञेनं कल्पन्ताम् ।

ॐ भूर्भुवः स्वः वसाधयायै नमः, वसाधयामावाहयामि स्थापयामि ।।६ ॥

ॐ ब॒ह्वी॒नां पि॒ता ब॒हुरंस्य पुत्रश्चि॒श्चा कृंणोति॒ सम॑नाव॒गत्यं । इ॒षुधिः सङ्का॒ः पृतंनाश्च॒ सर्व्वाः÷ पृ॒ष्ठे निनंद्धोजयति॒ प्प्रसूंतः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गर्भभक्षायै नमः, गर्भभक्षामावाहयामि स्थापयामि ।।७ ॥

ॐ नमंस्ते रुद्द्र म॒न्यवं ऽउ॒तोत॒ऽइषंवे॒ नमं÷ । बा॒हुब्भ्यांमु॒तते॒ नमं÷ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शवहस्तायै नमः, शवहस्तामावाह-यामि स्थापयामि ।।८ ॥

षष्ठाष्टकपंक्तिः क्रमेण –

ॐ ऋ॒तञ्चं मे॒ मृतंञ्च मे य॒क्ष्मञ्च॒मे नांमयच्च मे जी॒वातुंश्च मे दीर्ग्घायुत्त्वञ्चं मे नमि॒त्रञ्च मे भंयञ्च मे सुखञ्चं मे॒ शयंनञ्च मे सूषाश्चं मे सुदिनंञ्च मे य॒ज्ञेनं कल्पन्ताम् ।

ॐ भूर्भुवः स्वः आन्त्रमालिन्यै नमः, आन्त्रमालिनीमावाहयामि स्थापयामि ।।१ ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ते ऽ आ॒चरं॑न्ती॒ सम॑नेव॒ योषां मा॒तेवं पुत्रं बिंभृतामुपस्थें। अप॒ शत्रूँ विद्धयंता ७४ संविदा॒ने ऽ आर्क्ली ऽ इ॒मे विंष्फुरन्तीं अ॒मित्रांन्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्थूलकेश्यै नमः, स्थूलकेशीमावाहयामि स्थापयामि।।२॥

ॐ व्वेद्या॒ व्वेदि॑ समांप्यते ब॒र्हिषां ब॒र्हिरिंन्द्रि॒यम्। यूपें॑न॒ यूपं ऽ आप्यते॒ प्रणींतो ऽअ॒ग्निर॒ग्निनां॥

ॐ भूर्भुवः स्वः बृहत्कुक्ष्यै नमः, बृहत्कुक्षीमावाहयामि स्थापयामि।।३॥

ॐ पा॒व॒का न॒ सरस्वती॒ व्वाजेभिर्व्वा॒जिनींवती। य॒ज्ञं व्वंष्टु धि॒यावंसुः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पस्यायै नमः, सर्पस्यामावाहयामि स्थाप-यामि।।४॥

ॐ अस्कंन्नम॒द्य दे॒वेभ्य॒ ऽ आज्य॒ ६ संभ्रिंया स॒मङ्घ्रिंणा व्विष्णो॒ मा त्वावंक्रमिषं॒ व्वसुंमतीमग्ने ते च्छा॒यामुपंस्थेषं॒ व्विष्णो॒ स्थानंमसी॒त ऽ इन्द्रों व्वी॒र्यमकृणोदू॒र्द्ध्वोद्ध्वर ऽ आस्थांत्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रेतवाहिन्यै नमः, प्रेतवाहिनीमावाहयामि स्थापयामि।।५॥

ॐ ते ऽ आ॒चरं॑न्ती॒ सम॑नेव॒ योषां मा॒तेवं पुत्रं बिंभृतामुपस्थें। अप॒ शत्रूँव्विद्धयंता ७४ सव्विदा॒ने ऽ आर्क्ली ऽ इ॒मे व्विंष्फुरन्तीं अ॒मित्रांन्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दन्तशूककरायै नमः, दन्तशूककरामावाहयामि स्थापयामि।।६॥

ॐ म॒हीद्यौः पृंथि॒वी चं न ऽ इ॒मं य॒ज्ञं मिंमिक्षताम्। पि॒पृ॒तान्नो॒ भरींमभिः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्रौञ्च्यै नमः, क्रौञ्चीमावाहयामि स्थापयामि।।७॥

ॐ उ॒प॒या॒म गृंहीतो ऽ सि सा॒वि॒त्रोसि चनो॒धाश्श्चनो॒धा ऽअंसि॒ चनो॒ मयिं धेहि। जिन्वं य॒ज्ञं जिन्वं य॒ज्ञपंतिं॒ भगांय दे॒वायं त्वा सवि॒त्रे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मृगशीर्षायै नमः, मृगशीर्षामावाहयामि स्थापयामि।।८॥

सप्तमाष्टकपंक्तिः क्रमेण –

ॐ आप्यांयस्व॒ समेंतु ते व्वि॒श्वतं÷ सोम॒ व्वृष्ण्यंम्। भवा॒ व्वाजंस्य सङ्गथे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वृषाननायै नमः, वृषाननामावाहयामि स्थापयामि।।१॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ कार्षिरसि समुद्द्रस्य त्वाक्षित्या ऽ उन्नंयामि। समापो ऽ अद्भिरंग्मत समोषंधीभिरोषंधीः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः व्यात्तास्यायै नमः, व्यात्तास्यामावाहयामि स्थापयामि।।२॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः धूम्रनिः श्वासायै नमः, धूम्रनिःश्वासामावाहयामि स्थापयामि।।३॥

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाण मुम्मंऽइषाण सर्व्वलोकम्मंऽइषाण।।

ॐ भूर्भुवः स्वः व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नमः, व्योमैकचरणोर्ध्वदृशमा-वाहयामि स्थापयामि।।४॥

ॐ व्विष्णो रराटमसि व्विष्णोः श्नप्त्रेस्थो व्विष्णोः स्यूरसि व्विष्णोर्दुर्ध्रुवोसि। व्वैष्णवमसि व्विष्णवे त्वा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः तापिन्यै नमः, तापिनीमावाहयामि स्थापयामि।।५॥

ॐ ब्राह्मणमद्य व्विदेयं पितृमन्तं पैतृमत्यमृषिमार्षेय सुधातुदक्षिणम्। अस्मद्राता देवत्रा गच्छत प्रदातारमाविशत॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शोषणीदृष्ट्यै नमः, शोषणीदृष्टिमावाहयामि स्थापयामि।।६॥

ॐ भद्द्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्द्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा संस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कोटर्यै नमः, कोटरीमावाहयामि स्थापयामि।।७॥

ॐ एका च मे तिस्त्रश्च मे तिस्त्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च म ऽ एकादश च म ऽ एकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च म ऽ एकवि शतिश्च म ऽ एकवि शतिश्च मे त्रयोवि शतिश्च मे त्रयोवि शतिश्च मे पञ्चवि शतिश्च मे पञ्चवि शतिश्च मे सप्तवि शतिश्च मे सप्तवि शतिश्च मे नववि शतिश्च मे नववि शतिश्च म ऽएकत्रि शच्च म ऽ एकत्रि शच्च मे त्रयस्त्रि शच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्थूलनासिकायै नमः, स्थूलनासिकामावाहयामि स्थापयामि।।८॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अष्टमाष्टकपंक्तिः क्रमेण –

ॐ प्रेता जयंतानर ऽइन्द्रों वः शर्म्म यच्छतु। उग्रा वंः सन्तु बाहवोंनाधृष्या यथासंथ।

ॐ भूर्भुवः स्वः–विद्युत्प्रभायै नमः, विद्युत्प्रभामावाहयामि स्थापयामि।।१॥

ॐ असंङ्ख्याता सहस्रांणि ये रुद्द्राऽअधिभूम्म्याम्। तेषां ७ सहस्रयोजनेव धन्वांनि तन्मसि।

ॐ भूर्भुवः स्वः बलाकास्यायै नमः, बलाकास्यामावाहयामि स्थापयामि।।२॥

ॐ सुपर्णोसि गरुत्त्माँ स्त्रिवृत्ते शिरों गायत्रं चक्षुर्बृहदद्रथन्तरे पक्षौ। स्तोमंऽआत्त्मा छन्दा ७ स्यङ्गानि यजूंष्षिनामं। सामं ते तनूर्व्वामदेव्व्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं धिष्ण्यांः शफाः। सुपर्णोसि गरुत्त्मॉन्दिवं गच्छस्वः पत॥

ॐ भूर्भुव स्वः मार्जार्यै नमः, मार्जारीमावाहयामि स्थापयामि॥३॥

ॐ यातें रुद्र शिवा तनूरघोरापांपकाशिनी। तयांनस्तन्वा शन्तंमया गिरिंशन्ताभिचांकशीहि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कटपूतनायै नमः, कटपूतनामावाहयामि स्थापयामि।।४॥

ॐ देवीं द्यावापृथिवी मखस्यं वामद्य शिरों राद्ध्यासं देवयजंने पृथिव्व्याः। मखायं त्वा मखस्यं त्वा शीर्ष्णे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अट्टाट्टहासायै नमः, अट्टाट्टहासामावाहयामि स्थापयामि।।५॥

ॐ इदं व्विष्णुर्व्विचंक्रमे त्रेधा निदंधे पदम्। समूंढमस्य पा ७ सुरे स्वाहां।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कामाक्ष्यै नमः, कामाक्षीमावाहयामि स्थापयामि।।६॥

ॐ व्वृष्णं ऽ ऊर्म्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं में देहि स्वाहा वृष्णं ऽ ऊर्म्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मैं देहि वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रं में देहि स्वाहां व्वृषसेनोसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मैं देहि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मृगाक्ष्यै नमः, मृगाक्षीमावाहयामि स्थापयामि।।७॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ भायै दार्व्वाहा॒रं प्र॒भायां ऽ अग्न्ये॒धं ब्र॒ध्नस्यं व्वि॒ष्टपायाभिषे॒क्तारं॒ व्वर्षिष्ठाय॒ नाकाय परिवे॒ष्टारं देव लो॒कायं पेशि॒तारं मनुष्यलो॒कायं प्प्रकरि॒तार॒ ६ सर्व्वेभ्यो लो॒केभ्यं ऽ उपसे॒क्तार॒मवं ऽ ऋत्यै व्व॒धायोंपमन्थि॒तारं॒ मेधाय व्वासः पल्प्पूलीं प्रका॒मायं रजयि॒त्रीम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मृगलोचनायै नमः, मृगलोचनामावाहयामि स्थापयामि।।८॥

ॐ मनोंजूतिर्जुषता॒माज्यंस्य॒ बृह॒स्पतिंर्यज्ञमि॒मं तंनोत्वरिंष्टं य॒ज्ञ ६ समि॒मन्दंधातु। व्विश्वेंदे॒वास ऽ इ॒ह मांदयन्ता॒मो ३॒॥ प्प्रतिष्ठ॥

श्री महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती सहिता गजाननादिचतुःषष्टि–योगिन्यः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु॥ ततः षोडशोपचारैः यथोपचारैः वा पूजयेत्॥

पूजनं कुर्यात् –

आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। मुखे आचमनं समर्पयामि। सर्वांगे स्नानं समर्पयामि। मिलितपंचामृतस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। वस्त्रं समर्पयामि। यज्ञोपवीतं। वस्त्रयज्ञोपवीतान्ते आचमनं समर्पयामि। गंधं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पमालां समर्पयामि। परिमलद्रव्याणि समर्पयामि। सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि। धूपं आघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। हस्तप्रक्षालनम्। नैवेद्यं समर्पयामि। मध्ये आचमनं समर्पयामि। फलं समर्पयामि। पुनः आचमनं समर्पयामि। ताम्बूलं समर्पयामि। द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलि :-

गजाननाद्या रुचिरं मदीयं, गृह्णन्तु पुष्पाञ्जलिमत्र देव्यः।
योगिन्य आशूद्धटशङ्कराश्च, भवन्तु भूपालनतत्पराश्च।।

मण्डलाग्रेपायसबलिं दद्यात् – **ॐ योगेंयोगे त॒वस्तंरं॒ व्वाजेंवाजे हवामहे। सखांय इन्द्रमू॒तयें॥**

ॐ योगिनीनां बलिद्रव्याय नमः। गंधादिभिः सम्पूज्य। भो महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती सहित गजाननादिचतुःषष्टियोगिनीभ्यः इमं बलिं समपर्ययामि। जलमुत्सृजेत्।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रार्थना – भो गजाननादिचतुःषष्टियोगिन्यः इमं सदीपपायसान्न बलिं गृह्णत गृह्णत मम (यजमानस्य) गृहे आयुःकर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शांतिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः वरदा भवत॥

अनेन पूजाबलिदानेन श्री महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती-सहिताः गजनाननादिचतुःषष्ठियोगिन्यः प्रीयन्ताम्।

_ _ _ *** _ _ _

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

क्षेत्रपाल मण्डल पूजनम्

क्षेत्रपालपीठे वस्त्रं प्रसार्य नवकोष्ठानि कुर्यात्। अन्य दिक्षु विदिक्षु अष्टकोष्ठेषु षड्दलानि कृत्वा मध्ये अष्टदलोपरि कलशं स्थापयित्वा पूजयेत्।

संकल्प - देशकालौ संकीर्त्य मया पूर्वोच्चारितसंकल्पा ऽङ्गतया अजरादि पावनपर्यन्तानां क्षेत्रपालमण्डलस्थ देवानामावाहनपूर्वकं पूजनं बलिदानञ्च करिष्ये।

पूर्वकोष्ठे षडदले - क्रमेण

ॐ इमौ ते पक्षावजरौ पतत्रिणौ याभ्या रक्षा स्यपह स्यंग्ने। ताभ्यां पतेम सुकृतामु लोकं यत्रऽऋषयो जग्मुः प्रथमजाः पुराणाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अजराय नमः, अजरमावाहयामि स्थापयामि।।१।।

ॐ प्रथमा वा सरथिना सुवर्णा देवौ पश्यन्तौ भुवनानि विश्श्वा। अपिप्प्रियं चोदना वां मिमाना होतारा ज्योतिः प्प्रदिशा दिशन्ता॥

ॐ भूर्भुवः स्वः व्यापकाय नमः, व्यापकमावाहयामि स्थापयामि॥२॥

ॐ इन्द्रस्य व्वज्रोसि मित्रावरुणयोस्त्वा प्प्रशास्त्रोः प्प्रशिषा युनज्मि। अव्व्यथायै त्त्वा स्वधायै त्वारिष्टो ऽ अर्ज्जुनो मरुतां प्रसवेन जयापाम मनसा समिन्द्रियेण॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रचौराय नमः, इन्द्रचौरमावाहयामि स्थापयामि॥३॥

ॐ एवेदिन्द्रं व्वृषणं व्वज्रंब्बाहुं व्वसिष्ठठासो ऽ अब्भ्यर्च्चन्त्यर्क्कैः। स नं स्तुतो व्वीरवद्धातु गोमद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रमूर्तये नमः, इन्द्रमूर्तिमावाहयामि स्थापयामि॥४॥

ॐ उक्षा समुद्रो ऽ अरुणः सुपर्ण्णः पूर्व्वस्य योनिं पितुराविवेश। मद्ध्ये दिवो निहितः पृश्निरश्म्मा व्विचक्क्रमे रजसप्पात्त्यन्तौ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः उक्षाय नमः, उक्षमावाहयामि स्थापयामि॥५॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा व्वयम्। अग्निर्म्मा तस्मादेनसो व्विश्श्वान्मुञ्चत्व ६ हंसः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कूष्माण्डाय नमः, कूष्माण्डमावाहयामि स्थापयामि॥६॥

अग्निकोणे षड्दले – क्रमेण

ॐ स न ऽइन्द्राय यज्ज्यवे व्वरुणाय मरुद्भ्यः॥ व्वरिवोबित्परिस्त्रव॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि॥१॥

ॐ बाहू मे बलमिन्द्रिय ६ हस्तौ मे कर्म्म व्वीर्य्यम्। आत्त्मा क्षत्रमुरो मम॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वटुकाय नमः, वटुकमावाहयामि स्थापयामि॥२॥

ॐ मुञ्चन्तु मा शपथ्थ्यादथो व्वरुण्यादुत। अथो यमस्य पड्वीशात्सर्व्वस्मादद्देवकिल्ल्विषात्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विमुक्ताय नमः, विमुक्तमावाहयामि स्थापयामि॥३॥

ॐ कुर्व्वन्नेवेह कर्म्माणि जिजीविषेच्छत ६ समाः। एवं त्वयि नान्न्यथेतोस्ति न कर्म्म लिप्प्यते नरे।

ॐ भूर्भुवः स्वः लिप्तकाय नमः, लिप्तकमावाहयामि स्थापयामि॥४॥

ॐ सन्नः सिन्धुरवभृथायोद्यतः समुद्द्रोभ्यवह्रियमाणः सलिलः प्रप्प्लुतो ययोरोजसा स्कभिता रजा ६ सि व्वीर्य्येभिर्व्वीरतमा शविष्ठा। या पत्त्येते ऽअप्रतीता सहोभिर्व्विष्णू ऽ अगन्न्वरुणा पूर्व्वहूतौ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः लीलाकाय नमः, लीलाकमावाहयामि स्थापयामि॥५॥

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्व्रातेभ्यो व्व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्विरूपेभ्यो व्विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः एकदंष्ट्राय नमः, एकदंष्ट्रमावाहयामि स्थापयामि॥६॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दक्षिणकोष्ठे –

ॐ अर्म्मैब्भ्यो हस्तिपं जवायाश्वपं पुष्ट्यै गोपालं व्वीर्य्यायाविपालं तेजसेजपालमिरायै कीनाशं कीलालाय सुराकारं भद्द्राय गृहप श्रेयसे व्वित्तधमाद्ध्यक्ष्यायानुक्षत्तारम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ऐरावतराय नमः, ऐरावतमावाहयामि स्थापयामि॥१॥

ॐ या ऽ ओषधीः पूर्व्वा जाता देवेब्भ्यस्त्रियुगं पुरा। मनैनु बब्भ्रूणामह शतं धामानि सप्त च॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ओषधीघ्राय नमः, ओषधीघ्नमावाहयामि स्थापयामि॥२॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः बन्धनाय नमः, बन्धनमावाहयामि स्थापयामि॥३॥

ॐ देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्व्यो गन्धर्व्वः केतपूः केतं नः पुनातु व्वाचस्पतिर्व्वाजं नः स्वदतु।

ॐ भूर्भुवः स्वः दिव्यकायाय नमः, दिव्यकायमावाहयामि स्थापयामि॥४॥

ॐ सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिण ऽ ऊर्णासूत्रेण कवयो व्वयन्ति। अश्विना यज्ञ सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं व्वरुणो भिषज्यन्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कम्बलाय नमः, कम्बलामावाहयामि स्थापयामि॥५॥

ॐ आशुः शिशानो व्वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। सङ्क्रन्दनोनिमिष ऽ एकवीरः शत सेना ऽ अजयत्साकमिन्द्रः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भीषणाय नमः, भीषणमावाहयामि स्थापयामि॥६॥

नैरृत्यकोणे –

ॐ इम साहस्त्र शतधारमुत्सं व्यच्च्यमान सरिरस्य मद्ध्ये। घृतं दुहानामदितिं जनायाग्ने मा हिं सीः परमे व्योमन्। गवयमारण्यमनु ते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद॥ गवयं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गवे नमः, गवामावाहयामि स्थापयामि॥१॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ कुम्भो व्वनिष्ठुर्ज्जनिता शचीभिर्ग्यस्मिन्नग्रे योन्यां गर्ब्भो ऽ अन्तः। प्लाशिर्व्यक्तः शतधार ऽ उत्सो दुहे न कुम्भी स्वधां पितृब्भ्यः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टाभिधाय नमः, घण्टाभिधामावाहयामि स्थापयामि॥२॥

ॐ आक्क्रन्दय बलमोजो न ऽ आधा निष्टनिहि दुरिताबाधमानः। अपप्प्रोथ दुन्दुभे दुच्छुना ऽ इत ऽ इन्द्रस्य मुष्टिरसि व्वीडयस्व॥

ॐ भूर्भुवः स्वः व्यालाय नमः, व्यालमावाहयामि स्थापयामि॥३॥

ॐ इन्द्रायाहि तूतुजान ऽ उप ब्रह्माणि हरिवः। सुते दधिष्व नश्चनः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अणुस्वरूपाय नमः, अणुस्वरूपमावाहयामि स्थापयामि॥४॥

ॐ चन्द्रमाऽअप्स्वन्तरा सुपर्ण्णो धावते दिवि। रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं हरिरेति कनिक्क्रदत्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रवारुणाय नमः, चन्द्रवारुणमावाहयामि स्थापयामि॥५॥

ॐ प्रतिश्रुत्काया ऽ अर्त्तनं घोषाय भषमन्ताय बहुवादिनमनन्ताय मूकं शब्दायाडम्बराघातं महसे व्वीणावादं क्रोशाय तूणवध्ममवरस्प्पराय शंखध्मं व्वनाय व्वनपमन्न्यतोरण्याय दावपम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पटाटोपाय नमः, पटाटोपमावाहयामि स्थापयामि॥६॥

पश्चिमकोणे –

ॐ उग्ग्रं लोहितेन मित्रं सौव्रत्त्येन रुद्द्रं दौर्व्व्रत्त्येनेन्द्रं प्प्रक्क्रीडेन मरुतो बलेन साद्ध्यान्प्रमुदा। भवस्य कण्ठ्यं रुद्रस्यान्तः पार्श्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्व्वस्य व्वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः जटालाय नमः, जटालमावाहयामि स्थापयामि॥१॥

ॐ पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत्। अग्ने क्रत्वा क्रतूँ २॥ रनु।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्रतवे नमः, क्रतुमावाहयामि स्थापयामि॥२॥

ॐ आजिंग्घ्र कलशं मह्य्या त्त्वा व्विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्ज्जा निवर्त्तस्व सा नः सहस्रं धुक्क्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्मा विशताद्द्रयिः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टेश्वराय नमः, घण्टेश्वरमावाहयामि स्थापयामि॥३॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ व्वायों शुक्रो ऽ अंयामि ते मद्ध्वो ऽ अग्ग्रं दिविंष्टिषु। आयांहि सोमंपीतये स्प्पार्हो देंव नियुत्वंता॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विटङ्काय नमः, विटङ्कमावाहयामि स्थापयामि॥४॥

ॐ दैव्व्यां होतारा ऽ ऊद्ध्र्वमंध्वरं नोग्ग्रेर्जिह्वामभिगृंणीतम्। कृणुतं नः स्विष्टिम्।

ॐ भूर्भुवः स्वः मणिमानाय नमः, मणिमानमावाहयामि स्थापयामि॥५॥

ॐ त्रीणिं त ऽ आहुर्द्दिवि बन्धंनानि त्रीण्यप्प्सु त्रीण्यन्तः संमुद्द्रे। उतेवं मे व्वरुंणश्छन्त्स्यर्व्वन्न्यत्त्रां त ऽ आहुः पंरमं जनित्त्रंम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणबन्धाय नमः, गणबन्धमावाहयामि स्थापयामि॥६॥

वायव्यकोणे -

ॐ प्रतिश्रुत्कांया ऽ अर्त्तं नं घोषांय भषमन्तांय बहुवादिनंमनन्ताय मूकं ह शब्दांयाडम्बराघातं महंसे व्वीणावादं क्रोशांय तूणवद्ध्ममंवरस्प्परायं शंखद्ध्मं व्वनांय व्वनपमन्न्यतोंरण्याय दावपम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः डामराय नमः, डामरमावाहयामि स्थापयामि॥१॥

ॐ शुद्धवांलः सर्व्वशुंद्धवालो मणिवालस्त ऽ आंश्विनाः श्येतं÷ श्येताक्षो रुणस्ते रुद्द्रायं पशुपतंये कर्णा यामा ऽ अंवलिप्ता रौद्द्रा नभोंरूपाः पार्ज्जन्न्याः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ढुण्ढिकर्णाय नमः, ढुण्ढिकर्णमावाहयामि स्थापयामि॥२॥

ॐ व्वनंस्पते व्वीड्वङ्गोहिभूयाऽअस्म्मत्त्संखाप्प्रतरंणः सुवीरं÷। गोभिः सन्नंद्धोऽअसिव्वीडयंस्वास्त्थातातेंजयतु जेत्वांनि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्थविराय नमः, स्थविरमावाहयामि स्थापयामि॥३॥

ॐ सुपर्णं व्वंस्ते मृगो ऽअंस्यादन्तो गोभिः सन्नंद्धा पतति प्प्रसूंता। यत्त्रा नरः सं च व्वि च द्द्रवंन्ति तत्त्रास्म्मब्भ्यमिषंवः शर्म्मं य ह सन्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दन्तुराय नमः, दन्तुरमावाहयामि स्थापयामि॥४॥

ॐ अग्ग्रे ऽ अच्छां व्वदेह नः प्प्रतिं नः सुमनां भव। प्र नों यच्छ सहस्त्रजित्व ह हि धंनदा ऽ असि स्वाहां॥

ॐ भूर्भुवः स्वः धनदाय नमः, धनदमावाहयामि स्थापयामि॥५॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ७ संस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः नागकर्णाय नमः, नागकर्णमावाहयामि स्थापयामि॥६॥

उत्तरकोणे –

ॐ बाहू मे बलमिन्द्रिय ६ हस्तौ मे कर्म्म वीर्य्यम्। आत्मा क्षत्रमुरो मम॥

ॐ भूर्भुवः स्वः महाबलाय नमः, महाबलमा–वाहयामि स्थापयामि॥१॥

ॐ अपां फेनेन नमुचेः शिर ऽ इन्द्रोदवर्त्तयः। विश्वा यदजयः स्पृधः।

ॐ भूर्भुवः स्वः फेत्काराय नमः, फेत्कारमावाहयामि स्थापयामि॥२॥

ॐ इद ६ हविः प्रजननं मे ऽ अस्तु दशवीर ६ सर्व्वगण ७ स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यं भयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां में करोत्वन्नं पयो रेतो ऽ अस्मासु धत्त॥

ॐ भूर्भुवः स्वः चीकराय नमः, चीकरमावाहयामि स्थापयामि॥३॥

ॐ या व्याघ्रं विषूचिकोभौ वृकं च रक्षति। श्येनं पतत्रिणं सि ६ ह ६ सेमं पात्व ६ हंसः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिंहाय नमः, सिंहमावाहयामि स्थापयामि॥४॥

ॐ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत ऽ आजगन्था परस्याः। सृक ६ स ६ शाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढ़ि वि मृधो नुदस्व॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मृगाय नमः, मृगमावाहयामि स्थापयामि॥५॥

ॐ इन्दुर्दक्षः श्येन ऽ ऋतावा हिरण्यपक्षः शकुनो भुरण्युः। महान्त्सधस्थे ध्रुव ऽ आ निषत्तो ऽ नमस्ते ऽ अस्तु मा मा हि ६ सीः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यक्षप्रियाय नमः, यक्षप्रियमावाहयामि स्थापयामि॥६॥

ॐ जीमूतस्येव भवति प्रतीकं यद्वर्म्मी याति समदामुपस्थे। अनाविद्धया तन्वा जय त्व ६ स त्वा वर्म्मणो महिमा पिपर्त्तु॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मेघवाहनाय नमः, मेघवाहनमावाहयामि स्थापयामि॥७॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ईशानकोणे -

ॐ तीव्रान्घोषांन्कृण्णवते व्वृषंपाणयोऽश्वा रथेभिः सह व्वाजंयन्तः। अवक्क्रामन्तः प्प्रपदैरमित्रांन्क्षिणन्ति शत्रूँ २॥ रनंपव्व्ययन्तः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः तीक्ष्णोष्ठाय नमः, तीक्ष्णोष्ठ्रमावाहयामि स्थापयामि॥१॥

ॐ व्वायुष्ट्वां पचतैरंवत्वसिंतग्ग्रीवश्छागैर्न्न्यग्ग्रोधश्चमसैः शंल्मलिर्व्वृद्धयां। एषस्य रात्थ्यो व्वृषां पड्भिश्चतुर्ब्भि रेदगन्ब्रह्माऽकृंष्णश्च नोऽवतु नमोऽग्ग्नये॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अनलाय नमः, अनलमावाहयामि स्थापयामि॥२॥

ॐ अदिंत्यास्त्वा पृष्ठे सांदयाम्म्यन्तरिंक्षस्य धर्त्रीं व्विष्टम्भंनीं दिशामधिंपत्नीं भुवंनानाम्। ऊर्म्मिद्द्रप्सो अपामंसि व्विश्वकंर्म्मा तऽ ऋषिंरश्विनांद्ध्वर्य्यू सांदयतामिह त्वां॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्लतुण्डाय नमः, शुक्लतुण्डमावाहयामि स्थापयामि॥३॥

ॐ द्यौस्तें पृथिव्व्यन्तरिंक्षं व्वायुश्छिद्रं पृंणातु ते। सूर्य्यस्ते नक्षंत्रैः सह लोकं कृंणोतु साधुया॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सुधालापाय नमः, सुधालापमावाहयामि स्थापयामि॥४॥

ॐ सम्बर्हिरंङ्क्ता ঌ हविषां घृतेन समांदित्यैर्व्वसुंभिः सम्मरुद्भिंः। समिन्द्रों व्विश्वदेंवेभिरङ्क्तां दिव्व्यं नभों गच्छतु यत्स्वाहां॥

ॐ भूर्भुवः स्वः बर्बरकाय नमः, बर्बरकमावाहयामि स्थापयामि॥५॥

ॐ पवंमानः सोऽअद्य नंः पवित्रेंण व्विचंर्षणिः। यः पोता स पुंनातु मा॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पावनाय नमः, पावनमावाहयामि स्थापयामि॥६॥

ॐ अब्भ्यर्षतसुष्टुतिङ्गव्व्यंमाजिमस्म्मासुभद्द्राद्द्रविंणानिधत्त।
इमँव्यंज्ञन्नयतदेवतांनो घृतस्यधारांमधुमत्त्पवन्ते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पावनाय नमः, पावनमावाहयामि स्थापयामि॥७॥

ॐ अजरादिपावनान्तक्षेत्रपालमण्डलस्थदेवेभ्यो नमः। मध्ये अष्टदले विधिवत् कलशं स्थापयेत्। कलशोपरि स्थानक्षेत्रपालमूर्तिं श्रीफलं वा स्थापयेत् तत्र क्षेत्रपालमावाहयेत्।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ध्यानम् –

भ्राजच्चन्द्रजटाधरं त्रिनयनं नीलाञ्जनाद्रिप्रभं,
दोर्दण्डान्तगदाकपालमरुणस्त्रग्गन्धवस्त्रावृतम्।
घण्टाघुर्घुर मेखलध्वनिमिलद्धूंकारभीमं विभुं,
वन्दे संहितसर्पकुण्डलधरं श्रीक्षेत्रपालं भजे॥

ॐ नहिस्प्श्मविंदन्नन्यमस्माद् वैंश्वानरात्पुरऽएतारंमग्नेः।
एमेंनमवृधन्नमृताऽअमंर्त्त्यं वैश्वानरङ्क्षैत्रंजित्याय देवाः॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्राधिपतये नमः आवाहयामि स्थापयामि॥

ॐ मनोंजूतिर्जुषतामाज्यंस्य बृहस्पतिंर्यज्ञमिमं तंनोत्वरिंष्टं यज्ञ ६ समिमन्दंधातु। विश्वेंदेवासं ऽ इह मांदयन्तामो ३ँ॥ प्रतिष्ठ॥

अजरादिपावनान्तक्षेत्रपालमण्डलस्थदेवाः सह क्षेत्राधिपतये नमः सुप्रतिष्ठिता भवन्तु। यथामिलितोपचारद्रव्यैः संपूज्य।

पूजनं कुर्यात् –

आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। मुखे आचमनं समर्पयामि। सर्वांगे स्नानं समर्पयामि। मिलितपंचामृतस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि। वस्त्रं समर्पयामि। यज्ञोपवीतं। वस्त्रयज्ञोपवीतान्ते आचमनं समर्पयामि। गंधं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पमालां समर्पयामि। परिमलद्रव्याणि समर्पयामि। सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि। धूपं आघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। हस्तप्रक्षालनम्। नैवेद्यं समर्पयामि। मध्ये आचमनं समर्पयामि। फलं समर्पयामि। पुनः आचमनं समर्पयामि। ताम्बूलं समर्पयामि। द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलि :–

नीलाञ्जनाद्रिनिभमूर्ध्वपिशंगकेश,
वृत्तोग्रलोचनमुपात्तगदाकपालम् ।
रक्ताम्बरं भुजगभूषणमुग्रदंष्ट्रं
क्षेत्राधिपा कुसुमपुञ्ज गृहाण शीघ्रम्॥ पुष्पाञ्जलि समर्पयामि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नमस्कार :- क्षेत्रपाल महाबाहो महाबल पराक्रमः।

क्षेत्राणां रक्षणार्थाय प्रणमामि पुनः पुनः॥

मण्डलाग्रेपायस बलिदद्यात् - ॐ क्षेत्रस्य पतिनां वयं हितेनेव जयामसि। गामश्व पोषयित्वा स नो मृलाती दृशे। क्षेत्रपाल बलिद्रव्याय नमः। भो क्षेत्रपाल इमं बलिं समर्पयामि। जलमुत्सृजेत्। भो क्षेत्रपाल इमं बलिं गृह्ण गृह्ण मम सकुटुम्बस्य सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्व मनोरथान् पूरय पूरय स्वाहा।

अनेन पूजाबलिदानेन क्षेत्रपालमण्डलस्थदेवाः सह क्षेत्राधिपति प्रीयताम्।

---***---

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गौरी तिलकमण्डलस्थदेवानां पूजनम्

कलशसमीपे पीतकोष्ठेषु चतुरोदेवान् शिरोङ्गशक्तिं पूजयेत् –

१ (ऐशा.) ॐ महाविष्णवे नमः २ (नैर्ऋत्यां) ॐ महालक्ष्म्यै नमः ३ (आग्नेय्यां) ॐ महेश्वराय नमः ४ (वायव्यां)ॐ महामायायै नमः

हृदयाङ्गमध्ये चतुर्षु कोष्ठेषु चतुर्वेदान्पूजयेत् – ५ ॐ ऋग्वेदाय नमः ६ ॐ यजुर्वेदाय नमः ७ ॐ सामवेदाय नमः ८ ॐ अथर्ववेदाय नमः

पूर्वादीशानपर्यन्तं श्वेतकोष्ठेषु अष्टदेवान् पूजयेत् –

९ ॐ अद्भ्यो नमः १० ॐ जलोद्भवाय नमः ११ ॐ ब्रह्मणे नमः १२ ॐ प्रजापतये नमः १३ ॐ शिवाय नमः

अग्निकोणे श्वेतकोष्ठयोः – १४ ॐ अनन्ताय नमः १५ ॐ परमेष्ठिने नमः

अग्निकोणे चतुष्कोष्ठेषु – १६ ॐ धात्रे नमः १७ ॐ विधात्रे नमः १८ ॐ अर्य्यम्णे नमः १९ ॐ मित्राय नमः

दक्षिणश्वेतकोष्ठेषु – २० ॐ वरुणाय नमः २१ ॐ अंशुमते नमः २२ ॐ भगाय नमः २३ ॐ इन्द्राय नमः २४ ॐ विवस्वते नमः

नैर्ऋत्यकोणे श्वेतकोष्ठयोः – २५ ॐ पूष्णे नमः २६ ॐ पर्यन्याय नमः

नैर्ऋत्यकोणे श्वेतकोष्ठेषु – २७ ॐ त्वष्ट्रे नमः २८ ॐ दक्षयज्ञाय नमः २९ ॐ देववसवे नमः ३० ॐ महासुताय नमः

पश्चिमे श्वेतकोष्ठेषु – ३१ ॐ सुधर्मणे नमः ३२ ॐ शङ्कपदे नमः ३३ ॐ महाबाहवे नमः ३४ ॐ वपुष्मते नमः ३५ ॐ अनन्ताय नमः

वायव्ये श्वेतकोष्ठेषु – ३६ ॐ महेरणाय नमः ३७ ॐ विश्वावसवे नमः ३८ ॐ सुपर्वणे नमः ३९ ॐ विष्टराय नमः ४० ॐ रुद्रदैवताय नमः ४१ ॐ ध्रुवाय नमः

उत्तरेश्वेतकोष्ठेषु – ४२ ॐ धरायै नमः ४३ ॐ सोमाय नमः ४४ ॐ आपवत्साय नमः ४५ ॐ नलाय नमः ४६ ॐ अनिलाय नमः

ईशान्ये श्वेतकोष्ठेषु – ४७ ॐ प्रत्यूषाय नमः ४८ ॐ प्रभासाय नमः

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ईशानकोण श्वेतकोष्ठेषु – ४९ ॐ आवर्त्ताय नमः ५० ॐ सावर्त्ताय नमः ५१ ॐ द्रोणाय नमः ५२ ॐ पुष्कराय नमः

अथ शिरोंगशक्तिं पूजयेत् – ५३ ॐ ह्रीं कार्यै नमः ५४ ॐ ह्रि यै नमः ५५ ॐ कात्यायन्यै नमः ५६ ॐ चामुण्डायै नमः ५७ ॐ महादिव्यायै नमः ५८ ॐ महाशब्दायै नमः ५९ ॐ सिद्धिदायै नमः ६० ॐ ऐं नमः ६१ ॐ श्रीं श्रियै नमः ६२ ॐ ह्रीं ह्रियै नमः

ईशानकोणे पीतकोष्ठेषु – ६३ ॐ लक्ष्म्यै नमः ६४ ॐ श्रियै नमः ६५ ॐ सुधनायै नमः ६६ ॐ मेधायै नमः ६७ ॐ प्रज्ञायै नमः ६८ ॐ मत्यै नमः ६९ ॐ स्वाहायै नमः ७० ॐ सरस्वत्यै नमः

अग्निकोणे हरित्कोष्ठेषु – ७१ ॐ गौर्यै नमः ७२ ॐ पद्मायै नमः ७३ ॐ शच्यै नमः ७४ ॐ सुमेधायै नमः ७५ ॐ सावित्र्यै नमः ७६ ॐ विजयायै नमः ७७ ॐ देवसेनायै नमः ७८ ॐ स्वाहायै नमः ७९ ॐ स्वधायै नमः ८० ॐ मातृभ्यो नमः ८१ ॐ गायत्र्यै नमः

अग्निकोणे पीतकोष्ठेषु – ८२ ॐ लोकमातृभ्यो नमः ८३ ॐ धृत्यै नमः ८४ ॐ पुष्ट्यै नमः ८५ ॐ तुष्ट्यै नमः ८६ ॐ आत्मदेवतायै नमः ८७ ॐ गणेश्वर्यै नमः ८८ ॐ कुलमात्रे नमः ८९ ॐ शान्त्यै नमः

ईशानकोणे वाप्यां कृष्णकोष्ठे श्वेतेषु – ४ – ९० ॐ जयन्त्यै नमः ९१ ॐ मङ्गलायै नमः ९२ ॐ काल्यै नमः ९३ ॐ भद्रकाल्यै नमः ९४ ॐ कपालिन्यै नमः

अग्निकोणे वाप्यां कृष्णकोष्ठे श्वेतेषु – ४ – ९५ ॐ दुर्गायै नमः ९६ ॐ क्षमायै नमः ९७ ॐ शिवायै नमः ९८ ॐ धात्र्यै नमः ९९ ॐ स्वाहास्वधाभ्यां नमः

(अथ शिखांगदेवपूजनम्)

नैर्ऋत्यकोणे हरित्कोष्ठेषु – ११– १०० ॐ दीप्यमानायै नमः १०१ ॐ दीप्तायै नमः १०२ ॐ सूक्ष्मायै नमः १०३ ॐ विभूत्यै नमः १०४ ॐ विमलायै नमः १०५ ॐ परायै नमः १०६ ॐ अमोघायै नमः १०७ ॐ वैद्युतायै नमः १०८ ॐ सर्वतोमुख्यै नमः १०९ ॐ आनन्दायै नमः ११० ॐ नन्दिन्यै नमः

नैर्ऋत्यकोणे पीतकोष्ठेषु – ८ – १११ ॐ शक्त्यै नमः ११२ ॐ महासूक्ष्मायै नमः ११३ ॐ करालिन्यै नमः ११४ ॐ भारत्यै नमः ११५ ॐ ज्योतिषमत्यै नमः ११६ ॐ ब्राह्म्यै नमः ११७ ॐ माहेश्वर्यै नमः ११८ ॐ कौमार्यै नमः

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वायुकोणे हरित्कोष्ठेषु – ११– ११९ ॐ वैष्णव्यै नमः १२० ॐ वाराह्यै नमः १२१ ॐ इन्द्राण्यै नमः १२२ ॐ चण्डिकायै नमः १२३ ॐ बुद्ध्यै नमः १२४ ॐ लज्जायै नमः १२५ ॐ वपुष्मत्यै नमः १२६ ॐ शान्त्यै नमः १२७ ॐ कान्त्यै नमः १२८ ॐ रत्यै नमः १२९ ॐ प्रीत्यै नमः

वायुकोणे पीतकोष्ठेषु – ८ – १३० ॐ कीर्त्यै नमः १३१ ॐ प्रभायै नमः १३२ ॐ काम्यायै नमः १३३ ॐ कान्तायै नमः १३४ ॐ ऋद्ध्यै नमः १३५ ॐ दयायै नमः १३६ ॐ शिवदूत्यै नमः १३७ ॐ श्रद्धायै नमः

नैर्ऋत्यवाप्यां कृष्णकोष्ठे १ श्वेतेषु ४ – १३८ ॐ क्षमायै नमः १३९ ॐ क्रियायै नमः १४० ॐ विद्यायै नमः १४१ ॐ मोहिन्यै नमः १४२ ॐ यशोवत्यै नमः

वायव्यवाप्यां कृष्णकोष्ठेषु १ श्वेतेषु ४ – १४३ ॐ कृपावत्यै नमः १४४ ॐ सलिलायै नमः १४५ ॐ सुशीलायै नमः १४६ ॐ ईश्वर्यै नमः १४७ ॐ सिद्धेश्वर्यै नमः

कवचांगेषु ऋषीन्पूजयेत् पूर्वेऽरूणपीतकोष्ठेषु – ४ – १४८ ॐ द्वैपायनाय नमः १४९ ॐ भारद्वाजाय नमः १५० ॐ मित्राय नमः १५१ ॐ सनकाय नमः १५२ ॐ गौतमाय नमः १५३ ॐ सुमन्तवे नमः १५४ ॐ त्वष्ट्रे नमः १५५ ॐ सनन्दाय नमः

पश्चिमेऽरूणपीतकोष्ठेषु ४ – १५६ ॐ देवलाय नमः १५७ ॐ व्यासाय नमः १५८ ॐ ध्रुवाय नमः १५९ ॐ सनातनाय नमः

उत्तरेऽरूणपीतकोष्ठेषु – ४ – १६० ॐ वसिष्ठाय नमः १६१ ॐ च्यवनाय नमः १६२ ॐ पुष्कराय नमः १६३ ॐ सनत्कुमाराय नमः

ईशाने, अग्निकोणे, नैर्ऋत्यकोणे, वायुकोणे कृष्णकोष्ठे च एकैकम्–

१६४ ॐ कण्वाय नमः १६५ ॐ मैत्राय नमः १६६ ॐ कवये नमः १६७ ॐ विश्वामित्राय नमः

मध्ये पीतकोष्ठेषु – ८ – १६८ ॐ वामदेवाय नमः १६९ ॐ सुमन्ताय नमः १७० ॐ जैमिनये नमः १७१ ॐ क्रतवे नमः १७२ ॐ पिप्पलादाय नमः १७३ ॐ गर्गाय नमः १७४ ॐ पराशराय नमः १७५ ॐ वैशंपायनाय नमः

मध्ये कृष्णकोष्ठेषु ईशानतः – १० – १७६ ॐ मार्कण्डेयाय नमः १७७ ॐ मृकंडाय नमः १७८ ॐ लोमशाय नमः १७९ ॐ पुलहाय नमः १८० ॐ पुलस्त्याय नमः १८१ ॐ बृहस्पतये नमः १८२ ॐ जमदग्नये नमः १८३ ॐ जामदग्न्याय नमः १८४ ॐ दालभ्याय नमः १८५ ॐ गालवाय नमः

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मध्ये हरित्कोष्ठेषु ईशानतः – १६ – १८६ ॐ याज्ञवल्क्याय नमः १८७ ॐ दुर्वाससे नमः १८८ ॐ सौभरये नमः १८९ ॐ जावालये नमः १९० ॐ वाल्मीकये नमः १९१ ॐ बह्वृचाय नमः १९२ ॐ इन्द्रप्रमितये नमः १९३ ॐ देवमित्राय नमः १९४ ॐ जाजलये नमः १९५ ॐ शाकल्याय नमः १९६ ॐ मुद्गलाय नमः १९७ ॐ जातुकर्ण्याय नमः १९८ ॐ बलाकाय नमः १९९ ॐ कृपाचार्याय नमः २०० ॐ कौशल्याय नमः २०१

नेत्राङ्गपूजनम्,

ईशानकोणेऽरुणकोष्ठेषु – १२ – २०२ ॐ ब्रह्माग्नये नमः २०३ ॐ गार्हष्पत्याग्रये नमः २०४ ॐ ईश्वराग्रये नमः २०५ ॐ दक्षिणाग्रये नमः २०६ ॐ वैष्णवाग्रये नमः २०७ ॐ आहवनीयाग्रये नमः २०८ ॐ सप्तजिह्वाग्रये नमः २०९ ॐ इध्मजिह्वाग्रये नमः २१० ॐ प्रवर्ग्याग्रये नमः २११ ॐ वडवाग्रये नमः २१२ ॐ जठराग्नये नमः २१३ ॐ लौकिकाग्रये नमः।

अग्निकोणे अरुणकोष्ठेषु – १२ – २१४ ॐ सूर्याय नमः २१५ ॐ वेदाङ्गाय नमः २१६ ॐ भानवे नमः २१७ ॐ इन्द्राय नमः २१८ ॐ खगाय नमः २१९ ॐ गभस्तिने नमः २२० ॐ यमाय नमः २२१ ॐ अंशुमते नमः २२२ ॐ हिरण्यरेतसे नमः २२३ ॐ दिवाकराय नमः २२४ ॐ मित्राय नमः २२५ ॐ विष्णवे नमः

नैर्ऋत्यकोणे अरुणकोष्ठेषु – १२ – २२६ ॐ शम्भवे नमः २२७ ॐ गिरीशाय नमः २२८ ॐ अजैकपदे नमः २२९ ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः २३० ॐ पिनाकपाणये नमः २३१ ॐ अपराजिताय नमः २३२ ॐ भुवनाधीश्वराय नमः २३३ ॐ कपालिने नमः २३४ ॐ विशांपतये नमः २३५ ॐ रुद्राय नमः २३६ ॐ वीरभद्राय नमः २३७ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः

वायुकोणे अरुणकोष्ठेषु – ११ – २३८ ॐ आवहाय नमः २३९ ॐ प्रवहाय नमः २४० ॐ उद्वहाय नमः २४१ ॐ संवहाय नमः २४२ ॐ विवहाय नमः २४३ परीवहाय नमः २४४ ॐ धरायै नमः २४५ ॐ अद्भ्यो नमः २४६ ॐ अग्नये नमः २४७ ॐ वायवे नमः २४८ ॐ आकाशाय नमः

ऋषीन् पूजयेत् ईशानादीशपर्यन्तं बाह्यपंक्तौ कृष्णकोष्ठेषु – ४९ ॐ हिरण्यनाभाय नमः २५० ॐ पुष्पञ्जयाय नमः २५१ ॐ द्रोणाय नमः २५२ ॐ शृंगिणे नमः २५३ ॐ बादरायणाय नमः २५४ ॐ अगस्त्याय नमः २५५ ॐ मनवे नमः २५६ ॐ कश्यपाय नमः २५७ ॐ धौम्याय नमः २५८ ॐ भृगवे नमः २५९ ॐ वीतिहोत्राय नमः २६० ॐ मधुच्छंदसे नमः २६१ ॐ वीरसेनाय नमः २६२ ॐ कृतवृष्णवे नमः २६३ ॐ अत्रये नमः २६४ ॐ मेधातिथये नमः २६५ ॐ

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अरिष्टनेमये नमः २६६ ॐ अङ्गिरसाय नमः २६७ ॐ इन्द्रप्रमदाय नमः २६८ ॐ इध्मवाहवे नमः २६९ ॐ पिप्पलादाय नमः २७० ॐ नारदाय नमः २७१ ॐ अरिष्टसेनाय नमः २७२ ॐ अरुणाय नमः २७३ ॐ कपिलाय नमः २७४ ॐ कर्दमाय नमः २७५ ॐ मरीचये नमः २७६ ॐ क्रतवे नमः २७७ ॐ प्रचेतसे नमः २७८ ॐ उत्तमाय नमः २७९ ॐ दधीचये नमः २८० ॐ श्राद्धदेवेभ्यो नमः २८१ ॐ गणदेवेभ्यो नमः २८२ ॐ विद्याधरेभ्यो नमः २८३ ॐ अप्सरेभ्यो नमः २८४ ॐ यक्षेभ्यो नमः २८५ ॐ रक्षोभ्यो नमः २८६ ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः २८७ ॐ पिशाचेभ्यो नमः २८८ ॐ गुह्यकेभ्यो नमः २८९ ॐ सिद्धदेवेभ्यो नमः २९० ॐ औषधीभ्यो नमः २९१ ॐ भूतग्रामाय नमः २९२ ॐ चतुर्विधभूतग्रामाय नमः

ॐ मनोजूतिरिति प्रतिष्ठापनम्॥ ॐ भूर्भुव स्वः महाविष्णवादिगौरीतिलक मण्डलस्थ देवताः सुप्रतिष्ठता भवन्तु। यथामिलितोपचारद्रव्यैः संपूज्य।

___***___

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ दुर्गापूजनविधिः ।।

आवाहनम् (हस्ते पुष्पाण्यादाय) :-

महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्दविग्रहे।
सर्वभूतहिते मातरेह्येहि परमेश्वरि।।

(मू०) आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिषूदिनि।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शङ्करप्रिये।।१।।

सर्वतीर्थमयं वारि सर्वदेवसमन्विता।
इमं घटं समागच्छ तिष्ठ देवगणैः सह।।२।।

दुर्गे देवि समागच्छ सान्निध्यमिह कल्पय।
बलिपूजां गृहाणत्वमष्टाभिः शक्तिभिः सह।।३।।

कल्याणजननीं सत्यां कामदां करुणाकराम्।
अनन्तशक्तिसम्पन्नां दुर्गामावाहयाम्यहम्।।४।।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदोमऽआवह।।१।।

हीं साङ्गां सपरिवारां सावरणां सायुधां दुर्गामावाहयामि। महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती स्वरूपिणीदुर्गे देवते आवाहिता भव।

आसनम् :-

(मू०) अमूल्यरत्ननिर्माणं नानाचित्रविराजितम्।
वरं सिंहासनं श्रेष्ठं गृह्यतां शंकरप्रिये।।

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।

ॐ ह्रीं भू० दुर्गा देव्यैः नमः, आसनं परिकल्पयामि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्थापनम् :–

(मू०) तवेयं महिमा मूर्तिस्तस्यां त्वं सर्वगः शुभे।
भक्ति स्नेह समाकृष्य दीपवत्स्थापयाम्यहम्।।

ॐ इहरति० ॐ भू० भगवति दुर्गे इहागच्छ इहतिष्ठ, स्थापिता भव।

सन्निधानम् :–

(मू०) अनन्या तव देवेशि मूर्तिशक्तिरियं वरे।
सान्निध्यं कुरु तस्यां त्वं भक्तानुग्रहतत्परे।।

ॐ ह्रीं भू० भगवति दुर्गे इह सन्निधेहि।

सन्निरोधनम् :–

(मू०) आज्ञया तव देवेशि कृपाम्भोधे गुणाम्बुधे।
आत्मानन्दैक तृप्तां त्वां निरुणध्मि शिवप्रिये।।

ॐ भू० भगवति दुर्गे इह सन्निरुद्धा भव।

सम्मुखीकरणम् :–

(मू०) अज्ञानाद् दुर्मनस्ताद्वा वैकल्यात् साधनस्य च।
यदपूर्णं भवेत् कृत्यं तदप्यमुखी भव।।

ॐ ह्रीं भू० भगवति दुर्गे इह सम्मुखी भव। षडङ्गेन सकलीकृत्य।

अवगुण्ठनम् :–

(मू०) अव्यक्त वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रप्रज्वलितद्युते।
स्वतेजः पुञ्जकेनाशु वेष्टिताभव सर्वतः।।

ॐ ह्रीं भू० भगवति दुर्गे अवगुण्ठिता भव।

श्रीदेव्यङ्गे षडङ्गानि विन्यस्य मूलमुच्चार्य सकलीकृताभवेत्युक्त्वा।
पुनर्मूलं श्री भगवत्यमृतीकृताभवेति देव्याः शिरसिधेनुमुद्रां प्रदर्शयन्नमृतवृष्टिं सञ्चिन्त्य।
पुनर्मूलेन महामुद्रया परमीकृता भवेत्युक्त्वा धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य प्रार्थिता भवेति सुप्रतिष्ठाप्य लेलिहा[१]नमुद्रया :–

१. वक्त्रं विस्तारितं कृत्वाप्यधोजिह्वां च चालयेत्। पार्श्वस्थं मुष्टियुगलं लेलिहानेति कीर्त्यते।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ भू० श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरुपिणी (भगवति दुर्गे) सुप्रतिष्ठिता वरदा भव। ततः स्वागतमाचरेत् :—

प्रथमं स्वागतम् (कृताञ्जलिः पठेत्) :—

एह्येहि भगवत्यम्बे शत्रुक्षय जय प्रदे।
भक्तिः पूजयामि त्वां दुर्गे देवि सुरार्चिते॥
आगच्छ त्वं महाभागे सर्वकल्याणहेतवे।
मम शत्रुविनाशाय शङ्करप्राणदायिनि॥
अद्य मे सफलं जन्म सार्थकं जीवनं मम।
पूजयामि यतो दुर्गां पुण्यक्षेत्रे च भारते॥
स्वागतं देवदेवेशि मद्भाग्यात् त्वमिहागता।
प्राकृतं त्वमदृष्टा मां बालवत्परिपालय॥
स्वागतं ते महामाये चण्डिके सर्वमङ्गले।
पूजां गृहाण विविधां सर्वकल्याणकारिणि॥
देवेशि भक्तिसुलभे परिवारसमन्विते।
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिरा भव॥

इति सुस्वागतं कृत्वा पूजां कुर्यात्

पाद्यम् :—

(मू०) अमूल्यं रत्न पात्रस्थं निर्मलं जाह्नवीजलम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दुर्गे पाद्यं च गृह्यताम्॥

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मादेवीजुषताम्॥

ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्रीदुर्गादेव्यै नमः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम् (अनामाङ्गुष्ठयोगादर्घ्य मुद्रा) :—

(मू०) गन्धाक्षतैश्च संयुक्तं फलपुष्पयुतं शुभम्।
अर्घ्यं गृहाण दत्तं मे प्रसीद परमेश्वरि॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वयेश्रियम्।।
ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्रीदुर्गादेव्यै नमः अर्घ्यं सम०।

आचमनीयम् :–

(मू०) गङ्गागोदावरीरेवा यमुनाभ्यःसमाहृतम्।
मयाऽचमनीयार्थं सुशीतं तोयमुत्तमम्।।
ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोकेदेवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमींशरणमहं प्रपद्येऽअलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।।
ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्रीदुर्गादेव्यै नमः आचमनीयं सम०।

मधुपर्क :–

(मू०) मधुनिहितं कनकस्य सम्पुटे पिहितं रत्नपिधानकेन यत्।
तदिदं भगवति करेऽर्पितं मधुपर्कं जननि प्रगृह्यताम्।।
ॐ स्वाहा मरुद्भिरिति मन्त्रेण। ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्रीदुर्गादेव्यै नमः मधुपर्कं सम०।

आचमनीयम् :–

स्नानादिकं विधायापि यतः शुद्धिरवाप्यते।
इदमाचमनीयं हि महादेवि प्रगृह्यताम्।।

स्नानम् :–

(मू०) खमापः पृथिवी चैव ज्यौतिषं वायुरेव च।
लोकसंस्मृतिमात्रेण वारिणा स्नापयाम्यहम्।।
ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तववृक्षोऽथबिल्वः।
तस्यफलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।
ॐ ह्रीं साङ्गा० श्री दुर्गादेव्यै नमः स्नानं सम०। आचमनम्।

गन्धोदक :–

(मू०) मलयाचलसम्भूतं चन्दनागुरुसम्भवम्।
चन्दनं च महादेवि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ गन्धर्व्वस्त्वां व्विश्वावसुः परिदधातु व्विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्नरिडऽईडितः ।।

ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्रीदुर्गादेव्यै नमः गन्धोदकस्नानं सम० ।

सुगन्धितद्रव्यम् :-

(मू०) परमानन्द सौरभ्यं परिपूर्णदिगम्बरम् ।
गृहाण सौरभं दिव्यं कृपया जगदम्बिके ।।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्द्धनम् ।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ।।

ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्री दुर्गादेव्यै नमः सुगन्धिद्रव्यं सम० ।

पञ्चामृतस्नानम् :-

(मू०) पञ्चामृतं मयानीतं पयोदधिसमन्वितम् ।
घृतं मधु शर्करया प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः ।
सरस्वती तु पञ्चधासो देशे भवत्सरित् ।।

ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्रीदुर्गादेव्यै नमः पञ्चामृतस्नानं सम० ।

उद्वर्तनम् :-

(मू०) तिल तैल समायुक्तं सुगन्धिद्रव्यनिर्मितम् ।
उद्वर्तनमिदं देवि गृहाण त्वं प्रसीद मे ।।

ॐ अहशुनाते इति मन्त्रेण ।

श्रीमन्महालक्ष्म्याद्यावाहितदेवताभ्यो नमः इति पञ्चोपचारैः सम्पूज्य । उत्तरे निर्माल्यं विसृज्य पुनरभ्यर्च्य देवीसूक्तं श्रीसूक्तं शक्रादयेत्यादिस्तोत्रैश्चाभिषेकः कार्यः ।

शुद्धोदकस्नानम् :-

(मू०) ज्ञानमूर्ते भद्रकालि दिव्यमूर्ते सुरेश्वरि ।
स्नानं गृहाण देवि त्वं नारायणि नमोऽस्तु ते ।।

ॐ शुद्धवाल सर्व्वशुद्धवालेति० ।

ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्रीदुर्गादेव्यै नमः शुद्धोदकस्नानं सम० ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वस्त्रम् :–

(मू०) सूक्ष्मतन्तुसमाकीर्णं नानावर्णविचित्रितम्।
वस्त्रं गृहाण मे देवि प्रीत्यर्थं तव निर्मितम्।।

ॐ उपैतु मां देवसखःकीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन्कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।

ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्री दुर्गादेव्यै नमः वस्त्रं सम०।

उत्तरीयम् :–

(मू०) उत्तरीयं महादिव्यं पट्टसूत्रादिनिर्मितम्।
समानीतं मया देवि प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।।

ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्रीदुर्गादेव्यै नमः उत्तरीयं सम०।

आभूषणम् :–

(मू०) सौवर्णाद्यमलङ्कारं कङ्कणादिविभूषितम्।
हारकेयूर युक्तानि नूपुराणि गृहाण मे।।

ॐ सन्त्वमग्ने० इति मन्त्रेण।

ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्रीदुर्गादेव्यै नमः आभूषणं सम०।

सौभाग्यसूत्रम् :–

(मू०) सौभाग्यसूत्रं वरदे सुवर्णमणिसंयुते।
कण्ठे वध्नामि देवेशि सौभाग्यं देहि मे सदा।।

ॐ सीसेन तन्त्रमिति मन्त्रेण।

ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्रीदुर्गादेव्यै नमः सौभाग्यसूत्रं सम०।

सौवीराञ्जनम् :–

(मू०) नेत्रत्रय महामाये भूषयामल कज्जलैः।
सुसौवीराञ्जनैर्दिव्यैर्जगदम्ब नमोस्तु ते।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ व्वृत्रस्यासिकनीनकश्चक्षुर्द्दाऽअसि चक्षुर्म्मे दहि ।।

ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्री दुर्गादेव्यै नमः सौवीराञ्जनं सम० ।

अलक्तकं :–

हरिद्राचूर्णञ्च :–

(मू०) त्वत्पदाम्भोजनखरद्युतिकारि मनोहरम् ।
अलक्तकमिदं देवि मयादत्तं प्रगृह्यताम् ।।
हरिद्रारञ्जिते देवि सुखसौभाग्यदायिनि ।
तस्मात् त्वं पूजयाम्यत्रदुःखशान्तिं प्रयच्छ मे ।।

ॐ सुसन्दृशंन्त्वाव्वयम्मघवंन्वन्दिषीमहिं ।
प्रनूनम्पूर्णबंन्धु रस्तुंतोयासिव्वशा रँ ।। ऽअनुयोजान्विन्द्र ते हरीं ।।

ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्री दुर्गादेव्यै नमः अलक्तकं हरिद्रां च सम० ।

गन्धः –

(मू०) मलयाचलसम्भूतं नानागन्धसमन्वितम् ।
शीतलं बहुलामोदं चन्दनं गृह्यतामिदम् ।।
रक्तानुलेपनं देवि स्वयं देव्या प्रकाशितम् ।
तद् गृहाण महाभागे शुभं देहि नमोऽस्तु ते ।।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।

ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्रीदुर्गादेव्यै नमः गन्धं सम० ।

सिन्दूरम् :–

(मू०) सिन्दूरं सर्वसाध्वीनां भूषणाय विनिर्मितम् ।
गृहाण वरदे देवि भूषणानि प्रयच्छ मे ।।

ॐ सिन्धोरिवप्राद्ध्वनेति मन्त्रेण ।

ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्रीदुर्गादेव्यै नमः सिन्दूराभरणं सम० ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कुङ्कुमम् :–

(मू०) जपापुष्पप्रभ रम्यं नारीभालविभुषणम्।
भास्वरं कुङ्कुमं रक्तं देवि दत्तं प्रगृह्य मे।।

ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्रीदुर्गादेव्यै नमः कुङ्कुमं सम०।

अक्षतम् :–

(मू०) अक्षतं धान्यजं देवि ब्रह्मणा निर्मितं पुरा।
प्राणदं सर्वभूतानां गृहाण वरदे शुभे।।

ॐ अक्षन्नमीमदन्त इति मन्त्रेण।

ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्रीदुर्गादेव्यै नमः अक्षतान्सम०।

पुष्पमालाम् :–

(मू०) मन्दारः पारिजातश्च पाटलो केतकी तथा।
मालती मोगरं चैव शतपत्राणि चम्पकम्।।
मया निवेदितं भक्त्यां प्रसीद परमेश्वरि।

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।

ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्रीदुर्गादेव्यै नमः पुष्पमालां सम०।

बिल्वपत्रम् :–

(मू०) अमृतोद्भवं श्रीवृक्षं शङ्करस्य सदाप्रियम्।
पवित्रं ते प्रयच्छामि सर्वकार्यार्थसिद्धये।।

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो व्वर्म्मिणे च व्वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्न्याय च।।

ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्रीदुर्गादेव्यै नमः बिल्वपत्रं सम०।

अथाङ्गपूजा (गन्धेनार्चयेत्) :–

०१. ह्रीं दुर्गायै नमः पादौ पूजयामि।
०२. ह्रीं मङ्गलायै नमः गुल्फौ पूजयामि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

०३. ह्रीं भगवत्यै नमः जङ्घे पूजयामि।
०४. ह्रीं कौमार्यै नमः जानुनी पूजयामि।
०५. ह्रीं वागीश्वर्यै नमः उरु पूजयामि।
०६. ह्रीं वरदायै नमः कटी पूजयामि।
०७. ह्रीं शिवायै नमः नाभिं पूजयामि।
०८. ह्रीं वरायै नमः उदरं पूजयामि।
०९. ह्रीं गिरिसुतायै नमः स्कन्धौ पूजयामि।
१०. ह्रीं पद्माकरवासिन्यै नमः हृदयं पूजयामि।
११. ह्रीं नन्दायै नमः स्तनौ पूजयामि।
१२. ह्रीं भवान्यै नमः हस्तौ पूजयामि।
१३. ह्रीं महागौर्यै नमः बाहू पूजयामि।
१४. ह्रीं इन्द्राण्यै नमः कण्ठं पूजयामि।
१५. ह्रीं महिषमर्दिन्यै नमः नेत्रे पूजयामि।
१६. ह्रीं अन्नपूर्णायै नमः मुखं पूजयामि।
१७. ह्रीं मोहवत्त्यै नमः शिरः पूजयामि।
१८. ह्रीं ज्ञानशक्त्यै नमः नासिकां पूजयामि।
१९. ह्रीं कर्तृशक्त्यै नमः कर्णौ पूजयामि।
२०. ह्रीं रुद्रायै नमः ललाटं पूजयामि।
२१. ह्रीं कमलायै नमः सर्वाङ्गं पूजयामि।

देव्या दक्षिणे – सिंहं पूजयामि।
देव्या वामे – महिषं पूजयामि।

अथ पत्रपुष्पपूजा (सर्वत्रादौ देवीप्रणवमुच्चरेत्) :–

०१. उमायै नमः, केतकी पत्रं समर्पयामि।
०२. गौर्यै नमः, भृङ्गराजपत्रं समर्पयामि।
०३. पार्वत्यै नमः, बिल्वपत्रं समर्पयामि।
०४. जगद्धात्र्यै नमः, दूर्वापत्रं समर्पयामि।
०५. शान्तिरुपिण्यै नमः, धत्तुरपत्रं समर्पयामि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

०६. जगत्प्रतिष्ठायै नमः, बदरीपत्रं समर्पयामि।
०७. देव्यै नमः, तुलसीपत्रं समर्पयामि।
०८. लोकवन्दितायै नमः, अपामार्गपत्रं समर्पयामि।
०९. काल्यै नमः अर्कपत्रं समर्पयामि।
१०. शिवायै नमः, शमीपत्रं समर्पयामि।
११. भवान्यै नमः दाडिमीपत्रं समर्पयामि।
१२. रुद्राण्यै नमः, देवदारुपत्रं समर्पयामि।
१३. शर्वाण्यै नमः, मरुपत्रं समर्पयामि।
१४. मंगलदात्र्यै नमः, सिन्दुवारपत्रं समर्पयामि।
१५. अव्यक्तायै नमः करवीरपत्रं समर्पयामि।
१६. चित्स्वरुपायै नमः जातीपत्रं समर्पयामि।
१७. जगत्त्रयहितैषिण्यै नमः विष्णुक्रान्तापत्रं समर्पयामि।
१८.गिरिजायै नमः ब्रह्मपत्रं समर्पयामि।
१९. मेनकात्मजायै नमः रसालपत्रं समर्पयामि।
२०. महामायायै नमः पुंनागपत्रं समर्पयामि।
२१. माहेश्वर्यै नमः सर्वपत्राणि समर्पयामि।

पुष्पपूजा :–

०१. उमायै नमः शतपत्रपुष्पं समर्पयामि।
०२. गौर्यै नमः रसालपुष्पं समर्पयामि।
०३. पार्वत्यै नमः पुन्नागपुष्पं समर्पयामि।
०४. जगद्धात्र्यै नमः मल्लिकापुष्पं समर्पयामि।
०५. जगत्प्रतिष्ठायै नमः दाडिमीपुष्पं समर्पयामि।
०६. शान्तिरुपिण्यै नमः कर्णिकापुष्पं समर्पयामि।
०७. देव्यै नमः नन्दावर्तपुष्पं समर्पयामि।
०८. लोकवन्दितायै नमः कुमुदपुष्पं समर्पयामि।
०९. काल्यै नमः पारिजातपुष्पं समर्पयामि।
१०. शिवायै नमः कमलपुष्पं समर्पयामि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

११. भवान्यै नमः मरुपुष्पं समर्पयामि।
१२. रुद्राण्यै नमः अर्कपुष्पं समर्पयामि।
१३. शर्वाण्यै नमः मरु पुष्पं समर्पयामि।
१४. मंगलदात्र्यै नमः सिन्दुवारपुष्पं समर्पयामि।
१५. अव्यक्तायै नमः करवीरपुष्पं समर्पयामि।
१६. चित्स्वरुपायै नमः जातीपुष्पं समर्पयामि।
१७. जगत्त्रयहितैषिण्यै नमः विष्णुकान्तापुष्पं समर्पयामि।
१८. गिरिजायै नमः ब्रह्मपुष्पं समर्पयामि।
१९. मेनकात्मजायै नमः रसालपुष्पं समर्पयामि।
२०. महामायायै नमः पुंनागपुष्पं समर्पयामि।
२१. माहेश्वर्यै नमः सर्वपुष्पाणि समर्पयामि।

:: अथावरणपूजा ::

(वामेन तत्त्वमुद्रया तर्पणं दक्षिणेन ज्ञानमुद्रयाऽर्चनम्)

:: प्रथमावरणम् ::

संचिन्मयपरे देवि परामृतरसप्रिये ।
अनुज्ञां देहि मे मातः परिवारार्चनाय ते ।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे साङ्गायै सपरिवारायै सावर्णायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यै नमः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।१ ।।

ॐ मूलं साङ्गायै सपरिवारायै सावर्णायै सायुधायै सशक्तिकायै महाकाल्यै नमः महाकालीश्रीपादुकां पूज० तर्पयामि ।।२ ।।

ॐ मूलं साङ्गायै सपरिवारायै सावर्णायै सायुधायै सशक्तिकायै महालक्ष्म्यै नमः महालक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।३ ।।

ॐ मूलं साङ्गायै सपरिवारायै सावर्णायै सायुधायै सशक्तिकायै महासरस्वत्यै नमः

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

महासरस्वती श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।४।।

विन्दोः परितो गुरुचतुष्टयं पूजयेत् :–

ॐ गुरवे नमः गुरुशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।५।।

ॐ परमगुरवे नमः परमगुरुशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।६।।

ॐ परात्परगुरवे नमः परात्परगुरुशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।७।।

ॐ परमेष्ठिगुरुवे नमः परमेष्ठिगुरुशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।८।।

षडङ्गं पूजयेत् :–

ॐ ऐं हृदयाय नमः हृदंयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।९।।

ॐ ह्रीं शिरसे नमः शिरः शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।१०।।

ॐ क्लीं शिखायै नमः शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।११।।

ॐचामुण्डायै कवचाय नमः कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।१२।।

ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय नमः नेत्रत्रयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।१३।।

ॐ मूलेन अस्त्राय नमः अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।१४।।

प्रथमावरणदेवताभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि सम० ।

सामान्यार्घमादाय :–

एताः प्रथमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

पुष्पाञ्जलिमादाय :–

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ।।

योनिमुद्रया प्रणमेत् ।।

:: द्वितीयावरणम् ::

(त्रिकोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन) :–

ॐ सावित्र्या सह विधात्रे नमः विधातृशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।१५।।

ॐ श्रिया सह विष्णवे नमः विष्णुशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।१६।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ उमया सह शिवाय नमः शिवशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।१७।।
ॐ क्षुं नमः सिहाय नमः सिंहशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।१८।।
ॐ हुं नमः महिषाय नमः महिषशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।१९।।
द्वितीयावरणदेवताभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि सम०।

सामान्यार्घमादाय :–

एताः द्वितीयावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

पुष्पाञ्जलिमादाय :–

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।

योनिमुद्रया प्रणमेत्।।

:: तृतीयावरणम् ::

(षट्कोणे अग्नीशासुरवायव्ये मध्येदिक्षु वामक्रमेण वा) :–

ॐ ऐं नन्दजायै नमः नन्दजाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।२०।।
ॐ ह्रीं रक्तदन्तिकायै नमः रक्तदन्तिकाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।२१।।
ॐ क्लीं शाकम्भर्यै नमः शाकम्भरीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।२२।।
ॐ दुं दुर्गायै नमः दुर्गाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।२३।।
ॐ हुं भीमायै नमः भीमाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।२४।।
ॐ ह्रीं भ्रामर्यै नमः भ्रामरीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।२४।।
तृतीयावरणदेवताभ्यो नमः गन्धक्षातपुष्पाणि सम०।

सामान्यार्घमादाय :–

एतास्तृतीयावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

पुष्पाञ्जलिमादाय :–

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।। योनिमुद्रया प्रणमेत्।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

:: चतुर्थावरणम् ::

(अष्टपत्रे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन वामक्रमेणवा) :-

ॐ ऐं ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।२६ ।।
ॐ ह्रीं माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।२७ ।।
ॐ क्लीं कौमार्यै नमः कौमारीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।२८ ।।
ॐ ह्रीं वैष्णव्यै नमः वैष्णवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।२९।।
ॐ लृं वाराह्यै नमः वाराहीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।३० ।।
ॐ क्ष्यौं नारसिंह्यै नमः नारसिंहीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।३१ ।।
ॐ लं ऐन्द्र्यै नमः ऐन्द्रीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।३२ ।।
ॐ स्व्यें चामुण्डायै नमः चामुण्डाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।३३ ।।
ॐ ह्रीं लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।३४ ।।

चतुर्थावरणदेवताभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि सम० ।

सामान्यार्घमादाय :-

एताः चतुर्थावरणदेवता साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

पुष्पाञ्जलिमादाय :-

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ।।

योनिमुद्रया प्रणमेत् ।।

:: पञ्चमावरणम् ::

(चतुर्विंशतिदले स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन वामक्रमेणवा) :-

ॐ विं विष्णुमायायै नमः विष्णुमायाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।३५ ।।
ॐ चें चेतनायै नमः चेतनाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।३६ ।।
ॐ बुं बुद्ध्यै नमः बुद्धिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।३७ ।।
ॐ निं निद्रायै नमः निद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।। ३८ ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ क्षुं क्षुधायै नमः क्षुधाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।३९।।
ॐ छां छायायै नमः छायाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।४०।।
ॐ शं शक्त्यै नमः शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।४१।।
ॐ तृं तृष्णायै नमः तृष्णाशक्तिश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि।।४२।।
ॐ क्षां क्षान्त्यै नमः क्षान्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।४३।।
ॐ जां जात्यै नमः जातिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि०।।४४।।
ॐ लं लज्जायै नमः लज्जाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।४५।।
ॐ शां शान्त्यै नमः शान्तिशक्तिश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि।।४६।।
ॐ श्रं श्रद्धायै नमः श्रद्धाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।४७।।
ॐ कां कान्त्यै नमः कान्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।४८।।
ॐ लं लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।४९।।
ॐ धृं धृत्यै नमः धृतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।५०।।
ॐ वृं वृत्यै नमः वृत्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।५१।।
ॐ श्रुं श्रुत्यै नमः श्रुतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।५२।।
ॐ स्मृं स्मृत्यै नमः स्मृतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।५३।।
ॐ दं दयायै नमः दयाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।५४।।
ॐ तुं तुष्ट्यै नमः तुष्टिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।५५।।
ॐ पु पुष्ट्यै नमः पुष्टिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।५६।।
ॐ मां मातृभ्यो नमः मातृशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।५७।।
ॐ भ्रां भ्रान्त्यै नमः भ्रान्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।५८।।

पञ्चमावरणदेवताभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि सम०।

सामान्यार्घमादाय :– एताः पञ्चमावरणदेवताः साङ्गाः सप० सायु० सश० पू० त० सन्तु।साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

पुष्पाञ्जलिमादाय :–

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्।। योनिमुद्रया प्रणमेत्।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

:: षष्ठावरणम् ::

(भूपुरे कोणचतुष्टये आग्नेय ऐशान्यादिक्रमेण वा) :-

ॐ गं गणपतये नमः गणपतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।५९।।

ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपालशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।६०।।

ॐ बं बटुकाय नमः बटुकशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।६१।।

ॐ यां योगिन्यै नमः योगिनीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।६२।।

षष्ठावरणदेवताभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि सम० ।

सामान्यार्घमादाय :-

एता षष्ठावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

पुष्पाञ्जलिमादाय :-

अभीष्टसिद्धिं मे दहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सुषष्ठावरणार्चनम् ।।

योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

:: सप्तमावरणम् ::

(पूर्वादिक्रमेण दशदिक्षु) :-

ॐ लं इन्द्राय नमः इन्द्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।६३।।

ॐ रं अग्नये नमः अग्निशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।६४।।

ॐ यं यमाय नमः यमशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।६५।।

ॐ क्षं निर्ऋतये नमः निर्ऋतिशक्तिश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि ।।६६।।

ॐ वं वरुणाय नमः वरुणशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।६७।।

ॐ यं वायवे नमः वायुशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।६८।।

ॐ सं सोमाय नमः सोमशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।६९।।

ॐ हं ईशानाय नमः ईशानशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।७०।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ब्रं ब्रह्मणे नमः ब्रह्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।७१ ।।
ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः अनन्तशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।७२ ।।

सप्तमावरणदेवताभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि सम० ।

सामान्यार्घमादाय :–

एताःसप्तमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

पुष्पाञ्जलिमादाय :–

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ।।

योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

:: अष्टमावरणम् ::

(तद्बहिःपूर्वादिषु) :–

ॐ वं वज्राय नमः वज्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।७३ ।।
ॐ शं शक्त्यै नमः शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।७४ ।।
ॐ दं दण्डाय नमः दण्डशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।७५ ।।
ॐ खं खड्गाय नमः खड्गशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।७६ ।।
ॐ पां पाशाय नमः पाशशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।७७ ।।
ॐ अं अङ्कुशाय नमः अङ्कुशशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।७८ ।।
ॐ गं गदायै नमः गदाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।।७९ ।।
ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः त्रिशूलशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।८० ।।
ॐ पं पद्माय नमः पद्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।८१ ।।
ॐ चं चक्राय नमः चक्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।।८२ ।।

अष्टमावरणदेवताभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि सम० ।

सामान्यार्घमादाय :– एताः अष्टमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पुष्पाञ्जलिमादाय :-

अभीष्टसिद्धिं मे दहि शरणागतवत्सले।
भक्त्यासमर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम्।। योनिमुद्रया प्रणमेत्।।

:: नवमावरणम् ::

(तद्वहिःकलशात्पूर्वादिदिक्षु वा) :-

ॐ वज्रहस्तायै गजारुढायै कादम्बरीदेव्यै० कादम्बरीदेवीशक्ति० पूजयामि तर्पयामि।।८३।।

शक्तिहस्तायै अजवाहनायै उल्कादेव्यै० उल्का० पूजयामि तर्पयामि।।८४।।

दण्डहस्तायै महिषारुढायै करालीदैव्यै० कराली० पूजयामि तर्पयामि।।८५।।

खड्गहस्तायै शववाहनायै रक्ताक्षीदेव्यै० रक्ताक्षी० पूजयामि तर्पयामि।।८६।।

पाशहस्तायै मकरवाहनायै श्वेताक्षीदेव्यै० श्वेताक्षी० पूजयामि तर्पयामि।।८७।।

अङ्कुशहस्तायै मृगवाहनायै हरिताक्षीदेव्यै० हरिताक्षी० पूजयामि तर्पयामि।।८८।।

गदाहस्तायै सिंहारुढायै यक्षिणीदेव्यै० यक्षिणी० पूजयामि तर्पयामि।।८९।।

शूलहस्तायै वृषभवाहनायै कालीदेव्यै० काली० पूजयामि तर्पयामि।।९०।।

पद्महस्तायै हंसवाहनायै सुरज्येष्ठादेव्यै० सुरज्येष्ठा० पूजयामि तर्पयामि।।९१।।

चक्रहस्तायै सर्पवाहनायै सर्पराज्ञीदेव्यै० सर्पराज्ञी० पूजयामि तर्पयामि।।९२।।

नवमावरणदेवताभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि सम०।

सामान्यार्घमादाय :-

एता नवमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु।

पुष्पाञ्जलिमादाय :-

अभीष्टसिद्धिं मे दहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम्।।

योनिमुद्रया प्रणमेत्।

वा

(त्रिकोणषट्कोणाष्टदल चतुरस्त्रं यन्त्रं निर्माय)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भूपुराद्बहिः पूर्वादिवामावर्तेन पूजयेत् :-

ॐ ह्रीं ग्लां ग्लीं ग्लूं गणपतये नमः।

उत्तरे – ॐ ह्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षेत्रपालाय नमः।

पश्चिमे – ॐ ह्रीं तीक्ष्णश्रृङ्गाय महिषाय नमः।

दक्षिणे – ॐ ह्रीं वनस्पतिपुत्राय सिंहाय नमः।

ततः स्वाग्रे :–ॐ ह्रीं समस्तगुरुपादुकाभ्यो नमः

गन्धाक्षतपुष्पैः सम्पूज्य। त्रिकोणाग्रकोणे ह्रीं विष्णुलक्ष्मीभ्यां नमः।

दक्षकोणे – ॐ ह्रीं रुद्रगौरीभ्यां नमः।

वामकोणे – ॐ ह्रीं ब्रह्मवागीश्वरीभ्यां नमः।। इति।।

षट्कोणे :– (अग्रकोणमारभ्य दक्षावर्तेन)

ॐ ह्रीं नन्दायै नमः। – ॐ ह्रीं रक्तदन्तिकायै नमः।

ॐ ह्रीं शाकम्भर्यै नमः। ॐ ह्रीं भीमायै नमः।

ॐ ह्रीं भ्रामर्यै नमः। ॐ ह्रीं शिवदूत्यै नमः। इति।

अष्टदले (स्वाग्रादि दक्षावर्तेन पत्रमूले) :-

ॐ ह्रीं ब्राह्म्यै नमः। – ॐ ह्रीं माहेश्वर्यै नमः।

ॐ ह्रीं कौमार्यै नमः। ॐ ह्रीं वैष्णव्यै नमः।

ॐ ह्रीं वाराह्यै नमः। ॐ ह्रीं नारसिंह्यै नमः।

ॐ ह्रीं ऐन्द्र्यै नमः। ॐ ह्रीं चामुण्डायै नमः। इति।।

पत्राग्रे पूर्वादिप्रादक्षिण्येन :-

ॐ ह्रीं असिताङ्गभैरवाय नमः। – ॐ ह्रीं रुरुभैरवाय नमः।

ॐ ह्रीं चण्डभैरवाय नमः। ॐ ह्रीं क्रोधभैरवाय नमः।

ॐ ह्रीं उन्मत्तभैरवाय नमः। ॐ ह्रीं कपालभैरवाय नमः।

ॐ ह्रीं भीषणभैरवाय नमः। ॐ ह्रीं संहारभैरवाय नमः। ।। इति।

भूपुरान्तः पूर्वादिदिक्षु :-

ॐ ह्रीं इन्द्राय नमः। – ॐ ह्रीं अग्नये नमः।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ही यमाय नमः । ॐ हीं निर्ऋतये नमः ।
ॐ हीं वरुणाय नमः । ॐ हीं वायवे नमः ।
ॐ हीं कुबेराय नमः । ॐ हीं ईशानाय नमः ।
ॐ हीं ब्रह्मणे नमः । ॐ हीं अनन्ताय नमः ।

भूपुराद्बहिः :–

ॐ हीं वज्राय नमः । – ॐ हीं शक्तये नमः ।
ॐ हीं दण्डाय नमः । ॐ हीं खड्गाय नमः ।
ॐ हीं पाशाय नमः । ॐ हीं ध्वजाय नमः ।
ॐ हीं गदायै नमः । ॐ हीं त्रिशूलाय नमः ।
ॐ हीं पद्माय नमः । ॐ हीं चक्राय नमः ।

धूपम् :–

फडितिधूपस्थानं संप्रोक्ष्य मूलेन सम्पूज्य रमिति अग्निं संस्थाप्य धूपद्रव्यं निक्षिप्य अर्चित घण्टां वादयन् तत्तन्मन्त्रैर्नाभिपर्यन्तं धूपं प्रदर्शयेत् :–

(मू०) गुग्गुलं घृतसंयुक्तं नानाभक्ष्यैश्च संयुतम् ।
दशाङ्गं गृह्यतां धूपं दुर्गे देवि नमोस्तु ते ।।

ॐ कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भवकर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ।।

ॐ हीं साङ्गायै० श्रीदुर्गादेव्यै नमः धूपं सम० ।

दीपम् :–

फडितिदीपं संप्रोक्ष्य मूलेन प्रज्वाल्य घण्टां वादयन् नेत्रादिपादपर्यन्तं दीपं दद्यात् मध्यमेअङ्गुष्ठमूललग्ने दीपमुद्रा तां प्रदर्शयेत् ।

(मू०) मार्तण्डमण्डलान्तस्थ चन्द्रबिम्बाग्नितेजसाम् ।
निधनं देवि दीपोऽयं निर्मितस्तव भक्तितः ।।

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ।।

ॐ हीं साङ्गायै० श्रीदुर्गादेव्यै नमः दीपं दर्शयामि ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नानाविधनैवेद्यम् :–

तत्रादौ देव्या अग्रे दक्षिणतो वा जलेन चतुरस्त्रं त्रिकोणवृत्त मण्डलमालिख्य भोजनपात्रं संस्थाप्य नानाविधनैवेद्यं निधाय 'ह्रीं' नम इति संप्रोक्ष्य मूलेन संवीक्ष्य नैवेद्यमाच्छाद्य 'यं' इति वायुबीजेन तद्भूतदोषान् संशोध्य नैवेद्यं प्रदर्श्य 'रं' इति वह्निबीजं षोडशधा संजप्य तद्दोषं दग्ध्वा, ततो वामकरतले 'वं' इति अमृतबीजं विचिन्त्य तदुत्थामृतधारया प्लावितं विभाव्य मूलेन प्रोक्ष्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य मूलेनाष्टवारमभिमन्त्र्य गन्धपुष्पाभ्यां सम्पूज्य देव्या हृद्गतं तेजः स्मृत्वा वामाङ्गुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृष्ट्वा दक्षिणकरेण जलं गृहीत्वा।

चतुर्विधानं सघृतं सुवर्णपात्रे मया देवि समर्पितं तत्।
सञ्जी व्यमानामरवृन्दकैस्त्वं जुषस्व मातर्दययाऽवलोकय।।
(मू०) दिव्यान्नरससंयुक्तं नानभक्ष्यैस्तु संयुतम्।
चोष्यपेयसमायुक्तमन्नं देवि गृहाण मे।।

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदोमऽआवह।।

ततः पायसम् :–

गव्यसर्पिः पयोयुक्तं नानामधुरमिश्रितम्।
निवेदितं मया भक्त्या परमान्नं प्रगृह्यताम्।।

मोदकम् :–

मोदकं स्वादुरुचिरं कर्पूरादिभिरन्वितम्।
मिश्रं नानाविधैर्द्रव्यैः प्रतिगृह्याशु भुज्यताम्।।

अपूपादिः :–

अपूपानि च पक्वानि मण्डका वटकानि च।
पायसापूपमन्नं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

इति भूमौ देवीदक्षे जलं क्षिप्त्वा वामहस्तेन अनामामूलयोरं गुष्ठयोगेन नैवेद्यमुद्रां प्रदर्श्य सपुष्पकराभ्यां पात्रमुद्धरन् "भगवति। निवेदितानि हवींषि जुषाण।।" इति पठन् ग्रासमुद्रां प्रदर्शयेत्। वामहस्तेन पाद्माभां प्राणाद्यां दक्षिणेन तु।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तद्यथा :–

(कनिष्ठिकानामिकाङ्गुष्ठैः) ह्रीं प्राणाय नमः ।
(तर्जनीमध्यमाङ्गुष्ठैः) ह्रीं अपानाय नमः ।
(तर्जन्यनामामध्यमाङ्गुष्ठैः) ह्रीं व्यानाय नमः ।
(अनामामध्यमाङ्गुष्ठैः) ह्रीं उदानाय नमः ।
(सर्वाङ्गुलिभिः) ह्रीं समानाय नमः ।

एवं प्राणादिमुद्राः प्रदर्श्य क्षणं ध्यात्वा यथाशक्ति मूलमन्त्रजपं विधाय गुह्यातीति दक्षिणाधोहस्ते समर्प्य नैवेद्यमुद्रास्य देवीं भुञ्जानां ध्यात्वा जलं दद्यात् :–

(मू०) पानीयं शीतलं स्वच्छं कर्पूरादिसुवासितम् ।
भोजने तृप्तिकृद्यस्मात् कृपया परिगृह्यताम् ।।

इति जलं निवेद्य तज्जलं प्राशितमिति भावयन् अन्तः पटं धृत्वा पठेत् :–

कलिप्तमद्य धियाऽमृतकल्पं दुग्धसितायुतमन्नविशेषम् ।
माषादिनिर्मितपूपसहस्त्रं स्वीकुरु देवि निवेदनमाद्ये ।।

ततः गण्डूषार्थं मध्ये पानीयं दत्वा यवनिकामपाकृत्य मूलादि सञ्जप्य समर्प्य करोद्वर्तनं दद्यात् :–

कर्पूरादीनि द्रव्याणि सुगन्धीनि महेश्वरि ।
गृहाण जगतां नाथे करोद्वर्तन हेतवे ।।

ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्रीदुर्गादेव्यै नमः नैवेद्यं सम० ।

ऋतुफलम् :–

(मू०) इदं फलं मया देवि स्थापितं पुरतस्तव ।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ।।

ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।
बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वंहसः ।।

ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्रीदुर्गादेव्यै नमः ऋतुफलं सम० ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ताम्बूलम् :–

(मू०) पुगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम् ।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।।

ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्रीदुर्गादेव्यै नमः ताम्बूलं सम० ।

छत्रादिकम् :–

बुद्धि सवासनाक्लृप्ता दर्पणं मङ्गलानि च ।
मनोवृत्तिविचित्रां ते नृत्यरुपेण कल्पिता ।।
ध्यानं सगीतरुपेण शब्दा वाद्यप्रभेदतः ।
छत्राणि नवपद्मानि कल्पितानि मया शिवे ।।
सुषुम्ना ध्वजरूपेण प्राणाद्याश्चामरा मताः ।
अहङ्कारो गजत्वेन वेगः क्लृप्तो रथात्मना ।।

चामरम् :–

(मू०) **चामरं चमरीपुच्छं हेमदण्डसमन्वितम् ।**
मयार्पितं राजचिह्नं चामरं प्रतिगृह्यताम् ।।
ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्रीदुर्गादेव्यै नमः सर्वराजोपचारान् सम० ।

व्यञ्जनम् :–

(मू०) **बर्हिबर्हकृताकारं मध्यदण्डसमन्वितम् ।**
गृह्यतां व्यञ्जनं दुर्गे देहस्वेदापनुत्तये ।।

ततो भगवत्यै नृत्यगीतादिकं निवेद्य परापूजा वा कुर्यात् ।

दक्षिणाद्रव्यम् :–

(मू०) हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।।

ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्रीदुर्गादेव्यैः नमः दक्षिणाद्रव्यं सम०।

महानीराजनम् :– (ज्वालामालिन्यै नमः इति सम्पूज्य)

(मू०) कर्पूरवर्तिसंयुक्तं वह्निना दीपितञ्च यत्।
नीराजनं च देवशि गृह्यतां जगदम्बिके।।

ॐ आ रात्रि पार्थिवꣳरजः पितुरप्रायि धामभिः।
दिवः सदाꣳसि बृहती वितिष्ठस आत्वेषं वर्तते तमः।।

ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्रीदुर्गादेव्यै नमः महानीराजनं सम०।

पुष्पाञ्जलिः :–

(मू०) चण्डिके त्वं महामाये सर्वशक्तिस्वरुपिणी।
त्वं काली कमला ब्राह्मी त्वं जया विजया शिवा।।
त्वं लक्ष्मीर्विष्णुलोकेषु कैलाशे पार्वती तथा।
सरस्वती ब्रह्मलोके चेन्द्राणी शक्र पूजिता।।
वाराही नारसिंही च कौमारी वैष्णवी तथा।
त्वमापः सर्वलोकेषु ज्योतिर्ज्योतिः स्वरुपिणी।।
योगमाया त्वमेवासि वायुरुपा नभः स्थिता।
सर्वगन्धवहा पृथ्वी नानारुपा सनातनी ।।
विश्वरुपे च विश्वेशे विश्वशक्तिसमन्विते।
प्रसीद परमानन्दे दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।
नानापुष्पसमाकीर्णं नानासौरभसंयुतम्।
पुष्पाञ्जलिं च विश्वेशि गृहाण भक्तवत्सले।।

ततः राजाधिराजेति पठित्वा गायत्रीमुच्चार्य मन्त्रपुष्पं दद्यात्।

ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्रीदुर्गादेव्यै नमः पुष्पाञ्जलिं सम०।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रदक्षिणा :-

(मू०) यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि वै।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे।।

ॐ ये तीर्त्थानि प्प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषाᳫसहस्रयो जनेव धन्वानि तन्मसि।।

ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्रीदुर्गादेव्यै नमः प्रदक्षिणां सम०।

अच्छिद्रावधारणम् :-

(मू०) दुर्गे देवि महामाये यादृक पूजा मया कृता।
अच्छिद्रास्तु शिवे साङ्गा तव देवि प्रसादतः।।

ॐ तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्।
दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरसि तरसे नमः।

क्षमापनम् :-

(मू०) प्रार्थयामि महामाये यत्किञ्चित्स्खलितं मम।
क्षम्यतां तज्जगन्मातः दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।
ज्ञानतोऽज्ञानतो वाऽथ यन्मया क्रियते शिवे।
मम कृत्यमिदं सर्वमिति देवि क्षमस्व मे।।
अपराधो भवत्येव सेवकेन पदे पदे।
कोऽपरः सहतां लोके केवलं मातरं विना।।
भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवाऽवलंबनम्।
त्वयि जाताऽपराधानां त्वमेव शरणं शिवे।।

ततः साष्टाङ्गं प्रणमेत् :-

(मू०) नमः सर्वहितार्थायै जगदाधारहेतवे।
साष्टाङ्गप्रणामोऽयं दुर्गे देवि प्रगृह्यताम्।।
महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनि।
द्रव्यमारोग्यमैश्वर्यं देहि देवि नमोऽस्तु ते।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

त्वं हि दात्री च भोक्त्री च देवीरुपमिदं जगत्।
देवीं जपति सर्वत्र या देवी सोऽहमेव हि।।

ॐ शतँव्वोऽअम्ब धामानि सहस्रमुतवोरुहः।
अधा शतक्क्रत्त्वो यूयमिमम्मेऽअगदङ्कृत।।

ॐ ह्रीं साङ्गायै० श्रीदुर्गादेव्यै नमः नमस्कारान् सम०।

अथात्र यथाशक्ति मूलं जपेत्। ततः पूर्वसङ्कल्पितं स्वकुलाचारानुसारेण चण्डीपाठदीपदानादि हवनान्तं कर्म कुर्यात् कारयेद्वा।

ततः बलिपञ्चकं[1] यथासम्प्रदायमाचरेत्।

प्रधानबलिः –

बिन्दूत्रिकोणवृत्तचतुरस्त्रात्मक यन्त्रं विलिख्य यन्त्रं पूजयेत। बलिपात्रं निधाय मूलेन दीपं प्रज्वाज्य ह्रीं दुर्गाबलिद्रव्याय नमः गन्धाक्षतैः सम्पूज्य।

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममराती यतो निदहातिवेदः।
सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः।

भो दुर्गे! इमं सदीपं बलिं समर्पयामि। भो दुर्गे! इमं बलिं गृह्ण गृह्ण मम (यजमानस्य) सर्वमनोरथान् पूरय पूरय सर्वविघ्नान् निवारय निवारय स्वाहा।

अनेन बलिदानेन श्रीदुर्गा प्रीयताम्।

।। इति।।

१. कालीकुले पञ्चबलिविधानं प्रधानपूजनात् प्राग्भवति, श्रीकुले च प्रधानपूजनानन्तरमिति।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कुशकण्डिका

दक्षिणतो ब्रह्मासनम्। तदुपरि प्रागग्रान् कुशानास्तीर्य तदुपरि ब्रह्माणम् स्थापयेत्। पूजयेत्। यावत्कर्म समापेयात् तावत्त्वं ब्रह्मा भव। संपूजयेत्।

उत्तरतः प्रणीतासनम् –

मृण्मयं वा प्रणीतापात्रं वारिणापूर्य्य कुशैराच्छाद्य। ब्रह्मानुज्ञातं प्रणिताप्रणयनम् ॐ प्रणय ॐ प्रणय ॐ प्रणय इति त्रिवारं प्रणितामापूर्य, ब्रह्मणो मुखमवलोक्य, आलभ्य प्रणीतासनोपरि निदध्यात्।

परिस्तरणम् –

तत प्रभूतबर्हिषः चतुरोभागान्विधायैकैकभागेन चतुर्दिक्षु अग्रेण मूलमाच्छाद्य वारत्रयं परिस्तरेत्आग्नेयादीशान्तम्, ब्रह्मणोऽग्निं पर्यन्तं। नैर्ऋत्याद् वायव्यान्तं अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम्।

पात्रसादनम् –

अग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि कुशोपरि पवित्रच्छेदनानि त्रीणि तृणानि, पवित्रे द्वे, प्रोक्षणीपात्रम् आज्यस्थाली, चरुस्थाली, सम्मार्जनकुशा पञ्च त्रीणि वा उपमयन कुशाः, सप्त समिधः तिस्त्रः स्त्रुवः, स्त्रुक् आज्यं, तण्डुलाः, पूर्णपात्रम्, तिल-यव, ग्रहसमिध अन्यद् हवनीयं च आसादयेत् - ततः कुशद्वयं प्रादेशमात्रं संमात्य । वामहस्ते धृत्वा तत्र कुशत्रयं दक्षिणहस्तेन कुशद्वयोपरि निधाय, कुशद्वयं कुशत्रयोपरि प्रदक्षिणीकृत्य छिन्द्यात्। कुशपत्रद्वयं ग्राह्यम्, कुशत्रय-मुत्तरतः क्षिपेत्।

प्रोक्षणीसंस्कारः –

प्रणीतासन्निधौ प्रोक्षणीपात्रं निधाय, सपवित्रहस्तेन त्रिः प्रणितोदकमासिच्य अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यामुत्तराग्रे पवित्रे धृत्वा त्रिरुत्पवनम्। ततः प्रोक्षणीपात्रं सव्यहस्ते कृत्वा अनामि-काङ्गुष्ठाभ्यां सपवित्रं हस्तेन त्रिरुदिङ्गनम् (जलोच्छालनम्)। आसा-दितद्रव्याणि प्रोक्षणं कृत्वा अग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं निदध्यात्।

अधिश्रयणम् –

आज्यस्थाल्यामाज्यं निर्वाप्य, चरुस्थाल्यां तण्डुलान् त्रिः प्रक्षाल्य, प्रणीतोदकेनआसिच्य, किञ्चिज्ज-लान्तरं दत्त्वा मध्ये चरुं दक्षिणे आज्यं निदध्यात्। सिद्धे चरौ ज्वलदङ्गारं, प्रादक्षिण्येन भ्रामयित्वाग्नौ क्षिपेत्।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्रुव-संस्कारः -

अधोमुखस्रुवं त्रिः प्रतप्य वामकरे उत्तानं कृत्वा, दक्षिणकरेण संमार्जनकुशाग्रैर्मूलतोऽग्रपर्यन्तं, मूलैर्बाह्यतः संमृज्य, प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य, पुनः प्रतप्य दक्षिणतः कुशोपरि निदध्यात्। ततः आज्यं चरोः पूर्वेणानीय अग्रे धृत्वा, आज्य पश्चिमेन चरुमानीय, आज्यस्योत्तरतो निदध्यात्। पवित्राभ्यामाज्योत्पवनम्। अपद्रव्यनिरसनम्। पुरतो निदध्यात्। पवित्रयोः प्रोक्षणी पात्रे निधानम्। उपमयनकुशान् वामकरे गृहीत्वा तिस्रो घृताक्ताः पालाश्यः समिध-आदाय प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा उत्थाय ॐ समिधोऽभ्याधाय स्वाहा इत्यग्नौ क्षिपेत्। ततः उपविश्य दक्षिण चुलुकगृहीतेन सपवित्रेण प्रोक्षण्युदकेन अग्रे ईशानादारभ्य ईशानपर्यन्तं प्रदक्षिणाक्रमेण पर्युक्षणम् इतरथावृत्तिः। पवित्रे प्रणीतापात्रे निधाय संश्रवधारणार्थं प्रोक्षणीपात्रं प्रणीताग्न्योर्मध्ये निदध्यात्। अग्नि-प्रदीप्तिकरणवेणी-धमनीं तृणं काष्ठं वाऽन्तराकृत्वा मुखेन तत् प्रदीप्तिकरणम्।

--- *** ---

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अग्निपूजनम्

ॐ चत्वारिशृङ्गात्रयोऽअस्य पादादद्वे शीर्षे सप्त हस्तासोऽ अस्य। त्रिधाबद्धो व्वृषभोरोरवीति महोदेवोमर्त्यां २॥ आविवेश॥ पठित्वा –

अग्ने! वैश्वानर! शाडिल्यगोत्र शाण्डिल्यासितदेवलेति-त्रिप्रवरान्वित भूमिमातः वरुणपितः मेषध्वज प्राङ्मुख मम सम्मुखो भव।

ॐ अग्नेनय सुपथाराये ऽ अस्मान्विश्वानि देवव्वयुनानि विद्वान्। योयोदध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम ऽ उक्तिं व्विधेम। ॐ शतमङ्गलनामाग्नये नमः। इति गंधादिभिः पूजयेत्।

अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्।
हिरण्यवर्णममलं समृद्धं विश्वतोमुखम्॥

रेखादेवता पूजनम् :- प्रथमरेखोपरि ॐ ब्रह्मणे नमः।

द्वितीयरेखोपरि ॐ विष्णवे नमः। तृतीयरेखोपरि ॐ रुद्राय नमः। पंचोपचारैः सम्पूज्य।

अग्निजिह्वा-पूजनम् :-

पूर्वे- ॐ काल्यै नमः। आग्नेयां ॐ कराल्यै नमः।

दक्षिणे- ॐ मनोजवायै नमः। नैर्ऋत्यां-ॐ सुलोहितायै नमः।

पश्चिमे-ॐ धूम्रवर्णायै नमः। वायव्ये-ॐ स्फुलिंगिन्यै नमः।

उत्तरे-ॐ विश्वरुच्यै नमः। गंधादिभिः सम्पूज्य।

---***---

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आवाहितदेवतानां स्वाहाकारः

अथ दक्षिणं जानुं पातयित्वोपविष्टो हृदि सव्यहस्तं दत्त्वा ब्रह्मणान्वारब्धः स्रुवेणाज्यं गृहीत्वा जुहुयात्। **१** ॐ प्रजापतये स्वाहा (मनसा) इदं प्रजापतये न मम। ॐ इन्द्राय स्वाहा इदं इन्द्राय न मम। ॐ अग्नये स्वाहा इदं अग्नये न मम। ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम। **सर्वाहुतिषु हुतशेषस्य घृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः-**

केचिदत्र अग्निपूजनं कृत्वा। ततो प्रथमं वराहुति :-

ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि स्वाहा।[१]

ॐ व्वरुणस्यस्कम्भसर्ज्जनीस्थो स्वाहा।

ॐ व्वरुणस्य ऽऋतसदन्यसि स्वाहा।

ॐ व्वरुणस्य ऽऋतसदनमसि स्वाहा।

ॐ व्वरुणस्य ऽऋतसदनमासीद स्वाहा।

अनेन हवनेन वरुणः[२] **प्रीयताम्।**

गणेशाम्बिकयोः हवनम् –

ॐ गणानान्त्वा गणपतिᳬहवामहे प्प्रियाणान्त्वा प्प्रियपतिᳬहवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिᳬहवामहे व्वसोमम। आहमजानि गर्ब्भधमात्त्वमजासि गर्ब्भधम्।। ॐ गणपतये स्वाहा। इदं गणपतये न मम।

अम्बेऽअम्बिके ऽम्बालिकेनमानयति कश्चन।
ससंस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्।।

ॐ अम्बिकायै स्वाहा इदम् अम्बिकायै न मम।

अनेन हवनेन गणेशाम्बिके प्रीयेताम्।

देवीयागे – १. ॐप्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम। २. ॐ ह्रीं महाकाल्यै स्वाहा। इदं महाकाल्यै न मम। ३. ह्रीं महालक्ष्मै स्वाहा। इदं महालक्ष्म्यै न मम। ४. ह्रीं महासरस्वत्यै स्वाहा। इदं महासरस्वत्यै न मम।

२ गणाधिपतये देया प्रथमा तु वराहुतिः। अन्यथा विफलं कर्म भवतीह न संशयः॥ **(हेमाद्रौ देवीपुराणे च)**

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ग्रहमण्डल-देवतानां स्वाहाकारः

(मन्त्रभागः पूजाप्रकरणे द्रष्टव्यः)

१. ॐ सूर्याय स्वाहा। २. ॐ चन्द्रमसे स्वाहा। ३. ॐ भौमाय स्वाहा।
४. ॐ बुधाय स्वाहा। ५. ॐ गुरवे स्वाहा। ६. ॐ शुक्राय स्वाहा।
७. ॐ शनैश्चराय स्वाहा। ८. ॐ राहवे स्वाहा। ९. ॐ केतवे स्वाहा।
१०. ॐ ईश्वराय स्वाहा। ११. ॐ उमायै स्वाहा। १२. ॐ स्कन्दाय स्वाहा।
१३. ॐ विष्णवे स्वाहा। १४. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। १५. ॐ इन्द्राय स्वाहा।
१६. ॐ यमाय स्वाहा। १७. ॐ कालाय स्वाहा। १८. ॐ चित्रगुप्ताय स्वाहा।
१९. ॐ अग्नये स्वाहा। २०. ॐ अद्भ्यः स्वाहा। २१. ॐ धरायै स्वाहा।
२२. ॐ विष्णवे स्वाहा। २३. ॐ इन्द्राय स्वाहा। २४. ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा।
२५. ॐ प्रजापतये स्वाहा। २६. ॐ नागेभ्यः स्वाहा। २७. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।
२८. ॐ गणपतये स्वाहा। २९. ॐ दुर्गायै स्वाहा। ३०. ॐ वायवे स्वाहा।
३१. ॐ आकाशाय स्वाहा। ३२. ॐ अश्विभ्यां स्वाहा। ३३. ॐ क्षेत्रपालाय स्वाहा।
३४. ॐ वास्तोष्पतये स्वाहा। ३५. ॐ इन्द्राय स्वाहा। ३६. ॐ अग्नये स्वाहा।
३७. ॐ यमाय स्वाहा। ३८. ॐ निर्ऋतये स्वाहा। ३९. ॐ वरुणाय स्वाहा।
४०. ॐ वायवे स्वाहा। ४१. ॐ सोमाय स्वाहा। ४२. ॐ ईशानाय स्वाहा।
४३ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। ४४. अनन्ताय स्वाहा।
४५. ॐ असंख्यातरुद्रेभ्यः स्वाहा।

अनेन हवनेन ग्रहमण्डलस्थदेवताभिः सह असंख्यातरुद्राः प्रीयन्ताम् न मम।

---***---

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गौर्यादिमातृका-हवनम्

(मन्त्रभाग पूजाप्रकरणे द्रष्टव्यः)

१. ॐ गणपतये स्वाहा। २. ॐ गौर्यै स्वाहा। ३. ॐ पद्मायै स्वाहा।
४. ॐ शच्यै स्वाहा। ५. ॐ मेधायै स्वाहा। ६. ॐ सावित्र्यै स्वाहा।
७. ॐ विजयायै स्वाहा। ८. ॐ जयायै स्वाहा। ९. ॐ देवसेनायै स्वाहा।
१०. ॐ स्वधायै स्वाहा। ११. ॐ स्वाहायै स्वाहा। १२. ॐ मातृभ्यः स्वाहा।
१३. ॐ लोकमातृभ्यः स्वाहा। १४. ॐ धृत्यै स्वाहा। १५. ॐ पुष्ट्यै स्वाहा।
१६. ॐ तुष्ट्यै स्वाहा। १७. ॐ आत्मकुलदेव्यै स्वाहा।

सप्तघृतमातृकाहोमः

१. ॐ श्रियै स्वाहा। २. ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा। ३. ॐ धृत्यै स्वाहा।
४. ॐ मेधायै स्वाहा। ५. ॐ स्वाहायै स्वाहा। ६. ॐ प्रज्ञायै स्वाहा।
७. ॐ सरस्वत्यै स्वाहा।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वास्तु-मण्डलस्थदेवतानां होमः

(मन्त्रभागः पूजाप्रकरणे द्रष्टव्यः)

१. ॐ शिखिने स्वाहा। २. ॐ पर्जन्याय स्वाहा।

३.ॐ जयन्ताय स्वाहा। ४. ॐ कुलिशायुधाय स्वाहा।

५. ॐ सूर्याय स्वाहा। ६. ॐ सत्याय स्वाहा।

७. ॐ भृशाय स्वाहा। ८. ॐ आकाशाय स्वाहा।

९. ॐ वायवे स्वाहा। १०. ॐ पूष्णे स्वाहा।

११. ॐ वितथाय स्वाहा। १२. ॐ गृहक्षताय स्वाहा।

१३. ॐ यमाय स्वाहा। १४. ॐ गन्धर्वाय स्वाहा।

१५. ॐ भृङ्गराजाय स्वाहा। १६. ॐ मृगाय स्वाहा।

१७. ॐ पितृभ्यः स्वाहा। १८. ॐ दौवारिकाय स्वाहा।

१९. ॐ सुग्रीवाय स्वाहा। २०. ॐ पुष्पदन्ताय स्वाहा।

२१. ॐ वरुणाय स्वाहा। २२. ॐ असुराय स्वाहा।

२३. ॐ शोषाय स्वाहा। २४ ॐ पापाय स्वाहा।

२५. ॐ रोगाय स्वाहा। २६. ॐ अहिर्बुध्न्याय स्वाहा।

२७. ॐ मुख्याय स्वाहा। २८. ॐ भल्लाटाय स्वाहा।

२९. ॐ सोमाय स्वाहा। ३०. ॐ नागेभ्यः स्वाहा।

३१. ॐ अदितये स्वाहा। ३२. ॐ दितये स्वाहा।

३३. ॐ अद्भ्यः स्वाहा। ३४. ॐ सवित्रे स्वाहा।

३५. ॐ जयाय स्वाहा। ३६. ॐ रुद्राय स्वाहा।

३७. ॐ अर्यम्णे स्वाहा। ३८. ॐ सवित्रे स्वाहा।

३९. ॐ विवस्वते स्वाहा। ४०. ॐ विबुधाधिपाय स्वाहा।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

४१. ॐ मित्राय स्वाहा।
४२. ॐ राजयक्ष्मणे स्वाहा।
४३. ॐ पृथ्वीधराय स्वाहा।
४४. ॐ आपवत्साय स्वाहा।
४५. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।
४६. ॐ चरक्यै स्वाहा।
४७. ॐ विदार्यै स्वाहा।
४८. ॐ पूतनायै स्वाहा।
४९. ॐ पापराक्षस्यै स्वाहा।
५०. ॐ स्कन्दाय स्वाहा।
५१. ॐ अर्यम्णे स्वाहा।
५२. ॐ जृम्भकाय स्वाहा।
५३. ॐ पिलिपिच्छाय स्वाहा।
५४. ॐ इन्द्राय स्वाहा।
५५. ॐ अग्नये स्वाहा।
५६. ॐ यमाय स्वाहा।
५७. ॐ निर्ऋत्यै स्वाहा।
५८. ॐ वरुणाय स्वाहा।
५९. ॐ वायवे स्वाहा।
६०. ॐ सोमाय स्वाहा।
६१. ॐ ईश्वराय स्वाहा।
६१. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।
६२. ॐ अनन्ताय स्वाहा।

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानी ह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमीवो भवानः। यत्त्वे महे प्प्रतितन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे। ॐ वास्तोष्पतये स्वाहा।

अनेन हवनेन वास्तुमण्डलस्थदेवताः प्रीयन्ताम्।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

योगिनी-मण्डलस्थ-देवतानां होमः

(मन्त्रभागः पूजाप्रकरणे द्रष्टव्यः)

१. ॐ महाकाल्यै स्वाहा।
२. ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा।
३. ॐ महासरस्वत्यै स्वाहा।
४. ॐ दिव्ययोगिन्यै स्वाहा।
५. ॐ महायोगिन्यै स्वाहा।
६. ॐ सिद्धयोगिन्यै स्वाहा।
७. ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा।
८. ॐ प्रेताक्ष्यै स्वाहा।
९. ॐ डाकिन्यै स्वाहा।
१०. ॐ काल्यै स्वाहा।
११. ॐ कालरात्र्यै स्वाहा।
१२. ॐ निशाकर्यै स्वाहा।
१३. ॐ हुँकार्यै स्वाहा।
१४. ॐ सिद्धिवैतालिकायै स्वाहा।
१५. ॐ ह्रींकार्यै स्वाहा।
१६. ॐ भूतडामरायै स्वाहा।
१७. ॐ ऊर्ध्वकेश्यै स्वाहा।
१८. ॐ विरूपाक्ष्यै स्वाहा।
१९. ॐ शुष्कांग्यै स्वाहा।
२०. ॐ नरभोजन्यै स्वाहा।
२१. ॐ फेत्कार्यै स्वाहा।
२२. ॐ वीरभद्रायै स्वाहा।
२३. ॐ धूम्राक्ष्यै स्वाहा।
२४. ॐ कलहप्रियायै स्वाहा।
२५. ॐ राक्षस्यै स्वाहा।
२६. ॐ घोररक्ताक्ष्यै स्वाहा।
२७. ॐ विशालाक्ष्यै स्वाहा।
२८. ॐ कौमार्यै स्वाहा।
२९. ॐ चण्ड्यै स्वाहा।
३०. ॐ वाराह्यै स्वाहा।
३१. ॐ मुण्डधारिण्यै स्वाहा।
३२. ॐ भैरव्यै स्वाहा।
३३. ॐ वीरायै स्वाहा।
३४. ॐ भयङ्कर्यै स्वाहा।
३५. ॐ वज्रधारिण्यै स्वाहा।
३६. ॐ क्रोधायै स्वाहा।
३७. ॐ दुर्मुख्यै स्वाहा।
३८. ॐ प्रेतवाहिन्यै स्वाहा।
३९. ॐ कर्कटायै स्वाहा।
४०. ॐ दीर्घलम्बोष्ठ्यै स्वाहा।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

४१. ॐ मालिन्यै स्वाहा।
४२. ॐ मंत्रयोगिन्यै स्वाहा।
४३. ॐ कालाग्न्यै स्वाहा।
४४. ॐ मोहिन्यै स्वाहा।
४५. ॐ चक्रायै स्वाहा।
४६. ॐ कुण्डलिन्यै स्वाहा।
४७. ॐ बालुकायै स्वाहा।
४८. ॐ कौबेर्यै स्वाहा।
४९. ॐ यमदूत्यै स्वाहा।
५०. ॐ करालिन्यै स्वाहा।
५१. ॐ कौशिक्यै स्वाहा।
५२. ॐ यक्षिण्यै स्वाहा।
५३. ॐ भक्षिण्यै स्वाहा।
५४. ॐ कौमार्यै स्वाहा।
५५. ॐ मंत्रवाहिन्यै स्वाहा।
५६. ॐ विशालायै स्वाहा।
५७. ॐ कार्मुक्यै स्वाहा।
५८. ॐ व्याघ्र्यै स्वाहा।
५९. ॐ महाराक्षस्यै स्वाहा।
६०. ॐ प्रेतभक्षिण्यै स्वाहा!
६१. ॐ धूर्जट्यै स्वाहा।
६२. ॐ विकटायै स्वाहा।
६३. ॐ घोररूपायै स्वाहा।
६४. ॐ कपालिकायै स्वाहा।
६५. ॐ निकलायै स्वाहा।
६६. ॐ अमलायै स्वाहा।
६७. ॐ सिद्धिप्रदायै स्वाहा।
६८. ॐ जयायै स्वाहा।
६९. ॐ विजयायै स्वाहा।
७०. ॐ अजितायै स्वाहा।
७१. ॐ अपराजितायै स्वाहा।
७२. ॐ क्षेमकर्त्र्यै स्वाहा।
७३. ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा।
७४. ॐ वैष्णव्यै स्वाहा।
७५. ॐ पार्वत्यै स्वाहा।

अनेन हवनेन महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती
सहिता दिव्यादिचतुःषष्टियोगिन्यः प्रीयन्ताम्।।

---***---

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

क्षेत्रपाल-मण्डलस्थ-देवतानां होमः

(मन्त्रभागः पूजाप्रकरणे द्रष्टव्यः)

१. ॐ अजराय स्वाहा।	२. ॐ व्यापकाय स्वाहा।
३. ॐ इन्द्रचौराय स्वाहा।	४. ॐ इन्द्रमूर्त्तये स्वाहा।
५. ॐ उक्षाय स्वाहा।	६. ॐ कूष्माण्डाय स्वाहा।
७. ॐ वरुणाय स्वाहा।	८. ॐ बटुकाय स्वाहा।
९. ॐ विमुक्ताय स्वाहा।	१०. ॐ लिप्तकाय स्वाहा।
११. ॐ लीलाकाय स्वाहा।	१२. ॐ एकदंष्ट्राय स्वाहा।
१३. ॐ ऐरावताय स्वाहा।	१४. ॐ ओषधीघ्नाय स्वाहा।
१५. ॐ बन्धनाय स्वाहा।	१६. ॐ दिव्यकायाय स्वाहा।
१७. ॐ कम्बलाय स्वाहा।	१८. ॐ भीषणाय स्वाहा।
१९. ॐ गवये स्वाहा।	२०. ॐ घण्टाभिधाय स्वाहा।
२१. ॐ व्यालाय स्वाहा।	२२. ॐ अणुस्वरूपाय स्वाहा।
२३. ॐ चन्द्रवारुणाय स्वाहा।	२४. ॐ पटाटोपाय स्वाहा।
२५. ॐ जटालाय स्वाहा।	२६. ॐ क्रतवे स्वाहा।
२७. ॐ घण्टेश्वराय स्वाहा।	२८. ॐ विटङ्काय स्वाहा।
२९. ॐ मणिमानाय स्वाहा।	३०. ॐ गणबन्धाय स्वाहा।
३१. ॐ डामराय स्वाहा।	३२. ॐ ढुण्ढिकर्णाय स्वाहा।
३३. ॐ स्थविराय स्वाहा।	३४. ॐ दन्तुराय स्वाहा।
३५. ॐ धनदाय स्वाहा।	३६. ॐ नागकर्णाय स्वाहा।
३७. ॐ महाबलाय स्वाहा।	३८. ॐ फेत्काराय स्वाहा।
३९. ॐ चीकराय स्वाहा।	४०. ॐ सिंहाय स्वाहा।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

४१. ॐ मृगाय स्वाहा। ४२. ॐ यक्षप्रियाय स्वाहा।

४३. ॐ मेघवाहनाय स्वाहा। ४४. ॐ तीक्ष्णोष्ठाय स्वाहा।

४५. ॐ अनलाय स्वाहा। ४६. ॐ शुक्लतुण्डाय स्वाहा।

४७. ॐ सुधालापाय स्वाहा। ४८. ॐ बर्बरकाय स्वाहा।

४९. ॐ पवनाय स्वाहा। ५०. ॐ पावनाय स्वाहा।

ॐ नहिस्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः।
एमेनमवृधन्नमृता ऽअमर्त्यंव्वैश्वानरक्षैत्रजित्त्यायदेवाः।

ॐ क्षेत्राधिशायस्वाहा।

अनेन हवनेन क्षेत्रपालमण्डलस्थदेवताः प्रीयन्ताम् न मम।

---***---

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सर्वतोभद्रमण्डलस्थ-देवतानां होमः

(मन्त्रभागः पूजाप्रकरणे द्रष्टव्यः)

१. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। २. ॐ सोमाय स्वाहा।
३. ॐ ईशानाय स्वाहा। ४. ॐ इन्द्राय स्वाहा।
५. ॐ अग्नये स्वाहा। ६. ॐ यमाय स्वाहा।
७. ॐ निर्ऋतये स्वाहा। ८. ॐ वरुणाय स्वाहा।
९. ॐ वायवे स्वाहा। १०. ॐ अष्टवसुभ्यः स्वाहा।
११. ॐ एकादशरुद्रेभ्यः स्वाहा। १२. ॐ द्वादशादित्येभ्यः स्वाहा।
१३. ॐ अश्विभ्यां स्वाहा। १४. ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा।
१५. ॐ सप्तयक्षेभ्यः स्वाहा। १६. ॐ अष्टकुलनागेभ्यः स्वाहा।
१७. ॐ गंधर्वाप्सरोभ्यः स्वाहा। १८. ॐ स्कन्दाय स्वाहा।
१९. ॐ नन्दिने स्वाहा। २०. ॐ शूलकालाभ्यां स्वाहा।
२१. ॐ दक्षादिसप्तगणेभ्यः स्वाहा। २२. ॐ दुर्गायै स्वाहा।
२३. ॐ विष्णवे स्वाहा। २४. ॐ स्वधायै स्वाहा।
२५. ॐ मृत्युरोगाभ्यां स्वाहा। २६. ॐ गणपतये स्वाहा।
२७. ॐ अद्भ्यः स्वाहा। २८. ॐ मरुद्भ्यः स्वाहा।
२९. ॐ पृथिव्यै स्वाहा। ३०. ॐ गंगादिनदीभ्यः स्वाहा।
३१. ॐ सप्तसागरेभ्यः स्वाहा। ३२. ॐ मेरवे स्वाहा।
३३. ॐ गदायै स्वाहा। ३४. ॐ त्रिशूलाय स्वाहा।
३५. ॐ वज्राय स्वाहा। ३६. ॐ शक्तये स्वाहा।
३७. ॐ दण्डाय स्वाहा। ३८. ॐ खड्गाय स्वाहा।
३९. ॐ पाशाय स्वाहा। ४०. ॐ अंकुशाय स्वाहा।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

४१. ॐ गौतमाय स्वाहा।
४२. ॐ भरद्वाजाय स्वाहा।
४३. ॐ विश्वामित्राय स्वाहा।
४४. ॐ कश्यपाय स्वाहा।
४५. ॐ जगदग्नये स्वाहा।
४६. ॐ वशिष्ठाय स्वाहा।
४७. ॐ अत्रये स्वाहा।
४८. ॐ अरुन्धत्यै स्वाहा।
४९. ॐ ऐन्द्र्यै स्वाहा।
५०. ॐ कौमार्यै स्वाहा।
५१. ॐ ब्राह्म्यै स्वाहा।
५२. ॐ वाराह्यै स्वाहा।
५३. ॐ चामुण्डायै स्वाहा।
५४. ॐ वैष्णव्यै स्वाहा।
५५. ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा।
५६. ॐ वैनायक्यै स्वाहा।

अनेन हवनेन ब्रह्मादिसर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताः प्रीयन्ताम्।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गौरीतिलकमण्डलस्थदेवतानां होमः

१. ॐ महाविष्णवे स्वाहा
२. ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा
३. ॐ महेश्वराय स्वाहा
४. ॐ महामायायै स्वाहा
५. ॐ ऋग्वेदाय स्वाहा
६. ॐ यजुर्वेदाय स्वाहा
७. ॐ सामवेदाय स्वाहा
८. ॐ अथर्ववेदाय स्वाहा
९. ॐ अद्भ्यः स्वाहा
१०. ॐ जलोद्भवाय स्वाहा
११. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा
१२. ॐ प्रजापतये स्वाहा
१३. ॐ शिवाय स्वाहा
१४. ॐ अनन्ताय स्वाहा
१५. ॐ परमेष्ठिने स्वाहा
१६. ॐ धात्रे स्वाहा
१७. ॐ विधात्रे स्वाहा
१८. ॐ अर्य्यम्णे स्वाहा
१९. ॐ मित्राय स्वाहा
२०. ॐ वरुणाय स्वाहा
२१. ॐ अंशुमते स्वाहा
२२. ॐ भगाय स्वाहा
२३. ॐ इन्द्राय स्वाहा
२४. ॐ विवस्वते स्वाहा
२५. ॐ पूष्णे स्वाहा
२६. ॐ पर्जन्याय स्वाहा
२७. ॐ त्वष्ट्रे स्वाहा
२८. ॐ दक्षयज्ञाय स्वाहा
२९. ॐ देववसवे स्वाहा
३०. ॐ महासुताय स्वाहा
३१. ॐ सुधर्मणे स्वाहा
३२. ॐ शतपदे स्वाहा
३३. ॐ महाबाहवे स्वाहा
३४. ॐ वपुष्मते स्वाहा
३५. ॐ अनन्ताय स्वाहा
३६. ॐ महेरणाय स्वाहा
३७. ॐ विश्वावसवे स्वाहा
३८. ॐ सुपर्वणे स्वाहा
३९. ॐ विष्टराय स्वाहा
४०. ॐ रुद्रदेवतायै स्वाहा
४१. ॐ ध्रुवाय स्वाहा
४२. ॐ धरायै स्वाहा

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

४३. ॐ सोमाय स्वाहा
४४. ॐ आपवत्साय स्वाहा
४५. ॐ नलाय स्वाहा
४६. ॐ अनिलाय स्वाहा
४७. ॐ प्रत्यूषाय स्वाहा
४८. ॐ प्रभासाय स्वाहा
४९. ॐ आवर्त्ताय स्वाहा
५०. ॐ सावर्त्ताय स्वाहा
५१. ॐ द्रोणाय स्वाहा
५२. ॐ पुष्कराय स्वाहा
५३. ॐ ह्रीं कार्यै स्वाहा
५४. ॐ ह्रियै स्वाहा
५५. ॐ कात्यायन्यै स्वाहा
५६. ॐ चामुण्डायै स्वाहा
५७. ॐ महादिव्यायै स्वाहा
५८. ॐ महाशब्दायै स्वाहा
५९. ॐ सिद्धिदायै स्वाहा
६०. ॐ ऐं स्वाहा
६१. ॐ श्रीं श्रियै स्वाहा
६२. ॐ ह्रीं ह्रियै स्वाहा
६३. ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा
६४. ॐ श्रियै स्वाहा
६५. ॐ सुघनायै स्वाहा
६६. ॐ मेधायै स्वाहा
६७. ॐ प्रज्ञायै स्वाहा
६८. ॐ मत्यै स्वाहा
६९. ॐ स्वाहायै स्वाहा
७०. ॐ सरस्वत्यै स्वाहा
७१. ॐ गौर्यै स्वाहा
७२. ॐ पद्मायै स्वाहा
७३. ॐ शच्यै स्वाहा
७४. ॐ सुमेधायै स्वाहा
७५. ॐ सावित्र्यै स्वाहा
७६. ॐ विजयायै स्वाहा
७७. ॐ देवसेनायै स्वाहा
७८. ॐ स्वाहायै स्वाहा
७९. ॐ स्वधायै स्वाहा
८०. ॐ मात्रे स्वाहा
८१. ॐ गायत्र्यै स्वाहा
८२. ॐ लोकमात्र्यै स्वाहा
८३. ॐ धृत्यै स्वाहा
८४. ॐ पुष्ट्यै स्वाहा
८५. ॐ तुष्ट्यै स्वाहा
८६. ॐ आत्मकुलदेवतायै स्वाहा
८७. ॐ गणेश्वर्यै स्वाहा
८८. ॐ कुलमात्रे स्वाहा

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

८९. ॐ शान्त्यै स्वाहा
९०. ॐ जयन्त्यै स्वाहा
९१. ॐ मङ्गलायै स्वाहा
९२. ॐ काल्यै स्वाहा
९३. ॐ भद्रकाल्यै स्वाहा
९४. ॐ कपालिन्यै स्वाहा
९५. ॐ दुर्गायै स्वाहा
९६. ॐ क्षमायै स्वाहा
९७. ॐ शिवायै स्वाहा
९८. ॐ धात्र्यै स्वाहा
९९. ॐ स्वाहास्वधाभ्यां स्वाहा
१००. ॐ दीप्यमानायै स्वाहा
१०१. ॐ दीप्तायै स्वाहा
१०२. ॐ सूक्ष्मायै स्वाहा
१०३. ॐ विभूत्यै स्वाहा
१०४. ॐ विमलायै स्वाहा
१०५. ॐ परायै स्वाहा
१०६. ॐ अमोघायै स्वाहा
१०७. ॐ विधूतायै स्वाहा
१०८. ॐ सर्वतोमुख्यै स्वाहा
१०९. ॐ आनन्दायै स्वाहा
११०. ॐ नन्दिन्यै स्वाहा
१११. ॐ शक्त्यै स्वाहा
११२. ॐ महासूक्ष्मायै स्वाहा
११३. ॐ करालिन्यै स्वाहा
११४. ॐ भारत्यै स्वाहा
११५. ॐ ज्योतिषमत्यै स्वाहा
११६. ॐ ब्राह्म्यै स्वाहा
११७. ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा
११८. ॐ कौमार्यै स्वाहा
११९. ॐ वैष्णव्यै स्वाहा
१२०. ॐ वाराह्यै स्वाहा
१२१. ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा
१२२. ॐ चण्डिकायै स्वाहा
१२३. ॐ बुद्ध्यै स्वाहा
१२४. ॐ लज्जायै स्वाहा
१२५. ॐ वपुष्मत्यै स्वाहा
१२६. ॐ शान्त्यै स्वाहा
१२७. ॐ कान्त्यै स्वाहा
१२८. ॐ रत्यै स्वाहा
१२९. ॐ प्रीत्यै स्वाहा
१३०. ॐ कीर्त्यै स्वाहा
१३१. ॐ प्रभायै स्वाहा
१३२. ॐ काम्यायै स्वाहा
१३३. ॐ कान्तायै स्वाहा
१३४. ॐ ऋद्ध्यै स्वाहा

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

१३५. ॐ दयायै स्वाहा	१३६. ॐ शिवदूत्यै स्वाहा
१३७. ॐ श्रद्धायै स्वाहा	१३८. ॐ क्षमायै स्वाहा
१३९. ॐ क्रियायै स्वाहा	१४०. ॐ विद्यायै स्वाहा
१४१. ॐ मोहिन्यै स्वाहा	१४२. ॐ यशोवत्यै स्वाहा
१४३. ॐ कृपावत्यै स्वाहा	१४४. ॐ सलिलायै स्वाहा
१४५. ॐ सुशीलायै स्वाहा	१४६. ॐ ईश्वर्यै स्वाहा
१४७. ॐ सिद्धेश्वर्यै स्वाहा	१४८. ॐ द्वैपायनाय स्वाहा
१४९. ॐ भारद्वाजाय स्वाहा	१५०. ॐ मित्राय स्वाहा
१५१. ॐ सनकाय स्वाहा	१५२. ॐ गौतमाय स्वाहा
१५३. ॐ सुमन्तवे स्वाहा	१५४. ॐ त्वष्ट्रे स्वाहा
१५५. ॐ सनन्दाय स्वाहा	१५६. ॐ देवलाय स्वाहा
१५७. ॐ व्यासाय स्वाहा	१५८. ॐ ध्रुवाय स्वाहा
१५९. ॐ सनातनाय स्वाहा	१६०. ॐ वसिष्ठाय स्वाहा
१६१. ॐ च्यवनाय स्वाहा	१६२. ॐ पुष्कराय स्वाहा
१६३. ॐ सनत्कुमाराय स्वाहा	१६४. ॐ कण्वाय स्वाहा
१६५. ॐ मैत्राय स्वाहा	१६६. ॐ कवये स्वाहा
१६७. ॐ विश्वामित्राय स्वाहा	१६८. ॐ वामदेवाय स्वाहा
१६९. ॐ सुमन्ताय स्वाहा	१७०. ॐ जैमिनये स्वाहा
१७१. ॐ क्रतवे स्वाहा	१७२. ॐ पिप्पलादाय स्वाहा
१७३. ॐ पराशराय स्वाहा	१७४. ॐ गर्गाय स्वाहा
१७५. ॐ वैशंपायनाय स्वाहा	१७६. ॐ मार्कण्डेयाय स्वाहा
१७७. ॐ मृकंडाय स्वाहा	१७८. ॐ लोमशाय स्वाहा
१७९. ॐ पुलहाय स्वाहा	१८०. ॐ पुलस्त्याय स्वाहा

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

१८१. ॐ बृहस्पतये स्वाहा
१८२. ॐ जमदग्नये स्वाहा
१८३. ॐ जामदग्न्याय स्वाहा
१८४. ॐ दालभ्याय स्वाहा
१८५. ॐ गालवाय स्वाहा
१८६. ॐ याज्ञवल्क्याय स्वाहा
१८७. ॐ दुर्वाससे स्वाहा
१८८. ॐ सौभरये स्वाहा
१८९. ॐ जाबालये स्वाहा
१९०. ॐ वाल्मीकये स्वाहा
१९१. ॐ बह्वृचाय स्वाहा
१९२. ॐ इन्द्रप्रमितये स्वाहा
१९३. ॐ देवमित्राय स्वाहा
१९४. ॐ जाजलये स्वाहा
१९५. ॐ शाकल्याय स्वाहा
१९६. ॐ मुद्गलाय स्वाहा
१९७. ॐ जातुकर्ण्याय स्वाहा
१९८. ॐ बलाकाय स्वाहा
१९९. ॐ कृपाचार्याय स्वाहा
२००. ॐ सुकर्मणे स्वाहा
२०१. ॐ कौशल्याय स्वाहा
२०२. ॐ ब्रह्माग्नये स्वाहा
२०३. ॐ गार्हष्पत्यग्नये स्वाहा
२०४. ॐ ईश्वराग्नये स्वाहा
२०५. ॐ दक्षिणाग्नये स्वाहा
२०६. ॐ वैष्णवाग्नये स्वाहा
२०७. ॐ आहवनीयाग्नये स्वाहा
२०८. ॐ सप्तजिह्वाग्नये स्वाहा
२०९. ॐ इध्मजिह्वाग्नये स्वाहा
२१०. ॐ प्रवर्ग्याग्नये स्वाहा
२११. ॐ वडवाग्नये स्वाहा
२१२. ॐ जठराग्नये स्वाहा
२१३. ॐ लोकाग्नये स्वाहा
२१४. ॐ सूर्याय स्वाहा
२१५. ॐ वेदाङ्गाय स्वाहा
२१६. ॐ भानवे स्वाहा
२१७. ॐ इन्द्राय स्वाहा
२१८. ॐ खगाय स्वाहा
२१९. ॐ गभस्तिने स्वाहा
२२०. ॐ यमाय स्वाहा
२२१. ॐ अंशुमते स्वाहा
२२२. ॐ हिरण्यरेतसे स्वाहा
२२३. ॐ दिवाकराय स्वाहा
२२४. ॐ मित्राय स्वाहा
२२५. ॐ विष्णवे स्वाहा
२२६. ॐ शम्भवे स्वाहा

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

२२७. ॐ गिरीशाय स्वाहा

२२८. ॐ अजैकपदे स्वाहा

२२९. ॐ अहिर्बुध्न्याय स्वाहा

२३०. ॐ पिनाकपाणये स्वाहा

२३१. ॐ अपराजिताय स्वाहा

२३२. ॐ भुवनाधीश्वराय स्वाहा

२३३. ॐ कपालिने स्वाहा

२३४. ॐ विशांपतये स्वाहा

२३५. ॐ रुद्राय स्वाहा

२३६. ॐ वीरभद्राय स्वाहा

२३७. ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां स्वाहा

२३८. ॐ आवहाय स्वाहा

२३९. ॐ प्रवहाय स्वाहा

२४०. ॐ उद्‌वहाय स्वाहा

२४१. ॐ संवहाय स्वाहा

२४२. ॐ विवहाय स्वाहा

२४३. ॐ परिवहाय स्वाहा

२४४. ॐ धरायै स्वाहा

२४५. ॐ अद्‌भ्यः स्वाहा

२४६. ॐ अग्नये स्वाहा

२४७. ॐ वायवे स्वाहा

२४८. ॐ आकाशाय स्वाहा

२४९. ॐ हिरण्यनाभाय स्वाहा

२५०. ॐ पुष्पञ्जयाय स्वाहा

२५१. ॐ द्रोणाय स्वाहा

२५२. ॐ शृंगिणे स्वाहा

२५३. ॐ वादरायणाय स्वाहा

२५४. ॐ अगस्त्याय स्वाहा

२५५. ॐ मनवे स्वाहा

२५६. ॐ कश्यपाय स्वाहा

२५७. ॐ धौम्याय स्वाहा

२५८. ॐ भृगवे स्वाहा

२५९. ॐ वीतिहोत्राय स्वाहा

२६०. ॐ मधुच्छंदसे स्वाहा

२६१. ॐ वीरसेनाय स्वाहा

२६२. ॐ कृतवृष्णवे स्वाहा

२६३. ॐ अत्रये स्वाहा

२६४. ॐ मेधातिथये स्वाहा

२६५. ॐ अरिष्टनेमये स्वाहा

२६६. ॐ अङ्गिरसाय स्वाहा

२६७. ॐ इन्द्रप्रमदाय स्वाहा

२६८. ॐ इध्मवाहवे स्वाहा

२६९. ॐ पिप्पलादाय स्वाहा

२७०. ॐ नारदाय स्वाहा

२७१. ॐ अरिष्टसेनाय स्वाहा

२७२. ॐ अरुणाय स्वाहा

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

२७३. ॐ कपिलाय स्वाहा
२७४. ॐ कर्दमाय स्वाहा
२७५. ॐ मरीचये स्वाहा
२७६. ॐ क्रतवे स्वाहा
२७७. ॐ प्रचेतसे स्वाहा
२७८. ॐ उत्तमाय स्वाहा
२७९. ॐ दधीचये स्वाहा
२८०. ॐ श्राद्धदेवेभ्यः स्वाहा
२८१. ॐ गणदेवेभ्यः स्वाहा
२८२. ॐ विद्याधरेभ्यः स्वाहा
२८३. ॐ अप्सरोभ्यः स्वाहा
२८४. ॐ यक्षेभ्यः स्वाहा
२८५. ॐ रक्षोभ्यः स्वाहा
२८६. ॐ गन्धर्वेभ्यः स्वाहा
२८७. ॐ पिशाचेभ्यः स्वाहा
२८८. ॐ गुह्यकेभ्यः स्वाहा
२८९. ॐ सिद्धदेवेभ्यः स्वाहा
२९०. ॐ औषधीभ्यः स्वाहा
२९१. ॐ भूतग्रामाय स्वाहा
२९२. ॐ चतुर्विधभूतग्रामाय स्वाहा।

अनेन हवनेन महाविष्ण्वादिगौरीतिलकमण्डलस्थदेवताः प्रीयन्ताम् न मम।

___***___

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पीठ-देवता-स्वाहाकारः

(ॐ ह्रीं वा सर्वत्र योजयेत्)

पं पूर्वपीठाय स्वाहा। पूं पूर्णपीठाय स्वाहा। कं कामपीठाय स्वाहा। उं उड्डुयानपीठाय स्वाहा। मां मातृपीठाय स्वाहा। जं जालन्धरपीठाय स्वाहा। कं कोल्हापुरोपपीठाय स्वाहा। पूं पूर्णगिरिपीठाय स्वाहा। सौं सौहारोपपीठाय स्वाहा।

कं कोल्हागिरिपीठाय स्वाहा। ॐ कां कामरूपीठाय स्वाहा। ॐ गुरवे स्वाहा। ॐ परमगुरवे स्वाहा। ॐ परात्परगुरवे स्वाहा। ॐ परमेष्ठिगुरवे स्वाहा। ॐ गुरुपंक्तये स्वाहा। ॐ माता पितृभ्यां स्वाहा। ॐ उपमन्युनारदसनकव्यासादिभ्यः स्वाहा। गं गणपतये स्वाहा। दुं दुर्गायै स्वाहा। सं सरस्वत्यै स्वाहा। क्षं क्षेत्रपालाय स्वाहा।

मं मण्डूकाय स्वाहा। आं आधारशक्त्यै स्वाहा। मूं मूलप्रकृत्यै स्वाहा। कं कालाग्निरुद्राय स्वाहा। आं आदिकूर्माय स्वाहा। अं अनन्ताय स्वाहा। आं आदिवराहाय स्वाहा। पं पृथिव्यै स्वाहा। अं अमृतार्णवाय स्वाहा। रं रत्नद्वीपाय स्वाहा। हं हेमगिरये स्वाहा। नं नन्दनोद्यानाय स्वाहा। कं कल्पवृक्षाय स्वाहा। मं मणिभूतलाय स्वाहा। दं दिव्यमण्डपाय स्वाहा। सं स्वर्णवेदिकायै स्वाहा। रं रत्नसिंहासनाय स्वाहा। धं धर्माय स्वाहा। ज्ञां ज्ञानाय स्वाहा। वैं वैराग्याय स्वाहा। ऐं ऐश्वर्याय स्वाहा। सं सत्त्वाय स्वाहा। प्रं प्रबोधात्मने स्वाहा। रं रजसे स्वाहा। प्रं प्रकृत्यात्मने स्वाहा। तं तमसे स्वाहा। मं मोहात्मने स्वाहा। सों सोममण्डलाय स्वाहा। सूं सूर्यमण्डलाय स्वाहा। वं वह्निमण्डलाय स्वाहा। मां मायातत्त्वाय स्वाहा। विं विद्यातत्त्वाय स्वाहा। शं शिवतत्त्वाय स्वाहा। ब्रं ब्रह्मणे स्वाहा। मं महेश्वराय स्वाहा। आं आत्मने स्वाहा। अं अन्तरात्मने स्वाहा। पं परमात्मने स्वाहा। जं जीवात्मने स्वाहा। ज्ञं ज्ञानात्मने स्वाहा। कं कन्दाय स्वाहा। नं नीलाय स्वाहा। पं पद्माय स्वाहा। मं महापद्माय स्वाहा। रं रत्नेभ्यः स्वाहा। कें केसरेभ्यः स्वाहा। कं कर्णिकायै स्वाहा।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नवशक्ति-स्वाहाकारः

(ह्रीं सवत्र योजयेत्)

नन्दायै स्वाहा। भगवत्यै वाहा। रक्तदन्तिकायै स्वाहा। शाकाम्भर्यै स्वाहा। दुर्गायै स्वाहा। भीमायै स्वाहा। कालिकायै स्वाहा। भ्रामर्यै स्वाहा। शिवदूत्यै स्वाहा। (वरुणाय स्वाहा)।

आवरण देवतानां हवनम्

दुर्गायै स्वाहा। महाकाल्यै स्वाहा। महालक्ष्म्यै स्वाहा। महासरस्वत्यै स्वाहा। गुरवे स्वाहा। परमगुरवे स्वाहा। परात्परगुरवे स्वाहा। परमेष्ठि गुरवे स्वाहा। ऐं हृदयशक्त्यै स्वाहा। ह्रीं शिरः शक्त्यै स्वाहा। क्लीं शिखाशक्त्यै स्वाहा। चामुण्डायै कवचशक्त्यै स्वाहा। विच्चे नेत्रशक्त्यै स्वाहा। ॐ स्वरया सह विधात्रे स्वाहा। ॐ श्रिया सह विष्णवे स्वाहा। ॐ उमया सह शिवाय स्वाहा। क्षुं सिंहाय स्वाहा। हुँ महिषाय स्वाहा। ऐं नन्दजायै स्वाहा। ह्रीं रक्तदन्तिकायै स्वाहा। क्लीं शाकम्भर्य्यै स्वाहा। दुं दुर्गायै स्वाहा। हुँ भीमायै स्वाहा। ह्रीं भ्रामर्यै स्वाहा। ऐं ब्राह्म्यै स्वाहा। ह्रीं माहेश्वर्यै स्वाहा। क्लीं कौमार्यै स्वाहा। ह्रीं वैष्णव्यै स्वाहा। हूं वाराह्यै स्वाहा। क्षौं नारसिंह्यै स्वाहा। लं ऐन्द्रयै स्वाहा। स्फ्रें चामुण्डायै स्वाहा। ह्रीं महालक्ष्म्यै स्वाहा। विं विष्णुमायायै स्वाहा। चें चेतनायै स्वाहा। बुं बुद्ध्यै स्वाहा। निं निद्रायै स्वाहा। क्षुं क्षुधायै स्वाहा। छां छायायै स्वाहा। शं शक्त्यै स्वाहा। तृं तृष्णायै स्वाहा। क्षां क्षान्त्यै स्वाहा। जां जात्यै स्वाहा। लं लज्जायै स्वाहा। शां शान्त्यै स्वाहा। श्रं श्रद्धायै स्वाहा। कां कान्त्यै स्वाहा। लं लक्ष्म्यै स्वाहा। धृं धृत्यै स्वाहा। वृँ वृत्यै स्वाहा। श्रुं श्रुत्यै स्वाहा। स्मृं स्मृत्यै स्वाहा। दं दयायै स्वाहा। तुं तुष्ट्यै स्वाहा। पुं पुष्ट्यै स्वाहा। मां मातृभ्यः स्वाहा। भ्रां भ्रान्त्यै स्वाहा। गं गणपतये स्वाहा। क्षं क्षेत्रपालाय स्वाहा। वं बटुकाय स्वाहा। यां योगिनीभ्यः स्वाहा। लं इन्द्राय स्वाहा। रं अग्नये स्वाहा। यं यमाय स्वाहा। क्षं निर्ऋतये स्वाहा। वं वरुणाय स्वाहा। यं वायवे स्वाहा। सं सोमाय स्वाहा। ईं ईश्वराय स्वाहा। ब्रं ब्रह्मणे स्वाहा। ह्रीं अनन्ताय स्वाहा। वं वज्राय स्वाहा। शं शक्त्यै स्वाहा। दं दण्डाय स्वाहा। खं खड्गाय स्वाहा। पं पाशाय स्वाहा। अं अंकुशाय स्वाहा। गं गदायै स्वाहा। त्रिं त्रिशूलाय स्वाहा। पं पद्मायै स्वाहा। चं चक्रायै स्वाहा। मूलेन० कादम्बर्यै स्वाहा। मूलेन० उल्कायै स्वाहा। मूलेन० कराल्यै स्वाहा। मूलेन० रक्ताक्ष्यै स्वाहा। मूलेन० श्वेताक्ष्यै स्वाहा। मूलेन० हरिताक्ष्यै स्वाहा। मूलेन० यक्षिण्यै स्वाहा। मूलेन० काल्यै स्वाहा। मूलेन० सुरज्येष्ठायै स्वाहा। मूलेन० सर्पराज्यै स्वाहा। **अनेन हवनेन आवरणदेवताः प्रीयन्ताम् न मम।**

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

श्री बटुकभैरव-अष्टोत्तरशतनाम-हवनम्

ॐ अस्य श्री बटुकभैरवाष्टोत्तरशतनाम मंत्रस्य बृहदारण्यक ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीबटुकभैरवो देवता बं बीजं ह्रीं शक्तिः ॐ कीलकं श्री बटुकभैरवप्रीत्यर्थं पृथङ्नाम मंत्रेण हवने विनियोगः।

१. ॐ ह्रीं भैरवाय स्वाहा। २. ॐ ह्रीं भूतनाथाय स्वाहा।
३. ॐ ह्रीं भूतात्मने स्वाहा। ४. ॐ ह्रीं भूतभावनाय स्वाहा।
५. ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय स्वाहा। ६. ॐ ह्रीं क्षेत्रपालाय स्वाहा।
७. ॐ ह्रीं क्षेत्रदाय स्वाहा। ८. ॐ ह्रीं क्षत्रियाय स्वाहा।
९. ॐ ह्रीं विराजे स्वाहा। १०. ॐ ह्रीं श्मशानवासिने स्वाहा।
११. ॐ ह्रीं मांसाशिने स्वाहा। १२. ॐ ह्रीं खर्पराशिने स्वाहा।
१३. ॐ ह्रीं स्मरान्तकाय स्वाहा। १४. ॐ ह्रीं रक्तपाय स्वाहा।
१५. ॐ ह्रीं पानपाय स्वाहा। १६. ॐ ह्रीं सिद्धाय स्वाहा।
१७. ॐ ह्रीं सिद्धिदाय स्वाहा। १८. ॐ ह्रीं सिद्धसेविताय स्वाहा।
१९. ॐ ह्रीं कंकालाय स्वाहा। २०. ॐ ह्रीं कालशमनाय स्वाहा।
२१. ॐ ह्रीं कलाकाष्ठातनवे स्वाहा। २२. ॐ ह्रीं कवये स्वाहा।
२३. ॐ ह्रीं त्रिनेत्राय स्वाहा। २४. ॐ ह्रीं बहुनेत्राय स्वाहा।
२५. ॐ ह्रीं पिंगललोचनाय स्वाहा। २६. ॐ ह्रीं शूलपाणिने स्वाहा।
२७. ॐ ह्रीं खड्गपाणिने स्वाहा। २८. ॐ ह्रीं कङ्कालिने स्वाहा।
२९. ॐ ह्रीं धूम्रलोचनाय स्वाहा। ३०. ॐ ह्रीं अभीरवे स्वाहा।
३१. ॐ ह्रीं भैरवीनाथाय स्वाहा। ३२. ॐ ह्रीं भूतपाय स्वाहा।
३३. ॐ ह्रीं योगिनीपतये स्वाहा। ३४. ॐ ह्रीं धनदाय स्वाहा।
३५. ॐ ह्रीं अधनहारिणे स्वाहा। ३६. ॐ ह्रीं धनवते स्वाहा।
३७. ॐ ह्रीं प्रतिभानवते स्वाहा। ३८. ॐ ह्रीं नागहाराय स्वाहा।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

३९. ॐ ह्रीं नागपाशाय स्वाहा।
४०. ॐ ह्रीं व्योमकेशाय स्वाहा।
४१. ॐ ह्रीं कपालभृते स्वाहा।
४२. ॐ ह्रीं कालाय स्वाहा।
४३. ॐ ह्रीं कपालमालिने स्वाहा।
४४. ॐ ह्रीं कमनीयाय स्वाहा।
४५. ॐ ह्रीं कलानिधये स्वाहा।
४६. ॐ ह्रीं त्रिलोचनाय स्वाहा।
४७. ॐ ह्रीं ज्वलन्नेत्राय स्वाहा।
४८. ॐ ह्रीं त्रिशिखिने स्वाहा।
४९. ॐ ह्रीं त्रिलोकपाय स्वाहा।
५०. ॐ ह्रीं त्रिनेत्रतनयाय स्वाहा।
५१. ॐ ह्रीं डिम्भशान्ताय स्वाहा।
५२. ॐ ह्रीं शांतजनप्रियाय स्वाहा।
५३. ॐ ह्रीं बटुकाय स्वाहा।
५४. ॐ ह्रीं बहुवेषाय स्वाहा।
५५. ॐ ह्रीं खट्वाङ्गधारकाय स्वाहा।
५६. ॐ ह्रीं भूताध्यक्षाय स्वाहा।
५७. ॐ ह्रीं पशुपतये स्वाहा।
५८. ॐ ह्रीं भिक्षुकाय स्वाहा।
५९. ॐ ह्रीं परिचारकाय स्वाहा।
६०. ॐ ह्रीं धूर्ताय स्वाहा।
६१. ॐ ह्रीं दिगम्बराय स्वाहा।
६२. ॐ ह्रीं शूराय स्वाहा।
६३. ॐ ह्रीं हरिणाय स्वाहा।
६४. ॐ ह्रीं पांडुलोचनाय स्वाहा।
६५. ॐ ह्रीं प्रशान्ताय स्वाहा।
६६. ॐ ह्रीं शान्तिदाय स्वाहा।
६७. ॐ ह्रीं शुद्धाय स्वाहा।
६८. ॐ ह्रीं शंकरप्रियबान्धवाय स्वाहा।
६९. ॐ ह्रीं अष्टमूर्तये स्वाहा।
७०. ॐ ह्रीं निधीशाय स्वाहा।
७१. ॐ ह्रीं ज्ञानचक्षुषे स्वाहा।
७२. ॐ ह्रीं तपोमयाय स्वाहा।
७३. ॐ ह्रीं अष्टाधाराय स्वाहा।
७४. ॐ ह्रीं षडाधाराय स्वाहा।
७५. ॐ ह्रीं सर्पयुक्ताय स्वाहा।
७६. ॐ ह्रीं शिखिसखाय स्वाहा।
७७. ॐ ह्रीं भूधराय स्वाहा।
७८. ॐ ह्रीं भूधराधीशाय स्वाहा।
७९. ॐ ह्रीं भूपतये स्वाहा।
८०. ॐ ह्रीं भूधरात्मजाय स्वाहा।
८१. ॐ ह्रीं कंकालधारिणे स्वाहा।
८२. ॐ ह्रीं मुण्डिने स्वाहा।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

८३. ॐ ह्लीं नागयज्ञोपवीतिने स्वाहा। ८४. ॐ ह्लीं जृम्भकाय स्वाहा।

८५. ॐ ह्लीं मोहनाय स्वाहा। ८६. ॐ ह्लीं स्तम्भिने स्वाहा।

८७. ॐ ह्लीं मारणाय स्वाहा। ८८. ॐ ह्लीं क्षोभणाय स्वाहा।

८९. ॐ ह्लीं शुद्धनीलांजनप्रख्याय स्वाहा।

९०. ॐ ह्लीं दैत्यघ्ने स्वाहा। ९१. ॐ ह्लीं मुण्डभूषिताय स्वाहा।

९२. ॐ ह्लीं बलिभुजे स्वाहा। ९३. ॐ ह्लीं वलिभुङ्नाथाय स्वाहा।

९४. ॐ ह्लीं बालाय स्वाहा। ९५. ॐ ह्लीं अबालपराक्रमाय स्वाहा।

९६. ॐ ह्लीं सर्वापत्तारणाय स्वाहा। ९७. ॐ ह्लीं दुर्गाय स्वाहा।

९८. ॐ ह्लीं दुष्टभूतनिषेविताय स्वाहा। ९९. ॐ ह्लीं कामिने स्वाहा।

१००. ॐ ह्लीं कलानिधिकान्ताय स्वाहा।

१०१. ॐ ह्लीं कामिनीवशकृते स्वाहा।

१०२. ॐ ह्लीं वशिने स्वाहा।

१०३. ॐ ह्लीं जगद्रक्षाकराय स्वहा।

१०४. ॐ ह्लीं अनन्ताय स्वाहा।

१०५. ॐ ह्लीं मायामन्त्रौषधीमयाय स्वाहा।

१०६. ॐ ह्लीं सर्वसिद्धिप्रदाय स्वाहा।

१०७. ॐ ह्लीं वैद्याय स्वाहा।

१०८. ॐ ह्लीं प्रभविष्णवे स्वाहा।

अनेन हवनेन बटुकनाथः प्रीयताम् न मम।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

श्रीसूक्त होम:

ॐ हिरण्यवर्णामिति पञ्चदशर्चस्य सूक्तस्य आनन्दकर्दम- चिक्लीतेन्दिरासुता: ऋषय: श्रीर्देवता आद्यास्तिस्रोऽनुष्टुभ: चतुर्थी बृहती पंचमीषष्ठ्यौ त्रिष्टुभौ ततोऽअष्टावनुष्टभ: अन्त्या प्रस्तारपङ्क्ति: श्रीर्देवताप्रीत्यर्थे पायस-घृतद्रव्यै: होमे विनियोग:।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदोम आवह ॥१॥ ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा।

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥२॥ ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा।

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मादेवी जुषताम्॥३॥ ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा।

ॐ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वयेश्रियम् ॥४॥ ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा।

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥५॥ ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा।

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्व:।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मी: ॥६॥ ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा।

ॐ उपैतु मां देवसख: कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥७॥ ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा।

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिञ्च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्॥८॥ ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥९॥ ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥ ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा।
ॐ कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥ ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा।
ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥ ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा।
ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१३॥ ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा।
ॐ आर्द्रां यष्करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१४॥ ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा।
ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्यो ऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥ ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा।
ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चञ्च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥ ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा।

अनेन हवनेन श्रीमहालक्ष्मीदेवता प्रीयतां न मम॥ जलमुत्सृजेत्।

---***---

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्विष्टकृद्धोमः

घृतपायसशाकल्यादि एकीकृत्य स्वाभिमुखं जुहुयात् ॐ[१] अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदं अग्नये स्विष्टकृते न मम। उदकस्पर्शः। आज्येन[२] नवाहुतयः ब्रह्मणाऽन्वारब्धः। ॐ भूः स्वाहा। इदं अग्नये न मम।

ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे न मम। ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय न मम।

ॐ त्वन्नोऽअग्नेव्वरुणस्यव्विद्वान् देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो व्वह्नितमः शोशुचानो व्विश्वाद्वेषा ७ सिप्रमुमुग्ध्य स्म्मत् स्वाहा। इदं अग्निवरुणाभ्यां न मम।

ॐ सत्त्वन्नो अग्ने ऽ वमोभवोतीनेदिष्ठोऽअस्याऽउषसोव्युष्टौ।

अवयक्ष्वनो व्वरुण ह रराणो वीहि मृडीक ह सुहवोनऽएधि स्वाहा। इदं अग्निवरुणाभ्यां न मम। ॐ अयाश्चाग्नेस्य नभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाऽअसि। अयानो यज्ञं वहस्यया नो धेहि भेषज ह स्वाहा। इदं अग्नये अयसे न मम।

ॐ ये ते शतं व्वरुणये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशावितता महान्तः।

तेभिर्नो ऽ अद्य सवितोतविष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्क्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे, विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।

ॐ उदुत्तमं व्वरुणपाशमस्म्मदवाधमं व्विमद्ध्यम ह श्रथाय।

अथाव्वयमादित्त्यव्रतेतवानागसो ऽ अदितये स्याम स्वाहा।

इदं वरुणाय आदित्याय अदितये च न मम ॥

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम॥

---***---

देवीयज्ञे - १. ह्रीं ब्राह्म्यै माहेश्वर्यै कौमार्यै वैष्णव्यै वाराह्यै नारसिंह्यै ऐन्द्र्यै चामुण्डायै स्विष्ट कृते स्वाहा। इदं स्विष्टकृते न मम।

२. ॐ नन्दायै स्वाहा। ह्रीं रक्तदन्तिकायै स्वाहा। ह्रीं शाकम्भर्यै स्वाहा। ह्रीं दुर्गायै स्वाहा। ह्रीं भीमायै स्वाहा। ह्री भ्रामर्यै स्वाहा। ह्रीं कालिकायै स्वाहा। ह्रीशिवदूत्यै स्वाहा। ह्री प्रजापतये स्वाहा।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दिग्पाल-पूजनंबलिदानञ्च

प्रारब्धस्य चण्डीयज्ञकर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं दिक्पाल देवतानां पूजनपूर्वकं बलिदानं करिष्ये।

पूर्वे - ॐ त्रातारमिन्देतिमंत्रेण प्राच्यां इन्द्रं गंधादिभिः संपूज्य।

आग्नेयां - ॐ तन्नोऽअग्नेति मंत्रेण आग्नेयां अग्निं गंधादिसंपूज्य।

दक्षिणे - ॐ यमायत्त्वाङ्गिरस्वतेति मंत्रेण दक्षिणे यमं गंधादिभिः संपूज्य।

नैर्ऋत्यां - ॐ असुन्वन्तेति मंत्रेण नैर्ऋत्यां निर्ऋतिं गंधादिभिः संपूज्य।

पश्चिमे - ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणेति मंत्रेण पश्चिमे वरुणं गंधादिभिः संपूज्य।

वायव्यां - ॐ आनो नियुद्भिः मंत्रेण वायव्यां वायुं गंधादिभिः संपूज्य।

उत्तरे - ॐ वय ६ सोमेति मंत्रेण उदीच्यां सोमं गंधादिभिः संपूज्ग।

ईशाने - ॐ तमीशानेति मंत्रेण ईशाने ईश्वरं गंधादिभिः संपूज्य।

ईशानपूर्वयोर्मध्ये - ॐ अस्मेरुद्देति मंत्रेण उर्ध्वं ब्रह्माणं गंधादिभिः संपूज्य।

निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये - ॐ स्योना पृथिवी० मंत्रेण अधः अनन्तं गंधादिभिः संपूज्य। भो इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यः एतान्सदीपान् दधिमाषान्नभक्तबलीन् समर्पयामि। जलमुत्सृजेत्।

प्रार्थयेत् - भो इन्द्रादिदशदिक्पालाः दिशं रक्षत बलिं भक्षत मम यजमानस्य गृहे आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः वरदा भवत। एभिर्बलिदानैः इन्द्रादयो दशदिक्पालाः प्रीयन्ताम्। जलमुत्सृजेत्।

स्थानक्षेत्रपालः -

मण्डलाद्बहि नैर्ऋत्यकोणे वा तैलपूरितं एकं [१]चतुःवा वर्तिकाप्रज्वलितदीपसंहिता माषभक्तदधि-शष्कुलीबलिं शूर्पे पात्रे वा कृत्वा-क्षेत्रपालं आवाहयेत् -

ॐ नहिस्प्पशम - विदन्नन्न्यमस्माद्वैश्वानरात्त्पुरऽएतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमर्त्त्यं वैश्यानरङ्क्षैत्रजित्त्याय देवाः। ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्राधीशाय नमः। संपूज्य। प्रार्थयेत्-नमामि क्षेत्रपालं त्वां भूतप्रेतगणाधिपः। पूजां बलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भो क्षेत्रपाल सर्वतो दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटम्बस्याभ्युदयं कुरु। मम गृहे आयुकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता फल दो वरदो भव।

अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयताम्। पश्चात्बलिं गृहात्मण्डलाद्वबहि चतुष्पदे स्थापयेत्।

स्थापितदेवतानां बलिदानम्

गणपतिः – बलिपात्रं गंधादिभिः सम्पूज्य। ॐ गणानान्त्वेति मंत्रेण गणपतये बलि समर्पयेत्। भो गणपते इमं बलि गृह्ण गृह्ण मम गृहे आयुः कर्ता शान्ति कर्त्ता पुष्टिकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता फलदो वरदो भव।

मातरः –

ॐ समक्ख्ये देव्याधियासन्दक्षिणयोरुचक्षसा। माम ऽ आयुः प्प्रमोषीर्म्मो ऽ अहन्तवव्वीरं व्विदेयतवदेवि सन्दृशि।। व वसोर्द्धारासहितसगणेशगौर्यादि मातृभ्यः इमं बलिं समर्पयामि। जलमुत्सृजेत। भो वसोर्द्धारासहितसगणेशगौर्यादिमातरः मम (यजमान) गृहे आयुः कर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः वरदा भवन्तु।

वास्तुपुरुषः –

ॐ वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान् तृस्वावेशो ऽ अनमीवो भवा नः। यत्वे महे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे। बलिपात्रं गंधादिभिः संपूजयेत्। बलिं समर्पयेत् भो शिख्यादिवास्तुमण्डलदेवतासहितवास्तुपुरुष इमंबलिं गृहाण मम गृहे सर्वविधाभ्युदयं कुरु कुरु। अनेन बलिदानेन वास्तुपुरुषः प्रीयतां न मम।

योगिन्यः –

ॐ योगेयोगे तवस्तरं व्वाजे वाजे हवामहे। सखाय ऽ इन्द्रमूतये ॥ भो चतुःषष्टियोगिनीमण्डलस्थदेव्यः बलिं गृह्णीत मम गृहे आयुः कर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शांतिकर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः वरदा भवत। अनेन बलिदानेन चतुःषष्टि योगिन्यः प्रीयन्ताम् न मम।

क्षेत्रपालः –

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद् व्वैश्वानरात्पुर ऽ एतारमग्नेः। एमेनमव्वृधन्नमृता ऽ अमर्त्त्यं व्वैश्वानरं क्षेत्रजित्त्याय देवाः। बलिं संपूजयेत्। समर्पयेत्।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रार्थयेत् –

भो अजरादिक्षेत्रपालमण्डलस्थदेवताभिः सहित स्थानक्षेत्रपाल बलिं भक्षः क्षेत्रं रक्ष मम सर्वमनोरथान् पूरय पूरय स्वाहा। अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयताम् न मम।

ग्रहमण्डलस्थदेवताः –

ॐ ग्रहा ऽ ऊर्ज्जा हुतयो व्यन्तो व्विप्राय मतिम्। तेषां व्विशिप्प्रियाणा वोहमिषमूर्ज्ज ६ समग्रभमुपयाम गृहीतोसीन्द्राय त्त्वा जुष्ट्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्त्वा जुष्ट्टतमम्। भो आदित्याद्याग्रहमण्डलस्थदेवता इमं बलिं गृह्णीत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुकर्तारः शांतिकर्तारः पुष्टिकर्तारो भवत।

सर्वतोभद्रस्थदेवाः –

ॐ ब्रह्म यज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमः सुरुचोव्वेन ऽ आवः। सबुध्न्या ऽ उपमा ऽ अस्यव्विष्ठ्ठाः सतश्चयोनि–मसतश्च व्विवः। भो ब्रह्माद्याः सर्वतोभद्रमण्डलस्थदेवताः इमं बलिं गृह्णत गृह्णत मम गृहे सर्वमनोरथान् पूरयत पूरयत सर्वविघ्नान्नाशयत नाशयत स्वाहा।

गौरीतिलकमण्डलस्थदेवताः –

इदं विष्णु विंचक्रमे त्रेधानिदधेति. मंत्रेण गौरी तिलक मण्डलस्थ देवताः इमं बलि गृह्णत गृह्णत मम गृहे सर्व मनोरथान् पूरयत–पूरयत सर्वविघ्नान्नाशयत नाशयत स्वाहा।

भो गौरी तिलकमण्डलस्थ देवताः इमं सदीपं बलिं गृह्णत–गृह्णत मम गृहे सर्व विधाभ्युदय कुरु स्वाहा।

– – – * * * – – –

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रधान-बलिदानम्[१]

संकल्पः - तत्सदद्य श्रीदुर्गादेवतायाः प्रीत्यर्थं कूष्माण्डब-लिदानं करिष्ये। स्वयं उदङ्मुखः। बलिप्राङ्मुखं पीठोपरि निधाय। ॐ कूष्माण्डबलये नमः। अर्घोदकैः संप्रोक्ष्य।

बलिदक्षिणकर्णे (भागे) पठेत् - ॐ पशुपाशाय विद्महे विघ्नकरणाय धीमहि। तन्नो जीवः प्रचोदयात्। अथवा -छ्रीं बलिरूपाय विद्महे देविप्रियाय धीमहि। तन्नः पशुः प्रचोदयात्। पुनः अर्घोदकेन त्रिवारं पशुं संप्रोक्षयेत्। संपूज्य।

खड्ग-पूजनम् -

कृष्णं पिनाकपाणिञ्च कालरात्रिस्वरूपिणम्।
उग्रं रक्तास्यनयनं रक्तमाल्यानुलेपनम्॥१॥
रक्ताम्बरधरं चैव पाशहस्तं कुटुम्बिनम्।
पिबमानञ्च रुधिरं भुंजानं कव्यसंहतिम्॥२॥
क्षोभयन्तं जगत्सर्वं कम्पनादिप्रचारणैः।
वेष्टितं मृत्युकालाभ्यां वामदक्षिणभागतः॥३॥

इति ध्यात्वा खड्गं स्वदक्षिणे भागे स्थापयित्वा पूजयेत्।

खड्गमंत्रेण तं गन्धपुष्पै, समभ्यर्च्य खड्गस्य मुष्टिमध्याग्र-भागेषु कुर्यात् मूलादिमिथुनत्रयम् यजेत्।

---

१ वानप्रस्थो ब्रह्मचारी गृहस्थो वा दयापरः। सात्त्विको ब्रह्मनिष्ठश्च यश्च हिंसाविवर्जितः॥ ते न दद्युः पशुबलिमनुकल्पंचरन्त्यपि। अनुकल्पे ऽपि मुख्ये ऽधिकारिण एवाधिकारः। अनुकल्पे विधिर्महाकाल संहितायाम्- सात्त्विको जीवहत्यां हि कदाचिदपि नाचरेत्। इक्षुदण्डं च कूष्माण्डं तथा वन्यफलादिकम्।। क्षीरपिण्डैः शालिचूर्णैः पशुं कृत्वा चरेद्बलिम्। तत्फलविशेषेण तत्तत्पशुमुपानयेत्॥ तथा महिषत्वेन कूष्माण्डं छागत्वेनैव कर्कटीमिति। वृन्ताकं कुक्कटत्वेन मेषत्वेन च तुम्बिकाम्। रंभापुष्पं बीजपूरं पिण्डं जीवं कलौ भवेत्। मानुषत्वेन पनसं मत्स्यत्वेनेक्षुदण्डकम्॥

शूरणं शम्बरत्वेन तथा कोशातकं मृगे। पायसं तु गजत्वेन मार्जारत्वेन कुलित्थकम्॥ पटोलं शूकरत्वेन शर्कराबालुकं तथा। खड्गत्वेन महेशानि मत्स्यत्वेन कदलीफलम्। मूषत्वे मूलकं चैव सारङ्गत्वेन कलिंजकम्। करित्वे नारिकेलं च कल्पयेत्परमेश्वरि। माषाः सर्वबलित्वेन सर्वेषां कृशरान्नतः। तथा तत्तत्पशुप्रदातृणां फलावाहयैः वरानने। तृणगोधूमैक्षवाद्यैः फाणितैरन्नजैस्तथा॥ कृत्वा तं तं पशुं दद्युस्तत्तत्फलमवाप्नुयुः॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

खड्ग मूले – ॐ सावित्रीब्रह्मभ्यां नमः।

खड्गमध्ये – ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः।

खड्ग-अग्रे – ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः।

मुष्टौ – ॐ महादेवाय नमः।

धारे – ॐ यमाय नमः। सम्पूजयेत् । अभिमंत्रयेत्

ह्रां ह्रीं खड्ग आं हुं फट्। ॐ कालि कालि यज्ञेश्वरि लोहदण्डाय नमः। इति मंत्रेण खड्गं पूजयेत्। प्रार्थयेत् –

खड्गायासुरनाशाय शक्तिकार्याय तत्परः।
पशुच्छेद्यस्त्वया शीघ्रं खड्गनाथ नमोस्तुते॥
ॐ रसने त्वं चण्डिकायाः सुरलोक प्रसाधिके।
भुंक्ष्वैतस्य पशोरक्तं क्रव्यसहितमेव च॥
छिन्धीश पिब मे शत्रुं मंगलानि प्रयच्छ मे।
दैत्यदानवरक्षोऽसृङ्मेदोन्मत्त नमोस्तु ते॥

एतैः मंत्रैः खड्गमभिमंत्र्य हस्ते खड्गं गृहीत्वा उत्तराभिमुखो भूत्वा पशुं पूर्वाभिमुखं कृत्वा। गात्रचालनार्थं पशुं प्रतीक्षेत्। यावद्गात्रं न चालयेत्तावन्न हन्यताम्। गात्रचालने कृते पशुं निरीक्ष्य इमं मन्त्रमुदीरयेत्। ऐं ह्रीं श्रीं रसना त्वं चण्डिकायाः सुरलोक प्रसाधकः।

बलि-प्रार्थना –

पशो त्वं बलिरूपेण मम भाग्यादुपस्थितः।
प्रणमामि ततः सर्वरूपिणं बलिरूपिणम्॥१॥
चण्डिकाप्रीतिदानेन दातुरापद्विनाशनम्।
चामुण्डाबलिरूपाय बले तुभ्यं नमो नमः॥२॥
यज्ञार्थे पशवः सृष्टाः स्वयमेव स्वयंभुवा।
अतस्त्वां घातयाम्यद्य तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः॥३॥
इमं देहं परित्यज्य भूत्वा देववपुर्धरः।
मोदस्व प्रमथैः सार्धं यावदिन्द्राश्चतुर्दश॥४॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इति पठित्वा ऐं ह्रीं श्रीं आत्मरूपं बलिं चिन्तयित्वा। प्राणायामयेन पुष्पं पशुमस्तके न्यसेत्॥ ततो खड्गं गृहीत्वा-

असिर्विशसन खड्गस्तीक्ष्णधारो दुरासदः।
श्री गर्भो विजयश्चैव धर्मपाल नमोस्तु ते॥
आं हूं फट् इति मंत्रेणैकप्रहारेणैव बलिं छिन्द्यात्।
मुण्डं सदीपं देव्यग्रे निवेदयेत्।
ॐ कालि कालि महाकालि देवि पापनाशिनि।
शोणिताञ्चबलिं गृह्ण वरदे वामलोचने॥
ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं श्रीं कोशिकीरुधिरेणाप्यायताम्।

शेषस्य चतुर्भागं कृत्वा - ऐशान्यां - ॐ विदारिकायै नमः। नैर्ऋत्यां - ॐ पापराक्षस्यै नमः। आग्नेयां - ॐ पूतनायै नमः। वायव्यां - ॐ कौशिक्यै नमः॥ इति समर्प्य। स्तुतिं कुर्यात्

जय देवि जगन्मातर्जय पापौघहारिणि।
जय जन्मजराव्याधि तृणदावानलाकृते।
जय सर्वविपत्तिघ्ने जयत्रिदशवन्दिते।
जयनित्यानन्दरूपे जयकल्याणदायिनि॥
जय शत्रुक्षयकरे जय रोगप्रणाशिनि।
जय भीमे जयाघोरे जय संकटतारिणि।
जयामृतरसास्वादे तुन्दिलामन्दविग्रहे।
त्रिनेत्रे विकरालास्ये मुण्डमालाविभूषिते॥
सर्वासुरक्षयकरि खड्गखट्वाङ्गधारिणि।
महाघोरे महारावे दैत्यदर्पनिषूदिनि॥
इमं पशुबलिं देवि गृहीत्वा कालरात्रिके।
प्रीता भव महाचण्डे रक्ष मां शरणागतम्॥
आयुर्देहि धनं देहि यशः कीर्तिं च देहि मे।
स्त्रियं देहि सुतान्देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उग्रचण्डे प्रचण्डासि प्रचण्डकरवालिनि।
महाचण्डोग्रदोर्दण्डे विश्वेश्वरि नमोऽस्तु ते॥
रक्ष मां शरणापन्नं त्वत्पादार्पितमानसम्।
हर पापं हर क्लेशं हर शोकं हरासुखम्॥
हर रोगं हरक्षोभं हर दैन्यं हरप्रिये।
स्तुतिमेतां पठित्वैवं दण्डवत्प्रणमेद् भुवि॥
गुह्यकालि जगद्धात्रि सर्वान्तर्यामिनीश्वरि।
गृहीत्वेमं पशुबलिं यथोक्तं फलदा भव।

अनेन बलिदानेन श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम्॥

---***---

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

[1]कन्यापूजनम्

संकल्पः - देशकालौ संकीर्त्य अद्य देवीपूजाङ्गविहितोपचारद्रैव्यैः मम अभिष्टकामनासिद्धयर्थं कुमारी-बटुकानां: पूजनमहं करिष्ये। ततः मण्डपे वा मण्डपाभ्यन्तरे कुंकुमादिभिर्विरचितेऽष्टदले तदुपरि स्थापितपीठे कुमारी-मुपवेश्य कुमारीस्वरुपिणीं देवीं प्रार्थयेत्।

समस्तजगतामाद्ये जगदाधाररूपिणि।
कुमारीरुपमास्थाय प्रविशेदं गृहं मम॥
भवत्याः कीदृशं रूपं जाने मातरहं नहि।
कुमारीरूपमेवेदं पश्यामि नरचक्षुषा॥
भक्तिं मदीयाम्विज्ञाय त्वत्पादाम्बुजयोः शिवे।
त्वया प्रकटितं रूपमीदृशं सर्वसिद्धये॥
दृष्टिः कार्या न मे पापे संचारेणासतः पथः।
दृढायां केवलं भक्तौर्दातव्या सुरवन्दिते॥
शिवाद्यास्तवरूपं हि कीदृशं नेति जानते।
ज्ञास्यामि को वराकोऽहं पांचभौतिकविग्रहः॥

---

१. मंत्रमहोदधिः - यजमानः पूजयेच्च कन्यानां दशमं शुभम्। द्विवर्षा सा कुमार्य्युक्ताः त्रिमूर्तिर्हायनत्रिका। चतुरब्दा तु कल्याणी पंचवर्षा तु रोहिणी॥ षडब्दा कालिका प्रोक्ता चण्डिका सप्तहायनी। अष्टवर्षा शाम्भवी स्याद् दुर्गा च नवहायनी। सुभद्रा दशवर्षोक्तास्तां मंत्रैः परिपूजयेत्॥

पूज्यापूज्यस्वरूपमाह - दुर्गा- उपा० कल्पदुमे- हीनाधिकाङ्गीं कुष्ठीं च विलासकुलसंभवाम्। न पूजयेत् अरोगिणीं सुपुष्टाङ्गीं सुरूपां व्रजवनिताम्। एकवंशसमुद्भूतां कन्यां सम्यक् प्रपूजयेत्।

कार्यविशेषः - दु.- उपा० कल्पद्रुमे - ब्राह्मणीं सर्वकायेषु जयार्थे नृपवंशजाम्। लाभार्थे वैश्यवंशोत्थां सुतार्थे शूद्रवंशजाम्। दारुणे चान्त्य जातीयां पूजयेत् विधिना नरः॥

मंत्रमहोदधिः - विप्रां सर्वेष्टसिद्धयै यशसे क्षत्रियोद्भवाम्। वैश्यानां धनलाभाय पुत्राप्त्यै शूद्रजां यजेत्

वाडवानलीये - उत्तमा सा परिज्ञेया सप्ताष्टनवहायना। मध्यमा पञ्चवर्षा च षडब्दा दशहायना। एकद्वित्रिचतुर्वर्षा रुद्राब्दाद्याऽवरा स्मृता॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ध्यानम् –

प्रसन्नवदनाम्भोजां प्रोद्यद्बालार्कसप्रभां,

रक्ताम्बरां रक्तमाल्यां नानालङ्कारभूषिताम्।

सस्मितां देवकन्याभिः क्रीडारसपरायणां

ध्यायेत्कुमारिकां बालां स्वभक्ताभीष्टसिद्धिदाम्।।

ऐं ह्रीं श्रीं कुलकुमरिकायै नमः ध्यायामि। आवाहयामि।

आवाहनम् –

मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातृणां रूपधारिणीम्।

नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम्।।

ऐं ह्रीं श्रीं कुलकुमारिकायै नमः आवाहयामि।

ततो कुमारीं दक्षिणहस्तेन स्पृष्ट्वा – ॐ क्लां कुलकुमारिके हृदयाय नमः। ॐ क्लीं कुलकुमारिके शिरसे स्वाहा। ॐ क्लूं कुलकुमारिके शिखायै वषट्। ॐ क्लैं कुलकुमारिके कवचाय हुम्। ॐ क्लौं कुलकुमारिके नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ क्लः कुलकुमारिके अस्त्राय फट्।

ॐ अं नमो ललाटे। ॐ आं नमो मुखे। ॐ इं नमो दक्षिणनेत्रे। ॐ ईं नमो वामनेत्रे। उं नमो दक्षिण कर्णे। ॐ ऊं नमो वामकर्णे। ॐ ऋं नमो दक्षिणनासापुटे। ॐ ॠं नमो वामनासापुटे। ॐ लृं नमो दक्षिणगंडे। ॐ लॄं नमो वामगण्डे। ॐ एं नमः उर्ध्वोष्ठे। ॐ ऐं नमः अधोष्ठे।

ॐ ओं नमः उर्ध्वदन्तपंक्तौ। ॐ औं नमः अधः दन्तपंक्तौ। ॐ अं नमो मुखे। ॐ अः नमो शिरसि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शक्तिपूजनम्

ॐ ऐं सिद्धिजयायै नमः पूर्ववक्त्रशक्तिं पूजयामि त० । ॐ ऐं जयायै नमः उत्तरवक्त्रशक्तिं पूजयामि। ॐ ऐं कुब्जिकायै नमः पश्चिमवक्त्रशक्तिं पूजयामि। ॐ ऐं कालिकायै नमः दक्षिणवक्त्रशक्तिं पूजयामि। ॐ ऐं भास्कराय नमः भास्करशक्तिं पूजयामि। ॐ ऐं संध्यायै नमः संध्याशक्तिं पूजयामि। ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः सरस्वतीशक्तिं पूजयामि। ॐ ऐं त्रिमूर्त्यै नमः त्रिमूर्त्तिशक्तिं पूजयामि। ॐ ऐं कालिकायै नमः कालिकाशक्तिं पूजयामि। ॐ ऐं सुभगायै नमः सुभगाशक्तिं पूजयामि। ॐ ऐं उमायै नमः उमाशक्तिं पूजयामि। ॐ ऐं मालिन्यै नमः मालिनीशक्तिं पूजयामि। ॐ ऐं कुब्जिकायै नमः कुब्जिकाशक्तिं पूजयामि। ॐ ऐं कालसंकर्षिण्यै नमः कालसंकर्षिणीशक्तिं पूजयामि। ॐ ऐं रुद्राण्यै नमः रुद्राणीशक्तिं पूजयामि। ॐ ऐं भैरव्यै नमः भैरवीशक्तिं पूजयामि। ॐ ऐं पीठनायिकायै नमः पीठनायिकाशक्तिं पूजयामि। ॐ ऐं चर्चिकायै नमः चर्चिकाशक्तिं पूजयामि। ॐ ऐं वीरभद्रायै नमः वीरभद्राशक्तिं पूजयामि। ॐ ऐं महाकन्यायै नमः महाकन्याशक्तिं पूजयामि। ॐ ऐं कौलिन्ये नमः कौलिनीशक्तिं पूजयामि। ॐ ऐं कुलगामिन्यै नमः कुलगामिनीशक्तिं पूजयामि। ॐ ऐं अष्टादशभुजायै नमः अष्टादशभुजाशक्तिं पूजयामि। ॐ ऐं काल्यै नमः कालीशक्तिं पूजयामि। ॐ ऐं चण्डदुर्गायै नमः चण्डदुर्गाशक्तिं पूजयामि।

ततः संपूज्य। नैवेद्यं निवेदयेत्। यावत्सा भोजनं कुर्यात्तावत्स्तोत्रं पठेत् वा नवार्णमंत्रं जपेत्) तत्र कुमार्या दक्षिणेभागे ब्रह्मचारिण मेकं वामे चैकं तथैकं पुरतः एवं वटुकान् ध्यात्वा संपूजयेत्।

बटुक पूजा –

करकलितकपालः कुण्डलीदण्डपाणि-
स्तरुणतिमिरनीलव्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमयसपर्याविघ्नविच्छेदहेतु-
र्जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥

संपूज्य।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नवकन्या-पूजनम् -

कौमारी -

जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते।।

त्रिमूर्ति -

त्रिपुरां त्रिगुणां धात्रीं मार्गज्ञानस्वरूपिणीम्।
त्रैलोक्यवन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम्।।

कल्याणि -

कल्याणिं तु कलातीतां कारुण्यहृदयां शिवाम्।
कल्याणजननीं नित्यां कल्याणीं पूजयाम्यहम्।।

रोहिणी -

अणिमादिगुणोदारां मकराद्यक्षरात्मिकाम् ।
अनन्तशक्तिभेदां तां कामाख्यां पूजयाम्यहम्।।

कालिका -

कामचारीं महामायां कारुण्यहृदयां शिवां।
कामदां करुणोदारां कालिकां पूजयाम्यहम्।।

चण्डिका -

चण्डवीरां महामायां चण्डमुण्डप्रभञ्जिनीम्।
तां नमामि च देवेशीं चण्डिकां पूजयाम्यहम्।।

शांभवी -

सुखानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम्।
सर्वभूतात्मिकां देवीं शांभवीं पूजयाम्यहम्।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दुर्गा -

दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुर्गविनाशिनीम्।
पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गार्तिहरिणीम्॥

सुभद्रा -

सुन्दरीं स्वर्णवर्णाङ्गीं सुखसौभाग्यदायिनीम्।
संतोषजननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम्॥

दद्यादाचमनं तस्यै ताम्बूलं समर्पयेत् तोषयेद् हेमदानेन कुमारीं प्रणतोऽसकृत्। प्रदक्षिणानमस्कारान् कृत्वा मूर्घ्नि कृताञ्जलिः।

प्रार्थयेत् -

जयकालि ! महाभीमे भीमरावे भयापहे।
संसारदावाग्निशिखे वृजिनार्णवतारिणि॥

ब्रह्मेन्द्रोपेन्द्रभूतेषु प्रभृत्यमरवन्दिते।
सर्वपालनसंहारकारिणि हितकारिणि॥

गुह्यकालि परानन्दरसपूरितविग्रहे।
परब्रह्मरसास्वादकैवल्यानन्ददायिनि॥

गुणातीतेऽपि सगुणे महाकल्पान्तनर्तकि।
कुमारीरूपमास्थाय विज्ञाप्रज्ञास्वरुपिणि॥

आगतोऽसि ममागारे शारद्यर्चासमाप्तये।
सांवत्सरिककल्याणसूचनाय तथैव च॥

धन्योऽस्मि कृतकृत्योऽस्मि सफलं जीवितं मम।
यस्मात्वमीदृशं कृत्वा कौमारं रूपमुत्तम्॥

गुह्यकाली समायातादिक पूजामि।
त्वमेवैतेन रूपेण देवेभ्यः प्रार्थितः पुरा॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दत्तवत्यसि साम्राज्यं वरानपि समीहितान्।
मह्यमप्यद्य देवेशि वरं देहि सुपूजिता॥

ब्रह्मणे सृष्टिसामर्थ्यं त्वं पुरादत्तवत्यसि।
विष्णवे च त्वमेवादास्तथापालनशक्तिताम्॥

महारुद्राय कर्त्तव्यं शक्तित्वमददः शिवे।
देवेभ्यश्चापि दैत्यानां नाशने दक्षतामपि॥

अन्तर्यामिन्यसीशानि त्रैलोक्यवासिनामपि।
निवेदयामि किन्तेऽहं सर्वकर्मैकसाक्षिणि॥

शत्रुनाशं राज्यलाभं शरीरारोग्यमेव च।
त्वत्पादाम्बुजयोर्भक्तिं याचेऽहं चतुरो वरान्॥

नमस्ते भगवत्यम्ब नमस्ते भक्तवत्सले।
नमस्ते जगदाधाररूपिणि पाहि मां सदा॥

मातरंबेद्मि रूपां ते शरीरं नवागुण्।
भक्त्याहृत्स्थितया पूजां तव जानाम्यनन्यधीः॥

त्वं माता त्वं पिता बन्धुस्त्वमेव जगदीश्वरि।
त्वं गतिः शरणं त्वं च स्वर्गस्थं मोक्षमेव च॥

विहाय त्वां जगन्मातर्नान्यां जानामि देवताम्।
नमस्तेऽस्तु नमस्तेऽस्तु नमस्तेऽस्तु नमो नमः।

अनया पूजया भगवती कुलकुमारिका प्रीयताम्। जलमुत्सृजेत्।

---***---

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पूर्णाहुतिः

पूर्णाहुत्यां मृडनाम्ने वैश्वानराय गंधादिभिः संपूजयेत् –

ॐ अग्ने नयसुपथाराये ऽअस्मान्विश्वानि देवव्वयुनानि व्विद्वान्। युयोद्ध्य स्म्मजुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमऽ उक्तिं व्विधेम। ॐ भूर्भुवः स्वः मृडनामाग्नये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

स्रुक्स्रुवौ प्रतप्य सम्मार्गकुशैः सम्मृज्य प्रणितोदकेनाभ्युक्ष्य। पुनः प्रतप्य अग्नेः पश्चिमतो याम्यायां निदध्यात्। आज्यमुद्वास्य पवित्राभ्यामुत्पूय अवेक्ष्य अपद्रव्यं निरस्य। स्रुवेण चतुर्वारमाज्यं स्रुचि गृहीत्वा। तस्यां नारिकेलफलं ताम्बूलं निधाय पुष्पमालां रक्तवस्त्रेणवेष्टितं अधोमुखस्रुवच्छन्नं गंधादिभिः संपूज्य, पाणिद्वयेन [1]शंखमुद्रया स्रुवंस्रुचमादाय उत्थाय एवं पूर्णाहुतिं [2]जुहुयात्। घृतेनाविच्छिन्नधारामग्नौ पातयेत्।

ॐ समुद्रादूर्म्मिर्म्मधुमाँ २॥ ऽ उदारदुपा ७ शुना सममृतत्वमानट्।
घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः ॥१॥
व्वयन्नाम प्रब्रवामा घृतस्यास्मिन्यज्ञे धारयामा नमोभिः।
उप ब्र्ह्मा श्रृणवच्छस्य मानञ्चतुः श्रृङ्गोवमीद् गौर ऽ एतत्॥२॥
चत्वारि श्रृङ्गा त्रयोऽस्यपादा द्वेशीर्षे सप्तहस्तासो ऽ अस्य।
त्रिधावद्धो वृषभोरोरवीति महोदेवो मर्त्यां २॥ आविवेश॥३॥
त्रिधाहितम्पणिभिर्गुह्यमानङ्गविदेवासो घृतमन्ववविन्दन्।
इन्द्र ऽ एक ठं. सूर्य्य ऽएकञ्जजान व्वेनादेकं ४ स्वधयानिष्टतक्षुः॥४॥
एता ऽ अर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे।
घृतस्यधारा ऽ अभिचाकशीमि हिरण्य योव्वेतसोमध्य ऽ आसाम्॥५॥

१ संस्कार दीपक-भाग।१। वायवीयसंहिता। सर्वांगदुर्गापूजा। कर्मठगुरुः। होमात्मकमहारुद्रप्रयोगे। शुक्लयजः कर्मकाण्डप्रदीपे। शतचण्डी- यज्ञविधाने। पाणिद्वयेन होतव्यं पाणिरेको निरर्थकः। गृहीत्वाऽथ स्रुवं कर्त्ता शंखसन्निभमुद्रया। पूर्णाहुतिविधाने।

२ पौराणिकदर्पणीयपूर्णाहूतिविधाने – शक्रादय इति आरभ्य तच्छृणुष्व मया-ख्यातं यथावत्कथयामिते इत्यन्तं मन्त्रान्पठित्वा ततः नमोदेव्यै इति मंत्रान्ते स्वाहाकारेण पूर्णाहुतिं दत्त्वा। पूर्णाहूति-संग्रहे – पश्चाद्धोव्यं पुरो दक्षकराभ्यां शंखमुद्रया।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सम्म्यक्स्त्रवन्ति सरितो न धेनां ऽ अन्तर्हृदा मनंसा पूयमांनाः ।
एते ऽ अर्षन्त्यूर्म्मयों घृतस्यं मृगा ऽ इंव क्षिपणोरीषंमाणाः ॥ ६ ॥
सिन्धोंरिव प्राध्वने शूंघनासोव्वातंप्रमियः पतयन्ति यह्वाः ।
घृतस्य धारां ऽ अरुषोन व्वाजी काष्ठांभिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वंमानः ॥७॥
अभिप्रंवन्त समंने वयोषांः कल्याण्यः स्मयंमानासो ऽ अग्निम् ।
घृतस्य धारांः समिधोंनसन्तता जुंषाणो हंर्य्यति जातवेंदाः ॥ ८ ॥
कन्याऽइव व्वहतुमेतवाऽ उं ऽ अञ्ज्यञ्जाना ऽ अभिचांकशीमि ।
यत्र सोमंः सूयते यत्रं यज्ञो घृतस्य धारांऽअभितत्पंवन्ते ॥९॥
अभ्यर्षत सुष्टुतिंगव्व्यमाजिमस्मासुं भद्रा द्रविंणानि धत्त ।
इमं यज्ञन्नंयत देवतां नो घृतस्य धारा मधुंमत्पवन्ते ॥१०॥
धामंन्ते व्विश्श्वम्भुवंनमधिश्रितमन्तः संमुद्रे हृद्यन्तरायुंषि ।
अपामनींके समिथे य ऽआमृंतस्तमंश्याम मधुंमन्तन्तऽऊर्म्मिम् ॥११॥
पुनंस्त्वादित्या रुद्रा व्वसंवः समिंन्धताम्पुनंर्ब्रह्माणो व्वसुनीथ यज्ञैः ।
घृतेन त्वन्तन्न्वं व्वर्द्धयस्व सत्याः संन्तु यजंमानस्य कामांः ॥१२॥
ॐ सप्ततें ऽ अग्ने समिधंः सप्तजिह्वाः सप्तऽऋषंयः सप्त धामं प्रियाणिं ।
सप्तहोत्रांः सप्तधात्वां यजन्ति सप्त योनी रापृंणस्व घृतेन स्वाहां ॥१३॥
मूर्द्धानंन्दिवोऽअंरतिं पृंथिव्या व्वैश्वानरमृत ऽ आजातमग्निम् ।
कविं सम्म्राजमतिंथिञ्जनांनामासन्ना पात्रञ्जनयन्त देवाः ॥१४॥
पूर्ण्णा दंर्व्विपरांपत सुपूंर्ण्णा पुनरापंत ।
व्वस्नेव व्विक्रीणावहा ऽ इषमूर्ज्जं शतक्रतो स्वाहा ॥१५॥

इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नये अद्भ्यः। महालक्ष्म्यै न मम। संस्रवप्रक्षेपः।

---***---

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वसोर्द्धारा-होमः

वसोर्द्धारा होमः। चमकं च पठेत्। ततऽग्नेरुपरि वसोर्धारां पातयेत्। तस्यां च घृतधारायां पतन्त्यां स्रुक्प्रणालिकयाऽग्नौ पतन्त्यां मंत्रान् पठेत्। पौराणिकवसोर्द्धारां जुहुयात् तत्रमंत्राः ''देवाऊचुः नमोदेव्यै इत्यारभ्य सर्वापदोभक्तिविनम्रमूर्तिभिरियन्तं'' पुनः नमो देव्यै।

ॐ सप्तते ऽ अग्ने समिधः सप्तजिह्वाः सप्तऽऋषयः सप्त धाम प्रियाणि।
सप्तहोत्राः सप्तधात्वा यजन्ति सप्त योनी रापृणस्व घृतेन स्वाहा॥१३॥

शुक्रज्ज्योतिश्च चित्रज्ज्योतिश्च सत्यज्ज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्च।
शुक्रश्च ऋतपाश्चात्यं हाः॥१॥

इदृङ्चान्यादृङ् च सदृङ् च प्रतिसदृङ्च।
मितश्च सम्मितश्च सभराः॥२॥

ऋतश्च सत्यश्च ध्रुवश्च धरुणश्च।
धर्त्ता च विधर्त्ता च विधारयः॥३॥

ऋतजिच्च सत्यजिच्च सेनजिच्च सुषेणश्च।
अन्तिमित्रश्चदूरे ऽ अमित्रश्च गणः॥४॥

ईदृक्षास ऽ एतादृक्षास ऽ ऊषुणः सदृक्षासः प्रतिसदृक्षास ऽ एतन।
मितासश्च सम्मितासोनो अद्यसभरसोमरुतो यज्ञेऽअस्मिन्॥५॥

स्वतवाँश्च प्रघासी च सान्तपनश्च गृहमेधी च।
क्रीडी च शाकीचोज्जेषी॥६॥

इन्द्रन्दैव्वीर्व्विशो मरुतो नुवर्त्मानो भवन्यथेन्द्रन्दैवीर्व्विशोमरूतोनुवत्र्मानो भवन्।
एवमिमं यजमानन्दैवीश्च व्विशोमानुषीश्चानुवत्र्मानो भवन्तु॥७॥

इम ७ स्तनमूर्ज्जस्वन्तन्धयापाम्प्रपीनमग्ने सरिरस्य मद्ध्ये।
उत्सञ्जुषस्व मधुमन्तमर्व्वन्त्समुद्रिय ठ. सदनमाविशस्व॥८॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

घृतम्मिंमिक्षे घृतमंस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वंस्य धामं।
अनुष्वधमावंह मादयंस्व स्वाहांकृतं वृषभव्वक्षि हव्यम्॥९॥
व्वसोंः पवित्रंमसि शतधारं व्वसोंः पवित्रंमसि सहस्त्रंधारम्।
देवस्त्वां सविता पुंनातुव्वसोंः पवित्रेंण शतधारेण सुप्वा कामंधुक्षः॥१०॥
इदं अग्नये न मम। नात्र संस्त्रवप्रक्षेपः॥

भस्मधारणम् – स्त्रुवेण भस्मानीय त्रयायुषं कुर्यात् – ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे। ॐ कश्पस्यत्र्यायुषमिति ग्रीवायाम्। ॐ यद्देवेषुत्र्यायुषमिति दक्षबाहूमूले। ॐ तन्नोऽस्तुत्र्यायुषमिति हृदि।

ततोऽअग्न्युपस्थानम् – हस्तयोः अक्षतपुष्पफलदक्षिणाः गृहीत्वा प्रार्थयेत्- ॐ इन्द्रन्दैवीर्व्विशोंमरुतो नुंवर्त्क्मानो भवन्यथेन्द्रन्दैवीर्व्विशों मरुतो नुंवर्त्क्मानो भंवन्। एवमिमँ यजंमानन्दैवींश्च व्विशोंमानुषीश्चानुंवर्त्क्मानो भवन्तु॥

चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पंचभिरेव च।
हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः॥
ज्ञानतो ऽज्ञानतो वापि मंत्रकर्मक्रियाविधिः।
सम्पूर्णं कुरुयज्ञेश गार्हपत्य नमोऽस्तु ते॥
यथा शस्त्रप्रहाराणां कवचं भवति वारणम्।
तद्वद्देवापघातानां शांतिर्भवति वारणम्॥
स्वस्ति श्रद्धां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियं बलम्।
आयुष्यं तेजआरोग्यं देहि मे वाञ्छितं फलम्॥

यज्ञपुरुषाय नमः समर्पयेत्।

---***---

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

संकल्पः

ॐ तत्सदद्य मया आघारादिपूर्णाहुतिपर्यन्तं यद्यद्द्रव्यं यावद्यावत्संख्याकेन येन येन मंत्रेण यया यया कामनया यस्यै यस्यै देवतायै हुतं सा सा देवता प्रीयताम्। ते देवाः शांतिदाः पुष्टिदास्तुष्टिदा वरदा भवन्तु। संस्त्रवप्राशनम् - प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षिप्तस्य आज्यस्य यजमानः प्राशनं (अवघ्राणं वा) कुर्यात्

यस्माद्यज्ञरसोत्पूतो यज्वानो ब्रह्मरूपिणः।
संस्त्रावं तत्पुरोडासं प्राश्नामि सुखपुण्यदम्॥

ॐ इन्द्रपीतस्य प्रजापति भक्षितस्या मधुमत ऽ उपहूत ऽ उपहूतस्य भक्षयामि॥ ततः आचमनम्। प्रणीतापात्रे निहिते पवित्रे आदाय ग्रन्थिमुक्त्वा (ताभ्यां जलेन यजमानशिरः संप्रोक्षयेत्-) ॐ सुमित्रायान ऽ आप ओषधयस्सन्तु॥ (पवित्रे अग्नौ प्रक्षिपेत्-) ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योस्मान् द्वेष्टियं च वयं द्विष्मः॥ (प्रणीताया ऐशान्यां न्युब्जीकरणम्)

ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् - ॐ तत्सदद्य अस्मिन् चण्डीयज्ञे हवनकर्मणि कृताकृतावेक्षणरुपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थं तत्सम्पूर्णफल-प्राप्तये च इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणं प्रजापति दैवतममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे तुभ्यमहं संप्रददे।

ब्रह्मग्रन्थि-विमोक :-

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयं तस्त्वे महे।
उपप्रयन्तु मरुतः सुदानव ऽ इन्द्रप्राशूर्भवा स चा॥

बर्हिहोम :-

ॐ देवा गातु विदोगातुं वित्वागातुमित।
मनसस्पत इमं देव यज्ञ ठ. स्वाहा वातेधाः स्वाहा॥

संकल्पा :-

ॐ तत्सदद्य कृतैतच्चण्डीयागाख्यकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं वृतेभ्यः ब्राह्मणेभ्यः आचार्यादिप्रमुखेभ्यः दक्षिणामहं संप्रददे। तत्सदद्य कृतैतत् चण्डीयागाख्यकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं गोदानं अन्नदानञ्च तत्तप्रत्याम्नाय द्रव्यं वा यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय संप्रददे।

तत्सदद्य अस्य चण्डीयागाख्यकर्मणः साङ्गत्वसिद्ध्यर्थं न्यूनाति रिक्तदोषपरिहारार्थं दीनानाथेभ्यः भूयसीं दक्षिणामहं संप्रददे।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कृतस्य चण्डीयागाख्यकर्मणः साङ्गतासिद्धयर्थं यथाशक्ति- ब्राह्मणान् कन्यावटुकान् सुवासिनीं च भोजनेनाऽहं तर्पयिष्ये।

अनेन कर्मणा पराम्बाश्रीदुर्गादेवता प्रीयताम् न मम।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्धयात्मना वानुसृतस्वभावात्।
करोमि यद्यत्सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत्॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिभिः।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥
प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

आरार्तिक्यम् – ॐ आ रार्त्रि पार्थिव ठँ. रजः पितुरप्प्रायि धामभिः। दिवः सदा ७ सि बृहति व्वि तिष्ठस ऽ आ त्त्वेषं व्वर्त्तते तमः॥ ॐ इद ७ हविः प्प्रजननं मे ऽ अस्तु दशवीर ७ सर्व्वगण ७ स्वस्तये। आत्मसनि प्प्रजासनि पशुसनि लोक सन्यभयसनि॥ अग्निः प्प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो ऽ अस्मा सु धत्त।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ॡ शांतिः पृथिवी शांतिरापः शांतिरोषधयः शांतिः। व्वनस्पतयः शांतिर्व्विश्वेदेवाः शांतिर्ब्रह्म शांतिः सर्व्व ॡ शांतिः शांतिरेव शांतिः सा मा शान्तिरेधि॥

---***---

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पुष्पाञ्जलिः

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानिधर्म्माणि प्रथमान्यासन्। तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः।

विश्वेश्वरी जगद्धात्री स्थितिसंहारकारिणीम्।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥१॥
स्तुता सुरैः पूर्वभीष्टसंश्रयात्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥२॥
या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितैरस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥३॥
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥४॥
सर्वाबाधाप्रशमनं त्रलोक्यस्याखिलेश्वरि।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥५॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥६॥
सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥७॥
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥८॥
सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥९॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

या माया मधुकैटभप्रमिथिनी या महिषोन्मूलिनी, या धूम्रेक्षण चंडमुंडमथिनी या रक्तबीजाशिनी। शक्तिः शुम्भनिशुंभ दैत्यदलिनी या सिद्धिलक्ष्मीपरा सा चण्डी नव कोटिशक्ति सहिता मां पातु सर्वेश्वरी। मन्त्रपुष्पांजलिं समर्पयामि।

नमस्कारः –

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताःस्म ताम्॥ रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः। ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः॥ कल्याणै प्रणतां बृद्धयै सिद्धयै कुर्मो नमो नमः। नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः॥ दुगायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै। ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः॥ नमोऽस्तु देव्यै सुरपूजितायै या संस्थिता योगवि-शुद्धदेहा, निद्रास्वरूपेण महीं वितत्य तृष्णात्रपाक्षुद् भयदाऽथकान्तिः। श्रद्धा स्मृतिः पुष्टिरथो क्षमा च छाया च शक्तिः कमलालया च, वृत्तिर्दया भ्रान्तिरथेह माया नमोऽस्तु देव्यै भवरूपिकायै।

अभिषेक :–

शान्तिकलशरुद्रकलशप्रधानकलशादीनामुदक मेकस्मिन्पात्रे एकीकृत्य दूर्वापञ्चपल्लवैः आचार्यादि- उदङ्मुखंतिष्ठन्तं प्राङ्मुखमुपविष्टम् सपत्नीकं (वामे) यजमानं अभिषिञ्चेयुः –(अभिषेके पत्नी वामतः) ॐ आपोहिष्ठामयो भुवस्तानऊर्ज्जे-दधातन। महेरणाय चक्षसे॥ योवः शिवतमो-रसस्तस्य भाजयतेहनः। उशतीरिव मातरः॥ तस्माऽअरङ्गमामवो ऽस्यक्षयायजिन्वथ। आपो जनयथाचनः॥१॥ देवस्यत्त्वा सवितुः प्प्रसवेश्शिवनोर्ब्बाहुब्भ्या-म्पूषणो हस्ताब्भ्याम्। सरस्वत्यै व्वाचोवन्तुर्द्धर्यान्त्रिये दधामि बृहस्प्पतेष्ट्वासाम्राज्ज्येनाभिषिञ्चम्यसौ॥२॥देवस्यत्ता सवितुः प्प्रसवेश्शिवनो र्ब्बाहुब्भ्याम्पूषणो हस्ताब्भ्याम्। सरस्वत्त्यै व्वाचो वन्तुर्द्धर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्ज्येनाभिषिञ्चामि॥३॥ देवस्यत्त्वासवितुः प्प्रसवेश्शिवनोब्बाहुब्भ्याम्पूषणो हस्ताब्भ्याम्। अश्शिवनोर्ब्भैषज्ज्येन तेजसे ब्ब्रह्मवर्च्चसायामि षिञ्चामि सरस्वत्त्यैभैषज्ज्येन व्वीर्द्धर्या-यान्नाद्द्यायामि षिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियैयशसेभिषि-ञ्चामि॥४॥ शिरो मे श्रीर्यशो मुखंत्त्विषिः केशाश्चश्मश्रूणि। राजा मे प्राणोऽअमृत ठँ. सम्म्राट चक्षुर्विराट्श्रोत्रम्॥५॥ जिह्वामे भद्रं वाङ्म-होमनोमन्युः ७३ स्वराड्भामः। मोदाः प्रमोदाऽअङ्गुलीरङ्गानि मित्रम्मे-सहः। बाहुम्मेबलमिन्द्रिय ठँ. हस्तौमे कर्मव्वीर्यम्॥ आत्माक्षत्र-मुरोमम॥६॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पृष्ठीर्मेराष्ट्रमुदरम ठँ. सौग्रीवाश्चश्श्रोणी। ऊरू अरत्नी जानुनी-व्विशो मेऽगानिसर्व्वतः॥ ाभिर्मेचित्तं विज्ञानं पायुर्मेऽपचितिर्भसत्। आनन्दनन्दावांडौमेभगः सौभाग्यम्पसः। नङ्घाभ्यापद्भ्यां धर्मोस्मि व्विशिराजा प्रतिष्ठितः॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ठँ. शान्तिः पृथिवीशन्तिरापः शान्ति- रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः ‍ान्तिर्विश्वेदेवाः शान्ति- ब्रह्मशान्तिः। सर्व ठँ. शान्तिः शान्तिरेवशान्ति सामाशान्तिरेधि द्विपदे ‍तुष्पदेभ्यः शुभशान्तिर्भवतु॥

---***---

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

देवताविसर्जनम्

(यजमानः अञ्जलौ अक्षतान् गृहीत्वा प्रार्थयेत्।)

यान्तु देवगणाः सर्वे स्वशक्त्या पूजिता मया।
इष्टकामस्य सिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर।
यत्र बह्मादयोदेवास्तत्र गच्छ हुताशन॥
विधिहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं यदर्चितम्।
पूर्णं भवतु तत्सर्वं त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥
शक्नुवन्ति न ते पूजां कर्त्तुं ब्रह्मादयः सुराः।
अहं किम्बा करिष्यामि मृत्युधर्मा नरोऽल्पधीः॥
न जानेऽहं ते स्वरूपं न शरीरं न वा गुणान्।
एकामेव हि जानामि भक्तिं त्वच्चरणाब्जयोः॥

आशिषः मंत्रा :- ॐ श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानं महीयते। धान्यं धनं पशुं बहुपुत्र लाभं शतसम्वत्सरं दीर्घमायुः॥ मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोस्तु मित्राणामुदयस्तव॥ स्वस्त्यस्तु ते कुशलमस्तु चिरायुरस्तु। गोवाजिहस्ति धनधान्य समृद्धिरस्तु। शत्रुक्षयोऽस्तु निजपक्षमहोदयोऽस्तु। वंशे सदैव भवतां हरिभक्तिरस्तु॥

श्रेयोदानम् ब्रह्माद्य ऋत्विजादयश्च आचार्यद्वारा श्रेयोदानं कुर्युः।

श्रेयोदानम् आचार्य :- देशकालौ संकीर्त्य कृतस्यामुकयज्ञस्य श्रेयोदानमहं करिष्ये। आचार्यः यजमानहस्ते जलादिकं पुण्याहवाचनवत् क्षिपेत्। शिवाः आपः सन्तु। पुष्पाणि पान्तु सौमनस्यमस्तु। अक्षता; पान्तु अरिष्टं चास्तु। यत्पापं रोगंऽशुभमकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।

आचार्यः हस्ते साक्षतजलं पूगीफलं पुष्पञ्च गृहीत्वा भवा न्नियोगेन मया अस्मिन्यज्ञे (अनुष्ठाने वा) यत्कृतं आचार्य्यत्वं तथा च एभिर्ब्राह्मणैः सह यत्कृतं तद्उत्पन्नश्रेयं तत्तुभ्यमहं सम्प्रददे। तेन त्वं श्रेयस्वान् भव। भवामीतियजमानः।

---***---

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ श्री दुर्गासप्तशती

रात्रिसूक्त

विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थिति-संहारकारिणीम् ।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥१॥

॥ ब्रह्मोवाच ॥

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कार-स्वरात्मिका ।
सुधा त्वमक्षरे! नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता॥२॥

अर्ध-मात्रा-स्थिता नित्या याऽनुच्चार्या विशेषतः ।
त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि! जननी परा॥३॥

त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत् सृज्यते जगत्।
त्वयैतत् पाल्यते देवि! त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा॥४॥

विसृष्टौ सृष्टि-रूपा त्वं स्थिति-रूपा च पालने।
तथा संहृति-रूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ॥५॥

महा-विद्या महा-माया महा-मेधा महा-स्मृतिः ।
महा-मोहा च भवती महा-देवी महासुरी ॥६॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुण-त्रय-विभाविनी।
काल-रात्रिर्महा-रात्रिर्मोह-रात्रिश्च दारुणा ॥७॥
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोध-लक्षणा।
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च॥८॥
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाण-भुशुण्डी-परिघायुधा॥९॥
सौम्या सौम्य-तराशेष-सौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ॥
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी॥१०॥
यच्च किंचित् क्वचिद् वस्तु सदसद् वाखिलात्मिके।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा किं त्वं स्तूयसे तदा॥११॥
यया त्वया जगत् स्रष्टा जगत् पात्यत्ति यो जगत् ॥
सोऽपि निद्रा-वशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः॥१२॥
विष्णुः शरीर-ग्रहणमहमीशान एव च ।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्ति-मान् भवेत्॥१३॥
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि! संस्तुता।
मोहयैतो दुराधर्षावसुरौ मधु-कैटभौ॥१४॥
प्रबोधं च जगत्-स्वामी नीयतामच्युतो लघु।
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ॥१५॥

रात्रिसूक्त के बाद सप्तशती के तीनों न्यास और ध्यान करे।

सप्तशती का न्यास –

अथ प्रथममध्यमोत्तमचरित्राणां, ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नन्दाशाकम्भरीभीमाः शक्तयः, रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि, अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि, ऋग्यजुःसामवेदा ध्यानानि, सकलकामनासिद्धये श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ॥

आदौ न्यास –

खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ॥ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिः स्वनेन च ॥ तर्जनीभ्यां नमः ॥

प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ मध्यमाभ्यां नमः ॥

सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तैरक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥ अनामिकाभ्यां नमः ॥

खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥ कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥

हृदयादि न्यास –

खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ॥ हृदयाय नमः।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च। शिरसे स्वाहा॥

प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि॥ शिखायै वषट्॥

सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तैरक्षास्माँस्तथा भुवम्॥ कवचाय हुँ॥

खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः॥ नेत्रत्रयाय वौषट्॥

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तु ते। अस्त्राय फट्॥

सप्तशती का ध्यान –

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखाँश्चापं गुणं तर्जनीं
विभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥

इसके बाद तीनों चरित्रों का पाठ करना चाहिये।

नोट -१. – प्रत्येक चरित्र के पहिले उसके विनियोग और ध्यान, जो प्रत्येक चरित्र के आदि में दिये गये हैं, अवश्य पढ़ें।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

देवीसूक्त

नमो देव्यै महा-देव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥१॥

रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्य्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दु-रूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥२॥

कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥३॥

दुर्गायै दुर्ग-पारायै सारायै सर्व-कारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥४॥

अति-सौम्याति-रौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्-प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥५॥

या देवी सर्व-भूतेषु विष्णु-माया तु शब्दिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥६॥

या देवी सर्व-भूतेषु चेतना त्वभिधीयते।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥७॥

या देवी सर्व-भूतेषु बुद्धि-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥८॥

या देवी सर्व-भूतेषु निद्रा-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥९॥

या देवी सर्व-भूतेषु सुधा-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१०॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

या देवी सर्व-भूतेषु च्छाया-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥११॥
या देवी सर्व-भूतेषु शक्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१२॥
या देवी सर्व-भूतेषु तृष्णा-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१३॥
या देवी सर्व-भूतेषु क्षान्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१४॥
या देवी सर्व-भूतेषु जाति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१५॥
या देवी सर्व-भूतेषु लज्जा-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१६॥
या देवी सर्व-भूतेषु शान्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१७॥
या देवी सर्व-भूतेषु श्रद्धा-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१८॥
या देवी सर्व-भूतेषु कान्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१९॥
या देवी सर्व-भूतेषु लक्ष्मी-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२०॥
या देवी सर्व-भूतेषु धृति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२१॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

या देवी सर्व-भूतेषु वृत्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२२॥

या देवी सर्व-भूतेषु स्मृति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२३॥

या देवी सर्व-भूतेषु दया-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२४॥

या देवी सर्व-भूतेषु तुष्टि-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२५॥

या देवी सर्व-भूतेषु पुष्टि-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२६॥

या देवी सर्व-भूतेषु मातृ-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२७॥

या देवी सर्व-भूतेषु भ्रान्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२८॥

इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्ति-देव्यै नमो नमः ॥२९॥

चिति-रूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥३०॥

स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्ट-संश्रयात्,
तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
करोतु सा नः शुभ-हेतुरीश्वरी,
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥३१॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

या सांप्रतं चोद्धत-दैत्य-तापितै-
रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः,
सर्वापदो भक्ति-विनम्र-मूर्तिभिः ॥३२॥

इसके बाद मूल मंत्र – ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे का १०८ बार जप करे और बाद में नवार्ण मंत्र का न्यास करे।

नवार्ण मंत्र करन्यास –

ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। क्लीं मध्यमाभ्यां नमः। चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः। विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

नवार्णमन्त्र हृदयादिन्यास –

ऐं हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। क्लीं शिखायै वषट्। चामुण्डायै कवचाय हुं। विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्। ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्॥

समर्पण – न्यास करके नीचे लिखे अनुसार करके जल छोड़ दें।

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥

समर्पण करके तीनों रहस्यों का पाठ करे। १३ अध्याय के पाठ करने के बाद तीनों रहस्यों का पाठ करें।

रहस्य पाठ – प्राधानिक रहस्य, वैकृतिक रहस्य, मूर्ति रहस्य।

रहस्यों का पाठ करके नीचे लिखे अनुसार प्रार्थना करे।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

- क्षमा याचना -

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥१॥
अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम् ।
विपरीतं तु तत्सर्वं क्षमस्व परमेश्वरि ॥२॥
यस्याः स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ।
न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥३॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ।
यत्स्तुतासि मया देवि तस्मात्त्वं वरदा भव ॥४॥
कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे ।
गृहाण त्वं स्तुतिमिमां प्रसीद परमेश्वरि ॥५॥
यन्मात्राबिन्दुबिन्दुद्वितयपदपदद्वन्द्ववर्णाद्विहीनं ।
भक्त्याभक्त्यानुपूर्वं प्रकृतिगुणवशाद् व्यक्तमव्यक्तमम्ब ।
मोहादज्ञानतो वा पठितमपठितं साम्प्रतं ते स्तवेस्मिन्
तत्सर्वं साङ्गमास्तां भगवति वरदे त्वत्प्रसादात्प्रसीद ॥६॥
यदत्र पाठे जगदम्बिके मया विसर्गबिन्द्वक्षरहीनमीरितम्।
तदस्तु सम्पूर्णतमं प्रसादतः संकल्पसिद्धिस्तु सदैव जायताम्॥७॥

जलाञ्जलि – फिर दाहिने हाथ में जल लेकर निम्नलिखित मंत्र उच्चारण करके अन्य पात्र में जल छोड़ दें।

कृतेनानेन सप्तशतीपाठेन श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी-महासरस्वतीदेवताः प्रीयन्ताम्।

ॐ नमश्चण्डिकायै। ॐ नमश्चण्डिकायै। ॐ नमश्चण्डिकायै।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ देवीकवचम्

ॐ अस्य श्रीचण्डी कवचस्य ब्रह्माऋषिः अनुष्टुप छन्दः चामुण्डा देवता अङ्गन्यासोक्त मातरो बीजं दिग्बन्ध देवतास्तत्त्वम् श्री जगदम्बा प्रीत्यर्थे सप्तशती पाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः।

ॐ नमश्चण्डिकायै।

मार्कण्डेय उवाच

ॐ यद् - गुह्यं परमं लोके सर्व -रक्षाकरं नृणाम्।
यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह।१॥

ब्रह्मोवाच

अस्ति गुह्य-तमं विप्र! सर्व-भूतोपकारकम्।
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महा-मुने॥२॥

प्रथमं शैल-पुत्री च द्वितीयं ब्रह्म-चारिणी।
तृतीयं चन्द्र-घण्टा च कूष्माण्डा च चतुर्थकम्॥३॥

पञ्चमं स्कन्द-माता च षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं काल-रात्रिश्च महा-गौरीति चाष्टमम्॥४॥

नवमं सिद्धि-दात्री च नव-दुर्गाः प्रकीर्तिताः।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना॥५॥

अग्निना दह्यमानस्तु शत्रु-मध्ये गतो रणे।
विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः॥६॥

न तेषां जायते किञ्चिदशुभं रण-सङ्कटे।
नापदं तस्य पश्यामि शोक-दुःख-भयं न हि॥७॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते।
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि! रक्षसे तान्न संशयः ॥८॥

प्रेत-संस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना।
ऐन्द्री गज-समारूढा वैष्णवी गरुड़ासना ॥९॥

माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखि-वाहना।
लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्म-हस्ता हरि-प्रिया ॥१०॥

श्वेत-रूप-धरा देवी ईश्वरी वृष-वाहना।
ब्राह्मी हंस-समारूढ़ा सर्वाभरण-भूषिता ॥११॥

अस्येता मातरः सर्वाः सर्व-योग-समन्विताः।
नानाभरण-शोभाढ्या नाना-रत्नोपशोभिताः ॥१२॥

दृश्यन्ते रथमारूढ़ा देव्यः क्रोध-समाकुलाः।
शङ्खं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम् ॥१३॥

खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च।
कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम् ॥१४॥

दैत्यानां देह-नाशाय भक्तानामभयाय च।
धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानाञ्च हिताय वै ॥१५॥

नमस्तेऽस्तु महा-रौद्रे! महा-घोर-पराक्रमे।
महाबले! महोत्साहे! महा-भय-विनाशिनि ॥१६॥

त्राहि मां देवि! दुष्प्रेक्ष्ये! शत्रूणां भय-वर्द्धिनि।
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेयामग्नि-देवता ॥१७॥

दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्ग-धारिणी।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृग-वाहिनी ॥१८॥
उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूल-धारिणी।
ऊर्ध्वं ब्रह्माणी मे रक्षेदधस्ताद् वैष्णवी तथा॥१९॥
एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शव-वाहना ।
जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः॥२०॥
अजिता वाम-पार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता ।
शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता ॥२१॥
माला-धारी ललाटे च भ्रुवो रक्षेद् यशस्विनी ।
त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यम-घण्टा च नासिके॥२२॥
शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वार-वासिनी ।
कपोलौ कालिका रक्षेत् कर्ण-मूले तु शाङ्करी॥२३॥
नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिता ।
अधरे चामृत-कला जिह्वायाञ्च सरस्वती॥२४॥
दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठ-देशे तु चण्डिका ।
घण्टिकां चित्र-घण्टा च महामाया च तालुके॥२५॥
कामाक्षी चिबुकं रक्षेद् वाचं मे सर्व-मङ्गला ।
ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठ-वंशे धनुर्धरी॥२६॥
नील-ग्रीवा बहिः-कण्ठे नलिकां नल-कूबरी ।
स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्र-धारिणी॥२७॥
हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च ।
नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत् कुक्षौ रक्षेत् कुलेश्वरी॥२८॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनः-शोक-विनाशिनी ।
हृदये ललिता देवी उदरे शूल-धारिणी॥२९॥
नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा ।
पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिष-वाहिनी॥३०॥
कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विन्ध्य-वासिनी ।
जङ्घे महाबला रक्षेत् सर्व-काम-प्रदायिनी॥३१॥
गुल्फयोर्नारसिंही च पाद-पृष्ठे तु तैजसी ।
पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत् पादाधस्तल-वासिनी॥३२॥
नखान् दंष्ट्रा कराली च केशांश्चैवोर्ध्व-केशिनी ।
रोम-कूपेषु कौबेरी त्वचं वागीश्वरी तथा॥३३॥
रक्त-मज्जा-वसा-मांसान्यस्थि-मेदांसि पार्वती ।
अन्त्राणि काल-रात्रिश्च पित्तञ्च मुकुटेश्वरी॥३४॥
पद्मावती पद्म-कोशे कफे चूड़ामणिस्तथा ।
ज्वालामुखी नख-ज्वालामभेद्या सर्व-सन्धिषु॥३५॥
शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा ।
अहंकारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्म-धारिणी॥३६॥
प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम् ।
वज्र-हस्ता च मे रक्षेत् प्राणं कल्याण-शोभना॥३७॥
रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी ।
सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा ॥३८॥
आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी ।
यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्याञ्च चक्रिणी॥३९॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेन्पशून्मे रक्ष चण्डिके! ।
शिष्यान् (पुत्रान्) रक्षेन्महालक्ष्मी सिद्धिं (भार्यां) रक्षतु भैरवी ॥४०॥

पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेम-करी तथा।
राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता॥४१॥

रक्षा-हीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु ।
तत्सर्वं रक्ष मे देवि! जयन्ती पाप-नाशिनी ॥४२॥

पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः ।
कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति॥४३॥

तत्र तत्रार्थ-लाभश्च विजयः सार्व-कामिकः ।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्॥४४॥

निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः।
त्रैलोक्ये तु भवेत् पूज्यः कवचेनावृतः पुमान् ॥४५॥

इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम्।
यः पठेत् प्रयतो नित्यं त्रि-सन्ध्यं श्रद्धयान्वितः ॥४६॥

दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः।
जीवेद् वर्ष-शतं साग्रमपमृत्यु-विवर्जितः ॥४७॥

नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूता विस्फोटकादयः।
स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिमं चापि यद्विषम् ॥४८॥

अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्र-यन्त्राणि भूतले।
भूचराः खेचराश्चैव जलजाश्चोपदेशिकाः॥४९॥

सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा।
अन्तरिक्ष-चरा घोरा डाकिन्यश्च महा-बलाः॥५०॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ग्रह-भूत-पिशाचाश्च यक्ष-गन्धर्व-राक्षसाः।
ब्रह्म-राक्षस-वेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः ॥५१॥

नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते।
मानोन्नतिर्भवेद् राज्ञस्तेजो-वृद्धि-करं परम् ॥५२॥

यशसा वर्द्धते सोऽपि कीर्ति-मण्डित-भूतले।
जपेत् सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा ॥५३॥

यावद् भूमण्डलं धत्ते सशैल-वन-काननम्।
तावत् तिष्ठति मेदिन्यां सन्ततिः पुत्र-पौत्रिकी ॥५४॥

देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम्।
प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामाया-प्रसादतः ॥५५॥

परमेश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान्।
लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते ॐ ॥५६॥

॥ श्री देव्याः कवचं सम्पूर्णम् ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ अर्गलास्तोत्रम्

ॐ अस्य श्रीअर्गला-स्तोत्र-मन्त्रस्य विष्णुः ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थे सप्तशती पाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः।

ॐ नमश्चण्डिकायै

॥ मार्कण्डेय उवाच ॥

ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥१॥

जय त्वं देवि! चामुण्डे! जय भूतार्ति-हारिणी।
जय सर्व-गते! देवि! काल-रात्रि! नमोऽस्तु ते ॥२॥

मधु-कैटभ-विद्रावि! विधातृ-वरदे नमः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥३॥

महिषासुर-निर्णाशि! भक्तानां सुखदे! नमः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥४॥

रक्त-बीज-क्षये देवि! चण्ड-मुण्ड-विनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥५॥

शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥६॥

वन्दिताङ्घ्रियुगे! देवि! सर्व-सौभाग्य-दायिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥७॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अचिन्त्य-रूप-चरिते! सर्व-शत्रु-विनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥८॥

नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके! दुरितापहे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥९॥

स्तुवद्भ्यो भक्ति-पूर्वं त्वां चण्डिके! व्याधि-नाशिनी।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१०॥

चण्डिके! सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥११॥

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१२॥

विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१३॥

विधेहि देवि! कल्याणं विधेहि परमां श्रियम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१४॥

सुरासुर-शिरो-रत्न-निघृष्ट-चरणेऽम्बिके।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१५॥

विद्या-वन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मी-वन्तं जनं कुरु।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१६॥

प्रचण्ड-दैत्य-दर्पघ्ने! चण्डिके! प्रणताय मे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१७॥

चतुर्भुजे! चतुर्वक्त्र-संस्तुते! परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१८॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कृष्णेन संस्तुते देवि! शश्वद्-भक्त्या सदाम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१९॥

हिमाचल-सुता-नाथ-संस्तुते! परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२०॥

इन्द्राणी-पति-सद्भाव-पूजिते! परमेश्वरि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२१॥

देवि! प्रचण्ड!दोर्दण्ड!दैत्य-दर्प-विनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२२॥

देवि! भक्त-जनोद्दाम-दत्तानन्दोदयेऽम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२३॥

सिर्द्धि (पत्नीं) मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्ग-संसार-सागरस्य कुलोद्भवाम् ॥२४॥

इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महा-स्तोत्रं पठेन्नरः।
सा तु सप्तशती-संख्या-वरमाप्नोति सम्पदाम् ॥२५॥

॥ श्री देव्या अर्गला-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ कीलकस्तोत्रम्

ॐ अस्य श्रीकीलक-मन्त्रस्य शिवऋषिः, अनुष्टुपछन्दः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्री जगदम्बा-प्रीत्यर्थं सप्तशती पाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः।

ॐ नमश्चण्डिकायै

॥ मार्कण्डेय उवाच ॥

विशुद्ध-ज्ञान-देहाय त्रिवेदी दिव्य-चक्षुषे।
श्रेयःप्राप्ति-निमित्ताय नमः सोमार्द्ध-धारिणे ॥१॥

सर्वमेतद् विजानीयान्मन्त्राणामपि कीलकम्।
सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जाप्य-तत्परः ॥२॥

सिद्ध्यन्त्युच्चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि।
एतेन स्तुवतां देवी स्तोत्र-मात्रेण सिद्ध्यति ॥३॥

न मन्त्रो नौषधं तत्र न किञ्चिदपि विद्यते।
विना जाप्येन सिद्ध्येत सर्वमुच्चाटनादिकम् ॥४॥

समग्राण्यपि सिद्ध्यन्ति लोक-शङ्कामिमां हरः।
कृत्वा निमन्त्रयामास सर्वमेवमिदं शुभम् ॥५॥

स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तु तच्च गुप्तं चकार सः ।
समाप्तिर्न च पुण्यस्य तां यथा-वन्नियन्त्रणाम् ॥६॥

सोऽपि क्षेममवाप्नोति सर्वमेव न संशयः।
कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः ॥७॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसीदति।
इत्थंरूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम् ॥८॥

यो निष्कीलां विधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम्।
स सिद्धः स गणः सोऽपि गन्धर्वो जायते नरः ॥९॥

न चैवाप्यटतस्तस्य भयं क्वापीह जायते।
नापमृत्युवशं याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ॥१०॥

ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत न कुर्वाणो विनश्यति।
ततो ज्ञात्वैव सम्पन्नमिदं प्रारभ्यते बुधैः ॥११॥

सौभाग्यादि च यत्किञ्चिद् दृश्यते ललना-जने ।
तत्सर्वं तत्प्रसादेन तेन जाप्यमिदं शुभम् ॥१२॥

शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सम्पत्तिरुच्चकैः।
भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्यमेव तत् ॥१३॥

ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्य-सम्पदः।
शत्रु-हानिः परो मोक्षः स्तूयते सा न किं जनैः ॥१४॥

॥ श्री देव्याः कीलक-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ वेदोक्त रात्रि-सूक्तम्

ॐ रात्री व्यख्यदायती पुरुत्रा देव्यक्षभिः ।
विश्वा अधि-श्रियतोऽधित ॥1॥

ओर्वप्रा अमर्त्या निवतो देव्युद्वतः ।
ज्योतिषा बाधते तमः ॥2॥

निरु स्वसारमस्कृतोषसं देव्यायती ।
अपेदु हासते तमः ॥3॥

सा नो अद्य यस्या वयं नि ते यामन्न विक्ष्महि ।
वृक्षेन वसर्तिं वयः ॥4॥

नि ग्रामासो अविक्षत नि पद्वन्तो नि पक्षिणः ।
नि श्येनासश्चिदर्थिनः ॥5॥

यावयां वृक्यं वृकं यवय स्तेनमूर्म्ये ।
अथा नः सुतरा भव ॥6॥

उप मा पेपिशत्तमः कृष्णं व्यक्तमस्थित ।
उष ऋणेव यातय ॥7॥

उप ते गा इवाकरं वृणीष्व दुहितर्दिवः ।
रात्रिस्तोमं न जिग्युषे ॐ ॥8॥

॥ श्रीवेदोक्तं रात्रि-सूक्तं सम्पूर्णम् ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ चण्डिका-दल-प्रारम्भः ।।

।। ॐ नमश्चण्डिकायै ।।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि चण्डिका-दलमुत्तमम् ।
मन्त्रं विना तु जप्त्वा वै तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ।।1 ।।

ॐ नमो भगवति जय जय चामुण्डे चण्डि चण्डेश्वरि चण्डायुधे! चण्ड-रूप-धारिणी ताण्डव-प्रिये! कुण्डली-भूत-दिङ्-भूत-दिङ्-नाग-मण्डलीकृत-गण्ड-स्थले समस्त-जगदण्ड-संहार-कारिणि परे अनन्तान्त-रूपे! शिवे नर-शिरो-मालालङ्कृत-वक्षस्थले महा-कपाल-भालोज्ज्वलन्मणि-मुकुट-चूडावतंस-चन्द्र-खण्डे महा-भीषणे देवि! महामाये षोडश-कला-परिवृत्तोल्लसिते महादेवासुर-समर-निहत-रुधिरार्द्रीकृतालम्बित-तनु-कमलोद्भासित-करे! सम्पूर्णरुधिर-शोभित-महा-कपोल-वक्त्र-हासिनी दृढ़-तरनि बद्ध्यमानधर-शोभित-महा-कपाले चन्द्र-भासिनी! दृढ़तराबद्धमहा-नाद-सहिते हेम-काञ्ची-दामोज्वलीकृत-महा-मण्डिते! महा-शम्भु-रूपे महा-व्याघ्र-चर्माम्बर-धरे! महा-सर्प-यज्ञोपवीतिनी! महा-श्मशान-भस्मोद्धूलित-सर्व-गात्रे! कालि कंकालि महा-कालि कालाग्नि रुद्र-कालि! काल-संकर्षिणी काल-रात्रि नमो दुष्ट भक्षिणी! नाना-भूत-प्रेत-पिशाच-गण-सहस्र-सञ्चिरिणि नाना-व्याधि-प्रशमनि! सर्व-दुष्ट-प्रमथिनी सर्व-दारिद्र्य-नाशिनी युगे युगे खादित-मांस-खण्डे! गायत्री-विक्षिप्त-कला-कलायमान-कङ्काल-धारिणी! मधु-मांस-रुधिर-सन्तत-विलासिनी सकल-सुरासुर-गन्धर्व-विद्याधर-किन्नर-किम्पुरुषादिभिः स्तूयमाने सर्व-मन्त्राधिभूताधिकारिणि सर्व-शक्ति-प्रधान! सकल-लोक-पावनि सकल-दुरित-प्रक्षालिनि सकल-लोक-जननि! ब्राह्मि माहेश्वरी कौमारि वैष्णवि वाराहि नारसिंहीन्द्राणि चामुण्डे महालक्ष्मी-स्वरूपे! महा-विद्ये योगिनी योगी-श्वरी चण्डिके महा-माये! विश्व-रूपिणि सर्वाभरण-भूषिते अतल-वितल-सुतल-महातल-रसातल-पातालादि-चतुर्दश-भुवनैक-नाथे! ॐ नमः पितामहाय, ॐ नमो नारायणाय, ॐ नमः शिवाय। एवं सकल-लोकैक-जायमाने ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरि! दण्ड-कमण्डलु-धारिणी, शंख-चक्र-गदा-पद्म-धारिणी! परशु-शूल-पिनाक-कण्टक-धारिणी सरस्वति पद्मालये! सावित्री सकल-जगत्-स्वरूपिणि महा-क्रूरे! प्रसन्न-रूप-धारिणी सर्व-मङ्गल-प्रिये! महिषासुर-मर्दिनी कात्यायनि दुर्गे निद्रा-रूपिणी! शर-

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चाप-शूल-कपाल-करवाल-खड्ग-डमरुकाङ्कुश-गदा-परशु-तोमर-भिन्दि-पाल-भुशुण्डि-मुसल-मुग्दर-परिघायुध-दोर्दण्डनि सहस्र-चन्द्रार्क-वह्नि-नयने! इन्द्राग्नि-यम-नैर्ऋति-वरुण-वायु-कुबेर-ईशान-प्रधान-शक्ति-भूते! सप्त-द्वीप-समुद्रोपर्युपरि-महाभ्यासेश्वरि महा-चराचर-प्रपञ्च-तनूदरे! महा-प्रधाने महा-कैलास-पर्वतोद्यान-वन-क्षेत्र-नदी-तीर-देवताद्यायतनालङ्कृते मेदिनी-नाथे! वशिष्ठ-वामदेवादि-मुनि-गण-स्पर्श-चरणार-विन्दे! द्वि-चत्वारिंशद्वर्ण-सहिते पर्याय-स्थाने वेद-वेदाङ्गानेक-शास्त्र-भूते! शब्द-ब्रह्म-मये मातृकादेवि! शिरः संरक्ष रक्ष, मम शत्रून् हुंकारेण नाशय नाशय, भूत-प्रेत-पिशाचानुच्चाटयोच्चाटय, वशी कुरु वशी कुरु, क्षोभय क्षोभय, संक्रामय संक्रामय, विदारय विदारय, द्रावय द्रावय, सकल-चौरान् मूर्ध्नि स्फोटय स्फोटय, सकल-शत्रून् शीघ्रं मारय मारय, हुं फट् स्वाहा।

।। श्रीरुद्र-यामले तन्त्रे सप्तशती-दलं सम्पूर्णम्।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ सप्तशती-हृदय-प्रारम्भः ।।

नोट :- इसमें नवार्ण के अनुसार न्यास-ध्यान करें।

ॐ अस्य श्रीचण्डिका-हृदय-माला-मन्त्रस्य त्रिगुणात्मक ऋषिः, विराट् छन्दः, श्रीमहा-चण्डी देवता, ऐं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, मम अभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

।। ब्रह्मोवाच ।।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि विस्तरेण यथा-तथम्।
चण्डिका-हृदयं गुह्यं शृणुष्वेकाग्र-मानसः ।।

ॐ हां ह्रीं हुँ ऐं स्त्रीं श्रीं ॐ नमो भगवति जय जय ज्वाला-मालिनी! चण्डिके चामुण्डे त्रिदश-मणि-मुकुट-कोटि-निघृष्ट-चरणारविन्दे! गायत्रि सावित्रि सरस्वति महा-सन्ध्ये महा-बाण-कृताभरणे! भैरव-रूप-धारिणी प्रकट-संदष्ट्रोग्र-वदने! घोरे घोरासने नयनोज्वल-ज्वाल-सहस्र-परिवृते! महाट्टहास-धवली-कृत दिगन्तरे! दिवाकर-सहस्र-परिवृत्ते! काम-रूप-धारिणी! महा-मणि-द्योतित-शशि-प्रभा-भासित-सकल-दिगन्तरे! सर्वायुध-परिपूर्णे कपाल-हस्ते गज-गामिन्यौत्तरिण्ये! भूत-वेताल-परिवृत्ते प्रकम्पित-चराचरे! मधु-कैटभ-महिषासुर-धूम्रलोचन-चण्ड-मुण्ड-रक्तबीज-निशुम्भ-शुम्भादि-दैत्य-निष्कण्टिके! कालरात्रि-महामाये शिवे नित्ये त्रिभुवन-धरा-धरे! वामे ज्येष्ठे वरदे रौद्रि अम्बिके कालि कल-बिकरिणि! बल-प्रमथिनी-सर्व-भूत-दमनि मनोन्मय्य-धारिणी! ब्राह्मि माहेश्वरी कौमारि वैष्णवि! वाराही नारसिंहीन्द्राणी चामुण्डे! माहेन्द्रि शिव-दूति महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती च त्रि-स्थिते! नाद-मध्ये स्थिते महोग्र-विषोरग-फणा-फणि-मुकुट-रत्न-ज्वाला-वलि! महाहि-हार-भूषित-पाद-बाहु-कण्ठोत्तमाङ्गे मालाकुले! नव-रत्न-निधि-कोशे, शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गन्धाकाश-वाक्-पाणि-पाद-पायूस्थ-श्रोत्र-त्वक्-चक्षुर्जिह्वा-घ्राण-मध्य-स्थिते! चक्षुष्मति महा-विषोपविघ्ने महा-ज्वालानले! महा-भैरव-स्तुते सर्व-सिद्धि-प्रदे! निर्मले निष्कले नाभ्याधारादि-संस्थिते! परं ज्योतिः-स्वरूपे सोम-सूर्याग्नि-मण्डल-परिवृत्ते! ऊर्ध्व-विशुद्धान्तक-प्रभे विनिर्गत-ब्रह्म-विष्णु-रुद्र-दैवते! परे अपरे

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रभा-भासित-चराचरे पञ्च-विंशति-तत्वावबोधिनी महा-शून्यागमे! पति-बन्धु-संस्थिते भुक्ति-मुक्ति प्रदे! निर्गुणे ऋग्यजुः-सामाथर्वणि पठिते! एह्येहि भगवति स्थूल-सूक्ष्म-परे हुङ्कार-निरूपिते! परम-कारुणिके महाज्वाला-मणे महिषोपरि-गन्धर्व-विद्याधरार्च्चिते! भुजङ्ग-महिमे जृम्भिणि वशीकरिणी जृम्भे मोहे क्षोभे बीज-पंचक-मध्य-स्थिते! महा-योगिनी महा-ज्वर-क्षेत्र-नायिके यक्ष-राक्षस-महा-ज्वर-क्षेत्र-विषोप-विघ्ने! गन्धर्व-विद्याधराराधिते ॐकार-श्रीकार-हस्ते! आं क्रीं अग्नि-पात्रे, द्रां शोषय शोषय, प्लुं प्लावय प्लावय, क्लीं ब्रीं सुकुमारय सुकुमारय, प्लुं नाशय नाशय, सीं उन्मादय उन्मादय, ग्लौं मोहय मोहय, हीं आं हीं आवेशय आवेशय, श्रीं प्रवेशय प्रवेशय, स्त्रीं आकर्षय आकर्षय, हुं हूँ फट् अतीतानागत-वर्तमानान्दिशं विदिशं, ऐं हीं श्रीं श्रावय श्रावय, सर्वं प्रवेशय प्रवेशय, त्रैलोक्यं वश-वर्ति, ऐंकार वशी कुरुष्व, ऐं हीं स्त्रीं द्रावय द्रावय, सर्वं प्रवेशय प्रवेशय, ऐङ्काररचितां वशं कुरु वशं कुरु, ऐं हीं श्रीं हां हीं हूँ हैं हौं हः, हीं श्रीं स्त्रां स्त्रीं स्त्रूं स्त्रैं स्त्रौं स्त्रः मम सर्वकार्याणि साधय साधय हुँ फट् स्वाहा।

एक-विंशति-वारं तु पठेदेवं जपेत्तु वा।
राज-द्वारे श्मशाने च विदेशे शत्रु-मण्डले ।।1 ।।
भूताग्नि-रण-मध्ये च सर्व-कार्याणि साधयेत्।
चण्डिका-हृदयं गुह्यं त्रि-सन्ध्यं कीर्तयेद् द्विजः ।।2।।
सर्व-काम-प्रदं नृणां भुक्ति-मुक्तिं च विन्दति ।।3 ।।

।। श्रीरुद्रयामले तन्त्रे सप्तशती-हृदयं सम्पूर्णम् ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ ब्रह्माण्ड-विजयं नाम दुर्गा-कवचम् ।।

।। नारायण उवाच ।।

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि दुर्गायाः कवचं शुभम् ।
श्रीकृष्णेनैव यद्-दत्तं गो-लोके ब्रह्मणे पुरा ।।1 ।।

ब्रह्मा त्रिपुर-संग्रामे शङ्कराय ददौ पुरा ।
जघान त्रिपुरं रुद्रो यद् धृत्वा भक्ति-पूर्वकम् ।।2 ।।

हरो ददौ गौतमाय पद्माक्षाय च गौतमः ।
यतो बभूव पद्माक्षः सप्त-द्वीपेश्वरो जयी ।।3 ।।

यद् धृत्वा पठनाद् ब्रह्मा ज्ञानवाञ्छक्तिमान् भुवि ।
शिवो बभूव सर्वज्ञो योगिनां च गुरुर्यतः ।
शिव-तुल्यो गौतमश्च बभूव मुनि-सत्तमः ।।4 ।।

ब्रह्माण्ड-विजयस्यास्य कवचस्य प्रजापतिः ।
ऋषिश्छन्दश्च गायत्री देवी दुर्गति-नाशिनी ।।5 ।।

ब्रह्माण्ड-विजये चैव विनियोगः प्रकीर्तितः ।
पुण्य-तीर्थं च महतां कवचं परमाद्भुतम् ।।6 ।।

ॐ ह्रीं दुर्गति-नाशिन्यै स्वाहा मे पातु मस्तकम् ।
ॐ ह्रीं मे पातु कपालं च ॐ ह्रीं श्रीं मम लोचने ।।7 ।।

पातु मे कर्ण-युग्मं च ॐ दुर्गायै नमः सदा ।
ॐ ह्रीं श्रीं मम नासां मे सदा पातु च सर्वतः ।।8 ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ह्रीं श्रीं ह्रीं मम दन्तानि पातु क्लीमोष्ठ-युग्मकम्।
क्रीं क्रीं क्रीं पातु कण्ठं च दुर्गे रक्षतु गण्डकम्॥9॥

स्कन्धं दुर्ग-विनाशिन्यै स्वाहा पातु निरन्तरम्।
वक्षो विपद्-विनाशिन्यै स्वाहा मे पातु सर्वतः॥10॥

दुर्गे दुर्गे रक्षिणी च स्वाहा नाभिं सदाऽवतु।
दुर्गे दुर्गे रक्ष रक्ष पृष्ठं मे पातु सर्वतः॥11॥

ॐ ह्रीं दुर्गायै स्वाहा च हस्तौ पादौ सदाऽवतु।
ॐ ह्रीं दुर्गायै स्वाहा च सर्वाङ्गं मे सदाऽवतु॥12॥

प्राच्यां पातु महा-माया आग्नेयां पातु कालिका।
दक्षिणे दक्ष-कन्या च नैर्ऋत्यां शिव-सुन्दरी॥13॥

पश्चिमे पार्वती पातु वाराही वायव्यां सदा।
कुबेर-माता कौबेर्यामैशान्यामीश्वरी सदा॥14॥

ऊर्ध्वं नारायणी पातु अम्बिकाधः सदाऽवतु।
ज्ञाने ज्ञान-प्रदा पातु स्वप्ने निद्रा सदाऽवतु॥15॥

एवं ते कथितं वत्स! सर्व-मन्त्रौघ-विग्रहम्।
ब्रह्माण्ड-विजयं नाम कवचं परमाद्भुतम्॥16॥

सुस्नाताः सर्व-तीर्थेषु सर्व-यज्ञेषु यत् फलम्॥
सर्व-व्रतोपवासे च तत्-फलं लभते नरः॥17॥

गुरुमभ्यर्च्य विधि-वद् वस्त्रालङ्कार-चन्दनैः।
कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ कवचं धारयेत्तु यः॥18॥

स च त्रैलोक्य-विजयी सर्व-शत्रु-प्रमर्दकः।
इदं कवचमज्ञात्वा भजेद् दुर्गति-नाशिनीम्॥19॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सप्त-लक्ष-प्रजप्तोऽपि न मन्त्रः सिद्धि-दायकः ।।20 ।।

कवचं काण्व-शाखोक्तमुक्तं नारद! सुन्दरम् ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं गोपनीयं सुदुर्लभम् ।।21 ।।

।। श्रीब्रह्म-वैवर्त ब्रह्माण्ड-विजयं नाम दुर्गा-कवचं सम्पूर्णम् ।।
(गणपतिखण्ड 39/3-23)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ मन्त्र-सहितं काली-कवचम्।।

।। नारद उवाच।।

कवचं श्रोतुमिच्छामि तां च विद्यां दशाक्षरीम्।
नाथ! त्वत्तो हि सर्वज्ञ! भद्र-काल्याश्च साम्प्रतम्।।1।।

।। नारायण उवाच।।

शृणु नारद्! वक्ष्यामि महा-विद्यां दशाक्षरीम्।
गोपनीयं च कवचं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्।।2।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कालिकायै स्वाहा च दशाक्षरीम्।
दुर्वासा हि ददौ राज्ञे पुष्करे सूर्य-पर्वणि।।3।।
दश-लक्ष-जपेनैव मन्त्र-सिद्धि कृता पुरा।
पञ्च-लक्ष-जपेनैव पठन् कवचमुत्तमम्।।4।।
बभूव सिद्ध-कवचोऽप्ययोध्यामाजगाम ह।
कृत्स्नां हि पृथिवीं जिग्ये कवचस्य प्रसादतः।।5।।

।। नारद उवाच।।

श्रुता दशाक्षरी विद्या त्रिषु लोकेषु दुर्लभा।
अधुना श्रोतुमिच्छामि कवचं ब्रूहि मे प्रभो।।6।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। नारायण उवाच ।।

शृणु वक्ष्यामि विप्रेन्द्र! कवचं परमाद्भुतम्।
नारायणेन यद्-दत्तं कृपया शूलिने पुरा ।।7।।
त्रिपुरस्य क्षये घोरे शिवस्य विजयाय च।
तदैव शूलिना दत्तं पुरा दुर्वाससे मुनेः ।।8।।
दुर्वाससा च यद्-दत्तं सुचन्द्राय महात्मने।
अति गुह्य-तरं-तत्त्वं सर्व-मन्त्रौघ-विग्रहम् ।।9।।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कालिकायै स्वाहा मे पातु मस्तकम्।
क्लीं कपालं सदा पातु ह्रीं ह्रीं ह्रीं मम लोचने ।।10।।
ॐ ह्रीं त्रिलोचने स्वाहा नासिकां मे सदाऽवतु।
क्लीं कालिके रक्ष रक्ष स्वाहा दन्तं सदाऽवतु ।।11।।
ह्रीं भद्र-कालिके स्वाहा पातु मेऽधर-युग्मकम्।
ॐ ह्रीं ह्रीं क्लीं कालिकायै स्वाहा कण्ठं सदाऽवतु ।।12।।
ॐ ह्रीं कालिकायै स्वाहा कर्ण-युग्मं सदाऽवतु।
ॐ क्रीं क्रीं क्लीं काल्यै स्वाहा स्कन्धं पातु सदा मम ।।13।।
ॐ क्रीं भद्रकाल्यै स्वाहा मम वक्षः सदाऽवतु।
ॐ क्रीं कालिकायै स्वाहा मम नाभिं सदाऽवतु ।।14।।
ॐ ह्रीं कालिकायै स्वाहा मम पृष्ठं सदाऽवतु।
ॐ रक्तबीज-विनाशिन्यै स्वाहा हस्तौ सदाऽवतु ।।15।।
ॐ ह्रीं क्लीं मुण्ड-मालिन्यै स्वाहा पादौ सदाऽवतु।
ॐ ह्रीं चामुण्डायै स्वाहा सर्वाङ्गं मे सदाऽवतु ।।16।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्राच्यां पातु महा-काली आग्नेय्यां रक्त-दन्तिका।
दक्षिणे पातु चामुण्डा नैर्ऋत्यां पातु कालिका ।।17 ।।
श्यामा च वरुणे पातु वायव्यां पातु चण्डिका।
उत्तरे विकटास्या च ऐशान्यां साट्टहासिनी ।।18 ।।
ऊर्ध्वं पातु लोल-जिह्वा मायाद्या पात्वधः सदा।
जले स्थले चान्तरिक्षे पात विश्व-प्रसूः सदा ।।19 ।।
एवं ते कथितं वत्स! सर्व-मन्त्रौघ-विग्रहम्।
सर्वेषां कवचानां च सार-भूतं परात्परम् ।।20 ।।
सप्त-द्वीपेश्वरो राजा सुचन्द्रोऽस्य प्रसादतः।
कवचस्य प्रसादेन मान्धाता पृथिवी-पतिः ।।21 ।।
प्रचेता लोमशश्चैव यतः सिद्धो बभूव ह।
यतो हि योगिनां श्रेष्ठः सौभरिः पिप्पलायनः ।।22 ।।
यदि स्यात् सिद्ध-कवचः सर्व-सिद्धीश्वरो भवेत्।
महा-दानानि सर्वाणि तपांसि च व्रतानि च।
निश्चितं कवचस्यास्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ।।23 ।।
इदं कवचमज्ञात्वा भजेत् कालीं जगत्प्रसूम्।
शत-लक्ष-प्रजप्तोऽपि न मन्त्रः सिद्धि-दायकः ।।24 ।।

।। श्रीब्रह्म-वैवर्त मन्त्र-सहितं काली-कवचं सम्पूर्णम्।।
।। गणपतिखण्ड 37/01-24 ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। लक्ष्मी-कवचम् ।।

।। नारद उवाच ।।

आविर्भूय हरिस्तस्मै किं स्तोत्रं कवचं ददौ?
महा-लक्ष्म्याश्च लक्ष्मीशस्तन्मे ब्रूहि तपोधन ।।1 ।।

।। नारायण उवाच ।।

पुष्करे च तपस्तप्त्वा विरराम सुरेश्वरः ।
आविर्बभूव तत्रैव क्लिष्टं दृष्ट्वा हरिः स्वयम् ।।2 ।।

तमुवाच हृषीकेशो वरं वृणु यथेप्सितम् ।
स च वव्रे वरं लक्ष्मीशस्तस्मै ददौ मुदा ।।3 ।।

वरं दत्वा हृषीकेशः प्रवक्तुमुपचक्रमे ।
हितं सत्यं च सारं च परिणाम-सुखावहम् ।।4 ।।

।। श्री मधु-सूदन उवाच ।।

गृहाण कवचं शक्र! सर्व दुःख-विनाशनम् ।
परमैश्वर्य-जनकं सर्व-शत्रु-विमर्दनम् ।।5 ।।

ब्रह्मणे च पुरा दत्तं संसारे च जल-प्लुते ।
यद् धृत्वा जगतां श्रेष्ठः सवैश्वर्य-युतो विधिः ।।6 ।।

बभूवुर्मनवः सर्वे सवैश्वर्य-युता यतः ।
सवैश्वर्य-प्रदस्यास्य कवचस्य ऋषिर्विधिः ।।7 ।।

पंक्तिश्छन्दश्च सा देवी स्वयं पद्मालया सुर!
सिद्धैश्वर्य-जयेष्वेव विनियोगः प्रकीर्तितः ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यद् धृत्वा कवचं लोकः सर्वत्र विजयी भवेत्।।8।।

मस्तकं पातु मे पद्मा कण्ठं पातु हरि-प्रिया।
नासिकां पातु मे लक्ष्मीः कमला पातु लोचनम्।।9।।

केशान् केशव-कान्तश्च कपालं कमलालया।
जगत्प्रसूर्गण्ड-युग्मं स्कन्धं सम्पत्प्रदा सदा।।10।।

ॐ श्रीं कमल-वासिन्यै स्वाहा पृष्ठं सदाऽवतु।
ॐ श्रीं पद्मालयायै स्वाहा वक्षः सदाऽवतु।
पातु श्रीर्मम कङ्कालं बाहु-युग्मं च ते नमः।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्म्यै नमः पादौ पातु मे सततं चिरम्।
ॐ ह्रीं श्रीं नमः पद्मायै स्वाहा पातु नितम्बकम्।।12।।

ॐ श्रीं महा-लक्ष्म्यै स्वाहा सर्वाङ्गं पातु मे सदा।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै स्वाहा मां पातु सर्वतः।।13।।

एवं ते कथितं वत्स! सर्व-सम्पत्करं परम्।
सर्वैश्वर्य-प्रदं नाम कवचं परमाद्भुतम्।।14।।

गुरुमभ्यर्च्य विधि-वत् कवचं धारयेत्तु यः।
कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ स सर्व-विजयी भवेत्।।15।।

महा-लक्ष्मीर्गृहं तस्य न जहाति कदाचन।
तस्य छायेव सततं सा च जन्मनि जन्मनि।।16।।

इदं कवचमज्ञात्वा भजेल्लक्ष्मीं सुमन्द-धी।
शत-लक्ष-प्रजप्तोऽपि न मन्त्रः सिद्धि-दायकः।।17।।

।। श्रीब्रह्म-वैवर्ते इन्द्रं प्रति हरिणोपदिष्टं लक्ष्मी-कवचं सम्पूर्णम् ।।

।। गणपतिखण्ड 22/01-17।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। सरस्वती-कवचम् ।।

कवचस्यास्य विप्रेन्द्र! ऋषिरेव प्रजापतिः।
स्वयं च बृहती छन्दो देवता शारदाम्बिका।।1।।
सर्व-तत्व परिज्ञाने सर्वार्थ-साधनेषु च।
कवितासु च सर्वासु विनियोगः प्रकीर्तितः।।2।।
ॐ ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा शिरो मे पातु सर्वतः।
श्रीं वाग्देवतायै स्वाहा भालं मे सर्वदाऽवतु।।3।।
ॐ सरस्वत्यै स्वाहा च श्रोत्रं पातु निरन्तरम्।
ॐ श्रीं ह्रीं भारत्यै स्वाहा नेत्र-युग्मं सदाऽवतु।।4।।
ऐं ह्रीं वाग्वादिन्यै स्वाहा नासां मे सर्वतोऽवतु।
ह्रीं विद्याधिष्ठातृ-देव्यै स्वाहा ओष्ठं सदाऽवतु।।5।।
ॐ श्रीं ह्रीं ब्राह्म्यै स्वाहा च दन्त-पंक्तिः सदाऽवतु।
ऐमित्येकाक्षरो मन्त्रो मम कण्ठं सदाऽवतु।।6।।
ॐ श्रीं ह्रीं पातु मे ग्रीवा स्कन्धं मे श्री सदाऽवतु।
श्रीं विद्याधिष्ठातृ-देव्यै स्वाहा वक्षः सदाऽवतु।।7।।
ॐ ह्रीं विद्या-स्वरूपायै स्वाहा मे पातु नाभिकाम्।
ॐ ह्रीं ह्रीं वाण्यै स्वाहा च मम पृष्ठं सदाऽवतु।।8।।
ॐ सर्व-वर्णात्मिकायै पाद-युग्मं सदाऽवतु।
ॐ रागाधिष्ठातृ-देव्यै सर्वाङ्गं मे सदाऽवतु।।9।।
ॐ सर्व-कण्ठ-वासिन्यै स्वाहा प्राच्यां सदाऽवतु।
ॐ ह्रीं जिह्वाग्र-वासिन्यै स्वाहाग्नि दिशि रक्षतु।।10।।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सरस्वत्यै बुध-जनन्यै स्वाहा।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सततं मन्त्र-राजोऽयं दक्षिणे मां सदाऽवतु ।।11 ।।
ॐ ह्रीं श्रीं त्र्यक्षरो मन्त्रो नैर्ऋत्यां मे सदाऽवतु ।
कवि-जिह्वाग्र-वासिन्यै स्वाहा मां वरुणोऽवतु ।।12 ।।
ॐ सदाम्बिकायै स्वाहा वायव्ये मां सदाऽवतु ।
ॐ गद्य-पद्य-वासिन्यै स्वाहा मामुत्तरेऽवतु ।।13 ।।
ॐ सर्व-शास्त्र-वासिन्यै स्वाहैशान्यां सदाऽवतु ।
ॐ ह्रीं सर्व-पूजितायै स्वाहा चोर्ध्वं सदाऽवतु ।।14 ।।
ॐ ह्रीं पुस्तक-वासिन्यै स्वाहा द्यौ मां सदाऽवतु ।
ॐ ग्रन्थ-बीज-रूपायै स्वाहा मां सर्वतोऽवतु ।।15 ।।
एवं ते कथितं विप्र! सर्व-मन्त्रौघ-विग्रहम् ।
इदं विश्व-जयं नाम कवचं ब्रह्म-रूपकम् ।।16 ।।
पुरा श्रुतं धर्म-वक्त्रात् पर्वते गन्ध-मादने ।
तव स्नेहान्मयाख्यातं प्रवक्तव्यं न कस्यचित् ।।17 ।।
गुरुमभ्यर्च्य विधि-वद् वस्त्रालङ्कार-चन्दनैः ।
प्रणम्य दण्ड-वद् भूमौ कवचं धारयेत् सुधीः ।।18 ।।
पञ्च-लक्ष-जपेनैव सिद्धं तु कवचं भवेत् ।
यदि स्यात् सिद्ध-कवचो बृहस्पति-समो भवेत् ।।19 ।।
महा-वाग्मी कवीन्द्रश्च त्रैलोक्य-विजयी भवेत् ।
शक्तोऽस्ति सर्वं जेतुं स कवचस्य प्रसादतः ।।20 ।।
इदं ते काण्व-शास्त्रोक्तं कथितं कवचं मुने!
स्तोत्रं पूजा-विधानं च ध्यानं वै वन्दनं तथा ।।21 ।।

।। श्रीब्रह्म-वैवर्ते सरस्वती-कवचं सम्पूर्णम् ।।

।। प्रकृतिखण्ड 04/71-91।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। महा-षोढा न्यासम् ।।

(उपाम्नायात्मक)

पूर्वाम्नायात्मक महा-षोढा-न्यास के नाम निम्नलिखित है :-

परापरात्परा-न्यासो परात्परातीता तथा।
चित्परा चित्परात्परा सोमे स्वाधिष्ठाने तथा।
सा चित्परात्परातीता तथेयं भुवनेश्वरी।।

पूर्वाम्नाय की अधिष्ठात्री 'भुवनेश्वरी' है। इसमे मन्त्र-पुटित मातृका, मातृका पुटित मन्त्र क्रमशः वाक्, माया, रमा, काम, माया-पुटित रमा, रमा-पुटित काम एवं मूल-मन्त्र आरोह, अवरोह-क्रम से न्यास करना चाहिए। विशेष गुरु-मुख से जान लेना चाहिए।

मणिपुर-दक्षिणाम्नायात्मक महा-षोढा न्यास के नाम निम्नलिखित है :-

ग्रहाश्च राशि-नक्षत्रे योगः करण एव च।
पञ्च-सम्वत्सराः काल्याः मनौ भौमे न्यसेत् तथा।।

ये छः दक्षिणाम्नाय के षोढा-न्यास है। अनाहत-पश्चिमाम्नाय महाषोढा-न्यास के नाम निम्न है :-

घोराष्टकं त्रिखण्डा चैवाक्षरो द्वि-पञ्चकम्।
दादि-षष्ठक-न्यासोऽपि षोढा-न्यासमुदाहृतम्।।
ग्रथि-न्यासं तथा घोरं द्वादशाङ्ग-षडङ्गकम्।
मालिनीं शब्द-राशिं च षड्-दूतं रत्न-पञ्चकम्।।
नवात्मा नव-घोराश्च षोढाश्चैव त्रिविद्यया।
त्रिखण्डं मन्त्र-खण्डं तु मातृ-खण्डं तथैव च।।
रुद्र-खण्डमिति प्रोक्तमनाहते बुध-वासरे।

विशुद्ध-उत्तराम्नायात्मक महाषोढा-न्यास के नाम निम्नलिखित है :-

उग्र-मातृ-क्रमः काली-कुल-पीठानि योगिनी।
देवता-मन्त्र-रूपाणि न्यास्तेऽयं कालिका क्रमे।।

इन चारों चक्रों अर्थात् चार आम्नायों के न्यास से सप्तशती सम्बन्धित है। छः न्यासों

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सततं मन्त्र-राजोऽयं दक्षिणे मां सदाऽवतु ।।11 ।।
ॐ ह्रीं श्रीं त्र्यक्षरो मन्त्रो नैर्ऋत्यां मे सदाऽवतु ।
कवि-जिह्वाग्र-वासिन्यै स्वाहा मां वरुणोऽवतु ।।12 ।।
ॐ सदाम्बिकायै स्वाहा वायव्ये मां सदाऽवतु ।
ॐ गद्य-पद्य-वासिन्यै स्वाहा मामुत्तरेऽवतु ।।13 ।।
ॐ सर्व-शास्त्र-वासिन्यै स्वाहैशान्यां सदाऽवतु ।
ॐ ह्रीं सर्व-पूजितायै स्वाहा चोर्ध्वं सदाऽवतु ।।14 ।।
ॐ ह्रीं पुस्तक-वासिन्यै स्वाहा द्यौ मां सदाऽवतु ।
ॐ ग्रन्थ-बीज-रूपायै स्वाहा मां सर्वतोऽवतु ।।15 ।।
एवं ते कथितं विप्र! सर्व-मन्त्रौघ-विग्रहम् ।
इदं विश्व-जयं नाम कवचं ब्रह्म-रूपकम् ।।16 ।।
पुरा श्रुतं धर्म-वक्त्रात् पर्वते गन्ध-मादने ।
तव स्नेहान्मयाख्यातं प्रवक्तव्यं न कस्यचित् ।।17 ।।
गुरुमभ्यर्च्य विधि-वद् वस्त्रालङ्कार-चन्दनैः ।
प्रणम्य दण्ड-वद् भूमौ कवचं धारयेत् सुधीः ।।18 ।।
पञ्च-लक्ष-जपेनैव सिद्धं तु कवचं भवेत् ।
यदि स्यात् सिद्ध-कवचो बृहस्पति-समो भवेत् ।।19 ।।
महा-वाग्मी कवीन्द्रश्च त्रैलोक्य-विजयी भवेत् ।
शक्तोऽस्ति सर्वं जेतुं स कवचस्य प्रसादतः ।।20 ।।
इदं ते काण्व-शास्त्रोक्तं कथितं कवचं मुने!
स्तोत्रं पूजा-विधानं च ध्यानं वै वन्दनं तथा ।।21 ।।

।। श्रीब्रह्म-वैवर्ते सरस्वती-कवचं सम्पूर्णम् ।।

।। प्रकृतिखण्ड 04/71-91।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। महा-षोढा न्यासम् ।।

(उपाम्नायात्मक)

पूर्वाम्नायात्मक महा-षोढा-न्यास के नाम निम्नलिखित है :-

परापरात्परा-न्यासो परात्परातीता तथा।
चित्परा चित्परात्परा सोमे स्वाधिष्ठाने तथा।
सा चित्परात्परातीता तथेयं भुवनेश्वरी।।

पूर्वाम्नाय की अधिष्ठात्री 'भुवनेश्वरी' है। इसमे मन्त्र-पुटित मातृका, मातृका पुटित मन्त्र क्रमशः वाक्, माया, रमा, काम, माया-पुटित रमा, रमा-पुटित काम एवं मूल-मन्त्र आरोह, अवरोह-क्रम से न्यास करना चाहिए। विशेष गुरु-मुख से जान लेना चाहिए।

मणिपुर-दक्षिणाम्नायात्मक महा-षोढा न्यास के नाम निम्नलिखित है :-

ग्रहाश्च राशि-नक्षत्रे योगः करण एव च।
पञ्च-सम्वत्सराः काल्याः मनौ भौमे न्यसेत् तथा।।

ये छः दक्षिणाम्नाय के षोढा-न्यास है। अनाहत-पश्चिमाम्नाय महाषोढा-न्यास के नाम निम्न है :-

घोराष्टकं त्रिखण्डा चैवाक्षरो द्वि-पञ्चकम्।
दादि-षष्ठक-न्यासोऽपि षोढा-न्यासमुदाहृतम्।।
ग्रथि-न्यासं तथा घोरं द्वादशाङ्ग-षडङ्गकम्।
मालिनीं शब्द-राशिं च षड्-दूतं रत्न-पञ्चकम्।।
नवात्मा नव-घोराश्च षोढाश्चैव त्रिविद्यया।
त्रिखण्डं मन्त्र-खण्डं तु मातृ-खण्डं तथैव च।।
रुद्र-खण्डमिति प्रोक्तमनाहते बुध-वासरे।

विशुद्ध-उत्तराम्नायात्मक महाषोढा-न्यास के नाम निम्नलिखित है :-

उग्र-मातृ-क्रमः काली-कुल-पीठानि योगिनी।
देवता-मन्त्र-रूपाणि न्यास्तेऽयं कालिका क्रमे।।

इन चारों चक्रों अर्थात् चार आम्नायों के न्यास से सप्तशती सम्बन्धित है। छः न्यासों

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

को महा-षोढा न्यास कहते हैं। इनमें पूर्वाम्नायात्मक स्वाधिष्ठान-चक्राधिष्ठात्री भुवनेश्वरी के तीन न्यास और उत्तराम्नायात्मक गुह्यकाली के तीन न्यास मिलकर ईशानाम्नायात्मक महा-षोढा-न्यास हुआ। पूर्वाम्नायात्मक भुवनेश्वरी का अर्द्ध-महा-षोढा-न्यास अर्थात् तीन न्यास, दक्षिणाम्नायात्मक दक्षिणकाली के तीन न्यास मिलकर आग्नेयाम्नायात्मक महालक्ष्मी का महा-षोढा-न्यास हुआ। उत्तराम्नायात्मक गुह्यकाली के शेष तीन न्यास एवं पश्चिमाम्नायात्मक कुब्जिका के तीन न्यास अर्थात् अर्द्ध-न्यास मिलकर वायव्याम्नायात्मक महा-सरस्वती का महा-षोढा-न्यास हुआ। पश्चिमाम्नायात्मक कुब्जिका का शेष अर्द्ध-न्यास और दक्षिणाम्नायात्मक दक्षिण काली का शेष अर्द्ध-न्यास मिलकर नैर्ऋत्याम्नायात्मिका चामुण्डा भद्रकाली का महा-षोढा-न्यास हुआ।

यह उत्तम चरित में ही निहित है। सप्तशती का महा-षोढा-न्यास पश्चिमाम्नायात्मिका त्रिशक्ति-चामुण्डा का महा-षोढा-न्यास है।

दो-दो आम्नायों के न्यास को मिलाकर करने से अधिक शक्तिशाली न्यास बन जाता है।

नोट :-

यहाँ पर केवल दिग्दर्शन एवं प्रक्रिया बता दी गयी है। शेष पूर्व-वत् गुरु-मुख से जानकर इन न्यासों को करने से सद्यः फल-दायिनी सप्तशती का पाठ होता है। यदि किसी को उपर्युक्त न्यास प्राप्त न हो तो उनके स्थान में आम्नायात्मक बीजों का न्यास करने से उसकी पूर्ति हो जाती है।

राव-पुटित माया, माया-पुटित राव ईशान, माया-पुटित काली, काली-पुटित माया आग्नेय, राव-पुटित खेचरी, खेचरी-पुटित राव वायव्य, खेचरी-पुटित काली, काली-पुटित खेचरी, नैर्ऋत्य-अनुलोम-विलोम करने से सात न्यास हो जाते है। ये सभी न्यास मातृका न्यास की तरह होते है अर्थात् मातृका-स्थानों में न्यास किया जाता है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। नवार्ण विधिः ।।

(न्यास)

उपर्युक्त पाठ करके निम्नांकित रूप से नवार्ण मन्त्र के विनियोग, न्यास और ध्यान आदि करें :-

श्रीगणपतिर्जयति

ॐ अस्य श्रीनवार्ण-मन्त्रस्य-ब्रह्म-विष्णु-रुद्रा ऋषयः। गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि। श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यो देवताः, ऐं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

इसे पढ़कर जल गिरायें, तब नीचे लिखे न्यास-वाक्यों में से एक-एक का उच्चारण करके दाहिने हाथ की अंगुलियों से क्रमशः सिर, मुख, हृदय, गुदा दोनों चरण और नाभि का स्पर्श करें।

ऋष्यादि न्यास

ब्रह्म-विष्णु-रुद्र-ऋषिभ्यो नमः शिरसि, गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छन्दोभ्यो नमः मुखे, महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः हृदि, ऐं बीजाय नमः गुह्ये, ह्रीं - शक्तये नमः पादयोः, क्लीं-कीलकाय नमः नाभौ।

'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' - इस मूल मन्त्र से हाथों की शुद्धि करके कर-न्यास करें।

कर-न्यास

कर-न्यास में हाथ की विभिन्न अंगुलियों, हथेलियों और हाथ के पृष्ठ-भाग में मन्त्रों का न्यास किया जाता है, इसी प्रकार अंग-न्यास में हृदयादि अंगों में मन्त्रों की स्थापना होती है। मन्त्रों को चेतन और मूर्तिमान मानकर उन अंगों का नाम लेकर उन मन्त्र-मय देवताओं का ही स्पर्श और वन्दन किया जाता है। ऐसा करने से पाठ या जप करने वाला स्वयं मन्त्र-मय होकर मन्त्र-देवताओं द्वारा सर्वथा सुरक्षित हो जाता है। उसके बाहर-भीतर की शुद्धि होती है, दिव्य बल प्राप्त होता है और साधना निर्विघ्नतापूर्वक पूर्ण तथा परम लाभदायक होती है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः
(दोनों हाथों की तर्जनी अंगुलियों से दोनों अंगुठों का स्पर्श)

ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः
(दोनों हाथों के अंगुठों से दोनों तर्जनी अंगुलियों का स्पर्श)

ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः
(दोनों हाथों के अंगुठों से दोनों मध्यमा अंगुलियों का स्पर्श)

ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः
(दोनों हाथों के अंगुठों से दोनों अनामिका अंगुलियों का स्पर्श)

ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः
(दोनों हाथों के अंगुठों से दोनों कनिष्ठिका अंगुलियों का स्पर्श)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः
(दोनों हथेलियों से उनके पृष्ठभागों का परस्पर स्पर्श)

हृदयादि न्यास

इसमें दाहिने हाथ की पाँचों अंगुलियों से हृदयादि अंगों का स्पर्श किया जाता है।

ॐ ऐं हृदयाय नमः (दाहिने हाथ की पाँचों अंगुलियों से हृदय का स्पर्श)

ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा (दाहिने हाथ की पाँचों अंगुलियों से सिर का स्पर्श)

ॐ क्लीं शिखायै वषट् (दाहिने हाथ की पाँचों अंगुलियों से शिखा का स्पर्श)

ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम् (दाहिने हाथ की अंगुलियों से बायें हाथ का और बायें हाथ से दाहिने हाथ का स्पर्श)

ॐ विच्चे नेत्र-त्रयाय वौषट् (दाहिने हाथ की अंगुलियों के अग्रभाग से दोनों नेत्रों और ललाट के मध्य भाग का स्पर्श)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्
(यह वाक्य पढ़कर दाहिने हाथ के सिर के ऊपर से बायीं ओर से पीछे की ओर ले जाकर दाहिने ओर से आगे की ओर ले आयें और तर्जनी तथा अंगुलियों से बायें हाथ की हथेली पर ताली बजायें।)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चण्डी पञ्चाक्षर न्यासः

ॐ ह्रीं हृदयाय नमः, ॐ चं शिरसे स्वाहा, ॐ डिं शिखायै वषट्,
ॐ कां कवचाय हुम्, ॐ यैं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्रीं चण्डिकायै अस्त्राय फट्।

अथ चक्र-न्यासः

ॐ शम्भु तेजो ज्वल ज्वाला-मालिनी पावके ह्रां नन्दायै अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ शम्भु तेजो ज्वल ज्वाला-मालिनी पावके ह्रीं रक्त-दन्तिकायै तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ शम्भु तेजो ज्वल ज्वाला-मालिनी पावके ह्रूं शाकम्भर्यै मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ शम्भु तेजो ज्वल ज्वाला-मालिनी पावके ह्रैं दुर्गायै अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ शम्भु तेजो ज्वल ज्वाला-मालिनी पावके ह्रौं भीमायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ शम्भु तेजो ज्वल ज्वाला-मालिनी पावके ह्रः भ्रामर्यै करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

ॐ शम्भु तेजो ज्वल ज्वाला-मालिनी पावके ह्रां नन्दायै हृदयाय नमः।
ॐ शम्भु तेजो ज्वल ज्वाला-मालिनी पावके ह्रीं रक्त-दन्तिकायै शिरसे स्वाहा।
ॐ शम्भु तेजो ज्वल ज्वाला-मालिनी पावके ह्रूं शाकम्भर्यै शिखायै वषट् ।
ॐ शम्भु तेजो ज्वल ज्वाला-मालिनी पावके ह्रैं दुर्गायै कवचाय हुम्।
ॐ शम्भु तेजो ज्वल ज्वाला-मालिनी पावके ह्रौं भीमायै नेत्र-त्रयाय वौषट्।
ॐ शम्भु तेजो ज्वल ज्वाला-मालिनी पावके ह्रः भ्रामर्यै अस्त्राय फट्।

अथ माहात्म्य-न्यासः

ॐ मधु-कैटभ-क्षय-माहात्म्याय नमः ब्रह्मरन्ध्रे।
ॐ महिषासुर-सैन्य-क्षय-माहात्म्याय नमः सीमान्ते।
ॐ महिषासुर-क्षय-माहात्म्याय नमः भ्रू-मध्ये।
ॐ शक्रादि-माहात्म्याय नमः नेत्रयोः।
ॐ देव्या दूत-संवाद-माहात्म्याय नमः मुखे।
ॐ धूम्रलोचन-क्षय-माहात्म्याय नमः कर्णयोः।
ॐ चण्ड-मुण्ड-क्षय-माहात्म्याय नमः हृदि।
ॐ रक्तबीज-क्षय-माहात्म्याय नमः नाभौ।
ॐ निशुम्भ-क्षय-माहात्म्याय नमः लिङ्गे।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ शुम्भ-क्षय-माहात्म्याय नमः मूलाधारे।

ॐ स्तुति-माहात्म्याय नमः जानौ।

ॐ फल-माहात्म्याय नमः गुल्फयोः।

ॐ वरदान-माहात्म्याय नमः पादयोः।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ नवार्ण विधिः ।।

।। श्रीगणपतिर्जयति ।।

ॐ अस्य श्रीनवार्ण-मन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-रुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यो देवताः, नन्दा-शाकम्भरी-भीमाः शक्तयः, रक्त-दन्तिका-दुर्गा भ्रामर्यो बीजानि, अग्नि-वायु-सूर्यास्तत्वानि, ऋग्यजुः-साम-वेदाः ध्यानानि, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः ।।1 ।।

ॐ ब्रह्म-विष्णु-रुद्र-ऋषिभ्यो नमः शिरसि।

ॐ गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्-छन्दोभ्यो नमो मुखे।

ॐ महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः हृदि।

ॐ नन्दा-शाकम्भरी-भीमा-शक्तिभ्यो नमो दक्षिण-स्तने।

ॐ रक्तदन्तिका-दुर्गा-भ्रामरी-बीजेभ्यो नमो वाम-स्तने।

ॐ अग्नि-वायु-सूर्य-तत्वेभ्यो नमो नाभौ।

अथवा तन्त्रसारे

ऐं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्।

ॐ ऐं बीजाय नमो गुह्ये।

ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः।

ॐ क्लीं कीलकाय नमः नाभौ।

मूल-मन्त्र से दोनों हाथों को शुद्ध कर नवार्ण के एकादश न्यास करें जिनमें से पहला 'मातृका-न्यास' है। **इस प्रथम न्यास के करने मनुष्य देवी-रूप को प्राप्त होता है।**

सारस्वत न्यासः ।।2 ।।

सारस्वत न्यास के द्वारा मूर्खता (जड़ता) नष्ट होती है :-

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः कनिष्ठयोः। - ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः अनामिकयोः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः मध्यमयोः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः तर्जन्योः।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः अंगुष्ठयोः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः कर-तलयोः।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः कर-पृष्ठयोः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः मणि-बन्धयोः।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः कूर्परयोः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः हृदये।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिरसि। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिखायाम्।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः कवचे। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः नेत्रयोः।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः अस्त्राय फट्। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः पूर्वे।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः आग्नेय्यां। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः याम्याम्।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः नैर्ऋत्ये। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः पश्चिमे।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः वायव्याम्। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः उत्तरे।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः ऐशान्यां। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः ऊर्ध्वे।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः अधः।

मातृका-गण न्यासः ।।3 ।।

इस न्यास को करने से मनुष्य त्रिलोक को जीतता है-

ॐ ह्रीं ब्राह्मी पूर्वतः मां पातु। - ॐ ह्रीं माहेश्वरी आग्नेयां मां पातु।
ॐ ह्रीं कौमारी दक्षिणे मां पातु। ॐ ह्रीं वैष्णवी नैर्ऋत्यां मां पातु।
ॐ ह्रीं वाराही पश्चिमे मां पातु। ॐ ह्रीं नारसिंही वायव्यां मां पातु।
ॐ ह्रीं इन्द्राणी उत्तरे मां पातु। ॐ ह्रीं चामुण्डा ईशान्यां मां पातु।
ॐ ह्रीं व्योमेश्वरी ऊर्ध्वे मां पातु। ॐ ह्रीं सप्तेश्वरी पाताले मां पातु।

षड्-देवी न्यासः ।।4 ।।

इस न्यास को करने से मनुष्य वृद्धावस्था तथा मृत्यु को दूर करता है-

ॐ कमलाङ्कुश-मण्डिता नन्दजा-पूर्वाङ्गं मे पातु।
ॐ खड्ग-पात्र-करा रक्त-दन्तिका दक्षिणाङ्गं मे पातु।
ॐ पुष्प-पल्लव-संयुता शाकम्भरी पृष्ठाङ्गं मे पातु।
ॐ धनुर्बाण-करा दुर्गति-हारिणी दुर्गा वामाङ्गं मे पातु।
ॐ शिरः-पात्र-करा भीमा मस्तकाच्चरणान्तं मे पातु।
ॐ चित्र-कान्ति-भृद्-भ्रामरी चरणाभ्यां शिरः-पर्यन्तं मे पातु।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ब्रह्म न्यासः ।।5।।

इस न्यास को करने से मनुष्य सब कामनाओं को प्राप्त है-

ॐ ब्रह्मा सनातनः पादादि-नाभि-पर्यन्तं मां पातु।

ॐ जनार्दनः नाभेर्विशुद्धि-पर्यन्तं नित्यं मां पातु।

ॐ रुद्रस्त्रिलोचनः विशुद्धेर्ब्रह्मरन्ध्रान्तं मां पातु।

ॐ हंसः पाद-द्वयं मे पातु।

ॐ वैनेतयः कर-द्वयं मे पातु।

ॐ वृषभश्चक्षुषी मे पातु।

ॐ गजाननः सर्वाङ्गानि मे पातु।

ॐ सर्वानन्द-मयो हरिः परापरौ देह-भागौ मे पातु।

महा-लक्ष्म्यादि न्यासः ।।6।।

इस न्यास को करने से मनुष्य सद्गति को प्राप्त होता है :-

ॐ अष्टादश-भुजा-युक्त-महालक्ष्मीर्मध्ये मे पातु।

ॐ अष्ट-भुजा-युक्त-महासरस्वती ऊर्ध्वं मे पातु।

ॐ दश-भुजा-मण्डिता महाकाली अधः मे पातु।

ॐ सिंहः हस्त-द्वयं मे पातु।

ॐ परमहंसोऽक्षि-युग्मं मे पातु।

ॐ दिव्य-महिषारूढ़ो यमः पद-द्वयं मे पातु।

ॐ महेशश्चण्डिका-सहितः सर्वाङ्गानि मे पातु।

बीज-मन्त्र न्यासः ।।7।।

इस न्यास को करने से मनुष्य का रोग-नाश होता है :-

ॐ ऐं नमः शिखायाम्, - ॐ ह्रीं नमो दक्ष-नेत्रे,

ॐ क्लीं नमो वाम-नेत्रे, ॐ चां नमो दक्ष-कर्णे,

ॐ मुं नमो वाम-कर्णे, ॐ डां नमो दक्ष-नासापुटे,

ॐ यैं नमो वाम-नासा-पुटे, ॐ विं नमो मुखे,

ॐ च्चें नमो गुदे।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विलोम-बीज न्यासः ।।8 ।।

इस न्यास को करने से सब दुःख नष्ट हो जाते है :-

ॐ च्वें नमो गुदे,
ॐ विं नमो मुखे,
ॐ यैं नमो वाम-नासा-पुटे,
ॐ डां नमो दक्ष-नासा-पुटे,
ॐ मुं नमो वाम-कर्णे,
ॐ चां नमो दक्ष-कर्णे,
ॐ क्लीं नमो वाम-नेत्रे,
ॐ ह्रीं नमो दक्ष-नेत्रे,
ॐ ऐं नमः शिखायाम्।

व्याप्ति न्यासः ।।9 ।।

इस नवम न्यास के करने से देवत्व प्राप्त होता है :-

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः मस्तकाच्चरण-पर्यन्तं पूर्वाङ्गे।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः मस्तकाच्चरणाविधि पृष्ठे।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः मस्तकाच्चरण-पर्यन्तं दक्षिणाङ्गे।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः मस्तकाच्चरणावधि वामाङ्गे।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः मस्तकाद् पादान्तम्।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः पादादि शिरोऽन्तम्।

षडङ्ग न्यासः ।।10 ।।

इस न्यास को करने से तीनों लोक वश में होते है :-

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः हृदयाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः शिरसे स्वाहा।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः शिखायै वषट्।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः कवचाय हुम्।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः नेत्र-त्रयाय वौषट्।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः अंस्त्राय-फट्।

।। अथ एकादश न्यासः ।।

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाण-भुशुण्डी-परिघायुधा ।।1 ।।
सौम्या-सौम्य-तराशेष-सौम्येभ्यस्त्वति-सुन्दरी ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ।।2 ।।
यच्च किञ्चित् क्वचिद् वस्तु सदसद् वा खिलात्मिके।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा ।।3 ।।
यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पातात्ति यो जगत्।
सोऽपि निद्रा-वशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ।।4 ।।
विष्णुः शरीर-ग्रहणमहमीशान एव च।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत् ।।5 ।।

आद्यं 'ऐं' बीजं कृष्ण-वर्णं ध्यात्वा सर्वाङ्गे विन्यसामि।

पहले 'ऐं' बीज को श्याम रंग का सम्पूर्ण शरीर में ध्यान करें, तत्पश्चात् :-

ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके!
घण्टा-स्वनेन नः पाहि चाप-ज्या-निःस्वनेन च ।।1 ।।
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके! रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्म-शूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ।।2 ।।
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थ-घोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ।।3।।
खड्ग-शूल-गदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके!
कर-पल्लव-सङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ।।4 ।।

द्वितीयं 'ह्रीं' बीजं सूर्य-सदृशं ध्यात्वा सर्व (पृष्ठ) तो विन्यसामि।

दूसरे 'ह्रीं' बीज को सूर्य की तरह पूर्ण शरीर में ध्यान करे, तत्पश्चात् :-

ॐ सर्व-स्वरूपे सर्वेशे सर्व-शक्ति-समन्विते!
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि! दुर्गे देवि! नमोऽस्तु ते ।।1 ।।
एतत्ते वदनं सौम्यं लोचन-त्रय-भूषितम्।
पातु नः सर्व-भूतेभ्यः कात्यायनि! नमोऽस्तु ते ।।2 ।।
ज्वाला-करालमत्युग्रमशेषासुर-सूदनम् ।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि! नमोऽस्तु ते ।।3 ।।
हिनस्ति दैत्य-तेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि! पापेभ्यो नः सुतानिव ।।4 ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

असुरासृग्वसा-पङ्क-चर्चितस्ते करोज्ज्वलः।
शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके! त्वां नता वयम्॥5॥

तृतीयं 'क्लीं' बीजं स्फटिकाभं ध्यात्वा सर्वाङ्गे विन्यसामि।

अन्त में तीसरे 'क्लीं' बीज को चन्द्रमा-समान सब शरीर में ध्यान करे।

॥ मूल षडङ्ग न्यास॥

ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, - ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः,
ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः,
ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः,
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ऐं हृदयाय नमः, - ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा,
ॐ क्लीं शिखायै वषट्, ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्,
ॐ विच्चे नेत्राभ्यां वौषट्,
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।

॥ अथाक्षर-न्यासः तन्त्रान्तरे॥

ॐ ऐं नमः शिरसि, - ॐ ह्रीं नमः नेत्रयोः,
ॐ क्लीं नमः ललाटे, ॐ चां नमः भ्रुवोः,
ॐ मुं नमः कर्णयोः, ॐ डां नमः गण्डयोः,
ॐ यै नमः मुखे (वदने), ॐ विं नमः दन्त-पंक्त्योः,
ॐ च्चें नमः जिह्वायां, ॐ ऐं नमः स्कन्धयोः,
ॐ ह्रीं नमः कण्ठे, ॐ क्लीं नमः भुजयोः,
ॐ चां नमः हृदि, ॐ मुं नमः पार्श्वयोः,
ॐ डां नमः पृष्ठे, ॐ यैं नमः नाभौ,
ॐ विं नमः लिङ्गे, ॐ च्चें नमः कट्योः,
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः गुह्ये,
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः करयोः,
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः पादयोः,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः सर्वाङ्गे।

॥ अथ दिङ्-न्यासः ॥

ॐ ऐं प्राच्यै नमः, ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः,
ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः, ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः,
ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः, ॐ क्लीं वायव्यै नमः,
ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः, ॐ विच्चे ईशान्यै नमः,
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः,
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

॥ अक्षर-न्यासः ॥

निम्नांकित वाक्यों को पढ़कर क्रमशः शिखा आदि का दाहिने हाथ की अंगुलियों से स्पर्श करें :-

ॐ ऐं नमः शिखायाम्, – ॐ ह्रीं नमः दक्षिण-नेत्रे,
ॐ क्लीं नमः वाम-नेत्रे, ॐ चां नमः दक्षिण-कर्णे,
ॐ मुं नमः वाम-कर्णे, ॐ डां नमः दक्षिण-नासा-पुटे,
ॐ यैं नमः वाम-नासा-पुटे, ॐ विं नमः मुखे,
ॐ च्चें नमः गुह्ये।

इस प्रकार न्यास करके मूलमन्त्र से आठ बार व्यापक न्यास करें (दोनों हाथों द्वारा सिर से लेकर पैर तक के सभी अङ्गों का स्पर्श करें, तत्पश्चात् प्रत्येक दिशा में चुटकी बजाते हुए न्यास करें)।

॥ दिङ्-न्यासः ॥

ॐ ऐं प्राच्यै नमः, – ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः,
ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः, ॐ ही नैर्ऋत्यै नमः,
ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः, ॐ क्लीं वायव्यै नमः,
ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः, ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः,
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यहाँ पर मानसोपचारों से पूजन करके ध्यान करें, यथा :-

खड्गं चक्र-गदेषु चाप-परिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः,
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग-भूषावृताम्।
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकां,
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्।।1।।

अक्ष-स्रक्परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां,
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह-महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम्।।2।।

घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुसले चक्रं धनुः सायकं,
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्।
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्।।3।।

फिर 'ऐं ह्रीं अक्ष-मालिकायै नमः' इस मन्त्र से माला की पूजा करके प्रार्थना करे :-

ॐ मां माले महा-माये सर्व-शक्ति स्वरूपिणि!
चतुवर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।
ॐ अविघ्नं कुरु माले! त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जप-काले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये।।

ॐ अक्ष-मालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्व-मन्त्रार्थ-साधिनि! साधय साधय सर्व-सिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा।।

इसके बाद **"ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे"** इस मन्त्र का जप १०८ बार करें तथा निम्न श्लोक को पढ़कर देवी के वाम हस्त में जप समर्पित करें :-

गुह्यातिगुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत्-कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि! त्वत्-प्रसादान्महेश्वरि।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। आम्नाय मन्त्रोद्धारः ।।

त्रयोदश-वर्णा कालीनाम् महा-काली-पदं वदेत्। ईशानाम्नाय-मन्त्रोद्धारः-ततः विच्चे-पदं वदेदीशानाम्नाय-नायिका।। रमाम्नाय मन्त्रोद्धारः-त्रयोदश-वर्णा रमाश्च माया महा-लक्ष्मी-पदं वदेत्।। आग्नेयाम्नाय-मन्त्रोद्धारः-ततः विच्चे-पदं वदेदाग्नेयाम्नाय-नायिका।। वायव्याम्नाय-मन्त्रोद्धारः-त्रयोदश-वर्णा वाग्काम-सरस्वती-पदं वदेत्। ततः विच्चे-पदं वदेत् वायव्याम्नाय-नायिका।। नैर्ऋत्याम्नाय-मन्त्रोद्धारः-वाक्-माया-काम-बगला-रमा-माया-काम-विच्चे। नैर्ऋत्याम्नाय-नायिका नवार्ण-विद्यां भजेत्।।

।। उपाम्नायेश्वरी पश्चिमाम्नायात्मिका त्रिशक्ति चामुण्डा मन्त्रोद्धारः ।।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि चामुण्डाया महा-मनुम्।
नव-दुर्गात्मकं यस्य सेवनाद् भुक्ति-मुक्तये।।
सुरथो यत् प्रसादेन राज्यं प्राप्याभवन्मनुः।
संसार-बन्ध-निर्णाशि ज्ञानमाप्तं समाधिना।।
मार्कण्डेय-पुराणोक्तं चरित-त्रितयं स्तवः।
जपाद्यस्य फलं दद्यात् तं मनुं वच्मि साम्प्रतम्।।
वाग्-लज्जा-काम-बीजानि चामुण्डायै पदं वदेत्।
विच्चे नवार्ण-मन्त्रोऽयं शक्ति-मन्त्रोत्तमोत्तमः।।
ब्रह्म-विष्णु-महेशास्तु मुनयोऽस्य प्रकीर्त्तिताः।
गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् च छन्दास्त्रयमुदीरितम्।।
देवतास्य महाकाली-महालक्ष्मी-सरस्वती।
नन्दा-शाकम्भरी-भीमा-शक्ति-त्रयमुदाहृतम्।।
तिस्रोऽस्य शक्तयो दुर्गा-भ्रामरी-रक्तदन्तिका।
अग्नि-वायु-भगास्तत्त्वं प्राग्-वदृष्यादिकं न्यसेत्।।

ततः षडङ्गं कुर्वीत विभक्तैर्मूल-वर्णकैः। एकेनैकेन चैकेव चतुर्भिर्युग्मकेन च। नस्तेनैव मन्त्रेण कुर्यादंगानि षट्-क्रमात्।

नैर्ऋत्याम्नाय-मन्त्रोद्धारः-वाक्-माया-काम-बगला-माया-काम-विच्चे। नैर्ऋत्याम्नाय-नायिका नवार्ण-विधा भजेत्।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ सप्तशती-न्यासः ।।

।। ॐ गणाधिपतये नमः ।। ॐ नमश्चण्डिकायै ।।

अथ प्रथम-मध्यमोत्तम-चरितानां ब्रह्म-विष्णु-रुद्रा-ऋषयः। श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यो देवताः। गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छन्दांसि। नन्दा-शाकम्भरी-भीमाः शक्तयः। रक्त-दन्तिका-दुर्गा-भ्रामर्यो बीजानि। अग्नि-वायु-सूर्यास्तत्त्वानि। ऋग्-यजुस्साम-वेदा ध्यानानि। सकल-कामना-सिद्धये श्री महाकाली-महालक्ष्मी-महारस्वती-देवता-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

।। तत्रादौ न्यासः ।।

खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाण-भुशुण्डी-परिघायुधा ।।1 ।। अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।।
शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके!
घण्टा-स्वनेन नः पाहि चाप-ज्या-निःस्वनेन च ।।2 ।। तर्जनीभ्यां नमः ।।
प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके! रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्म-शूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ।।3 ।। मध्यमाभ्यां नमः ।।
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थ-घोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ।।4।। अनामिकाभ्यां नमः ।।
खड्ग-शूल-गदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके!
कर-पल्लव-सङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ।।5 ।। कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।।
सर्व-स्वरूपे सर्वेशे सर्व-शक्ति-समन्विते!
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि! दुर्गे देवि! नमोऽस्तु ते ।।6 ।। करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः ।।

इसी प्रकार हृदयादि न्यास करें :-

खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाण-भुशुण्डी-परिघायुधा ।।1 ।। हृदयाय नमः ।।
शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके!
घण्टा-स्वनेन नः पाहि चाप-ज्या-निःस्वनेन च ।।2 ।। शिरसे स्वाहा ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके! रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्म-शूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ।।3।। शिखायै वषट्।।
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थ-घोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ।।4।। कवचाय हुम्।।
खड्ग-शूल-गदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके!
कर-पल्लव-सङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ।।5।। नेत्रत्रयाय वौषट्।।
सर्व-स्वरूपे सर्वेशे सर्व-शक्ति-समन्विते!
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि! दुर्गे देवि! नमोऽस्तु ते।।6।। अस्त्राय फट्।।

।। ध्यान ।।

विद्युद्दाम-सम-प्रभां मृगपति-स्कन्ध-स्थितां भीषणाम्।
कन्याभिः करवाल-खेट-विलसद्धस्ताभिरासेविताम्।।
हस्तैश्चक्र-गदासि-खेट-विशिखाँश्चापं गुणं तर्जनीं।
विभ्राणामनलात्मिकां शशि-धरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। श्री काली सूक्तम् ।।

ॐ अस्य श्रीत्रिमूर्ति-महाकाली-सूक्तस्य सदाशिव ऋषिः। त्रिष्टुबनुष्टुब्जगत्यश्च्छन्दांसि। श्री महाकाली देवता, श्रीमहाकाली-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे सप्तशती-पाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः।

ॐ ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, - ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः,
ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः,
ॐ ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रां हृदयाय नमः, - ॐ ह्रीं शिरसे स्वहा, - ॐ ह्रूं शिखायै वषट्,
ॐ ह्रैं कवचाय हुम्, ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

।। ध्यान ।।

घोरां भीम-पराक्रमां दश-करैः खड्गेषु शूलं गदा,
चक्रं पाश-भुशुण्डिके च परशुं चापं शिरो विभ्रर्तीं।
वागीशां मधु-कैटभ-प्रमथिनीं ब्रह्मार्ति-हन्त्रीं परां,
त्रिंशल्लोचन-मण्डितां दश-मुखीं वन्दे महा-कालिकाम्।।

।। राजोवाच ।।

मुने! कथय सर्वज्ञ! भूयः किञ्चिदनुत्तमम्। तत्त्वमेतस्य सर्वस्य येन सिद्धिरवाप्यते।।

।। ऋषिरुवाच ।।

भूयः शृणु महाभाग! देवी-महात्म्यमुत्तमम्।
विना येन स्तवश्चायं निर्जीवो नृप-नन्दन।।
दृष्ट्वा शुम्भं विनिहतं दारुणं देव-कण्टकम्।
आजग्मुः परमानन्दाद् विष्णु-ब्रह्म-महेश्वराः।।
देव्याः स्तुतिं समाधातुं गतास्तल्लक्ष्य-संयताः।
आज्ञामादाय देवेश्याः कर्तुं दर्शनमादरात्।।
श्रद्धाञ्जलि-पुटाः साक्षात्तुष्टुवुः क्रमशः शिवाम्।
लोकानां च हितार्थाय देवी-सूक्तानि पार्थिव।।
ब्रह्म-सरस्वती-सूक्तं लक्ष्मी-सूक्तं जनार्दनः।
सूक्तं तथा महा-काल्यां शङ्करः स्वयमब्रवीत्।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। महाकाली सूक्तम् ।।

(पौराणिकम्)

।। शिव वाच ।।

सुन्दरी त्रिपुरा कामा कामिनी साधक-प्रिया।
अमोघ-सत्य-वचना विमोही मोह-रूपिणी ।।1 ।।

अमृतेशी च कल्याणी कारुण्य-करुणा-कला।
कलातीता कोमलान्तः-करणा विश्व-नायिका ।।2 ।।

विघ्न-कर्त्री विघ्न-हन्त्री विघ्नेशी विघ्न-साक्षिणी।
कामाख्या काम-निलया कामेशी भग-मालिनी ।।3 ।।

त्रिखण्डा योनि-मुद्रा च धेनु-मुद्रा च खेचरी।
पाशाङ्कुशा द्राविणी च मोहिनी मद-भञ्जिनी ।।4 ।।

मद-प्रिया दुराराध्या काली काल-विनाशिनी।
काष्ठा कुलेशी कल्याणी स्वकल्पा कल्प-रूपिणी ।।5 ।।

कोमलाङ्गी विश्व-माता युगेशी च युगङ्करी।
ब्रह्म-विष्णु-विमोहा च मोहिनी स्तम्भिनी परा ।।6 ।।

अमोघा सत्य-सङ्कल्पा सत्यासत्य-विनाशिनी।
सत्य-ग्रामा सत्य-वहा सत्य-वश्या जन-प्रिया ।।7 ।।

शरीर-वासिनी वामा निर्मदा वाम-दक्षिणा।
कपाल-कुण्डला काली काल-भीति-विनाशिनी ।।8 ।।

गान-प्रिया च गीताङ्गी सुगीता धर्म-शालिनी।
विश्व-योनिर्विश्व-माता विश्व-वन्द्या कृपामयी ।।9 ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। महाकाली सूक्तम् ।।

(तन्त्रोक्तम्)

।। शिव उवाच ।।

शिवामनिन्द्यां विविध-प्रभावां कालीं कला-मालिनीं विश्व-वन्द्याम्।
कपाल-खट्वाङ्ग-धरा नृ-मुण्ड-मालां विभूषां मृग-चर्म-शोभाम्।।1।।

सशुष्क-मांसां च शवासनस्थां विभीषणां भीषयन्तीं सुरारीन्।
रक्त-प्रियां मांस-मदावि-पूर्णा कालीं शरण्यां शरणं व्रजामि।।2।।

सुधोष-बीजं च कपीश्वरं च चिन्ता-मणिः कुब्जिक-काम-रूपे।
विद्यासु विद्यासु च काम-राजं कामः कला-मालिनी काम-राजम्।।3।।

वह्नेर्वर्धूर्मन्त्र-राजोऽयमीशे! विश्वं पुनातीश्वरि देवि! वन्द्ये!
मन्त्रेण चान्येन सिध्यन्ति सर्वाः सुसिद्धयः सर्व-जगन्निवासे।।4।।

पञ्चार-युग्मं च त्रिकोण-युग्मं पुनश्च पञ्चार-युगेन बद्धम्।
कला-प्रकोष्ठं किल भू-गृहं च यन्त्रेश्वरं ते च पदाब्ज-वासम्।।5।।

सम्पूज्य यन्त्रं तव विश्व-नायिके! निष्पापिनस्ते सहसा भवन्ति।
ये साधकास्तव मार्गानुसारिणः कुलानुवृत्या परमाः पवित्राः।।6।।

ते सिद्धिमृद्धिं च वशोऽनुगम्यां नृणां वशीकृत्य गृणन्ति भूपाः।
समस्त-मन्त्रेण विधाय चांग-न्यासादिकं भक्ति-सुभाव-युक्ताः।।7।।

ते किंकरी-कृत्य गृणंति देवानीत्से जगत्येव विभूति-युक्ते।
वदामि चान्यं न श्रृणोमि चान्यं गृणामि नान्यं न विचिन्तयामि।।8।।

स्मरामि नान्यं न भजामि चान्यं ध्यायामि नान्यं न वितर्कयामि।
गायामि नान्यं तव मन्त्र-पादात्त्वां विश्व-योनिं शरणं प्रपद्ये।।9।।

येषां न दैवं त्वमिहासि देवि! नाराधयन्तीह च ते कुबुद्धयः।
तेऽन्धंतमः प्रविशन्तीह लोके तेषां माभूद्दर्शनं महात्मनाम्।।10।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। ऋषि उवाच ।।

इदं वाक्यं समाकर्ण्य परामृत-संमितम् ।
प्रसन्नाऽभून्महाकाली व्रियतामीप्सितो वरः ।।11 ।।

एवमुक्त्वा विशालाक्षी शम्भोरानन्द-दायिनी ।
प्रसन्ना परमाह्लाद-संयुता शिव-भाषणात् ।।2 ।।

।। श्रीदेव्युवाच ।।

व्रियतां मनसोऽभीष्टो वरो जगति दुर्लभः ।
दास्याम्यद्याभि-दातव्यं तव स्तुत्या वशी-कृता ।।13 ।।

।। शिव उवाच ।।

कुलाचारेण ते देवि! मतिर्मेऽस्तु कदाचन ।
शिथिला देव-देवेशि! सूक्तं च सकलं तव ।।14 ।।

।। श्रीदेव्युवाच ।।

एवमस्त्विति चोक्ताथ तिस्रो देव्यः सनातनाः ।
अन्तर्धिमाययुः परमा एकस्मिन्नास्थिताऽभवन् ।।15 ।।

अथ ताँस्तुवतो देवान् प्रोवाच वचनं मुदा ।
सन्तोषयन्ती च मुहुर्लोकानुग्रह-तत्परा ।।16 ।।

।। श्रीदेव्युवाच ।।

शृणुध्वं प्रीति-संयुक्ता ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः ।
देवी-सूक्तं परं ध्यायन् भविष्यति वरार्थदम् ।।17 ।।

देवी-सूक्तं विना देवा ये च सप्तशती नराः ।
श्रोष्यन्ति च पठिष्यन्ति तेषां शापः पदे पदे ।।18 ।।

देवी-सूक्तं विना पाठो ह्यरण्ये रोदनं यथा ।
स्तोत्रोच्चारेण चानेन पूर्णं स्तोत्रमभूदिदम् ।।19 ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

॥ देवा ऊचुः ॥

मातः! सप्तशती-स्तोत्र-फल-श्रुतिमिहोच्यताम् ।
यां समाकर्ण्य जीवानां विश्वासो जायते भृशम् ॥20॥

॥ श्रीमहाकाली-सूक्तं सम्पूर्णम् ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ प्रथमचरित्रारम्भः ।।

।। श्रीगुरवे नमः ।। ॐ नमश्चण्डिकायै ।।

ॐ प्रथम चरितस्य ब्रह्मा ऋषिः, महाकाली देवता, गायत्री छन्दः, नन्दा शक्तिः, रक्त-दन्तिका बीजम्, अग्निस्तत्त्वम्, ऋग्वेदः स्वरूपम्। श्रीमहाकाली-प्रीत्यर्थे प्रथम-चरित-पाठे विनियोगः।

।। ध्यानम् ।।

खट्वाङ्गं कुश-पाश-शूल-वर-कृद्-भी-त्राण-पात्रं शिरः,
कुम्भासि ज्वलितोद्भटैर्भुज-वरैराभासमानां शिवाम्।
रुद्र-स्कन्ध-गतां शरच्छशि-निभां पञ्चाननां सुन्दरीं,
पञ्चभ्यक्ष-विराजितां भगवतीं श्रीसिद्धि-लक्ष्मीं भजे ।।

(क)

ॐ ब्राह्मी-वैष्णवी-भद्राण्यष्ट-भुजां च चतुर्मुखाम्।
त्रिनेत्रां खड्गिनीं शूलां पद्म-चक्र-मदा-धराम्।
केशं वराभयं चैव धारिणीं मोद-रूपिणीम्,
पीताम्बर-धरां देवीं नानालङ्कार-भूषिताम् ।।
तेजः-पुञ्ज-धरां श्रेष्ठां ध्यायेद् बाल-कुमारिकाम् ।।

(ख)

ब्राह्मीं च वैष्णवीं भद्रां षड्-भुजां च चतुर्मुखाम्,
त्रिनेत्रां खड्ग-शूलाभिः पद्म-चक्र-गदा-धराम्।
पीताम्बर-धरा देवीं नानालङ्कार-भूषिताम्,
तेजः-पुञ्ज-धरां श्रेष्ठां ध्यायेद् बाल-कुमारिकाम्।
पूर्वाम्नाय-मयीं सिद्ध-लक्ष्मीमेकादशाक्षराम्,
ईशानाम्नायगां चैव पूर्वाम्नायगाम् ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(ग)

शवासनां तप्त-सुवर्ण-कान्तिं, दोर्भिः सुचर्मासि-वराभयाढ्याम्।
चन्द्रार्ध-चूड़ां धृत-मुण्ड-मालां श्रीरक्त-दन्तां मनसा स्मरामि।।

2. उत्तराम्नायात्मिका पञ्च-वक्त्रा-महाकाली-ध्यानम् :-

पञ्च-वक्त्रां महा-रौद्रीं प्रति-वक्त्रं त्रिलोचनाम्।
शक्ति-शूल-धनुर्वाण-खेट-खड्ग-वराभयाम्।।1।।

दक्षादक्ष-भुजैर्देवीं विभ्राणां भोगि-भूषणाम्।
अर्ध-चन्द्र-जटा-युक्तां जिह्वा-ललन-भीषणाम्।।2।।

निर्मांसां मेदुरामस्थि-पञ्जरां मुण्ड-मालिनीम्।
मत्त-व्यालोपवीताङ्गीं भूत-वेताल-वेष्टिताम्।।3।।

मेदो-वसोपलिप्ताङ्गीं महा-प्रेतासन-स्थिताम्।
ध्यात्वैव सर्वदा साध्यं साधयेन्मनसि स्थिताम्।।4।।

उत्तरां पञ्च-वक्त्रां च महा-कालीं समर्चयेत्।
संयुज्येशानगां दिव्यां शिवां च पूजयेत् सदा।।5।।

3. ईशानाम्नायात्मिका-नवाक्षरा-दशवक्त्रा-महाकाली-ध्यानम् :-

खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघान् छूलं भुशुण्डीं शिरः,
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग-भूषावृताम्।
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकाम्,
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजौ हन्तु मधु-कैटभम्।।1।।

ईशानाम्नायगां चैव दश-वक्त्रां नवाक्षराम्।
महा-कालीं सदा ध्यायेद् भक्तिदां ज्ञान-पोषिकाम्।।2।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ नमश्चण्डिकायै।

॥ ॐ ऐं मार्कण्डेय उवाच ॥

सावर्णिः सूर्य-तनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः।
निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद् गदतो मम ॥१॥

ॐ ऐं श्रां आद्यायै नमः स्वाहा॥१॥

महामायानुभावेन यथा मन्वन्तराधिपः।
स बभूव महा-भागः सावर्णिस्तनयो रवेः ॥२॥

ॐ ऐं ह्रीं काल्यै नमः स्वाहा॥२॥

स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वं चैत्र-वंश-समुद्भवः।
सुरथो नाम राजाऽभूत् समस्ते क्षिति-मण्डले ॥३॥

ॐ ऐं क्लीं कराल्यै नमः स्वाहा॥३॥

तस्य पालयतः सम्यक् प्रजाः पुत्रानिवौरसान्।
बभूवुः शत्रवो भूपाः कोला-विध्वंसिन स्तदा ॥४॥

ॐ ऐं श्रीं महा-काल्यै नमः स्वाहा॥४॥

तस्य तैरभवद् युद्धमति-प्रबल-दण्डिनः।
न्यूनैरपि च तैर्युद्धैः कोला-विध्वंसिभिर्जितः ॥५॥

ॐ ऐं प्रीं कल्याण्यै नमः स्वाहा॥५॥

ततः स्वपुरमायातो निज-देशाधिपोऽभवत्।
आक्रान्तः स महा-भागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः ॥६॥

ॐ ऐं ह्रीं कलावत्यै नमः स्वाहा॥६॥

अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्य दुरात्मभिः।
कोशो बलं चापहृतं तत्रापि स्वपुरे ततः ॥७॥

ॐ ऐं ह्रीं महा-काल्यै नमः स्वाहा॥७॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ततो मृगया-व्याजेन हृत-स्वाम्यः स भूपतिः ।
एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम् ॥८॥

ॐ ऐं स्त्रों कलि-दर्पघ्न्यै नमः स्वाहा ॥८॥

स तत्राश्रममद्राक्षीद् द्विज-वर्यस्य मेधसः ।
प्रशान्त श्वापदाकीर्णं मुनि-शिष्योपशोभितम् ॥९॥

ॐ ऐं प्रें कपर्दीश-कृपान्वितायै नमः स्वाहा ॥९॥

तस्थौ कञ्चित्स कालं च मुनिना तेन सत्कृतः ।
इतश्चेतश्च विचरंस्तस्मिन् मुनि-वराश्रमे ॥१०॥

ॐ ऐं म्रीं कालिकायै नमः स्वाहा ॥१०॥

सोऽचिन्तयत् तदा तत्र ममत्वाकृष्ट-चेतनः ।
मत्-पूर्वैः पालितं पूर्वं मया हीनं पुरं हि तत् ॥११॥

ॐ ऐं ह्रीं काल-मात्र्यै नमः स्वाहा ॥११॥

मद् भृत्यैस्तैरसद्-वृत्तैर्धर्मतः पाल्यते न वा ।
न जाने स प्रधानो मे शूर-हस्ती सदा-मदः ॥१२॥

ॐ ऐं क्लीं कालानल-सम-द्युत्यै नमः स्वाहा ॥१२॥

मम वैरि-वशं यातः कान् भोगानुपलप्स्यते ।
ये ममानुगता नित्यं प्रसाद-धन-भोजनैः ॥१३॥

ॐ ऐं स्त्रीं कपर्दिन्यै नमः स्वाहा ॥१३॥

अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य कुर्वन्त्यन्य-महीभृताम् ।
असम्यग्-व्यय-शीलैस्तैः कुर्वद्भिः सततं व्ययम् ॥१४॥

ॐ ऐं क्रां करालास्यायै नमः स्वाहा ॥१४॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सञ्चितः सोऽति-दुःखेन क्षयं कोशो गमिष्यति।
एतच्चान्यच्च सततं चिन्तयामास पार्थिवः ॥१५॥

ॐ ऐं ह्रीं करुणामृत-सागरायै नमः स्वाहा॥१५॥

एवं चिन्ता-परो राजा वृक्ष-मूलं स्थितो यदा।
तदाऽऽजगाम वैश्यस्तु कश्चिदार्ति-परस्तदा॥१६॥

ॐ ऐं क्रीं कृपा-मय्यै नमः स्वाहा॥१६॥

तत्र विप्राश्रमाभ्याशे वैश्यमेकं ददर्श सः।
स पृष्टस्तेन कस्त्वं भी हेतुश्चागमनेऽत्र कः ॥१७॥

ॐ ऐं चां कृपाधारायै नमः स्वाहा॥१७॥

स शोक इव कस्मात् त्वं दुर्मना इव लक्ष्यसे।
अस्याकर्ण्य वचस्तस्य भूपतेः प्रणयोदितम् ॥१८॥

ॐ ऐं भें कृपापारायै नमः स्वाहा॥१८॥

॥ वैश्य उवाच ॥

मित्राहं वैश्य-जातीयः समाधिर्नाम विश्रुतः।
पुत्रदारैर्निरस्तश्च धन-लाभादसाधुभिः॥१९॥

ॐ ऐं क्रीं कृपागमायै नमः स्वाहा॥१९॥

विहीनश्च धनैर्दारैः पुत्रैरादाय मे धनम्।
स्वजनेन च संत्यक्तः प्राप्तोऽस्मि वनमाशु वै॥२०॥

ॐ ऐं वैं कुशान्वै नमः स्वाहा॥२०॥

वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चाप्त-बन्धुभिः।
सोऽहं न वेद्मि पुत्राणां कुशला कुशलात्मिकाम् ॥२१॥

ॐ ऐं ह्रौं कपिलायै नमः स्वाहा॥२१॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रवृत्तिं स्व-जनानां च दाराणां चात्र संस्थितः।
किं नु तेषां गृहे क्षेममक्षेमं किं नु साम्प्रतम् ॥२४॥

ॐ ऐं युं कृष्णायै नमः स्वाहा॥२२॥

कथं ते किं नु सद्-वृत्ता दुर्वृत्ताः किं नु मे सुताः ॥
कोऽसि त्वं भाग्यवान् भासि कथयस्व प्रियाधुना॥२३॥

ॐ ऐं जुं कृष्णानन्द-विवर्द्धन्यै नमः स्वाहा॥२३॥

॥ राजोवाच॥

सुरथो नाम राजाऽहं दस्युभिः पीडितोऽभवम्।
प्राप्तोस्मि गत-राज्योऽत्र मन्त्रिभिः परि-वञ्चितः॥२४॥

ॐ ऐं हं काल-रात्र्यै नमः स्वाहा॥२४॥

कुटुम्बं मे निरालम्बं मया हीनं सु-दुःखितम्।
भविष्यति च चिन्तार्तं व्याधिशोकाति तापितम्॥२५॥

ॐ ऐं शं काम-रूपायै नमः स्वाहा॥२५॥

यैर्निरस्तो भवाँल्लुब्धैः पुत्र-दारादिभिर्धनैः ।
तेषु किं भवतः स्नेहमनु-बध्नाति मानसम् ॥२६॥

ॐ ऐं रों काम-पाश-विमोचन्यै नमः स्वाहा॥२६॥

यैर्निरस्तोऽसि पुत्राद्यैरसद्भूतैः सुवालिशैः।
तान् दृष्ट्वा किं सुखं तेऽद्य भविष्यति महा-मते॥२७॥

ॐ ऐं यं कादम्बिन्यै नमः स्वाहा॥२७॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

॥ वैश्य उवाच ॥

एवमेतद् यथा प्राह भवानस्मद्-गतं वचः ।
मनो मे न स्थिरं राजन्! भवदद्य दुःखितम्॥२८॥
ॐ ऐं विं कलाधारायै नमः स्वाहा॥२८॥

चिन्तयात्र कुटुम्बस्य दुस्त्यजस्य दुरात्मभिः।
किं करोमि न बध्नाति मम निष्ठुरतां मनः॥२९॥
ॐ ऐं वैं कलि-कल्मष-नाशिन्यै नमः स्वाहा॥२९॥

यैः सन्त्यज्य पितृ-स्नेहं धन-लुब्धैर्निराकृतः ।
पतिः स्वजन-हार्दं च हार्दितेष्वेव मे मनः॥३०॥
ॐ ऐं चें कुमारी-पूजन-प्रीतायै नमः स्वाहा॥३०॥

किमेतन्नाभि-जानामि जानन्नपि महामते ।
यत्-प्रेम-प्रवणं चित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु॥३१॥
ॐ ऐं ह्रीं कुमारी-पूजकालयायै नमः स्वाहा॥३१॥

तेषां कृते मे निःश्वासो दौर्मनस्यं च जायते ।
करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम् ॥३२॥
ॐ ऐं क्रूं कुमारी-भोजनानन्दायै नमः स्वाहा॥३२॥

॥ मार्कण्डेय उवाच ॥

ततस्तौ सहितौ विप्रं तं मुनिं समुपस्थितौ ।
समाधिर्नाम वैश्योऽसौ स च पार्थिव-सत्तमः॥३३॥
ॐ ऐं सं ह्रीं वं कुमारी-रूप-धारिण्यै नमः स्वाहा॥३३॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कृत्वा तु तौ यथा-न्यायं यथार्हं तेन संविदम् ।
उपविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर्वैश्य-पार्थिवौ ॥३४॥

ॐ ऐं कं कदम्ब-वन-संचरायै नमः स्वाहा॥३४॥

गत्वा त्वं प्रणिपत्याह राजा ऋषिमनुत्तमम् ।
तमुवाच परं ज्ञानं शोक-मोह-विनाशनम्॥३५॥

ॐ ऐं श्रां कदम्ब-वन-वासिन्यै नमः स्वाहा॥३५॥

॥ राजोवाच ॥

भगवँस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत् ।
दुःखाय यन्मे मनसः स्वचित्तायत्ततां विना॥३६॥

ॐ ऐं त्रों कदम्ब-पुष्प-संतोषायै नमः स्वाहा॥३६॥

ममत्वं गत-राज्यस्य राज्याङ्गेष्वखिलेष्वपि ।
जानतोऽपि यथा-ज्ञस्य किमेतन्मुनि-सत्तम ॥३७॥

ॐ ऐं स्त्रां कदम्ब-पुष्प-मालिन्यै नमः स्वाहा॥३७॥

अयं च निकृतः पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तथोज्झितः ।
स्व-जनेन च सन्त्यक्तस्तेषु हार्दी तथाप्यति ॥३८॥

ॐ ऐं ज्यों किशोर्यै नमः स्वाहा॥३८॥

एवमेष तथाऽहं च द्वावप्यत्यन्तदुःखितौ ।
दृष्ट-दोषेऽपि विषये ममत्वाकृष्ट-मानसौ ॥३९॥

ॐ ऐं रौं कालकण्ठायै नमः स्वाहा॥३९॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

॥ राजोवाच ॥

तत्-किमेतन्महा-भाग! यन्मोहो ज्ञानिनोरपि ।
ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढ़ता ॥४०॥

ॐ ऐं द्रां कल-नाद-निनादिन्यै नमः स्वाहा ॥४०॥

मोहो नैवापसरति किं तत्-कारणमद्‌भुतम् ।
स्वामिँस्त्वमसि सर्वज्ञः सर्व-संशय-नाश-कृत् ॥४१॥

ॐ ऐं द्रों कादम्बरी-पान-रतायै नमः स्वाहा ॥४१॥

॥ ऋषिरुवाच ॥

ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोर्विषय-गोचरे ।
विषयश्च महा-भाग! याति चैवं पृथक् पृथक् ॥४२॥

ॐ ऐं ह्रीं कादम्बरी-प्रियायै नमः स्वाहा ॥४२॥

दिवान्धाः प्राणिनः केचिद् रात्रावन्धास्तथापरे ।
केचिद् दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस्तुल्य-दृष्टयः ॥४३॥

ॐ ऐं द्रूं कपाल-पात्र-निरतायै नमः स्वाहा ॥४३॥

ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किं तु ते नहि केवलम् ।
यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशु-पक्षि-मृगादयः ॥४४॥

ॐ ऐं शीं कङ्काल-माल्य-धारिण्यै नमः स्वाहा ॥४४॥

ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृग-पक्षिणाम् ।
मनुष्याणां च यत्तेषां तुल्यमन्यत्तथोभयोः ॥४५॥

ॐ ऐं मीं कमलासन-संतुष्टायै नमः स्वाहा ॥४५॥

ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान् पतङ्गाञ्छाव-चञ्चुषु ।
कण-मोक्षाद् ऋतान्मोहात् पीड्यमानानपि क्षुधा ॥४६॥

ॐ ऐं श्रों कमलासन-वासिन्यै नमः स्वाहा ॥४६॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मानुषा मनुज-व्याघ्र-साभिलाषाः सुतान् प्रति ।
लोभात् प्रत्युपकाराय नन्वेतान् किं न पश्यसि॥४७॥

ॐ ऐं जुं कमलालय-मध्य-स्थायै नमः स्वाहा॥४७॥

तथापि ममतावर्ते मोह-गर्ते निपातिताः ।
महामाया-प्रभावेण संसार-स्थिति-कारिणा॥४८॥

ॐ ऐं ह्रूं कमलामोद-मोदिन्यै नमः स्वाहा॥४८॥

तन्नात्र विस्मयः कार्यो योग-निद्रा जगत्पतेः।
महा-माया हरेश्चैषा तया संमोह्यते जगत्॥४९॥

ॐ ऐं श्रूं कल-हंस-गत्यै नमः स्वाहा॥४९॥

ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ।
बलादाकृष्य मोहाय महा-माया प्रयच्छति ॥५०॥

ॐ ऐं प्रीं क्लैव्य-नाशिन्यै नमः स्वाहा॥५०॥

तया विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम् ।
सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये ॥५१॥

ॐ ऐं रं काम-रूपिण्यै नमः स्वाहा॥५१॥

सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतु-भूता सनातनी ।
संसार-बन्ध-हेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी ॥५२॥

ॐ ऐं वं काम-रूप-कृतावासायै नमः स्वाहा॥५२॥

॥ राजोवाच ॥

भगवन्! का हि सा देवी महा-मायेति यां भवान् ।
ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा कर्मास्याश्च किं द्विज॥५३॥

ॐ ऐं व्रीं काम-पीठ-विलासिन्यै नमः स्वाहा॥५३॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यत्-प्रभावा च सा देवी यत्-स्वरूपा यदुद्भवा ।
तत्-सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्म-विदां वर ॥५४॥

ॐ ऐं ब्लूं कमनीयायै नमः स्वाहा ॥५४॥

॥ ऋषिरुवाच ॥

नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम् ।
तथापि तत्-समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम ॥५५॥

ॐ ऐं स्त्रों कल्प-लतायै नमः स्वाहा ॥५५॥

देवानां कार्य-सिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा ।
उत्पन्ना तु तदा लोके सा नित्याप्यभिधीयते ॥५६॥

ॐ ऐं ल्वां कमनीय-विभूषणायै नमः स्वाहा ॥५६॥

योग-निद्रां यदा विष्णुर्जगत्येकार्णवी-कृते ।
आस्तीर्य शेषमभजत् कल्पान्ते भगवान् प्रभुः ॥५७॥

ॐ ऐं लूं कमनीय-गुणाराध्यायै नमः स्वाहा ॥५७॥

तदा द्वावसुरौ घोरौ विख्यातौ मधु-कैटभौ ।
विष्णु-कर्ण-मलोद्भूतौ हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ ॥५८॥

ॐ ऐं सां कोमलाङ्ग्यै नमः स्वाहा ॥५८॥

स नाभि-कमले विष्णोः स्थितो ब्रह्मा प्रजा-पतिः ।
दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रौ प्रसुप्तं च जनार्दनम् ॥५९॥

ॐ ऐं रौं कृशोदर्यै नमः स्वाहा ॥५९॥

तुष्टाव योग-निद्रां तामेकाग्र-हृदय-स्थितः ।
विबोधनार्थाय हरेर्हरि-नेत्र-कृतालयाम् ॥६०॥

ॐ ऐं स्हौं कारणामृत-सन्तोषायै नमः स्वाहा ॥६०॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थिति-संहारकारिणीम् ।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥६१॥

ॐ ऐं क्रूं कारणानन्द-सिद्धिदायै नमः स्वाहा ॥६१॥

॥ ब्रह्मोवाच ॥

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कार-स्वरात्मिका ।
सुधा त्वमक्षरे! नित्या त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता॥६२॥

ॐ ऐं शौं कारणानन्द-जापिष्ठायै नमः स्वाहा ॥६२॥

अर्ध-मात्रा-स्थिता नित्या याऽनुच्चार्या विशेषतः ।
त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि! जननी परा॥६३॥

ॐ ऐं श्रौं कारणार्चित-हर्षितायै नमः स्वाहा ॥६३॥

त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत् सृज्यते जगत्।
त्वयैतत् पाल्यते देवि! त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा॥६४॥

ॐ ऐं वं कारणार्णव-समग्रायै नमः स्वाहा ॥६४॥

विसृष्टौ सृष्टि-रूपा त्वं स्थिति-रूपा च पालने।
तथा संहृति-रूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये॥६५॥

ॐ ऐं त्रूं कारण-व्रत-पालिन्यै नमः स्वाहा ॥६५॥

महा-विद्या महा-माया महा-मेधा महा-स्मृतिः ।
महा-मोहा च भवती महा-देवी महासुरी॥६६॥

ॐ ऐं क्रौं कस्तूरी-सौरभामोदायै नमः स्वाहा ॥६६॥

प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुण-त्रय-विभाविनी।
काल-रात्रिर्महा-रात्रिर्मोह-रात्रिश्च दारुणा॥६७॥

ॐ ऐं क्लूं कस्तूरी-तिलकोज्ज्वलायै नमः स्वाहा ॥६७॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोध-लक्षणा।
लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च॥६८॥

ॐ ऐं क्लीं कस्तूरी-पूजन-रतायै नमः स्वाहा॥६८॥

खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाण-भुशुण्डी-परिघायुधा॥६९॥

ॐ ऐं श्रीं कस्तूरी-पूजक-प्रियायै नमः स्वाहा॥६९॥

सौम्या सौम्य-तराशेष-सौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी॥
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी॥७०॥

ॐ ऐं ब्लूं कस्तूरी-दाह-जनन्यै नमः स्वाहा॥७०॥

यच्च किंचित् क्वचिद् वस्तु सदसद् वाखिलात्मिके।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा किं त्वं स्तूयसे सदा॥७१॥

ॐ ऐं ठां कस्तूरी-मृग-तोषिण्यै नमः स्वाहा॥७१॥

यया त्वया जगत् स्रष्टा जगत् पात्यत्ति यो जगत्॥
सोऽपि निद्रा-वशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः॥७२॥

ॐ ऐं ठ्रीं कस्तूरी-भोजन-प्रीतायै नमः स्वाहा॥७२॥

विष्णुः शरीर-ग्रहणमहमीशान एव च।
कारिस्तास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्ति-मान् भवेत्॥७३॥

ॐ ऐं स्नां कर्पूर-चन्दनोक्षितायै नमः स्वाहा॥७३॥

सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि! संस्तुता।
मोहयैतो दुराधर्षावसुरौ मधु-कैटभौ॥७४॥

ॐ ऐं क्लूं कर्पूर-कारणाह्लादायै नमः स्वाहा॥७४॥

प्रबोधं च जगत्-स्वामी नीयतामच्युतो लघु।
बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ॥७५॥

ॐ ऐं क्रैं कर्पूरामृत-पायिन्यै नमः स्वाहा॥७५॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

देवि! त्वमस्य जगतः किल कारणं हि।
ज्ञातं मया सकल-वेद-वचोभिरम्ब!
यद् विष्णुरप्यखिल-लोक-विवेक-कर्ता।
निद्रा-वशं च गमितः पुरुषोत्तमो यः।।७६।।

ॐ ऐं चां कर्पूर-सागर-स्नातायै नमः स्वाहा।।७६।।

को वेद ते जननि! मोह विलास-लीलां,
मूढोऽस्म्यहं हरिरयं विवशश्च शेते।
ईदृक्-तया-सकल-भूत-मनो-निवासे।
विद्वत्तमो विबुध-कोटिषु निर्गुणाय।।७७।।

ॐ ऐं फ्रां कर्पूर-सागर-लयायै नमः स्वाहा।।७७।।

सांख्या वदन्ति पुरुषं प्रकृतिं च यां तां,
चैतन्य-भाव-रहितां जगतश्च कर्त्रीम्।
किं सादृशाऽसि कथमत्र जगन्निवासः,
चैतन्यता विरहितो विहितस्त्वयाद्य।।७८।।

ॐ ऐं ज्रीं कूर्च-बीज-जप-प्रीतायै नमः स्वाहा।।७८।।

नाट्यं तनोषि सगुणा विविधप्रकारं,
नो वेत्ति कोऽपि तव कृत्य-विधान-योगम्।
ध्यायन्ति यां मुनि-गणा नियतं त्रिकालं,
सन्ध्या तु नाम परिकल्प्य गुणा भवानि।।७६।।

ॐ ऐं जूं कूर्च-जाप-पारायणायै नमः स्वाहा।।७९।।

बुद्धिर्हि बोध-करणा जगतां सदस्वं,
श्रीश्चासि देवि! सततं सुखदा सुराणाम्।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कीर्तिस्तथा मति-धृती किल कान्तिरेव,
श्रद्धा रतिश्च सकलेषु जनेषु मातः ॥८० ॥

ॐ ऐं स्लूं कुलीनायै नमः स्वाहा ॥८०॥

नातः परं किल वितर्क-शतैः प्रमाणं,
प्राप्तं मया यदिह दुःखमतिर्गतेन।
त्वं चात्र सर्व-जगतां जननी तु सत्यं,
निद्रालुतां वितरता हरिणात्र दृष्टम् ॥८१ ॥

ॐ ऐं नों कौलिकाऽराध्यायै नमः स्वाहा ॥८१॥

त्वं देवि! वेद-विदुषामपि दुर्विभाव्या,
वेदोऽपि नूनमखिलार्थ-तया न वेद।
यस्मात् त्वदुद्भवमसौ श्रुतिराप्नुवाना,
प्रत्यक्षमेव सकलं तव कार्यमेतत् ॥८२ ॥

ॐ ऐं स्त्रीं कौलिक-प्रिय-कारिण्यै नमः स्वाहा ॥८२॥

कस्ते चरित्रमखिलं भुवि वेद धीमान्,
नाहं हरिर्न च भवो न सुरास्तथान्ये।
ज्ञातुं क्षमाश्च मुनयो न ममात्मजाश्च,
दुर्वाच्य एव महिमा तव सर्व-लोके ॥८३ ॥

ॐ ऐं प्रीं दं कुलाचारायै नमः स्वाहा ॥८३॥

यज्ञेषु देवि! यदि नाम न ते वदन्ति,
स्वाहा च वेद-विदुषो हवने कृतेऽपि।
न प्राप्नुवन्ति सततं मख-भाग धेयं,
देवास्त्वमेव विबुधेश्वरि! वृत्तिदात्री ॥८४ ॥

ॐ ऐं स्रूं कौतुकिन्यै नमः स्वाहा ॥८४॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

त्राता वयं भगवति! प्रथमं त्वया वै,
देवारि-सम्भव-भयादधुना तथैव,
भीतोऽस्मि देवि! वरदे! शरणं गतोऽस्मि,
घोरं निरीक्ष्यमधुना सह कैटभं च ॥८५ ॥

ॐ ऐं ज्रां कुल-मार्ग-प्रदर्शिन्यै नमः स्वाहा ॥८५॥

नो वेत्ति विष्णुरधुना मम दुःखमेत-,
ज्जानेत्वयात्म-विवशी-कृत देह-यष्टिः।
मुञ्चादि-देवमथवा जहि दानवेन्द्रौ,
यद् रोचते तव कुरुष्वं महानुभावे ॥८६ ॥

ॐ ऐं वों काशीश्वर्यै नमः स्वाहा ॥८६॥

जानन्ति ये न तव देवि! परं प्रभावं,
ध्यायन्ति ते हरिहरावपि मन्द-चित्ताः।
ज्ञातं ममाद्य जननि! प्रकटं प्रमाणं,
यद्-विष्णुरप्यति-तरा विवशोऽथ शेते ॥८७ ॥

ॐ ऐं ओं कष्ट-हर्त्र्यै नमः स्वाहा ॥८७॥

सिन्धूद्भवाऽपि न हरिं प्रति-बोधितं वै,
शक्तायति तव वशानुगमाद्य शक्त्या।
मन्ये त्वया भगवति! प्रसभं रमाऽपि,
प्रस्वापिता न बुवुधे विवशी-कृतेव ॥८८ ॥

ॐ ऐं श्रौं काशीश-वर-दायिन्यै नमः स्वाहा ॥८८॥

धन्यास्त एव भुवि भक्ति-परास्तवांघ्रौ,
त्यक्त्वान्यदेव भजनं त्वयि लीन-भावाः।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कुर्वन्ति देवि! भजनं सकलं निकामं,
ज्ञात्वा समस्त-जननीं किल काम-धेनुम्।।८९।।

ॐ ऐं ॠं काशीश्वर-कृत-मोदायै नमः स्वाहा।।८९।।

धी-कान्ति-कीर्ति-शुभ-वृत्ति-गुणादयस्ते ,
विष्णोर्गुणास्तु परिहृत्य गताः क्व चाद्य।
वन्दी-कृतो हरिरसौ ननु निद्रयाऽत्र,
शक्त्या तवैव भगवत्यति-मानवत्या।।९०।।

ॐ ऐं रुं काशीश्वर-मनोरमायै नमः स्वाहा।।९०।।

त्वं शक्तिरेव जगतामखिल-प्रभावा,
त्वन्निर्मितं च सकलं खलु भाव-मात्रम्।
त्वं क्रीडसे निज-विनिर्मित-मोह-जाले,
नाट्ये यथा विहरते स्व-कृते च नृत्ये।।९१।।

ॐ ऐं क्लीं कल-मंजीर-चरणायै नमः स्वाहा।।९१।।

विष्णुस्त्वया प्रकटितः प्रथमं युगादौ,
दत्ता च शाक्तरमला खलु पालनाय,
त्रातं च सर्वमखिलं विवशोऽक्ततोऽद्य,
यद्-रोचते तव तथा प्रकरोषि नूनम्।।९२।।

ॐ ऐं दुं क्वणत्-काञ्ची-विभूषणायै नमः स्वाहा।।९२।।

सृष्ट्वात्र मां भगवति! प्रविनाशितुं चेत्,
नेच्छास्ति ते कुरु दयां परिहृत्य मौनम्।
कस्मादिमौ प्रकटितो किल काल-रूपौ,
यद्वा भवानि! हसितुं नु किमिच्छसे माम्।।९३।।

ॐ ऐं ह्रीं काञ्चनाद्रि-कृतागारायै नमः स्वाहा।।९३।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ज्ञातं मया तव विचेष्टितमद्भुतं वै,
कृत्वाऽखिलं जगदिदं रमसे स्वतन्त्रा।
लीनं करोषि सकलं किल मां तथैव,
हन्तुं स्वमिच्छसि भवानि! किमत्र चित्रम्॥६४॥

ॐ ऐं गूं काञ्चनाचल-कौमुद्यै नमः स्वाहा॥९४॥

कामं कुरुष्व क्षयमद्य ममैव मात-
र्दुःखं न मे मरणजं जगदम्बिकेऽत्र।
कर्ता त्वमेव विहितः प्रथमं स चायं,
दैत्याहतोऽथ मृत एव यशोगरिष्ठम्॥६५॥

ॐ ऐं लां काम-बीज-जपानन्दायै नमः स्वाहा॥९५॥

उत्तिष्ठ देवि! कुरु रूपमिवाद्भुतं त्वां,
मां वा त्विमौ जहि यथेच्छसि बाल-लीले!।
नोचेत् प्रबोधय हरिं निहनेदिमौ यस्-
त्वत् साध्यमेतदखिलं किल कार्य-जातम्॥६६॥

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं काम-बीज-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा॥९६॥

॥ ऋषिरुवाच ॥

एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा।
विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधु-कैटभौ॥६७॥

ॐ ऐं गं कु-मतिघ्न्यै नमः स्वाहा॥९७॥

नेत्रास्य-नासिका-बाहू हृदयेभ्यस्तथोरसः।
निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्त-जन्मनः॥६८॥

ॐ ऐं ऐं कुलीनार्ति-नाशिन्यै नमः स्वाहा॥९८॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उत्तस्थौ च जगन्नाथस्तया मुक्तो जनार्दनः ।
एकार्णवेऽहि-शयनात् ततः स ददृशे च तौ ॥९९॥

ॐ ऐं श्रीं कुल-कामिन्यै नमः स्वाहा ॥९९॥

मधु-कैटभौ दुरात्मानावति-वीर्य-पराक्रमौ ।
क्रोध-रक्तेक्षणावत्तुं ब्रह्माणं जनितोद्यमौ ॥१००॥

ॐ ऐं जुं ऐं कारायै नमः स्वाहा ॥१००॥

समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान् हरिः ।
पञ्च-वर्ष-सहस्राणि बाहु-प्रहरणो विभुः ॥१०१॥

ॐ ऐं डें महा-कराल्यायै नमः स्वाहा ॥१०१॥

तावप्यति-बलोन्मत्तौ महा-मायाविमोहितौ ।
उक्तवन्तौ वरोऽस्मत्तो व्रियता-मेव केशव! ॥१०२॥

ॐ ऐं श्रीं महा-पिङ्गलायै नमः स्वाहा ॥१०२॥

प्रार्थयस्व हृषीकेश! मनोऽभिलषितं वरम् ।
तयोस्तद्-वचनं श्रुत्वा प्रत्युवाच जनार्दनः ॥१०३॥

ॐ ऐं छ्रां काल-काल्यै नमः स्वाहा ॥१०३॥

॥ विष्णुरुवाच ॥

भवेतामद्य मे तुष्टौ मम हन्यावुभावपि ।
किमन्येन वरेणात्र एतावृद्धि वृतं मम ॥१०४॥

ॐ ऐं क्रीं ह्लीं श्रीं काल-कंटक-घातिन्यै नमः स्वाहा ॥१०४॥

॥ ऋषिरुवाच ॥

वञ्चिताभ्यां ततः तदा सर्वमापो-मयं जगत् ।
विलोक ताभ्यां गदितो भगवान् कमलेक्षणः ॥१०५॥

ॐ ऐं ह्लीं शं काम-क्रोध-विवर्जितायै नमः स्वाहा ॥१०५॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आवां जहि न यत्रोर्वी सलिलेन परिप्लुता ।
तथा तूक्त्वा भगवता शंख-चक्र-गदा-भृता ॥१०६॥

ॐ ऐं ह्रीं हं काम-संहत्र्यै नमः स्वाहा ॥१०६॥

कृत्वा चक्रेण वैच्छिन्ने जघने शिरसी तयोः ।
गत-प्राणौ तदा जातौ दानवौ मधु-कैटभौ ॥१०७॥

ॐ ऐं ह्रौं कामाक्ष्यै नमः स्वाहा ॥१०७॥

एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम् ।
प्रभावमस्या देव्यास्तु भूयः शृणु वदामि ते ॥१०८॥

ॐ ऐं श्रीं शिवायै नमः स्वाहा ॥१०८॥

॥ ॐ जय जय श्रीमार्कण्डेय-उत्तर-पुराणे सावर्णिके
मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये सत्या सन्तु (यजमानस्य कामाः)
श्रीजगदम्बार्पणमस्तु ॥

॥ वैदिक आहुति ॥

एक उल्टे अखण्ड पानपत्ते पर शाकल्य, घी में भिगोकर १ कमलगट्टा, १ सुपारी, २ लौंग, १ छोटी इलायची, गूगल शहद ये सब वस्तुएँ स्रुची में रखकर खड़े होकर निम्न मन्त्र बोले -

ॐ प्राणाय स्वाहा पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा ॥ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनीम् ॐ स्वाहा ॥२२।२३॥

बाद में स्रुवे से पाँच बार घी छोड़ते हुए इस मन्त्र का उच्चारण करें -

ॐ घृतं घृतपावानः पिवतव्वसां वसा पावानः। पिवतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽ आदिशो व्विदिशऽ उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥ (यजु. सं. अ. ६।१९ मन्त्र)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। तान्त्रिक आहुति ।।

ॐ साङ्गायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै ऐं बीजाधिष्ठात्र्यै महा-कालिकायै महाऽऽहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा ।।

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए आहुति देवे, सामग्री वैदिक आहुति के समान ही है।

।। प्रथमोऽध्यायः ।।

।। उवाच १४ ।। श्लोक १०८ ।। एवं १०८ ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। श्रीमहालक्ष्मी-सूक्तम् प्रारम्भम् ।।

(पुराणोक्तम्)

अस्य श्रीत्रिमूर्ति-महालक्ष्मी-सूक्तस्य विष्णुऋषिः, त्रिष्टुबनुष्टप् जगत्यश्छन्दांसि, श्रीमहालक्ष्मी देवता, श्रीमहालक्ष्मी-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे सप्तशती-पाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः।

ॐ श्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, - ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः,
ॐ श्रूं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ श्रैं अनामिकाभ्यां नमः,
ॐ श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ श्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

ॐ श्रां हृदयाय नमः, - ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा,
ॐ श्रूं शिखायै वषट्, ॐ श्रैं कवचाय हुम्,
ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ श्रः अस्त्राय फट्।

।। ध्यानम् ।।

नित्यां स्वर्ण-सरोज-सुप्रकटितां बालार्क-कोटि-प्रभाम्,
श्रोतस्य स्तन-मण्डलै रुप-मयां मध्ये विचित्र-प्रभाम्।
सत्साला कमलेषु-खड्ग-कुलिशं कौमोदकीं चक्रकं,
शूलं वै पर-शुक्ति-शङ्खममलं घण्टां च पाशं क्रमात्।।

शक्तिं दण्डक-चर्म-चाप-दशकं दोर्भिर्वहन्तीं मुदा,
सान्द्रानन्द-मयीं कमण्डलु-धरां नीलोरु-जंघा-कुचाम्।
चित्राङ्गां खल-मर्दिनीं गुण-मयीं साम्राज्य-लक्ष्मी-प्रदां,
माया-बीज-मयीं परावर-महालक्ष्मीं भजेद् राजसीम्।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। विष्णुरुवाच ।।

यामामन्ति मुनयः प्रकृतिं पुराणीं विद्येति यां श्रुति-रहस्य-विदो गृणन्ति तां धर्म-पल्लवित-शंकर-रूप-मुद्रां देवी-मनन्य-शरणः शरणं प्रपद्ये ।।1 ।।

अम्ब-स्तवेषु तव तावक कर्तृ काणि कुण्ठी-भवन्ति वचसामपि कुण्ठनानि डिम्भस्य मे स्तुतिरिमा घन-पुञ्ज-रूपा वात्सल्य-निघ्न-हृदयां भवतीं धुनोति ।।2 ।।

ध्यानेति विन्दुरिति वादयतीन्दु-लेखा,
रूपेति वाग्भव-तनूरिति मारिकेति।
निष्पन्द-मानस-सुधा-स्वरूपावबोधा,
विद्योतसे मनसि भाग्यवतां जनानाम् ।।3 ।।

आविर्भवत् पुलक-संहतिभिः शरीरै-
र्निष्यन्दमान-सलिलैर्नयनैश्च नित्यम्।
वाग्भिश्च गद्गद्-पदाभिरुपासते ये,
पादौ तवाम्ब! भवनेषु त एव धन्याः ।।4 ।।

वक्तुं यदद्य नुतिभिर्नयते भवत्या,
स्तुत्यं नमो यदपि देवि! शिरः करोति।
चेतश्च यस्त्वयि परायणमन्तराणि,
कस्यापि कैरपि भवन्ति तपो-विशेषैः ।।5 ।।

मूलाल-वाल-कुहरादुहिता भवानी,
निर्भि-षट्सु चरसि जातु तडिल्लतेव।
भूयोऽपि तत्र विशसि ध्रुव-मण्डलेन्दु-
निष्यन्दमान-परमामृत-तोय-रूपा ।।6 ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दग्धं यदा मदनमेकमनेक-धातो-
र्मुग्धः कटाक्ष-विधिनां कुरया चकार।
दत्ते तदा प्रभृति देवि! ललाट-नेत्रं,
सत्यं ह्रियैव मुकुली-कृतमिन्दु-मौलिः ।।7।।

अज्ञान-सम्भव-मना कलितान्वयं हि,
भिक्षुः कपालिनमदादसमाऽद्वितीयम्।
पूर्वं कर-ग्रहण-मङ्गलतो भवत्याः,
शम्भुं क एव बुबुधे गिरि-राज-कन्ये।।8।।

चर्माम्बरं च शव-भस्म-विलेपनं च,
भिक्षाटनं च नटनं च परेत-भूमौ।
वेताल-संहति-परिग्रहता च शम्भोः,
शोभां विभर्ति गिरिजे! तव साहचर्यात्।।9।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। श्रीमहालक्ष्मी-सूक्तम् प्रारम्भम् ।।

(तन्त्रोक्तम्)

सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाच मे क्रत, अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रैषा लक्ष्मीर्निहिताधि-वाचि ।। **गन्ध-द्वारां दुराधर्षां नित्य-पुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्व-भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।**

।। हरिरुवाच ।।

परावरेशां जगदादि-भूतां परां वरेण्यां वरदां वरिष्ठाम् ।
वरेश्वरी-बहु-वाग्भिः प्रगीतां त्वां विश्व योनिं शरणं प्रपद्ये ।।1 ।।

श्रियं समस्तैरधिवास-भूतां महा-सुलक्ष्मीं धरणी-धरां च ।
अनादिमादिं परमार्थ-रूपां त्वां विश्व-योनिं शरणं प्रपद्ये ।।2 ।।

एकामनेकां विविधांशु-कार्या सुकारिणीं सदसद्रूपिणीं च ।
रूपारूपां च शिवा शिव-प्रदां त्वां विश्व-योनिं शरणं प्रपद्ये ।।3 ।।

कामाभिधां श्रीमधिवास-भूतां ह्रीं-रूपिणीं बीज-कपि-प्रभावाम् ।
कणष्टि-बीजां परमार्थ-संज्ञां त्वां विश्व-योनिं शरणं प्रपद्ये ।।4 ।।

वैश्वानर-स्त्री-सहितेन देवीं श्रीमन्त्र-राजेन विराजमानाम् ।
सर्वार्थ-दात्रीं परमां पवित्रां त्वां विश्व-योनिं शरणं प्रपद्ये ।।5 ।।

त्रिकोण-पञ्चार-युग-प्रभावां षट्-कोण-मिश्रां द्विदशार-युक्ताम् ।
अष्टार-चक्रादि-निवास-भूतां त्वां विश्व-योनिं शरणं प्रपद्ये ।।6 ।।

पुनर्दशार-द्वितयेन युक्तां पञ्चार-कोणाङ्कित-भूगृहां च ।
यन्त्राधि-वासामपि यन्त्ररूपां त्वां विश्व-योनिं शरणं प्रपद्ये ।।7 ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सम्भावितां सर्वदा न्यास-गम्यां सर्व-स्वरूपामपि सर्व-सेव्याम्।
सर्वाक्षर-न्यास-वशां वरिष्ठां त्वां विश्व-योनिं शरणं प्रपद्ये।।8।।

सृष्टि-स्थिति-प्रलयाख्यैश्च बीजैर्न्यासं विधाय प्रजपंति ये त्वाम्।
त एव राजेन्द्र-निघृष्ट-पादा विद्या-धरेन्द्रस्य यशो लभन्ते।।9।।

प्रपूज्य यन्त्रं विधिना महेशि! साभ्यास-पूजाः परमा सुभाग्याः।
जपन्ति ये त्वां विविधार्थ-दात्रीं त एव धन्या कुल-मार्ग-निष्ठाः।।10।।

जानन्ति के पशवस्ते कुरूपा ब्रह्मादि-गीते महिमा महेशि!
केचिन् महान्तो निज-धर्म-लाभाज्जानन्ति ते देवि! परां सुधां त्वाम्।।11।।

विधाय कुण्डं विधिना स्थण्डिलं वा सौगन्धि-होमं सफलं प्रकुर्वते।
त्वत्तोषणाज्जायते भाग्य-मात्रं तेषां सुदेवैरपि योगगम्यम्।।12।।

पुनः स्तुवन्ति प्रयताश्च मातः स्तोत्रैरुदारैः कुल-योग-युक्ताः।
त एव धन्याः परमार्थ-भाजो भोगश्च मोक्षश्च किमस्ति तेषाम्।।13।।

।। ऋषिरुवाच ।।

एवं स्तुत्यावसाने तु महा-लक्ष्मीं ददर्श सः।
चतुर्भुजां त्रिनयनां महिषासुर-घातिनीम्।।14।।

अस्य श्रीमन्महालक्ष्मीः प्रसन्ना स्तुतिगौरवात्।
उवाच स्मित-शोभाढ्यां नारायणमजं शुभम्।।15।।

।। देव्युवाच ।।

वरं वरय देवेश! नारायण! सनातन!
दास्याम्यद्यापि दातव्यं तव स्तुत्या वशी-कृता।।16।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। नारायण उवाच ।।

मातः! परम-कारुण्ये! महा-लक्ष्मि! वर-प्रदे!
कुलाचारे मतिर्मेऽस्तु दृढा त्वयि तथा शिवे ।।17।।
तव सूक्तं च सफलं तव सुप्रीति-कारणम् ।।

।। देव्युवाच ।।

वरमेतन्महाभाग! नारायण! सनातन!
सूक्तमेतद्विना यस्तु पठेत् सप्तशतीं नरः ।।18।।
स याति च महा-घोरं नरकं दारुणं किल।
लिप्यते परमं शाप्यं मम कोप-विघूर्णितः ।।19।।
लक्ष्मी-स्तोत्रं विना सप्तशती-स्तोत्रं निषिध्यते ।।20।।

।। ऋषिरुवाच ।।

एवमुक्त्वा वचो देवी तूर्ष्णीं भगवती नृप!
उक्त्वा त्वन्तर्धिमापेदे महा-लक्ष्मीर्वर-प्रदा।
नारायणं जगन्नाथं सा बोध्य बहुधा नृप ।।21।।

।। श्रीमहालक्ष्मी-सूक्तं सम्पूर्णम् ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ मध्यमचरित्रारम्भः ।।

।। विनियोगः ।।

ॐ मध्यम-चरितस्य विष्णुर्ऋषिः, महालक्ष्मीर्देवता, उष्णिक् छंदः, शाकम्भरी शक्तिः, दुर्गा बीजम्, वायुस्तत्त्वम्, यजुर्वेदः स्वरूपम् श्रीमहालक्ष्मी-प्रीत्यर्थं मध्यम-चरित जपे विनियोगः ।।

।। ध्यानम् ।।

(4) दक्षिणाम्नायात्मिका चतुस्त्रिदशाक्षरा बगलामुखी ध्यानम् -

मध्ये सुधाब्धि-मणि-मण्डप-रत्न-वेदी-
सिंहासनोपरि-गतां परि-पीत-वर्णाम् ।
पीताम्बरां कनक-भूषण-माल्य-शोभां,
देवीं भजामि धृत-मुद्गर-वैरि-जिह्वाम् ।।
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं,
वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम् ।
पदाभिघातेन च दक्षिणेन,
पीताम्बराढ्यां द्वि-भुजां नमामि ।
दक्षिणाम्नाय-रूपां च चतुस्त्रिदशाक्षराम्,
बगलां पूजयेद् दिव्यामाग्नेयाम्नायगां शिवाम् ।।

(5) पूर्वाम्नायात्मिका सप्तविंशत्यक्षरा कमला महालक्ष्मी ध्यानम् -

सिन्दूरारुण-कान्तिमब्ज-वसतीं सौन्दर्य-वारां निधिं,
कोटिराङ्गद-हार-कुण्डल-कटी-सूत्रादिभिर्भूषिताम् ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हस्ताब्जैर्वसु-पात्रमब्ज-युगलादर्शो वहन्तो परा-
मावीतां परिचारिकाभिरनिशं ध्यायेत् प्रिय शार्ङ्गिणः ।।
सिन्दूराभां च पद्मस्थां पद्म-पत्रं च दर्पणम् ।
अर्घ-पात्रं च दधतीं सद्धार-मुकुटान्विताम् ।।
नाना-दासी-परिवृतां काञ्ची-कुण्डल-मण्डिताम् ।
लावण्य-भूमिकां वन्दे सुन्दराङ्गद-बाहुकाम् ।।
पूर्वाम्नायात्मिकां चैव आग्नेयाम्नायगां तथा ।
कमलां च महा-लक्ष्मीं सप्त-विंशति-वर्णिकाम् ।।

(6) आग्नेयाम्नायात्मिका नवाक्षरा महालक्ष्मी ध्यानम् -

अक्षस्रक्-परशुं-गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः-कुण्डिकाम्,
शङ्खं चक्रमसिं च चर्म-जलजं घण्टा-सुरा-भाजनम् ।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननम्,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम् ।।
आग्नेयात्मिकां चैव महालक्ष्मीं नवाक्षराम् ।।

।। षोडश-भुजा ध्यानम् ।।

(कालिका पुराणे)

योग-निद्रा महा-माया जगद्धात्री जगन्मयी ।
भुजैः षोडशभिर्युक्ता भद्रकाली तु विश्रुता ।।
क्षीरोदस्योत्तरे तीरे विभ्रती विपुलां तनुम् ।
अतसी-पुष्प-वर्णाभा ज्वलत्-काञ्चन-कुण्डला ।।
जटा-जूटमखण्डेन्दु-मुकुट-त्रय-भूषिता ।
नाग-हारेण सहिता स्वर्ण-हार-विभूषिता ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शूलं खड्गं च शङ्खं च चक्रं बाणं तथैव च।
शक्तिं वज्रं च दण्डं च नित्यं दक्षिण-बाहुभिः।।
बिभ्रती सततं देवी विकाशि-नयनोज्ज्वला।
खेटकं चर्म चापं च पाशं चाङ्कुशमेव च।।
घण्टां परशुं मुशलं बिभ्रती वाम-पाणिभिः।
सिंहस्था नयनै रक्त-वर्णैस्त्रिभिरभिज्ज्वला।।
शूलेन महिषं भित्वा तिष्ठन्ति परमेश्वरी।
वाम-पादेन चाक्रम्य तत्र देवी जगन्मयी।।

।। अष्टादश-भुजा ध्यानम्।।

(तन्त्रान्तरे)

उग्र-चण्डां महा-देवीं ध्यायेद् भगवतीं शिवाम्।
तप्त-चामी-कर-वर्णां नाना-पुष्पोप-शोभिताम्।।
दिव्य-वस्त्र-परिधानां महिषासन-गामिनीम्।
किरीट-कुण्डलाकारैः केयूरैर्मणि-नूपुरैः।।
रत्न-माला-विचित्रैश्च हार-मालोप-शोभिताम्।
अष्टादश-भुजाक्रान्तां पीन-वक्षो-स्तनोरुहाम्।।
सर्वालङ्कार-संयुक्तां तडित्-कोटि-सम-प्रभाम्।
खड्गं शरस्तथा चक्रं वज्रांकुश-धरां शुभाम्।।
वरदां डमरु-हस्तां शूल-पात्र-सुशोभिताम्।
पाशं तर्जनी-हस्तां च खट्वाङ्गं केश-पाशकम्।।
बिन्दु-मुद्रा तथा सिद्धिः सिंहासनोपरि-स्थिताम्।
अधः-स्थित्वा शिरश्छिन्नं महिषं च महाऽसुरम्।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तद्-ग्रीवा-निर्गतं दैत्यं महा-बल-पराक्रमम्।
भेदयन्तीं त्रिशूलेन विधृतास्यां शिरोरुहाम्।।
एवं ध्यायेन्महा-देवीं सर्व-काम-फल-प्रदाम्।
रुद्र-चण्डा प्रचण्डा च चण्डोग्रा चण्ड-नायिका।।
चण्डा चण्डवती चैव चण्डरूपाऽस्ति-चण्डिका।
रोचना अरुणा कृष्णा नील-शुक्ला च धूम्रिका।।
पीता च पाण्डुरा ज्ञेया आरिधस्था हरि-स्थिता।
स्व-परीवार-संयुक्तामायान्तीमिह मण्डले।।
दक्षिणैस्तु करैरेतान् यथा-शोभं हि विभ्रतीम्।
खेटकं च धनुश्चैव गदा-घण्टा-सुशोभिताम्।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। द्वितीयोऽध्यायः ।।

।। ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच ।।

देवासुरमभूद् युद्धं पूर्णमब्द-शतं पुरा।
महिषेऽसुराणामधिपे देवानां च पुरन्दरे ।।१।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रौ महा-लक्ष्म्यै नमः स्वाहा।।१।।

तत्रासुरैर्महा-वीर्यै र्देव-सैन्यं पराजितम्।
जित्वा च सकलान् देवानिन्द्रोऽभून्महिषासुरः ।।२।।

ॐ ऐं ह्रीं ह् सूं दुर्गायै नमः स्वाहा।।२।।

ततः पराजिता देवा पद्म-योनिं प्रजापतिम्।
पुरस्कृत्य गता-स्तत्र यत्रेश-गरुड़ध्वजौ ।।३।।

ॐ ऐं ह्रीं हौं महा-गौर्ये नमः स्वाहा।।३।।

।। देवा ऊचुः ।।

यथा-वृत्तं तयोस्तद्-वन्महिषासुर-चेष्टितम्।
त्रिदशाः कथयामासुर्देवाभि-भव-विस्तरम् ।।४।।

ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं चण्डिकायै नमः स्वाहा।।४।।

सूर्येन्द्राग्न्य-निलेन्दूनां यमस्य वरुणस्य च।
अन्येषां चाधिकारान् स स्वयमेवाधितिष्ठति ।।५।।

ॐ ऐं ह्रीं अं सर्वज्ञायै नमः स्वाहा।।५।।

स्वर्गान्निराकृतः सर्वे तेन देव-गणा भुवि।
विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना ।।६।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्व-लोकेशायै नमः स्वाहा।।६।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एतद् वः कथितं सर्वममरारि-विचेष्टितम्।
शरणं वः प्रपन्नाः स्मो वधस्तस्य विचिन्त्यताम् ॥७॥
ॐ ऐं ह्रीं चां सर्वकर्म-फलप्रदायै नमः स्वाहा ॥७॥

॥ ऋषिरुवाच ॥

श्रुत्वा तद्-वचनं विष्णुस्तानुवाच हसन्निव।
युद्धं कृतं पुराऽस्माभिस्तथापि न मृतो ह्यसौ॥८॥
ॐ ऐं ह्रीं मुं सर्व-तीर्थ-मयायै नमः स्वाहा ॥८॥

॥ विष्णुरुवाच ॥

अद्य सर्व-सुराणां वै तेजोभी-रूप-सम्पदा।
उत्पन्ना चेद् वरारोहा स हन्यात्तं रणे बलात्॥९॥
ॐ ऐं ह्रीं डां पुण्यायै नमः स्वाहा ॥९॥

हयारिं वर-दृप्तं च माया-गत-विशारदम्।
हन्तुं योग्या भवेन्नारी शक्यं तै निर्मिता हि नः॥१०॥
ॐ ऐं ह्रीं यैं देव-योनये नमः स्वाहा ॥१०॥

प्रार्थयन्तु च तेजोंऽशान् स्त्रियोऽस्माकं तथा पुनः।
उत्पन्नैस्तेश्च तेजोंऽशैस्तेजो-राशिर्भवेद् यथा॥११॥
ॐ ऐं ह्रीं विं अयोनिजायै नमः स्वाहा ॥११॥

आयुधानि वयं दद्मः सर्वे रुद्र-पुरोगमाः।
तस्यै सर्वाणि दिव्यानि त्रिशूलादीनि यानि च॥१२॥
ॐ ऐं ह्रीं च्चें भूमिजायै नमः स्वाहा ॥१२॥

सर्वायुध-धरा नारी सर्व-तेजः-समन्विता।
हनिष्यति दुरात्मानं तं पाप-मद-गर्वितम्॥१३॥
ॐ ऐं ह्रीं ईं कोटि-सूर्य-सम-प्रभायै नमः स्वाहा ॥१३॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

॥ ऋषिरुवाच ॥

इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधु-सूदनः।
चकार कोपं शम्भुश्च भृकुटी-कुटिलाननौ ॥१४॥

ॐ ऐं ह्रीं सौं महा-मात्रे नमः स्वाहा॥१४॥

ततोऽति-कोप-पूर्णस्य चक्रिणो वदनात् ततः।
निश्चक्राम महत् तेजो ब्रह्मणः शंकरस्य च ॥१५॥

ॐ ऐं ह्रीं व्रां तेजोवत्यै नमः स्वाहा॥१५॥

अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः।
निर्गतं सुमहत् तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत ॥१६॥

ॐ ऐं ह्रीं त्रों विन्ध्य-वासिन्यै नमः स्वाहा॥१४॥

अतीव-तेजसः कूटं ज्वलन्तमिव पर्वतम्।
ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वाला-व्याप्त दिगन्तरम् ॥१७॥

ॐ ऐं ह्रीं लूं वनीशायै नमः स्वाहा॥१७॥

रक्त-वर्णं शुभाकारं पद्म-राग-मणि-प्रभम्।
किञ्चिच्छीतं तथा चोष्णं मरीचि-जाल-मण्डितम्॥१८॥

ॐ ऐं ह्रीं वं देव-मात्रे नमः स्वाहा॥१८॥

निःसृतं हरिणा दृष्टं हरेण च महात्मना।
विस्मितौ तौ महाराजौ बभूवतु-रुरु-क्रमौ॥१९॥

ॐ ऐं ह्रीं वं कमलायै नमः स्वाहा॥१९॥

शङ्करस्य शरीरात्तु निःसृतं महदद्भुतम्।
रक्त-वर्णमभूत् तीव्रं दुर्दर्शं दारुणं महत्।२०॥

ॐ ह्रीं ह्रां सर्व-विद्याधि-देवतायै नमः स्वाहा॥२०॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भयंकर च दैत्यानां देवानां विस्मय-प्रदम्।
घोर-रूपं गिरि-प्रख्यं तमो-गुणमिवापरम्॥२१॥
ॐ ऐं ह्रीं सौं वाण्यै नमः स्वाहा॥२१॥

ततो विष्णु-शरीरात्तु तेजो-राशिमिवापरम्।
नीलं सत्व-गुणोपेतं प्रादुरासीन्महा-द्युतिः॥२२॥
ॐ ऐं ह्रीं यं सर्व-लोक-प्रियायै नमः स्वाहा॥२२॥

ततश्चेन्द्र-शरीरात्तु चित्र-रूपं दुरासदम्।
आविरासीत् सु-संवृत्तं तेजः सर्व-गुणात्मकम्॥२३॥
ॐ ह्रीं ऐं सर्व-गर्व-विमर्दिन्यै नमः स्वाहा॥२३॥

कुबेर-यम-वह्नीनां शरीरेभ्यः समन्ततः।
निश्चक्राम महत्तेजो वरुणस्य तथैव च॥२४॥
ॐ ऐं ह्रीं मं निरहंकारायै नमः स्वाहा॥२४॥

अन्येषां चैव देवानां शरीरेभ्योऽति-भास्वरम्।
निर्गतं तन्महा-तेजो-राशिरासीन्महोज्ज्वलः॥२५॥
ॐ ऐं ह्रीं सः निर्गुणायै नमः स्वाहा॥२५॥

तं दृष्ट्वा विस्मिताः सर्वे देवा विष्णु-पुरोगमाः।
तेजो-राशिं महा-दिव्यं हिमाचलमिवापरम्॥२६॥
ॐ ह्रीं हं अनीश्वर्यै नमः स्वाहा॥२६॥

पश्यतां तत्र देवानां तेजः-पुञ्ज-समुद्भवा।
बभूवाति-वरा नारी सुन्दरी विस्मय-प्रदा॥२७॥
ॐ ऐं ह्रीं सं आधार-शक्त्यै नमः स्वाहा॥२७॥

अतुलं तत्र तत् तेजः सर्व-देव-शरीरजम्।
एकस्थं तदभून्नारी व्याप्त-लोक-त्रयं त्विषा॥२८॥
ॐ ऐं ह्रीं सों निर्गुणायै नमः स्वाहा॥२८॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः सर्व-देव-शरीरजा।
अष्टादश-भुजा रम्या त्रि-वर्णा विश्व-मोहिनी॥२९॥
ॐ ऐं ह्रीं म्बीं सर्व-कर्म-विवर्जितायै नमः स्वाहा॥२९॥

श्वेतानना कृष्ण-नेत्रा संरक्ताधर-पल्लवा।
ताम्र-पाणि-तला कान्ता दिव्य-भूषण-भूषिता॥३०॥
ॐ ऐं ह्रीं यूं धर्म-निष्ठायै नमः स्वाहा॥३०॥

अष्टादश-भुजा देवी सहस्र-भुज-मण्डिता।
यदभूच्छाम्भवं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम्॥३१॥
ॐ ऐं ह्रीं त्रूं धर्म-ज्ञानायै नमः स्वाहा॥३१॥

याम्येन चाभवन्केशा बाहवो विष्णु-तेजसा।
सौम्येन स्तनयोर्युग्मं मध्यं चैन्द्रेण चाभवत्॥३२॥
ॐ ऐं ह्रीं स्त्रीं सर्व-संहार-कारिण्यै नमः स्वाहा॥३२॥

वारुणेन च जङ्घोरू नितम्बस्तेजसा भुवः।
ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तदङ्गुल्योऽर्क-तेजसा॥३३॥
ॐ ऐं ह्रीं आं कान्तायै नमः स्वाहा॥३३॥

वसूनां च कराङ्गुल्यः कौबेरेण च नासिका।
तस्यास्तु दन्ताः सम्भूताः प्राजापत्येन तेजसा॥३४॥
ॐ ऐं ह्रीं प्रें कर्म-ज्ञान-प्रदायै नमः स्वाहा॥३४॥

नयन-त्रितयं जज्ञे तथा पावक-तेजसा।
भ्रुवौ च सन्ध्ययोस्तेजः श्रवणावनिलस्य च॥३५॥
ॐ ऐं ह्रीं शं गुण-त्रय-विवर्जितायै नमः स्वाहा॥३५॥

अन्येषां चैव देवानां सम्भवस्तेजसां शिवा।
ततः समस्त-देवानां तेजो-राशि-समुद्भवाम्॥३६॥
ॐ ऐं ह्रीं ह्रां गुण-मध्यायै नमः स्वाहा॥३६॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तां विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिषार्दिताः ।
स्वायुधेभ्यः समुत्पाद्य तेजो-युक्तानि सत्वरा ॥३७॥

ॐ ऐं ह्रीं स्मूं गुण-त्रयायै नमः स्वाहा ॥३७॥

ततो देवा ददुस्तस्यै स्वानि स्वान्यायुधानि च।
ऊचुर्जय जय तूच्चैर्जयन्ती च जयैषिणः ॥३८॥

ॐ ऐं ह्रीं ऊं वर्ण-रूपिण्यै नमः स्वाहा ॥३८॥

शूलं शूलाद् विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाक-धृक्।
चक्रं च दत्तवान् कृष्णः समुत्पाद्य स्व-चक्रतः ॥३९॥

ॐ ऐं ह्रीं गूं सदोजसे नमः स्वाहा ॥३९॥

शंखं च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः।
मारुतो दत्तवाँश्चापं बाणपूर्णे तथेषुधी ॥४०॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रूं वह्नि-रूपायै नमः स्वाहा ॥४०॥

वज्रमिन्द्रः समुत्पाद्य कुलिशादमराधिपः।
ददौ तस्यै सहस्राक्षो घण्टामैरावताद् गजात् ॥४१॥

ॐ ऐं ह्रीं हूं देवतायै नमः स्वाहा ॥४१॥

कालदण्डाद् यमो दण्डं पाशं चाम्बुपतिर्ददौ।
प्रजापतिश्चाक्ष-मालां ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम् ॥४२॥

ॐ ऐं ह्रीं भैं शाङ्कर्यै नमः स्वाहा ॥४२॥

समस्त-रोम-कूपेषु निज-रश्मीन् दिवाकरः।
कालश्च दत्तवान् खड्गं तस्याश्चर्म च निर्मलम् ॥४३॥

ॐ ऐं ह्रीं ह्रां शाम्भव्यै नमः स्वाहा ॥४३॥

क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाऽम्बरे।
चूडा-मणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च ॥४४॥

ॐ ऐं ह्रीं क्रूं शान्तायै नमः स्वाहा ॥४४॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अर्ध-चन्द्रं तथा शुभ्रं केयूरान् सर्व-बाहुषु।
नूपुरौ विमलौ तद्वद् ग्रैवेयकमनुत्तमम् ॥४५॥

ॐ ऐं ह्रीं मूं चन्द्र-सूर्याग्नि-लोचनायै नमः स्वाहा॥४५॥

अङ्गुलीयक-रत्नानि समस्ताष्वङ्गुलीषु च।
विश्व-कर्मा ददौ तस्यै परशुं चाति-निर्मलम् ॥४६॥

ॐ ऐं ह्रीं ल्रीं सुजातायै नमः स्वाहा॥४६॥

अस्त्राण्यनेक-रूपाणि तथाऽभेद्यं च दंशनम्।
अम्लान-पङ्कजां मालां शिरस्युरसि चापराम् ॥४७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रां जय-भूमिष्ठायै नमः स्वाहा॥४७॥

अददज्जलधिस्तस्यै पङ्कजं चाति-शोभनम्।
हिमवान् वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च ॥४८॥

ॐ ऐं ह्रीं द्रूं जाह्नव्यै नमः स्वाहा॥४९॥

ददावशून्यं सुरया पान-पात्रं धनाधिपः।
शेषश्च सर्व-नागेशो महा-मणि-विभूषितम् ॥४९॥

ॐ ऐं ह्रीं द्धूं जन-पूजितायै नमः स्वाहा॥४९॥

नाग-हारं ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवीमिमाम्।
अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणैरायुधैस्तथा ॥५०॥

ॐ ऐं ह्रीं हम्लौं शास्त्रायै नमः स्वाहा॥५०॥

सम्मानिता ननादोच्चैः साट्टहासं मुहुर्मुहुः।
तस्या नादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं नभः ॥५१॥

ॐ ऐं ह्रीं क्रां शास्त्र-मयायै नमः स्वाहा॥५१॥

अमायताति-महता प्रति-शब्दो महानभूत्।
चुक्षुभुः सकला लोकाः समुद्राश्च चकम्पिरे ॥५२॥

ॐ ऐं ह्रीं स्हौं नित्यायै नमः स्वाहा॥५२॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः।
जयतु देवाश्च मुदा तामूचुः सिंह-वाहिनीम् ॥५३॥
ॐ ऐं ह्रीं म्लूं शुभायै नमः स्वाहा॥५३॥

सायुधां भूषणैर्युक्तां दृष्ट्वा ते विस्मयं गताः।
तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां भक्ति-नम्रात्म-मूर्तयः॥५४॥
ॐ ऐं ह्रीं श्री चन्द्रार्ध-मस्तकायै नमः स्वाहा॥५४॥

॥ देवा ऊचुः ॥

नमः शिवायै कल्याण्यै शान्त्यै पुष्ट्यै नमो नमः।
भगवत्यै नमो देव्यै रुद्राण्यै सततं नमः॥५५॥
ॐ ऐं ह्रीं गैं भारत्यै नमः स्वाहा॥५५॥

काल-रात्र्यै तथाम्बाया इन्द्राण्यै ते नमो नमः।
सिद्ध्यै बुद्ध्यै तथा वृद्ध्यै वैष्णव्यै ते नमो नमः॥५६॥
ॐ ऐं क्रूं भ्रामर्यै नमः स्वाहा॥५६॥

पृथिव्यां या स्थिता पृथ्व्या न ज्ञाता पृथिवी तु च।
अन्तः स्थिता प्रेक्षति च वन्दे तामीश्वरीं पराम्॥५७॥
ॐ ऐं ह्रीं त्रीं कल्याण्यै नमः स्वाहा॥५७॥

कल्याणं कुरु भो मातः! त्राहि नः शत्रु-तापितान्।
जहि पापं हयारि त्वं तेजसा स्वेन मोहितम्॥५८॥
ॐ ऐं ह्रीं क्स्त्रीं कराल्यै नमः स्वाहा॥५८॥

खलं मायाविनं घोरं स्त्री-वश्यं वर-दर्पितम्।
दुःखदं सर्व-देवानां नाना-रूप-धरं शठम्॥५९॥
ॐ ऐं ह्रीं कं योग-निष्ठायै नमः स्वाहा॥५९॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

त्वमेकां सर्व-देवानां शरणं भक्त-वत्सले!
पीडितान् दानवेनाद्य त्राहि देवि! नमोऽस्तु ते।।।६०।।

ॐ ऐं ह्रीं फ्रौं काल-संहार-कारिण्यै नमः स्वाहा।।६०।।

॥ ऋषिरुवाच ॥

एवं स्तुता तदा देवी सुरैः सर्व-सुख-प्रदा।
तानुवाच महा-देवी स्मित-पूर्वं शुभं वचः।।६१।।

ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं कलातीतायै नमः स्वाहा।।६१।।

॥ देव्युवाच ॥

भयं त्यजतु गीर्वाणा महिषान् मन्द-तेजसः।
हनिष्यामि रणेऽद्यैव वर-दृप्तं विमोहितम्।।६२।।

ॐ ऐं ह्रीं शां कात्यायन्यै नमः स्वाहा।।६२।।

॥ ऋषिरुवाच ॥

जय कृत्वा स्मितं देवी साट्टहासं चकार ह।
उच्चैः शब्दं महा-घोरं दानवानां भय-प्रदम्।।६३।।

ॐ ऐं ह्रीं क्ष्म्रीं कमलालयायै नमः स्वाहा।।६३।।

चकम्पे वसुधा तत्र श्रुत्वा तच्छब्दमद्भुतं।
चेलुश्च पर्वताः सर्वे चुक्षोभाब्धिश्च वीर्यवान्।।६४।।

ॐ ऐं ह्रीं रों कामिन्यै नमः स्वाहा।।६४।।

मेरुश्चचाल शब्देन दिशः सर्व-प्रपूरिताः।
भयं जग्मुस्तदा श्रुत्वा दानवास्तं स्वनं महत्।।६५।।

ॐ ऐं ह्रीं ङ्रं ब्रह्माण्ड-कोटि-संस्थानायै नमः स्वाहा।।६५।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जय पाहि तु देवास्तामूचुः परम-हर्षिताः।
महिषोऽपि स्वनं श्रुत्वा चुकोप मद-गर्वितः॥६६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रौं जगत्-सृष्ट्यादि-कारिण्यै नमः स्वाहा॥६६॥

किमेतदेव तान् दैत्यान् पपृच्छ स्वन-शंकितः।
गच्छन्तु त्वरिता दूता ज्ञातुं शब्द-समुद्भवम्॥६७॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महा-मायायै नमः स्वाहा॥६७॥

॥ दूता ऊचुः ॥

देवी-दैत्येश्वर! प्रौढ़ा दृश्यते काचिदङ्गना।
सर्वाङ्ग-भूषणा नारी सर्व-रत्नोपशोभिता॥६८॥
ॐ ऐं ह्रीं सां इन्दिरायै नमः स्वाहा॥६८॥

न मानुषी नासुरी सा दिव्य-रूप-मनोहरा।
सिंहारूढ़ाऽऽयुध-धरा चाष्टादश-करा वरा॥६९॥
ॐ ऐं ह्रीं त्रों ज्येष्ठायै नमः स्वाहा॥६९॥

सा नादं कुरुते नारी लक्ष्यते मद-गर्विता।
सुरा-पान-रता कामं जानीमो न स-भर्तृका॥७०॥
ॐ ऐं ह्रीं प्रूं चन्द्रामृत-परिस्नुतायै नमः स्वाहा॥७०॥

अन्तरिक्ष-स्थिता देवा तां स्तुवन्ति मदान्विताः।
द्रष्टुं नैव समर्थाः स्मस्तत्-तेजः परिघर्षिताः॥७१॥
ॐ ऐं ह्रीं ग्लौं रौद्र्यै नमः स्वाहा॥७१॥

॥ महिष उवाच ॥

गच्छ वीर! मयादिष्टो मन्त्रि-श्रेष्ठ! बलान्वित!
सामादिभिरुपायैस्त्वं समानय शुभाननाम्॥७२॥
ॐ ऐं ह्रीं क्रौं नारायण्यै नमः स्वाहा॥७२॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

॥ ऋषिरुवाच ॥

महिषस्य वचः श्रुत्वा पेशलं मन्त्रि-सत्तमः।
गत्वा दूर-तरं स्थित्वा तामुवाच मनस्विनीम्॥७३॥

ॐ ऐं ह्रीं व्रीं ब्राह्म्यै नमः स्वाहा॥७३॥

॥ मन्त्री उवाच ॥

काऽसि त्वं मधुरालापे किमत्रागमनं कृतम्।
पृच्छति त्वां महाभागे! मन्मुखेन मम प्रभुः॥७४॥

ॐ ऐं ह्रीं स्लीं कृष्ण-पिङ्गलायै नमः स्वाहा॥७४॥

स जेता सर्व-देवानामनश्यं तु नरैः किल।
द्रष्टुमिच्छति राजा मे महिषो नाम पार्थिवः॥७५॥

ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं योगिगम्यायै नमः स्वाहा॥७५॥

वशगौऽसौ तवात्यर्थं रूप-संश्रवणात् तव।
करभोरु! वदाऽऽशु त्वं संविधेयं मया यथा॥७६॥

ॐ ऐं ह्रीं ह्रौं योगि-ध्येयायै नमः स्वाहा॥७६॥

॥ देव्युवाच ॥

मन्त्रि-वर्य! सुराणां वै जननीं विद्धि मां किल।
श्रीमहालक्ष्मीं विख्यातां सर्व-दैत्य-निषूदिनीम्॥७७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रां तपस्विन्यै नमः स्वाहा॥७७॥

प्रार्थिताऽहं सुरैः सर्वैर्महिषस्य क्षयाय च।
तस्मादिहागतास्म्यद्य तद् नाशाय कृतोद्यमा॥७८॥

ॐ ऐं ह्रीं ग्रीं ज्ञानि-रूपायै नमः स्वाहा॥७८॥

मघवा स्वर्गमाप्नोतु देवाः सन्तु हविर्भुजः।
यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ॥७९॥

ॐ ऐं ह्रीं क्रूं निराकारायै नमः स्वाहा॥७९॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। मन्त्री उवाच ।।

राजन्! देवी वरारोहा सिंहस्योपरि संस्थिता।
अष्टादश-भुजा रम्या वरायुधधरा परा।।८०।।

ॐ ऐं ह्रीं क्रीं भक्ताभीष्ट-फल-प्रदायै नमः स्वाहा।।८०।।

सा मयोक्ता महाराज! महिषं भज भामिनी!
महिषी भव राज्ञस्त्वं त्रैलोक्याधिपतिः प्रिया।।८१।।

ॐ ऐं ह्रीं यां भूतात्मिकायै नमः स्वाहा।।८१।।

एवं मद्-वचनं श्रुत्वा सा स्मयावेश-मोहिता।
मामुवाच विशालाक्षी स्मित-पूर्वमिदं वचः।।८२।।

ॐ ऐं ह्रीं द्लूं भूत-मात्रे नमः स्वाहा।।८२।।

करिष्येऽहं मृधे युद्धं हनिष्ये त्वां सुराप्रियम्।
गच्छ वा दुष्ट! पातालं जीवितेच्छा यदस्ति ते।।८३।।

ॐ ऐं ह्रीं द्रूं भूतेशाय नमः स्वाहा।।८३।।

।। महिष उवाच ।।

गच्छ ताम्र! महाभाग! युद्धाय कृत-निश्चयः।
तामानय वरारोहां जित्वा धर्मेण मानिनीम्।।८४।।

ॐ ऐं ह्रीं क्षं भूत-धारिण्यै नमः स्वाहा।।८४।।

।। ऋषिरुवाच ।।

एवं तद्-भाषितं श्रुत्वा ताम्रः काल-वशं गतः।
निर्गतः सैन्य-संयुक्तः प्रणम्य महिषं नृपम्।।८५।।

ॐ ऐं ह्रीं ओं स्वधा नारी-मध्य-गतायै नमः स्वाहा।।८५।।

स गत्वा तां समालोक्य देवीं सिंहोपरि-स्थिताम्।
स्तूयमानां सुरैः सर्वैं सर्वायुध-विभूषिताम्।।८६।।

ॐ ऐं ह्रीं क्रौं षडाधारादि-वर्तिन्यै नमः स्वाहा।।८६।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तामुवाच विनीतः सन् वाक्यं मधुरया गिरा।
देवि! दैत्येश्वरः भृङ्गी स्वरूप-गुण-मोहितः ॥८७॥
ॐ ऐं ह्रीं क्ष्म्क्लरीं मोहदायै नमः स्वाहा ॥८७॥

स्पृहां करोति महिषस्त्वत्-पाणिग्रहणाय वै।
भुक्ष्व राज्य-सुखं पूर्णं वर्षाणामयुतायुतम् ॥८८॥
ॐ ऐं ह्रीं वां अंशु-भवायै नमः स्वाहा ॥८८॥

॥ देव्युवाच ॥

गच्छ ताम्र! पतिं ब्रूहि मुमुर्षुं मद-चेतसम्।
महिषं चाति-कामार्तं मूढं ज्ञान-विवर्जितम् ॥८९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रूं शुभ्रायै नमः स्वाहा ॥८९॥

नाहं पतिं वरा नारी वर्तते मे पतिः प्रभुः।
सर्व-कर्त्ता सर्व-साक्षी ह्यकर्ता निस्पृहः स्थिरः ॥९०॥
ॐ ऐं ह्रीं ग्लूं सूक्ष्मायै नमः स्वाहा ॥९०॥

तं त्यक्त्वा महिषं मत्तं कथं सेवितुमुत्सहे।
जीवितेच्छाऽस्ति चेत् पाप! गच्छ पातालमाशु वै ॥९१॥
ॐ ऐं ह्रीं ल्रीं सर्व-गतायै नमः स्वाहा ॥९१॥

॥ ऋषिरुवाच ॥

उक्त्वैवं सा तदा देवी जगर्ज भृशमद्भुतम्।
कल्पान्त-सदृशं नादं चक्रे दैत्य-भयावहम् ॥९२॥
ॐ ऐं ह्रीं प्रें सर्वदायै नमः स्वाहा ॥९२॥

ताम्रः श्रुत्वा च तं शब्दं भय-त्रस्त-मनास्तदा।
पलायनं ततः कृत्वा जगाम महिषान्तिकम् ॥९३॥
ॐ ऐं ह्रीं हूं दुर्लभ-रूपिण्यै नमः स्वाहा ॥९३॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ताम्रः समागतं दृष्ट्वा हयारिरपि मोहितः।
दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं त्रैलौक्यममरारयः ॥९४॥

ॐ ऐं ह्लीं ह्रौं सत्यायै नमः स्वाहा॥९४॥

सन्नद्धाखिल-सैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः।
आः किमेतदेवं क्रोधादाभाष्य महिषासुरः ॥९५॥

ॐ ऐं ह्लीं दें अनन्तायै नमः स्वाहा॥९५॥

अभ्यधावत तं शब्दमशेषैरसुरैर्वृतः।
स ददर्श ततो देवीं व्याप्त-लोक-त्रयां-त्विषा ॥९६॥

ॐ ऐं ह्लीं नूँ सर्व-ज्ञान-प्रदायै नमः स्वाहा॥९६॥

पादाक्रान्त्या नत-भुवं किरीटोल्लिखिताम्बराम्।
क्षोभिताशेष-पातालां धनुर्ज्या-निःस्वनेन ताम् ॥९७॥

ॐ ऐं ह्लीं आं परायै नमः स्वाहा॥९७॥

दिशो भुज-सहस्रेण समन्ताद् व्याप्य संस्थिताम्।
ततः प्रववृते युद्धं तया देव्या सुर-द्विषाम् ॥९८॥

ॐ ऐं ह्रीं फ्रां हरायै नमः स्वाहा॥९८॥

शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तैरादीपित-दिगन्तरम्।
महिषासुर-सेनानी श्चिक्षुराख्यो महासुरः ॥९९॥

ॐ ऐं ह्रीं प्रीं नित्यानन्दायै नमः स्वाहा॥९९॥

युयुधे चामरश्चान्यैश्चतुरङ्ग-बलान्वितः।
रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्यो महासुरः ॥१००॥

ॐ ऐं ह्लीं दं नील-संकाशायै नमः स्वाहा॥१००॥

अयुद्ध्यतायुतानां च सहस्रेण महा-हनुः।
पञ्चाशद्भिश्च नियुतैरसिलोमा महासुरः ॥१०१॥

ॐ ऐं ह्लीं फ्रीं निम्नगायै नमः स्वाहा॥१०१॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अयुतानां शतै षड्भिर्वाष्कलो युयुधे रणे ।
गज-वाजि-सहस्रोघैरनेकैः परिवारितः ॥१०२॥

ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं निरालसायै नमः स्वाहा ॥१०२॥

वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मिन्नयुद्धयत ।
विडालाख्योऽयुतानां च पञ्चाशद्भि रथायुतैः ॥१०३॥

ॐ ऐं ह्रीं गूं मात्रायै नमः स्वाहा ॥१०३॥

युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवारितः ।
अन्ये च तत्रायुतशो रथ-नाग-हयैर्वृताः ॥१०४॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लक्ष्म्यै नमः स्वाहा ॥१०४॥

युयुधुः संयुगे देव्या सह तत्र महासुराः ।
कोटि-कोटि-सहस्रैस्तु रथानां दन्तिनां तथा ॥१०५॥

ॐ ऐं ह्रीं सां पद्मायै नमः स्वाहा ॥१०५॥

हयानां च वृतो युद्धे तत्राऽभून्महिषासुरः ।
तोमरैर्भिन्दिपालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा ॥१०६॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पद्मालयायै नमः स्वाहा ॥१०६॥

युयुधुः संयुगे देव्याः खड्गैः परशु-पट्टिशैः ।
केचिच्च चिक्षिपुः शक्तीः केचित् पाशाँस्तथापरे ॥१०७॥

ॐ ऐं ह्रीं जुं कमलालयायै नमः स्वाहा ॥१०७॥

देवीं खड्ग-प्रहारैस्तु ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः ।
साऽपि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका ॥१०८॥

ॐ ऐं ह्रीं हूं श्रियै नमः स्वाहा ॥१०८॥

लीलयैव प्रचिच्छेद निज-शस्त्रास्त्र-वर्षिणी ।
अनायस्ताननना देवी स्तूयमाना सुरर्षिभिः ॥१०९॥

ॐ ऐं ह्रीं सं हरि-प्रियायै नमः स्वाहा ॥१०९॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मुमोचासुर-देहेषु शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी।
सोऽपि क्रुद्धो धुत-सटो देव्या वाहन-केशरी ॥११०॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं राघव-प्रियायै नमः स्वाहा॥११०॥

चचारासुर-सैन्येषु वनेष्विव हुताशनः।
निःश्वासान् मुमुचे याँश्च युद्ध्यमाना रणेऽम्बिका ॥१११॥

ॐ ऐं ह्रीं सौं रमायै नमः स्वाहा॥१११॥

त एव सद्यः संभूता गणाः शत-सहस्रशः।
युयुधुस्ते परशुभिर्भिन्दिपालाऽसिपट्टिशैः ॥११२॥

ॐ ऐं ह्रीं दीं परमायै नमः स्वाहा॥११२॥

नाशयन्तोऽसुर-गणान् देवी शक्त्युपबृंहिताः।
अवादयन्तः पटहान् गणाः शङ्खाँस्तथापरे ॥११३॥

ॐ ऐं ह्रीं प्रें शोभनायै नमः स्वाहा॥११३॥

मृदंगाश्च तथैवान्ये तस्मिन् युद्धमहोत्सवे।
ततो देवी त्रिशूलेन गदया शक्ति-वृष्टिभिः ॥११४॥

ॐ ऐं ह्रीं यां पद्म-वासायै नमः स्वाहा॥११४॥

खड्गादिभिश्च शतशो निजघान महासुरान्।
पातयामास चैवान्यान् घण्टा-स्वन-विमोहितान् ॥११५॥

ॐ ऐं ह्रीं रूं विष्णु-प्रियायै नमः स्वाहा॥११५॥

असुरान् भुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यानकर्षयत्।
केचिद् द्विधा कृतास्तीक्ष्णै खड्ग-पातैस्तथापरे ॥११६॥

ॐ ऐं ह्रीं भं कृष्ण-प्रियायै नमः स्वाहा॥११६॥

विपोथिता निपातेन गदया भुवि शेरते।
वेमुश्च केचिद् रुधिरं मुसलेन भृशं हताः॥११७॥

ॐ ऐं ह्रीं सूं राम-प्रियायै नमः स्वाहा॥११७॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

केचिन्निपतिता भूमौ भिन्नाः शूलेन वक्षसि।
निरन्तराः शरौघेण कृताः केचिद् रणाजिरे ॥११८॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रां शौरि-प्रियायै नमः स्वाहा॥११८॥

श्येनानुकारिणः प्राणान् मुमुचुस्त्रि-दशार्दनाः।
केषांचिद् बाहवश्छिन्नाश्छिन्न-ग्रीवास्तथापरे ॥११९॥

ॐ ऐं ह्रीं ओं जिष्णु-प्रियायै नमः स्वाहा॥११९॥

शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः।
विच्छिन्न-जंघास्त्वपरे पेतुरुर्व्यां महासुराः ॥१२०॥

ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं लूं माधव-प्रियायै नमः स्वाहा॥१२०॥

एक-बाह्वक्षि-चरणाः केचिद् देव्या द्विधा कृताः।
छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिताः पुनरुत्थिताः ॥१२१॥

ॐ ऐं ह्रीं डूं क्षीरोद-तनयायै नमः स्वाहा॥१२१॥

कबन्धाश्छिन्न-शिरसः खड्ग-शक्त्यृष्टि-पाणयः।
ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्य-लयाश्रिताः ॥१२२॥

ॐ ऐं ह्रीं जूं कमल-वासिन्यै नमः स्वाहा॥१२२॥

कबन्धा युयुधुर्देव्या गृहीत-परमायुधा।
तिष्ठ तिष्ठ तु भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः॥१२३॥

ॐ ऐं ह्रीं धूं क्षीराब्धि-तनयायै नमः स्वाहा॥१२३॥

पातितै रथ-नागाश्वैरसुरैश्च वसुन्धरा।
अगम्या साभवत् तत्र यत्राभूत् स महा-रणः ॥१२४॥

ॐ ऐं ह्रीं त्रें नारायण्यै नमः स्वाहा॥१२४॥

शोणितौघा महा-नद्याः सद्यस्तत्र प्रसुस्रुवुः।
मध्ये चासुर-सैन्यस्य वारणासुरवाजिनाम् ॥१२५॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शुभायै नमः स्वाहा॥१२५॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

क्षणेन तन्महा-सैन्यमसुराणां तथाऽम्बिका।
निन्ये क्षयं यथा वह्निस्तृण-दारु-महा-चयम् ॥१२६॥

ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं शिवायै नमः स्वाहा॥१२६॥

स च सिंहो महा-नादमुत्सृजन् धुत-केशरः।
शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वति ॥१२७॥

ॐ ऐं ह्रीं ईं कल्याण्यै नमः स्वाहा॥१२७॥

देव्या गणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं तथासुरैः।
यथैषां तुतुषुर्देवाः पुष्प-वृष्टि-मुचो दिवि ॥१२८॥

ॐ ऐं ह्रीं ह्रां क्षेमायै नमः स्वाहा॥१२८॥

॥ ॐ जय जय श्रीमार्कण्डेय-उत्तर-पुराणे
सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये सत्या सन्तु (यजमानस्य कामाः)
श्रीजगदम्बार्पणमस्तु॥

॥ वैदिक आहुति ॥

एक उल्टे अखण्ड पानपत्ते पर शाकल्य, घी में भिगोकर १ कमलगट्टा, १ सुपारी, २ लौंग, १ छोटी इलायची, गूगल शहद ये सब वस्तुएँ स्रुची में रखकर खड़े होकर निम्न मन्त्र बोले (इस अध्याय में गूगल की आहुति विशेष है।) –

ॐ प्राणाय स्वाहा पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा॥ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॐ स्वाहा॥२२।२३॥

बाद में स्रुवे से पाँच बार घी छोड़ते हुए इस मन्त्र का उच्चारण करें –

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसा पावानः। पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽ आदिशो विदिशऽ उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥ (यजु. सं. अ. ६।१९ मन्त्र)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। तान्त्रिक आहुति ।।

ह्रीं साङ्गायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै श्रीमहालक्ष्म्यै सप्त–विंशति–वर्णात्मिकायै लक्ष्मी–बीजाधिष्ठात्र्यै नमः महाऽऽहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए आहुति देवे, सामग्री वैदिक आहुति के समान ही है।

॥ द्वितीयोऽध्यायः ॥

॥ उवाच १६॥ श्लोकाः १२८॥ एवमादितः २३६ ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

॥ तृतीयोऽध्यायः ॥

॥ ध्यानम् ॥

ॐ उद्यद्भानु-सहस्र-कान्तिमरुण-क्षौमां शिरो-मालिकां,
रक्तालिप्त-पयोधरां जप-वटीं विद्यामभीतिं वरम्।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्र-विलसद्-वक्त्रारविन्द-श्रियम्,
देवीं बद्ध-हिमांशु-रत्न-मुकुटां वन्देऽरविन्द-स्थिताम्॥

॥ ऋषिरुवाच ॥

निहन्यमानं तत्-सैन्यमवलोक्य महासुरः।
सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद् ययौ योद्धुमथाम्बिकाम् ॥१॥

ॐ ऐं ह्रीं ह्रूं भावुकायै नमः स्वाहा॥१॥

स देवीं शर-वर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः।
यथा मेरु-गिरेः श‍ृङ्गं तोय-वर्षेण तोयदः ॥२॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लूं कुशलायै नमः स्वाहा॥२॥

तस्यच्छित्वा ततो देवी लीलयैव शरोत्करान्।
जघान तुरगान् बाणैर्यन्तारं चैव वाजिनाम् ॥३॥

ॐ ऐं ह्रीं क्रां भद्रायै नमः स्वाहा॥३॥

चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजं चाति-समुच्छ्रितम्।
विव्याध चैव गात्रेषु छिन्न-धन्वानमाशुगैः ॥४॥

ॐ ऐं ह्रीं ल्लूं शस्तायै नमः स्वाहा॥४॥

सच्छिन्न-धन्वा विरथो हताश्वो हत-सारथिः।
अभ्यधावत तां देवीं खड्ग-चर्म-धरोऽसुरः ॥५॥

ॐ ऐं ह्रीं फ्रें भद्रायै नमः स्वाहा॥५॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सिंहमाहत्य खड्गेन तीक्ष्ण-धारेण मूर्धनि।
आजघान भुजे सव्ये देवीमप्यति-वेगवान् ॥६॥

ॐ ऐं ह्रीं क्रीं वीर-मर्दन्यै नमः स्वाहा॥६॥

तस्या खड्गो भुजं प्राप्य पफाल नृप-नन्दन!।
ततो जग्राह शूलं स कोपादरुण-लोचनः ॥७॥

ॐ ऐं ह्रीं म्लूं देव्यै नमः स्वाहा॥७॥

चिक्षेप च ततस्तत्तु भद्र-काल्यां महासुरः।
जाज्वल्यमानं तेजोभी रवि-बिम्बमिवाम्बरात् ॥८॥

ॐ ऐं ह्रीं ध्रें बैकुण्ठ-वासिन्यै नमः स्वाहा॥८॥

दृष्ट्वा तदापतच्छूलं देवी शूलममुञ्चत।
तच्छूलं शतधा तेन नीतं स च महासुरः ॥९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रौं धनदायै नमः स्वाहा॥९॥

हते तस्मिन् महा-वीर्ये महिषस्य चमू-पतौ।
आजगाम गजारूढश्चामरस्त्रिदशार्दनः ॥१०॥

ॐ ऐं ह्रीं ह्रौं सुखदायै नमः स्वाहा॥१०॥

सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ देव्यास्तामम्बिका द्रुतम्।
हुङ्काराभिहतां भूमौ पातयामास निष्प्रभाम् ॥११॥

ॐ ऐं ह्रीं ब्रीं शुभदायै नमः स्वाहा॥११॥

भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा क्रोध-समन्वितः।
चिक्षेप चामरः शूलं बाणैस्तदपि साच्छिनात ॥१२॥

ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं शिवदायै नमः स्वाहा॥१२॥

ततः सिंहः समुत्पत्य गज-कुम्भान्तरे स्थितः।
बाहु-युद्धेन युयुधे तेनोच्चैस्त्रि-दशारिणा ॥१३॥

ॐ ऐं ह्रीं त्रौं विष्णु-वल्लभायै नमः स्वाहा॥१३॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

युद्ध्यमानौ ततस्तौ तु तस्मान्नागान्महीं गतौ।
युयुधातेऽति-संरब्धौ प्रहारैरति-दारुणैः ॥१४॥
ॐ ऐं ह्रीं ह्रौं देव-दैव्यै नमः स्वाहा॥१४॥

ततो वेगात् खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा।
कर-प्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक् कृतम् ॥१५॥
ॐ ऐं ह्रीं गीं कामदायै नमः स्वाहा॥१५॥

उदग्रश्च रणे देव्या शिला-वृक्षादिभिर्हतः।
दन्त-मुष्टि-तलैश्चैव करालश्च निपातितः ॥१६॥
ॐ ऐं ह्रीं यूं अर्थदायै नमः स्वाहा॥१६॥

देवी क्रुद्धा गदा-पातैश्चूर्णयामास चोद्धतम्।
वाष्कलं भिन्दिपालेन बाणैस्ताम्रं तथान्धकम् ॥१७॥
ॐ ऐं ह्रीं भक्त-प्रियायै नमः स्वाहा॥१७॥

उग्रास्यमुग्र-वीर्यं च तथैव च महा-हनुम्।
त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी ॥१८॥
ॐ ऐं ह्रीं ह्रूं भक्त्यै नमः स्वाहा॥१८॥

विडालस्यासिना कायात् पातयामास वै शिरः।
दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ शरैर्निन्ये यम-क्षयम् ॥१९॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रौं बुद्धिदायै नमः स्वाहा॥१९॥

हाहाकारो महानासीत् सैन्ये तस्य दुरात्मनैः।
चुक्रुशू रुरुदुश्चैव त्राहि त्राहि तु भाषणैः॥२०॥
ॐ ऐं ह्रीं ओं धन-प्रदायै नमः स्वाहा॥२०॥

अन्ये ये सैनिका राजन्! सिंहेन भक्षिताश्च ते।
तच्छ्रुवा वचनं तेषां महिषो दुर्मनास्तदा ॥२१॥
ॐ ऐं ह्रीं अं अर्थ-प्रदायै नमः स्वाहा॥२१॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तेषां तद्-वचनं श्रुत्वा क्रोध-युक्तो नराधिपः।
दारुकं प्राह तरसा रथमानय मेऽद्भुतम्॥२२॥

ॐ ऐं ह्रीं म्लौं महा-देव्यै नमः स्वाहा॥२२॥

सहस्र-खर-संयुक्तं पताका-ध्वज-भूषितम्।
आयुधैः संयुतं शुभ्रं सुचक्रं चारु-कूबरम्॥२३॥

ॐ ऐं ह्रीं प्रीं दण्ड-पाणि-प्रियायै नमः स्वाहा॥२३॥

आनीतं तं रथं ज्ञात्वा दानवेन्द्रो महा-बलः।
सर्वायुध-समायुक्तो वरास्तरण-संयुतः॥२४॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दण्ड-पाणि-मात्रे नमः स्वाहा॥२४॥

मानुषं देहमास्थाय संग्रामे गन्तुमुद्यतः।
त्यक्त्वा तन्माहिषं रूपं बभूव पुरुषः शुभः॥२५॥

ॐ ऐं ह्रीं त्रों दण्ड-निधये नमः स्वाहा॥२५॥

दिव्याम्बर-धरः कान्तः पुष्प-वाण इवापरः।
तमायान्तं समालोक्य दैत्यानामधिपं तदा॥२६॥

ॐ ऐं ह्रीं ह्सौं दण्ड-पाणि-समाराध्यै नमः स्वाहा॥२६॥

बहुभिः संवृतं वीरैर्देवी शंखमवादयत्।
समीपमेत्य देव्यास्तु तामुवाच हसन्निव॥२७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दण्ड-पाणि-प्रपूजितायै नमः स्वाहा॥२७॥

॥ महिष उवाच ॥

देवि! संसार-चक्रेऽस्मिन् वर्तमाने जनः किल।
नरो वाऽथ तथा नारी सुखं वाञ्छति सर्वथा॥२८॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दण्ड-पाणि-गृहासक्तायै नमः स्वाहा॥२८॥

नारी-पुरुषयोः कान्ते! समान-वयसोः सदा।
संयोगो यः समाख्यातः स एवात्युत्तमः स्मृतः॥२९॥

ॐ ऐं ह्रीं स्त्रीं दण्ड-पाणि-प्रियंवदायै नमः स्वाहा॥२९॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तं चेत् करोषि संयोगं वीरेण च मया सह।
अत्युत्तम-सुखस्यैव प्राप्तिः स्यात् ते न संशयः॥३०॥

ॐ ऐं ह्रीं प्लूं दण्ड-पाणि-प्रियतमायै नमः स्वाहा॥३०॥

इन्द्रादयः सुरा सर्वे संग्रामे विजिता मया।
रत्नानि यानि दिव्यानि भवेनऽस्मिन् ममाधुना॥३१॥

ॐ ऐं ह्रीं स्त्रीं दण्ड-पाणि-मनोहरायै नमः स्वाहा॥३१॥

भुङ्क्ष्व त्वं तानि सर्वाणि यथेष्टं देहि वा यथा।
पट्ट-राज्ञी भवाद्य त्वं दासोऽस्मि तव सुंदरि!॥३२॥

ॐ ऐं ह्रीं व्रीं दण्ड-पाणि-हृत-प्राणायै नमः स्वाहा॥३२॥

॥ ऋषिरुवाच ॥

एवं ब्रुवाणं तं दैत्यं देवी भगवती हि सा।
प्रहस्य सस्मितं वाक्यमुवाच वर-वर्णिनी॥३३॥

ॐ ऐं ह्रीं लूं दण्ड-पाणि-सुसिद्धिदायै नमः स्वाहा॥३३॥

॥ देव्युवाच ॥

नाहं पुरुषमिच्छामि परमं पुरुषं विना।
तस्य चेच्छाम्यहं दैत्य! सृजामि सकलं जगत्॥३४॥

ॐ ऐं ह्रीं द्रां दण्ड-पाणि-पराऽमृतायै नमः स्वाहा॥३४॥

स मां पश्यति विश्वात्मा तस्याऽहं प्रकृतिः शिवा।
मूर्खस्त्वमसि मन्दात्मन् यत् स्त्री-सङ्गं चिकीर्षसि॥३५॥

ॐ ऐं ह्रीं क्ष्मीं दण्ड-पाणि-प्रहर्षितायै नमः स्वाहा॥३५॥

नरस्य बन्धनार्थाय शृंखला स्त्री प्रकीर्तिता।
नारी-संगे महद्-दुःखं जानन् किं त्वं विमुह्यसि॥३६॥

ॐ ऐं ह्रीं स्कं दण्ड-पाणि-विघ्न-हरायै नमः स्वाहा॥३६॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

त्यज वैरं सुरैः सार्धं यथेष्टं विचरावनौ।
पातालं गच्छ वा कामं जीवितेच्छा यदास्ति ते।।३७।।

ॐ ऐं ह्रीं त्रूं नारायण्यै नमः स्वाहा।।३७।।

अथवा कुरु संग्रामं बलवत्यस्मि साम्प्रतम्।
प्रेषिताऽहं सुरैः सर्वैस्तव नाशाय दानव!।।३८।।

ॐ ऐं ह्रीं द्रीं दण्ड-पाणि-शिरोधृतायै नमः स्वाहा।।३८।।

हनिष्यामि महाबाहो! त्वामहं नात्र संशयः।

।। ऋषिरुवाच ।।

उक्तस्तु स तया देव्या धनुरादाय दानवः।
(मुमोच तरसा बाणान् कर्णाकृष्टाञ्छिलाशितान्)।
देवी चिच्छेद तान् बाणैः क्रोधान्मुक्तैरयोमुखैः।।३९।।

ॐ ऐं ह्रीं म्लूं वाराह्यै नमः स्वाहा।।३९।।

तयोः परस्परं युद्धं सम्बभूव भय-प्रदम्।
स पदाति-रथं सैन्यं देव्या सिंहेन नाशितम्।।४०।।

ॐ ऐं ह्रीं शां दण्ड-पाणि-प्राप्त-चर्चायै नमः स्वाहा।।४०।।

एवं संक्षीयमाणे तु स्व-सैन्ये महिषासुरः।
माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामास तान् गणान्।।४१।।

ॐ ऐं ह्रीं ल्लीं दण्ड-पाणि-प्राप्त-पदायै नमः स्वाहा।।४१।।

काँश्चित्तुण्ड-प्रहारेण क्षुरक्षे-पैस्तथापरान्।
लाङ्गूल-ताडिताँश्चान्यान् शृङ्गाभ्यां च विदारितान्।।४२।।

ॐ ऐं ह्रीं लूं दण्ड-पाण्युन्मुख्यै (मुखायै) नमः स्वाहा।।४२।।

वेगेन काँश्चिदपरान् नादेन भ्रमणेन च।
निःश्वास-पवनेनान्यान् पातयामास भूतले।।४३।।

ॐ ऐं ह्रीं श्रूं दण्ड-पाणि-वरोन्मुख्यै नमः स्वाहा।।४३।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः।
सिंहं हन्तुं महा-देव्याः कोपं चक्रे ततोऽम्बिका ॥४४॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लां दण्ड-हस्तायै नमः स्वाहा।।४४।।

सोऽपि कोपान्महा-वीर्यः क्षुर-क्षुण्ण-महीतलः।
शृङ्गाभ्यां पर्वतानुच्चाँश्चिक्षेप च ननाद च ॥४५॥

ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं दण्ड-प्राप्त-पदायै नमः स्वाहा।।४५।।

वेग-भ्रमण-विक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्यत।
लाङ्गूलेनाहतः साब्धिः प्लावयामास सर्वतः ॥४६॥

ॐ ऐं ह्रीं गां दण्ड-बाहवे नमः स्वाहा।।४६।।

धुत-शृङ्ग-विभिन्नाश्च खण्डं खण्डं ययुर्घनाः।
श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्नभसोऽचलाः ॥४७॥

ॐ ऐं ह्रीं ल्लूं विश्व-रूपायै नमः स्वाहा।।४७।।

एवं क्रोध-समाध्मातमापतन्तं महासुरम्।
दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तन्-नाशाय तदाकरोत् ॥४८॥

ॐ ऐं ह्रीं स्मलीं दण्ड-मात्रे नमः स्वाहा।।४८।।

सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तं बबन्ध महा-सुरम्।
तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे ॥४९॥

ॐ ऐं ह्रीं उं दण्ड-करायै नमः स्वाहा।।४९।।

ततः सिंहोऽभवत् सद्यो यावत् तस्याम्बिका शिरः।
छिन्नति तावत् पुरुषः खड्ग-पाणिरदृश्यत ॥५०॥

ॐ ऐं ह्रीं ह्रूं मोहिन्यै नमः स्वाहा।।५०।।

तत एवाशु पुरुषं देवी चिच्छेद सायकैः।
तं खड्ग-चर्मणा सार्द्धं ततः सोऽभून्महा-गजः ॥५१॥

ॐ ऐं ह्रीं ह्रूं दण्ड-चित्त-कृतास्पदायै नमः स्वाहा।।५१।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

करेण च महा-सिंहं तं चकर्ष जगर्ज च।
कर्षतस्तु करं देवी खड्गेन निरकृन्तत ॥५२॥

ॐ ऐं ह्रीं स्त्रां दण्ड-विद्यायै नमः स्वाहा।।५२।।

ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः।
तथैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥५३॥

ॐ ऐं ह्रीं म्क्लीं रुक्मिण्यै नमः स्वाहा।।५३।।

ततः क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमम्।
पपौ पुनः पुनश्चैव जहासारुण-लोचना ॥५४॥

ॐ ऐं ह्रीं भैं दण्डि-प्रियायै नमः स्वाहा।।५४।।

ननर्द चासुरः सोऽपि बल-वीर्य-मदोद्धतः।
विषाणाभ्यां च चिक्षेप चण्डिकां प्रति भूधरान् ॥५५॥

ॐ ऐं ह्रीं हौं दण्डि-पूज्यायै नमः स्वाहा।।५५।।

सा च तान् प्रहिताँस्तेन चूर्णयन्ती शरोत्करैः।
उवाच तं मदोद्धूत-मुख-रागाकुलाक्षरम् ॥५६॥

ॐ ऐं ह्रीं चं दण्डि-सन्तोष-दायिन्यै नमः स्वाहा।।५६।।

॥ देव्युवाच ॥

मा गर्वं कुरु मन्दात्माँस्तिष्ठ तिष्ठ रणाङ्गणे।
करिष्यामि निरातङ्कान् हत्वा त्वां सुर-सत्तमान्॥५७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रौं सर्व-मोहिन्यै नमः स्वाहा।।५७।।

गर्ज गर्ज क्षणं मूढ! मधु यावत् पिबाम्यहम्।
मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः ॥५८॥

ॐ ऐं ह्रीं स्क्रीं पद्मायै नमः स्वाहा।।५८।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

॥ ऋषिरुवाच ॥

उक्त्वैवं चषकं हैमं गृहीत्वा सुरया युतम्।
पपौ पुनः पुनः क्रोधाद्धन्तु-कामा महासुरम्॥५९॥

ॐ ऐं ह्रीं कं विजयायै नमः स्वाहा॥५९॥

एवमुक्त्वा समुत्पत्य साऽऽरूढा तं महासुरम्।
पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत् ॥६०॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लक्ष्म्यै नमः स्वाहा॥६०॥

ततः सोऽपि पदाऽऽक्रान्तस्तया निज-मुखात् ततः।
अर्धनिष्क्रान्त एवासीद् देव्या वीर्येण संवृतः ॥६१॥

ॐ ऐं ह्रीं स्कलीं अपराजितायै नमः स्वाहा॥६१॥

अर्ध-निष्क्रान्त एवाऽसौ युद्ध्यमानो महासुरः ।
तया महासिना देव्या शिरश्छित्त्वा निपातितः ॥६२॥

ॐ ऐं ह्रीं ह्रौं महा-लक्ष्म्यै नमः स्वाहा॥६२॥

ततो हाहा-कृतं सर्वं दैत्य-सैन्यं ननाश तत्।
प्रहर्षं च परं जग्मुः सकला देवता-गणाः ॥६३॥

ॐ ऐं ह्रीं ऐं महा-लक्ष्म्यै नमः स्वाहा॥६३॥

एवं स महिषो नाम स-सैन्यः स-सुहृद-गणः।
त्रैलोक्यं मोहयित्वा तु तया देव्या निपातितः॥६४॥

ॐ ऐं ह्रीं क्षम्ल्रीं लक्ष्म्यै नमः स्वाहा॥६४॥

त्रैलोक्यस्थैस्तदा भूतैर्महिषे विनिपातिते।
जयतूक्तं वचं सर्वे स-देवा सुर-मानुषैः॥६५॥

ॐ ऐं ह्रीं त्रौं दधीचि-पूज्यायै नमः स्वाहा॥६५॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तुष्टुवुस्तां सुरा देवीं सह दिव्यैर्महर्षिभिः।
जगुर्गन्धर्व-पतयो ननृतुश्चाप्सरो-गणाः ॥६६॥
ॐ ह्रीं प्रीं भक्ति-प्रियायै नमः स्वाहा॥६६॥

॥ ॐ जय जय श्रीमार्कण्डेय-उत्तर-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये सत्या सन्तु (यजमानस्य कामाः) श्रीजगदम्बार्पणमस्तु॥

॥ वैदिक आहुति ॥

एक उल्टे अखण्ड पानपत्ते पर शाकल्य, घी में भिगोकर १ कमलगट्टा, १ सुपारी, २ लौंग, १ छोटी इलायची, गूगल शहद ये सब वस्तुएँ स्रुची में रखकर खड़े होकर निम्न मन्त्र बोले (इस अध्याय में भैंसा गूगल विशेष है।) –

ॐ प्राणाय स्वाहा पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा॥ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनीम् ॐ स्वाहा॥२२।२३॥

बाद में स्रुवे से पाँच बार घी छोड़ते हुए इस मन्त्र का उच्चारण करें –

ॐ घृतं घृतपावानः पिबतव्वसां वसा पावानः। पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽ आदिशो व्विदिशऽ उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥ (यजु. सं. अ. ६।१९ मन्त्र)

॥ तान्त्रिक आहुति॥

ॐ जयन्ती साङ्गायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै लक्ष्मी-बीजाधिष्ठात्र्यै महाऽऽहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए आहुति देवे, सामग्री वैदिक आहुति के समान ही है।

॥ तृतीयोऽध्यायः॥

॥ उवाच ७॥ श्लोकाः ६६॥ एवमादितः ३०२ ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। चतुर्थोऽध्यायः ।।

।। ध्यानम् ।।

ॐ कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुल-भयदां मौलि-बद्धेन्दु-रेखां,
शङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिखिमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंह-स्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं,
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदश-परिवृतां सेवितां सिद्धि-कामैः ।।

।। ऋषिरुवाच ।।

अथ प्रमुदिताः सर्वे देवा इन्द्र-पुरोगमाः।
स्तुतिमारभिरे कर्तुं निहते महिषासुरे।।१।।

ॐ ऐं ह्रीं ओं दधीचि-प्रीतायै नमः स्वाहा।।१।।

शक्रादयः सुर-गणा निहतेऽति-वीर्ये,
तस्मिन्दुरात्मनि सुरारि-बले च देव्या।
तां तुष्टुवुः प्रणति-नम्र-शिरोधरांसा,
वाग्भिः प्रहर्ष-पुलकोद्गम-चारु-देहाः ।।२।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लूं दधीचि-वर-दायिन्यै नमः स्वाहा।।२।।

।। देवा ऊचुः ।।

देव्या यया ततमिदं जगदात्म-शक्त्या,
निःशेष-देव-गण-शक्ति-समूह-मूर्त्या।
तामम्बिकामखिल-देव-महर्षि-पूज्यां,
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः ।।३।।

ॐ ऐं ह्रीं नें दधीचीष्ट-देवतायै नमः स्वाहा।।३।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो,
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च।
सा चण्डिकाऽखिल-जगत्-परि-पालनाय,
नाशाय चाशुभ-भयस्य मतिं करोतु ॥४॥

ॐ ऐं ह्रीं हस्लीं दधीचि-मोक्ष-दायिन्यै नमः स्वाहा॥४॥

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः,
पापात्मनां कृत-धियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुल-जन-प्रभवस्य लज्जा,
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि! विश्वम्॥५॥

ॐ ऐं ह्रीं प्रें पद्मावत्यै नमः स्वाहा॥५॥

किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्,
किं चाति-वीर्यमसुर-क्षय-कारि भूरि।
किं चाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि,
सर्वेषु देव्यसुर-देव-गणादिकेषु ॥६॥

ॐ ऐं ह्रीं औं विशालाक्ष्यै नमः स्वाहा॥६॥

हेतुः समस्त-जगतां त्रिगुणाऽपि दोषै-,
र्न ज्ञायसे हरि-हरादिभिरप्यपारा।
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंश-भूत-
मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या ॥७॥

ॐ ऐं ह्रीं म्लूं नागाक्ष्यै नमः स्वाहा॥७॥

यस्याः समस्त सुरता समुदीरणेन,
तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि!।
स्वाहाऽसि वै पितृ-गणस्य च तृप्तिहेतु-
रुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च ॥८॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं नों दत्त-धनायै नमः स्वाहा ।।८।।

या मुक्ति-हेतुरविचिन्त्य-महा-व्रतात्व-
मभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रिय-तत्त्व-सारैः।
मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्त-समस्त-दोषै-
र्विद्याऽसि सा भगवती परमा हि देवि ॥९॥

ॐ ऐं ह्रीं सौं पीत-वासायै नमः स्वाहा ।।९।।

शब्दात्मिका सु-विमलर्ग्यजुषां निधान-
मुद्गीथ-रम्य-पद-पाठवतां च साम्नाम्।
देवी त्रयी भगवती भव-भावनाय,
वार्त्ता च सर्व-जगतां परमार्त्तिहन्त्री ॥१०॥

ॐ ऐं ह्रीं स्लीं जय-मालायै नमः स्वाहा ।।१०।।

मेधासि देवि! विदिताऽखिल-शास्त्र-सारा,
दुर्गासि दुर्ग-भव-सागर-नौर-सङ्गा।
श्रीः-कैटभारि-हृदयैक-कृताधि-वासा,
गौरी त्वमेव शशि-मौलि-कृतप्रतिष्ठा ॥११॥

ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं मङ्गलाक्ष्यै नमः स्वाहा ।।११।।

ईषत्-सहासममलं परिपूर्ण-चन्द्र-
बिम्बानुकारि-कनकोत्तम-कान्ति-कान्तम्।
अत्यद्भुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि,
वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ॥१२॥

ॐ ऐं ह्रीं फ्रूं सर्व-मङ्गलायै नमः स्वाहा ।।१२।।

दृष्ट्वा तु देवि! कुपितं भृकुटी-कराल-
मुद्यच्छशाङ्क-सदृशच्छवि-यन्न सद्यः।
प्राणान् मुमोच महिषस्तदतीव-चित्रं,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कैर्जीव्यते हि कुपितान्तक-दर्शनेन ॥१३॥

ॐ ऐं ह्रीं श्लीं दत्त-दारिद्र्य-नाशिन्यै नमः स्वाहा॥१३॥

देवि! प्रसीद परमा भवती भवाय,
सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि।
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेतन्नीतं,
बलं सुविपुलं महिषासुरस्य ॥१४॥

ॐ ऐं ह्रीं क्रीं सिद्ध्यै नमः स्वाहा॥१४॥

ते सम्मता जन-पदेषु धनानि तेषां,
तेषां यशांसि न च सीदति धर्म-वर्गः।
धन्यास्त एव निभृतात्मज-भृत्य-दारा,
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ॥१५॥

ॐ ऐं ह्रीं ह्रौं त्रैलोक्य-मोहिन्यै नमः स्वाहा॥१५॥

धर्म्याणि देवि! सकलानि सदैव कर्मा-
ण्यत्यादृतः प्रति-दिनं सुकृती करोति।
स्वर्गं प्रयाति च ततो भवती प्रसादा-
ल्लोक-त्रयेऽपि फलदा ननु देवि! तेन ॥१६॥

ॐ ऐं ह्रीं स्ल्लीं देवानां हित-कारिण्यै नमः स्वाहा॥१६॥

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः,
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।
दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या,
सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता ॥१७॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कमलायै नमः स्वाहा॥१७॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते,
कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम् ।
संग्राम-मृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु,
मत्वा तु नूनमहितान् विनिहंसि देवि! ॥१८॥
ॐ ऐं ह्रीं ह्रौं सूक्ष्मायै नमः स्वाहा ॥१८॥

दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म,
सर्वासुरानरिषु यत् प्रहिणोषि शस्त्रम्।
लोकान्प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्र-पूता,
इत्थं मतिर्भवति तेष्वपि तेऽति साध्वी ॥१६॥
ॐ ऐं ह्रीं श्रां महा-बलायै नमः स्वाहा ॥१९॥

खड्ग-प्रभा-निकर-विस्फुरणैस्तथोग्रैः,
शूलाग्र-कान्ति-निवहेन दृशोऽसुराणाम्।
यन्नागता विलयमंशुम-दिन्दु-खण्ड-
योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् ॥२०॥
ॐ ऐं ह्रीं ह्सूं मोहिन्यै नमः स्वाहा ॥२०॥

दुर्वृत्त-वृत्त-शमनं तव देवि! शीलं,
रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः।
वीर्यं च हन्तृ-हृत-देव-पराक्रमाणां,
वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम् ॥२१॥
ॐ ऐं ह्रीं क्स्लीं सर्व-मङ्गलायै नमः स्वाहा ॥२१॥

केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य,
रूपं च शत्रु-भयकार्यतिहारि कुत्र।
चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा,
त्वय्येव देवि! वरदे भुवन-त्रयेऽपि ॥२२॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं स्तूं प्रियायै नमः स्वाहा।।२२।।

त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपु-नाशनेन,
त्रातं त्वया समर-मूर्धनि तेऽपि हत्वा।
नीता दिवं रिपु-गणा भयमप्यपास्त-
मस्माकमुन्मद-सुरारि-भवं नमस्ते ।।२३।।

ॐ ऐं ह्रीं स्हौं भुक्ति-प्रदायिन्यै नमः स्वाहा।।२३।।

ब्रह्मा सृजत्यवति विष्णुरिदं महेशः,
शक्त्या तवैव हरते ननु चान्त-काले।
ईशा न तेऽपि च भवन्ति त्वया विहीना-
स्तस्मात् त्वमेव जगतः स्थिति-नाश-कर्त्री ।।२४।।

ॐ ऐं ह्रीं ग्लौं आर्त-परित्राणायै नमः स्वाहा।।२४।।

कीर्तिर्मतिः स्मृति-गती करुणा दया त्वं,
श्रद्धा धृतिश्च वसुधा कमलालया च।
पुष्टिः कलाऽथ विजया गिरजा जया त्वं,
तुष्टिः प्रभा त्वमसि बुद्धिरुमा रमा च ।।२५।।

ॐ ऐं ह्रीं म्लीं वैष्णव्यै नमः स्वाहा।।२५।।

विद्या क्षमा जगति कापिरपीह मेधा,
सर्वं त्वमेव विदिता भुवन-त्रयेऽस्मिन्।
आभिर्विना तव तु शक्तिभिराशु कर्तुं,
को वा क्षमः सकल-लोक-निवास-भूमौ ।।२६।।

ॐ ऐं ह्रीं ज्स्ह्रीं वाराह्यै नमः स्वाहा।।२६।।

त्वं धारणा ननु न चेदसि कूर्म-नागौ,
धर्तुं क्षमौ कथमिलामपि तौ भवेताम्।
पृथ्वी न चेत् त्वमसि वा गगने कथं स्था स्य-

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

त्येतदम्ब! निखिलं बहु-भार-युक्तम् ॥२७॥

ॐ ऐं ह्रीं स्तुं नारसिंह्यै नमः स्वाहा ॥२७॥

ये वा स्तुवन्ति मनुजा अमरान् विमूढा,
माया-गुणैस्तव चतुर्मुख-विष्णु-रुद्रान्।
शुभ्रांशुवह्नि-यम-वायु-गणेश-मुख्यान्,
किं त्वामृते जननि! ते प्रभवन्ति कार्ये ॥२८॥

ॐ ऐं ह्रीं ल्लूं लक्ष्म्यै नमः स्वाहा ॥२८॥

ये जुह्वति प्रवितेऽल्प-धियोम्ब! यज्ञे,
वह्नौ सुरान् समधिकृत्य हविः समिद्धम्।
स्वाहा न चेत् त्वमसि ते कथमापुरद्धा,
त्वामेव किं न हि यजन्ति सतो हि मूढाः ॥२९॥

ॐ ऐं ह्रीं क्ष्म्रीं नारायण्यै नमः स्वाहा ॥२९॥

भोग-प्रदाऽसि भवतीह चराचराणां,
स्वांशैर्ददासि खलु जीवनमेव नित्यम्।
स्वीयान् सुरान् जननि! पोषयसीह यद्वत्,
तद्वत् परानपि च पालयसि सु-हेतोः ॥३०॥

ॐ ऐं ह्रीं ह्रौं विश्व-मायायै नमः स्वाहा ॥३०॥

चित्रं त्वमीयदसुभी रहिता न सन्ति,
त्वच्चिन्तितेन दनुजाः प्रथित-प्रभावाः।
येषां कृते जननि! देह-निबन्धनं ते,
क्रीडा-रसस्तव न चान्य-तरोऽत्र हेतुः ॥३१॥

ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं महा-मायायै नमः स्वाहा ॥३१॥

विद्या-त्वमेव सुखदाऽसुरदाऽप्यविद्या,
मातस्त्वमेव जननार्ति-हरा नराणाम्।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मोक्षार्थिभिस्तु कलिता मिल मन्दधीभि-
र्नाराधिता जननि! भोग-परैस्तथाऽज्ञैः ॥३२॥

ॐ ऐं ह्रीं ईं महिषासुर-मर्दिन्यै नमः स्वाहा॥३२॥

॥ ऋषिरुवाच ॥

एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः।
अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनैः ॥३३॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुख-कर्यै नमः स्वाहा॥३३॥

भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैस्तु धूपिता।
प्राह प्रसाद-सुमुखी समस्तान् प्रणतान् सुरान् ॥३४॥

ॐ ऐं ह्रीं क्रूं भक्त-प्रियायै नमः स्वाहा॥३४॥

॥ देव्युवाच ॥

व्रियतां त्रिदशाः! सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम्।
एवं ददाम्यहम् प्रीत्या स्तवैरेभिः सुपूजिता॥३५॥

ॐ ऐं ह्रीं सः धन-धान्य-प्रदायै नमः स्वाहा॥३५॥

॥ देवा ऊचुः ॥

भगवत्या कृतं सर्वं न किञ्चिदवशिष्यते।
यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः ॥३६॥

ॐ ऐं ह्रीं स्लूं भक्त-रक्षिकायै नमः स्वाहा॥३६॥

यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि!
(संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथा परमापदः)।
यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने॥३७॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं प्रें भोगदायै नमः स्वाहा ।।३७।।

तस्य वित्तर्धि-विभवैर्धन-दारादि-सम्पदाम् ।
वृद्धयेऽस्मत्-प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके ॥३८॥

ॐ ऐं ह्रीं सूं ऋद्धि-प्रदायै नमः स्वाहा ।।३८।।

॥ ऋषिरुवाच ॥

एवं प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथात्मनः ।
तथे तूक्त्वा भद्रकाली बभूवाऽन्तर्हिता नृप! ॥३६॥

ॐ ऐं ह्रीं प्लीं वृद्धि-प्रदायै नमः स्वाहा ।।३९।।

एतत्तु कथितं भूप! संभूता सा यथा पुरा ।
देवी देव-शरीरेभ्यो जगत्-त्रय-हितैषिणी ॥४०॥

ॐ ऐं ह्रीं ओं विष्णु-मायायै नमः स्वाहा ।।४०।।

पुनश्च गौरी-देहात् सा समुद्भूता यथाऽभवत् ।
नाशाय दुष्ट-दैत्यानां तथा शुम्भ-निशुम्भयोः ॥४१॥

ॐ ऐं ह्रीं औं सर्व-मोहिन्यै नमः स्वाहा ।।४१।।

रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी ।
तच्छृणुष्व मयाख्यातं यथा-वत् कथयामि ते ॥४२॥

ॐ ऐं ह्रीं ह्रौं वरदायै नमः स्वाहा ।।४२।।

॥ ॐ जय जय श्रीमार्कण्डेय-उत्तर-पुराणे
सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये
सत्या सन्तु (यजमानस्य कामाः) श्रीजगदम्बार्पणमस्तु ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। वैदिक आहुति ।।

एक अखण्ड उल्टे पानपत्ते पर शाकल्य, घी में भिगोकर १ कमलगट्टा, १ सुपारी, २ लौंग, १ छोटी इलायची, गूगल शहद ये सब वस्तुएँ सुची में रखकर खड़े होकर निम्न मन्त्र बोले (इस अध्याय में मिश्री एवं पायस विशेष है।) –

ॐ प्राणाय स्वाहा पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा।। अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनीम् ॐ स्वाहा।।२२।२३।।

बाद में स्रुवे से पाँच बार घी छोड़ते हुए इस मन्त्र का उच्चारण करें –

ॐ घृतं घृतपावानः पिबतव्वसां वसा पावानः। पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽ आदिशो व्विदिशऽ उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।। (यजु. सं. अ. ६।१९ मन्त्र)

।। तान्त्रिक आहुति ।।

ह्रीं जयन्ती साङ्गायै सायुधायै सशक्तिकायै, सपरिवारायै सवाहनायै श्रीमहालक्ष्म्यै सप्त–विंशति–वर्णात्मिकायै लक्ष्मी–बीजाधिष्ठात्र्यै महाऽऽहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए आहुति देवे, सामग्री वैदिक आहुति के समान ही है।

॥ चतुर्थोऽध्यायः॥

॥ उवाच ६॥ श्लोकाः ४२॥ एवमादितः ३४४ ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। महा-सरस्वती-सूक्तम् ।।

ॐ अस्य श्री त्रिमूर्ति-महारस्वती-सूक्तस्य ब्रह्मा ऋषिः, त्रिष्टुबनुष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि, श्रीमहारस्वती देवता श्रीमहा-सरस्वती-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे सप्तशती-पाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः।

।। षडङ्ग न्यासः ।।

ॐ क्लां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः,
ॐ क्लूं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ क्लैं अनामिकाभ्यां नमः,
ॐ क्लौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ क्लः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

ॐ क्लां हृदयाय नमः, ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा,
ॐ क्लूं शिखायै वषट्, ॐ क्लैं कवचाय हुम्,
ॐ क्लौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ क्लः अस्त्राय फट् नमः।

।। अथ ध्यानम् ।।

गौरी-देह-समुद्भवां शशि-धरां क्लीं सात्विकी सत्प्रिया,
वाणेक्षु मुसलं त्रिशूल-वरदं शङ्खं च घण्टां करैः।
विभ्राणां हल-कार्मुकं सुविलसत्-सौन्दर्य-रूपां परां,
पद्माभ्यां द्वि-निशुम्भ-शुम्भ-मथिनीं वन्दे महा-शारदाम् ।।

।। ॐ ब्रह्मोवाच ।।

जन्तोरपश्चिम-तनोः सति कर्म-साम्ये,
निःशेष-पाश-पटलच्छिदुरानिमेषाः ।
कल्याण-देशिक-कटाक्ष-समाश्रयेण,
कारुण्यतो भवसि शाम्भवि! देशिकेष्टे ।।१।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मुक्तादि-भूषण-वती नव-विद्रुमाभा,
यच्चेतसि स्फुरसि तारकितेव सन्ध्या।
एकः स एव भुवन-त्रय-सुन्दरीणां,
कन्दर्पतां व्रजति पञ्च-शरैर्विनाऽपि ।।२ ।।
ये भावयन्ति मति-दाहभिदंशु-जालैरा-
प्यायमान-भुवनाममृतेश्वरीं त्वाम्।
ते लङ्घयन्ति ननु मातरलङ्घनीयां,
ब्रह्मादिभिः सुरवरैरपि काल-कक्षाम् ।।३ ।।
यां स्फाटिकाक्ष-गुण-पुस्तक-कण्ठिकाभ्यां,
व्याख्या-समुद्यत-करां शरदिन्दु-शुभ्राम्।
पद्मासने च हृदये भवतीमुपास्ते,
मातः! स विश्व-कवि-तार्किक-चक्रवर्ती ।।४ ।।
बर्तावतंस-युत-बन्धुर-केश-पाशां ,
गुञ्जावलीं कृत-घन-स्तन-हार-शोभाम्।
श्यामां प्रवाल-वदनां सुकुमार-हस्तां,
त्वामेव नौमि शवरीं शवरस्य नाथम् ।।५ ।।
अर्धेन किं नव-लता-ललितेन मुग्धे,
क्रीतं विभोः पुरुष-धर्ममिदं त्वयेति।
आली-जनस्य परिहास-वचांसि मन्ये,
मन्द-स्मितेन तव देवि! जड़ी-भवन्ति ।।६ ।।
ब्रह्माण्ड-बुदबुद-कदम्बक-संकुलो मे,
मायोदधिर्विविध-दुःख-तरंग-मालः ।
आश्चर्यमम्ब! झटिति प्रलयं प्रयाति,
त्वद्-ध्यान-सन्तति-महा-वडवा-मुखाग्नौ ।।७ ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दाक्षायणीति कुटिलेति गुहाननेति,
कात्यायनीति कमलेति कलावतीति।
एषा सती भगवती परमार्थतोऽपि,
संदृश्यते बहु-विधाननुवर्तकीव ।।८ ।।
संकोचमिच्छसि यदा गिरजे! तदानीं,
वाक्-तर्कयोस्त्वमसि भूमिरनाम-रूपा।
यद्वा विकासमुपयसि तदा तदानीं,
त्वन्नाम-रूप-गणना मुखरा भवन्ति ।।९ ।।
भोगाय देवि! भवती कृतिनः प्रणामा,
भू-किङ्करी-कृत-सरोज-गुहां सहस्राम्।
चिन्तामणि-प्रचय-कल्पित एव शैले,
कल्पद्रुमोपवन एव चिरं चरन्तु ।।१० ।।
हन्तुस्त्वमेव भवसि त्वदधीनमीशे,
संसार-तापमखिलं दयया पशूनाम्।
वैकर्तनी-किरण-संहरतिरेव दक्षो,
धर्मं निजं शमयितुं निजयैव दृष्ट्या ।।११ ।।
शक्तिः शरीरमधि-दैवतमन्तरात्म-
ज्ञानं क्रिया-करणमासन-जालमिच्छा ।
ऐश्वर्यमायतनमावरणादि च त्वं,
किं लज्जसे यदपि देवि! शशाङ्क-मौले ।।१२ ।।
भूमौ निरुक्तमपि तापयसि प्रतिष्ठा,
विद्यानले मरुति जातु तडिल्लतेव।
भूयोऽपि तत्र विशसि ध्रुव-मण्डलेन्दु-
निःस्यन्दमान-परमामृत-तोय-रूपा ।।१३ ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भूमौ निवृत्तिरुदिता पयसि प्रतिष्ठा,
विद्याऽनले मरुति शान्तिरतीव-कान्तिः।
व्योम्नीति याः किल कलाः कलयन्ति विश्वं,
तासां हि दूरतरमम्ब! पदं त्वदीयम्।।१४।।
आनन्द-लक्षणमनाहत-नाभि-देशे,
नादात्मना परिणतं तव रूपमीशे!
प्रत्यङ्-मुखेन मनसा परिचीयमानं,
सिञ्चन्ति नेत्र-सलिलैः पुलकैश्च धन्याः।।१५।।
त्वं चन्द्रिका शशिनी तिग्म-तनौ रुचिस्त्वं,
संचेतनाऽसि पुरुषे पवने चलत्वम्।
त्वं साधुताऽसि सलिले शिखिनी त्वमूष्मा,
निःसारमेवमखिलं त्वदृते यदि स्यात्।।१६।।
ज्योतींषि यत्र विचरन्ति यदन्तरिक्षे,
सूते ययापि यदहिर्धरणीं च धत्ते।
यद्वाति वायुरनलो यदुदर्चिषस्ते,
तत् सर्वमम्ब! तव केवलमाज्ञयैव।।१७।।
यावत् पदं पद-सरोज-युगं त्वदीयं,
नाङ्गी-करोति हृदयेषु जगच्छरण्ये।
तावद् विकीर्ण-जटिलाकुलिताप्रशस्ता-
स्तर्क ग्रहाः समयिनां प्रलयं भजन्ति।।१८।।
यद्-देव-यान-पितृ-यान-विहारमेकं,
कृत्वा मनः-करण-मण्डल-सार्वभौमम्।
ज्ञानेन वेह तव कारण-पञ्चकस्य,
पर्वाणि पार्वति! न यान्ति निजागमत्वम्।।१९।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्थूलासु मूर्तिषु मही-प्रमुखासु मूर्तेः,
कस्याश्चनाऽपि तव वैभवमम्ब! यस्याः।
प्रत्यङ्गिराऽपि न शक्यत एव वक्तुं,
साऽपि स्तुताऽखिल-मयेति तितिक्षितव्यम् ॥२०॥
कल्पोप-संहरण-केलिषु पण्डितानि,
चण्डानि खण्ड-परशोरपि ताण्डवानि।
आलोकनेन तव कोमलितानि मातः,
लास्यात्मना परिणमन्ति जगद्-विभूत्यै ॥२१॥
कालाग्नि-कोटि-रुचिमम्ब! षडध्व-शुद्धां,
बाला-वनेषु भवतीममृतौघ-वृष्टिम्।
श्यामा-घन-स्तन-तटां सकली-कृतौ च,
ध्यायन्त एव भवतीं गुरवो भवन्ति ॥२२॥
विद्यां परा कतिचिदम्बु-रसं च केचिदा-
नन्दमेव कतिचित् कतिचिच्च मायाम्।
त्वां विश्वमाहुरपरे वयमात्त-नामाः,
साक्षादपार-करुणां गुरु-मूर्तिमेव ॥२३॥
कुवलय-दल-नीलं बन्धु-सुस्निग्ध-केशं,
पृथुतर-कुच-सारं कान्ति-कान्तावनग्नम्।
किमिव बहुभिरुक्तैस्तत्-स्वरूपं परं नः,
सकल-भुवन-मातः! सन्ततं सन्निधत्ते ॥२४॥
कारुण्य-कोमल-कटाक्ष-विराजमाने,
संसार-तारिणी! शिवे! सकलाघ-हन्त्रि!
त्वां देव-वन्दित-पदाममरादि-भूतां,
वागीश्वरीमहमनन्त-गुणां श्रयामि ॥२५॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कालातीतां कला-मालां सारां सार-निषेविताम्।
अमोघां सह-मोघां च व्रजामि शरणं गिराम्।।२६।।
धात्रीं विधात्रीं कल्याणीं धरां धारण-सुक्षमाम्।
अवियोनिमनिन्द्यां च वाचं त्वां शरणं व्रजे।।२७।।
अजां पुराणीममृतामद्वितीयां सनातनीम्।
वरां वरेण्यां वरदां वरश्रेष्ठां वरप्रियाम्।।२८।।
शुभां सरस्वतीं देवीं सच्चिदानन्द-रूपिणीम्।
शरणागत वात्सल्ये त्वामहं शरणं व्रजे।।२९।।
अजां पुराणीममरां सनातनीम्,
चतुर्भुजां पुस्तक-धारिणीं त्वाम्।
वराभयाभ्यामनुशोभि-हस्तां नमामि,
त्वां जाड्य-जटा-विनाशिनीम्।।३०।।
सरस्वतीं त्वामनुनौमि वाचो,
वर-प्रदां हंस-तराधिरूढ़ाम्।
मुक्ता-मणि-द्योतित-कण्ठ-हारां,
भाग्येक-लभ्यां परमां पवित्राम्।।३१।।
श्रीकण्ठ-शक्ति-त्रय-शोभमानां,
दशार-तूर्येण कृतानुरूपाम्।
पश्चारवास्ते भृत-भू-ग्रहारां,
सरस्वतीं त्वां प्रणमामि देवीम्।।३२।।
फलाद्य-मन्त्राप्यधि-कोटि-वासां,
विहार-यन्त्रं विमलैक-शोभाम्।
स्वच्छावदातां स्फटिकानुरूपां,
सरस्वतीं त्वां प्रणमामि मातः।।३३।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वाक्-काय-कायैः परमैः पवित्रै-
रमा-रमा-ह्री-वरदान-दक्षैः।
बीजैरमीभिः कपि-बीज-युक्तैः,
क्लीं-युग्म-मिश्रैरिति मन्त्र-राजः ।।३४।।

एकेन चैकेन च युग्मकेन,
द्वाभ्यामथैकेन तथैव शेषैः।
कराङ्ग-लिप्तैः परमोत्तमोऽयं,
निहन्ति पापानि च साधकानाम् ।।३५।।

हठेन वै शृङ्खलया च श्रेण्या,
विधातृ-पत्न्या च तथैव वाचा।
श्रीः-कीर्ति-ब्राह्म्यादिभिः शोभया च,
न्यासैरमीभिः पतितोऽपि शम्भुः ।।३६।।

द्रव्येण होमात् सकलार्थ सिद्धिः-
सुकिंशुकैर्वागपि सिद्धिमृच्छेत्।
तैः साकमाज्येन रमा-निवास,
सुपाय-सेनाऽपि च वेदसिद्धिः ।।३७।।

न चाम्ब! ते महिमानं वदामि,
सरस्वति! प्रथिते लोक-मध्ये।
जानन्ति किं बुदबुदा-भूमि-तोये,
जडा वयं ब्रह्म-हरीश-मुख्याः ।।३८।।

तवैव वाचा वयं संवदामो,
जिघ्राम शक्त्या च तवैव जीवाः।
पश्याम ते त्वां मातर्महेशि!,
स्पृशाम साक्षात् त्वयि संयुताद्यम् ।।३९।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्वादं विदामस्तव शक्ति-योगाद्,
गृह्णीमहे तव शक्त्या महेशि!
गच्छामहे तव शक्तेः प्रभावा-
दानन्द-युक्तास्तव सन्निवेशात्।।४०।।
आत्मा मनस्त्वमेवासि देहस्त्व-
मेव वै चेन्द्रिय-पञ्च-तत्त्वम्।
त्वमेव वै विषयाः शब्द-मुख्या,
परावरेषां परमा त्वमेव।।४१।।
रविश्च ते चन्द्रमाश्च ते ताराश्च ते,
भूमिश्च जलं च ते तेजश्च।
ते वायुश्च ते व्योम च ते,
शब्दश्च ते स्पर्शश्च ते रूपं च ते।।४२।।
रसश्च ते गन्धश्च ते प्राणश्च,
तेऽपानश्च ते व्यानश्च ते।
उदानश्च ते समानश्च ते नागश्च,
ते कूर्मश्च ते कृकलश्च।।४३।।
ते देवदत्तश्च ते धनञ्जयश्च,
ते भूतात्मा च ते ज्ञानात्मा च।
ते सर्वात्मा च ते मम चित्तं,
त्वय्येव विनिवेश्यताम्।।४४।।
यदा न चाण्डे भुवनानि जीवा,
अहं न विष्णुर्न च पार्वतीशः।
न चेश्वरो नापि सदा-शिवश्च,
त्वमेव चासीदिति वाम-विद्या।।४५।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कालस्त्वमेवासि जगत्-त्रयाणां,
स्वभाव-वीर्यादिकं च त्वमेव।
त्वमेव विश्वं परमात्म-शक्ति-
र्नमामि ते पाद-पीठं सरस्वति ।।४६ ।।
त्वं वेद-वाणी निखिलाश्च वेदा-
स्त्वं शब्द-शक्तिश्च तथार्थ-शक्तिः।
त्वं ब्रह्म-विद्याऽपि परा-वरेशि!,
त्वां ब्रह्म-शर्क्ति शरणं प्रपद्ये ।।४७ ।।

।। मार्कण्डेय उवाच ।।

एवं स्तुत्यवसाने तु प्रादुर्भूता कृपा-मयी।
महा-सरस्वती देवी प्रोवाच वचनं शुभम् ।।४८ ।।

।। श्रीदेव्युवाच ।।

वरं वरय भद्रं ते कमलोद्भव! सुव्रत!
स्तुत्याऽनया मनोदेव सन्तोषं मम चागमत् ।।४९ ।।

।। ब्रह्मोवाच ।।

यदि देवि! प्रसन्नाऽसि वरदाऽसि वरेश्वरि!
त्वद्-भक्तिमेव मे देहि भव-बन्ध-विमोचकम् ।।५० ।।

।। श्रीदेव्युवाच ।।

एवमस्तु महाभाग! कमलोद्भवमारिषु।
मत्-प्रसादात् तव सदा निर्मला बुद्धिरस्तु ते ।।५१ ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

महा-सरस्वती-सूक्तं यत् त्वया भाषितं विधे!
तस्मै तत्-प्रतापो मे निशामय वचो मम ।।५२ ।।
विना सरस्वती-सूक्तं देवीं यश्चण्डिका पठेत् ।
ब्रह्मघ्नानां गतिर्याति शापमाप्नोति दारुणम् ।।५३ ।।
निष्फलस्तस्य पाठोऽस्तु मम वाक्य-नियन्त्रणात् ।
अनेन पठिता देवी धर्म-मोक्षार्थ-कामदा ।।५४ ।।

।। ऋषिरुवाच ।।

उक्त्वा त्वन्तर्धिमापेदे महा-पूर्वा-सरस्वती ।
वरेण छन्दयित्वाजं लोक-कल्याण-भाषिणी ।।५५ ।।

।। फलश्रुति ।।

सूक्तं तवेदं सुभगं सरस्वति! प्रातश्च मध्याह्न-काले च सायम् ।
पठन्ति ये श्रद्धया युक्त-चित्तास्ते भोग-मोक्षं सहसा लभन्ते ।।५६ ।।
न ते कु-योनिं न दरिद्रतां च नात्मादि-तापं न च संलभन्ते ।
त एव धन्याश्च त एव पूज्याः सर्वत्र मान्यं भवतीह तेषाम् ।।५७ ।।
इदं पुराणं विरजं सुधा-मयं सूत्रत्व-भूतं जगतां त्रयाणाम् ।
ते प्राप्नुवन्ति प्रकट-प्रभावास्त्वां सर्व-योनिं शरणं प्रपद्ये ।।५८ ।।

।। जय श्रीमार्कण्डेय-उत्तर-पुराणोक्तं श्रीमहा-सरस्वती-सूक्तम् ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ उत्तमचरित्रारम्भः ।।

।। विनियोगः ।।

ॐ अस्य श्रीउत्तम-चरितस्य रुद्र-ऋषिः, महा-सरस्वत्यो देवता, अनुष्टुप् छन्दः, भीमा शक्तिः, भ्रामरी बीजम्, सूर्यस्तत्त्वम्, सामवेदः स्वरूपम्, महा-सरस्वती-प्रीत्यर्थे उत्तम चरित-पाठे विनियोगः।

(०७) उत्तराम्नायात्मिका षड्-वर्णोऽयं छिन्नमस्ता-ध्यानम् -

अस्या ध्यानमहं वक्ष्ये शृणुष्व कमलानने!

प्रत्यालीढ़-पदां सदैव दधतीं छिन्नं शिरः कर्त्रिकां।
दिग्वस्त्रां स्व-कबन्ध-शोणित-सुधा-धारां पिबन्तीं मुदा।।
नागाबद्ध-शिरोमणि-त्रिनयनां हृद्युत्पलालङ्कृतां।
रत्यासक्त-मनोभवोपरि-दृढ़ां ध्यायेज्जपा-सन्निभाम्।।
दक्षे चाति-सिता विमुक्त-चिकुरा कर्त्रिं तथा खर्परं।
हस्ताभ्यां दधतीं रजो-गुण-भवा नाम्नाऽपि सा वर्णिनी।।
देव्याच्छिन्न-कबन्धनः पतदसृग्-धारां पिबन्ती मुदा।
नागाबद्ध शिरोमणिर्मनु-विदा ध्येया तथा सा सुरैः।।
वामे कृष्णे तनुस्तथैव दधती खड्गं तथा खर्परम्।
प्रत्यालीढ़-पदा कबन्ध विगलद् रक्तं पिबन्ती मुदा।।
सैषा या प्रलये समस्त-भुवनं भोक्तुं क्षमा तामसी।
शक्तिः साऽपि परात्परा भगवती नाम्ना परा डाकिनी।।
उत्तरां छिन्न-मस्तां च षड्-वर्णमनु-रूपिणीम्।
मोक्षदां सिद्धि-दात्रीं च वायव्याम्नायगां शुभाम्।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(०८) उत्तराम्नायात्मिका चतुर्दशाक्षरा विपरीत-प्रत्यङ्गिरा भद्रकाली-ध्यानम् -

ध्यातव्येयं सदा देवी भद्रकाली भयावहा।
क्षुत्क्षामा कोटराक्षी च नाऽहं तृप्तेति वादिनी।।

मसि-मुखी मुक्त-केशी जगद्-ग्रसन-लालसा।
जम्बू-फलाभ-दशना लोल-जिह्वा भयंकरी।।

शूलं कपालं च श्रृणिं ज्वलत्-पाशं च बिभ्रति।
अशेषं कालिका-तन्त्रे यत्-प्रोक्तं तदिहापि च।।

जप-न्यास-प्रयोगाद्यं यो विशेषः स उच्यते।
आराध्य प्रजपेन्मन्त्रं नित्यमष्टोत्तर-शतम्।।

रिष्ट-माला विधातव्या जपार्थं सिद्धिमिच्छता।
इयं देवी महा-देवी शत्रु-निग्रह-कारिणी।।

यथेष्ट-चेष्टया चिन्त्या धर्म-कामार्थ-सिद्धिदा।
अति-रौद्रा महा-(अन्नेत्रः२)दंष्ट्रा भ्रशं दीर्घा कृशोदरी।।

सुवृत्त-नयना शूरा दीर्घ-घ्रोणा मदातुरा।
स्निग्ध-गम्भीर-निर्घोषा नील-जीमूत-सन्निभां।।

भृगुद्यघट-संदीप्ता महा-रदन-भीषणा।
दंष्ट्रोष्ठ-कोप-ताम्राक्षी रक्त-दीर्घ-शिरोरुहा।।

त्रिशूल-व्यग्र-दोर्दण्डा नर-कीट-पलाशिनी।
अति-रक्ताम्बरा देवी-रक्त-दीर्घ-शिरोरुहा।।

त्रिशूल-व्यग्र-दोर्दण्डा नर-कीट-पलाशिनी।
अति-रक्ताम्बरा देवी-रक्त-मांसासव-प्रिया।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिरो-माला-भूषिताङ्गी पिबन्ती शोणितासवम्।
नृत्यन्ती च हसन्ती च पिशाच-गण-सेविता।।
पिशाच-स्कन्धमारुह्य भ्रमन्ती वसुधा-तलम्।
शङ्करस्य मुखोत्पन्ना योगिनी योग-वल्लभा।।
इत्थं भूता भद्र-काली मातृभिः परिवारिता।
भौतिकैश्वर्य-दात्री चाथोत्तराम्नायात्मिका।।
विपरीत-प्रत्यङ्गिरा भद्र-काली वायव्यात्मिका।

पश्चिमाम्नायात्मिका पञ्च-दशाक्षरी चण्ड-मातंगी-ध्यानम् -

कल्प-वृक्ष-वनान्तस्थे रत्न-सिंहासने शुभे।
रक्त-पद्मासने संस्था दूर्वा-श्यामां त्रिलोचनाम्।।
नव-यौवन-सम्पन्नां मदोन्मत्तां हसन्मुखीम्।
रत्न-भूषण-भूषाङ्गीं वीणा-वादन-तत्पराम्।।
द्वि-भुजां चन्द्र-मुकुटां चण्ड-मातङ्गिनीं भजे।
पश्चिमाम्नायगां चैव वायव्यात्मगां तथा।।
ध्यायेच्च चण्ड-मातङ्गीं पञ्च-दशीं च विश्रुताम्।

वायव्याम्नायात्मिका नवाक्षरा महासरस्वती-ध्यानम् -

घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्,
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्।
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्।।
नवाक्षरां सप्तशती-वर्णितां महा-सरस्वतीम्,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वायव्याम्नाय-मार्गेण पूजयेत् साधकोत्तमः।
वायव्याम्नाय-रूपां च महा-पूर्वां सरस्वतीम्।
नवार्ण-विधां वै ध्यायेद् वर्णितं चोत्तमे यथा।।

।। अथ चण्डिका ध्यानम्।।
(कालिका-पुराणे)

धम्मिल-संयत-कचा विधोश्चाधो-मुखां कलाम्।
केशान्ते तिलकस्योर्ध्वे दधती सुमनोहरा।।
मणि-कुण्डल-संघृष्ट-गण्डा मुकुट-मण्डिता।
सज्ज्योतिः कर्ण-पूराभ्यां कर्णवापूर्य-सङ्गता।।
सुवर्ण-मणि-माणिक्य-नाग-हार-विराजिता।
सदा सुगन्धिभिः पद्मैरम्लानैरति-सुन्दरी।।
मालां बिभर्ति ग्रीवायां रत्न-केयूर-धारिणी।
मृणालायत-वृत्तैस्तु बाहुभिः कोमलैः शुभैः।।
राजन्ती कञ्चुकोपेता पीनोन्नत-पयोधरा।
क्षीण-मध्या पीत-वस्त्रा त्रिवली-मध्य-भूषिता।।
सिंहस्योपरि तिष्ठन्ती व्याघ्र-चर्मणी कौशिकी।
बिभ्रती रूपमतुलं स-सुरासुर-मोहनम्।।

पश्चिमाम्नायात्मिका नवाक्षरा मोहिनी-मातङ्गी-सरस्वती-ध्यानम्-

दिव्याम्बरां शुक्र-श्यामां वीणा-वादन-तत्पराम्।
गीयमानां सदानन्दां मातङ्गीं मोहिनीं भजे।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पश्चिमाम्नाय-रूपां हि नैर्ऋत्याम्नाय-गामिनीम्।
मोहिनीं चैव मातङ्गीं सरस्वतीमर्चयेत् सदा।
नवार्णां दिव्य-शक्तिं च ध्यायेत् मुक्ति-प्रदां सदा॥

दक्षिणाम्नायात्मिका द्वादशाक्षरा तारा-ध्यानम् -

श्वेताम्बरं चन्द्र-कान्तिं चन्द्रार्ध-कृत-शेखराम्।
कर्त्तरीं च कपालं च कराभ्यां दधतीं भजेत्॥
नानालङ्कार-शोभाढ्यां त्रीक्षणां पद्म-संस्थिताम्।
जप-पूजादिकं सर्वमस्याः पूर्ववदाचरेत्।
मधु-युक्-परमान्नेन होमाद् विद्या-निधिर्भवेत्॥
रक्तां वश्ये स्वर्ण-वर्णां स्तम्भने मारणेऽसिताम्।
उच्चाटने धूम्र-वर्णां शान्तौ श्वेतां स्मरेदिमाम्॥
दक्षिणाम्नायगां चैव नैर्ऋत्याम्नाय-गामिनीम्।
तारां ध्यायेत् सदा भक्त्या मुक्तिदां द्वादशाक्षराम्॥

नैर्ऋत्याम्नायात्मिका नवाक्षरा चामुण्डा भद्रकाली-ध्यानम् -

नीलोत्पल-दल-श्यामा चतुर्बाहु-समन्विता।
खट्वांगं चन्द्र-हासं च बिभ्रती दक्षिणे करे॥१॥
वामे चर्म तथा पाशमूर्ध्वाधो-भागतः क्रमात्।
दधती मुण्ड-मालां च व्याघ्र-चर्म-वराम्बरा॥२॥
कृशाङ्गी दीर्घ-दंष्ट्रा च अति-दीर्घाति-भीषणा।
लोल-जिह्वा निभ्र-रक्त-नयना भीम-नादिनी॥३॥
कबन्ध-वाहनासीना विस्तारि-श्रवणानना।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एषा काली समाख्याता चामुण्डेति च कथ्यते॥४॥
नैर्ऋत्याम्नाय-रूपां हि नवार्ण-विद्यां वै यजेत्।
चामुण्डा भद्रकाली च पूजयेच्चैव सिद्धिदाम्॥५॥

चामुण्डा चण्डिका चैव प्रोक्तं क्वचन वै बुधैः।

उपाम्नायेश्वरी पश्चिमाम्नायात्मिका त्रिशक्ति-चामुण्डा-ध्यानम्

ध्यायेद् देवीं श्रीचामुण्डां निर्मांसां घोर-दंष्ट्रिकाम्।
कपालभरणान् संघ्रीं शवस्थां चोर्ध्व-केशिनीम्॥
कर्त्रिकां नर-मुण्डं च धृत्वा तदन्त्र-भोजिनीम्।
चषके रुधिरं धृत्वा पिबन्तीं ज्वलन-प्रभाम्॥
श्मशान-निलयां भीमां शिवा-रावित-मध्यगाम्।
नवार्णव-स्वरूपां श्रीभवानीं त्रिपुरात्मिकाम्॥
श्मशान-निलयां भीमां शिवाष्वीत-मध्यगाम्।
नव-दुर्गा-समायुक्तां दक्ष-यज्ञ-विनाशिनीम्॥
उपाम्नायेश्वरीं चैव पश्चिमाम्नायगां तथा।
त्रिशक्ति-चामुण्डां चैव नव-वर्णात्मिकां शुभाम्॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

॥ पञ्चमोऽध्यायः ॥

॥ ध्यानम् ॥

घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकम्,
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्।
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्॥

॥ ॐ क्लीं ऋषिरुवाच ॥

पुरा शुम्भ-निशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शची-पतेः।
त्रैलोक्यं-यज्ञ-भागाश्च हृता मद-बलाश्रयात् ॥१॥

ॐ ऐं क्लीं श्रौं दिव्य-रूपायै नमः स्वाहा॥१॥

तावेव सूर्यतां तद्-वदधिकारं तथैन्दवम्।
कौबेरमथ याम्यं च चक्राते वरुणस्य च ॥२॥

ॐ ऐं क्लीं ओं महा-तेजाय नमः स्वाहा॥२॥

तावेव पवनर्द्धिं च चक्रतुर्वह्नि-कर्म च।
ततो देवा विनिर्धूता भ्रष्ट-राज्याः पराजिताः ॥३॥

ॐ ऐं क्लीं ल्रीं योगिन्यै नमः स्वाहा॥३॥

हृताधिकारास्त्रि-दशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः।
महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्यपराजिताम् ॥४॥

ॐ ऐं क्लीं क्रीं सिद्ध-योगिन्यै नमः स्वाहा॥४॥

तयाऽस्माकं वरो दत्तो यथाऽऽपत्सु स्मृताखिलाः।
भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात् परमापदः ॥५॥

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं योगेश्वर्यै नमः स्वाहा॥५॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एवं कृत्वा मतिं देवा हिमवन्तं नगेश्वरम्।
जग्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णु-मायां प्रतुष्टुवुः ॥६॥
ॐ ऐं क्लीं हूं हाकिन्यै नमः स्वाहा॥६॥

॥ देवा ऊचुः ॥

नमो देव्यै महा-देव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥७॥
ॐ ऐं क्लीं रौं महाघोरायै नमः स्वाहा॥७॥

रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्य्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दु-रूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥८॥
ॐ ऐं क्लीं म्लीं काल-रात्र्यै नमः स्वाहा॥८॥

कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥९॥
ॐ ऐं क्लीं स्हौं कालिकायै नमः स्वाहा॥९॥

दुर्गायै दुर्ग-पारायै सारायै सर्व-कारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥१०॥
ॐ ऐं क्लीं ग्लूं सिंह-वाहिन्यै नमः स्वाहा॥१०॥

अति-सौम्याति-रौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्-प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥११॥
ॐ ऐं क्लीं सौं ब्रह्माण्यै नमः स्वाहा॥११॥

या देवी सर्व-भूतेषु विष्णु-माया तु शब्दिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१२॥
ॐ ऐं क्लीं ल्लूं चर्चिकायै नमः स्वाहा॥१२॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

या देवी सर्व-भूतेषु चेतना त्वभिधीयते।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१३॥

ॐ ऐं क्लीं क्सां चण्ड्यै नमः स्वाहा॥१३॥

या देवी सर्व-भूतेषु बुद्धि-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१४॥

ॐ ऐं क्लीं ग्ल्मौं गौर्य्यै नमः स्वाहा॥१४॥

या देवी सर्व-भूतेषु निद्रा-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१५॥

ॐ ऐं क्लीं स्क्लूं दोष-हारिण्यै नमः स्वाहा॥१५॥

या देवी सर्व-भूतेषु सुधा-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१६॥

ॐ ऐं क्लीं क्रों शिवायै नमः स्वाहा॥१६॥

या देवी सर्व-भूतेषु च्छाया-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१७॥

ॐ ऐं क्लीं ह्लीं वत्सलायै नमः स्वाहा॥१७॥

या देवी सर्व-भूतेषु शक्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१८॥

ॐ ऐं क्लीं लीं दोषाकर-वधू-प्राणायै नमः स्वाहा॥१८॥

या देवी सर्व-भूतेषु तृष्णा-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१९॥

ॐ ऐं क्लीं स्त्रूं महोदर्यै नमः स्वाहा॥१९॥

या देवी सर्व-भूतेषु क्षान्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२०॥

ॐ ऐं क्लीं लीं दुर्गायै नमः स्वाहा॥२०॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

या देवी सर्व-भूतेषु जाति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२१॥

ॐ ऐं क्लीं सं क्षान्त्यै नमः स्वाहा।।२१।।

या देवी सर्व-भूतेषु लज्जा-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२२॥

ॐ ऐं क्लीं ह्रूं शैलिन्यै नमः स्वाहा।।२२।।

या देवी सर्व-भूतेषु शान्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२३॥

ॐ ऐं क्लीं जूं सावित्र्यै नमः स्वाहा।।२३।।

या देवी सर्व-भूतेषु श्रद्धा-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२४॥

ॐ ऐं क्लीं ह्लूं दोषाकर-वध्वे नमः स्वाहा।।२४।।

या देवी सर्व-भूतेषु कान्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२५॥

ॐ ऐं क्लीं स्कीं कपालिन्यै नमः स्वाहा।।२५।।

या देवी सर्व-भूतेषु लक्ष्मी-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२६॥

ॐ ऐं क्लीं श्रूं कात्यायन्यै नमः स्वाहा।।२६।।

या देवी सर्व-भूतेषु धृति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२७॥

ॐ ऐं क्लीं हूं महा-देव्यै नमः स्वाहा।।२७।।

या देवी सर्व-भूतेषु वृत्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२८॥

ॐ ऐं क्लीं क्रूं काल-रात्र्यै नमः स्वाहा।।२८।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

या देवी सर्व-भूतेषु स्मृति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२९॥

ॐ ऐं क्लीं द्रौं दण्डपायै नमः स्वाहा॥२९॥

या देवी सर्व-भूतेषु दया-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥३०॥

ॐ ऐं क्लीं क्लूं वसुन्धरायै नमः स्वाहा॥३०॥

या देवी सर्व-भूतेषु तुष्टि-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥३१॥

ॐ ऐं क्लीं सं शिव-दूत्यै नमः स्वाहा॥३१॥

या देवी सर्व-भूतेषु पुष्टि-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥३२॥

ॐ ऐं क्लीं लस्त्रां दरान्त-कृते नमः स्वाहा॥३२॥

या देवी सर्व-भूतेषु मातृ-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥३३॥

ॐ ऐं क्लीं फ्रीं महा-तेजायै नमः स्वाहा॥३३॥

या देवी सर्व-भूतेषु भ्रान्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥३४॥

ॐ ऐं क्लीं स्लां दोषा-पूज्यायै नमः स्वाहा॥३४॥

इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्ति-देव्यै नमो नमः ॥३५॥

ॐ ऐं क्लीं फ्रें दण्ड-दोष्कायै नमः स्वाहा॥३५॥

चिति-रूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥३६॥

ॐ ऐं क्लीं ओं विश्वेश्वर्यै नमः स्वाहा॥३६॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्ट-संश्रयात्,
तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
करोतु सा नः शुभ-हेतुरीश्वरी,
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥३७॥

ॐ ऐं क्लीं ह्रां माहेन्द्र्यै नमः स्वाहा ॥३७॥

या सांप्रतं चोद्धत-दैत्य-तापितै-
रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः,
सर्वापदो भक्ति-विनम्र-मूर्तिभिः ॥३८॥

ॐ ऐं क्लीं नं रौद्र्यै नमः स्वाहा ॥३८॥

॥ ऋषिरुवाच ॥

एवं स्तवादि-युक्तानां देवानां तत्र पार्वती।
स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृपनन्दन! ॥३९॥

ॐ ऐं क्लीं वं रुद्राण्यै नमः स्वाहा ॥३९॥

साऽब्रवीत् तान् सुरान् सुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का?
शरीर-कोशतश्चास्याः समुद्भूताऽब्रवीच्छिवा ॥४०॥

ॐ ऐं क्लीं भं दण्ड-खण्डक-नाशिन्यै नमः स्वाहा ॥४०॥

॥ देव्युवाच ॥

स्तोत्रं ममैतत् क्रियते शुम्भ-दैत्य-निराकृतैः।
देवैः समेतैः समरे निशुम्भेन पराजितैः ॥४१॥

ॐ ऐं क्लीं श्रां दस्यु-रतायै नमः स्वाहा ॥४१॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। ऋषिरुवाच ।।

शरीर-कोशाद् यत्तस्याः पार्वत्या निःसृताम्बिका।
श्रीकौशिकी समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते ।।४२।।

ॐ ऐं क्लीं लं क्षमायै नमः स्वाहा।।४२।।

तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाऽभूत् सापि पार्वती।
क्रीं कालिके समाख्याता हिमाचल-कृताश्रया ।।४३।।

ॐ ऐं क्लीं ल्लूं उमायै नमः स्वाहा।।४३।।

ततोऽम्बिकां परं रूपं बिभ्राणां सुमनोहरम्।
ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भ-निशुम्भयोः ।।४४।।

ॐ ऐं क्लीं ईं सारङ्गिण्यै नमः स्वाहा।।४४।।

।। चण्ड-मुण्डौ उवाच ।।

ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता अतीव सुमनोहरा।
काप्यास्ते स्त्री महाराज! भासयन्ती हिमाचलम् ।।४५।।

ॐ ऐं क्लीं क्लीं गङ्गायै नमः स्वाहा।।४५।।

नैव तादृक् क्वचिद् रूपं दृष्टं केनचिदुत्तमम्।
ज्ञायतां काऽप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरेश्वर! ।।४६।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं दस्यु-पूज्यायै नमः स्वाहा।।४६।।

स्त्री-रत्नमति-चार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशं त्विषा।
सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र! तां भवान् द्रष्टुमर्हति ।।४७।।

ॐ ऐं क्लीं क्ष्मल्रीं इन्द्राण्यै नमः स्वाहा।।४७।।

यानि रत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो!
त्रैलोक्ये तु समस्तानि सांप्रतं भान्ति ते गृहे ।।४८।।

ॐ ऐं क्लीं पूं ईश्वर्यै नमः स्वाहा।।४८।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ऐरावतः समानीतो गज-रत्नं पुरन्दरात्।
पारिजात-तरुश्चायं तथैवोच्चैःश्रवा हयः ॥४९॥

ॐ ऐं क्लीं श्रौं दस्यु-द्रविण-दायिन्यै नमः स्वाहा॥४९॥

विमानं हंस-संयुक्तमेतत् तिष्ठति तेऽङ्गणे।
रत्न-भूत-मिहानीतं यदासीद् वेधसोऽद्भुतम् ॥५०॥

ॐ ऐं क्लीं ह्रौं स्वधायै नमः स्वाहा॥५०॥

निधिरेष महा-पद्मः समानीतो धनेश्वरात्।
किञ्जल्किनीं ददौ चाब्धिर्मालामम्लान-पङ्कजाम् ॥५१॥

ॐ ऐं क्लीं भ्रूं दस्यु-वर्ग-कृतार्हायै नमः स्वाहा॥५१॥

छत्रं ते वारुणं गेहे काञ्चन-स्रावि तिष्ठति।
तथाऽयं स्यन्दन-वरो यः पुरासीत् प्रजापतेः ॥५२॥

ॐ ऐं क्लीं क्स्त्रीं कौमार्यै नमः स्वाहा॥५२॥

मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम शक्तिरीश! त्वया हृता।
पाशः सलिल-राजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे ॥५३॥

ॐ ऐं क्लीं आं शङ्क्यै नमः स्वाहा॥५३॥

निशुम्भस्याब्धि-जाताश्च समस्ता रत्न-जातयः।
वह्निरपि ददौ तुभ्यमग्निशौचे च वाससी ॥५४॥

ॐ ऐं क्लीं क्रूं दस्यु-निर्णाशिन्यै नमः स्वाहा॥५४॥

एवं दैत्येन्द्र! रत्नानि समस्तान्याहृतानि ते।
स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते ॥५५॥

ॐ ऐं क्लीं त्रूं खड्गिने नमः स्वाहा॥५५॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। ऋषिरुवाच ।।

निशम्य तु वचः शुम्भः स तदा चण्ड-मुण्डयोः।
प्रेषयामास सुग्रीवं दूतं देव्या महासुरम् ।।५६।।

ॐ ऐं क्लीं उं दस्यु-कुल-निर्णाशिन्यै नमः स्वाहा।।५६।।

एवमेव च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्मम।
यथा चाभ्येति सम्प्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु ।।५७।।

ॐ ऐं क्लीं जां वाम-नेत्र्यै नमः स्वाहा।।५७।।

स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्देशेऽति-शोभने।
सा देवी तां ततः प्राह श्लक्ष्णं मधुरया गिरा ।।५८।।

ॐ ऐं क्लीं हूं दस्यु-प्रिय-कर्यै नमः स्वाहा।।५८।।

।। दूत उवाच ।।

देवि! दैत्येश्वरः शुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः।
दूतोऽहं प्रेषितस्तेन त्वत्-सकाशमिहागतः ।।५९।।

ॐ ऐं क्लीं फ्रौं दशेश्वर्यै नमः स्वाहा।।५९।।

अव्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देव-योनिषु।
निर्जिताखिल-दैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत् ।।६०।।

ॐ ऐं क्लीं क्रौं दस्यु-नृत्य-दर्शन-तत्परायै नमः स्वाहा।।६०।।

मम त्रैलोक्यमखिलं मम देवा वशानुगाः।
यज्ञ-भागानहं सर्वानुपाश्नामि पृथक् पृथक् ।।६१।।

ॐ ऐं क्लीं किं गायत्र्यै नमः स्वाहा।।६१।।

त्रैलोक्ये वर-रत्नानि मम वश्यान्यशेषतः।
तथैव गज-रत्नं च हृत्वा देवेन्द्र-वाहनम् ।।६२।।

ॐ ऐं क्लीं ग्लूं दुष्ट-दण्ड-कर्यै नमः स्वाहा।।६२।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

क्षीरोद-मथनोद्भूतमश्व-रत्नं ममामरैः।
उच्चैः श्रव-ससंज्ञं तत् प्रणिपत्य समर्पितम् ॥६३॥
ॐ ऐं क्लीं ध्क्लीं महा-मेधायै नमः स्वाहा॥६३॥

यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषूरगेषु च।
रत्न-भूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने ॥६४॥
ॐ ऐं क्लीं रं दुष्ट-वर्ग-विद्राविण्यै नमः स्वाहा॥६४॥

स्त्री-रत्न-भूतां त्वां देवि! लोके मन्यामहे वयम्।
सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्न-भुजो वयम् ॥६५॥
ॐ ऐं क्लीं हलूं मोहिन्यै नमः स्वाहा॥६५॥

मां वा ममानुजं वाऽपि निशुम्भमुरु-विक्रमम्।
भज त्वं चञ्चलापाङ्गि! रत्न-भूताऽसि वै यतः ॥६६॥
ॐ ऐं क्लीं क्सैं कामाक्षायै नमः स्वाहा॥६६॥

परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यसे मत्-परिग्रहात्।
एतद् बुद्ध्या समालोच्य मत्-परिग्रहतां व्रज ॥६७॥
ॐ ऐं क्लीं स्हूं दुष्ट-वर्ग-निग्रहार्हायै नमः स्वाहा॥६७॥

॥ ऋषिरुवाच ॥

उक्त्वैवं सा तदा देवी गम्भीरान्तः स्मिता जगौ।
दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत् ॥६८॥
ॐ ऐं क्लीं श्र् श्रीं दूषकं प्राण-नाशिन्यै नमः स्वाहा॥६८॥

॥ देव्युवाच ॥

सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किंचित् त्वयोदितम्।
त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः ॥६९॥
ॐ ऐं क्लीं ओं त्रि-नेत्रायै नमः स्वाहा॥६९॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

किं त्वत्र यत्-प्रतिज्ञातं मिथ्या तत् क्रियते कथम्।
श्रूयतामल्प-बुद्धित्वात् प्रतिज्ञा या कृता पुरा ॥७०॥

ॐ ऐं क्लीं लूं दूषकोत्ताप-जनन्यै नमः स्वाहा॥७०॥

यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति।
यो मे प्रति-बलो लोके स मे भर्ता भविष्यति ॥७१॥

ॐ ऐं क्लीं ह्रूं डाकिन्यै नमः स्वाहा॥७१॥

तदागच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महासुरः।
मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु ॥७२॥

ॐ ऐं क्लीं ल्लूं दूषकारिष्ट-कारिण्यै नमः स्वाहा॥७२॥

॥ दूत उवाच ॥

अवलिप्ताऽसि मैवं त्वं देवि! ब्रूहि ममाग्रतः।
त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेदग्रे शुम्भ-निशुम्भयोः ॥७३॥

ॐ ऐं क्लीं स्ख्रौ दूषक-द्वेषणे नमः स्वाहा॥७३॥

अन्येषामपि दैत्यानां सर्वे देवा न वै युधि।
तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि! किं पुनः स्त्री त्वमेकिका ॥७४॥

ॐ ऐं क्लीं स्भ्रौं कालिकायै नमः स्वाहा॥७४॥

इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां न संयुगे।
शुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यसि सम्मुखम् ॥७५॥

ॐ ऐं क्लीं क्ष्मलीं दाहिकायै नमः स्वाहा॥७५॥

सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुम्भ-निशुम्भयोः।
केशाकर्षण-निर्धूतगौरवा मा गमिष्यसि ॥७६॥

ॐ ऐं क्लीं ब्रीं कपालिन्यै नमः स्वाहा॥७६॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। देव्युवाच ।।

एवमेतद् बली शुम्भो निशुम्भश्चाति-वीर्यवान्।
किं करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचिता पुरा ।।७७।।

ॐ ऐं क्लीं सीं दहनात्मिकायै नमः स्वाहा।।७७।।

स त्वं गच्छ मयोक्तं ते यदेतत् सर्वमादृतः।
तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु तत् ।।७८।।

ॐ ऐं क्लीं भूं चामुण्डायै नमः स्वाहा।।७८।।

।। ॐ जय जय श्रीमार्कण्डेय-उत्तर-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये सत्या सन्तु (यजमानस्य कामाः) श्रीजगदम्बार्पणमस्तु।।

।। वैदिक आहुति ।।

एक उल्टे अखण्ड पानपत्ते पर शाकल्य, घी में भिगोकर १ कमलगट्टा, १ सुपारी, २ लौंग, १ छोटी इलायची, गूगल शहद ये सब वस्तुएँ स्रुची में रखकर खड़े होकर निम्न मन्त्र बोले (इस अध्याय में कर्पूर, पुष्प व ऋतुफल विशेष है।) -

ॐ प्राणाय स्वाहा पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा।। अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनीम् ॐ स्वाहा।।२२।२३।।

बाद में स्रुवे से पाँच बार घी छोड़ते हुए इस मन्त्र का उच्चारण करें -

ॐ घृतं घृतपावानः पिबतवसां वसा पावानः। पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽ आदिशो विदिशऽ उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।। (यजु. सं. अ. ६।१९ मन्त्र)

।। तान्त्रिक आहुति।।

ॐ क्लीं जयन्ती साङ्गायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै धूमाक्ष्यै विष्णु-मायादि चतुर्विंशद्देवताभ्यो महाऽऽहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए आहुति देवे, सामग्री वैदिक आहुति के समान ही है।

।। पञ्चमोऽध्यायः।।

।। उवाच ११।। श्लोकाः ७८।। एवमादितः ४२२ ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ षष्ठोऽध्यायः

॥ ध्यानम् ॥

ॐ नागाधीश्वर-विष्टरां फणि-फणोत्तं सोरु-रत्नावलीं,
भास्वद्-देह-लतां दिवाकर-निभां नेत्र-त्रयोद्भासिताम्॥
माला-कुम्भ-कपाल-नीरज-करां चन्द्रार्ध-चूडां परां,
सर्वज्ञेश्वर-भैरवाङ्क-निलयां पद्मावतीं चिन्तये॥

॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥

आकर्ण्य तु वचो देव्याः स दूतोऽमर्ष-पूरितः।
समाचष्ट समागम्य दैत्य-राजाय विस्तराद्॥१॥

ॐ ऐं क्लीं श्रौं दर्भ-तनवे नमः स्वाहा॥१॥

तस्य दूतस्य तद्-वाक्यमाकर्ण्यासुर-राट् ततः।
स-क्रोधः प्राह दैत्यानामधिपं धूम्र-लोचनम्॥२॥

ॐ ऐं क्लीं लां दारिकारी-निहंत्र्यै नमः स्वाहा॥२॥

॥ शुम्भ उवाच ॥

हे धूम्रलोचनाशु! त्वं स्व-सैन्य-परिवारितः।
तामानय बलाद् दुष्टां केशाकर्षण-विह्वलाम्॥३॥

ॐ ऐं क्लीं श्रौं योगिन्यै नमः स्वाहा॥३॥

तत्-परित्राणदः कश्चिद्-यदि वोत्तिष्ठतेऽपरः।
स हन्तव्योऽमरो वाऽपि यक्षो गन्धर्व एव वा॥४॥

ॐ ऐं क्लीं स्हें दारुकेश्वर-पूजितायै नमः स्वाहा॥४॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

॥ ऋषिरुवाच ॥

तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रं स दैत्यो धूम्र-लोचनः।
वृतः षष्ट्या सहस्राणामसुराणां द्रुतं ययौ॥५॥
ॐ ऐं क्लीं ह्रीं पतङ्गायै नमः स्वाहा॥५॥

स दृष्ट्वा तां ततो देवीं तुहिनाचल-संस्थिताम्।
जगादोच्चैः प्रयाहि तु मूलं शुम्भ-निशुम्भयोः॥६॥
ॐ ऐं क्लीं श्रीं गणैश्वर्य्यै नमः स्वाहा॥६॥

॥ धूम्र-लोचन उवाच ॥

न चेत् प्रीत्याद्य भवती मद्भर्तारमुपैष्यति।
ततो बलान्नयाम्येष केशाकर्षण-विह्वलाम्॥७॥
ॐ ऐं क्लीं रुं दारुकेश्वर-वन्दितायै नमः स्वाहा॥७॥

॥ देव्युवाच॥

दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान् बल-संवृतः।
बलान्नयसि मामेवं ततः किं ते करोम्यहम्॥८॥
ॐ ऐं क्लीं च्छूं शैलायै नमः स्वाहा॥८॥

॥ ऋषिरुवाच॥

अभ्युक्तः सोऽभ्यधावत् तामसुरो धूम्र-लोचनः।
हुंकारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका ततः॥९॥
ॐ ऐं क्लीं फ्रें दारुकेश्वर-मात्रे नमः स्वाहा॥९॥

अथ क्रुद्धं महा-सैन्यमसुराणां तथाम्बिका।
ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैस्तथा शक्ति-परश्वधैः॥१०॥
ॐ ऐं क्लीं हूं दर्भ-हस्तायै नमः स्वाहा॥१०॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ततो धुत-सटः कोपात् कृत्वा नादं सुभैरवम्।
पपातासुर-सेनायां सिंहो देव्या स्व-वाहनः ॥११॥

ॐ ऐं क्लीं द्रें दर्भ-युतायै नमः स्वाहा ॥११॥

कांश्चित् कर-प्रहारेण दैत्यानास्येन चापरान्।
आक्रम्य चाधरेणान्यान् स जघान् महासुरान् ॥१२॥

ॐ ऐं क्लीं सां दर्भ-कर्म-विवर्जितायै नमः स्वाहा ॥१२॥

केषांचित् पाटयामास नखैः कोष्ठानि केसरी।
तथा तल-प्रहारेण शिरांसि कृतवान् पृथक् ॥१३॥

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं कृष्ण-वर्णायै नमः स्वाहा ॥१३॥

विच्छिन्न-बाहु-शिरसः कृतास्तेन तथापरे।
पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषां धुत-केसरः ॥१४॥

ॐ ऐं क्लीं ऐं दर्भ-मय्यै नमः स्वाहा ॥१४॥

क्षणेन तद् बलं सर्वं क्षयं नीतं महात्मना।
तेन केसरिणा देव्या वाहनेनाति-कोपिना ॥१५॥

ॐ ऐं क्लीं प्रों यम-दूत्यै नमः स्वाहा ॥१५॥

श्रुत्वा तमसुरं देव्या निहतं धूम्र-लोचनम्।
बलं च क्षयितं कृत्स्नं देवी केसरिणा ततः ॥१६॥

ॐ ऐं क्लीं त्रूं दर्भ-सर्व-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा ॥१६॥

चुकोप दैत्याधिपतिः शुम्भः प्रस्फुरिताधरः।
आज्ञापयामास च तौ चण्ड-मुण्डौ महासुरौ ॥१७॥

ॐ ऐं क्लीं क्रौं दर्भ-कर्माचार-रतायै नमः स्वाहा ॥१७॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। शुम्भ उवाच ।।

हे चण्ड! हे मुण्ड! बलैर्बहुभिः परिवारितौ।
तत्र गच्छत गत्वा च सा समानीयतां लघु ।।१८।।

ॐ ऐं क्लीं श्रौं भद्र-काल्यै नमः स्वाहा ।।१८।।

केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा यदि वा संशयो युधि।
तदाशेषायुधैः सर्वैरसुरैर्विनिहन्यताम् ।।१९ ।।

ॐ ऐं क्लीं त्रीं दर्भ-हस्त-कृतार्हणायै नमः स्वाहा ।।१९।।

तस्यां हतायां दुष्टायां सिंहे च विनिपातिते।
शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वा तामथाम्बिकाम् ।।२०।।

ॐ ऐं क्लीं दर्भानुकूलायै नमः स्वाहा ।।२०।।

।। ॐ जय जय श्रीमार्कण्डेय-उत्तर-पुराणे
सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये सत्या सन्तु (यजमानस्य कामाः)
श्रीजगदम्बार्पणमस्तु ।।

।। वैदिक आहुति ।।

एक उल्टे अखण्ड पानपत्ते पर शाकल्य, घी में भिगोकर १ कमलगट्टा, १ सुपारी, २ लौंग, १ छोटी इलायची, गूगल शहद ये सब वस्तुएँ स्रुची में रखकर खड़े होकर निम्न मन्त्र बोले (इस अध्याय में भोजपत्र विशेष है।) -

ॐ प्राणाय स्वाहा पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा।। अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनीम् ॐ स्वाहा ।।२२।२३।।

बाद में स्रुवे से पाँच बार घी छोड़ते हुए इस मन्त्र का उच्चारण करें -

ॐ घृतं घृतपावानः पिबतवसां वसा पावानः। पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽ आदिशो विदिशऽ उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।। (यजु. सं. अ. ६।१९ मन्त्र)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। तान्त्रिक आहुति ।।

ह्रीं साङ्गायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै श्रीमहालक्ष्म्यै सप्तविंशति–वर्णात्मिकायै लक्ष्मीबीजाधिष्ठात्र्यै नमः महाऽऽहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए आहुति देवे, सामग्री वैदिक आहुति के समान ही है।

।। षष्ठोऽध्यायः ।।

।। उवाच ७ ।। श्लोकाः २० ।। एवमादितः ४४२ ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ सप्तमोऽध्यायः

।। ध्यानम् ।।

ध्यायेयं रत्न-पीठे शुक-कल-पठितं शृण्वतीं श्यामलाङ्गीं,
न्यस्तैकाङ्घ्रि-सरोजे शशि-शकल-धरां वल्लकीं वादयन्तीम्।
कह्लाराबद्ध-मालां नियमित-विलसच्चोलिकां रक्त-वस्त्रां,
मातङ्गीं शङ्ख-पात्रां मधुर-मधु-मदां चित्र-कोद्भासि-भालाम्।।

।। ॐ ऋषिरुवाच ।।

आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याश्चण्ड-मुण्ड-पुरोगमाः।
चतुरङ्ग-बलोपेता ययुरभ्युद्यतायुधाः ।।१।।

ॐ ऐं क्लीं श्रौं युगेश्वर्यै नमः स्वाहा।।१।।

ददृशुस्ते ततो देवीमीषद्-हासां व्यवस्थिताम्।
सिंहस्योपरि शैलेन्द्र-शृङ्गे महति काञ्चने।।२।।

ॐ ऐं क्लीं प्रीं सरस्वत्यै नमः स्वाहा।।२।।

ते दृष्ट्वा तां समादातुमुद्यमं चक्रुरुद्यताः।
आकृष्ट-चापासि-धरास्तथान्ये तत्-समीपगाः।।३।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं दांभर्यायै नमः स्वाहा।।३।।

ततः कोपं चकारोच्चैरम्बिका तानरीन् प्रति।
कोपेन चास्या वदनं मषीवर्णमभूत् तदा।।४।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रौं यम-दूत्यै नमः स्वाहा।।४।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भृकुटी-कुटिलात् तस्या ललाट-फलकाद् द्रुतम्।
काली कराल-वदना विनिष्क्रान्ताऽसि पाशिनी ॥५॥

ॐ ऐं क्लीं श्रौं दर्भ-कर्माचार-रतायै नमः स्वाहा ॥५॥

विचित्र-खट्वाङ्ग-धरा नर-माला-विभूषणा।
द्वीपि-चर्म-परीधाना शुष्क-मांसाति-भैरवा ॥६॥

ॐ ऐं क्लीं ओं दर्भानुकूलायै नमः स्वाहा ॥६॥

अति-विस्तार-वदना जिह्वा-ललन-भीषणा।
निमग्ना-रक्त-नयना नादापूरित-दिङ्-मुखा ॥७॥

ॐ ऐं क्लीं श्रीं सरस्वत्यै नमः स्वाहा ॥७॥

सा वेगेनाभि-पतिता घातयन्ती महासुरान्।
सैन्ये तत्र सुरारीणामभक्षयत्-तद्-बलम् ॥८॥

ॐ ऐं क्लीं क्रां दांभर्यै नमः स्वाहा ॥८॥

पार्ष्णि-ग्राहाङ्कुश-ग्राहि-योध-घण्टा-समन्वितान्।
समादायैक-हस्तेन मुखे चिक्षेप वारणान् ॥९॥

ॐ ऐं क्लीं हूं कृत्यै नमः स्वाहा ॥९॥

तथैव योधं तुरगैः रथं सारथिना सह।
निक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्वयन्त्यति-भैरवम् ॥१०॥

ॐ ऐं क्लीं छ्रां दर्वी-पात्रानुदामिन्यै नमः स्वाहा ॥१०॥

एकं जग्राह केशेषु ग्रीवायामथ चापरम्।
पादेनाक्रम्य चैवान्यमुरसान्यमपोथयत् ॥११॥

ॐ ऐं क्लीं ल्लूं दम-घोष-प्रपूज्यायै नमः स्वाहा ॥११॥

तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथा सुरैः।
मुखेन जग्राह रुषा दशनै-र्मथितान्यपि ॥१२॥

ॐ ऐं क्लीं सौं शिवायै नमः स्वाहा ॥१२॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बलिनां तद्-बलं सर्वमसुराणां दुरात्मनाम्।
ममर्दाभक्षयच्चान्यानन्याँश्चाताडयत् तथा ॥१३॥
ॐ ऐं क्लीं ह्लौं दम-घोष-समाराध्यायै नमः स्वाहा॥१३॥

असिना निहता केचित् केचित् खट्वाङ्ग-ताडिताः।
जग्मुर्विनाशमसुरा दन्ताग्राभिहतास्तथा ॥१४॥
ॐ ऐं क्लीं क्रूं यक्षान्यै नमः स्वाहा॥१४॥

क्षणेन तद्-बलं सर्वमसुराणां निपातितम्।
दृष्ट्वा चण्डोऽभिदुद्राव तां कालीमति-भीषणाम्॥१५॥
ॐ ऐं क्लीं सौं दम-घोष-वर-प्रदायै नमः स्वाहा॥१५॥

शर-वर्षैर्महा-भीमैर्भीमाक्षीं तां महासुरः।
छादयामास चक्रैश्च मुण्डः क्षिप्तै सहस्रशः॥१६॥
ॐ ऐं क्लीं कुं दावाग्नि-रूपिण्यै नमः स्वाहा॥१६॥

तानि चक्राण्यनेकानि विशमानानि तन्मुखम्।
बभुर्यथार्क-बिम्बानि सुबहूनि घनोदरम्॥१७॥
ॐ ऐं क्लीं ह्रीं हुङ्कार्यै नमः स्वाहा॥१७॥

ततो जहासाति-रुषा भीमं भैरव-नादिनी।
काली कराल-वक्त्रान्तर्दुर्दर्श-दशनोज्ज्वला॥१८॥
ॐ ऐं क्लीं ह्रूं दन्त-चर्चित-हस्तिकायै नमः स्वाहा॥१८॥

उत्थाय च महा-सिंहं देवी चण्डमधावत।
गृहीत्वा चास्य केशेषु शिरस्तेनासिनाच्छिनत्॥१९॥
ॐ ऐं क्लीं मूं सहस्राक्ष्यै नमः स्वाहा॥१९॥

अथ मुण्डोऽभ्यधावत् तां दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्।
तमप्यपातयद् भूमौ सा खड्गाभिहतं रुषा॥२०॥
ॐ ऐं क्लीं (ह्रौं) ह्रां जयन्त्यै नमः स्वाहा॥२०॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

छिन्ने शिरसि दैत्येन्द्रश्चक्रे नादं सु-भैरवम्।
तेन नादेन महता भासितं भुवन-त्रयम्॥२१॥

ॐ ऐं क्लीं ह्सूं द्वार-वासिन्यै नमः स्वाहा॥२१॥

हत-शेषं ततः सैन्यं दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्।
मुण्डं च सु-महा-वीर्यं दिशो भेजे भयातुरम्॥२२॥

ॐ ऐं क्लीं क्रें आकर्षण्यै नमः स्वाहा॥२२॥

शिरश्चण्डस्य काली च गृहीत्वा मुण्डमेव च।
प्राह प्रचण्डाट्टहास-मिश्रमभ्येत्य चण्डिकाम्॥२३॥

ॐ ऐं क्लीं लूं भैरव्यै नमः स्वाहा॥२३॥

॥ देव्युवाच ॥

मया तवात्रोपहृतौ चण्ड-मुण्डौ महा-पशू।
युद्ध-यज्ञे स्वयं शुम्भं निशुम्भं च हनिष्यसि॥२४॥

ॐ ऐं क्लीं प्लूं मृडान्यै नमः स्वाहा॥२४॥

॥ ऋषिरुवाच॥

तयानीतौ ततो दृष्ट्वा चण्ड-मुण्डौ महासुरौ।
उवाच कालीं कल्याणी ललितं चण्डिका वचः॥२५॥

ॐ ऐं क्लीं शां दम्भ-हन्त्र्यै नमः स्वाहा॥२५॥

यस्माच्चण्डं च मुण्डं च गृहीत्वा त्वमुपागता।
चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवि! भविष्यसि॥२६॥

ॐ ऐं क्लीं ह्स्त्रीं धृत्यै नमः स्वाहा॥२६॥

॥ ॐ जय जय श्रीमार्कण्डेय-उत्तर-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये सत्या सन्तु (यजमानस्य कामाः) श्रीजगदम्बार्पणमस्तु॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। वैदिक आहुति ।।

एक उल्टे अखण्ड पानपत्ते पर शाकल्य, घी में भिगोकर १ कमलगट्टा, १ सुपारी, २ लौंग, १ छोटी इलायची, गूगल शहद ये सब वस्तुएँ स्रुची में रखकर खड़े होकर निम्न मन्त्र बोले (इस अध्याय में जायफल विशेष है।) –

ॐ प्राणाय स्वाहा पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा।। अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन। ससत्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनीम् ॐ स्वाहा।।२२।२३।।

बाद में स्रुवे से पाँच बार घी छोड़ते हुए इस मन्त्र का उच्चारण करें –

ॐ घृतं घृतपावानः पिबतवसां वसा पावानः। पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽ आदिशो विदिशऽ उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।। (यजु. सं. अ. ६।१९ मन्त्र)

।। तान्त्रिक आहुति ।।

ॐ जयन्ती साङ्गायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै काली-चामुण्डा-देव्यै कर्पूर-बीजाधिष्ठात्र्यै महाऽऽहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए आहुति देवे, सामग्री वैदिक आहुति के समान ही है।

।। सप्तमोऽध्यायः ।।

।। उवाच ३।। श्लोकाः २६।। एवमादितः ४६८ ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ अष्टमोऽध्यायः ।।

।। ध्यानम् ।।

ॐ अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं, धृत-पाशाङ्कुश-वाण-चाप-हस्ताम् ।
अणिमाादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावये भवानीम् ।।

।। ॐ ऋषिरुवाच।।

चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते।
बहुलेषु च सैन्येषु क्षयितेष्वसुरेश्वरः ।।१।।
ॐ ऐं क्लीं श्रीं दत्त-स्वर्गायै नमः स्वाहा ।।१।।

ततः कोप-पराधीन-चेताः शुम्भः प्रतापवान्।
उद्योगं सर्व-सैन्यानां दैत्यानामादिदेश ह ।।२।।
ॐ ऐं क्लीं स्लूं विन्ध्य-वासिन्यै नमः स्वाहा ।।२।।

।। शुम्भ उवाच।।

अद्य सर्व-बलैर्दैत्याः षडशीतिरुदायुधाः।
कम्बूनां चतुरशीतिर्निर्यान्तु स्व-बलैर्वृताः ।।३।।
ॐ ऐं क्लीं प्लीं दम्भ-दात्र्यै नमः स्वाहा ।।३।।

कोटि-वीर्याणि पञ्चाशदसुराणां कुलानि वै।
शतं कुलानि धौम्राणां निर्गच्छन्तु ममाज्ञया ।।४।।
ॐ ऐं क्लीं अं दम्भ-लोक-विमोहिन्यै नमः स्वाहा ।।४।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कालका दौर्हृदा मौर्याः कालकेयास्तथासुराः।
युद्धाय सज्जा निर्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम ।।५ ।।
ॐ ऐं क्लीं म्लीं दम्भ-शीलायै नमः स्वाहा ।।५।।

॥ ऋषिरुवाच ॥

आज्ञाप्यासुर-पतिः तु शुम्भो भैरव-शासनः।
निर्जगाम महा-सैन्य-सहस्रैर्बहुभिर्वृतः ।।६ ।।
ॐ ऐं क्लीं श्रां गन्धायै नमः स्वाहा ।।६।।

आयान्तं चण्डिकां दृष्ट्वा तत् सैन्यमति-भीषणम्।
ज्या-स्वनैः पूरयामास धरणी-गगनान्तरम् ।।७ ।।
ॐ ऐं क्लीं सौं दम्भ-हरायै नमः स्वाहा ।।७।।

ततः सिंहो महा-नादमतीव कृतवान् नृप!
घण्टा-स्वनेन तन्नादमम्बिका चोप-बृंहयत् ।।८ ।।
ॐ ऐं क्लीं श्रौं चण्डिकायै नमः स्वाहा ।।८।।

धनुर्ज्या-सिंह-घण्टानां नादापूरित-दिङ्-मुखा।
निनादैर्भीषणैः काली जिग्ये विस्तारितानना ।।९ ।।
ॐ ऐं क्लीं प्रीं दम्भ-वत्यारि-मर्दिन्यै नमः स्वाहा ।।९।।

तं निनादमुपश्रुत्य दैत्य-सैन्यैश्चतुर्दिशम्।
देवी सिंहस्तथा काली सरोषैः परिवारिताः ।।१० ।।
ॐ ऐं क्लीं म्ह्रीं विरूपाक्ष्यै नमः स्वाहा ।।१०।।

एतस्मिन्नन्तरे भूप! विनाशाय सुरद्विषाम्।
भवायामर-सिंहानामति-वीर्य-बलान्विताः ।।११ ।।
ॐ ऐं क्लीं प्रूं दम्भ-रूपायै नमः स्वाहा ।।११।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ब्रह्मेश-गुह-विष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः।
शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद् रूपैश्चण्डिकां ययुः ॥१२॥

ॐ ऐं क्लीं ऐं महा-मायायै नमः स्वाहा ।।१२।।

यस्य देवस्य यद् रूपं यथा भूषण-वाहनम्।
तद्-वदेव हि तच्छक्तिरसुरान् योद्धुमाययौ ॥१३॥

ॐ ऐं क्लीं क्रों दम्भ-कर्यै नमः स्वाहा ।।१३।।

हंस-युक्त-विमानाग्रे साक्ष-सूत्र-कमण्डलुः।
आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणी साभिधीयते ॥१४॥

ॐ ऐं क्लीं ईं संहारिण्यै नमः स्वाहा ।।१४।।

माहेश्वरी वृषारूढा त्रिशूल-वर-धारिणी।
महाहि-वलया प्राप्ता चन्द्र-रेखा-विभूषणा ॥१५॥

ॐ ऐं क्लीं ऐं दम्भ-सन्तान-दारिण्यै नमः स्वाहा ।।१५।।

कौमारी शक्ति-हस्ता च मयूर-वर-वाहना।
योद्धुमभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुह-रूपिणी ॥१६॥

ॐ ऐं क्लीं लृं कुलेश्वर्यै नमः स्वाहा ।।१६।।

तथैव वैष्णवी शक्तिर्गरुडोपरि-संस्थिता।
शङ्ख-चक्र-गदा-शार्ङ्ग-खड्ग-हस्ताभ्युपाययौ ॥१७॥

ॐ ऐं क्लीं फ्रों दत्त-मोक्षायै नमः स्वाहा ।।१७।।

यज्ञ-वाराहमतुलं रूपं या बिभ्रतो हरेः।
शक्तिः साप्याययौ तत्र वाराहीं बिभ्रती तनुम् ॥१८॥

ॐ ऐं क्लीं हूं नागिन्यै नमः स्वाहा ।।१८।।

नारसिंही नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः।
प्राप्ता तत्र सटाक्षेप-क्षिप्त-नक्षत्र-संहतिः ॥१९॥

ॐ ऐं क्लीं फ्रौं दत्तारोग्यायै नमः स्वाहा ।।१९।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वज्र-हस्ता तथैवैन्द्री गज-राजोपरि-स्थिता।
प्राप्ता सहस्र-नयना यथा शक्रस्तथैव सा ॥२०॥

ॐ ऐं क्लीं ग्लौं मुद्रायै नमः स्वाहा ॥२०॥

ततः परिवृतस्ताभिरीशानो देव-शक्तिभिः।
हन्यन्तामसुराः शीघ्रं मम प्रीत्याऽऽह चण्डिकाम् ॥२१॥

ॐ ऐं क्लीं स्मौं दम्भिकायै नमः स्वाहा ॥२१॥

ततो देवी-शरीरात्तु विनिष्क्रान्ताऽति-भीषणा।
चण्डिका-शक्तिरत्युग्रा शिवा-शत-निनादिनी ॥२२॥

ॐ ऐं क्लीं श्रीं दत्त-पुत्रायै नमः स्वाहा ॥२२॥

सा चाह धूम्र-जटिलमीशानमपराजिता।
दूत! त्वं गच्छ भगवन्! पार्श्वं शुम्भ-निशुम्भयोः ॥२३॥

ॐ ऐं क्लीं स्हौं पिनाकिन्यै नमः स्वाहा ॥२३॥

॥ देव्युवाच ॥

ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च दानवावति-गर्वितौ।
ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धाय समुपस्थिताः ॥२४॥

ॐ ऐं क्लीं ख्सें दत्त-दारायै नमः स्वाहा ॥२४॥

त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हविर्भुजः।
यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ ॥२५॥

ॐ ऐं क्लीं क्ष्म्लीं रक्तांग्यै नमः स्वाहा ॥२५॥

बलावलेपादथ चेद् भवन्तो युद्ध-काङ्क्षिणः।
तदागच्छत तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितेन वः ॥२६॥

ॐ ऐं क्लीं ह्रौं दत्त-हारायै नमः स्वाहा ॥२६॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। ऋषिरुवाच ।।

यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या शिवः स्वयम्।
शिव-दूती तु लोकेऽस्मिन् ततः सा ख्यातिमागता।।२७।।

ॐ ऐं क्लीं वीं महा-घोरायै नमः स्वाहा।।२७।।

तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाख्यातं महासुराः।
अमर्षापूरिता जग्मुर्यत्र कात्यायनी स्थिता।।२८।।

ॐ ऐं क्लीं लूं दारिकायै नमः स्वाहा।।२८।।

ततः प्रथममेवाग्रे शर-शक्त्यृष्टि-वृष्टिभिः।
ववर्षुरुद्धतामर्षास्तां देवीममरारयः ।।२९।।

ॐ ऐं क्लीं ब्लीं दार-वासायै नमः स्वाहा।।२९।।

सा च तान् प्रहितान् बाणाँश्छूल-शक्ति-परश्वधान्।
चिच्छेद लीलयाऽऽध्मातधनुर्मुक्तैर्महेषुभिः।।३०।।

ॐ ऐं क्लीं त्स्त्रों जलेश्वर्यै नमः स्वाहा।।३०।।

तस्याग्रतस्तथा काली शूल-पात-विदारितान्।
(खट्वाङ्ग-पोथिताँश्चारीन् कुर्वती व्यचरत्तदा)।
कमण्डलु-जलाक्षेप-हत-वीर्यान् हतौजसः।।३१।।

ॐ ऐं क्लीं ब्रूं दत्त-भोगायै नमः स्वाहा।।३१।।

ब्रह्माणी चाकरोच्छत्रून् येन येन स्म धावति।
माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी।।३२।।

ॐ ऐं क्लीं (श्क्तीं श्क्लीं सर्व-सिद्ध्यै) नमः स्वाहा।।३२।।

दैत्याञ्जघान कौमारी तथा शक्त्याति-कोपना।
ऐन्द्री कुलिश-पातेन शतशो दैत्य-दानवाः।।३३।।

ॐ ऐं क्लीं श्रूं दत्त-शोकायै नमः स्वाहा।।३३।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पेतुर्विदारिताः पृथ्व्यां रुधिरौघ-प्रवर्षिणः ।
तुण्ड-प्रहार-विध्वस्ता दंष्ट्राग्र-क्षत-वक्षसः ॥३४॥

ॐ ऐं क्लीं शीं दत्त-हस्त्यादि-वाहनायै नमः स्वाहा ॥३४॥

वाराह-मूर्त्या न्यपतँश्चक्रेण च विदारिताः ।
नखैर्विदारिताँश्चान्यान् भक्षयन्ती महासुरान् ॥३५॥

ॐ ऐं क्लीं क्लीं योगिन्यै नमः स्वाहा ॥३५॥

नारसिंही चचाराजौ नादापूर्ण-दिगम्बरा ।
चण्डाट्टहासैरसुराः शिव-दूत्यभि-दूषिताः ॥३६॥

ॐ ऐं क्लीं क्लौं दत्त-मत्यै नमः स्वाहा ॥३६॥

पेतुःपृथिव्यां पतितान् ताँश्च खादाथ सा तदा ।
एवं मातृ-गणं क्रुद्धं मर्दयन्तं महासुरान् ॥३७॥

ॐ ऐं क्लीं ह्रूं दत्त-भार्यायै नमः स्वाहा ॥३७॥

दृष्ट्वाभ्युपायैर्विविधैर्नेशुर्देवारि-सैनिकाः ।
पलायन-परान् दृष्ट्वा दैत्यान् मातृ-गणार्दितान् ॥३८॥

ॐ ऐं क्लीं क्लूं भवान्यै नमः स्वाहा ॥३८॥

योद्धुमभ्याययौ क्रुद्धो रक्त-बीजो महासुरः ।
रक्त-बिन्दुर्यदा भूमौ पतत्यस्य शरीरतः ॥३९॥

ॐ ऐं क्लीं तां दत्त-शास्त्राव-बोधिकायै नमः स्वाहा ॥३९॥

समुत्पतति मेदिन्यां तत्-प्रमाण-स्तदासुरः ।
युयुधे स गदा-पाणिरिन्द्र-शक्त्या महासुरः ॥४०॥

ॐ ऐं क्लीं म्लूं भद्रायै नमः स्वाहा ॥४०॥

ततश्चैन्द्री स्व-वज्रेण रक्त-बीजमताडयत् ।
कुलिशेनाहतस्याशु बहु सुस्राव शोणितम् ॥४१॥

ॐ ऐं क्लीं हं दत्त-पानायै नमः स्वाहा ॥४१॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्-रूपास्तत्-पराक्रमाः।
यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद् रक्त-बिन्दवः॥४२॥

ॐ ऐं क्लीं स्लूं निकृत्यै नमः स्वाहा॥४२॥

तावन्तः पुरुषा जातास्तद्-वीर्य-बल-विक्रमाः।
ते चाऽपि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्त-संभवाः॥४३॥

ॐ ऐं क्लीं औं दत्त-दानायै नमः स्वाहा॥४३॥

समं मातृभिरत्युग्र-शस्त्र-पातातिभीषणम्।
पुनश्च वज्र-पातेन क्षतमस्य शिरो यदा॥४४॥

ॐ ऐं क्लीं ह्लौं विघ्न-नाशिन्यै नमः स्वाहा॥४४॥

ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जाताः सहस्रशः।
वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणाभि-जघान ह॥४५॥

ॐ ऐं क्लीं यां क्षमा-कर्यै नमः स्वाहा॥४५॥

गदया ताडयामास ऐन्द्री तमसुरेश्वरम्।
वैष्णवी-चक्र-भिन्नस्य रुधिर-स्राव-सम्भवैः॥४६॥

ॐ ऐं क्लीं क्ष्लीं दत्त-सौधावनी-वासायै नमः स्वाहा॥४६॥

सहस्रशो जगद् व्याप्तं तत्-प्रमाणैर्महासुरैः।
शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथासिना॥४७॥

ॐ ऐं क्लीं ह्लीं दुर्गायै नमः स्वाहा॥४७॥

माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्त-बीजं महासुरम्।
स चाऽपि गदया दैत्यः सर्वा एवाहनत् पृथक्॥४८॥

ॐ ऐं क्लीं ग्लौं दासदायै नमः स्वाहा॥४८॥

मातृः कोप-समाविष्टो रक्त-बीजो महासुरः।
तस्या-हतस्य बहुधा शक्ति-शूलादिभिर्भुवि॥४९॥

ॐ ऐं क्लीं ह्लौं शान्ति-कर्यै नमः स्वाहा॥४९॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पपात यो वै रक्तौघस्तेनासँच्छतशोऽसुराः।
तैश्चासुरासृक्-सम्भूतैरसुरैः सकलं जगत्।।५०।।

ॐ ऐं क्लीं प्रां दास्य-तुष्टायै नमः स्वाहा।।५०।।

व्याप्तमासीत् ततो देवा भयमाजग्मुरुत्तमम्।
तान् विषण्णान् सुरान् दृष्ट्वा चण्डिका प्राह सत्वरा।।५१।।

ॐ ऐं क्लीं क्लीं दास्यै हरायै नमः स्वाहा।।५१।।

।। देव्युवाच ।।

उवाच कालीं चामुण्डे! विस्तीर्णं वदनं कुरु।
मच्छस्त्र-पात-सम्भूतान् रक्त-बिन्दून् महासुरान्।।५२।।

ॐ ऐं क्लीं स्लूं गौर्यै नमः स्वाहा।।५२।।

रक्त-बिन्दोः प्रतीच्छ त्वं वक्त्रेणानेन वेगिना।
भक्षयन्ती चर रणे तदुत्पन्नान् महासुरान्।।५३।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं दास-दासी-शत-प्रदायै नमः स्वाहा।।५३।।

एवमेष क्षयं दैत्यः क्षीण-रक्तो गमिष्यति।
भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा न चोत्पत्स्यन्ति चापरे।।५४।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रैं दंपत्तीष्टायै नमः स्वाहा।।५४।।

।। ऋषिरुवाच ।।

उक्त्वैवं तां ततो देवी शूलेनाभिजघान तम्।
मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम्।।५५।।

ॐ ऐं क्लीं भ्रं विश्व-हर्त्रे नमः स्वाहा।।५५।।

ततोऽसावजघानाथ गदया तत्र चण्डिकाम्।
न चास्या वेदनां चक्रे गदा-पातोऽल्पिकामपि।।५६।।

ॐ ऐं क्लीं सौं वरुणायै नमः स्वाहा।।५६।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तस्याहतस्य देहात्तु बहु सुस्राव शोणितम्।
यतस्ततस्तद्-वक्त्रेण चामुण्डा सम्प्रतीच्छति॥५७॥

ॐ ऐं क्लीं श्रीं दम्पत्यै नमः स्वाहा॥५७॥

मुखे समुद्गता येऽस्या रक्त-पातान् महासुराः।
ताँश्च खादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम्॥५८॥

ॐ ऐं क्लीं प्सूं विश्व-संहार-कारिण्यै नमः स्वाहा॥५८॥

देवी शूलेन वज्रेण बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः।
जघान रक्त-बीजं तं चामुण्डा-पीत-शोणितम्॥५९॥

ॐ ऐं क्लीं द्रौं दार-रूपायै नमः स्वाहा॥५९॥

स पपात मही-पृष्ठे शस्त्र-संघ-समाहतः।
नीरक्तश्च मही-पाल! रक्त-बीजो महासुरः॥६०॥

ॐ ऐं क्लीं स्स्नां धात्र्यै नमः स्वाहा॥६०॥

ततस्ते हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशा नृप!
तेषां मातृ-गणो जातो ननर्तासृङ्मदोद्धतः॥६१॥

ॐ ऐं क्लीं ह्स्लीं दार-वासायै नमः स्वाहा॥६१॥

॥ ॐ जय जय श्रीमार्कण्डेय-उत्तर-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये सत्या सन्तु (यजमानस्य कामाः) श्रीजगदम्बार्पणमस्तु॥

॥ वैदिक आहुति ॥

एक उल्टे अखण्ड पानपत्ते पर शाकल्य, घी में भिगोकर १ कमलगट्टा, १ सुपारी, २ लौंग, १ छोटी इलायची, गूगल शहद ये सब वस्तुएँ स्रुची में रखकर खड़े होकर निम्न मन्त्र बोले (इस अध्याय में लाल विशेष है।) -

ॐ प्राणाय स्वाहा पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा॥ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन। ससंस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनीम् ॐ स्वाहा॥२२।२३॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बाद में स्रुवे से पाँच बार घी छोड़ते हुए इस मन्त्र का उच्चारण करें –

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत॒ वसां वसा पावानः। पिबतान्तरिक्षस्य ह॒विरसि॒ स्वाहा। दिशः॑ प्र॒दिश॑ऽ आ॒दिशो॑ वि॒दिश॑ऽ उ॒द्दिशो॑ दि॒ग्भ्यः स्वाहा।। (यजु. सं. अ. ६।१९ मन्त्र)

।। तान्त्रिक आहुति।।

ॐ जयन्ती साङ्गायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै रक्ताक्ष्यै अष्ट–मातृ–सहितायै महाऽऽहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए आहुति देवे, सामग्री वैदिक आहुति के समान ही है।

।। अष्टमोऽध्यायः।।

।। उवाच ७।। श्लोकाः ६१।। एवमादितः ५२९ ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

॥ अथ नवमोऽध्यायः ॥

॥ ध्यानम् ॥

ॐ बन्धूक-काञ्चन-निभं रुचिराक्ष-मालां,
पाशाङ्कुशौ च वरदां निज-बाहु-दण्डैः।
बिभ्राणमिन्दु-शकलाभरणं त्रिनेत्र-
मर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि ॥

॥ ॐ राजोवाच ॥

विचित्रमिदमाख्यातं भगवन् भवता मम।
देव्याश्चरित-माहात्म्यं रक्त-बीज-क्षयाश्रितम्॥१॥

ॐ ऐं क्लीं रौं दार-वासि-हृदास्पदायै नमः स्वाहा॥१॥

भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्त-बीजे निपातिते।
चकार शुम्भो यत्-कर्म निशुम्भश्चाति-कोपनः॥२॥

ॐ ऐं क्लीं क्लीं कामिन्यै नमः स्वाहा॥२॥

॥ ऋषिरुवाच ॥

चकार कोपमतुलं रक्त-बीजे निपातिते।
शुम्भासुरो निशुम्भश्च हतेष्वन्येषु चाहवे॥३॥

ॐ ऐं क्लीं म्लौं दार-वासि-जनाराध्यायै नमः स्वाहा॥३॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हन्यमानं महा-सैन्यं विलोक्यामर्षमुद्वहन्।
अभ्यधावन्निशुम्भोऽथ मुख्ययाऽसुर-सेनया ॥४॥

ॐ ऐं क्लीं ग्लीं दार-वासि-जन-प्रियायै नमः स्वाहा ॥४॥

तस्याग्रतस्तथा पृष्ठे पार्श्वयोश्च महासुरः।
संदष्टौष्ठ-पुटाः क्रुद्धा हन्तुं देवीमुपाययुः ॥५॥

ॐ ऐं क्लीं स्हौं दार-वासि-विनिर्मितायै नमः स्वाहा ॥५॥

आजगाम महा-वीर्यः शुम्भोऽपि स्व-बलैर्वृतः।
निहन्तुं चण्डिकां कोपात् कृत्वा युद्धं तु मातृभिः ॥६॥

ॐ ऐं क्लीं ईं विद्यायै नमः स्वाहा ॥६॥

ततो युद्धमतीवासीद् देव्या शुम्भ-निशुम्भयोः।
शर-वर्षमतीवोग्रं मेघयोरिव वर्षतोः ॥७॥

ॐ ऐं क्लीं बूं दार-वासि-समर्चितायै नमः स्वाहा ॥७॥

चिच्छेदास्ताँश्छराँस्ताभ्यां चण्डिका स्व-शरोत्करैः।
ताडयामास चाङ्गेषु शस्त्रौघैरसुरेश्वरौ ॥८॥

ॐ ऐं क्लीं लूं दार-वास्याहत-प्राणायै नमः स्वाहा ॥८॥

निशुम्भो निशितं खड्गं चर्म चादाय सुप्रभम्।
अताडयन्मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहनमुत्तमम् ॥९॥

ॐ ऐं क्लीं आं सन्ध्यायै नमः स्वाहा ॥९॥

ताडिते वाहने देवी क्षुर-प्रेणासिमुत्तमम्।
निशुम्भस्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्ट-चन्द्रकम् ॥१०॥

ॐ ऐं क्लीं श्रीं दार-वास्यारि-नाशिन्यै नमः स्वाहा ॥१०॥

छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिं चिक्षेप सोऽसुरः।
तामप्यस्य द्विधा चक्रेचक्रेणाभिमुखागतम् ॥११॥

ॐ ऐं क्लीं क्रौं विरूपाक्ष्यै नमः स्वाहा ॥११॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ शूलं जग्राह दानवः।
आयातं मुष्टि-पातेन देवी तच्चाप्यचूर्णयत्॥१२॥

ॐ ऐं क्लीं प्रूं दार-वासि-विघ्न-हरायै नमः स्वाहा॥१२॥

अविध्याथ गदां सोऽपि चिक्षेप चण्डिकां प्रति।
साऽपि देव्या त्रिशूलेन भिन्ना भस्मत्वमागता॥१३॥

ॐ ऐं क्लीं क्लीं त्रि-शान्त्यै नमः स्वाहा॥१३॥

ततः परशु-हस्तं तमायान्तं दैत्य-पुङ्गवम्।
आहत्य देवीबाणौघैरपातयत भू-तले॥१४॥

ॐ ऐं क्लीं भ्रूं दार-वासि-विमुक्तिदायै नमः स्वाहा॥१४॥

तस्मिन्निपतिते भूमौ निशुम्भे भीम-विक्रमे।
भ्रातर्यतीव-संक्रुद्धः प्रययौ हन्तुमम्बिकाम्॥१५॥

ॐ ऐं क्लीं ह्रौं शुभ-प्रदायै नमः स्वाहा॥१५॥

तमायान्तं समालोक्य देवी शङ्खमवादयत्।
ज्या-शब्दं चापि धनुषश्चकारातीव-दुःसहम्॥१६॥

ॐ ऐं क्लीं क्रीं दाराग्नि-रूपिण्यै नमः स्वाहा॥१६॥

पूरयामास ककुभो निज-घण्टा-स्वनेन च।
समस्त-दैत्य-सैन्यानां तेजो-क्षय-विधायिना॥१७॥

ॐ ऐं क्लीं म्लीं त्रिनेत्राय नमः स्वाहा॥१७॥

ततः सिंहो महा-नादैस्त्याजितेभ-महा-मदैः।
पूरयामास गगनं गां तथैव दिशो दशः॥१८॥

ॐ ऐं क्लीं ग्लौं दारायै नमः स्वाहा॥१८॥

ततः काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताडयत्।
कराभ्यां तन्निनादेन प्राक्-स्वनास्ते तिरोहिताः॥१९॥

ॐ ऐं क्लीं प्लीं दार-कार्यऽरि-नाशिन्यै नमः स्वाहा॥१९॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अट्टाट्ट-हासमशिवं शिव-दूती चकार ह।
तैः शब्दैरसुरास्त्रेषुः शुम्भः कोपं परं ययौ॥२०॥

ॐ ऐं क्लीं ह्रौं घोरायै नमः स्वाहा॥२०॥

॥ शुम्भ-उवाच ॥

दुरात्मँस्तिष्ठ तिष्ठेति व्याजहाराम्बिका यदा।
तदा जयेत्यभिहितं देवैराकाश-संस्थितैः॥२१॥

ॐ ऐं क्लीं ह्स्त्रां दाड़िमी-वृक्ष-वासिन्यै नमः स्वाहा॥२१॥

॥ ऋषिरुवाच ॥

शुम्भेनागत्य या शक्तिर्मुक्ता ज्वालातिभीषणा।
आयान्ती वह्नि-कूटाभा सा निरस्ता महोल्कया॥२२॥

ॐ ऐं क्लीं स्हौं वसुधायै नमः स्वाहा॥२२॥

सिंह-नादेन शुंम्भस्य व्याप्तं लोक-त्रयान्तरम्।
निर्घात-निःस्वनो घोरो जितवानवनी-पते॥२३॥

ॐ ऐं क्लीं ल्लूं दाड़िमी-वक्ष-रूपायै नमः स्वाहा॥२३॥

शुम्भ-मुक्ताञ्छरान् देवी शुम्भस्तत्-प्रहिताँश्छरान्।
चिच्छेद स्व-शरैरुग्रैः शतशोऽथ सहस्रशः॥२४॥

ॐ ऐं क्लीं श्रीं दाडिमी-वन-वासिन्यै नमः स्वाहा॥२४॥

ततः सा चण्डिका क्रुद्धा शूलेनाभि-जघान तम्।
त तदाभिहतो भूमौ मूर्छितो निपपात ह॥२५॥

ॐ ऐं क्लीं च्रूं दक्षिणायै नमः स्वाहा॥२५॥

ततो निशुम्भः संप्राप्य चेतनामात्त-कार्मुकः।
आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा॥२६॥

ॐ ऐं क्लीं वीं सदा-धनायै नमः स्वाहा॥२६॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पुनश्च कृत्वा बाहूनामयुतं दनुजेश्वरः।
चक्रायुधेन दितिजश्छादयामास चण्डिकाम्॥२७॥
ॐ ऐं क्लीं क्ष्लूं वीं सदा-धनायै नमः स्वाहा॥२७॥

ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दुर्गर्ति-नाशिनी।
चिच्छेद तानि चक्राणि स्व-शरैः सायकाँश्च तान्॥२८॥
ॐ ऐं क्लीं श्लूं धिये नमः स्वाहा॥२८॥

ततो निशुम्भो वेगेन गदामादाय चण्डिकाम्।
अभ्यधावत वै हन्तुं दैत्य-सेना-समावृतः॥२९॥
ॐ ऐं क्लीं क्रूं दक्षिणा-रूप-धारिण्यै नमः स्वाहा॥२९॥

तस्यापतत एवाशु गदां चिच्छेद चण्डिका।
खड्गेन शित-धारेण स च शूलं समाददे॥३०॥
ॐ ऐं क्लीं क्रां कामेश्वर्यै नमः स्वाहा॥३०॥

शूल-हस्तं समायान्तं निशुम्भममरार्दनम्।
हृदि विव्याध शूलेन वेगाविद्धेन चण्डिका॥३१॥
ॐ ऐं क्लीं ह्रौं दश-कन्यायै नमः स्वाहा॥३१॥

भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्निःसृतोऽपरः।
महा-बलो महा-वीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वदन्॥३२॥
ॐ ऐं क्लीं क्रां महातपायै नमः स्वाहा॥३३॥

तस्य निष्क्रामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः।
शिरश्चिच्छेद खड्गेन ततोऽसावपतद् भुवि॥३३॥
ॐ ऐं क्लीं स्क्ष्लीं दक्ष-पुत्र्यै नमः स्वाहा॥३३॥

ततः सिंहश्चखादोग्रं दंष्ट्रा क्षुण्ण-शिरोधरान्।
असुराँस्ताँस्तथा काली शिव-दूती तथापरान्॥३४॥
ॐ ऐं क्लीं म्रूं अघोराय नमः स्वाहा॥३४॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कौमारी शक्ति-निर्भिन्नाः केचिन्नेशुर्महासुराः।
ब्रह्माणी-मन्त्र-पूतेन तोयेनान्ये निराकृताः ॥३५॥

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं दक्ष-गोत्रायै नमः स्वाहा॥३५॥

माहेश्वरी-त्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्तथापरे।
वाराही-तुण्ड-घातेन केचिच्चूर्णी-कृता भुवि॥३६॥

ॐ ऐं क्लीं ब्लूं खड्ग-हस्तायै नमः स्वाहा॥३६॥

खण्डं खण्डं च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः।
वज्रेण चैन्द्री हस्ताग्र-विमुक्तेन तथाऽपरे॥३७॥

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं दक्ष-सुतायै नमः स्वाहा॥३७॥

केचिद् विनेशुरसुराः केचिन्नष्टा महाहवात्।
भक्षिताश्चापरे काली शिव-दूती मृगाधिपैः॥३८॥

ॐ ऐं क्लीं फ्रूं दक्ष-मात्रे नमः स्वाहा॥३८॥

॥ ॐ जय जय श्रीमार्कण्डेय-उत्तर-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये सत्या सन्तु (यजमानस्य कामाः) श्रीजगदम्बार्पणमस्तु॥

॥ वैदिक आहुति ॥

एक उल्टे अखण्ड पानपत्ते पर शाकल्य, घी में भिगोकर १ कमलगट्टा, १ सुपारी, २ लौंग, १ छोटी इलायची, गूगल शहद ये सब वस्तुएँ स्रुची में रखकर खड़े होकर निम्न मन्त्र बोले (इस अध्याय में बेल-फल व मैनफल विशेष है।) -

ॐ प्राणाय स्वाहा पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा॥ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनीम् ॐ स्वाहा॥२२।२३॥

बाद में स्रुवे से पाँच बार घी छोड़ते हुए इस मन्त्र का उच्चारण करें -

ॐ घृतं घृतपावानः पिबतव्वसां वसा पावानः। पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽ आदिशो व्विदिशऽ उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥ (यजु. सं. अ. ६।१९ मन्त्र)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। तान्त्रिक आहुति ।।

ॐ क्लीं जयन्ती साङ्गायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै भैरव्यै तारा–देव्यै महाऽऽहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए आहुति देवे, सामग्री वैदिक आहुति के समान ही है।

।। नवमोऽध्यायः ।।

।। उवाच ३ ।। श्लोकाः ३८ ।। एवमादितः ५६७ ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ दशमोऽध्याय

।। ध्यानम् ।।

ॐ उत्तप्त-हेम-रुचिरां रवि-चन्द्र-वह्नि-
नेत्रां धनुश्शर-युतांकुश-पाश-शूलम् ।
रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिव-शक्ति-रूपां,
कामेश्वरीं हृदि भजामिधृतेन्दु-लेखाम् ।।

।। ऋषिरुवाच ।।

निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राण-सम्मितम् ।
हन्यमानं बलं चैव शुम्भः कुद्धोऽब्रवीद्वचः ।।१।।
ॐ ऐं क्लीं श्रीं प्रसन्न-काल्यै नमः स्वाहा ।।१।।

।। शुम्भ उवाच ।।

बलावलेपाद् दुष्टे! त्वं मा दुर्गे! गर्वमावह ।
अन्येषां बलमाश्रित्य युद्ध्यसे याति-मानिनी ।।२।।
ॐ ऐं क्लीं म्लूं तपस्विन्यै नमः स्वाहा ।।२।।

।। देव्युवाच ।।

एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा?
पश्यैता दुष्ट! मय्येव विशन्त्यो मद्-विभूतयः ।।३।।
ॐ ऐं क्लीं श्रौं दक्ष-यज्ञ-विनाशिन्यै नमः स्वाहा ।।३।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। ऋषिरुवाच ।।

ततः समस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणी-प्रमुखा लयम्।
तस्या देव्यास्तनौ जग्मुरेकैवासीत् तदाम्बिका ।।४ ।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं द्वार-धात्र्यै नमः स्वाहा ।।४।।

।। देव्युवाच ।।

अहं विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्यदा स्थिता।
तत् संहृतं मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव ।।५ ।।

ॐ ऐं क्लीं ग्लीं दक्ष-यज्ञान्त-कारिण्यै नमः स्वाहा ।।५।।

।। ऋषिरुवाच ।।

ततः प्रववृते युद्धं देव्याः शुम्भस्य चोभयोः।
पश्यतां सर्व-देवानामसुराणां च दारुणम् ।।६ ।।

ॐ ऐं क्लीं हं द्वार-देश-निवासिन्यै नमः स्वाहा ।।६।।

शर-वर्षैः शितैः शस्त्रैस्तथास्त्रैश्चैव दारुणैः।
तयोर्युद्धमभूद् भूयः सर्व-लोक-भयङ्करम् ।।७ ।।

ॐ ऐं क्लीं ऐं दक्ष-प्रसूत्यै नमः स्वाहा ।।७।।

दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचे यान्यथाम्बिका।
बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत् प्रतीघात-कर्तृभिः ।।८ ।।

ॐ ऐं क्लीं हूं द्वार-संस्थायै नमः स्वाहा ।।८।।

मुक्तानि तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी।
बभञ्ज लीलयैवोग्र-हुङ्कारोच्चारणादिभिः ।।९ ।।

ॐ ऐं क्लीं द्रौं दक्षेज्जायै नमः स्वाहा ।।९।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ततः शर-शतैर्देवीमाच्छादयत सोऽसुरः।
सापि तत् कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः ॥१०॥
ॐ ऐं क्लीं श्रीं द्वार-संस्थितायै नमः स्वाहा ॥१०॥

छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा शक्तिमथाददे।
चिच्छेद देवी चक्रेण तामप्यस्य करे स्थिताम् ॥११॥
ॐ ऐं क्लीं त्रूं दक्ष-वंशके-पावन्यै नमः स्वाहा ॥११॥

ततः खड्गमुपादाय शत-चन्द्रं च भानु-मत्।
अभ्यधावत् तदा देवीं दैत्यानामधिपेश्वरः ॥१२॥
ॐ ऐं क्लीं ब्रूं दक्षात्मजायै नमः स्वाहा ॥१२॥

तस्यापतत एवाशु खड्गं चिच्छेद चण्डिका।
धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणैश्चर्म चार्क करामलम् ॥१३॥
ॐ ऐं क्लीं फ्रें द्वार-रूपायै नमः स्वाहा ॥१३॥

(अश्वाँश्च पातयामास रथं सारथिना सह)
हताश्वः स तदा दैत्यश्छिन्न-धन्वा विसारथिः।
जग्राह मुद्गरं घोरमम्बिका-निधनोद्यतः ॥१४॥
ॐ ऐं क्लीं ह्वां दक्ष-सूनवे नमः स्वाहा ॥१४॥

चिच्छेदापततस्तस्य मुद्गरं निशितैः शरैः।
तथापि सोऽभ्यधावत्तां मुष्टिमुद्यम्य वेगवान् ॥१५॥
ॐ ऐं क्लीं जुं द्वार-वासिन्यै नमः स्वाहा ॥१५॥

स मुष्टिं पातयामास हृदये दैत्य-पुङ्गवः।
देव्यास्तं चाऽपि सा देवी तलेनोरस्य ताडयत् ॥१६॥
ॐ ऐं क्लीं सौं दक्षजायै नमः स्वाहा ॥१६॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तल-प्रहाराभिहतो निपपात मही-तले।
स दैत्य-राजः सहसा पुनरेव तथोत्थितः॥१७॥

ॐ ऐं क्लीं स्लूं द्वार-पाल-प्रियायै नमः स्वाहा॥१७॥

उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैर्देवीं गगनमास्थितः।
तत्राऽपि सा निराधारा युयुधे तेन चण्डिका॥१८॥

ॐ ऐं क्लीं प्रें दक्ष-जातिकायै नमः स्वाहा॥१८॥

नियुद्धं खे तदा दैत्यश्चण्डिका च परस्परम्।
चक्रतुः प्रथमं सिद्ध-मुनि-विस्मय-कारकम्॥१९॥

ॐ ऐं क्लीं ह्स्वां दक्षिणाचार-संसिद्धायै नमः स्वाहा॥१९॥

ततो नियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनाम्बिका सह।
उत्पात्य भ्रामयामास चिक्षेप धरणी-तले॥२०॥

ॐ ऐं क्लीं प्रीं दक्ष-जन्मने नमः स्वाहा॥२०॥

(स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य मुष्टिमुद्यम्य वेगितः।)
अभ्यधावत दुष्टात्मा चण्डिका-निधनेच्छया।
तमायान्तं ततो देवी सर्व-दैत्य-जनेश्वरम्॥२१॥

ॐ ऐं क्लीं फ्रां दक्ष-देह-समुद्भवायै नमः स्वाहा॥२१॥

जगत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि।
स गतासुः पपातोर्व्यां देवी-शूलाग्र-विक्षतः॥२२॥

ॐ ऐं क्लीं क्रीं दक्षिणाचार-संसिद्धायै नमः स्वाहा॥२२॥

चालयन् सकलां पृथ्वीं साब्धि द्वीपां स-पर्वताम्।
ततः प्रसन्नमखिलं हते तस्मिन् दुरात्मनि॥२३॥

ॐ ऐं क्लीं श्रीं दुर्गमायै नमः स्वाहा॥२३॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जगत् स्वास्थ्यमतीवाप निर्मलं चाभवन्नभः।
उत्पात-मेघाः सोल्का ये प्रागासंस्ते शमं ययुः॥२४॥

ॐ ऐं क्लीं क्रां दुर्गम-ध्यानायै नमः स्वाहा॥२४॥

सरितो मार्ग-वाहिन्यस्तथासँस्तत्र पातिते।
ततो देवगणाः सर्वे हर्षनिर्भरमानसाः॥२५॥

ॐ ऐं क्लीं सः दुर्गभात्म-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा॥२५॥

बभूवुर्निहते तस्मिन्गन्धर्वा ललितं जगुः।
अवादयँस्तथैवान्ये ननृतुश्चाप्सरो-गणाः॥२६॥

ॐ ऐं क्लीं क्लीं दुर्गमागम-संधानायै नमः स्वाहा॥२६॥

ववुः पुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽभूद्दिवाकरः।
जज्वलुश्चाग्नयः शान्ताः शान्तादिग्जनि-तस्वनाः॥२७॥

ॐ ऐं क्लीं स्हलीं दोष-हरायै नमः स्वाहा॥२७॥

॥ ॐ जय जय श्रीमार्कण्डेय-उत्तर-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये सत्या सन्तु (यजमानस्य कामाः) श्रीजगदम्बार्पणमस्तु॥

॥ वैदिक आहुति ॥

एक उल्टे अखण्ड पानपत्ते पर शाकल्य, घी में भिगोकर १ कमलगट्टा, १ सुपारी, २ लौंग, १ छोटी इलायची, गूगल शहद ये सब वस्तुएँ स्रुची में रखकर खड़े होकर निम्न मन्त्र बोले (इस अध्याय में मैनफल व बेल-फल विशेष है।) -

ॐ प्राणाय स्वाहा पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा॥ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॐ स्वाहा॥२२।२३॥

बाद में स्रुवे से पाँच बार घी छोड़ते हुए इस मन्त्र का उच्चारण करें -

ॐ घृतं घृतपावानः पिबतवसां वसा पावानः। पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽ आदिशो विदिशऽ उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥ (यजु. सं. अ. ६।१९ मन्त्र)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। तान्त्रिक आहुति ।।

क्लीं जयन्ती साङ्गायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै भैरव्यै देव्यै महाऽऽहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए आहुति देवे, सामग्री वैदिक आहुति के समान ही है।

॥ दशमोऽध्यायः ॥

॥ उवाच ६ ॥ श्लोकाः २७ ॥ एवमादितः ५६४ ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथैकादशोऽध्यायः ।।

बालरविद्युतिमिन्दुकिरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रय युक्ताम्।
स्मेरमुखीं वरदां कुश पाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम्।।

।। ऋषिरुवाच ।।

देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे,
सेन्द्राः सुरा वह्नि-पुरोगमास्ताम्।
कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्ट-लाभाद्,
विकाशि-वक्त्राब्ज-विकाशिताशाः ।।1 ।।
ॐ ऐं क्लीं श्रौं दुर्गमाचार-पूजितायै नमः स्वाहा ।।१।।

।। देवा ऊचुः ।।

देवि! प्रपन्नार्ति-हरे प्रसीद,
प्रसीदमातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि! पाहि विश्वं,
त्वमीश्वरी देवि! चराचरस्य।।२।।
ॐ ऐं क्लीं व्रें दक्षिणाचार-मोक्षाप्त्यै नमः स्वाहा ।।२।।

आधार-भूता जगतस्त्वमेका,
मही-स्वरूपेण यतः स्थितासि।
अपां स्वरूप-स्थितया त्वयैत-
दाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्य-वीर्ये।।३।।
ॐ ऐं क्लीं इं दक्षिणाचार-वंदितायै नमः स्वाहा ।।३।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्त-वीर्या,
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्,
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्ति-हेतुः ॥४॥

ॐ ऐं क्लीं क्रूं दुर्ग-नाड्यां रोहिणायै नमः स्वाहा॥४॥

विद्याः समस्तास्तव देवि! भेदाः,
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्!
का ते स्तुतिः स्तव्य-परा परोक्तिः ॥५॥

ॐ ऐं क्लीं श्रीं दीनायै नमः स्वाहा॥५॥

सर्व-भूता यदा देवी स्वर्ग-मुक्ति-प्रदायिनी।
त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः ॥६॥

ॐ ऐं क्लीं ल्लीं दनुजान्त-कर्यै नमः स्वाहा॥६॥

सर्वस्य बुद्धि-रूपेण जनस्य हृदि संस्थिते।
स्वर्गापवर्गदे देवि! नारायणि! नमोऽस्तु ते॥७॥

ॐ ऐं क्लीं प्रें दरी-कृत-तपस्यायै नमः स्वाहा॥७॥

कला-काष्ठादि-रूपेण परिणाम-प्रदायिनि!
विश्वस्योपरतौ शक्ते! नारायणि! नमोऽस्तु ते॥८॥

ॐ ऐं क्लीं सौं दनु-सन्तान-दारिण्यै नमः स्वाहा॥८॥

सर्व-मङ्गल-माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिके!
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि! नारायणि! नमोऽस्तु ते॥९॥

ॐ ऐं क्लीं श्रूं बुद्ध्यै नमः स्वाहा॥९॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सृष्टि-स्थिति-विनाशानां शक्ति-भूते सनातनि!
गुणाश्रये गुणमये नारायणि! नमोऽस्तु ते ॥१०॥

ॐ ऐं क्लीं क्लीं शक्त्यै नमः स्वाहा ॥१०॥

शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे !
सर्वस्यार्त्ति-हरे देवि! नारायणि! नमोऽस्तु ते ॥११॥

ॐ ऐं क्लीं स्क्लीं त्र्यम्बक्यै नमः स्वाहा ॥११॥

हंस-युक्त-विमानस्थे ब्रह्माणी-रूप-धारिणि!
कौशाम्भः-क्षरिके देवि! नारायणि! नमोऽस्तु ते ॥१२॥

ॐ ऐं क्लीं प्रीं गुणाश्रयायै नमः स्वाहा ॥१२॥

त्रिशूल-चन्द्राहि-धरे महा-वृषभ-वाहिनि!
माहेश्वरी-स्वरूपेण नारायणि! नमोऽस्तु ते ॥१३॥

ॐ ऐं क्लीं स्ह्रीं ब्रह्माण्यै नमः स्वाहा ॥१३॥

मयूर-कुक्कुट-वृते महा-शक्ति-धरेऽनघे!
कौमारी-रूप-संस्थाने नारायणि! नमोऽस्तु ते ॥१४॥

ॐ ऐं क्लीं स्तौं माहेश्वर्यै नमः स्वाहा ॥१४॥

शङ्ख-चक्र-गदा-शार्ङ्ग-गृहीत-परमायुधे !
प्रसीद वैष्णवी-रूपे नारायणि! नमोऽस्तु ते ॥१५॥

ॐ ऐं क्लीं जीं कौमार्यै नमः स्वाहा ॥१५॥

गृहीतोग्र-महा-चक्रे दंष्ट्रोद्धृत-वसुन्धरे!
वराह-रूपिणि! शिवे! नारायणि! नमोऽस्तु ते ॥१६॥

ॐ ऐं क्लीं क्रूं ऐन्द्र्यै नमः स्वाहा ॥१६॥

नृसिंह-रूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान् कृतोद्यमे।
त्रैलोक्य-त्राण-सहिते नारायणि! नमोऽस्तु ते ॥१७॥

ॐ ऐं क्लीं क्रूं शिव-दूत्यै नमः स्वाहा ॥१७॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

किरीटिनि महावज्रे सहस्र-नयनोज्ज्वले!
वृत्र-प्राण-हरे चैन्द्रि! नारायणि! नमोऽस्तु ते॥१८॥

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं चामुण्डायै नमः स्वाहा॥१८॥

शिव-दूती-स्वरूपेण हत-दैत्य-महाबले!
घोर-रूपे महा-रावे नारायणि! नमोऽस्तु ते॥१९॥

ॐ ऐं क्लीं श्रूं दुर्गायै नमः स्वाहा॥१९॥

दंष्ट्रा-कराल-वदने शिरो-माला-विभूषणे!
चामुण्डे! मुण्ड-मथने! नारायणि! नमोऽस्तु ते॥२०॥

ॐ ऐं क्लीं इं कात्यायन्यै नमः स्वाहा॥२०॥

लक्ष्मि! लज्जे! महा-विद्ये! श्रद्धे! पुष्टि!स्वधे! ध्रुवे!
महा-रात्रि महा-विद्ये नारायणि! नमोऽस्तु ते॥२१॥

ॐ ऐं क्लीं जुं भद्र-काल्यै नमः स्वाहा॥२१॥

मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि!
नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि! नमोऽस्तु ते॥२२॥

ॐ ऐं क्लीं त्रैं घण्टायै नमः स्वाहा॥२२॥

सर्वतः पाणि-पादां ते सर्वतोऽक्षि-शिरो-मुखे!
सर्वतः श्रवण-घ्राणे नारायणि! नमोऽस्तु ते॥२३॥

ॐ ऐं क्लीं द्रूँ चण्डिकायै नमः स्वाहा॥२३॥

सर्व-स्वरूपे सर्वेशे सर्व-शक्ति-समन्विते!
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि! दुर्गे देवि! नमोऽस्तु ते॥२४॥

ॐ ऐं क्लीं ह्रौं रोग-हरायै नमः स्वाहा॥२४॥

एतत् ते वदनं सौम्यं लोचन-त्रय-भूषितम्।
पातु नः सर्व-भीतिभ्यः कात्यायनि! नमोऽस्तु ते॥२५॥

ॐ ऐं क्लीं क्लीं अम्बिकायै नमः स्वाहा॥२५॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ज्वाला-करालमत्युग्रमशेषासुर-सूदनम्।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि! नमोऽस्तु ते॥२६॥

ॐ ऐं क्लीं सूं जगदम्बायै नमः स्वाहा॥२६॥

हिनस्ति दैत्य-तेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्!
सा घण्टा पातु नो देवि! पापेभ्यो नः सुतानिव॥२७॥

ॐ ऐं क्लीं श्व्रं विश्वेश-वन्द्यायै नमः स्वाहा॥२७॥

असुराऽसृग्-वसा-पङ्क-चर्चितस्ते करोज्ज्वलः।
शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके! त्वां नता वयम्॥२८॥

ॐ ऐं क्लीं ब्रूं देव्यै नमः स्वाहा॥२८॥

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा,
ददासि कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां,
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति॥२९॥

ॐ ऐं क्लीं स्फ्रूं विश्वार्ति-हारिण्यै नमः स्वाहा॥२९॥

एतत्-कृतं यत् कदनं त्वयाऽद्य,
धर्मद्विषां देवि! महासुराणाम्।
रूपैरनैकैर्बहुधाऽऽत्म-मूर्तिं,
कृत्वाऽम्बिके! तत्प्रकरोति कान्या॥३०॥

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं दक्षिणाचार-शरणायै नमः स्वाहा॥३०॥

विद्यासु शास्त्रेषु विवेक-दीपे-
ष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या।
ममत्व-गर्तेऽति-महान्धकारे,
विभ्रामयत्येतदतीव-विश्वम्॥३१॥

ॐ ऐं क्लीं लं वरदायै नमः स्वाहा॥३१॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

रक्षांसि यत्रोग्र-विषाश्च नागा,
यत्रारयो दस्यु-बलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाब्धि-मध्ये,
तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्॥३२॥

ॐ ऐं क्लीं ह्सौं दक्षिणाचार-वन्दितायै नमः स्वाहा॥३२॥

विश्वेश्वरि! त्वं परिपासि विश्वं,
विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेश-वन्द्या भवती भवन्ति,
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्ति-नम्राः॥३३॥

ॐ ऐं क्लीं सें अखिलेश्वर्यै नमः स्वाहा॥३३॥

देवि! प्रसीद परि-पालय नोऽरिभीते-
र्नित्यं यथासुर-वधादधुनैव सद्यः।
पापानि सर्व-जगतां प्रशमं नयाशु,
उत्पात-पाक-जनितांश्च महोपसर्गान्॥३४॥

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं शुम्भ-दैत्य-विमर्दिन्यै नमः स्वाहा॥३४॥

प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि! विश्वार्तिहारिणि!
त्रैलोक्य-वासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव॥३५॥

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं निशुम्भासुर-नाशिन्यै नमः स्वाहा॥३५॥

॥ देव्युवाच ॥

वरदाऽहं सुर-गणा वरं यन्मनसेच्छथ।
तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारकम्॥३६॥

ॐ ऐं क्लीं विं विन्ध्याचल-वासिन्यै नमः स्वाहा॥३६॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

॥ देवा ऊचुः ॥

सर्वा-बाधा-प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि!
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्-वैरि-विनाशनम् ॥३७॥

ॐ ऐं क्लीं प्लीं रौद्र-रूपिण्यै नमः स्वाहा ॥३७॥

॥ देव्युवाच ॥

वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे।
शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ ॥३८॥

ॐ ऐं क्लीं क्ष्म्क्लीं रक्त-दन्तिकायै नमः स्वाहा ॥३८॥

नन्द-गोप-गृहे जाता यशोदा-गर्भ-सम्भवा।
ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचल-निवासिनी ॥३९॥

ॐ ऐं क्लीं त्स्त्रां स्तुत्यै नमः स्वाहा ॥३९॥

पुनरप्यति-रौद्रेण रूपेण पृथिवी-तले।
अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्ताँस्तु दानवान् ॥४०॥

ॐ ऐं क्लीं प्रं अयोनिजायै नमः स्वाहा ॥४०॥

भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान् वैप्रचित्तान् महासुरान्।
रक्ता-दन्ता भविष्यन्ति दाडिमी-कुसुमोपमाः ॥४१॥

ॐ ऐं क्लीं क्लौं शताक्ष्यै नमः स्वाहा ॥४१॥

ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्य-लोके च मानवाः।
स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति सततं रक्त-दन्तिकाम् ॥४२॥

ॐ ऐं क्लीं स्रूं पालिन्यै नमः स्वाहा ॥४२॥

भूयश्च शत-वार्षिक्यामनावृष्ट्यामनम्भसि।
मुनिभिः संस्तुता भूमौ सम्भविष्याम्ययोनिजा ॥४३॥

ॐ ऐं क्लीं क्ष्मां शाकम्भर्यै नमः स्वाहा ॥४३॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन्।
कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षी एव मां ततः ॥४४॥

ॐ ऐं क्लीं स्तूं दुर्गायै नमः स्वाहा॥४४॥

ततोऽहमखिलं लोकमात्म-देह-समुद्भवैः।
भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः प्राण-धारकैः॥४५॥

ॐ ऐं क्लीं स्ह्रीं मुनीनां त्राण-कारिण्यै नमः स्वाहा॥४५॥

शाकम्भरीति विख्याता तदा यास्याम्यहं भुवि।
तत्रैव च नाशयिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम्॥४६॥

ॐ ऐं क्लीं प्रीं भीमायै नमः स्वाहा॥४६॥

दुर्गा देवी च विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति।
पुनश्चायं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले॥४७॥

ॐ ऐं क्लीं श्रौं महा-बाधा-विनाशिन्यै नमः स्वाहा॥४७॥

रक्षांसि भक्षयिष्यामि मुनीनां त्राण-कारणात्।
तदा मां मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्यानम्र-मूर्तयः॥४८॥

ॐ ऐं क्लीं श्रां भ्रामर्यै नमः स्वाहा॥४८॥

भीमा देवी च विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति।
यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये महा बाधां करिष्यति॥४९॥

ॐ ऐं क्लीं ओं सर्व-बाधा-प्रशमन्यै नमः स्वाहा॥४९॥

तदाऽहं भ्रामरं रूपं कृत्वाऽसंख्येय-षट्-पदम्।
त्रैलोक्यस्य हितार्थाय नाशयिष्यामि महासुरम्॥५०॥

ॐ ऐं क्लीं श्रीं मधु-कैटभ-नाशिन्यै नमः स्वाहा॥५०॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(भ्रामरी चैव मां लोकास्तदा तोष्यन्ति सर्वतः।)
इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति ।
तदा तदाऽवतीर्याऽहं करिष्याम्यरि-संक्षयम् ॥५१॥

ॐ ऐं क्लीं म्लीं अरि-नाशिन्यै नमः स्वाहा॥५१॥

॥ ॐ जय जय श्रीमार्कण्डेय-उत्तर-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये सत्या सन्तु (यजमानस्य कामाः) श्रीजगदम्बार्पणमस्तु॥

॥ वैदिक आहुति ॥

एक उल्टे अखण्ड पानपत्ते पर शाकल्य, घी में भिगोकर १ कमलगट्टा, १ सुपारी, २ लौंग, १ छोटी इलायची, गूगल शहद ये सब वस्तुएँ स्रुची में रखकर खड़े होकर निम्न मन्त्र बोले (इस अध्याय में पुष्प व पायस विशेष है!) –

ॐ प्राणाय स्वाहा पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा॥ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनीम् ॐ स्वाहा॥२२।२३॥

बाद में स्रुवे से पाँच बार घी छोड़ते हुए इस मन्त्र का उच्चारण करें –

ॐ घृतं घृतपावानः पिबतव्वसां वसा पावानः। पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽ आदिशो व्विदिशऽ उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥ (यजु. सं. अ. ६।१९ मन्त्र)

॥ तान्त्रिक आहुति॥

क्लीं जयन्ती साङ्गायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै लक्ष्मी-बीजाधिष्ठात्र्यै गरुड़-वाहिन्यै नारायणी-देव्यै नमः महाऽऽहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए आहुति देवे, सामग्री वैदिक आहुति के समान ही है।

॥ एकादशोऽध्यायः॥

॥ उवाच ५॥ श्लोकाः ५१॥ एवमादितः ६४५ ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

॥ अथ द्वादशोऽध्यायः ॥

॥ ध्यानम् ॥

ॐ विद्युद्दाम-सम-प्रभां मृगपति-स्कंध-स्थितां भीषणां,
कन्याभिः करवाल-खेट-विलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्र-गदासि-खेट-विशिखाँश्चापं गुणं तर्जनीम्,
विभ्राणामनलात्मिकां शशि-धरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥

॥ देव्युवाच ॥

एभिः स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः।
तस्याऽहं सकलां बाधां नाशयिष्याम्यसंशयम्॥१॥

ॐ ऐं क्लीं क्रूं भय-नाशिन्यै नमः स्वाहा॥१॥

मधु-कैटभ-नाशं च महिषासुर-घातनम्।
कीर्तयिष्यन्ति ये तद्वद् क्षयं शुम्भ-निशुम्भयोः॥२॥

ॐ ऐं क्लीं श्रूं स्वस्त्ययन्यै नमः स्वाहा॥२॥

अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैक-चेतसः।
श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम्॥३॥

ॐ ऐं क्लीं प्रां महामारी-हर्यै नमः स्वाहा॥३॥

न तेषां दुष्कृतं किञ्चिद् दुष्कृतोत्था न चापदः।
भविष्यति न दारिद्र्यं न चैवेष्ट-वियोजनम्॥४॥

ॐ ऐं क्लीं फें बलि-प्रियायै नमः स्वाहा॥४॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शत्रुतो न भयं तस्य दस्युतो वा न राजतः।
न शस्त्रानल-तोयौघात् कदाचित् संभविष्यति॥५॥

ॐ ऐं क्लीं हं शरत्-पूज्यायै नमः स्वाहा॥५॥

तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं समाहितैः।
श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं हि तत्॥६॥

ॐ ऐं क्लीं चें निर्भय-प्रदायै नमः स्वाहा॥६॥

उपसर्गानशेषाँस्तु महा-मारी-समुद्भवान्।
तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम॥७॥

ॐ ऐं क्लीं सूं रिपु-नाशिन्यै नमः स्वाहा॥७॥

यत्रैतत् पठ्यते सम्यङ्नित्य-मायतने मम।
सदा न तद् विमोक्ष्यामि सान्निध्यं तत्र मे स्थितम्॥८॥

ॐ ऐं क्लीं प्रीं ग्रह-पीडा-हर्यै नमः स्वाहा॥८॥

बलि-प्रदाने पूजायामग्नि-कार्ये महोत्सवे।
सर्वं ममैतच्चरितमुच्चार्यं श्राव्यमेव च॥९॥

ॐ ऐं क्लीं ब्लूं उपसर्ग-प्रशमन्यै नमः स्वाहा॥९॥

जानताऽजानता वापि बलि-पूजां तथा कृताम्।
प्रतीक्षिष्याम्यहं प्रीत्या वह्नि-होमं तथा कृतम्॥१०॥

ॐ ऐं क्लीं आं बालानां शान्ति-कारिण्यै नमः स्वाहा॥१०॥

शरत् काले महा-पूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्ति-समन्वितः॥११॥

ॐ ऐं क्लीं औं दुर्वृत्त-नाशिन्यै नमः स्वाहा॥११॥

सर्वा-बाधा-विनिर्मुक्तो धन-धान्य-सुतान्वितः।
मनुष्यो मत्-प्रसादेन भविष्यति न संशयः॥१२॥

ॐ ऐं क्लीं हीं देवि! लोक-प्रदायिन्यै नमः स्वाहा॥१२॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः।
पराक्रमं च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान्॥१३॥

ॐ ऐं क्लीं क्रीं विप्र-प्रियायै नमः स्वाहा॥१३॥

रिपवः संक्षयं यान्ति कल्याणं चोपपद्यते।
नन्दते च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम शृण्वताम्॥१४॥

ॐ ऐं क्लीं द्रां मन्त्र-प्रियायै नमः स्वाहा॥१४॥

शान्ति-कर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्न-दर्शने।
ग्रह-पीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम॥१५॥

ॐ ऐं क्लीं श्रीं पाप-हरायै नमः स्वाहा॥१५॥

उपसर्गाः शमं यान्ति ग्रहपीडाश्च दारुणाः।
दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सु-स्वप्नमुपजायते॥१६॥

ॐ ऐं क्लीं स्लीं अभयायै नमः स्वाहा॥१६॥

बाल-ग्रहाभि-भूतानां बालानां शान्ति-कारकम्।
संघात-भेदे च नृणां मैत्री-करणमुत्तमम्॥१७॥

ॐ ऐं क्लीं क्लीं देव-वन्दितायै नमः स्वाहा॥१७॥

दुर्वृत्तानामशेषाणां बल-हानि-करं परम्।
रक्षो-भूत-पिशाचानां पठनादेव नाशनम्॥१८॥

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं बंधन-मोचन्यै नमः स्वाहा॥१८॥

सर्वं ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधि-कारकम्।
पशु-पुष्पार्घ्य-धूपैश्च गन्ध-दीपैस्तथोत्तमैः॥१९॥

ॐ ऐं क्लीं ब्लीं पतितोद्धार-कारिण्यै नमः स्वाहा॥१९॥

विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम्।
अन्यैश्च विविधैर्भोगैः प्रदानैर्वत्सरेण या॥२०॥

ॐ ऐं क्लीं त्रों संकट-हारिण्यै नमः स्वाहा॥२०॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रीतिर्मे क्रियते साऽस्मिन् सकृदुच्चरिते श्रुते।
श्रुतं हरति पापानि तथाऽऽरोग्यं प्रयच्छति ॥२१॥

ॐ ऐं क्लीं ओं दस्युवर्ग विशानिन्यै नमः स्वाहा ॥२१॥

रक्षां करोति भूतेभ्यो जन्मनां कीर्तनं मम।
युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्ट-दैत्य-निबर्हणम् ॥२२॥

ॐ ऐं क्लीं श्रौं ज्ञानदायै नमः स्वाहा ॥२२॥

तस्मिञ्छ्रुते वैरि-कृतं भयं पुंसां न जायते।
युष्माभिः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः ॥२३॥

ॐ ऐं क्लीं ऐं भगवत्यै नमः स्वाहा ॥२३॥

ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु प्रयच्छन्ति शुभां मतिम्।
अरण्ये प्रान्तरे वापि दावाग्नि-परिवारितः ॥२४॥

ॐ ऐं क्लीं द्रूं दैत्य-नाशिन्यै नमः स्वाहा ॥२४॥

दस्युभिर्वा वृतः शून्ये गृहीतो वापि शत्रुभिः।
सिंहव्याघ्रानुयातो वा वने वा वन-हस्तिभिः ॥२५॥

ॐ ऐं क्लीं ल्लूं रिपूणां भय-दायिन्यै नमः स्वाहा ॥२५॥

राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो बध्यो बन्ध-गतोऽपि वा।
आघूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे ॥२६॥

ॐ ऐं क्लीं औं नित्यायै नमः स्वाहा ॥२६॥

पतत्सु चापि शस्त्रेषु संग्रामे भृश-दारुणे।
सर्वा-बाधासु घोरासु वेदनाभ्यर्दितोऽपि वा ॥२७॥

ॐ ऐं क्लीं चें महामारी-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा ॥२७॥

स्मरन्ममैतच्चरितं नरो मुच्येत सङ्कटात्।
मम प्रभावात् सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा ॥२८॥

ॐ ऐं क्लीं हूं अजायै नमः स्वाहा ॥२८॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

॥ ऋषिरुवाच ॥

दूरादेव पलायन्ते स्मरतश्चरितं मम।
उक्त्वैवं सा भगवती चण्डिका चण्ड-विक्रमा॥२६॥

ॐ ऐं क्लीं ब्रीं मेधायै नमः स्वाहा॥२९॥

पश्यतामेव देवानां तत्रैवान्तरधीयत।
तेऽपि देवा निरातङ्काः स्वाधिकारान् यथा पुरा॥३०॥

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं परमेश्वर्यै नमः स्वाहा॥३०॥

यज्ञ-भाग-भुजः सर्वे चक्रुर्विनिहतारयः।
दैत्याश्च देव्या निहते शुम्भे देव-रिपौ युधि॥३१॥

ॐ ऐं क्लीं श्रीं भोग-स्वर्गापवर्गदायै नमः स्वाहा॥३१॥

जगद्-विध्वंसिनि तस्मिन् महोग्रेऽतुल-विक्रमे।
निशुम्भे च महा-वीर्ये शेषाः पातालमाययुः॥३२॥

ॐ ऐं क्लीं श्रां महा-भागायै नमः स्वाहा॥३२॥

एवं भगवती देवी सा नित्याऽपि पुनः पुनः।
सम्भूय कुरुते भूप! जगतः परिपालनम्॥३३॥

ॐ ऐं क्लीं प्लीं तपो-रूपायै नमः स्वाहा॥३३॥

तयैतन्मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते।
सा याचिता च विज्ञानं तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छति॥३४॥

ॐ ऐं क्लीं आं अम्बायै नमः स्वाहा॥३४॥

व्याप्तं तयैतत् सकलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर!
महा-काल्या महा-काले महा-मारी-स्वरूपया॥३५॥

ॐ ऐं क्लीं सौं मही-मय्यै नमः स्वाहा॥३५॥

सैव काले महा-मारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा।
स्थितिं करोति भूतानां सैव काले सनातनी॥३६॥

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं जगद्धात्र्यै नमः स्वाहा॥३६॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भव-काले नृणां सैव लक्ष्मीर्वृद्धि-प्रदा गृहे।
सैवाऽभावे तथाऽलक्ष्मीर्विनाशायोपजायते।।३७।।

ॐ ऐं क्लीं क्रीं देव्यै नमः स्वाहा।।३७।।

स्तुता सम्पूजिता पुष्पैर्गन्धधूपादिभिस्तथा।
ददाति वित्तं पुत्राँश्च मतिं धर्मे गतिं शुभाम्।।३८।।

ॐ ऐं क्लीं क्षां सर्वदायै नमः स्वाहा।।३८।।

।। ॐ जय जय श्रीमार्कण्डेय-उत्तर-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये सत्या सन्तु (यजमानस्य कामाः) श्रीजगदम्बार्पणमस्तु।।

।। वैदिक आहुति ।।

एक उल्टे अखण्ड पानपत्ते पर शाकल्य, घी में भिगोकर १ कमलगट्टा, १ सुपारी, २ लौंग, १ छोटी इलायची, गूगल शहद ये सब वस्तुएँ स्रुची में रखकर खड़े होकर निम्न मन्त्र बोले (इस अध्याय में ऋतुफल व केला विशेष है।) –

ॐ प्राणाय स्वाहा पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा।। अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनीम् ॐ स्वाहा।।२२।२३।।

बाद में स्रुवे से पाँच बार घी छोड़ते हुए इस मन्त्र का उच्चारण करें –

ॐ घृतं घृतपावानः पिबतवसां वसा पावानः। पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽ आदिशो विदिशऽ उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।। (यजु. सं. अ. ६।१९ मन्त्र)

।। तान्त्रिक आहुति।।

ॐ क्लीं जयन्ती साङ्गायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै वर-प्रदायै वैष्णवी-देव्यै महाऽऽहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए आहुति देवे, सामग्री वैदिक आहुति के समान ही है।

।। द्वादशोऽध्यायः।।

।। उवाच २।। श्लोकाः ३८।। एवमादितः ६८३ ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ त्रयोदशोऽध्यायः

॥ ध्यानम् ॥

ॐ बालार्क-मण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्।
पाशाङ्कुश-वराभीतिर्धारयन्तीं शिवां भजे॥

॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥

एतत् ते कथितं भूप-देवी-माहात्म्यमुत्तमम्।
एवं प्रभावा सा देवी ययेदं धार्यते जगत्॥१॥
ॐ ऐं क्लीं श्रौं सर्वज्ञायै नमः स्वाहा॥१॥

विद्या तथैव क्रियते भगवद्-विष्णु-मायया।
तया त्वमेष वैश्यश्च तथैवान्ये विवेकिनः॥२॥
ॐ ऐं क्लीं ल्लूं चण्डिकायै नमः स्वाहा॥२॥

मोह्यन्ते मोहिताश्चैव मोहमेष्यन्ति चापरे।
तामुपैहि महाराज! शरणं परमेश्वरीम्॥३॥
(आराधिता सैव नृणां भोग-स्वर्गापवर्गदा।)
ॐ ऐं क्लीं क्लीं वर-प्रदायै नमः स्वाहा॥३॥

॥ मार्कण्डेय उवाच ॥

एवं तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः।
प्रणिपत्य महा-भागं तं ऋषिं शंसित-व्रतम्॥४॥
ॐ ऐं क्लीं ह्रीं मुनि-प्रियायै नमः स्वाहा॥४॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

निर्विण्णोऽति-ममत्वेन राज्यापहरणेन च।
जगाम सद्यस्तपसे स च वैश्यो महा-मुने!॥५॥

ॐ ऐं क्लीं प्लीं उत्साह-करण्यै नमः स्वाहा॥५॥

संदर्शनार्थमम्बाया नदी-पुलिन-संस्थितः।
स च वैश्यस्तपः तेपे देवी-सूक्तं परं जपन्॥६॥

ॐ ऐं क्लीं श्रीं भव-पाश-विमोचन्यै नमः स्वाहा॥६॥

तौ तस्मिन् पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिं मही-मयीम्।
अर्हणां चक्रतुस्तस्याः पुष्प-धूपाग्नि-तर्पणैः॥७॥

ॐ ऐं क्लीं ल्लीं देव-देव्यै नमः स्वाहा॥७॥

निराहारौ यताहारौ तन्मनस्कौ समाहितौ।
ददतुस्तौ बलिं चैव निज-गात्रा-सृगुक्षितम्॥८॥

ॐ ऐं क्लीं श्रूं राज्य-प्रदायै नमः स्वाहा॥८॥

एवं समाराधयतस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः।
परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका॥९॥

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं अस्वलितायै नमः स्वाहा॥९॥

॥ देव्युवाच ॥

यत् प्रार्थ्यते त्वया भूप! त्वया च कुल-नन्दन!।
मत्तस्तत् प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामि तत्॥१०॥

ॐ ऐं क्लीं त्रूं जनन्यै नमः स्वाहा॥१०॥

॥ मार्कण्डेय उवाच ॥

ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्य-जन्मनि।
अत्रैव च निजं राज्यं हत-शत्रुबलं बलात्॥११॥

ॐ ऐं क्लीं ह्रूं मन्त्र-रूपायै नमः स्वाहा॥११॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। राजोवाच ।।

सोऽपि वैश्यस्ततो ज्ञानं वव्रे निर्विण्ण-मानसः।
ममेत्यहमेव प्राज्ञः सङ्ग-विच्युति-कारकम्।।१२।।

ॐ ऐं क्लीं ह्रां वाञ्छितप्रदायै नमः स्वाहा।।१२।।

।। देव्युवाच ।।

स्वल्पैरहोभिर्नृपते! स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान्।
हत्वा रिपूनस्खलितं तव तत्र भविष्ष्यति।।१३।।

ॐ ऐं क्लीं प्रीं ज्ञानदायै नमः स्वाहा।।१३।।

।। मार्कण्डेय उवाच ।।

मृतश्च भूयः संप्राप्य जन्म दैवाद् विवस्वतः।
सावर्णिको नाम मनुर्भवान् भुवि भविष्यति।।१४।।

ॐ ऐं क्लीं ऊं वाण्यै नमः स्वाहा।।१४।।

।। वैश्य उवाच ।।

वैश्य-वर्य! त्वया यश्च वरोऽस्मत्तोऽभिवाञ्छितः।
तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै तव ज्ञानं भविष्यति।।१५।।

ॐ ऐं क्लीं सूं अभिस्तुतायै नमः स्वाहा।।१५।।

।। मार्कण्डेय उवाच ।।

एवं दत्त्वा तयोर्देवी यथाभिलषितं वरम्।
बभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता।।१६।।

ॐ ऐं क्लीं षों लषित-प्रदायै नमः स्वाहा।।१६।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः।
सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ॥१७॥

ॐ ऐं क्लीं ओं मनु-रूपायै नमः स्वाहा ॥१७॥

॥ ॐ जय जय श्रीमार्कण्डेय-उत्तर-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये सत्या सन्तु (यजमानस्य कामाः) श्रीजगदम्बार्पणमस्तु ॥

॥ वैदिक आहुति ॥

एक उल्टे अखण्ड पानपत्ते पर शाकल्य, घी में भिगोकर १ कमलगट्टा, १ सुपारी, २ लौंग, १ छोटी इलायची, गूगल शहद ये सब वस्तुएँ स्रुची में रखकर खड़े होकर निम्न मन्त्र बोले (इस अध्याय में १ फल व पुष्प विशेष है।) –

ॐ प्राणाय स्वाहा पानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा॥ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॐ स्वाहा॥२२।२३॥

बाद में स्रुवे से पाँच बार घी छोड़ते हुए इस मन्त्र का उच्चारण करें –

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसा पावानः। पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽ आदिशो विदिशऽ उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥ (यजु. सं. अ. ६।१९ मन्त्र)

॥ तान्त्रिक आहुति॥

ॐ क्लीं जयन्ती साङ्गायै सायुधायै सशक्तिकायै सपरिवारायै सवाहनायै श्री-विद्यायै महाऽऽहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए आहुति देवे, सामग्री वैदिक आहुति के समान ही है।

॥ त्रयोदशोऽध्यायः॥

॥ उवाच ६॥ श्लोकाः १७॥ एवमादितः ७०० ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ नवार्ण विधिः ।।

(उपसंहार)

इस प्रकार सप्तशती का पाठ पूरा होने पर पहले नवार्ण-जप, फिर देवी-सूक्त के पाठ का विधान है। अतः यहाँ भी नवार्ण-विधि दी जा रही है।

।। श्रीगणपतिर्जयति ।।

ॐ अस्य श्रीनवार्ण-मन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-रुद्रा ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभछन्दांसि श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यो देवताः, ऐं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।।

।। ऋष्यादि-न्यासः ।।

ब्रह्म-विष्णु-रुद्र-ऋषिभ्यो नमः शिरसि।
गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्-छन्देभ्यो नमो मुखे।
महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः हृदि।
ऐं बीजाय नमः गुह्ये। – ह्रीं शक्तये नमः पादयोः।
क्लीं कीलकाय नमः नाभौ।
(ॐ) ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे सर्वाङ्गे। मूलेन करौ संशोध्य।

।। कर-न्यासः ।।

ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, – ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः,
ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः,
ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः,
ॐ ऐं ह्री क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ऐं हृदयाय नमः, – ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा,
ॐ क्लीं शिखायै वषट्, ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्,
ॐ विच्चे नेत्र-त्रयाय वौषट्,
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अक्षर-न्यासः ।।

ॐ ऐं नमः शिखायां, ॐ ह्रीं नमः दक्षिण-नेत्रे,
ॐ क्लीं नमः वाम-नेत्रे, ॐ चां नमः दक्षिण-कर्णे,
ॐ मुं नमः वाम-कर्णे, ॐ डां नमः दक्षिणनासा-पुटे,
ॐ यैं नमः वाम नासा-पुटे, ॐ विं नमः मुखे,
ॐ च्चें नमः गुह्ये।
एवं विन्यस्याष्ट-वारं मूलेन व्यापकं कुर्यात्।

।। दिङ्-न्यास ।।

ॐ ऐं प्राच्यै नमः,
ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः,
ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः,
ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः,
ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः,
ॐ क्लीं वायव्यै नमः,
ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः,
ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः,
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः,
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।

।। ध्यानम् ।।

खड्गं चक्र-गदेषु चाप-परिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः,
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग-भूषावृताम्।
नीलाश्च-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकां,
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तु मधुं कैटभम् ।।1 ।।

अक्ष-स्त्रक्परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां,
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुरा-भाजनम्।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्।
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह-महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम् ।।2 ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुसले चक्रं धनुः सायकं,
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम्।
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम्।।3।।

इस प्रकार न्यास और ध्यान करके मानसिक उपचार से देवी की पूजा करें। इसके बाद 108 अथवा 1008 बार नवार्ण-मन्त्र का जप करना चाहिए। जप आरम्भ करने से पहिले **'ऐं ह्रीं अक्ष-मालिकायै नमः'** इस मन्त्र से माला की पूजा करके प्रार्थना करे :-

ॐ मां माले महा-माये सर्व-शक्ति स्वरूपिणी!
चतुवर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।
अविघ्नं कुरु माले! त्वं गृह्णामि दक्षिण करे।
जप-काले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये।।

ॐ अक्ष-मालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्व-मन्त्रार्थ-साधिनी! साधय साधय सर्व-सिद्धिं परिकल्प्य परिकल्प्य मे स्वाहा।।

इसके बाद **"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे"** इस मन्त्र का जप 108 अथवा 1008 बार करें तथा निम्न श्लोक को पढ़कर देवी के वाम हस्त में जप समर्पित करें :-

गुह्यातिगुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत्-कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि! त्वत्-प्रसादान्महेश्वरि।।

तत्पश्चात् न्यास करे:-

।। कर-न्यासः।।

ॐ ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ चं तर्जनीभ्यां नमः,
ॐ डिं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ कां अनामिकाभ्यां नमः,
ॐ यैं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं चण्डिकायै करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

।। हृदयादि-न्यासः।।

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाण-भुशुण्डि-परिघायुधा।।1।। **हृदयाय नमः।।**
ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके!
घण्टा-स्वनेन नः पाहि चाप-ज्या-निःस्वनेन च।।2।। **शिरसे स्वाहा।।**

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके! रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्म-शूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥3॥ शिखायै वषट्॥
ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थ-घोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥4॥ कवचाय हुम्॥
ॐ खड्ग-शूल-गदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके!
कर-पल्लव-सङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥5॥ नेत्रत्रयाय वौषट्॥
ॐ सर्व-स्वरूपे सर्वेशे सर्व-शक्ति-समन्विते!
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि! दुर्गे देवि! नमोऽस्तु ते ॥6॥ अस्त्राय फट्॥

॥ ध्यान ॥

विद्युद्दाम-सम-प्रभां मृगपति-स्कन्ध-स्थितां भीषणाम्।
कन्याभिः करवाल-खेट-विलसद्धस्ताभिरासेविताम्॥
हस्तैश्चक्र-गदासि-खेट-विशिखाँश्चापं गुणं तर्जनीं।
विभ्राणामनलात्मिकां शशि-धरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥

॥ पर-देवी-सूक्तम्॥

ॐ अस्य श्रीपर-देवी-सूक्त-माला-मन्त्रस्य मार्कण्डेय-मेधसौ ऋषी, गायत्र्यादि-नाना-विध-छन्दांसि, त्रिशक्तिरूपिणी चण्डिका देवता, ऐं बीजम्, ह्रीं शक्ति, क्लीं कीलकं, मम चिन्तित-सकल-मनोरथ-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

॥ ऋष्यादि-न्यासः॥

ॐ मार्कण्डेय-मेधस-ऋषिभ्यां नमः शिरसि।
ॐ गायत्र्यादि-नाना-विध-छन्दोभ्यो नमः मुखे।
ॐ त्रिशक्तिरूपिणी चण्डिका-देवतायै नमः हृदये।
ॐ ऐं बीजाय नमः गुह्ये।
ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयो।
ॐ क्लीं कीलकाय नमः नाभौ।
मम चिन्तित-सकल-मनोरथ-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

॥ कर-न्यासः ॥

ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः,
ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ ऐं अनामिकाभ्यां नमः,
ॐ ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ क्लीं करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

॥ हृदयादि (षडङ्ग)-न्यासः ॥

ॐ ऐं हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा,
ॐ क्लीं शिखायै वषट्, ॐ ऐं कवचाय हुम्,
ॐ ह्रीं नेत्र-त्रयाय वौषट्, ॐ क्लीं अस्त्राय फट्।

ततः 'ऐं ह्रीं क्लीं' अनेन मन्त्रेण छोटिकाभिर्दिग-बन्धनम्।

॥ अथ ध्यानम् ॥

ॐ योगाद्ध्यामर-काय-निर्गत-महा-तेजः समुत्पत्तनी,
भास्वत्-पूर्ण-शशाङ्क-चारु-धवला लीलोल्लसन्-भ्रू-लता।
गौरी तुङ्ग-कुच-द्वया तदुपरि स्फूर्जत-प्रभा-मण्डला,
बन्धूकारुण-काय-कान्ति-विलसच्छ्रीचण्डिका सर्वतः॥

एवं ध्यात्वा मानसोपचारैश्च सम्पूज्य सूक्तं पठेत् :-

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हुं सैं हूं ह्सौं स्त्रीं जय जय महा-लक्ष्मी जगदाद्य-बीजे, सुरासुर-त्रिभुवन-निदाने, दया-करे, सर्व-सर्व-तेजो-रूपिणी, महा-महा-महिमे, महा-महा-रूपिणि, महा-महा-माये, महा-माया-स्वरूपिणी, विरञ्चि-संस्तुते, विधि-वरदे, चिदानन्दे, विष्णु-देहावृते, महा-मोहिनी (101); मधुकैटभ-जिघांसिनी, नित्य-वरदान-तत्परे, महा-सुधाब्धि-वासिनी, महा-महा-तेजो-धारिणी, सर्वाधारे, सर्व-कारण-कारणे, अचिन्त्य-रूपे, इन्द्रादि-निखिल-निर्जर-सेविते, साम-गान-गायिनी, पूर्णेन्द्रिय-कारिणी, विजये, जयन्ति, अपराजिते, सर्व-सुन्दरी, रक्तांशुके (198); सूर्य-कोटि-संकाशे, चन्द्र-कोटि-सुशीतले, अग्नि-कोटि-दहन-शीले, यम-कोटि-क्रूरे, वायु-कोटि-वहन-शीले, ओंकार-नाद-रूपिणी, निगमागम-मार्ग-दायिनी, महिषासुर-निर्दलिनि, धूम्रलोचन-क्षय-परायणे चण्ड-मुण्डादि-शिरश्छेदिनी, रक्तबीजादि-रुधिर-शोषिणी (298), रक्त-पान-प्रिय-महा-योगिनी, भूत-वैताल-भैरवादि-तुष्टि-विधायिनी, शुम्भ-निशुम्भ-शिरच्छेदिनि, निखिलासुर-खल-खादिनी, त्रिदश-राज्य-दायिनी, सर्व-स्त्री-रत्न-रूपिणी, दिव्य-देहे, निर्गुणे,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सगुणे, सदसद्रूपधारिणि, स्कन्द-वरदे, भक्त-वरदे, भक्त-त्राण-तत्परे, वरे, वरदे (397); सहस्राक्षरे अयुताक्षरे, सप्त-कोटि-चामुण्डा-रूपिणी, नव-कोटि-कात्यायनि-स्वरूपे, अनेक-शकत्यालक्ष्यालक्ष्य-स्वरूपे इन्द्राणि, ब्रह्माणि, रुद्राणि, कौमारि, वैष्णवि, वाराहि, शिव-दूती, ईशानि, भीमे, भ्रामरि, नारसिंह, त्रयस्त्रिंशत्-कोटि-देव-सेविते, अनन्त-कोटि-ब्रह्माण्ड-नायिके (501); चतुरशीति-लक्ष-मुनि-जन-संस्तुते, सप्त-कोटि-मन्त्र-स्वरूपे, महा-काल-रात्रि प्रकाशे, कला-काष्ठादि-रूपिणी, चतुर्दश-भुवन-विभव-कारिणी, गरुड़-गामिनी, क्रोंकार-होंकार-ह्रौंकार-श्रींकार-क्लौंकार-जूंकार-सौंकार-ऐं-क्लींकार-कांकार-ह्सौकार-नाना-बीज-कूट-निर्मित-शरीर (601), नाना-बीज-मन्त्र-राज-विराजिते, सकल-सुन्दरी-गण-सेविते, चरणारविन्दे, श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरि, कामेश-दयिते, करणैक-रस-कल्लोलिनी, कल्प-वृक्षाधः-स्थिते, चिन्ता-मणि-द्वीपावस्थिते, मणि-मन्दिर-निवासे, चापिनी, खड्गिनी, चक्रिणी, दण्डिनी, शंखिनी, पद्मिनी (694); निखिल-भैरवाराधिनी, समस्त-योगिनी-परिवृते, कालिके, कालि, तारे, तरले, सुतारे, ज्वालामुखि, छिन्न-मस्तिके, भुवनेश्वरि, त्रिपुरे, लोक-जननि, विष्णु-वक्षः-स्थलालंकारिणी, अजिते, अमिते, अमराधिपे, अनूप-चरिते, गर्भ-वास-दुःखापहारिणी (792); मुक्ति-क्षेत्रा-धिष्ठायिनी, शिवे, शान्ति-कुमारी-रूपे, देवी-सूक्त-दश-शताक्षरे, चन्द्रि, चामुण्डे, महाकाली-महालक्ष्मी, महासरस्वती-त्रयी-विग्रहे! प्रसीद प्रसीद, सर्व-मनोरथान्, पूरय पूरय, सर्वारिष्ट-विघ्नाँश्छेदय छेदय, सर्व-ग्रह-पीडा-ज्वर-ग्रह-भयं विध्वंसय विध्वंसय (901); सर्वत्र त्रिभुवन-जीव-जातं वशय, मोक्ष-मार्गान् दर्शय दर्शय, ज्ञान-मार्ग प्रकाशय प्रकाशय, अज्ञान-तमो नाशय नाशय, धन-धान्यादि-वृद्धिं कुरु कुरु, सर्व-कल्याणिनी! कल्पय कल्पय, मां रक्ष रक्ष, सर्वापद्भ्यो निस्तारय निस्तारय, मम वज्र-शरीरं साधय साधय, ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वहा (1000); नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा।।

परं देव्या इदं सूक्तं यः पठेत् प्रयतो नरः।
सर्व-सिद्धिमवाप्नोति सर्वत्र विजयी भवेत्।।1।।
संग्रामेषु जयेच्छत्रून् मातङ्गानिव केसरी।
वशयेन्निखिलान् लोकान् विशेषेण महीपतीन्।।2।।
त्रि-कालं यः पठेन्नित्यं देव्याः सूक्तमिदं परम्।
तस्य विघ्नाः प्रलीयन्ते ग्रह-पीडाश्च दारुणाः।।3।।
पराभिचार-शमनं पर-कृत्या-निवारणम्।
सर्व-कल्याण-निलयं देव्याः सन्तोष-कारणम्।।4।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सहस्रावृत्तितो देवि! मनोरथ-समृद्धिदम्।
सहस्रावृत्ति-जपात् सर्व-संकट-नाशनम्।।5।।
त्रि-सहस्रावृत्तितो वशं-कृद् राज-योषिताम्।
शत-त्रयं जपेद् यस्तु वर्ष-त्रयमतन्द्रितः।।6।।
पश्येत् स चण्डिकां साक्षात् वर-दान-कृतोद्यमाम्।
इदं रहस्यं परमं गोपनीयं प्रयत्नतः।।7।।
न वाच्यं कस्यचिद् देवि! निधानमिव सुन्दरि।। ॐ श्री।।

।। डामर-तन्त्रे उमा-महेश्वर-संवादे श्रीपर-देवी-सूक्तम्।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ प्राधानिक रहस्यम् ।।

ॐ अस्य श्री सप्तशती-रहस्य-त्रयस्य नारायण ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, महाकाली-महालक्ष्मी-महारस्वत्यो देवताः, यथोक्त-फलावाप्त्यर्थं जपे विनियोगः।।

।। राजोवाच ।।

भगवन्नव-तारा मे चण्डिकायास्त्वयोदिताः।
एतेषां प्रकृतिं ब्रह्मन्! प्रधानं वक्तुमर्हसि।।१।।
आराध्यं यन्मया देव्याः स्वरूपं येन च द्विज!
विधिना ब्रूहि सकलं यथा-वत् प्रणतस्य मे।।२।।

।। ऋषिरुवाच ।।

इदं रहस्यं परममनाख्येयं प्रचक्षते।
भक्तोऽसीति न मे किञ्चिज् तवावाच्यं नराधिप।।३।।
सर्वस्याद्या महा-लक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी।
लक्ष्यालक्ष्य-स्वरूपा सा व्याप्य कृत्स्नं व्यवस्थिता।।४।।
मातुलिङ्गं गदां खेटं पान-पात्रं च बिभ्रती।
नागं लिङ्गं च योनिं च बिभ्रती नृप! मूर्द्धनि।।५।।
तप्त-काञ्चन-वर्णाभा तप्त-काञ्चन-भूषणा।
शून्यं तदखिलं स्वेन पूरयामास तेजसा।।६।।
शून्यं तदखिलं लोकं विलोक्य परमेश्वरी।
बभार परमं रूपं तमसा केवलेन हि।।७।।
सा भिन्नाञ्जन-संकाशा दंष्ट्राङ्कित-वरानना।
विशाल-लोचना नारी बभूव तनु-मध्यमा।।८।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

खड्ग-पात्र-शिरः-खेटैरलंकृत-चतुर्भुजा ।
कबन्ध-हारं शिरसा बिभ्राणा हि शिरः-स्रजम् ॥९॥
सा प्रोवाच महा-लक्ष्मी तामसीं प्रमदोत्तमा।
नाम कर्म च मे मातर्देहि तुभ्यं नमोनमः ॥१०॥
तां प्रोवाच महा-लक्ष्मीस्तामसीं प्रमदोत्तमाम्।
ददामि तव नामानि यानि कर्माणि तानि ते॥११॥
महा-माया महा-काली महा-मारी क्षुधा तृषा।
निद्रा तृष्णा चैक-वीरा काल-रात्रिर्दुरव्यया॥१२॥
इमानि तव नामानि प्रति-पाद्यानि कर्मभिः।
एभिः कर्माणि ते ज्ञात्वा योऽधीते सोऽश्नुते सुखम्॥१३॥
तामित्युक्त्वा महा-लक्ष्मीः स्वरूपमपरं नृप!
सत्त्वाख्येनाति-शुद्धेन गुणेनेन्दु प्रभं दधौ॥१४॥
अक्ष-मालाङ्कुश-धरा वीणा-पुस्तक-धारिणी।
सा बभूव वरा नारी नामान्यस्यैव च सा ददौ॥१५॥
महा-विद्या महा-वाणी भारती वाक् सरस्वती।
आर्या ब्राह्मी काम-धेनुर्वेद-गर्भा च धीश्वरी॥१६॥
अथोवाच महा-लक्ष्मीर्महा-कालीं सरस्वतीम्।
युवां जनयतां देव्यौ मिथुने स्वानुरूपतः॥१७॥
उक्त्वैवं ते महा-लक्ष्मीः ससर्ज मिथुनं स्वयम्।
हिरण्य-गर्भौ रुचिरौ स्त्री-पुंसौ कमलासनौ॥१८॥
ब्रह्मन् विधे विरिञ्चे तु धातरित्याह तं नरम्।
श्रीपद्मे कमले लक्ष्मीत्याह माता च तां स्त्रियम्॥१९॥
महा-काली भारती च मिथुने सृजतः सह।
एतयोरपि रूपाणि नामानि च वदामि ते॥२०॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नील-कण्ठं रक्त-बाहुं श्वेताङ्गं चन्द्र-शेखरम्।
जनयामास पुरुषं महा-काली सितां स्त्रियम्॥२१॥
स रुद्रः शङ्करः स्थाणुः कपर्दी च त्रिलोचनः।
त्रयी विद्या काम-धेनुः सा स्त्री भाषाक्षरा स्वरा॥२२॥
सरस्वती स्त्रियं गौरीं कृष्णं च पुरुषं नृप!
जनयामास नामानि तयोरपि वदामि ते॥२३॥
विष्णुः कृष्णो हृषीकेशो वासुदेवो जनार्दनः।
उमा गौरीं सती चण्डी सुन्दरी सुभगा शिवा॥२४॥
एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपेदिरे।
चक्षुष्मन्तो नु पश्यन्ति नेतरेऽतद्विदो जनाः॥२५॥
ब्रह्मणे प्रददौ पत्नीं महालक्ष्मीर्नृप! त्रयीम्।
रुद्राय गौरीं वरदां वासुदेवाय च श्रियम्॥२६॥
स्वरया सह सम्भूय विरिञ्चोऽण्डमजीजनत्।
बिभेद भगवान् रुद्रस्तद् गौर्या सह वीर्यवान्॥२७॥
अण्ड-मध्ये प्रधानादि-कार्य-जातमभून्नृप!
महा-भूतात्मकं सर्वं जगत् स्थावर-जङ्गमम्॥२८॥
पुपोष पालयामास तल्लक्ष्म्या सह केशवः।
संजहार जगत् सर्वं सह गौर्या महेश्वरः॥२९॥
महा-लक्ष्मीर्महा-राज! सर्व-सत्त्व-मयीश्वरी।
निराकारा च साकारा सैव नानाभिधान-भृत्॥३०॥
नामान्तरैर्निरूप्यैषा नाम्ना नान्येन केनचित्॥३१॥

इति प्राधानिकं रहस्यं समाप्तम्॥१॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

॥ अथ वैकृतिक रहस्यम् ॥

॥ ऋषिरुवाच ॥

ॐ त्रिगुणा तामसी देवी सात्त्विकी यात्र धोदिता।
सा शर्वा चण्डिका दुर्गा भद्रा भगवतीर्यते॥१॥

योग-निद्रा हरेरुक्ता महाकाली तमो-गुणा।
मधु-कैटभ-नाशार्थं यां तुष्टावाम्बुजासनः॥२॥

दश-वक्त्रा दश-भुजा दश-पादाञ्जन-प्रभा।
विशालया राज-माना त्रिंशल्लोचन-मालया॥३॥

स्फुरद्-दशन-दंष्ट्रा सा भीमरूपापि भूमिप!
रूप-सौभाग्य-कान्तीनां सा प्रतिष्ठा महा-श्रियः॥४॥

खड्ग-बाण-गदा-शूल-चक्र-शङ्ख-भुशुण्डि-भृत्।
परिघं कार्मुकं शीर्षं निश्च्योतद् रूधिरं दधौ॥५॥

एषा सा वैष्णवी माया महा-काली दुरत्यया।
आराधिता वशी-कुर्यात् पूजाकर्तुश्चराचरम्॥६॥

सर्व-देव-शरीरेभ्यो याऽऽविर्भूतामित-प्रभा।
त्रिगुणा सा महा-लक्ष्मीः साक्षान्महिष-मर्दिनी॥७॥

श्वेतानना नील-भुजा सु-श्वेत-स्तन-मण्डला।
रक्त-मध्या रक्त-पादा नील-जङ्घोरुरुन्मदा॥८॥

सुचित्र-जघना चित्र-माल्याम्बर-विभूषणा।
चित्रानुलेपना कान्ति-रूप-सौभाग्य-शालिनी॥९॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अष्टादश-भुजा पूज्या सा सहस्र-भुजा सती।
आयुधान् यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधः कर-क्रमात्॥१०॥

अक्ष-माला च कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा।
त्रिशूलं परशुः चक्रं शङ्खो घण्टा च पाशकः॥११॥

शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पान-पात्रं कमण्डलुः।
अलङ्कृत-भुजामेभिरायुधैः कमलासनाम्॥१२॥

सर्व-देवमयीमीशां महा-लक्ष्मीमिमां नृप!
पूजयेत् सर्व-लोकानां स देवानां प्रभुर्भवेत्॥१३॥

गौरी-देहात् समुद्भूता या सत्त्वैक-गुणाश्रया।
साक्षात् सरस्वती प्रोक्ता शुम्भासुर-निबर्हिणी॥१४॥

दधौ चाष्ट-भुजा बाण-मुसले शूल-चक्र-भृत्।
शङ्खं घण्टां-लाङ्गलं च कार्मुकं वसुधाधिप॥१५॥

एषा सम्पूजिता भक्त्या सर्वज्ञत्वं प्रयच्छति।
निशुम्भ-मथिनी देवी शुम्भासुर-निबर्हिणी॥१६॥

उक्तान्येवं स्वरूपाणि मूर्तीनां तव पार्थिव!
उपासनं जगन्मातुः पृथगासां निशामय॥१७॥

महा-लक्ष्मीर्यदा पूज्या महा-काली सरस्वती।
दक्षिणोत्तरयोः पूज्ये पृष्ठतो मिथुन-त्रयम्॥१८॥

विरञ्चिः स्वरया मध्ये रुद्रो गौर्या च दक्षिणे।
वामे लक्ष्म्या हृषीकेशः पुरतो देवता-त्रयम्॥१९॥

अष्टादश-भुजा-मध्ये वामे चास्या दशानना।
अष्टादश-भुजा लक्ष्मीर्महतीति तु समर्चयेत्॥२०॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अष्टादश-भुजा चैषा यदा पूज्या नराधिप!
दशानना चाष्ट-भुजा दक्षिणोत्तरयोस्तदा ॥२१॥

काल-मृत्यू च सम्पूज्यौ सर्वारिष्ट-प्रशान्तये।
यदा चाष्ट-भुजा पूज्या शुम्भासुर-निबर्हिणी ॥२२॥

नवास्याः शक्तयः पूज्यास्तदा रुद्र-विनायकौ।
नमो देव्या इति स्तोत्रैश्चैव महालक्ष्मीं समर्चयेत् ॥२३॥

अवतार-त्रयार्चायां स्तोत्र-मन्त्रास्तदाश्रयाः।
अष्टादश-भुजा चैषा पूज्या महिष-मर्दिनी ॥२४॥

महा-लक्ष्मीर्महा-काली सैव प्रोक्ता सरस्वती।
ईश्वरी पुण्य-पापानां सर्व-लोक-महेश्वरी ॥२५॥

महिषान्त-करी येन पूजिता स जगत् प्रभुः।
पूजयेज्जगतां धात्रीं चण्डिकां भक्त-वत्सलाम् ॥२६॥

अर्घ्यादिभिरलङ्कारैर्गन्ध-पुष्पैस्तथाक्षतैः।
धूपैर्दीपैश्च नैवेद्यैर्नाना-भक्ष्य-समन्वितैः ॥२७॥

रुधिराक्तेन बलिना मांसेन सुरया नृप!
प्रणामाचमनीयेन चन्दनेन सुगन्धिना ॥२८॥

स-कर्पूरैश्च ताम्बूलैर्भक्ति-भाव-समन्वितैः।
वाम-भागेऽग्रतो देव्याश्छिन्न-शीर्षं-महासुरम् ॥२९॥

पूजयेन्महिषं येन प्राप्तं सायुज्यमीशया।
दक्षिणे पुरतः सिंहं समग्रं धर्ममीश्वरम् ॥३०॥

वाहनं पूजयेद् देव्या धृतं येन चराचरम्।
कुर्याच्च स्तवनं धीमाँस्तस्या चैकाग्र-मानसः ॥३१॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ततः कृताञ्जलिर्भूत्वा स्तुवीत-चरितैरिमैः।
एकेन वा मध्यमेन नैकेनेतरयोरिह॥३२॥

चरितार्धं तु न जपेज्जपं छिद्रमवाप्नुयात्।
प्रदक्षिणा नमस्कारान् कृत्वा मूर्ध्नि कृताञ्जलिः॥३३॥

क्षमापयेज्जगद्धात्रीं मुहुर्मुहुरतन्द्रितः।
प्रति-श्लोकं च जुहुयात् पायसं तिल-सर्पिषा॥३४॥

जुहुयात् स्तोत्र-मन्त्रैर्वा चण्डिकायै शुभं हविः।
भूयो नाम-पदैर्देवीं पूजयेत् सु-समाहितः॥३५॥

प्रयतः प्राञ्जलिः प्रह्वः प्रणम्यारोप्य चात्मनि।
सुचिरं भावयेदीशां चण्डिकां तन्मयो भवेत्॥३६॥

एवं यः पूजयेद् भक्त्या प्रत्यहं परमेश्वरीम्।
भुक्त्वा भोगान् यथा-कामं देवी-सायुज्यमाप्नुयात्॥३७॥

यो न पूजयते नित्यं चण्डिकां भक्त-वत्सलाम्।
भस्मी-कृत्यास्य पुण्यानि निर्दहेत् परमेश्वरी॥३८॥

तस्मात् पूजय भूपाल! सर्व-लोक-महेश्वरीम्।
यथोक्तेन विधानेन चण्डिकां सुखमाप्स्यसि॥३९॥

॥ श्रीवैकृतिक-रहस्यं समाप्तम्॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

॥ अथ मूर्तिरहस्यम् ॥

॥ ऋषिरुवाच ॥

ॐ नन्दा भगवती नाम या भविष्यति नन्दजा।
स्तुता सा पूजिता भक्त्या वशी-कुर्याज्जगत्-त्रयम् ॥१॥

कनकोत्तम-कान्तिः सा सु-कान्ति-कनकाम्बरा।
देवी कनक-वर्णाभा कनकोत्तम-भूषणा ॥२॥

कमलाङ्कुश-पाशाब्जैरलङ्कृत-चतुर्भुजा।
इन्दिरा कमला लक्ष्मीः सा श्रीरुक्माम्बुजासना ॥३॥

या रक्त-दन्तिका नाम देवी प्रोक्ता मयाऽनघ।
तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामि शृणु सर्व-भयापहम् ॥४॥

रक्ताम्बरा रक्त-वर्णा रक्तसर्वाङ्गभूषणा।
रक्तायुधा रक्त-नेत्रा रक्त-केशाति-भीषणा ॥५॥

रक्त-तीक्ष्ण-नखा रक्त-दशना रक्त-दन्तिका।
पतिं नारीवानुरक्ता देवी-भक्तं भजेज्जनम् ॥६॥

वसुधेव विशाला सा सुमेरु-युगल-स्तनी।
दीर्घौ लम्बावति-स्थूलौ तावतीव मनोहरौ ॥७॥

कर्कशावति-कान्तौ तौ सर्वानन्द-पयोनिधी।
भक्तान् संपाययेद् देवी सर्व-काम-दुघौ स्तनौ ॥८॥

खड्ग-पात्रं च मुसलं लाङ्गलं च बिभर्त्ति सा।
आख्याता रक्त-चामुण्डा देवी योगेश्वरीति च ॥९॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अनया व्याप्तमखिलं जगत् स्थावर-जङ्गमम् ।
इमां यः पूजयेद् भक्त्या स चाप्नोति चराचरम् ।।१०।।

अधीते य इमं नित्यं रक्त-दन्त्या वपुः-स्तवम् ।
तं सा परिचरेद् देवी पतिं प्रियमिवाङ्गना ।।११।।

शाकम्भरीं नील-वर्णा नीलोत्पल-विलोचना ।
गम्भीर-नाभिस्त्रिवली-विभूषित-तनूदरी ।।१२।।

सुकर्कश-समोत्तुङ्ग-वृत्त-पीन-घन-स्तनी ।
मुष्टिं शिली-मुखापूर्णं कमलं कमलालया ।।१३।।

पुष्प-पल्लव-मूलादिफलाढ्यं शाक-सञ्चयम् ।
काम्यानन्त-रसैर्युक्तं क्षुत् तृण्मृत्यु-भयापहम् ।।१४।।

कार्मुकं च स्फुरत्-कान्ति बिभ्रती परमेश्वरी ।
शाकम्भरी शताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकीर्तिता ।।१५।।

विशोका दुष्ट-दमनी शमनी दुरितापदाम् ।
उमा गौरी सती चण्डी कालिका सापि पार्वती ।।१६।।

शाकम्भरीं स्तुवन् ध्यायञ्जपन् सम्पूजयन्नमन् ।
अक्षय्यमश्नुते शीघ्रमन्न-पानामृतं फलम् ।।१७।।

भीमाऽपि नील-वर्णा सा दंष्ट्रा-दशनभा-सुरा ।
विशाल-लोचना नारी वृत्त-पीन-पयोधरा ।।१८।।

चन्द्र-हासं च डमरुं शिरः पात्रं च बिभ्रती ।
एक-वीरा काल-रात्रिः सैवोक्ता कामदा स्तुता ।।१९।।

तेजो-मण्डल-दुर्धर्षा भ्रामरी चित्र-कान्ति-भृत् ।
चित्रानुलेपना देवी चित्राभरण-भूषिता ।।२०।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चित्र-भ्रमण-पाणिः सा महामारी तु गीयते।
एवं च मूर्तयो देव्या याः ख्याता वसुधाधिप॥२१॥

जगन्मातुश्चण्डिकायाः कीर्तिताः काम-धेनवः।
इदं रहस्यं परमं न वाच्यं कस्यचित् त्वया॥२२॥

व्याख्यानं दिव्य-मूर्तीनामभीष्ट-फल-दायकम्।
तस्मात् सर्व-प्रयत्नेन देवीं जप निरन्तरम्॥२३॥

सप्त-जन्मार्जितैर्घोरैर्ब्रह्म-हत्या-समैरपि ।
पाठ-मात्रेण मन्त्राणां मुच्यते सर्व-किल्बिषैः॥२४॥

देव्या ध्यानं मया ख्यातं गुह्याद् गुह्य-तरं महत्।
तस्मात् सर्व-प्रयत्नेन सर्व-काम-फल-प्रदम्॥२५॥

(एतस्याहं प्रसादेन सर्व-मान्यो भविष्यसि।)

सर्वरूपमयी देवी सर्वं देवीमयं जगत्।
अतोऽहं विश्वरूपां त्वां नमामि परमेश्वरीम्॥

॥ श्रीमूर्तिरहस्यं समाप्तम्॥३॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ नवार्ण–विधिः

भगवती दुर्गा के पूजन व आराधना से संबद्ध अनेक न्यासों का उल्लेख मिलता है। इनमें ऋष्यादि न्यास, सारस्वत न्यार मातृकागण न्यास, षड्देवी न्यास, ब्रह्माख्य न्यास, महालक्ष्म्यादि न्यास, बीज-मन्त्र न्यास, विलोम-बीज न्यास, मन्त्रव्याप्ति-स्वरूप न्यास, षडङ्गन्यास, मूल षडङ्ग न्यास, दिङ्न्यास आदि प्रसिद्ध हैं। विभिन्न कामनाओं की पूर्ति के लिए विभिन्न न्यासों का विधान किया गया है। जो श्रद्धालु जिस कामना से भगवती की अर्चा करे, वह उसी न्यास को करे। उपर्युक्त न्यासों का संकलन कर यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।

श्री गणपतिर्जयति। ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णु-रुद्रा ऋषयः, गायत्री उष्णिक् अनुष्टुप् छन्दांसि, श्री महाकाली–महालक्ष्मी–महा–सरस्वत्यो देवताः, नन्दा–शाकम्भरी भीमाः शक्तयः, रक्तदन्तिका दुर्गा भ्रामर्यो बीजानि, अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि ऋग्यजुसामवेदाः ध्यानानि, श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः

ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्र ऋषिभ्यो नमः – शिरसि।
ॐ गायत्र्युष्णिग् अनुष्टुप् छन्दोभ्यो नमः – मुखे।
ॐ महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताभ्यो नमः – हृदि।
ॐ नन्दा शाकम्भरी भीमा शक्तिभ्यो नमः – दक्षिणस्तने।
ॐ रक्तदन्तिका दुर्गाभ्रामरी बीजेभ्यो नमः – वामस्तने।
ॐ अग्निवायुसूर्यतत्त्वेभ्यो नमः – नाभौ।

अथवा

ऐं बीजम्, ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकम्।
ॐ ऐं बीजाय नमः – गुह्ये।
ॐ ह्रीं शक्तये नम :– पादयोः।
ॐ क्लीं कीलकाय नमः – नाभौ।

मूल मन्त्र से हाथों की संशुद्धि करनी चाहिए।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शुद्धमातृका न्यासः

शुद्धमातृका न्यास का फल है – मनुष्य देवी–रूप को प्राप्त हो जाता है।

"कृतेन येन देवस्य सारूप्यं याति मानवः॥"

यह मातृका न्यास भी दो प्रकार का है – **अन्तरमातृका तथा बहिर्मातृका।**

भविष्यपुराण में लिखा है–

"ना देवी कीर्तयेद्देवीं ना देवी तां समर्चयेत्।

न्यासात्तदात्मको भूत्वा देवो भूत्वा तु तं यजेत्॥"

अन्तरमातृका तथा बहिर्मातृका न्यास पूर्णतः तान्त्रिक हैं। क्रमशः इस प्रकार उल्लेख किया जा सकता है–

अथ अन्तरमातृका न्यासः

"अथ अन्तरमातृका न्यासमन्त्रस्य ब्रह्मऋषिः गायत्री छन्दः मातृका सरस्वती देवता हलो बीजानि, स्वरा शक्तयः, ॐ कीलकम्, अखिलाप्तये न्यासे विनियोगः।"

यह पढ़ कर भूमि पर जल छोडकर प्राणायाम करना चाहिए। यहां प्राणायाम करते समय–सांस खींचते समय अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः इन स्वरों का उच्चारण करना चाहिए। यह 'पूरक' कहलाता है। कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग, के वर्णों से कुंभक अर्थात् सांस रोकनी चाहिए। अन्त में सांस छोडते समय– य, र, ल, व, श, ष, स तथा ह– इन आठ वर्णों का उच्चारण करना चाहिए। इसे 'रेचक' कहते हैं। इस प्राणायाम के उपरान्त ऋष्यादि न्यास किया जाता है, उसका प्रकार है –

ॐ अं ब्रह्मणे ऋषये नमः आं शिरसि।

ॐ इं गायत्री छन्दसे नमः ईं मुखे।

ॐ उं सरस्वती देवतायै नमः ऊं हृदये।

ॐ एं हलभ्योः बीजेभ्यो नमः ऐं गुह्ये।

ॐ ओं स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः औं पादयोः।

ॐ अं क्षं कीलकाय नमः अः सर्वाङ्गे।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

करन्यासः –

ॐ अं कं खं गं घं ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः। (हृदयाय नमः)
ॐ इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः। (शिरसे स्वाहा)
ॐ उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः। (शिखायै वषट्)
ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः। (कवचाय हुम्)
ॐ ओं यं रं लं वं औं नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः। (नेत्रत्रयाय वौषट्)
ॐ अं शं षं सं हं अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। (अस्त्राय फट्)

इसी प्रकार हृदयादि न्यास करना चाहिए।

इसके बाद कण्ठस्थ षोडश दल पद्म में '६ॐ अं नमः'' इस क्रम से सोलह स्वरों का न्यास किया जाता है। ये हैं–अं, आं, इं, ईं, उं, ऊं, ऋं, लृं, लॄं, एं, ऐं, ओं, औं, अं, अः। ततः हृदय में स्थित द्वादशदल में ॐ कं नमः से लेकर ठं नमः तक बारह वर्णों का न्यास किया जाता है। फिर नाभिकमल में, जिसके दश दल हैं– ॐ डं नमः से प्रारंभ कर फं नमः तक वर्णन्यास करना चाहिए और गुह्येन्द्रिय पर स्थित षड्दल में– ॐ बं नमः से लं नमः तक तथा आधारकमल (गुदा) में चार वर्णों – ॐ वं नमः से सं नमः तक वर्ण विन्यास किया जाता है। अन्त में ललाट में स्थित द्विदल में– ॐ हं नमः तथा ॐ क्षं नमः का न्यास होता है। ततश्च ध्यान किया जाता है–

आधारे लिंगनाभौ प्रकटितहृदये तालुमूले ललाटे
द्वे पत्रे षोडशारे द्विदश दशदले द्वादशार्धश्चतुष्के।
वासान्ते बालमध्ये डफकरसहिते कंठदेशे स्वराणां
हं सं तत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ बहिर्मातृका न्यासः

सभी देवताओं के जयार्थ लिपि विन्यास अत्यावश्यक माना गया है। इसलिए सर्वप्रथम लिपि का न्यास किया जाता है। तन्त्रशास्त्र में लिखा है –

जयार्थं सर्वदेवानां विन्यासे च लिपेर्विना।
कृते तद् विफलं विद्यात् तदादौ तु लिपिं न्यसेत्।।

विनियोग – ॐ अस्य श्री बहिर्मातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः मातृका सरस्वती देवी देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, क्षं कीलकं अखिलाप्तये न्यासे विनियोगः।

न्यास के विनियोग के बाद प्राणायाम करना चाहिये। प्राणायाम करते समय इडा से समस्त स्वरों से श्वास को पूर्ण करना चाहिए। (अ इ उ ऋ लृ ए ऐ ओ औ अं अः–स्वर) फिर कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग तथा पवर्ग के वर्णों से श्वास का कुंभक–(रोकना) करना चाहिए तथा शेष आठ वर्णों– य, र, ल, व, श, ष, स तथा ह से रेचक अर्थात् श्वास को निकालना चाहिए।

अथ ऋष्यादिन्यासः –

ॐ अं ब्रह्मणे ऋषये नमः आं शिरसि।
ॐ इं गायत्रीछन्दसे नमः ईं मुखे।
ॐ उ सरस्वती देवतायै नमः ऊं हृदि।
ॐ एं हलभ्यो बीजेभ्यो नमः ऐं गुह्ये।
ॐ ओं स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः औं पादयोः।
ॐ अं क्षं कीलकाय नमः अः सर्वाङ्गे।

अथ करन्यासः, हृदयादिन्यासः —

ॐ अं कं खं गं घं ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः
ॐ इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः
ॐ उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः
ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः
ॐ ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः
ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ अं कं खं गं घं ङं आं हृदयाय नमः
ॐ इं चं छं जं झं ञं ईं शिरसे स्वाहा
ॐ उं टं ठं डं ढं णं ऊं शिखायै वषट्
ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हुम्
ॐ ओं पं फं बं भं मं औं नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

मृगबालं वरं विद्यामक्षसूत्रं दधत् करैः।
माला विद्या लसद्हस्तां वहन् ध्येयः शिवो गिरः॥

फिर बहिर्मातृका न्यास करे।

ॐ अं नमः शिरसि — ॐ आं नमः मुखे
ॐ इं नमः दक्षिणनेत्रे — ॐ ईं नमः वामनेत्रे
ॐ उं नमः दक्षिणकर्णे — ॐ ऊं नमः वामकर्णे
ॐ ऋं नमः दक्षिणनासापुटे — ॐ ॠं नमः वामनासापुटे
ॐ लृं नमः दक्षिणकपोले — ॐ ॡं नमः वामकपोले
ॐ एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे — ॐ ऐं नमः अधरोष्ठे
ॐ ओं नमः ऊर्ध्वदन्तपंवतौ — ॐ औं नमः अधोदन्तपंक्तौ
ॐ अं नमः मूर्ध्नि — ॐ अः नमः मुखवृत्ते
ॐ कं नमः दक्षिणबाहुमूले — ॐ खं नमः दक्षिणकूपरे
ॐ गं नमः दक्षिणमणिबन्धे — ॐ घं नमः दक्षिणहस्तांगुलिमूले
ॐ ङं नमः दक्षिणहस्तांगुल्यग्रे — ॐ चं नमः वामबाहुमूले
ॐ छं नमः वाम कूपरे — ॐ जं नमः वाम मणिबन्धे
ॐ झं नमः वाम हस्तांगुलिमूले — ॐ ञ नमः वामहस्तांगुल्यग्रे
ॐ टं नमः दक्षिणपादमूले — ॐ ठं नमः दक्षिणजानुनी
ॐ डं नमः दक्षिणपादांगुलिमूले — ॐ ढं नमः दक्षिणपादांगुल्यग्रे
ॐ णं नमः वामपादमूले — ॐ तं नमः वामपादमूलाग्रे
ॐ थं नमः वाम जानुनी — ॐ दं नमः वामगुल्फे

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ धं नमः वापादांगुलिमूले ॐ नं नमः वामपादांगुल्यग्रे
ॐ पं नमः दक्षिणपार्श्वे ॐ फं नमः वामपार्श्वे
ॐ बं ममः पृष्ठे ॐ भं नमः नाभौ
ॐ मं नमः उदरे ॐ यं त्वगात्मने नमः हृदि
ॐ रं असृगात्मने नमः दक्षांसे ॐ लं मांसात्मने नमः ककुदि
ॐ वं मेदात्मने नमः वामांसे
ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि दक्षहस्तान्तम्
ॐ षं नमः मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तान्तम्
ॐ सं शुक्रात्मने नमः हृदयादि दक्षपादान्तम्
ॐ हं आत्मने नमः हृदयादि वामपादान्तम्
ॐ लं परमात्मने नमः जठरे
ॐ क्षं प्राणात्मने नमः मुखे

इस प्रकार विन्यास कर ध्यान करे–

ध्यानम्

ॐ पञ्चाशल्लिपिभिर्विभक्तसुखदोः यत्सन्धिवक्षस्थलां
भास्वन्मौलिनिबद्धचन्द्रशकलामापीनतुंगस्तनीम् ।
मुद्रामक्षगुणं सुदाढ्र्य–कलशं विद्यां च हस्ताम्बुजै–
र्विभ्राणां विशदप्रभां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये ॥

॥ इति बहिर्मातृका-न्यासः ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

२. अथ सारस्वत-न्यासः

इस 'सारस्वत न्यास' का फल है – मूर्खता का नाश।
लिखा है –**"अस्मिन् सारस्वते न्यासे कृते जाड्यं विनश्यति।"**

अथ न्यास विधिः–

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः कनिष्ठयोः। (दोनों कनिष्ठा अंगुलियों का स्पर्श)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः अनामिकयोः। (दोनों अनामिका अंगुलियों का स्पर्श)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः मध्यमयोः। (दोनों मध्यमा अंगुलियों का स्पर्श)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः तर्जन्योः। (दोनों तर्जनी अंगुलियों का स्पर्श)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः अंगुष्ठयोः। (दोनों अंगूठों अंगुलियों का स्पर्श)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः करतलयोः। (दोनों हाथ के तलुओं का स्पर्श)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः करपृष्ठयोः। (दोनों हाथ के पृष्ठ का स्पर्श)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः मणिबन्धयोः। (दोनों मणिबन्धों का स्पर्श)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः कूर्परयोः। (दोनों कुहनियों का स्पर्श)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः हृदये। (हृदय का स्पर्श)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिरसि। (शिर का स्पर्श)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिखायाम्। (शिखा का स्पर्श)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः कवचे। (स्कन्धों का स्पर्श)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः नेत्रयोः। (दोनों नेत्रों का स्पर्श)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः अस्त्राय फट्। (दोनों हाथों के पृष्ठ का)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः पूर्वे। (पूर्व दिशा में)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः आग्नेये।	(आग्नेय कोण में)
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः याम्याम्।	(दक्षिण में)
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः नैर्ऋत्ये।	(नैर्ऋत्य कोण में)
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः पश्चिमे।	(पश्चिम में)
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः वायव्ये।	(वायव्य कोण में)
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः उत्तरे।	(उत्तर में)
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः ईशान्ये।	(ईशानकोण में)
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः ऊर्ध्वे।	(ऊपर की ओर)
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः अधः।	(नीचे की ओर)

॥ इति सारस्वतो न्यासः ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

३. अथ तृतीयो मातृकागण–न्यासः

इस तृतीय न्यास के करने का फल है – कर्ता त्रिलोकी को जीत लेता है– लिखा है – ''तृतीयेऽस्मिन् कृते न्यासे त्रैलोक्य-विजयी भवेत्॥

अथ न्यास विधिः –

ॐ ह्रीं ब्रह्माणी पूर्वतः मां पातु।
ॐ ह्रीं माहेश्वरी आग्नेय्यां मां पातु।
ॐ ह्रीं कौमारी दक्षिणे मां पातु।
ॐ ह्रीं वैष्णवी नैऋत्ये मां पातु।
ॐ ह्रीं वाराही पश्चिमे मां पातु।
ॐ ह्रीं नारसिंही वायव्ये मां पातु।
ॐ ह्रीं ऐन्द्री उत्तरे मां पातु।
ॐ ह्रीं चामुण्डा ईशाने मां पातु।
ॐ ह्रीं व्योमेश्वरी ऊर्ध्वं मां पातु।
ॐ ह्रीं नागेश्वरी पाताले मां पातु।

॥ इति तृतीयो मातृकागण–न्यासः ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

४. अथः चतुर्थः षड्देवी न्यासः

इस न्यास का फल बताया गया है कि इसके करने से वृद्धावस्था व मृत्यु का भय समाप्त हो जाता है–"**तुर्यं न्यासं नरः कुर्याज्जरा मृत्युं व्यपोहति॥**"

अथ न्यास-विधिः –

ॐ कमलाङ्कुशमण्डिता नन्दजा पूर्वाङ्गं मे पातु।
ॐ खड्गपात्रधरा रक्तदन्तिका दक्षिणाङ्गं मे पातु।
ॐ पुष्पपल्लवमूलादिहस्ता शाकम्भरी पश्चिमाङ्गं मे पातु।
ॐ धनुर्बाणधरा दुर्गार्तिहारिणी दुर्गा वामाङ्गं मे पातु।
ॐ शिरः पात्रकरा भीमा मस्तकाच्चरणपर्यन्तं मे पातु।
ॐ चित्रकान्तिभृद् भ्रामरी चरणाभ्यां शिरः पर्यन्तं मे पातु।

॥ इति चतुर्थः न्यासः॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

५. अथ पञ्चमो ब्रह्मादि-न्यासः

इस न्यास के करने का फल है – मनुष्य समस्त कामनाओं को प्राप्त कर लेता है लिखा है – ''कृतेऽस्मिन् पञ्चमे न्यासे सर्वान् कामानवाप्नुयात्।।''

न्यास-विधिः -

ॐ ब्रह्मा सनातन पादादि-नाभिपर्यन्तं मां पातु।
ॐ जनार्दनः नाभेर्विशुद्धि-पर्यन्तं नित्यं मां पातु।
ॐ रुद्रस्त्रिलोचनः विशुद्धेर्ब्रह्मरन्ध्रान्तं मां पातु।
ॐ हंसः पादद्वयं मे पातु।
ॐ वैनतेयः करद्वयं मे पातु।
ॐ वृषभश्चक्षुषी मे पातु।
ॐ गजाननः सर्वाङ्गानि मे पातु।
ॐ सर्वानन्दमयो हरिः परापरौ देहभागौ मे पातु।

॥ इति पंचमः न्यासः ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

६. अथ षष्ठो लक्ष्म्यादि-न्यासः

इस छठे न्यास के करने से मनुष्य सद्गति को प्राप्त करता है। लिखा है– "षष्ठेऽस्मिन् विहिते न्यासे सद्गतिं प्राप्नुयान्नरः॥"

न्यास विधिः -

ॐ अष्टादश भुजा सती महालक्ष्मीर्मध्यं मे पातु।
ॐ अष्टभुजा सरस्वती ऊर्ध्वं मे पातु।
ॐ दशभुजा मण्डिता महाकाली अधः मे पातु।
ॐ सिंहः हस्तद्वयं मे पातु।
ॐ परहंसः अक्षिमण्डलं मे पातु।
ॐ महिषेण समायुक्तः प्रेतः पादद्वयं मे पातु।
(ॐ दिव्यमहिषारूढो यमः पादद्वयं मे पातु।)
ॐ महेशानः चण्डिका च सर्वाङ्गानि मे पातु।

॥ इति षष्ठः लक्ष्म्यादिन्यासः ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

७. अथ सप्तमः बीजमन्त्र–न्यासः

इस न्यास के करने से मनुष्य का रोग नष्ट होता है
लिखा है – **"विन्यसेत् सप्तमे न्यासे कृते रोगक्षयो भवेत्"** ॥

न्यासविधिः –

ॐ ऐं नमः शिखायाम् (ब्रह्मरन्ध्रे)
ॐ ह्रीं नमः दक्षिण नेत्रे।
ॐ क्लीं नमः वाम नेत्रे।
ॐ चां नमः दक्षिण कर्णे।
ॐ मुं नमः वामकर्णे।
ॐ डां नमः दक्षिण नासापुटे।
ॐ यैं नमः वाम नासापुटे।
ॐ विं नमः मुखे।
ॐ च्चें नमः गुदे।

॥ इति बीजन्यासः सप्तमः ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

८. अथ अष्टमो विलोम-बीजन्यासः

इस न्यास का फल है – सभी दुःखों का नष्ट होना।
लिखा है – "**कृतेस्मिन्नष्टमे न्यासे सर्वदुःखं विनश्यति॥**"

न्यासविधि :– इसमें मतभेद प्राप्त होता है–

ॐ च्चें नमः गुदे।	ॐ ऐं नमः गुदे
ॐ विं नमः मुखे।	ॐ ह्रीं नमः मुखे
ॐ यैं नमः वामनासापुटे।	ॐ क्लीं नमः वामनासापुटे।
ॐ डां नमः दक्षनासापुटे।	ॐ चां नमः दक्षनासापुटे।
ॐ मुं नमः वामकर्णे।	ॐ मुं नमः वामकर्णे।
ॐ चां नमः दक्षकर्णे।	ॐ डां नमः दक्षकर्णे।
ॐ क्लीं नमः वामनेत्रे।	ॐ यैं नमः वामनेत्रे।
ॐ ह्रीं नमः दक्ष नेत्रे।	ॐ विं नमः दक्षनेत्रे।
ऐं नमः नमः शिखायाम्।	ॐ च्चैं नमः ब्रह्मरन्ध्रे।

॥ इति नवमो विलोम-बीजन्यासः ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

९. अथ नवमो मन्त्रन्यासः

इस नवम न्यास करने से देवत्व की प्राप्ति होती है–
लिखा है – **"कुर्वीत नवमं न्यासं मन्त्रव्याप्तिस्वरूपकम्।"**

न्यास-विधि :–

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' नमः मस्तक से चरण पर्यन्त पूर्वाङ्ग में
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' नमः मस्तक से चरण पर्यन्त दक्षिणांग में।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' नमः मस्तक से चरण पर्यन्त पृष्ठ भाग में।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' नमः मस्तक से चरण पर्यन्त वाम अंग में।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' नमः मस्तक से पाद पर्यन्त।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' नमः पाद से शिर तक न्यास करे।

॥ इति नवमो मन्त्रन्यासः ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

१०. अथ दशमः षडंगन्यासः

इस दशम न्यास का फल है – त्रिलोकी को वश में करना।
लिखा है– ''कृतेऽस्मिन् दशमे न्यासे त्रैलोक्यं वशगं भवेत्॥''

न्यासविधिः –

ॐ 'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' नमः हृदयाय नमः।
ॐ 'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे' नमः शिरसे स्वाहा।
ॐ 'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे' नमः शिखायै वषट्।
ॐ 'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे' नमः कवचाय हुम्।
ॐ 'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे' नमः नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ 'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे' नमः अस्त्राय फट्।

॥ इति षडङ्ग-न्यासः ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ एकादश न्यासः

यह न्यास सर्वसिद्धिप्रद माना गया है। इसमें सप्तशती के मन्त्रों से न्यास किया जाता है। प्रारम्भ में ऐं ह्रीं क्लीं इन तीनों बीजों का सम्पूर्ण शरीर में ध्यान करना चाहिए। शक्तिमान् होने के लिए इसका विधान किया गया है।

न्यासविधिः–

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शंखिनी चापिनी बाणभुशुण्डी परिघायुधा ॥१॥ **नाभौ**

ॐ सौम्या सौम्यतराशेष सौम्येभ्यस्त्वति-सुन्दरी।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥२॥ **दक्षिणोरू**

ॐ यच्च किञ्चित् क्वचिद्वस्तु सदसद् वाखिलात्मिके।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे मया ॥३॥ **वामोरू**

ॐ यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत्।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥४॥ **गुल्फौ**

ॐ विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च।
कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत् ॥५॥ **चरणौ**

आद्यं ऐं बीजं कृष्णतरं ध्यात्वा सर्वाङ्गे विन्यसामि।

कृष्ण वर्ण का ध्यान कर नाभि से चरण तक व्यापक मुद्रा से विन्यास करना चाहिए। इसके बाद बालार्क सदृश रक्तवर्ण का ध्यान कर निम्नलिखित ४ मन्त्रों से ह्रीं बीज साहित कण्ठ से नाभि तक अंगों में न्यास करना चाहिए।

ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घंटास्वनेन नः पाहि चापज्यानिः स्वनेन च॥१॥ **कण्ठे**

ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि॥२॥ **हृदये**

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तैरक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥३॥ **उदरे**

ॐ खड्ग-शूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेम्बिके।
करपल्लवसंगीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥४॥ **नाभौ**

द्वितीयं ह्रीं बीजं सूर्य सदृशं ध्यात्वा कण्ठादिनाभ्यन्तं न्यसेत्।

इसके बाद शुद्ध स्फटिक के समान श्वेत वर्ण का ध्यान कर निम्नलिखित ५ मन्त्रों से क्लीं बीज सहित मूर्धा से कण्ठ तक न्यास करना चाहिए –

'तृतीयं क्लीं बीजं स्फटिकाभं ध्यात्वा सर्वांगे न्यसेत्।'

ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि! दुर्गे! देवि! नमोस्तु ते॥१॥ **मूर्ध्नि**

ॐ एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्।
पातु नः सर्वभूतेभ्यः कात्यायनि ! नमोस्तु ते॥२॥ **ललाटे**

ॐ ज्वाला करालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम्।
त्रिशूलं पातु नो भीते भद्रकालि ! नमोस्तु ते ॥३॥ **नेत्रयोः**

ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि ! पापेभ्यो नः सुतानिव ॥४॥ **मुखे**

ॐ असुरासृग्वसापंक – चर्चितस्ते करोज्वलः।
शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके ! त्वां नता वयम्॥५॥ **कण्ठे**

॥ इति एकादश न्यासः ॥

इसके बाद मूल षडंगन्यास व दिङ्न्यास का विधान प्राप्त होता है। मूल षडङ्गन्यास में मूलमन्त्र नवार्ण का करन्यास व हृदयादि न्यास है। जैसे–

ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ 'ह्रीं' तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ 'क्लीं' मध्यमाभ्यां नमः, ॐ 'चामुण्डायै' अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ 'विच्चे' कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इसी प्रकार–

ॐ 'ऐं' हृदयाय नमः। - ॐ 'ह्रीं' शिरसे स्वाहा।
ॐ 'क्लीं' शिखायै वषट्। ॐ 'चामुण्डायै' कवचाय हुम्।
ॐ 'विच्चे' नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ 'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' अस्त्राय फट्।

इसके बाद अक्षर न्यास किया जाता है–

ॐ 'ऐं' नमः शिखायाम्। - ॐ 'ह्रीं' नमः दक्षिण नेत्रे।
ॐ 'क्लीं' नमः वाम नेत्रे। ॐ 'चां' नमः दक्षिण कर्णे।
ॐ 'मुं' नमः वाम कर्णे। ॐ 'डां' नमः दक्षिणनासायाम्।
ॐ 'यैं' नमः वाम नासायाम्। ॐ 'विं' नमः मुखे।
ॐ 'च्चें' नमः गुह्ये। -

इस प्रकार विन्यास कर मूल मन्त्र से आठ बार व्यापक करना चाहिए।

॥ अथ दिङ्न्यासः ॥

ॐ 'ऐं' प्राच्यै नमः **(पूर्व में)**
ॐ 'ऐं' आग्नेय्यै नमः। **(आग्नेय कोण में)**
ॐ 'ह्रीं' दक्षिणायै नमः **(दक्षिण में)**
ॐ 'ह्रीं' नैऋत्यै नमः **(नैऋत्य कोण में)**
ॐ 'क्लीं' प्रतीच्यै नमः **(पश्चिम में)**
ॐ 'क्लीं' वायव्यै नमः **(वायव्य कोण में)**
ॐ 'चामुण्डायै' उदीच्यै नमः **(उत्तर दिशा में)**
ॐ 'चामुण्डायै' ऐशान्यै नमः **(ईशान कोण में)**
ॐ 'ऐं' ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे'– ऊर्ध्वायै नमः **(ऊपर की ओर)**
ॐ 'ऐं' ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे, भूम्यै नमः **(नीचे की ओर)**

उच्चारण करते हुए चुटकी बजाना चाहिए।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इन समस्त व प्रमुख एकादश न्यासों को करने के पश्चात् 'योनिमुद्रा के द्वारा स्वयं का देवी के रूप में ध्यान कर अपने हृदय में पूजा पीठ की भावना कर उसके मध्य में मूल नवार्ण मन्त्र के तीनों बीजों का ध्यान कर मध्य के बीज 'ह्रीं' में समस्त देवों के शरीर से उत्पन्न तेजोमयी महालक्ष्मी के रहस्योक्त स्वरूप का ध्यान कर देवी के साथ स्वयं की एक रूपता की भावना करनी चाहिए। ततश्च दक्षिण में अर्थात् अपनी दांयी ओर प्रथम बीज 'ऐं' में श्री महाकाली के रहस्यों का स्वरूप का ध्यान कर श्री महालक्ष्मी के वाम भाग में तृतीय बीज 'क्लीं' का महासरस्वती के रहस्यों का स्वरूप का ध्यान करना चाहिए। पूर्वोक्त तीनों शक्तियों के ध्यान में उनके आयुधों का भी ध्यान किया जाता है। यह सब आन्तरिक पूजा है। इसके बाद बाह्य पूजा होती है। इसका प्रकार गुरुमुख से प्रत्यक्षतः जानना चाहिए।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

॥ अथ सरस्वती स्तोत्रम् ॥

श्री भैरव उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि स्तोत्रं परमदुर्लभम्।
वागीश्या मन्त्रगर्भं तु भुक्तिमुक्तिफलप्रदम्॥

संकल्प :–

अस्य श्री वाग्वादिनी शारदा स्तोत्रमन्त्रस्य मार्कण्डेय-आश्वलायन ऋषिः स्रग्धरा-अनुष्टुप् छन्दः, श्री सरस्वती देवता, ह्रीं बीजं, ॐ शक्तिः, ऐं कीलकम्–आशु वाग्विवृद्धये जपे विनियोगः।

ध्यानम्

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्॥

ब्रह्मोवाच

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हृद्यैकबीजे शशिरुचिकमले कल्पविस्पष्टशोभे
भव्ये भव्यानुकूले कुमतिवनदहे विश्ववन्द्याङ्घ्रिपद्मे।
पद्मे पद्मोपविष्टे प्रणतजनमनो मोदसंपादयित्री!
प्रोत्प्लुष्टाज्ञानकूटे हरि–निज–दयिते देवि ! संसारसारे॥

ॐ ऐं ऐं ऐं इष्टमन्त्रे कमलभवमुखाम्भोजरूपे स्वरूपे
रूपारूपप्रकाशे सकलगुणमये निर्गुणे निर्विकारे।
न स्थूले नैव सूक्ष्मेऽप्यविदितविषये नापि विज्ञानतत्त्वे
विश्वे विश्वान्तराले सुरवरनमिते निष्कले नित्यशुद्धे॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं जापतुष्टे हिमरुचिमुकुटे वल्लकी–व्यग्रहस्ते
मातर्मातर्नमस्ते दह दह जडतां देहि बुद्धि–प्रशस्ताम्।
विद्ये वेदान्तगीते श्रुतिपरिपठिते मोक्षदे मुक्तिमार्गे
मार्गातीतप्रभावे भव मम वरदे शारदे शुभ्रहारे॥

ॐ धीं धीं धीं धारणाख्ये धृतिमतिनुतिभिर्नामभिः कीर्तनीये
नित्येऽनित्ये निमित्ते मुनिगणनमिते नूतने वै पुराणे।
पुण्ये पुण्यप्रभावे हरिहर–नमिते नित्यशुद्धे सुवर्णे
मन्त्रे मन्त्रार्थ–तत्त्वे मति–मति–मतिदे माधवप्रीतिनादे॥

ॐ ह्रीं श्रीं ध्रीं ह्रीं स्वरूपे दह दह दुरितं पुस्तक–व्यग्रहस्ते
सन्तुष्टाकारचित्ते स्मितमुखि ! सुभगे जृम्भिणी स्तंभविद्ये।
मोहे मुग्धप्रभावे मम कुरु विमतिं ध्वान्त–विध्वंसनीये
गीर्गीर्वाग् भारतीत्वं कविवृषरसने सिद्धिदे सिद्धविद्ये॥

स्तौमि त्वां त्वां च वन्दे भज मम रसनां मा कदाचित्त्यजेथाः
मा मे बुद्धिर्विरुद्धा भवतु च न मनो देवि मे यातु पापम्।
मा मे दुःखं कदाचिद् विपदि च समयेऽप्यस्तु मे नाकुलत्वं
शास्त्रे वादे कवित्वे प्रसरतु मम धीर्मास्तु कुंठा कदाचित्॥

इत्येतैः श्लोकमुख्यैः प्रतिदिनमुषसि स्तौति यो भक्तिनम्रो
वाणीं वाचस्पतेरप्यभिमतविभवो वाक्पटुर्मृष्टपंकः।
सस्यादिष्टार्थलाभः सुतमिव सततं पातितं सा च देवी
सौभाग्यं तस्य लोके प्रसरति कविता विघ्नमस्तं प्रयाति॥

ब्रह्मचारी व्रती मौनी त्रयोदश्यां निरामिषः।
सारस्वतो नरः पाठात् सस्यादिष्टार्थ–लाभवान्॥

पक्षद्वयेऽपि यो भक्त्या त्रयोदश्येकविंशतिम्।
अविच्छेदं पठेद् धीमान् ध्यात्वा देवीं सरस्वतीम्॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शुक्लाम्बरधरां देवीं शुक्लाभरण–भूषिताम्।
वाञ्छितं फलमाप्नोति स लोके नात्र संशयः॥

इति ब्रह्मा स्वयं प्राह सरस्वत्याः स्तवं शुभम्।
प्रयत्नेन पठेन्नित्यं सोऽमृतत्वं च गच्छति॥

॥ इति रुद्रयामले तन्त्रे दशविद्या रहस्ये सरस्वती-स्तोत्रम् ॥

*

गु शब्दस्त्वन्धकारः स्याद्रु शब्दस्तन्निरोधकः।
अन्धकार–निरोधित्वाद् गुरुरित्यभिधीयते॥

गकाराद् ज्ञानसम्पत्ती रेफः पापस्य दाहकः।
उकाराच्छिवतादात्म्यं दद्यादिति गुरुः स्मृतः॥

मननं विश्वविज्ञानं त्राणं संसार–बन्धनात्।
यतः करोति स सिद्धो मन्त्र इत्युच्यते ततः॥

*

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अथ ब्रह्माण्ड–विजयं नाम दुर्गा–कवचम्

नारायण उवाच

शृणु देवि ! प्रवक्ष्यामि दुर्गायाः कवचं शुभम्।
श्रीकृष्णेनैव यद्–दत्तं गो–लोके ब्रह्मणे पुरा ॥१॥

ब्रह्मा-त्रिपुर–संग्रामे शंकराय ददौ पुरा।
जघान त्रिपुरं रुद्रो यद् धृत्वा भक्ति–पूर्वकम् ॥२॥

हरो ददौ गौतमाय पद्माक्षाय च गौतमः।
यतो बभूव पद्माक्षः सप्त–द्वीपेश्वरो जयी ॥३॥

यद् धृत्वा पठनाद् ब्रह्मा ज्ञानवाञ्छक्तिमान् भुवि।
शिवो बभूव सर्वज्ञो योगिनां च गुरुर्यतः।
शिव–तुल्यो गौतमश्च बभूव मुनि–सत्तमः ॥४॥

ब्रह्माण्ड–विजयस्यास्य कवचस्य प्रजापतिः।
ऋषिश्छन्दश्च गायत्री देवी दुर्गति–नाशिनी ॥५॥

ब्रह्माण्ड–विजये चैव विनियोगः प्रकीर्तितः।
पुण्य–तीर्थं च महतां कवचं परमाद्भुतम् ॥६॥

ॐ ह्रीं दुर्गति–नाशिन्यै स्वाहा मे पातु मस्तकम्।
ॐ ह्रीं मे पातु कपालं च ॐ ह्रीं श्रीं मम लोचने ॥७॥

पातु मे कर्ण–युग्मं च ॐ दुर्गायै नमः सदा।
ॐ ह्रीं श्रीं मम नासां मे सदा पातु च सर्वतः ॥८॥

ह्रीं श्रीं ह्रीं मम दन्तानि पातु क्लीमोष्ठ–युग्मकम्।
क्रीं क्रीं क्रीं पातु कण्ठं च दुर्गे रक्षतु गण्डकम् ॥९॥

स्कन्धं दुर्ग–विनाशिन्यै स्वाहा पातु निरन्तरम्।
वक्षो बिपद्–विनाशिन्यै स्वाहा मे पातु सर्वतः ॥१०॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दुर्गे दुर्गे रक्षिणि च स्वाहा नाभिं सदाऽवतु ।
दुर्गे दुर्गे रक्ष रक्ष पृष्ठं मे पातु सर्वतः ॥११॥

ॐ ह्रीं दुर्गायै स्वाहा च हस्तौ पादौ सदाऽवतु।
ॐ ह्रीं दुर्गायै स्वाहा च सर्वाङ्गं मे सदाऽवतु ॥१२॥

प्राच्यां पातु महा–माया आग्नेयां पातु कालिका।
दक्षिणे दक्ष–कन्या च नैर्ऋत्यां शिव–सुन्दरी ॥१३॥

पश्चिमे पार्वती पातु वाराही वायव्यां सदा।
कुबेर–माता कौबेर्यामैशान्यामीश्वरी सदा ॥१४॥

ऊर्ध्वं नारायणी पातु अम्बिकाधः सदाऽवतु।
ज्ञाने ज्ञान–प्रदा पातु स्वप्ने निद्रा सदाऽवतु ॥१५॥

एवं ते कथितं वत्स सर्व–मन्त्रौघ–विग्रहम्।
ब्रह्माण्ड–विजयं नाम कवचं परमाद्भुतम् ॥१६॥

सुस्नाताः सर्व–तीर्थेषु सर्व–यज्ञेषु यत्–फलम्।
सर्व–व्रतोपवासे च तत्–फलं लभते नरः ॥१७॥

गुरुमभ्यर्च्य विधिवद् वस्त्रालंकार–चन्दनैः।
कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ कवचं धारयेत्तु यः ॥१८॥

स च त्रैलोक्य–विजयी सर्व–शत्रु–प्रमर्दकः।
इदं कवचमज्ञात्वा भजेद् दुर्गति–नाशिनीम् ॥१९॥

सप्त–लक्ष–प्रजप्तोऽपि न मन्त्रः सिद्धि–दायकः ॥२०॥

कवचं काण्व–शाखोक्तमुक्तं नारद ! सुन्दरम् ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं गोपनीयं सुदुर्लभम् ॥२१॥

॥ इति श्रीब्रह्म–वैवर्ते ब्रह्माण्ड–विजयं नाम दुर्गा–कवचम्॥

*

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

॥ सिद्धकुञ्जिकास्तोत्रम् ॥

॥ शिव उवाच ॥

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि कुञ्जिका-स्तोत्रमुत्तमम्।
येन मन्त्र-प्रभावेण चण्डी-जापः शुभो भवेत्॥१॥

न कवचं नार्गला-स्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम्।
न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम् ॥२॥

कुञ्जिका-पाठ-मात्रेण दुर्गा-पाठ-फलं लभेत्!
अति-गुह्यतरं देवि! देवानामपि दुर्लभम्॥३॥

गोपनीयं प्रयत्नेन स्व-योनिरिव पार्वति!
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।
पाठ-मात्रेण संसिद्ध्येत् कुञ्जिका-स्तोत्रमुत्तमम्॥४॥

॥ अथ मन्त्रः ॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥ ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा।

॥ स्तोत्रम् ॥

नमस्ते रुद्र-रूपिण्यै नमस्ते मधु-मर्दिनि।
नमः कैटभ-हारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि॥१॥

नमस्ते शुम्भ-हन्त्र्यै च निशुम्भासुर-घातिनि॥२॥

जाग्रतं हि महा-देवि! जपं सिद्धं कुरुष्व मे।
ऐंकारी सृष्टि-रूपायै ह्रींकारी प्रति-पालिका ॥३॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

क्लीं कारी काम-रूपिण्यै बीज-रूपे नमोऽस्तु ते।
चामुण्डा चण्ड-घाती च यैकारी वर-दायिनी ॥४॥

विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्र-रूपिणि ॥५॥

धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि! शां शीं शूं मे शुभं कुरु ॥६॥

हुं हुं हुंकार-रूपिण्यै जं जं जं जम्भ-नादिनी।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी-भद्रे भवान्यै ते नमो नमः ॥७॥

अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं धिजाग्रं।
धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा ॥
पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा ॥८॥

सां सीं सूं सप्तशती-देव्या मन्त्र-सिद्धिं कुरुष्व मे।
इदं तु कुञ्जिका-स्तोत्रं मन्त्र-जागर्ति-हेतवे ॥९॥

अभक्तं नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति ॥१०॥

यस्तु कुञ्जिकया देवि! हीनां सप्तशतीं पठेत्।
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा ॥११॥

॥ श्रीरुद्रयामले गौरीतन्त्रे शिवपार्वतीसंवादे कुञ्जिकास्तोत्रं श्रीगुरवे अर्पणमस्तु ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पर–देवी–सूक्तम्

ॐ अस्य श्रीपर–देवी–सूक्त–माला–मन्त्रस्य मार्कण्डेय–मेधसौ ऋषी। गायत्र्यादि–नाना–विध–छन्दांसि। त्रि–शक्तिरूपिणी चण्डिका देवता। ऐं बीजम्। ह्रीं शक्तिः। क्लीं कीलकं। मम चिन्तित–सकल–मनोरथ–सिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः।

ऋष्यादि–न्यासः

ॐ मार्कण्डेय मेधस–ऋषिभ्यां नमः शिरसि। ॐ गायत्र्यादि–नाना–विध–छन्दोभ्यो नमः मुखे। ॐ त्रिशक्तिरूपिणी चण्डिका–देवतायै नमः हृदये। ॐ ऐं बीजाय नमः गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। ॐ क्लीं कीलकाय नमः नाभौ। मम चिन्तित–सकल–मनोरथ–सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर–न्यासः

ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ऐं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ क्लीं करतल–करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि (षडङ्ग) न्यासः

ॐ ऐं हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ क्लीं शिखायै वषट्। ॐ ऐं कवचाय हुं। ॐ ह्रीं नेत्र–त्रयाय वौषट्। ॐ क्लीं अस्त्राय फट्।

ततः 'ऐं ह्रीं क्लीं' अनेन मन्त्रेण छोटिकाभिर्दिग्–बन्धनम्।

अथ ध्यानम्

ॐ योगाद्ध्यामर–काय–निर्गत–महा–तेजः समुत्पत्तनी ,
भास्वत्–पूर्ण–शशांक–चारु–धवला लीलोल्लसत्–भ्रू–लता ।
गौरी तुंग–कुच–द्वया तदुपरि स्फूर्जत्–प्रभा–मण्डला ,
बन्धूकारुण–काय–कान्ति–विलसच्छ्रीचण्डिका सर्वतः ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एवं ध्यात्वा मानसोपचारैश्च सम्पूज्य सूक्तं पठेत् –

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं हुं सैं सौं हसौं हस्रौं जय जय महालक्ष्मी जगदाद्य–बीजे, सुरासुर–त्रिभुवन–निदाने, दया–करे, सर्व–सर्व–तेजोरूपिणि, महा–महा–महिमे, महा–महा–रूपिणी, महा–महा–माये, महा–माया–स्वरूपिणि, विरञ्चि–संस्तुते, विधि–वरदे, चिदानन्दे, विष्णु–देहावृते, महा–मोहिनी (१०१); मधुकैटभ–जिघांसिनी, नित्य–वरदान–तत्परे, महा–सुधाब्धि–वासिनी, महा–महा–तेजो–धारिणी,सर्वाधारे, सर्व–कारण–कारणे, अचिन्त्य–रूपे, इन्द्रादि–निखिल–निर्जर–सेविते, साम–गान–गायिनि, पूर्णेन्द्रिय–कारिणि, विजये, जयन्ति, अपराजिते, सर्व–सुन्दरि, रक्ताशुंके (१९८); सूर्य–कोटि–संकाशे, चन्द्र–कोटि–सुशीतले, अग्नि–कोटि–दहन–शीले, यम–कोटि–क्रूरे, वायु–कोटि–वहन–शीले, ओंकार–नादरूपिणि, निगमागम–मार्ग–दायिनि, महिषासुर–निर्दलिनी, धूम्रलोचन–क्षय–परायणे, चण्ड–मुण्डादि–शिरश्छेदिनि, रक्तबीजादि–रुधिर–शोषिणि (२९८); रक्त–पान–प्रिय–महा–योगिनि, भूत–वैताल–भैरवादि–तुष्टि–विधायिनि, शुम्भ–निशुम्भ–शिरच्छेदिनि, निखिलासुर–खल–खादिनि, त्रिदश–राज्य–दायिनि, सर्वस्त्री–रत्न–रूपिणि, दिव्य–देहे, निर्गुणे, सगुणे, सदसद्रूप–धारिणि, स्कन्द–वरदे, भक्त–त्राण–तत्परे, वरे, वरदे (३९७); सहस्राक्षरे, अयुताक्षरे, सप्त–कोटि–चामुण्डा–रूपिणि, नव–कोटि–कात्यायनि–स्वरूपे, अनेक–शक्त्यालक्ष्यालक्ष्यस्वरूपे, इन्द्राणि, ब्रह्माणि, रुद्राणि, कौमारि, वैष्णवि, वाराहि, शिव–दूति, ईशानि, भीमे, भ्रामरि, नारसिंहि, त्रयस्त्रिंशत्–कोटि–देव–सेविते, अनन्त–कोटि ब्रह्माण्ड–नायिके, (५०१); चतुरशीति–लक्ष–मुनि–जन–संस्तुते, सप्त–कोटि–मन्त्र–स्वरूपे, महा–काल–रात्रि–प्रकाशे, कला–काष्ठादि–रूपिणि, चतुर्दश–भुवन–विभव–कारिणि, गरुड़–गामिनि, क्रोंकार–होंकार–हैंकार–श्रींकार–क्लौंकार–जूंकार–सौंकार–ऐं–क्लींकार कांकारह् सौकार–नाना–बीज–कूट–निर्मित–शरीरे (६०१); नाना–बीज–मन्त्र–राज–विराजिते, सकल–सुन्दरी–गण–सेविते, चरणारविन्दे, श्रीमहा–त्रिपुर–सुन्दरि, कामेश–दयिते, करुणैक–रस–कल्लोलिनि, कल्पवृक्षाधःस्थिते, चिन्तामणि–द्वीपावस्थिते, मणि–मन्दिर–निवासे, चापिनि, खड्गिणि, चक्रिणि, दण्डिनि, शंखिनि, पद्मिनि, (६९४); निखिल–भैरवाराधिनि, समस्तयोगिनी–परिवृते, कालिके,कालि, तारे,तरले,सुतारे,ज्वालामुखि,छिन्न–मस्तके, भुवनेश्वरि, त्रिपुरे, लोक–जननि, विष्णु–वक्षः–स्थलालंकारिणि, अजिते,अमिते,अमराधिपे,अनूप–चरिते, गर्भ–वास–दुःखापहारिणि, (७९२); मुक्ति–क्षेत्राधिष्ठायिनि, शिवे, शान्तिकुमारी–रूपे, देवी–सूक्त–दश–शताक्षरे, चैन्द्रि,चामुण्डे,महाकाली–महालक्ष्मी–महासरस्वति–त्रयी–विग्रहे ! प्रसीद प्रसीद, सर्व–मनोरथान् पूरय पूरय,सर्वारिष्ट–विघ्नांश्छेदय छेदय, सर्व–ग्रह–पीडा–ज्वर–ग्रह–भयं विध्वंसय विध्वंसय (९०१); सर्वत्र त्रिभुवन–

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जीव–जातं वशय वशय, मोक्ष–मार्गान् दर्शय दर्शय, ज्ञान–मार्गं प्रकाशय प्रकाशय, अज्ञान–तमो नाशय नाशय, धन–धान्यादि–वृद्धिं कुरु कुरु, सर्व–कल्याणिनि ! कल्पय कल्पय, मां रक्ष रक्ष, सर्वापद्भ्यो निस्तारय निस्तारय, मम वज्र–शरीरं साधय साधय, ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा (१०००); नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा ॥

परं देव्या इदं सूक्तं यः पठेत् प्रयतो नरः।
सर्व–सिद्धिमवाप्नोति सर्वत्र विजयी भवेत्॥१॥

संग्रामेषु जयेच्छत्रून् मातंगानिव केसरी।
वशयेन्निखिलान् लोकान् विशेषेण महीपतीन्॥२॥

त्रि–कालं यः पठेन्नित्यं देव्याः सूक्तमिदं परम्।
तस्य विघ्नाः प्रलीयन्ते ग्रह–पीडाश्च दारुणाः॥३॥

पराभिचार–शमनं पर–कृत्या–निवारणम्।
सर्व–कल्याण–निलयं देव्याः सन्तोष–कारणम्॥४॥

सहस्रावृत्तितो देवि ! मनोरथ–समृद्धिदम्।
सहस्रावृत्तितो जपात् सर्व–संकट–नाशनम्॥५॥

त्रि–सहस्रावृत्तितस्तु वशं–कृदं राज–योषितीम्।
शत–त्रयं जपेद् यस्तु वर्षत्रयमतन्द्रितः॥६॥

पश्येत् स चण्डिकां साक्षात् वर–दान–कृतोद्यमाम्।
इदं रहस्यं परमं गोपनीयं प्रयत्नतः॥७॥

न वाच्यं कस्यचिद् देवि ! निधानमिव सुन्दरि ॥ॐ श्रीं॥

॥ इति डामर–तन्त्रे उमा–महेश्वर–संवादे श्रीपर–देवी–सूक्तम्॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आपदुद्धारण बटुकभैरव अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम्

ॐ अस्य श्री आपदुद्धारक-बटुक-भैरव-मन्त्रस्य बृहदारण्यक ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमदापदुद्धारकबटुक-भैरवो देवता, वं ह्रीं बीजम्, ह्रीं बटुकाय शक्तिः, प्रणवः कीलकं, ममाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे सप्तशती पाठाङ्गत्वेन जपे (पाठे) विनियोगः।

॥ ऋष्यादि न्यासः ॥

बृहदारण्यक-ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे। श्रीमदापदुद्धारक-बटुक-भैरव-देवतायै नमः हृदये। वं बीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः, ॐ कीलकाय नमः नाभौ। ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे (पाठे) विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

॥ करन्यासः ॥

ॐ ह्रां वां ईशान-महादेवाय नमः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः (हृदयाय नमः)
ॐ ह्रीं वीं तत्परुष-महादेवाय नमः तर्जनीभ्यां नमः (शिरसि स्वाहा)
ॐ ह्रूं वूं अघोर-महादेवाय नमः मध्यमाभ्यां नमः (शिखायै वषट्)
ॐ ह्रैं वैं महादेवाय नमः अनामिकाभ्यां नमः (कवचाय हुम्)
ॐ ह्रौं वौं सद्योजाताय-महादेवाय नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः (नेत्रत्रयाय वौषट्)
ॐ ह्रः वः पञ्चवक्त्र-महादेवाय नमः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः (अस्त्राय फट्)

षडंगन्यास भी इसी प्रकार करें।

ध्यानम्

शान्तं पद्मासनस्थं शशि-मुकुट-धरं भ्रू-लताङ्गं त्रिनेत्रम्,
शूलं खड्गं च वज्रं परशु-मुसलके दक्षिणाङ्गे वहन्तम्।
नागं पाशं च घण्टां नलिन-कर-युतं साङ्कुशं वाम-भागे।
नानालङ्कार-युक्तं स्फटिक-मणि-निभं नौमि तत्त्वं शिवाख्यम्॥

स्तोत्रम्

ॐ भैरवो भूत-नाथश्च, भूतात्मा भूत-भावनः।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट् ॥१॥

श्मशान-वासी मांसाशी, खर्पराशी स्मरान्तकः।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्ध-सेवितः॥२॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कङ्कालः काल-शमनः काम-काष्ठा तनूः कविः।
त्रि-नेत्रो बहु-नेत्रश्च तथा पिङ्गल-लोचनः ॥३॥

शूल-पाणिः खड्ग-पाणिः कङ्काली धूम्र-लोचनः।
अभीरुर्भैरवी-नाथो, भूतपो योगिनी-पतिः ॥४॥

धनदोऽधन-हारी च, धनवान् प्रतिभाग-वान्।
नाग-हारो नाग-पाशो, व्योम-केशः कपाल-भृत् ॥५॥

कालः कपाल-माली च, कमनीयः कला-निधिः।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रस्त्रिशिखी च त्रिलोचनः ॥६॥

त्रिनेत्र-तनयो डिम्भ-शान्तः शान्त-जन-प्रियः।
बटुको बहु-वेषश्च, खट्वाङ्ग वर-धारकः ॥७॥

भूताध्यक्षः पशुपतिर्भिक्षुकः परिचारिकः।
धूर्तो दिगम्बरः शूरो हरिणः पाण्डु-लोचनः ॥८॥

प्रशान्तः शान्तिदः शुद्धः शङ्कर-प्रिय-बान्धवः।
अष्ट-मूर्त्तिर्निधीशश्च ज्ञान-चक्षुस्तपोमयः ॥९॥

अष्टाधारः षडाधारः, सर्प-युक्तः शिखी-शखः।
भूधरो भूधराधीशो, भूपतिर्भूधरात्मजः ॥१०॥

कङ्काल-धारी मुण्डी च, आन्त्र-यज्ञोपवीत-वान्।
जृम्भणो मोहनः स्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा ॥११॥

शुद्ध-नीलाञ्जन-प्रख्यो दैत्यहा मुण्ड-भूषितः।
बलि-भुग् बलिभुग्-नाथो, बालोऽबाल-पराक्रमः ॥१२॥

सर्वापत्-तारणे दुर्गो दुष्ट-भूत-निषेवितः।
कामी कला-निधिः कान्तः कामिनी-वशकृद्-वशी ॥१३॥

जगद्-रक्षा-करोऽनन्तो माय-मन्त्रौषधी-मयः।
सर्व-सिद्धि-प्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुरितीव हि ॥१४॥

॥ अष्टोत्तर-शतं नाम्ना भैरवस्य महात्मनः ॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नवानुग्रह मन्त्रम्

"ॐ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् ।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥१॥

स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रयात्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥२॥

या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितैरस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते ।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥३॥

या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभि ।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥४॥

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याऽखिलेश्वरि ।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥५॥

सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥६॥

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि ।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥७॥

शरणागतदीनार्त्तपरित्राणपरायणे ।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥८॥

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥९॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अर्पण–मन्त्रम्

१. मन्त्रः – श्रीमार्कण्डेय–उत्तर–पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी–माहात्म्ये सत्या सन्तु मम (यजमानस्य) कामा श्रीजगदम्बार्पणमस्तु।

प्रत्येक अध्याय की अधिष्ठात्री देवी को प्रत्येक अध्याय के पृथक् २ मन्त्रों से पाठ समर्पित करते हैं :–

१. ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शर्वायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताःस्म ताम्॥
ॐ जय जय सांगायै वाग्भवबीजाधिष्ठात्रि
काली चामुण्डा देव्यै महावृतिं समर्पयामि
नमः स्वाहा शक्त्या श्री जगदम्बार्पणमस्तु॥

२. ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शर्वायै सततं नमः।
ॐ जय जय सांगायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्रि महालक्ष्म्यै
महावृतिं समर्पयामि नमः स्वाहा शक्त्या श्री जगदम्बार्पणमस्तु॥

३. ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शर्वायै सततं नमः।
ॐ जय जय सांगायै अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै सहितायै
त्रिगुणात्मिकायै त्रिशक्ति–लक्ष्मि–महावृतिं समर्पयामि
नमः स्वाहा शक्त्या श्री जगदम्बार्पणमस्तु॥

४. ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शर्वायै सततं नमः।

ह्रीं ॐ जय जय सांगायै त्रिगुणात्मिकायै त्रिशक्ति लक्ष्मि महावृतिं समर्पयामि नमः स्वाहा शक्त्या श्री जगदम्बार्पणमस्तु।

५. ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शर्वायै सततं नमः।

ॐ जय जय सांगायै विष्णुमायादि त्रयोविंशति देवताभ्यो महावृतिं समर्पयामि नमः स्वाहा शक्तया श्री जगदम्बार्पणमस्तु।

६. ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शर्वायै सततं नमः।

ॐ जय जय सांगायै शताक्ष्यै धूम्राक्ष्यै महावृतिं समर्पयामि नमः स्वाहा शक्त्या श्री जगदम्बार्पणमस्तु।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

७. ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शर्वायै सततं नमः।

ॐ जय जय सांगायै कर्पूर बीजाधिष्ठात्र्यै काली चामुण्डा देव्यै महावृतिं समर्पयामि नमः स्वाहा शक्त्या श्री जगदम्बार्पणमस्तु।

८. ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शर्वायै सततं नमः।

ॐ जय जय सांगायै अष्टमातृकासहितायै रक्ताक्ष्यै देव्यै महावृतिं समर्पयामि नमः स्वाहा शक्त्या श्री जगदम्बार्पणमस्तु।

९. ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शर्वायै सततं नमः।

ॐ जय जय सांगायै भैरव्यै तारादेव्यै महावृतिं समर्पयामि नमः स्वाहा शक्त्या श्री जगदम्बार्पणमस्तु।

१०. ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शर्वायै सततं नमः।

ॐ जय जय सांगायै सिंहासनायै त्रिशूलवरधारिण्यै महावृतिं समर्पयामि नमः स्वाहा शक्त्या श्री जगदम्बार्पणमस्तु।

११. ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शर्वायै सततं नमः।

ॐ जय जयसांगायै सर्वनारायण्यै महावृतिं समर्पयामि नमः स्वाहा शक्त्या श्री जगदम्बार्पणमस्तु।

१२. ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शर्वायै सततं नमः।

ॐ जय जय सांगायै बाला त्रिपुरसुन्दर्यै अष्टमातृका सहितायै महावृतिं समर्पयामि नमः स्वाहा शक्त्या श्री जगदम्बार्पणमस्तु।

१३. ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शर्वायै सततं नमः।

क्लीं ॐ जय जय सांगायै हिरण्यस्थ–सुरथ–नृप–समाधि वैश्यवरप्रदायै श्रीमहाविद्यायै महावृतिं समर्पयामि नमो नमः स्वाहा शक्त्या श्री जगदम्बार्पणमस्तु।

प्रत्येक अध्याय के समापन पर उक्तानुसार एक एक मन्त्र बोलकर जल छोडकर भगवती को पाठ अर्पण करना चाहिये।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। क्षमा-प्रार्थना ।।

अपराध-सहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि॥१॥

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि॥२॥

मन्त्र-हीनं क्रिया-हीनं भक्ति-हींन सुरेश्वरि।
यत्-पूजितं मया देवि! परिपूर्ण तदस्तु मे॥३॥

अपराध-शतं कृत्वा जगदम्ब तु चोच्चरेत्।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुरः॥४॥

सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके!
इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु॥५॥

अज्ञानाद् विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि! प्रसीद परमेश्वरि॥६॥

कामेश्वरि! जगन्मातः! सच्चिदानन्द-विग्रहे!
गृहाणार्चमिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि॥७॥

गुह्यातिगुह्य-गोप्त्रीं त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि! त्वत्-प्रसादात् सुरेश्वरि॥८॥

।। श्री दुर्गार्पणमस्तु ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ श्री दुर्गामाला मंत्र ।।

ॐ नमो भगवति चामुंडे श्मशानवासिनी कपालहस्ते महाप्रेतसमारुढे महाविमानमालाकुले कालरात्रि बहुगण परिवृते महामुखे महाभुजे घंटाडमरुकिंकिणिके अट्टाट्टहासे किलि किलि हूं सर्वनादशब्दबहुले गजचर्मप्रावृतशरीरे रुधिरमांसदिग्धे लोलाग्रजिह्वे महाराक्षसि रौद्रदंष्टाकराले भीमाट्टहासे स्फुरितविद्युत्समप्रभे चल चल करालनेत्रे हिलिहिलि अनलं प्रवेशय हुं जिह्वे त्रि भृकुटिमुखि ॐ कारं भद्रासने कपालमालावेष्टिते जटामुकुटशशांकधारिणी अट्टाट्टहासे किलि किलि दष्ट्रान् घोरान्धकारिणी सर्वविघ्नविनाशिनी इदं कर्म साधय साधय शीघ्रं कुरु कुरु कह कह अङ्कुशेन तमनु प्रवेशय वंग वंग कम्पय कम्पय चल चल चालय चालय रुधिरमांसपद्मप्रिये हन हन कुट्ट कुट्ट छिन्धि छिन्धि मारय मारय अनुब्रूम वज्रशरीरं साधय साधय त्रैलोक्यगतिमपि दुष्टं वा गृहीतमगृहीतमावेशय आवेशय क्रामय क्रामय नृत्य नृत्य बन्ध बन्ध वल्ग वल्ग कोटराक्षि ऊर्ध्वकेशि उलूक वदने करकिङ्किणि करकं मालाधारिणि दह दह पच पच गृहाण गृहाण मण्डलमध्ये प्रवेशय प्रवेशय किं विलंवसि ब्रह्मसत्येन विष्णुसत्येन ऋषिसत्येन रुद्रसत्येन आवेशय आवेशय किलि किलि खिलिखिलि मिलि मिलि चिलि चिलि विकृतरूपधारिणि कृष्णभुजंगवेष्टितशरीरे सर्वग्रहावेशिनि प्रलम्बोष्ठि भ्रूभग्ननासिके विकटमुखि कपिलजटे ब्राह्मि भञ्ज भञ्ज ज्वल ज्वल कालमुखि खल खल पातय पातय रक्ताक्षि घूर्णय घूर्णापय भूमिं पातय पातय शिरो गृह्ण गृह्ण चक्षुर्मीलय मीलय भञ्ज भञ्ज पादौ गृहाण गृहाण मुद्रां स्फोटय स्फोटय हुं हुं फट् विदारय विदारय त्रिशूलेन भेदय भेदय वज्रेण हन हन दण्डेन ताडय ताडय चक्रेण छेदय छेदय शक्त्या भेदय भेदय दंष्ट्रेण दंष्टय दंष्टय कीलकेन कीलय कीलय कर्तृकया पातय पातय अङ्कुशेन गृह्ण गृह्ण शिरोर्तिज्वरमैकाहिकं द्वयाहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं डाकिनीस्कन्दमहान् मुञ्चापय मुञ्चापय लन लन उत्थापय उत्थापय भूमिं पातय पातय गृह्ण गृह्ण ब्रह्माणि एहि एहि माहेश्वरि एहि एहि कौमारि एहि एहि वाराहि एहि एहि वैष्णवि एहि एहि ऐन्द्रि एहि एहि चामुण्डे एहि एहि नारसिंहि एहि एहि शिवदूति एहि एहि रेवति एहि एहि शुष्करेवति एहि एहि आकाश रेवति एहि एहि हिमवन्तचारिणि एहि एहि कैलासचारिणि एहि एहि परमन्त्र छिन्धि छिन्धि किलि किलि बिम्बे अघोरे घोररूपिणि चामुण्डे रुरु क्रोधान्ध विनिः सृते असुरक्षयंकरि आकाशगामिनि पाशेन बन्ध बन्ध समयं तिष्ठ तिष्ठ मण्डलं प्रवेशय प्रवेशय पातय पातय गृह्ण गृह्ण मुखे बन्ध बन्ध चक्षुः बन्धय हृदयं बन्ध बन्ध हस्तपादौ बन्ध बन्ध दुष्टग्रहान् सर्वान् बन्ध बन्ध दिशां बन्ध बन्ध विदिशं बन्ध बन्ध ऊर्ध्वं बन्ध बन्ध अधस्ताद् बन्ध बन्ध भस्मना पानीयेन मृत्तिकया सर्षपैर्वा आवेशय आवेशय पातय पातय चामुण्डा किलि किलि विच्चे हुं फट् स्वाहा।।।। इति।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ जगदम्बा जयवादः ।।

जय जगदम्बकदम्बविहारिणि! मङ्गलकारिणि! कामकले!
जय तनुशोभाकम्पितशम्पे! लसदनुकम्पे कान्तिनिधे!
जय जितकामेऽपि जनितकामे! धूर्जटिवामे। वामगते!
जय जालन्धरपीठविलासिनि! दुःख विनाशिनि! भक्तिवशे ।।१।
नानालङ्कृतिझङ्कृतिशालिनि! मौक्तिकमालिनि! केलिपरे।
मुनिजन हृदयागार निवासिनि! विद्यास्वामिनि! बोधघने!
सान्द्रानन्दसुधारसभासिनि! वीणावादिनि! वेदनुते!
जय जालन्धरपीठविलासिनि! दुःख विनाशिनि! भक्तिवशे ।।२।
आपत्तूलमहानलकीले! पालनशीले! भूतिखने!
द्युतिजितचम्पकदामकलापे! मधुरालापे! हंसगते!
विभ्रमरञ्जितशङ्करहृदये! कृतजगदुदये! शैलसुते!
जय जालन्धरपीठ विलासिनि! दुःखविनाशिनि! भक्तिवशे ।।३ ।।
मूले दीपककलिकाकारे! विद्यासारे! भवसि परा!
तस्मादपसृतिकलनावृद्धे! मणिपुर मध्ये पश्यन्ती!
स्वान्ते मध्यमभावाकूता कण्ठे वितता वैखरिका!
जय जालन्धरपीठविलासिनि! दुःख विनाशिनि। भक्तिवशे ।।४ ।।
पश्चादाविर्भवदनवद्ये ! श्रेयः पद्ये! यत्तदिदम्!
शब्दब्रह्मतया खलु गेयं खमिवामेयं किमपिघनम्!
पञ्चाशल्लिपिभेदविचित्रं वाङ्मयमात्रं त्वमसि परे!
जय जालन्धरपीठ विलासिनि! दुःख विनाशिनि! भक्तिवशे ।।५ ।।
भवभवविभवप राभवहेतो! गिरिकुलकेतो! भक्तहिते!
नानाविधवृजिनोत्करवारिणि! करुणासारिणिाशान्ततरे!
सहसोत्सादितसाधक विघ्ने! श्रद्धानिघ्ने! सुखकलिके!
जय जालन्धरपीठ विलासिनि! दुःख विनाशिनि! भक्तिवशे ।।६
सिन्दूरद्रव चुम्बितभाले ! सेवितहाले ! प्रेमभरे!
मातश्चिन्तामणिभवनान्तोनिर्भरकान्ते। विततततम्।
सोत्कं गायसि किन्नरदारैः साकमुदारैः पति चरितम्!
जय जालन्धरपीठविलासिनि! दुःखविनाशिनि! भक्तिवशे ।७ ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

क्लेशं भञ्जय रञ्जयचित्तं वित्तं स्फारी कुरु वरदे!
शत्रुं मर्दय वर्धय शक्तिं भक्तिं सान्द्रीकुरु सरले!
नास्ति कृपानिधिरम्ब! त्वत्तो मत्तो मत्ततमो न शिवे!
जय जालन्धरपीठ विलासिनि! दुःखविनाशिनि भक्तिवशे ।।८।
वज्रालङ्करणायाः वज्रातटिनी विहारशीलायाः!
वज्रेश्याः स्तवमेतं पठतां सङ्गच्छतां श्रेयः ।।९।।

।। इति ।।

******

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। सार्द्धनवचण्डीविधानम् ।।

।। श्रीभवानीशङ्कराभ्यां नमः ।।

नवसार्द्धं जपेद्यस्तु मुच्येत्प्राणन्तकाद्भयात् ।
राज्यं श्रीः सर्वसम्पत्तिः सर्वान्कामानवाप्नुयात् ।।१ ।।
प्रयोगोऽयं महागुह्यो देवानामपि दुर्लभः ।
तत्तेऽहं सम्प्रवक्ष्यामि सावधानावधारय ।।२ ।।
मधुकैटभनाशं च महिषासुरघातनम् ।
शक्रादिस्तुतिरेवातो देवीसूक्तं पुनस्तथा ।।३ ।।
नारायणीस्तुतिश्चैव फलानुकीर्त्तनन्तथा ।
ततो वरप्रदानं च ह्यर्द्धपाठोऽयमुच्यते ।।४ ।।
अर्द्धपाठस्त्वयं प्रोक्तः सर्वकामफलप्रदः ।
अर्द्धपाठेन रहितं नवपाठफलं न हि ।।५ ।।

अत्रार्द्धपाठे पञ्चमाध्याये 'देवाऊचुः' नमोदेव्यै इत्यारभ्य ऋषिरुवाचेति पर्यन्तमिति। ब्राह्मणास्त्वत्रैकादश। तेषु नव ब्राह्मणाः पूर्णत्रयोदशाध्यायपाठकर्त्तारः। एकोऽर्द्धपाठकर्त्ता। एकोशु० यजुर्वेदीयषडङ्गाष्टाध्यायपाठकः। एवमेकादशब्राह्मणाः प्रयोगकर्त्तार इति।

******

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ त्रिकपाठः ।।

सृष्टिक्रमः

मार्कण्डेय उवाच – सावर्णिः सूर्यतनय इत्यारभ्य सावर्णिर्भवितामनुः इत्यन्तं ज्ञेयम् ।।१।।

स्थितिक्रमः

ऋषिरुवाच – पुराशुम्भनिशुम्भाभ्याऽरभ्य शक्रादिस्तव पर्यन्तं स्थिति कर्मणि ज्ञेयम् ।।२।।

संहारक्रमः

एवं देव्यावरं लब्ध्वा इत्यारभ्य संहार क्रमेण सावर्णिः सूर्यतनयः मार्कण्डेय उवाच इत्यन्तं पठनीयः ।।३।।

वाराहीतन्त्रे

आदिमारभ्य प्रजपेत् सृष्टिक्रम इहोच्यते ।।
पुराशुम्भनिशुम्भाभ्यामारभ्य प्रजपेत् सुधीः ।
आद्याच्छक्रादि पर्यन्तं स्थिति क्रम उदाहृतः ।।
शेषमारभ्य आद्यन्तं संहारोऽयं क्रमो भवेत् ।।
स्थितिपाठः सर्वकार्ये मुक्तिकामे च संहृतिः ।
स्त्रीकामे पुत्रकामे च सृष्टिक्रम उदाहृतः ।।
शतमादौ शतञ्चान्ते जपेन्मन्त्रं नवाक्षरम् ।
चण्डी सप्तशती मध्ये सम्पुटोऽयमुदाहृतः ।।

।। इति ।।

******

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ देव्यपराधक्षमापन स्तोत्रम् ।।

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः ।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ।।१ ।।

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्त्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत् ।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणिशिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।।२ ।।

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः ।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।।३ ।।

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।।४ ।।

परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता ।
निरालम्बो लम्बोदरजानि कं यामि शरणम् ।।५ ।।

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्कोरङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः ।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ।।६ ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः ।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटी फलमिदम् ।।७।।
न मोक्षस्याकाङ्क्षा न च विभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः ।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिवशिव भवानीति जपतः ।।८।।
नाराधितासि विधिनाविविधोपचारैः
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः ।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ।।९।।
आपत्सुमग्नः स्मरणं त्वदीयं
करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि ।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः
क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ।।१०।।

जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणाऽस्ति चेन्मयि ।
अपराधपरम्परावृतं नहि माता समुपेक्षते सुतम् ।।११।।
मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा नहि ।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथा योग्यं तथा कुरु ।।१२।।

।। इति ।।

******

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। क्षमा प्रार्थना ।।

ॐ क्रीं हूं ह्रीं अपराध सहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरी ह्रीं हूं क्रीं ॐ ।।१।।
ॐ क्रीं हूं ह्रीं आवाहनं न जानामि न जानामि तवार्चनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि ह्रीं हूं क्रीं ॐ ।।२।।
ॐ क्रीं हूं ह्रीं मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ह्रीं हूं क्रीं ॐ ।।३।।
ॐ क्रीं हूं ह्रीं अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत्।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः ह्रीं हूं क्रीं ॐ ।।४।।
ॐ क्रीं हूं ह्रीं सापराधोस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके।
इदानीमनुकम्प्योहं यथेच्छसि तथा कुरु ह्रीं हूं क्रीं ॐ ।।५।।
ॐ क्रीं हूं ह्रीं कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरी ह्रीं हूं क्रीं ॐ ।।६।।
ॐ क्रीं ह्रीं गुह्याति गुह्यगोप्त्रीं त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिर्द्धिभवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ह्रीं हूं क्रीं ॐ ।।७।।
ॐ क्रीं हूं ह्रीं पाहि त्वं करुणामयि प्रियतमं सात्वाधकं रक्षतु
भ्रष्टान्नाशय नाशय प्रियतमा वक्तारविन्दु मया।
नित्यं देवि साधुसुधाचय मयि सिद्धिं शिवे सिद्धिदं
ज्ञानं मोक्ष विधायकं कुरु शिवे संहारिणी पाशवे ह्रीं हूं क्रीं ॐ ।।९।।

।। इति ।।

******

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ श्री चण्डिकास्तोत्रम् ।।

या देवी खड्गहस्ता सकलजनपद व्यापिनी विश्वदुर्गा,
श्यामाङ्गी शुक्लवासा द्विजगुणगणिता ब्रह्मदेहार्धवासा।
ज्ञानानां साधयन्ती यतिगिरिगमनज्ञान दिव्य प्रबोधा,
सा देवी दिव्यमूर्तिः प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ।।१।।

ह्रां ह्रीं ह्रूं चर्ममुण्डे शवगमनहते भीषणे भीमवक्त्रे,
क्रां क्रीं क्रूं क्रोधमूर्तिर्विकृतिस्तनमुखे रौद्रदंष्ट्राकराले।
कं कं कंकालधारी भ्रमसि जगदिदं भक्षयन्ती ग्रसन्ती,
हुङ्कारोच्चारयन्ती प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ।।२।।

ह्रां ह्रीं ह्रूं रुद्ररुपे त्रिभुवननमिते पाशहस्ते त्रिनेत्रे,
रां रीं रु रङ्गरङ्गे किलकिलितरवाशूलहस्ते प्रचण्डे।
लां लीं लूं लम्बजिह्वे हसती कहकहाशुद्धघोराट्टहासैः,
कं काली कालरात्रिः प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ।।३।।

ग्रां ग्रीं ग्रूं घोररुपे घघघघघटिते घुर्घुरारावघोरे,
निर्मांसे शुष्कजङ्घे पिबतु नवरसा धूम्रधूमायमाने।
द्रां द्रीं द्रूं द्रावयन्ती सकलभुवितले यक्षगन्धर्वनागैः,
क्षां क्षीं क्षूं क्षोभयन्ती प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ।।४।।

भ्रां भ्रीं भ्रूं चण्डवर्गे हरिहननमिते रुद्रमूर्तिश्चकीर्ति–
श्चन्द्रादित्यौ च कर्णौ जड़मुकुटशिरोवेष्टितां केतु मालाम्।
स्रक् सर्वो चोरगेन्द्रो शशिकरण निभातारकोहार कण्ठे,
सा देवी दिव्यमूर्तिः प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ।।५।।

खं खं खं खड्गहस्ते वरकनकनिभे सूर्यकान्तिस्वतेजो,
विद्युज्ज्वालावलीनां नवनिशितमहाकृत्तिकादक्षिणेन।
वामे हस्ते कपालं वरविमलसुरापूरितं धारयन्ती,
सा देवी दिव्यमूर्तिः प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ।।६।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हुं हुं फट्कालरात्रि रुरु सुरमथनी धूम्रमारी कुमारी,
हीं हीं हीं हत्तिशोरौ क्षपितु किलकिलाशब्द अट्टाट्टहासे।
हा हा हा भूतप्रभूते किलिकिलिमुखा कीलयन्ती ग्रसन्ती,
हुङ्कारोच्चारयन्ती प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ।।७।।
भृङ्गी कालीकपाली परिजनसहिते चण्डि चामुण्डनित्ये,
रों रों रोंकार नित्ये शशिकरधवले कालकूटे दुरन्ते।
हुं हुं हुंकारकारि सुरगणनमिते कालकाली विकारी,
त्रैलोक्ये वश्यकारी प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा।।८।।
वन्दे दण्डप्रचण्डाडमरुरुणिमणिष्टोपटङ्कारघण्टै,
नृत्यन्ती याट्टपातैरटपटविभवैर्निर्मलामन्त्रमाला।
सुक्षौ कुक्षौ हसन्ती खखरित सखा चार्चिनी प्रेतमाला,
उच्चैस्तैश्चाट्टहासैर्घुरुधुरितरवा चण्डमुण्डा प्रचण्डा ।।९।।
त्वं ब्राह्मी त्वं च रौद्री स च शिखिगमना त्वं च देवी कुमारी,
त्वं चक्री चक्रहस्ता धुरधुरितरवा त्वं वराहस्वरुपा।
रौद्रे त्वं चर्ममुण्डा सकलभुवितले संस्थिते स्वर्गमार्गे,
पाताले शैलश्रृङ्गेहरिहरनमिते देवि चण्डी नमस्ते ।।१०।।
रक्ष त्वं मुण्डधारी गिरिगुहविवरे निर्झरि पर्वते वा,
सङ्ग्रामे शत्रुमध्ये विशविशविभवे सङ्कटे कुत्सिते वा ।
व्याघ्रे चौरे च सर्पेप्युदधिभुवितले वह्निमध्ये च दुर्गे,
रक्षेत् सा दिव्यमूर्तिः प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डाप्रचण्डा ।।११।।
इत्येवं बीजमन्त्रैः स्तवनमतिशिवं पातकव्याधिनाशम्,
प्रत्यक्षं दिव्यरुपं ग्रहगणमथनं मर्दनं शाकिनीनाम्।
इत्येवं वेगवेगं सकलभयहरं मन्त्रशक्तिश्च नित्यम्,
मन्त्राणां स्तोत्रकं यः पठति स लभते पार्थितां मन्त्रसिद्धिम् ।।१२।।
ब्रह्मा ब्रह्मस्वरुपिणी जलधरा हंसे सदागामिनी,
विद्यावस्त्रकमण्डलुः करजपा त्वक्षांशु मन्मोहिनी।
भास्वान् मौत्तिकमालिकापरिवृता लोकत्रयाह्लादिनी,
शान्ता शान्त स्वरुपिणी विजयते शान्तिं सुशान्तिं कुरु।।

।। इति।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अथ दुर्गाऽपदुद्धारस्तोत्रम् ।।

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकंपे नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे ।
नमस्ते जगद्वन्द्यपादारविन्दे नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ।।१।।
नमस्ते जगच्चिन्त्य मानस्वरुपे नमस्ते महायोगिनि ज्ञानरूपे ।
नमस्ते नमस्ते सदानन्दरुपे नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ।।२।।
अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य भयार्तस्य भीतस्य बद्धस्य जन्तोः ।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारकर्त्री नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ।।३।।
अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्येऽनले सागरे प्रान्तरे राजगेहे ।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तार नौका नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ।।४।।
अपारे महादुस्तरेऽत्यन्तघोरे विपत्सागरे मज्जतां देहभाजाम् ।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारहेतु नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।५।।
नमश्चचण्डिके चण्डदुर्दण्डलीलासमुत्खण्डिता खण्डिताशेषशत्रो ।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारबीजं नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ।।६।।
त्वमेवाद्यभावाधृतासत्येवादीर्न जाताजिताक्रोधनात्क्रोधनिष्ठा।
इडा पिङ्गला त्वं सुषुम्ना च नाडी नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ।।७।।
नमो देवि दुर्गे शिवे भीमनादे सरस्वत्यरुन्धत्यमौघस्वरुपे ।
विभूतिः शची कालरात्रि सती त्वं नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ।।८।।

शरणमसि सुराणां सिद्धविद्याधराणां,
मुनिमनुजपशूनां दस्युभिस्त्रा सितानाम् ।
नृपतिगृहगतानां व्याधिभिः पीडितानां,
त्वमसि शरणमेका देवि दुर्गे प्रसीद ।।९।।

इदं स्तोत्रं मया प्रोक्तमापदुद्धारहेतुकम् ।
त्रिसंध्यमेक संध्यं वा पठनाद्घोरसंकटात् ।।२०।।
मुच्यते नात्र संदेहो भुवि स्वर्गे रसातले ।
सर्वं वा श्लोकमेकं वा यः पठेद्भक्तिमान् सदा ।।२१।।
स सर्वं दुष्कृतं त्यक्त्वा प्राप्नोति परमं पदम् ।
पठनादस्य देवेशि किं न सिध्यति भूतले ।।२२।।
स्तवराजमिदं देवि संक्षेपात्कथितं मया ।।२३।।

।। इति ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। भगवतीपुष्पाञ्जलिस्तोत्रम् ।।

अयि गिरिनन्दिनी नंदितमेदिनि विश्वविनोदिनि नंदिनुते,
गिरिवरविन्ध्य शिरोऽधि निवासिनिविष्णु विलासिनि जिष्णुनुते।
भगवती हे शितिकण्ठ कुटुम्बिनिभूरिकुटुम्बिनि भूतिकृते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दि नि शैलसुते ।।१ ।।
सुरवरवर्षणि दुर्धरधर्षिणी दुर्मुख मर्षिणि हर्षरते,
त्रिभुवनपोषिणी शङ्करतोषिणि कल्मषमोषिणि घोषरते।
दनुजनिरोषिणि दुर्मदशोषिणि दुर्मनिरोषिणि सिंधुसुते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।२ ।।
अयि जगदंब कदंबवन प्रियवासिनि तोषिणि हासरते,
शिखरि शिरोमणि तुङ्ग हिमालय शृङ्गनि नजालय मध्यगते।
मधु मधुरे मधु कैटभ गञ्जिनि महिषविदारिणि रासरते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दि नि शैलसुते ।।३ ।।
अयि निजहुँकृति मात्रनिराकृत धूम्रविलोचन धूम्रशते,
समरविशोषित रोषित शोणित बीजसमुद्भव बीजलते।
शिव शिव शुम्भ निशुभ्म महाहव तर्पित भूत पिशाचरते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दि नि शैलसुते ।।४ ।।
अयि शतखण्ड विखण्डित रुण्ड वितुण्डित शुण्ड गजाधिपते,
निज भुजदण्ड निपातितचण्ड विपाटितमुण्ड भटाधिपते।
रिपुगजगण्ड विदारण चण्डपराक्रम शौण्ड मृगाधिपते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दि नि शैलसुते।।५ ।।
धनुरनुषङ्ग रणक्षणसङ्ग परिस्फुरदङ्ग नटत्कटके,
कनक पिशङ्ग पृषत्कनिषङ्ग रसद्भटशृङ्ग हताबटुके।
हतचतुरङ्गबल क्षितिरङ्ग घटद् बहुरङ्ग रटद् बटुके,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दि नि शैलसुते ।।६ ।।
अयि रणदुर्मद शत्रुवधाद्धुर दुर्धर निर्भर शक्तिभृते,
चतुर विचार धुरीण महाशय दूतकृत प्रमथाधिपते।
दुरित दुरीह दुराशय दुर्मतिदानवदूत दूरंतगते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दि नि शैलसुते ।।७ ।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अयि शरणागत वैरिवधूजन वीरवराभय दायिकरे,
त्रिभुवनमस्तक शूलविरोधि शिरोधि कृतामल शूलकरे।
दुमिदुमितामर दुन्दुभिनाद मुहुर्मुखरीकृत दिङ्निकरे,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दि नि शैलसुते।।८।।
सुरललना ततथेयित थेयित थाभिनयोत्तर नृत्यरते,
कृतकुकुथा कुकुथोदि डडादिक तालकुतूहल गानरते।
धुधुकुट धूधुट धिन्धि मितध्वनि घोरमृदङ्ग निनादरते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दि नि शैलसुते।।९।।
जय जय जाप्यजये जयशब्दपरस्तुति तत्पर विश्वनुते,
झणझण झिझिंम झिंकृत नूपुर शिञ्जित मोहित भूतपते।
नटितनटार्ध नटीनटनायक नाटन नाटित नाट्यरते जय,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दि नि शैलसुते।।१०।।
अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोरमकान्तियुते,
श्रितरजनी रजनी रजनी रजनी रजनीकर वक्त्रभृते।
सुनयन विभ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमराभिद्रृते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दि नि शैलसुते।।११।।
महित महाहव मल्लमतल्लिक वल्लित रल्लित भल्लिरते,
विरचितवल्लि कपालिक पल्लिक झिल्लिक भिल्लिकवर्गवृते।
श्रुतकृतफुल्ल समुल्लसितारुण तल्लज पल्लवसल्ललिते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दि नि शैलसुते।।१२।।
अयि सुदतीजन लालस मानस मोहन मन्थरराजसुते,
अविरल गण्ड गलन् मदमेदुर मत्त मत्तङ्गजराजगते।
त्रिभुवन भूषण भूत कलानिधिरूप पयोनिधिराजसुते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दि नि शैलसुते।।१३।।
कमलदलामल कोमलकान्ति कलाकलितामलभालतले,
सकल विलास कलानिलय क्रमकेलिचलत् कलहंसकुले।
अलिकुलसङ्कुल कुन्तलमण्डल मौलिमिलद् बकुलालिकुले,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दि नि शैलसुते।।१४।।
करमुरलीरव बर्जित कूजित लज्जित कोकिल मञ्जुमते,
मिलित मिलिन्द मनोहरगुञ्जित रञ्जित शैलनिकुञ्जगते।
निजगण भूतमहाशबरीगण रङ्गणसम्भृत केलिरते,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दि नि शैलसुते ।।१५।।

कटितटपीत दुकूलविचित्र मयूखतिरस्कृत चन्द्ररुचे,
जितकनकाचल मौलिमदोर्जित गर्जितकुञ्जर कुम्भकुचे ।
प्रणत सुराऽसुर मौलिमणि स्फुरदंशुलसन्नखचन्द्ररुचे,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दि नि शैलसुते ।।१६।।

विजित सहस्रकरैक सहस्रकरैक सहस्रकरैकनुते,
कृतसुरतारक सङ्गरतारक सङ्गरतारक सूनुसुते ।
सुरथसमाधि समानसमाधि समानसमाधि सुजाप्यरते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दि नि शैलसुते ।।१७।।

पदकमलं करुणानिलये बरिवस्यति योऽनुदिनं सुशिवे,
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत् ।
तव पदमेव परं पदमस्त्विति शीलयतो मम किं न शिवे,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दि नि शैलसुते ।।१८।।

कनकलसत् कलशीक जलैरनुषिञ्चति तेऽङ्गणरङ्गभुवं,
भजति स किं न शचीकुचकुम्भ नटीपरिरम्भसुखानुभवं ।
तव चरणं शरणं करवाणि सुवाणि पथं मम देहि शिवं,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दि नि शैलसुते ।।१९।।

तव विमलेन्दुकलं वदनेन्दुमलं कलयन्ननुकूलयते,
किमु पुरुहूत पुरीन्दुमुखी सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते ।
मम तु मतं शिवमानधने भवती कृपया किमु न क्रियते,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दि नि शैलसुते।। २०।।

अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे,
अयि जगतो जननीति यथाऽसि मयाऽसि तथाऽनुमतासि रमे ।
यदुचितमत्र भवत्पुरगं कुरु शाम्भवि देवि दयां कुरु मे,
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दि नि शैलसुते।।२१।।

रमयति किल कर्षस्तेषु चित्तं, नराणामवरजवर यस्माद्रामकृष्णः कवीनाम् ।
अकृत सुकृतगम्यं रम्यपद्यैकहम्यं, स्तवनभवनहेतुं प्रीतये विश्वमातुः ।।
इन्दुरम्यो मुहुर्बिन्दुरम्यो मुहुर्बिन्दुरम्यो यतः सानवद्ये स्मृतः ।
श्रीपतेः सूनुना कारितो योऽधुना विश्वमातुः पदे पद्यपुष्पाञ्जलिः।।२२।।

।। इति।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। आरती श्रीदुर्गा जी ।।

जगजननी जय! जय!! (मा! जगजननी जय! जय!!)
भयहारिण, भवतारिणी, भवभामिनी जय! जय!! जग०
तू ही सत-चित-सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा।
सत्य सनातन सुन्दर पर-शिव-सुर-भूपा ।।१।। ।। जग०।।
आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी।
अमल अनन्त अगोचर अज आनँदराशी ।।२।। ।। जग०।।
अविकारी, अघहारी, अकल, कलाधारी।
कर्ता विधि, भर्त्ता हरि, हर सँहारकारी।।३।। ।। जग०।।
तू विधिवधू, रमा, तू उमा, महामाया।
मूल प्रकृति विद्या तू, तू जननी, जाया।।४।। ।। जग०।।
राम, कृष्ण तू, सीता, ब्रजरानी राधा।
तू वाञ्छाकल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा।।५।। ।। जग०।।
दश विद्या, नव दुर्गा, नानाशस्त्रकरा।
अष्टमातृका, योगिनी, नव नव रूप धरा।।६।। ।। जग०।।
तू परधामनिवासिनी, महाविलासिनी तू।
तू ही श्मशानविहारिणी, ताण्डवलासिनी तू।।७।। ।। जग०।।
सुर-मुनि-मोहिनी सौम्या तू शोभाऽऽधारा।
विवसन विकट-सरूपा, प्रलयमयी धारा।।८।। ।। जग०।।
तू ही स्नेह-सुधामयि, तू अति गरलमना।
रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि-तना।।९।। ।। जग०।।
मूलाधारनिवासिनि, इह-पर-सिद्धिप्रदे।
कालातीता काली, कमला तू वरदे।।१०।। ।। जग०।।
शक्ति शक्तिधर तू ही नित्य अभेदमयी।
भेदप्रदर्शिनि वाणी विमले! वेदत्रयी।।११।। ।। जग०।।
हम अति दीन दुखी मा! विपत-जाल घेरे।
हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे।।१२।। ।। जग०।।
निज स्वभाववश जननी! दयादृष्टि कीजै।
करुणा कर करुणामयि! चरण-शरण दीजै।।१३।। ।। जग०।।

******

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अम्बे मैय्या की आरती

जय अम्बे गौरी, मैय्या जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव हरी॥
माँग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को।
उज्ज्वल से दोऊ नैना, चन्द्रवदन नीको॥
कनकसमान कलेवर, रक्ताम्बर राजै।
रक्तपुष्पगले माला, कण्ठन पर साजै॥
केहरिवाहन राजत, खडग खप्परधारी।
सुर-नर-मुनिजन सेवत, तिनके दु:खहारी॥
कानन कुण्ड़लशोभित, नासाग्रेमोती।
कोटिकचन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योति॥
शुम्भनिशुम्भ विड़ारे, महिषासुरघाती।
धूम्रविलोचन नैना, निशिदिन मदमाती॥
चण्ड़मुण्ड़ संहारे, शोणितबीज हरे।
मधुकैटभ दोऊ मारे, सुरभयहीन करे॥
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमलारानी।
आगमनिगम बखानी, तुमशिव पटरानी॥
चौंसठयोगिनी गावत, नृत्यकरत भैरों।
बाजत तालमृदङ्गा अरू बाजत डमरू॥
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दु:ख हरता, सुख सम्पत्ति करता॥
भुजाचार अतिशोभित, वरमुद्राधारी।
मनवाञ्छित फलपावै, सेवत नरनारी॥
कञ्चनथाल विराजत, अगर कर्पूरबाती।
श्रीमालकेतु में राजत कोटिरतन ज्योति॥
माँ अम्बेभवानी की आरती, जो कोई नर गावे। कहत शिवानन्दस्वामी, सुखसम्पत्ति पावै॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। परिशिष्ट ।।

०१. सप्तशती-नायिकाया महाकाल्याश्चतुः षष्ठिः-योगिन्यः

जया च विजया चैव जयन्ती चापराजिता।
दिव्य पूर्वा[1] योगिनी च महा-पूर्वाथ[2] योगिनी।।१।।
सिद्ध-पूर्वा[3] योगिनी च ततस्त्वथ गणेश्वरी।
प्रेताशी डाकिनी चाथ कमला तु ततो मता।।२।।
काल-रात्री ततः प्रोक्ता ततष्टङ्कारिणी मता।
रौद्री चैवाऽथ वेताली हूंकारी ऊर्ध्व-केशिनी।।३।।
विरूपाक्षी च शुष्काङ्गी ततस्तु नर-भोजिनी।
फेट्-कारी चोर-चन्द्री च धूम्राक्षी कलह-प्रिया।।४।।
राक्षसी घोर-रक्ताक्षी विश्व-रूपी भयङ्करी।
चण्ड्यन्ता[4] चण्डमारी च वाराही मुण्ड-धारिणी।।५।।
भैरवी ततः ऊर्ध्वाक्षी दुर्मुखी प्रेत-वाहिनी।
खट्वांगी चैव लम्बोष्ठी मालिनी मति योगिनी।।६।।
काली रक्ता च कङ्काली ततस्तु भुवनेश्वरी।
त्रोटाकी व महा-मारी यम-दूती करालिनी।।७।।
केशिनी मेदिनी चैव रोम-गङ्गा प्रवाहिनी।
विडाली चैव कान्तिश्च लोली चाथ जया स्मृता।।८।।
अधो-मुखी ततः प्रोक्ता ततश्चण्डोग्र-धारिणी।
व्याघ्री ततः काङ्क्षिणी च ततस्तु प्रेत-भक्षिणी।।९।।
धूर्जटी विकटा चैव घोरा चाथ कपालिनी।
विष-लम्बिनी ततः प्रोक्ता योगिन्यः स-क्रमं इमाः।।१०।।

महाकाल्याश्चतुः षष्ठिः पूजनीया विधानतः।

०१. दिव्य-योगिनी, ०२. महा-योगिनी, ०३. सिद्ध-योगिनी, ०४. चण्डमारी, चण्डी

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

०२. सप्तशती-नायिकाया महालक्ष्म्याश्चतुः षष्ठिः-योगिन्यः

दक्ष-कर्णा राक्षसी च क्षयन्ती च तथा पुनः।
छाया क्षया पिङ्गलाक्षी अक्षया लरसा नाशिनी तथा॥१॥

इला इलावती चैव लया लीना तथा मता।
लङ्का लङ्केश्वरी चैव लरसा विमला तथा॥२॥

हुताशनी विशालाक्षी हूंकारी वडवा-मुखी।
महा-रवा महा-क्रूरा क्रोधिनी च खरानना॥३॥

सर्वज्ञा तरला तारा ततः श्रृग्वेदिनी मता।
रौद्री तथा च सरसा ततस्तु रस संग्रहा॥४॥

शर्वरी ताल-जंघा च रक्ताक्षी तु ततः परम्।
विद्युज्जिह्वा करङ्किणी मेघ-नादा ततो मता॥५॥

चण्डोग्रा काल-वर्णा च तथा चैव द्विपातना[१]।
पद्मा पद्मावती चैव प्रपञ्चा ज्वलितानना॥६॥

पिचु-वक्त्रा पिशाची च पिशिताशी च लोलुपा।
पार्वती पावनी चैव तापिनी वामिनी तथा॥७॥

विकृत-पूर्वाऽऽशया[२] चैव बृहत्-कुक्षिस्ततः परम्।
दंष्ट्राली विश्व-रूपी[३] च यम-जिह्वा ततो मता॥८॥

जयन्ती च दुर्जया च तथा चैव यमान्तिका।
विडाला रेवती चाथ प्रेताशी विजया तथा॥९॥

महालक्ष्म्यास्तु योगिन्यश्चतुः षष्ठिः क्रमादिमाः।
पूजनीयाः प्रयत्नेन सिद्धि-कामैस्तु साधकैः॥१०॥

०१. पाठान्तरः - दिपानना, ०२. विकृताशया, ०३. पाठान्तरः - विश्व-रूपा

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

०३. सप्तशती-नायिकाया महासरस्वत्याः षष्ठिः-योगिन्यः

पिङ्गलाक्षी विषलाभी समृद्धिर्वद्धिरेव च।
श्रद्धा स्वाहा स्वधा भिक्षा माया संज्ञा वसुन्धरा।।१।।

त्रैलोक्य-धात्री सावित्री गायत्री त्रिपदेश्वरी।
सुरूपा बहु-रूपा च स्कन्द-माताऽच्युत-प्रिया।।२।।

विमला कमला चैव दारुणी चारुणी तथा।
प्रकृतिर्विकृतिश्चैव सृष्टिः स्थितिश्च संहृति।।३।।

सन्ध्या माता सती हंसी तथा मद-वर्जिका।
परा तथा देव-माता ततो भगवती किल।।४।।

देवकी चैव कमलालका[१] च त्रिमुखी तथा।
सप्त-मुखी ततो देवी सुरासुर-विमर्दिनी।।५।।

लम्बोष्ठी ऊर्ध्व-केशी च ततो बहु-शिरा मता।
वृकोदरी रथ-रेखा शशि-रेखा ततः परम्।।६।।

गगन-वेगा पवन-वेगा भुवन-पाला तथा मता।
मदनातुरा अनङ्गा च अनङ्ग-मदना तथा।।७।।

अनङ्ग-मेखलाऽनङ्ग-कुसुमा च ततो मता।
विश्व-रूपा तथा चैवाऽसुर-पूर्वा भयंकारी[२]।।८।।

अक्षोभ्या च तथा देवी[३] मता वै सत्य-वादिनी।
वज्र-रूपा वज्र-रेखा तथा शुचि-व्रता मता।।९।।

वरदा चैव वागीशी[४] चतुः-षष्ठि-क्रमेण तु।
महा-पूर्वा सरस्वत्याः योगिन्यस्तु मता इमाः।।१०।।

०१. पाठान्तरः - कमलालया, ०२. असुर भयंकारी,
०३. 'देवी' पद पूर्ति-हेतु है, नाम नहीं है, ०४. पाठान्तर - वागेशी।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। अतिरिक्त श्लोक ।।

७०० श्लोको के अतिरिक्त जो भी श्लोक प्राप्त हुए है, वे यहाँ उद्धृत है।

प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतो नृपम्।
उपविश्य स्थिरो भूत्वा तमुवाच विशोत्तमः।।१।।

समाधिर्नाम वैश्योऽहमुत्पन्नो धनिनां कुले।
धनवान् धर्म-निपुणः सत्य-वागनुसूचकः।।२।।

।। राजोवाच ।।

ममापि राज्यजं दुःखं दुनोति मानसम्।
पृच्छावाद्य मुनिं शान्तं शोक-नाशनमौषधम्।।३।।

एवं कृत्वा मतिं तौ नु राजा वैश्यस्य जग्मुतः।
मुनिं तौ विनयोपेतौ प्रष्टुं शोकस्य कारणम्।।४।।
आसीनं सम्यगासीनः शान्तं शान्तिमुपागताः।।५।।

।। ऋषिरुवाच ।।

शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि कारणं बन्ध-मोक्षयोः।
महा-मायेति विख्याता सर्वेषां प्राणिनामिह।।६।।

ब्रह्म-विष्णुस्तथेशान-तुराषाड् वरुणोऽनिलः।
सर्वे देवा मनुष्याश्च गन्धर्वोरग-राक्षसाः।।७।।

वृक्षाश्च विविधा वल्ल्यः पशवो मृग-पक्षिणः।
मायाधीनाश्च ते सर्वे भाजनं बन्ध-मोक्षयोः।।८।।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तया सृष्टमिदं सर्वं जगत्-स्थावर-जङ्गमम्।
तद्-वशे वर्तते नूनं मोह-जालेन यन्त्रितम्॥६॥

त्वं क्रियान् मानुषेष्वेकः क्षत्रियो रजसाविलः।
ज्ञानिनामपि चेतांसि मोहयस्यनिशं हि सा॥१०॥

ब्रह्मेश-वासुदेवाद्या ज्ञाने सत्यप्यशेषतः।
तेऽपि राग-वशाल्लोके भ्रमन्ति परिमोहिताः॥११॥

तुष्टाव बोधनार्थं तं शुभैः सम्बोधनैर्हरिः।
नारायणं जगन्नाथं निस्पन्दं योग-निद्रया॥१२॥

॥ ब्रह्मोवाच ॥

दीनानाथ, हरे, विष्णो, वामनोत्तिष्ठ माधव!
भक्तार्ति-हृद हृषीकेशो! सर्वावास! जगत्पते॥१३॥

अन्तर्यामिन्नमेयात्मन्, वासुदेव, जगत्पते!
दुष्टारि-नाशन-करश्चित्र-चक्र-गदा-धर॥१४॥

सर्वज्ञ, सर्व-लोकेश, सर्व-शक्ति-समन्वित!
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ देवेश! दुःख-नाशन! पाहि मां॥१५॥

विश्वम्भर, विशालाक्ष, पुण्य-श्रवण-कीर्तन!
जगद्योन निराकारा सर्ग-स्थित्यन्त-कारकः॥१६॥

इमौ दैत्यौ महाराजं हन्तु-कामौ मदोद्धतौ।
न जनातयखिलाधारं कथं मां सङ्कटे गतम्॥१७॥

उपेक्षसेऽति-दुःखार्तं यदि मां शरणागतम्।
पालक त्वं महा-विष्णो! निराधारं भवेत् ततः॥१८॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एवं स्तुतोऽपि भगवान् न बुबोध यदा हरिः।
योग-निद्रा-समाक्रान्तस्तदा ब्रह्मा ह्यचिन्तयत्॥१९॥
न्यूनं शक्ति-समाक्रान्तौ विष्णुर्निद्रा-वशं गतः।
जजागार न धर्मात्मा किं करोम्यद्य दुःखितः॥२०॥
हन्तु-कामावुभौ प्राप्तौ दानवौ मद-गर्वितौ।
किं करोमि, क्व गच्छामि नास्ति मे शरणं क्वचित्॥२१॥
एवं संचिन्त्य मनसा निश्चयं प्रतिपद्य च।
विचार्य मनसाऽप्येवं शक्तिर्मे रक्षणे क्षमा॥२२॥
यया ह्यचेतनो विष्णुः कृतोऽस्ति स्पन्द-वर्जितः।
एवं कृत्वा मतिं ब्रह्मा पद्म-नाल-स्थितस्तदा॥२३॥
निसृत्य हरि-देहात्तु संस्थिता पार्श्वतस्तदा।
निष्पन्दित-शरीरोऽसौ यदा जातो जनार्दनः॥२४॥
धाता परमिकां प्राप्तो मुदं दृष्ट्वा हरिं ततः।
यदा विनिर्गता निद्रा देहात् तस्य जगद्-गुरोः॥२५॥
तदाऽपश्यत् स्थितं तत्र भय-त्रस्तं प्रजापतिम्।
उवाच च महा-तेजा मेघ-गम्भीरया गिरा॥२६॥

॥ विष्णुरुवाच ॥

किमागतोऽसि भगवँस्तपस्त्यक्त्वाऽत्र पद्मज!
कस्माच्चिन्तातुरोऽसि त्वं भयाकुलित-मानसः॥२७॥

॥ ब्रह्मोवाच ॥

त्वत्-करामलजौ देव-दैत्यो च मधु-कैटभौ।
हन्तुं मां समुपायातौ घोर-रूपौ महा-बलौ॥२८॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

॥ विष्णुरुवाच ॥

तिष्ठाद्य निर्भयो जातस्तौ हनिष्याम्यहं किल।
युद्धायाजग्मतुर्मूढ़ौ मत्-समीपं गतायुषौ॥२९॥

न श्रान्तौ दानवौ घोरौ श्रान्तोऽहं चैतदद्भुतम्।
हरिणा चिन्तितं तत्र कारणं मरणे तयोः॥३०॥

तुष्टोऽस्मि तव युद्धेन वासुदेवोद्भवेन च॥३१॥

तच्छ्रुत्वा वचनं विष्णोस्तौ दैत्यो चाति-विस्मिमौ।
वञ्चिताविति मन्वानौ तस्थतुः शोक-संयुतौ॥३२॥

विचार्य मनसा तौ तु दानवौ विष्णुमूचतः।
प्रेक्ष्य सर्वं जल-मयं भूमि-स्थल-विवर्जितम्॥३३॥

निर्जले विपुले देशे हनस्व मधु-सूदन!॥३४॥

वध्यावावां तु भवतः सत्य-वाग्भव माधव!
स्मृत्वा चक्रं तदा विष्णुस्तावुवाच हसन् हरिः॥३५॥

हन्म्यद्य वां महा-भागौ निर्जले विपुले स्थले।
उक्त्वैवं देव-देवेशः ऊरूः कृत्वाति-विस्तरौ॥३६॥

दर्शयामास तौ तत्र निर्जलं च जलोपरि।
भगवान् द्विगुणं चक्रे जघने विस्मितौ तदा॥३७॥

शीर्षे सन्दधतां तत्र जघने परमाद्भुते।
रथाङ्गेन तदाऽभिन्ने विष्णुना प्रभविष्णुना॥३८॥

सागरः सकलो व्याप्तस्तदा वै मेदसा तयोः॥३९॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

॥ देवा ऊचुः ॥

देवदेव, जगन्नाथ, सृष्टि-स्थित्यन्त-कारक!
दया-सिन्धोर्महाराज! त्राहि नः शरणागतान्॥४०॥

महिषेण महाराज! पीडिताः पाप-कर्मणा।
असाध्येनापि दुष्टेन वर-दृप्तेन पापिना॥४१॥

यज्ञ-भागानसौ भुक्ते ब्रह्मणः प्रतिपादितान्।
अमरा गिरि-दुर्गेषु भ्रमन्ति च भयातुराः॥४२॥

कुतः केनायमत्युग्रः शब्दः कर्ण-व्यथा-करः।
देवो वा दानवो वाऽपि यो भवेत स्वन-कारकः॥४३॥

गृहीत्वा तं दुरात्मानं मत्-समीपं नयन्त्विह।
अहं गत्वा हनिष्यामि तं पापं वितथ-श्रमम्॥४४॥

उक्त्वैवं तेन ते दूता देवीं सर्वाङ्ग-सुन्दरीम्।
अष्टादश-भुजां दिव्यां सर्वाभरण-भूषिताम्॥४५॥

सर्व-लक्षण-सम्पन्नां वरायुध-धरां शुभाम्।
दधर्तीं चषकं हस्ते पिवर्तीं च मुहुर्मुहः॥४६॥

संवीक्ष्य भय-भीतास्ते जग्मुस्त्रस्ता सुशङ्किताः।
सकाशे महिषस्याशु तमूचुः स्वन-कारणम्॥४७॥

जगाम तरसा कामं गणाश्व-रथ-संयुतः॥४८॥

॥ ऋषिरुवाच ॥

एवं तस्य वचः श्रुत्वा प्रहस्य प्रमदोत्तमा।
तमुवाच महाराज! मेघ-गम्भीरया गिरा॥४९॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गच्छ पातालमधुना जीवितेच्छा यदास्ति ते।
नीचेत् कृपागसं दुष्टं हनिष्यामि रणाङ्गणे॥५०॥

॥ ऋषिरुवाच ॥

एवं देव्याः वचः श्रुत्वा चिन्तयामास दानवः।
यथाद्याभिहितं देव्या यथासीच्च करोतु सः॥५१॥
एवं सञ्चिन्त्य मेधावी जगाम नृप-सन्निधौ।
प्रणम्य तमुवाचेदं कृताञ्जलिरमात्यजः॥५२॥
निर्गुणो निर्ममोऽनन्तो निरालम्बो निराश्रयः।
सर्वज्ञः सर्वगः साक्षी पूर्णः पूर्णाशयः शिवः॥५३॥
सर्वावासः क्षमः शान्तः सर्व-दृक् सर्व-भावनः।
समस्तैर्दानवैर्युक्तस्त्वन्यथा हन्मि संगरे॥५४॥
तिष्ठ तिष्ठेति चैवोक्त्वाऽन्ये दैत्या युयुधुर्मृधे।
रुधिरौघ-विलुप्ताङ्गा संग्रामे लोम-हर्षणे॥५५॥

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

।। देवीसहस्रनामावलिः ।।

ॐ अस्य श्रीदुर्गासहस्रनामामन्त्रस्य श्रीमहादेवऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीदुर्गादेवता: मम (यजमानस्य) अभिष्टकामना सिद्ध्यर्थे होमे विनियोगः ।

1. ॐ महाविद्यायै नमः
2. जगन्मात्रे नमः
3. महालक्ष्म्यै नमः
4. शिवप्रियायै नमः
5. विष्णुमायायै नमः
6. शुभायै नमः
7. शांतायै नमः
8. सिद्धायै नमः
9. सिद्धसरस्वत्यै नमः
10. क्षमायै नमः
11. कान्त्यै नमः
12. प्रभायै नमः
13. ज्योत्स्नायै नमः
14. पार्वत्यै नमः
15. सर्वमंगलायै नमः
16. हिंगुलायै नमः
17. चंडिकायै नमः
18. दांतायै नमः
19. पद्मायै नमः
20. लक्ष्म्यै नमः
21. हरिप्रियायै नमः
22. त्रिपुरानंदिन्यै नमः
23. नंदायै नमः
24. सुनंदायै नमः
25. सुरवंदितायै नमः
26. यज्ञविद्यायै नमः
27. महामायायै नमः
28. वेदमात्रे नमः
29. सुधायै नमः
30. धृत्यै नमः
31. प्रीत्यै नमः
32. प्रियायै नमः
33. प्रसिद्धायै नमः
34. मृडान्यै नमः
35. विंध्यवासिन्यै नमः
36. सिद्धविद्यायै नम·
37. महाशक्त्यै नमः
38. पृथ्व्यै नमः
39. नारदसेवितायै नमः
40. पुरुहूतप्रियायै नमः
41. कांत्यै नमः
42. कामिन्यै नमः
43. पद्मलोचनायै नमः
44. प्रन्हादिन्यै नमः
45. महामात्रे नमः
46. दुर्गायै नमः
47. दुर्गार्तिनाशिन्यै. नमः
48. ज्वालामुख्यै नमः
49. सुगोत्रायै नमः
50. ज्योतिषे नमः
51. कुमुदवासिन्यै नमः
52. दुर्गायै नमः
53. दुर्लभायै नमः
54. विद्यायै नमः
55. स्वर्गत्यै नमः
56. पुरवासिन्यै नमः
57. अपर्णायै नमः
58. शांवर्यै नमः
59. मायायै नमः

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

60. मदिरायै नमः
61. मृदुहासिन्यै नमः
62. नारायण्यै नमः
63. महानिद्रायै नमः
64. योगानिद्रायै नमः
65. प्रभावत्यै नमः
66. प्रज्ञायै नमः
67. अपरिमितायै नमः
68. प्रज्ञायै नमः
69. तारायै नमः
70. मधुमत्यै नमः
71. मधवे नमः
72. क्षीरार्णवसुतायै नमः
73. बालायै नमः
74. बालिकायै नमः
75. सिंहगामिन्यै नमः
76. ओंकारायै नमः
77. सुधाकारायै नमः
78. चेतनायै नमः
79. कोपनायै नमः
80. क्षित्यै नमः
81. अर्धविंदुधरायै नमः
82. धीरायै नमः
83. विश्वमात्रे नमः
84. कलावत्यै नमः
85. पद्मावत्यै नमः
86. सुवस्त्रायै नमः
87. प्रवृद्धायै नमः
88. सरस्वत्यै नमः
89. जितमात्रे नमः
90. जितेंद्रायै नमः
91. शारदायै नमः
92. हंसवाहनायै नमः
93. कुंडासनायै नमः
94. जगद्धात्र्यै नमः
95. बुद्धमात्रे नमः
96. जनेश्वर्यै नमः
97. राज्यलक्ष्म्यै नमः
98. वषट्कारायै नमः
99. सुधाकारायै नमः
100. सुधात्मिकायै नमः
101. राजनीत्यै नमः
102. त्रयीवार्तायै नमः
103. दंडनीत्यै नमः
104. क्रियावृत्यै नमः
105. सद्भूत्यै नमः
106. तारिण्यै नमः
107. श्रद्धायै नमः
108. सद्गत्यै नमः
109. सत्परायणायै नमः
110. सिंधवे नमः
111. मंदाकिन्यै नमः
112. गंगायै नमः
113. ययुनायै नमः
114. सरस्वत्यै नमः
115. गोदावर्यै नमः
116. विपाशायै नमः
117. कावेर्यै नमः
118. शतह्रदायै नमः
119. शरय्वे नमः
120. चंद्रभागायै नमः
121. कौशिक्यै नमः
122. गंडक्यै नमः
123. शिवायै नमः
124. नर्मदायै नमः
125. कर्मनाशायै नमः
126. चर्मण्वत्यै नमः
127. वेदिकायै नमः
128. वेत्रवत्यै नमः

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

129. वितस्तायै नमः
130. वरदायै नमः
131. वरवाहनायै नमः
132. सत्यै नमः
133. पतिव्रतायै नमः
134. साध्व्यै नमः
135. सुचक्षुषे नमः
136. कुंडवासिन्यै नमः
137. एकचक्षुपे नमः
138. सहस्राक्ष्यै नमः
139. सुश्रोण्यै नमः
140. भगमालिन्यै नमः
141. सेनाश्रेण्यै नमः
142. पताकायै नमः
143. सव्यूहायै नमः
144. युद्धकांक्षिण्यै नमः
145. पताकिन्यै नमः
146. दयायै नमः
147. रंभायै नमः
148. विपंच्यै नमः
149. पंचमप्रियायै नमः
150. परायै नमः
151. परकलायै नमः
152. कांतायै नमः
153. त्रिशक्त्यै नमः
154. मोक्षदायिन्यै नमः
155. ऐंद्र्यै नमः
156. महोश्वर्यै नमः
157. ब्राह्यै नमः
158. कौमार्यै नमः
159. कमलासनायै नमः
160. इच्छायै नमः
161. भगवत्यै नमः
162. धेन्वै नमः
163. कामधेन्वै नमः
164. कृपावत्यै नमः
165. वज्रायुधायै नमः
166. वज्रहस्तायै नमः
167. चण्ड्यै नमः
168. चण्डपराक्रमायै नमः
169. गौर्यै नमः
170. सुवर्णवर्णायै नमः
171. स्थितिसंहारकारिण्यै नमः
172. एकायै नमः
173. अनेकायै नमः
174. महेज्यायै नमः
175. शतवाहवे नमः
176. महाभुजायै नमः
177. भुजंगभूषणायै नमः
178. भूषायै नमः
179. षट्चक्रक्रमवासिन्यै नमः
180. षट्चक्रभेदिन्यै नमः
181. श्यामायै नमः
182. कायस्थायै नमः
183. कायवर्जितायै नमः
184. सुस्मितायै नमः
185. सुमुख्यै नमः
186. क्षामायै नमः
187. मूलप्रकृत्यै नमः
188. ईश्वर्यै नमः
189. अजायै नमः
190. बहुवर्णायै नमः
191. पुरुषार्थप्रवर्तिन्यै नमः
192. रक्तायै नमः
193. नीलायै नमः
194. सितायै नमः
195. श्यामायै नमः
196. कृष्णायै नमः
197. पीतायै नमः

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

198. कर्बुरायै नमः
199. क्षुधायै नमः
200. तृष्णायै नमः
201. जरायै नमः
202. वृद्धायै नमः
203. तरुण्यै नमः
204. करुणालयायै नमः
205. कलाये नमः
206. काष्ठायै नमः
207. मुहूर्तायै नमः
208. निमेषायै नमः
209. कालरूपिण्यै नमः
210. सुवर्णायै नमः
211. रसनायै नमः
212. नासायै नमः
213. चक्षुषे नमः
214. स्पर्शवत्यै नमः
215. रसायै नमः
216. गंधप्रियायै नमः
217. सुगंधायै नमः
218. सुस्पर्शायै नमः
219. मनोगत्यै नमः
220. मृगनाभ्यै नमः
221. मृगाक्ष्यै नमः
222. कर्पूरामोदधारिण्यै नमः
223. पद्मयोन्यै नमः
224. सुकेश्यै नमः
225. सुलिंगायै नमः
226. भगरूपिण्यै नमः
227. योनिमुद्रायै नमः
228. महामुद्रायै नमः
229. खेचर्यै नमः
230. स्वर्गगामिन्यै नमः
231. मधुश्रिये नमः
232. माधवीवल्ल्यै नमः
233. मधुमत्तायै नमः
234. मदोद्धतायै नमः
235. मातंग्यै नमः
236. शुकहस्तायै नमः
237. पुष्पबाणायै नमः
238. इक्षुचापिन्यै नमः
239. रक्तांबरधराक्ष्यै नमः
240. रक्तपुष्पावतंसिन्यै नमः
241. शुभ्रांबरधरायै नमः
242. अधारायै नमः
243. महाश्वेतायै नमः
244. वसुप्रियायै नमः
245. सुवेण्यै नमः
246. पद्महस्तायै नमः
247. मुक्ताहारविभूषणायै नमः
248. कपूरामोदिन्यै नमः
249. श्वासायै नमः
250. पद्मिन्यै नमः
251. पद्ममन्दिरायै नमः
252. खड्गिन्यै नमः
253. चक्रहस्तायै नमः
254. भुशुंडीपरिघायुधायै नमः
255. चापिन्यै नमः
256. पाशहस्तायै नमः
257. त्रिशूलवरधारिण्यै नमः
258. सुबाणायै नमः
259. शक्तिहस्तायै नमः
260. मयूरवरवाहनायै नमः
261. वरायुधधरायै नमः
262. धीरायै नमः
263. वीरपानमदोत्कटायै नमः
264. वसुधायै नमः
265. वसुधारायै नमः
266. जयायै नमः

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

267. शाकंभर्यै नमः
268. शिवायै नमः
269. विजयायै नमः
270. जयंत्यै नमः
271. सुस्तन्यै नमः
272. शत्रुनाशिन्यै नमः
273. कूर्मायै नमः
274. सुपर्वायै नमः
275. कामाक्ष्यै नमः
276. कामवंदितायै नमः
277. जालंधरधरायै नमः
278. अनंतायै नमः
279. कामरूपनिवासिन्यै नमः
280. अंतर्वर्त्यै नमः
281. देवशक्त्यै नमः
282. वरदायै नमः
283. वरधारिण्यै नमः
284. शीतलायै नमः
285. सुशीलायै नमः
286. बालग्रहविनाशिन्यै नमः
287. कामबीजवत्यै नमः
288. सत्यायै नमः
289. सत्यधर्मपरायणायै नमः
290. स्थूलमार्गस्थितायै नमः
291. सूक्ष्मायै नमः
292. सूक्ष्मबुद्ध्यै नमः
293. सूक्ष्मदृष्टयै नमः
294. षट्कोणायै नमः
295. त्रिकोणायै नमः
296. त्र्यक्षायै नमः
297. त्रिपुरसुंदर्यै नमः
298. वृषप्रियायै नमः
299. वृषारूढायै नमः
300. महिषासुरघातिन्यै नमः
301. शंभुदर्पहरायै नमः
302. दृप्तायै नमः
303. दीप्तपावकसान्निभायै नमः
304. कपालभूषणायै नमः
305. काल्यै नमः
306. कपालवरधारिण्यै नमः
307. कपालकुंडलायै नमः
308. दीर्घायै नमः
309. शिवदूत्यै नमः
310. घनस्वन्यै नमः
311. सिद्धिदायै नमः
312. बुद्धिदायै नमः
313. नित्यायै नमः
314. सत्यमार्गप्रबोधिन्यै नमः
315. मूलाधारायै नमः
316. निराकारायै नमः
317. वह्निकुंडकृताश्रयायै नमः
318. वायुकुंडासनासीनायै नमः
319. निराधारायै नमः
320. निराश्रयायै नमः
321. कंबुग्रीवायै नमः
322. वसुमत्यै नमः
323. छत्रछायाकृतालयायै नमः
324. कुंडालिन्यै नमः
325. जगद्‌गर्भायै नमः
326. भुजंगाकारशायिन्यै नमः
327. प्रोल्लसत्सप्तपद्मायै नमः
328. नाभिनालमृडालिन्यै नमः
329. वल्लीतंतुसमुत्थानायै नमः
330. षड्सास्वादलोलुपायै नमः
331. श्वासोच्छ्वासगतये नमः
332. जिह्वाग्राहिण्यै नमः
333. वनसंश्रयायै नमः
334. तपस्विन्यै नमः
335. तपःसिद्धायै नमः

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

336. तापस्यै नमः
337. तपःप्रियायै नमः
338. तपोनिष्ठायै नमः
339. तपोयुक्तायै नमः
340. तपसः सिद्धिदायिन्यै नमः
341. सप्तधातुमयीभूर्त्यै नमः
342. सप्तधात्वंतराश्रयायै नमः
343. देहपुष्ट्यै नमः
344. मनस्तुष्ट्यै नमः
345. रत्नपुष्ट्यै नमः
346. बलोद्धतायै नमः
347. औषध्यै नमः
348. वैद्यमात्रे नमः
349. द्रव्यशक्त्यै नमः
350. प्रभाविन्यै नमः
351. वैद्यविद्यायै नमः
352. चिकित्सायै नमः
353. सुपथ्यायै नमः
354. रोगनाशिन्यै नमः
355. मृगयायै नमः
356. मृगमांसादायै नमः
357. मृगत्वचे नमः
358. मृगलोचनायै नमः
359. वागुरायै नमः
360. बंधरूपायै नमः
361. वधरूपायै नमः
362. वधोद्यतायै नमः
363. बंदिन्यै नमः
364. बंदिस्तुताकारायै नमः
365. काराबंधविमोचिन्यै नमः
366. शृंखलायै नमः
367. कलहायै नमः
368. विद्यायै नमः
369. दृढबंधविमोक्षिण्यै नमः
370. अंबिकायै नमः
371. अंबालिकायै नमः
372. अंबायै नमः
373. स्वस्थायै नमः
374. साधुजनार्चितायै नमः
375. कौलिक्यै नमः
376. कुलविद्यायै नमः
377. सुकूलायै नमः
378. कुलपूजितायैत नमः
379. कालचक्रभ्रमायै नमः
380. भ्रांतायै नमः
381. विभ्रमायै नमः
382. भ्रमनाशिन्यै नमः
383. वात्याल्यै नमः
384. मेघमालायै नमः
385. सुवृष्ट्यै नमः
386. सस्यवर्धिन्यै नमः
387. अकारायै नमः
388. इकारायै नमः
389. उकारायै नमः
390. ऐंकाररूपिण्यै नमः
391. ह्रींकारबीजरूपायै नमः
392. क्लींकारांबररूपिण्यै नमः
393. सर्वाक्षरमयीशक्त्यै नमः
394. अक्षरार्णवमालिन्यै नमः
395. सिंदूरायै नमः
396. अरुणवर्णायै नमः
397. सिंदूरतिलकप्रियायै नमः
398. वश्यायै नमः
399. वश्यबीजायै नमः
400. लोकवश्यविभाविन्यै नमः
401. नृपवश्यायै नमः
402. नृपसेव्यायै नमः
403. नृपवश्यकर्यै नमः
404. प्रियायै नमः

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

405. महिष्यै नमः
406. नृपमान्यायै नमः
407. नृपाज्ञायै नमः
408. नृपनंदिन्यै नमः
409. नृपधर्ममय्यै नमः
410. धन्यायै नमः
411. धनधान्यविवर्धिन्यै नमः
412. चातुर्वर्णमय्यै नमः
413. नीत्यै नमः
414. चतुर्वर्णैः पूजितायै नमः
415. सर्वधर्ममयीशक्त्यै नमः
416. चतुराश्रमवासिन्यै नमः
417. ब्राह्मण्यै नमः
418. क्षत्रियायै नमः
419. वैश्यायै नमः
420. शूद्रायै नमः
421. आचारवरवर्णजायै नमः
422. वेदमार्गरतायै नमः
423. यज्ञायै नमः
424. वेदविश्वविभाविन्यै नमः
425. अस्त्रशस्त्रमयीविद्यायै नमः
426. वरशस्त्रास्त्रधारिण्यै नमः
427. सुमेधायै नमः
428. सत्यमेधायै नमः
429. भद्रकाल्यै नमः
430. अपराजितायै नमः
431. गायत्र्यै नमः
432. सत्कृत्यै नमः
433. संध्यायै नमः
434. सावित्र्यै नमः
435. त्रिपदाश्रयायै नमः
436. त्रिसंध्यायै नमः
437. त्रिपदायै नमः
438. धात्र्यै नमः
439. सुस्वरायै नमः
440. सामगायिन्यै नमः
441. पांचाल्यै नमः
442. कालिकायै नमः
443. बालायै नमः
444. बालक्रीडायै नमः
445. सनातन्यै नमः
446. गर्भाधारायै नमः
447. धरायै नमः
448. शून्यायै नमः
449. गर्भाशयनिवासिन्यै नमः
450. सुरारिघातिन्यै नमः
451. कृत्यायै नमः
452. पूतनायै नमः
453. तिलोत्तमायै नमः
454. लज्जायै नमः
455. रसवत्यै नमः
456. नंदायै नमः
457. भवान्यै नमः
458. पापनाशिन्यै नमः
459. पट्टांबरधरायै नमः
460. गीतायै नमः
461. सुगीत्यै नमः
462. गानगोचरायै नमः
463. सप्तस्वरमयीतंत्र्यै नमः
464. षड्जमध्यमधैवतायै नमः
465. मूर्छनाग्रामसंस्थानायै नमः
466. स्वस्थानायै नमः
467. स्वस्थानवासिन्यै नमः
468. शत्रुमार्गायै नमः
469. महादेव्यै नमः
470. वैष्णव्यै नमः
471. कुलपुत्रिकायै नमः
472. अट्टाट्टहासिन्यै नमः
473. प्रेतायै नमः

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

474. प्रेतासननिवासिन्यै नमः
475. गीतनृत्यप्रियायै नमः
476. कामायै नमः
477. तुष्टिदायै नमः
478. पुष्टिदायै नमः
479. क्षमायै नमः
480. निष्ठायै नमः
481. सत्यप्रियायै नमः
482. प्रज्ञायै नमः
483. लोकेशायै नमः
484. सुरोत्तमायै नमः
485. सविषायै नमः
486. ज्वालिन्यै नमः
487. ज्वालायै नमः
488. विषमोहार्तिनाशिन्यै नमः
489. विषार्यै नमः
490. नागदमन्यै नमः
491. कुरुकल्पायै नमः
492. अमृतोद्भवायै नमः
493. भूतभीतिहरायै नमः
494. रक्षायै नमः
495. भूतावेशनिवासिन्यै नमः
496. रक्षोघ्न्यै नमः
497. राक्षस्यै नमः
498. रात्र्यै नमः
499. दीर्घनिद्रायै नमः
500. दिवागत्यै नमः
501. चंद्रिकायै नमः
502. चंद्रकांत्यै नमः
503. सूर्यकांत्यै नमः
504. निशाचर्यै नमः
505. डाकिन्यै नमः
506. शाकिन्यै नमः
507. शिक्षायै नमः
508. हाकिन्यै नमः
509. चक्रवर्तिन्यै नमः
510. शिवायै नमः
511. शिवप्रियायै नमः
512. स्वांगायै नमः
513. सकलायै नमः
514. वनदेवतायै नमः
515. गुरुरूपधरायै नमः
516. गुर्व्यै नमः
517. मृत्युमार्यै नमः
518. विशारदायै नमः
519. महामार्यै नमः
520. विनिद्रायै नमः
521. तंद्रायै नमः
522. मृत्युविनाशिन्यै नमः
523. चंद्रमण्डलसंकाशायै नमः
524. चंद्रमंडलसंकाशायै नमः
525. अणिमादिगुणोपेतायै नमः
526. सुस्पृहायै नमः
527. कामरूपिण्यै नमः
528. अष्टसिद्धिप्रदायै नमः
529. प्रौढायै नमः
530. दुष्टदानवघातिन्यै नमः
531. अनादिनिधनायै नमः
532. पुष्ट्यै नमः
533. चतुर्बाहवे नमः
534. चतुर्मुख्यै नमः
535. चतुःसमुद्रवसनायै नमः
536. चतुर्वर्गफलप्रदायै नमः
537. काशपुष्पप्रतीकाशायै नमः
538. शरत्कुमुदलोचनायै नमः
539. भूतभव्यभविष्यायै नमः
540. शैलजायै नमः
541. शैलवासिन्यै नमः
542. वाममार्गरतायै नमः

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

543. वामायै नमः
544. शिववामांगवासिन्यै नमः
545. वामाचारप्रियायै नमः
546. तुष्ट्यै नमः
547. लोपामुद्रायै नमः
548. प्रबोधिन्यै नमः
549. भूतात्मने नमः
550. परमात्मने नमः
551. भूतभावविभाविन्यै नमः
552. मंगलायै नमः
553. सुशीलायै नमः
554. परमार्गप्रबोधिन्यै नमः
555. दक्षायै नमः
556. दक्षिणामूर्त्यै नमः
557. सुदक्षायै नमः
558. हरिप्रियायै नमः
559. योगिन्यै नमः
560. योगनिद्रायै नमः
561. योगांगध्यानशालिन्यै नमः
562. योगपट्टधरायै नमः
563. मुक्तायै नमः
564. मुक्तानांपरमागतयै नमः
565. नारसिंह्यै नमः
566. सुजन्मने नमः
567. त्रिवर्गफलदायिन्यै नमः
568. धर्मदायै नमः
569. धनदायै नमः
570. कामदायै नमः
571. मोक्षदायै नमः
572. द्युतये नमः
573. साक्षिण्यै नमः
574. क्षणदायै नमः
575. आकांक्षायै नमः
576. दक्षजायै नमः
577. कोटिरूपिण्यै नमः
578. क्रतवे नमः
579. कात्यायन्यै नमः
580. स्वस्थायै नमः
581. स्वच्छंदायै नमः
582. कविप्रियायै नमः
583. सत्यागमायै नमः
584. बहिः स्थायै नमः
585. काव्यशक्त्यै नमः
586. कवित्वदायै नमः
587. मेनापुत्र्यै नमः
588. सत्यै नमः
589. साध्व्यै नमः
590. मैनाकभगिन्यै नमः
591. तडिते नमः
592. सौदामन्यै नमः
593. सुधामायै नमः
594. सुधाम्न्यै नमः
595. धामशालिन्यै नमः
596. सौभाग्यदायिन्यै नमः
597. दिवे नमः
598. सुभगायै नमः
599. द्युतिवर्धिनै नमः
600. श्रियै नमः
601. न्हियै नमः
602. कृत्तिवसनायै नमः
603. कृत्तिकायै नमः
604. कालनाशिन्यै नमः
605. रक्तबीजवधोद्युक्तायै नमः
606. सुतंतवे नमः
607. बीजसंतत्यै नमः
608. जगज्जीवायै नमः
609. जगद्बीजायै नमः
610. जगत्रयहितैषिण्यै नमः
611. चामीकरायै नमः

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

612. चंद्रायै नमः
613. साक्षात्षोडशीकलायै नमः
614. यत्तत्पदानुबंधायै नमः
615. यक्षिण्यै नमः
616. धनदार्चितायै नमः
617. चित्रिण्यै नमः
618. चित्रमायायै नमः
619. विचित्रायै नमः
620. भुवनेश्वर्यै नमः
621. चामुंडायै नमः
622. मुंडहस्तायै नमः
623. चंडमुंडवधोद्यतायै नमः
624. अष्टम्यै नमः
625. एकादश्यै नमः
626. पूर्णायै नमः
627. नवम्यै नमः
628. चतुर्दश्यै नमः
629. उमायै नमः
630. कलशहस्तायै नमः
631. पूर्णकुंभधरायै नमः
632. धरायै नमः
633. अभीरवे नमः
634. भैरव्यै नमः
635. भीरवे नमः
636. भीमायै नमः
637. त्रिपुरभैरव्यै नमः
638. महाचंडायै नमः
639. रौद्रायै नमः
640. महाभैरवपूजितायै नमः
641. निर्मुडायै नमः
642. हस्तिन्यै नमः
643. चंडायै नमः
644. करालदशनाननायै नमः
645. करालायै नमः
646. विकरालायै नमः
647. घोरघर्घरनादिन्यै नमः
648. रक्तदंतायै नमः
649. उर्ध्वकेश्यै नमः
650. बंधूककुसुमारुणायै नमः
651. कादंबर्यै नमः
652. पलाशायै नमः
653. काश्मीरकुंकुमप्रियायै नमः
654. क्षांत्यै नमः
655. बहुसुवर्णायै नमः
656. रत्यै नमः
657. बहुसुवर्णदायै नमः
658. मातंगिनयै नमः
659. वरारोहायै नमः
660. मत्तमांगगामिन्यै नमः
661. हंसायै नमः
662. हंसगत्यै नमः
663. हंस्यै नमः
664. हंसोज्ज्वलशिरोरुहायै नमः
665. पूर्णचंद्रप्रतीकाशायै नमः
666. स्मिताशायै नमः
667. सुकुंडलायै नमः
668. मष्यै नमः
669. लेखन्यै नमः
670. लेखायै नमः
671. सुलेखायै नमः
672. लेखकप्रियायै नमः
673. शंखिन्यै नमः
674. शंखहस्तायै नमः
675. जलस्थायै नमः
676. जलदेवतायै नमः
677. कुरुक्षेत्रायै नमः
678. वन्यै नमः
679. काश्यै नमः
680. मथुरायै नमः

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

681. कांच्यै नमः
682. अवंतिकायै नमः
683. अयोध्यायै नमः
684. द्वारकायै नमः
685. मायायै नमः
686. तीर्थायै नमः
687. तीर्थकर्यै नमः
688. प्रियायै नमः
689. त्रिपुरायै नमः
690. अप्रमेयायै नमः
691. कोशस्थायै नमः
692. कोशवासिन्यै नमः
693. कौशिक्यै नमः
694. कुशावर्तायै नमः
695. कोशांबायै नमः
696. कोशवर्धिन्यै नमः
697. कौशदायै नमः
698. पद्मकोशाक्ष्यै नमः
699. कुसुंभकुसुमप्रियायै नमः
700. तोतुलायै नमः
701. वर्तुलायै नमः
702. कोट्यै नमः
703. कोटस्थायै नमः
704. कोटराश्रयायै नमः
705. स्वयंभुवै नमः
706. स्वरूपायै नमः
707. सुरूपायै नमः
708. रूपवर्धिन्यै नमः
709. तेजस्विन्यै नमः
710. सुदीक्षायै नमः
711. बलदायै नमः
712. बलपायिन्यै नमः
713. महाकोशायै नमः
714. महागर्तायै नमः
715. बुद्ध्ये नमः
716. सदसदात्मिकायै नमः
717. महाग्रहहरायै नमः
718. सौम्यायै नमः
719. विशोकायै नमः
720. शोकनाशिन्यै नमः
721. सात्त्विकायै नमः
722. सत्वसंस्थायै नमः
723. राजस्यै नमः
724. रजोयुतायै नमः
725. तामस्यै नमः
726. तमोयुक्तायै नमः
727. गुणत्रयविभाविन्यै नमः
728. अव्यक्तायै नमः
729. व्यक्तरूपायै नमः
730. वेदविद्यायै नमः
731. शांभव्यै नमः
732. कल्याण्यै नमः
733. शांकर्यै नमः
734. कलपायै नमः
735. मनःसंकल्पसंतत्यै नमः
736. सर्वलोकमर्य्यशक्त्यै नमः
737. सर्वश्रवणगोचरायै नमः
738. सर्वज्ञानवत्यै नमः
739. वांछायै नमः
740. सर्वतत्त्वप्रबोधिन्यै नमः
741. जागृत्यै नमः
742. सुषुप्त्यै नमः
743. स्वप्नावस्थायै नमः
744. तुरीयकायै नमः
745. त्वरायै नमः
746. मंदगतये नमः
747. मंदायै नमः
748. मदिरामोदमोदिन्यै नमः
749. पानभूम्यै नमः

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

750. पानपात्रायै नमः
751. पानदानकरोद्यतायै नमः
752. आघूर्णायै नमः
753. अरुणनेत्रायै नमः
754. किंचिदव्यक्तभाषिण्यै नमः
755. आशापूरायै नमः
756. दीक्षायै नमः
757. दीक्षादीक्षितपूजितायै नमः
758. नागवल्ल्यै नमः
759. नागकन्यायै नमः
760. भोगिन्यै नमः
761. भोगवल्लभायै नमः
762. सर्वशास्त्रमय्यै नमः
763. सुस्मृत्यै नमः
764. धर्मवादिन्यै नमः
765. श्रुतिस्मृतिधरायै नमः
766. ज्येष्ठायै नमः
767. श्रेष्ठायै नमः
768. पातालवासिन्यै नमः
789. मीमांसायै नमः
770. तर्कविद्यायै नमः
771. सुभक्त्यै नमः
772. भक्तवत्सलायै नमः
773. सुनाभ्यै नमः
774. यातनायै नमः
775. यात्यै नमः
776. गंभीरायै नमः
777. अभाववर्जितायै नमः
778. नागपाशधरामूर्त्यै नमः
779. अगाधायै नमः
780. नागकुंडलायै नमः
781. सुचक्रायै नमः
782. चक्रमध्यस्थायै नमः
783. चक्रकोणनिवासिन्यै नमः
784. सर्वमंत्रमय्यैविद्यायै नमः
785. सर्वमंत्राक्षरायै नमः
786. मधुश्रवसे नमः
787. स्रवंत्यै नमः
788. भ्रामर्यै नमः
789. भ्रमरालयायै स्वाहा
790. मातृमंडलमध्यस्थायै नमः
791. मातृमंडलवासिन्यै नमः
792. कुमारजनन्यै नमः
793. क्रूरायै नमः
794. सुमुख्यै नमः
795. ज्वरनाशिन्यै नमः
796. अतीतायै नमः
797. विद्यमानायै नमः
798. भाविन्यै नमः
799. प्रीतिमंजर्यै नमः
800. सर्वसौख्यवत्यैशक्त्यै नमः
801. आहारपरिणामिन्यै नमः
802. पंचभूतनिदानायै नमः
803. भवसागरतारिण्यै नमः
804. अक्रूरायै नमः
805. ग्रहवत्यै नमः
806. विग्रहायै नमः
807. ग्रहवर्जितायै नमः
808. रोहिणीभूमिगर्भायै नमः
809. कालभुवे नमः
810. कालवर्तिन्यै नमः
811. कलंकरहितायै नमः
812. नार्यै नमः
813. चतुःषष्ट्यभिधायिन्यै नमः
814. जीर्णायै नमः
815. जीर्णवस्त्रायै नमः
816. नूतनायै नमः
817. नववल्लभायै नमः
818. अजरायै नमः

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

819. रतिप्रीत्यै नमः
820. अतिरागविवर्धिन्यै नमः
821. पंचवातगतिभिन्नायै नमः
822. पंचश्लेष्माशयाधरायै नमः
823. पंचपित्तवत्यैशक्त्यै नमः
824. पंचस्थानविभाविन्यै नमः
825. उदक्यायै नमः
826. वृषस्यंत्यै नमः
827. त्र्यहः प्रस्रविण्यै नमः
828. रजःशुक्रधराशक्त्यै नमः
829. जरायुर्गर्मधारिण्यै नमः
830. त्रिकालज्ञायै नमः
831. त्रिलिंगायै नमः
832. त्रिमूर्तिपुरवासिन्यै नमः
833. शिवतत्त्वायै नमः
835. कामतत्त्वायै नमः
836. रागिण्यै नमः
837. प्राच्यै नमः
838. अवाच्यै नमः
839. प्रतीच्यैदिशे नमः
840. उदीच्यै नमः
841. विदिशे नमः
842. दिशायै नमः
843. अहंकृत्यै नमः
844. अहंकारायै नमः
845. बालमायायै नमः
846. बलिप्रियायै नमः
847. स्रुचे नमः
848. स्रुवायै नमः
849. सामिधेन्यै नमः
850. सुश्रद्धायै नमः
851. श्राद्धदेवतायै नमः
852. मात्रे नमः
853. मातामह्यै नमः
854. तृप्त्यै नमः
855. पितुर्मात्रे नमः
856. पितामह्यै नमः
857. स्नुपायै नमः
858. दौहित्रिण्यै नमः
859. पुत्र्यै नमः
860. पौत्र्यै नमः
861. नपूत्र्यै नमः
862. सवस्रे नमः
863. प्रियायै नमः
864. स्तनदायै नमः
865. स्तनधारायै नमः
866. विश्वयोन्यै नमः
867. स्तनंधय्यै नमः
868. शिशूत्संगधरायै नमः
869. दोलायै नमः
870. दोला क्रीडायै नमः
871. अभिनंदिन्यै नमः
872. उर्वश्यै नमः
873. कदल्यै नमः
874. केकायै नमः
875. विशिखायै नमः
876. शिखिवर्तिन्यै नमः
877. खट्वांगधारिण्यै नमः
878. खड्गबाणपुंखानुवर्तिन्यै नमः
879. लक्षप्राप्तिकरायै नमः
880. लक्ष्यै नमः
881. सुलक्षणायै नमः
882. शुभलक्षणायै नमः
883. वर्तिन्यै नमः
884. सुपथाचारायै नमः
885. परिखायै नमः
886. स्वनिर्वृत्यै नमः
887. प्रकारवलयायै नमः
888. वेलायै नमः

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

889. मर्यादायै नमः
890. महोदध्यै नमः
891. पोषण्यै नमः
892. शोषणीशक्त्यै नमः
893. दीर्घकेश्यै नमः
894. सुलोमशायै नमः
895. ललितायै नमः
896. मांसलायै नमः
897. तन्व्यै नमः
898. वेदवेदांगधारिण्यै नमः
899. नरासृक्पानमत्तायै नमः
900. नरमुंडास्थिभूषणायै नमः
901. अक्षक्रीडारत्यै नमः
902. सौर्यै नमः
903. सारिकाशुकभाषिण्यै नमः
904. शाबर्यै नमः
905. गारुडीविद्यायै नमः
906. वारुण्यै नमः
907. वरुणार्चितायै नमः
908. वाराह्यै नमः
909. तुंडहस्तायै नमः
910. दंष्ट्रोद्धृतवसुंधरायै नमः
911. मीनमूर्त्यै नमः
912. धरामूर्त्यै नमः
913. वदान्यायै नमः
914. प्रतिमाश्रयायै नमः
915. अमूर्त्यै नमः
916. निधिरूपायै नमः
917. शालग्रामशिलायै नमः
918. शुचये नमः
919. स्मृतिसंस्काररूपायै नमः
920. सुसंस्कारायै नमः
921. संसृत्यै नमः
922. प्राकृतायै नमः
923. वेदभाषायै नमः
924. गाथायै नमः
925. गीत्यै नमः
926. प्रहेलिकायै नमः
927. इडायै नमः
928. पिंगलायै नमः
929. पिंगायै नमः
930. सुषुम्नायै नमः
931. सूर्यवाहिन्यै नमः
932. शशिश्रवायै नमः
933. तालुस्थायै नमः
934. काकिन्यै नमः
935. मृतजीविन्यै नमः
936. अणुरूपायै नमः
937. बृहद्रूपायै नमः
938. लघुरूपायै नमः
939. गुरुस्थिरायै नमः
940. स्थावर्यै नमः
941. जंगमायैदेव्यै नमः
942. कृतकर्मफलप्रदायै नमः
943. विषयायै नमः
944. क्रांतदेहायै नमः
945. निर्विषायै नमः
946. जितेंद्रियायै नमः
947. चित्स्वरूपायै नमः
948. चिदानंदायै नमः
949. परब्रह्मावबोधिन्यै नमः
950. निर्विकारायै नमः
951. निर्वैरायै नमः
952. रत्यै नमः
953. सत्यायै नमः
954. अधिवर्तिन्यै नमः
955. पुरुषायै नमः
956. अज्ञानभिन्नायै नमः
957. क्षांत्यै नमः

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

958. कैवल्यदायिन्यै नमः
959. विविक्तसेविन्यै नमः
960. प्राज्ञायै नमः
961. जनितायै नमः
962. बहुश्रुतायै नमः
963. निराहारायै नमः
964. समस्तैकायै नमः
965. सर्वलोकैकसेवितायै नमः
966. सेव्यसेव्यायै नमः
967. प्रियायै नमः
968. सेव्यायै नमः
969. सेवाफलविवर्धिन्यै नमः
970. कलौकल्किप्रियायै नमः
971. शीलायै नमः
972. दुष्टम्लेच्छविनाशिन्यै नमः
973. प्रत्यंचायै नमः
974. धनुषे नमः
975. यष्ट्यै नमः
976. खड्गधरायै नमः
977. धरारथायै नमः
978. अश्वप्लुतायै नमः
979. वल्गायै नमः
980. सृण्यै नमः
981. मत्तवारुणायै नमः
982. वीरसुवे नमः
983. वेदमात्रे नमः
984. वीरश्रियै नमः
985. वीरनंदिन्यै नमः
986. जयश्रियै नमः
987. जयदीक्षायै नमः
988. जयदायै नमः
989. जयवर्धिन्यै नमः
890. क्षेमंकर्यै नमः
991. सिद्धिरूपायै नमः
992. सत्कीर्त्यै नमः
993. पथिदेवतायै नमः
994. सौभाग्यायै नमः
995. शुभाग्यायै नमः
996. सर्वसौभाग्यदायिन्यै नमः
997. सर्वतीर्थमय्यैमूर्त्यै नमः
998. सर्वदेवमय्यैप्रभायै नमः
999. सर्व सिद्धिप्रदायैशक्त्यै नमः
1000. सर्वमंगलसंज्ञितायै नमः

इति श्रीरुद्रयामले महागुप्तसारे ईश्वरनंदिकेश्वरसंवादे

श्रीभवानीसहस्रनामस्तोत्रं संपूर्णम्।

---***---

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हवन सामग्री युक्त सूची

श्रीफल
अरारोट
रोली
हल्दी पिसी हुई
मोली
भोडल का चूरा
सफेद चन्दन का पासा
माचिस पुडा
रक्त चन्दन का पासा
साबुत हल्दी
केसर की डिब्बी,
नागकेसर
चांदी के वर्क
यज्ञोपवीत
गुलाब जल
सुपारी मोटी
केवडा जल
सुपारी छोटी
गङ्गा जल
दशाङ्ग धूप
चमेली का तेल
गूगल
तिलों का तेल
अगरबत्ती पैकेट,
आंवला तेल
कपूर
इत्र
सरसों पीली
कालीमिर्च

लोंग
सैंधा नमक
डोडा
सांभर नमक साबुत
जावित्री
राई
जायफल
मेंहदी पिसी हुई
कङ्कोल
हींगलू सूखा
गुलाल चार रंग की
काजल डिब्बी
चांवलों की खील
काजल सुरमा शीशी
आंवला सूखा
सफेद सुरमा शीशी
आंवला हरा
शदह की शीशी
आंवला मुरब्बा
सर्वौषधी
मुनक्का
हल्दी पिसी हुई
सिन्दूर
दारु हल्दी
मरोड फली
अखरोट
वच
काजू
जटामांसी
बादामगुली
चम्पा-पुष्प

पिस्ता
कूट
छिवारा
श्वेतचन्दनचूर्ण
चारोली
शिलाजीत
मिश्री सिरे
नागरमोथा
तालमखाणा

हवनीय - द्रव्य

मीठे मखाणे
गोघृत
मिश्री का चूरा (टुकडे)
तिल
गुड
जौ
पतासा
चांवल
शर्करा
बिल्वगिरि
खीर (दूध की)
जटामांसी
शतावरी
गिरिगोला
कूष्माण्ड-खण्ड
(कोह्ले के टुकडे)
छाडछबीला
खोपरे के टुकडे
कमलगट्टा
सफेद चन्दन के टुकडे
भोजपत्र

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

लाल चन्दन के टुकडे
चन्दन का चूरा
गन्ने के टुकडे
इन्द्र जौ
जावित्री
कपूरकाचरी
कस्तूरी
नागरमोथा
अनार के फल और पुष्प
किशमिश
कपूर के टुकडे
बील-फल के टुकडे
पीपल की समिधा
अगर
आम की समिधा
तगर
गूलर की समिधा
केसर
खेजडे की समिधा
केले के फल
गो गोटा (आरणा)
मधुपुष्प-महुआ के फूल

पञ्च-पल्लव

बीजपुरफल-बिजौरा
नींबू
पीपल की शाखाऐं
चिरञ्जीबीज-चारोली
गूलर की शाखाऐं
जवा-गुडहल के फूल
पाकर पीपल की शाखाऐं
आमलकफल-आंवले

आम की शाखाऐं
जम्बीर-जम्बीरी निंबू
बड की शाखाऐं
मातुलुङ्ग-बिजौर के फल
अशोक (आशापाला)के पत्ते (बांदरवाल) ।

ग्रह-समिधा

आकडे की समिधा
रंगीन कागजों की बांदरवाल
पलाश की समिधा
केले के पत्ते
खैरी की समिधा
लाल, सफेद, पीले गुलाब के
आंधी झाडा की समिधा
फूल, पुष्पमालायें, दोब,
पीपल की समिधा
खेजडे के पत्ते
पान नागर बेल
गूलर की समिधा

मिट्टी के बर्तन

कलश बडा और छोटा
छोटे कूण्डें
कूण्डा बड़ा
सराईयाँ
डीबे
पीली मिट्टी
लाल वस्त्र
भूरी मिट्टी
सफेद वस्त्र

सकोरे
पीला वस्त्र
पत्तल
काला वस्त्र
दोनें
लाल रेशमी वस्त्र
छोटे दोनें
केसरिया साटन
छीले के डांड

प्रधान-वस्त्र

ब्राह्मण वरण हेतु वस्त्र

पीताम्बरी
पीताम्बरी
रक्ताम्बरी
धोवती
दुपट्टा रेशमी
दुपट्टा
धोती जोडा
बगलबन्दी
जनानी धोती जोडा
बनियान
ब्लाउज
गमछा
लहंगा
आसन

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हवन सामग्री युक्त सूची

श्रीफल
अरारोट
रोली
हल्दी पिसी हुई
मोली
भोडल का चूरा
सफेद चन्दन का पासा
माचिस पुडा
रक्त चन्दन का पासा
साबुत हल्दी
केसर की डिब्बी,
नागकेसर
चांदी के वर्क
यज्ञोपवीत
गुलाब जल
सुपारी मोटी
केवडा जल
सुपारी छोटी
गङ्गा जल
दशाङ्ग धूप
चमेली का तेल
गूगल
तिलों का तेल
अगरबत्ती पैकेट
आंवला तेल
कपूर
इत्र
सरसों पीली
कालीमिर्च

लोंग
सैंधा नमक
डोडा
सांभर नमक साबुत
जावित्री
राई
जायफल
मेंहदी पिसी हुई
कङ्कोल
हींगलू सूखा
गुलाल चार रंग की
काजल डिब्बी
चांवलों की खील
काजल सुरमा शीशी
आंवला सूखा
सफेद सुरमा शीशी
आंवला हरा
शदह की शीशी
आंवला मुरब्बा
सर्वौषधी
मुनक्का
हल्दी पिसी हुई
सिन्दूर
दारु हल्दी
मरोड फली
अखरोट
वच
काजू
जटामांसी
बादामगुली
चम्पा-पुष्प

पिस्ता
कूट
छिवारा
श्वेतचन्दनचूर्ण
चारोली
शिलाजीत
मिश्री सिरे
नागरमोथा
तालमखाणा

हवनीय - द्रव्य

मीठे मखाणे
गोघृत
मिश्री का चूरा (टुकडे)
तिल
गुड
जौ
पतासा
चांवल
शर्करा
बिल्वगिरि
खीर (दूध की)
जटामांसी
शतावरी
गिरिगोला
कूष्माण्ड-खण्ड
(कोह्ले के टुकडे)
छाडछबीला
खोपरे के टुकडे
कमलगट्टा
सफेद चन्दन के टुकडे
भोजपत्र

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

लाल चन्दन के टुकडे
चन्दन का चूरा
गन्ने के टुकडे
इन्द्र जौ
जावित्री
कपूरकाचरी
कस्तूरी
नागरमोथा
अनार के फल और पुष्प
किशमिश
कपूर के टुकडे
बील-फल के टुकडे
पीपल की समिधा
अगर
आम की समिधा
तगर
गूलर की समिधा
केसर
खेजडे की समिधा
केले के फल
गो गोटा (आरणा)
मधुपुष्प-महुआ के फूल

पञ्च-पल्लव

बीजपुरफल-बिजौरा
नींबू
पीपल की शाखाऐं
चिरञ्जीबीज-चारोली
गूलर की शाखाऐं
जवा-गुडहल के फूल
पाकर पीपल की शाखाऐं
आमलकफल-आंवले

आम की शाखाऐं
जम्बीर-जम्बीरी निंबू
बड की शाखाऐं
मातुलुङ्ग-बिजौर के फल
अशोक (आशापाला)के पत्ते (बांदरवाल)।

ग्रह-समिधा

आकडे की समिधा
रंगीन कागजों की बांदरवाल
पलाश की समिधा
केले के पत्ते
खैरी की समिधा
लाल, सफेद, पीले गुलाब के
आंधी झाडा की समिधा
फूल, पुष्पमालायें, दोब,
पीपल की समिधा
खेजडे के पत्ते
पान नागर बेल
गूलर की समिधा

मिट्टी के बर्तन

कलश बडा और छोटा
छोटे कूण्डें
कूण्डा बड़ा
सराईयाँ
डीबे
पीली मिट्टी
लाल वस्त्र
भूरी मिट्टी
सफेद वस्त्र

सकोरे
पीला वस्त्र
पत्तल
काला वस्त्र
दोनें
लाल रेशमी वस्त्र
छोटे दोनें
केसरिया साटन
छीले के डांड

प्रधान-वस्त्र

ब्राह्मण वरण हेतु वस्त्र

पीताम्बरी
पीताम्बरी
रक्ताम्बरी
धोवती
दुपट्टा रेशमी
दुपट्टा
धोती जोडा
बगलबन्दी
जनानी धोती जोडा
बनियान
ब्लाउज
गमछा
लहंगा
आसन

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ओढनी (चूनरी)
पादुका
पेटीकोट
पात्र (लौटा)
गमछा
पञ्चपात्र
छींट
चांदी की अंगुङ्गी
गोमुखी,
माला (जप हेतु)
जौ
दुर्गासप्तशती और
भैरवनामावली की पुस्तकें
गेंहूँ
चांवल

गणेशादि मण्डलों के लिये

वस्त्र

मूंग
उडद
चणे की दाल
छत्र चाँदी का
मशूर की दाल
पताका चाँदी की
तिल
चाँदी का चौकोर पत्र
यन्त्रनिर्माण हेतु सांवख्या

माल कांगणी
नवरत्न पुडिया
सरसों
पञ्चरत्न पुडिया

काष्ठ-पात्र

प्रधान-प्रतिमा (दुर्गा) के लिए
आभूषण
चौकी बडी
चौकी छोटी

पूजा-पात्र

प्रधान कलश ताम्बे का बडा
पूजा कलश
रामसागर
ताम्बे की तामडी
कांसी का कटोरा
कांसी की थाली
पीतल की परात
चरु के लिए भगोना बडा
पूर्णपात्र के लिए भगोना बडा
कटोरियाँ
पूजा सामग्री के लिए थाल
गिलास
कलई का लौटा
बाल्टी पीतल की
दीपपात्र छोटे
शंख
गरुडघण्टा
पंच पात्र

नित्यपूजा-सामग्री

पुष्प खुल्ले
पुष्प मालायें
पुष्प कमल के
गजरे
दूर्वा
आम के पत्ते
लड्डू व बर्फी
आगरे का पेठा
कंगण
कचोरी
पापड
मूंग (पकाये हुये)
उड़द की पकौडी
बेसन की पकौडी
उड़द का बाकला
बाटी
थूली
दही
गेहूँ की घूघरी
मैदा का पैठा
पान पत्ते नागरबेल के
लौंग
इलायची
सिन्दूर
गुड़
दक्षिणा

दक्षिणा-द्रव्य

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नित्यार्चन द्रव्य	उपाचार्य - दक्षिणा	पूर्णपात्र - दक्षिणा	गोदान
वरण-दक्षिणा	वैदिक - दक्षिणा	प्रधान - भेंट	भूयसी - दक्षिणा
पुण्याह-वाचन दक्षिणा	ऋत्विक् - दक्षिणा	अग्नि - भेंट	ब्राह्मण-भोजन-दक्षिणा
आचार्य दक्षिणा	प्रधान - भेंट	पूर्णपात्र - दक्षिणा	
ब्रह्मा दक्षिणा	अग्नि - भेंट	अन्न - दान	

अखिल भारतीय प्राच्य ज्योतिष शोध संस्थान

ज्योतिष जगत् में निःस्वार्थ भाव से काम करने वाली भारत की अग्रणी संस्था

कार्यालय :- चित्रकूट योजना, A-5/52, पावर हाऊस के निकट, करणीविहार पुलिस थाने के पीछे, पानी की टंकी के पास, अजमेर रोड़, जयपुर-302021

राष्ट्र के प्रति हमारे अनमोल कार्य

हमारे संस्थान से विगत कई वर्षों से राष्ट्रिय स्तर पर कई पञ्चाङ्गों, कैलेण्डरों व पुस्तकों का देश के विभिन्न क्षेत्रों से निर्माण, सम्पादन व प्रकाशन किया जा रहा है जो कि समाज के प्रति हमारी छोटी सी भेंट है, आगे भी हम आपके लिए कठिन ज्योतिषीय ज्ञान को सरल बनाकर आपके लिए लाते रहेंगे। हमारी इसी लगन का परिणाम है कि **उदयपुर के महाराणा श्रीजी हुजूर श्री अरविन्द सिंह जी मेवाड़** ने हमें अपने ट्रस्ट से प्रकाशित "**श्री मेवाड़ विजय पञ्चाङ्ग**" के निर्माण व सम्पादन का कार्य देकर अनुगृहीत किया है, जिसके द्वारा हमें मेवाड़ की पुण्यभूमि की सेवा का सुअवसर मिल रहा है।

लोकप्रिय प्रकाशन/गणितसौजन्य

ज्योतिष सम्राट् पञ्चाङ्ग (राष्ट्रिय स्तर का पञ्चाङ्ग), **ज्योतिष सम्राट् कालदर्शक,**
विवाह-संस्कार (तीन भाषाओं में तथा पॉकेट साईज में भी उपलब्ध),
आवाहन प्रदीप (संस्कृत व हिन्दी में उत्कृष्ट ग्रन्थ),
श्री मेवाड़ विजय पञ्चाङ्ग (उदयपुर), **अखिलभारतवर्षीय पञ्चाङ्ग** (जयपुर),
अखिलभारतवर्षीय पञ्चाङ्ग (जयपुर)
श्रीगणेश पञ्चाङ्ग (तिथिप्रधान कालदर्शक), **दीपावली पूजन-पद्धति एवं कार्तिकमास माहात्म्य,**
हवनात्मक दुर्गासप्तशती (700 श्लोक युक्त),
भारतीय वेधपरम्परायाः क्रमिकविकासः, भुवनदीपकम् (संस्कृतभाष्य युक्त)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

डॉ. रवि शर्मा

आचार्य (ज्योतिष), विद्यावाचस्पति (ज्योतिष)

– सम्पादक –

ज्योतिष सम्राट् पञ्चाङ्गम्, श्रीमेवाड़विजय पञ्चाङ्गम्

Website : http://www.astrodekho.com

Website : http://www.jyotishyagishala.com

राष्ट्रीय संस्कृत साहित्य केन्द्र

जयपुर

ISBN 978-81-88741-62-5